रिसाले-ए-नूर संग्रहः

भाग 3

द फ्लैशेस संग्रह

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

रिसाले–ए–नूर संग्रहः

भाग 3

द फ्लैशेस संग्रह

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

The Light

न्यु जर्सी

सुक्रान वाहाइड द्वारा तुर्की 'लेमलार' से अनुवादित

2009 संस्करण.

जानकारी के लिए, पता: सोज़लर
नेसरियात ए.एस., नुरुओस्मानिया कैड., सोरकुन हान, नंबर: 28/2, कागालोग्लु, इस्तांबुल, तुर्की।

टेलीफ़ोन: 0212 527 10 10; फ़ैक्स: 0212 520 82 31 ई-मेल:
info@sozler.com.tr इंटरनेट:
www.sozler.com.tr

अंतर्वस्तु

तुर्की वर्णमाला पर ध्यान दें.

बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी के जीवन, रिसाले-ए-नूर और द फ्लैशेज़ पर एक संक्षिप्त नज़र
संग्रह

भगवान के नाम पर,
दयालु, करुणामय

परन्तु उसने अँधेरे में पुकारा, "तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं; पवित्र है तू! मैं तो अत्याचारियों में से था!"(21:87) * जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि "मुझे तो बहुत कष्ट हुआ और तू अत्यन्त दयावान है।"(21:83) * किन्तु यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दें कि "मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं; मैं उसी पर भरोसा करता हूँ, वह सर्वोच्च सिंहासन का पालनहार है!"(9:129) * हमारे लिए अल्लाह ही काफ़ी है और वही सर्वोत्तम कार्य-निर्णयकर्ता है।(3:178) * कोई शक्ति और कोई सामर्थ्य नहीं, परन्तु अल्लाह सर्वोच्च, प्रभुत्वशाली है।1 * ऐ सर्वव्यापी! तू ही सर्वव्यापी है! ऐ सर्वव्यापी! तू ही सर्वव्यापी है! * और उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं, मार्गदर्शन और शिफ़ा (चिकित्सा) प्रदान करता है।(41:44)

[यह, इकतीसवें अक्षर का पहला खंड है, जिसमें छह झलकियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक उपरोक्त आयतों और वाक्यांशों की कई रोशनियों में से एक को दर्शाती है। इनका तीस-तीन बार पाठ करना, विशेष रूप से मगरिब और इशा के बीच, सूर्यास्त और रात के समय की प्रार्थनाएँ, अत्यधिक पुण्यदायी हैं।]

---

[1] 1. देखें, बुखारी, मग़ाज़ी, 38; मुस्लिम, धिक्र, 44-6.

* पहले, दूसरे और बीसवें फ्लैश का अनुवाद मूल रूप से हामिद द्वारा किया गया था एल्गर, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यूएसए में निकट पूर्वी अध्ययन के प्रोफेसर द्वारा लिखित और 1975 में अमेरिका के रिसाले-ए-नूर संस्थान द्वारा प्रकाशित। वर्तमान कार्य के अनुरूप उन्हें थोड़ा संशोधित किया गया है। (अनुवाद)

पहली फ्लैश

यूनुस इब्न मत्ता2 (हमारे पैगंबर पर शांति हो और उन पर) की दुआ एक सबसे शक्तिशाली दुआ है, प्रार्थना का जवाब पाने का सबसे प्रभावी साधन है।3 योना (उन पर शांति हो) की प्रसिद्ध कहानी का सार इस प्रकार है:

उसे समुद्र में फेंक दिया गया और एक बड़ी मछली ने उसे निगल लिया। समुद्र में तूफान था, रात अशांत और अंधेरी थी, और उम्मीद खत्म हो गई थी। लेकिन जब वह ऐसी स्थिति में था, तो उसकी प्रार्थना:

> तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, पवित्र है तू! मैं तो अत्याचारियों में से था। (21:87)

उसके लिए उद्धार का एक त्वरित साधन के रूप में कार्य किया। उसकी प्रार्थना की शक्ति का रहस्य यह था:

उस स्थिति में सभी कारण स्थगित हो गए, क्योंकि योना को बचाने के लिए किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी, जिसके आदेश से व्हेल और समुद्र, रात और आकाश पर नियंत्रण हो सके।

रात, समुद्र और व्हेल उसके खिलाफ एकजुट थे। केवल वही व्यक्ति जो इन तीनों को वश में कर सकता था, उसे मोक्ष की राह पर ला सकता था। यहां तक कि अगर पूरी सृष्टि भी उसकी दास और सहायक बन जाती, तो भी कोई फायदा नहीं होता। क्योंकि कारणों का कोई प्रभाव नहीं होता। चूँकि योना ने निश्चितता की नज़र से देखा कि कारणों के कारण के अलावा कोई शरण नहीं है, और उसके लिए दिव्य एकता के प्रकाश में दिव्य एकता का अर्थ प्रकट हुआ, इसलिए उसकी प्रार्थना अचानक रात, समुद्र और व्हेल को वश में करने में सक्षम थी। दिव्य एकता के प्रकाश के माध्यम से वह व्हेल के पेट को एक पनडुब्बी में बदलने में सक्षम था; और उफनते समुद्र, जो अपनी भयावहता में एक फटते ज्वालामुखी जैसा था, को एक शांत मैदान, भ्रमण के लिए एक सुखद स्थान में बदल सकता था। एकता के प्रकाश के माध्यम से, वह आकाश के चेहरे को सभी से साफ़ करने में सक्षम था

---

[2] कुरान में पैगम्बर यूनुस बाइबिल का योना है, जिसका नाम आगे चलकर बाइबिल में भी प्रयोग किया गया। वर्तमान कार्य. (ट्र.)

[3] तिर्मिधि, दावत, 81; मुसनद, आई, 170.

बादलों को पार करके चाँद को लालटेन की तरह सिर पर स्थापित कर दिया। सृष्टि जो उसे चारों ओर से दबा रही थी और डरा रही थी, अब उसे हर दिशा से मित्रवत चेहरा दिखा रही थी। इस प्रकार वह मोक्ष के तट पर पहुँच गया, जहाँ लता के वृक्ष के नीचे उसने अपने प्रभु की इस कृपा को देखा।

अब हम उस स्थिति से सौ गुना अधिक भयावह स्थिति में हैं जिसमें

योना (शांति उस पर हो) ने सबसे पहले खुद को पाया। हमारी रात भविष्य है। जब हम अपने भविष्य को उपेक्षा की नज़र से देखते हैं, तो यह उसकी रात से सौ गुना ज़्यादा काला और भयावह होता है। हमारा समुद्र यह घूमता हुआ ग्लोब है। इस समुद्र की हर लहर पर हज़ारों लाशें हैं, और इस तरह यह उसके समुद्र से हज़ार गुना ज़्यादा भयावह है। हमारी मछली हमारी आत्मा की सनक है जो हमारी नींव को हिलाने और नष्ट करने का प्रयास करती है

अनंत जीवन। यह मछली उसकी मछली से हज़ार गुना ज़्यादा ख़तरनाक है। क्योंकि उसकी मछली सौ साल की ज़िंदगी को नष्ट कर सकती है, जबकि हमारी मछली करोड़ों साल तक चलने वाले जीवन को नष्ट करने की कोशिश करती है। यह हमारी सच्ची स्थिति है, हमें योना (शांति उस पर हो) की नकल करते हुए सभी कारणों से खुद को दूर रखना चाहिए और सीधे कारणों के कारण, यानी हमारे भगवान और पालनहार की शरण लेनी चाहिए। हमें कहना चाहिए: "आपके अलावा कोई भगवान नहीं है, आपकी महिमा हो! वास्तव में मैं भी अन्याय करने वालों में से था," और पूरी तरह से समझ लें कि यह केवल वही है जो भविष्य, इस दुनिया और हमारी आत्माओं की सनक के नुकसान को हमसे दूर कर सकता है, जो हमारी उपेक्षा और गुमराही के कारण हमारे खिलाफ़ एकजुट हैं।

क्योंकि भविष्य उसकी आज्ञा के अधीन है, संसार उसके अधिकार क्षेत्र के अधीन है, तथा हमारी आत्मा उसके निर्देश के अधीन है।

आकाश और पृथ्वी के रचयिता के अतिरिक्त और कौन ऐसा कारण है जो हमारे हृदय के सूक्ष्मतम और गुप्त विचारों को जान सकता है; जो परलोक की स्थापना करके हमारे लिए भविष्य को उज्ज्वल कर सकता है; जो हमें संसार की असंख्य प्रबल तरंगों से बचा सकता है? नहीं, उस अनिवार्यतः विद्यमान एक के अतिरिक्त, ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो उसकी अनुमति और आज्ञा के बिना किसी भी प्रकार से सहायता दे सके और उद्धार कर सके।

यह देखते हुए कि उसकी प्रार्थना के परिणामस्वरूप व्हेल योना के लिए एक वाहन या पनडुब्बी बन गई, और समुद्र एक शांत मैदान बन गया; और रात उसके लिए चाँद की रोशनी से धीरे-धीरे रोशन हो गई, इसलिए हमें भी यही प्रार्थना करनी चाहिए: "तेरे अलावा कोई ईश्वर नहीं है, तेरी महिमा हो! वास्तव में मैं भी अन्याय करने वालों में से था।"

"तेरे सिवा कोई ईश्वर नहीं" वाक्य से हम अपने भविष्य पर दया की दृष्टि डालते हैं; "तेरी महिमा हो!" शब्द से हम इसे अपने संसार पर डालते हैं; और "वास्तव में मैं भी अत्याचारियों में से था" वाक्यांश से हम इसे अपनी आत्मा पर डालते हैं।4 इस प्रकार हमारा भविष्य ईमान के प्रकाश और कुरान की चाँदनी चमक तथा रात के भय और आतंक से प्रकाशित होता है।

---

4 देखें, बुखारी, अज़ान, 149; तौहीद, 9; मुस्लिम, धिक्र, 47-8; हुदूद, 23.

शांति और आनंद में बदल जाते हैं। फिर, सबसे बुद्धिमान कुरान के गोदी में तैयार किए गए इस्लाम की सच्चाई के जहाज पर सवार होकर, हम इस सांसारिक निवास के समुद्र को सुरक्षित रूप से पार कर सकते हैं, जो जीवन और मृत्यु के क्रम से अनगिनत लाशों से भरा हुआ है, जो वर्षों और शताब्दियों की लहरों पर बहते हैं, और शून्य में फेंक दिए जाते हैं। एक बार उस जहाज पर सवार होकर हम मोक्ष के तट पर पहुंच सकते हैं और अपने जीवन का कर्तव्य पूरा कर सकते हैं। समुद्र का तूफान और उछाल एक स्क्रीन पर मनभावन छवियों की एक श्रृंखला दिखाई देगा, और आतंक और भय को प्रेरित करने के बजाय, चिंतनशील और ध्यानस्थ दृष्टि को प्रसन्न, दुलार और रोशन करेगा। कुरान के रहस्य और सत्य और असत्य के उस मानदंड के प्रभाव के कारण, हमारी आत्मा अब हम पर सवार नहीं होगी, बल्कि हमारी सवारी बन जाएगी। जब हम उस पर सवार होंगे, तो यह हमारे लिए अनंत जीवन की प्राप्ति का एक शक्तिशाली साधन होगा।

संक्षेप में: मनुष्य अपने अस्तित्व की व्यापक प्रकृति के अनुसार, जैसे वह मलेरिया से पीड़ित होता है और काँपता है, वैसे ही वह पृथ्वी के कंपन और काँपने से और पुनरुत्थान के दिन सभी प्राणियों के सर्वोच्च आक्षेप से भी पीड़ित होता है। जिस तरह वह सूक्ष्म कीटाणु से डरता है, उसी तरह वह आकाशीय पिंडों के बीच दिखाई देने वाले उल्कापिंड से भी डरता है। जिस तरह वह अपने घर से प्यार करता है, उसी तरह वह विशाल दुनिया से भी प्यार करता है। जिस तरह वह अपने छोटे से बगीचे से प्यार करता है, उसी तरह वह अनंत और शाश्वत स्वर्ग से भी बेहद प्यार करता है। तब मनुष्य की पूजा का विषय, भगवान, शरण, उद्धारकर्ता और लक्ष्य केवल वही हो सकता है जिसकी मुट्ठी में पूरा ब्रह्मांड है, जिसके नियंत्रण में परमाणु और ग्रह दोनों हैं।

इसलिए मनुष्य को योना (अलैहिस्सलाम) की तरह निरंतर कहना चाहिए:

> तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, पवित्र है तू! मैं भी अत्याचारियों में से था।
>
> पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

दूसरा फ्लैश

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि "मुझे तो बहुत कष्ट पहुँच गया और तू अत्यन्त दयावान है!" (21:83)

धैर्य के पुजारी अय्यूब (अलैहिस्सलाम) की प्रार्थना अच्छी तरह से परखी हुई और प्रभावी है। इस आयत को ध्यान में रखते हुए हमें अपनी प्रार्थना में कहना चाहिए, "ऐ मेरे रब और पालनहार! बेशक मुझे तकलीफ़ हुई है और तू सबसे ज़्यादा दयावान है।"

अय्यूब 1 (जिस पर शांति हो) की प्रसिद्ध कहानी का सार इस प्रकार है:
लंबे समय तक अनेक घावों और घावों से पीड़ित रहने के दौरान, उसे अपनी बीमारी के लिए मिलने वाले महान प्रतिफल का स्मरण हुआ, और उसने अत्यंत धैर्य के साथ इसे सहन किया। लेकिन बाद में, जब उसके घावों से उत्पन्न कीड़े उसके हृदय और उसकी जीभ, जो ईश्वर के स्मरण और ज्ञान का स्थान है, में घुस गए, तो उसे डर लगा कि उसकी पूजा का कर्तव्य प्रभावित होगा, और इसलिए उसने अपने आराम के लिए नहीं, बल्कि ईश्वर की पूजा के लिए प्रार्थना में कहा:

"हे प्रभु! मुझे कष्ट हुआ है; मेरी जीभ से तेरा स्मरण और मेरे हृदय से तेरी आराधना कष्ट में पड़ जाएगी।" तब सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इस शुद्ध, ईमानदार और भक्तिपूर्ण प्रार्थना को सबसे चमत्कारी तरीके से स्वीकार किया। उन्होंने अय्यूब को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान किया और उसमें सभी प्रकार की करुणा प्रकट की।3

इस फ़्लैश में पाँच बिंदु हैं:

[1] देखें, तबरी, जामी अल-बयान, xvii, 71-2; इब्न हजर, फत अल-बारी, vi, 426; इब्न अल-मुबारक, अल-ज़ुहद, 49.

[2] देखें, इब्न अल-अथिर, अल-कामिल फिल-तारीख, आई, 98-100।

[3] देखें, कुरान, 21:84, 38:42-3. इसके अलावा, बुखारी, ग़ुस्ल, 20; तौहीद, 35; मुसनद, द्वितीय, 314.

पहला बिंदु

अय्यूब (जिस पर शांति हो) के बाहरी घावों और बीमारियों के अनुरूप, हमारे पास आत्मा और हृदय की आंतरिक बीमारियाँ हैं। यदि हमारा आंतरिक अस्तित्व बाहर की ओर मुड़ जाए, और हमारा बाहरी अस्तित्व भीतर की ओर मुड़ जाए, तो हम अय्यूब से ज़्यादा घायल और बीमार दिखाई देंगे। हमारे द्वारा किया गया प्रत्येक पाप और हमारे मन में आने वाला प्रत्येक संदेह हमारे हृदय और आत्मा पर घाव करता है।

अय्यूब (उस पर शांति हो) के घाव ऐसे थे कि उनके संक्षिप्त सांसारिक जीवन को ख़तरा था, लेकिन हमारे आंतरिक घाव हमारे अनंत काल तक चलने वाले अनंत जीवन को ख़तरे में डालते हैं। हमें अय्यूब की प्रार्थना की ज़रूरत हज़ारों गुना ज़्यादा है, जितना कि उसने खुद की थी।

जिस तरह उसके घावों से निकले कीड़े उसके दिल और जीभ में घुस गए, उसी तरह पाप के घाव और उन घावों से पैदा होने वाले प्रलोभन और संदेह भी - भगवान हमारी रक्षा करें! - हमारे आंतरिक हृदय, विश्वास के स्थान में घुस जाएंगे और इस तरह विश्वास को घायल कर देंगे। जीभ के आध्यात्मिक आनंद, विश्वास की व्याख्या करने वाले को भी भेदकर, वे उसे ईश्वर की याद से घृणा करने के लिए मजबूर करते हैं और उसे चुप करा देते हैं।

पाप, हृदय में प्रवेश करके, उसे काला और अंधकारमय कर देगा, जब तक कि वह विश्वास की ज्योति को बुझा न दे।4 प्रत्येक पाप के भीतर अविश्वास की ओर ले जाने वाला एक मार्ग है। जब तक कि उस पाप को परमेश्वर से क्षमा मांगकर शीघ्रता से नष्ट नहीं कर दिया जाता, तब तक वह एक कीड़े से बढ़कर एक साँप बन जाएगा जो हृदय को कुतरता रहेगा।

उदाहरण के लिए, जो व्यक्ति गुप्त रूप से कोई शर्मनाक पाप करता है, वह इस बात से डरता है कि अगर दूसरों को इसके बारे में पता चल गया तो उसे कितना अपमान सहना पड़ेगा। इस प्रकार स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों के अस्तित्व को सहना उसके लिए कठिन होगा, और वह इसे अस्वीकार करने के लिए लालायित होगा, यहाँ तक कि मामूली संकेत के आधार पर भी।

इसी प्रकार, जो व्यक्ति नरक की यातना के योग्य कोई बड़ा पाप करता है, वह पूरे दिल से नरक के न होने की कामना करेगा, और जब भी वह नरक की आग की धमकी के बारे में सुनेगा, तो वह मामूली संकेत और संदेह के आधार पर उसे अस्वीकार करने का साहस करेगा, जब तक कि वह पश्चाताप और क्षमा की ढाल न ले ले।

इसी तरह जो व्यक्ति अनिवार्य नमाज़ अदा नहीं करता और अपने कर्तव्य को पूरा नहीं करता,
पूजा-अर्चना पर संकट आएगा, ठीक वैसे ही जैसे वह किसी छोटे शासक के प्रति अपने छोटे से कर्तव्य की उपेक्षा के मामले में होता है। इस प्रकार, अनंत काल के प्रभु के बार-बार आदेशों के बावजूद अपने दायित्व को पूरा करने में उसका आलस्य उसे बहुत परेशान करेगा, और उस परेशानी के कारण वह खुद से चाहेगा और कहेगा: “काश पूजा का ऐसा कोई कर्तव्य न होता!” बदले में, इस इच्छा से ईश्वर को नकारने की इच्छा पैदा होगी, और

---

4 देखें, तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरा 83:1; इब्न माजा, ज़ुहद, 29; मुवत्ता, कलाम, 18; मुसनद, द्वितीय, 297.

उसके प्रति शत्रुता रखना। यदि उसके हृदय में ईश्वर के अस्तित्व के विषय में कोई संदेह उत्पन्न हो जाए, तो वह उसे निर्णायक प्रमाण की तरह स्वीकार कर लेगा। उसके सामने विनाश का द्वार खुल जाएगा। वह दुष्ट यह नहीं जानता कि यद्यपि वह उपासना के कर्तव्य के मामूली कष्ट से इन्कार करके बच जाता है, परन्तु उसी इन्कार द्वारा वह स्वयं को उन लाखों कष्टों का लक्ष्य बना लेता है, जो उससे कहीं अधिक भयंकर हैं। वह मच्छर के काटने से बचकर साँप के काटने का स्वागत करता है।

ऐसे कई अन्य उदाहरण हैं, जिन्हें इन तीनों के संदर्भ में समझा जा सकता है, ताकि,

बल्कि उनके दिल तो दागदार हो गये हैं (83:14)

स्पष्ट हो जाएगा.

दूसरा बिंदु

जैसा कि छब्बीसवें वचन में ईश्वरीय निर्धारण के अर्थ के बारे में बताया गया है, जिसे नियति के रूप में जाना जाता है, मनुष्य को निम्नलिखित तीन कारणों से आपदाओं और बीमारी के मामले में शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है: पहला कारण: परमप्रधान ईश्वर ने शरीर के वस्त्र को बनाया है जिसे उसने मनुष्य को पहनाया है, जो उसकी कला का प्रकटीकरण है। उसने मनुष्य को एक मॉडल बनाया है जिस

पर वह शरीर के वस्त्र को काटता, छाँटता, बदलता और बदलता है, इस प्रकार अपने विभिन्न नामों की अभिव्यक्ति प्रदर्शित करता है। जिस तरह मरहम लगाने वाले का नाम यह आवश्यक बनाता है कि बीमारी मौजूद हो, उसी तरह प्रदाता का नाम भी यह आवश्यक बनाता है कि भूख मौजूद हो।

और इसी तरह।

समस्त प्रभुत्व का स्वामी अपने प्रभुत्व पर अपनी इच्छानुसार नियंत्रण रखता है।

दूसरा कारण: विपत्तियों और बीमारियों के माध्यम से ही जीवन परिष्कृत होता है,5

पूर्ण, सुदृढ़ और उन्नत; कि वह परिणाम दे, पूर्णता प्राप्त करे और अपना उद्देश्य पूरा करे।6 सुख और आराम के सोफे पर नीरसता से जीया गया जीवन उतना शुद्ध अच्छाई से नहीं मिलता जो कि अस्तित्व है, बल्कि शुद्ध बुराई से मिलता है जो कि अस्तित्व नहीं है; वास्तव में वह उसी दिशा में जाता है।

तीसरा कारण: यह सांसारिक क्षेत्र परीक्षण का क्षेत्र है, सेवा का निवास है। यह आनंद, पुरस्कार और प्रतिदान का स्थान नहीं है। इसलिए, यह देखते हुए कि यह सेवा का निवास और पूजा का स्थान है, बीमारियाँ और दुर्भाग्य - जब तक वे विश्वास को प्रभावित नहीं करते हैं और धैर्यपूर्वक सहन किए जाते हैं7 - सेवा और पूजा के लिए पूरी तरह से अनुकूल होते हैं, और इसे मजबूत भी करते हैं। चूँकि वे प्रत्येक घंटे की पूजा को एक दिन के बराबर बनाते हैं8, इसलिए शिकायत करने के बजाय धन्यवाद देना चाहिए।

---

[5] देखें, मुस्लिम, बीर, 52; अबू दाउद, जनाज़, 1; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, i, 1500।

[6] देखें, बुखारी, मर्दा, 1; मुस्लिम, बीर, 52; तिर्मिधि, ज़ुहद, 57; मुवत्ता, जनाज़, 40।

[7] देखें, तिर्मिधि, दावत, 79; नसाई, अल-सुनन अल-कुबरा, vi, 106।

[8] देखें, बीज, अंगूठी, 56; मुसनद, द्वितीय, 159, 194, 198; iii, 148, 238, 258।

पूजा वास्तव में दो प्रकार की होती है, सकारात्मक और नकारात्मक। सकारात्मक का क्या अर्थ है, यह स्पष्ट है। नकारात्मक पूजा तब होती है जब दुर्भाग्य या बीमारी से पीड़ित व्यक्ति अपनी कमजोरी और असहायता को महसूस करता है, और अपने दयालु भगवान की ओर मुड़ता है, उनकी शरण लेता है, उनका ध्यान करता है, उनसे प्रार्थना करता है, और इस तरह से पूजा का एक शुद्ध रूप प्रस्तुत करता है, जिसमें कोई पाखंड नहीं घुस सकता। अगर वह धैर्यपूर्वक सहन करता है, दुर्भाग्य के साथ मिलने वाले पुरस्कार के बारे में सोचता है और धन्यवाद देता है, तो वह जो भी घंटा बिताता है, वह पूजा में बिताया गया पूरा दिन माना जाएगा। उसका छोटा जीवन बहुत लंबा हो जाता है। ऐसे मामले भी हैं जहां एक मिनट को पूरे दिन की पूजा के बराबर माना जाता है।

एक बार मैं अपने एक भाई मुहाजिर हाफिज अहमद की भयानक बीमारी के कारण बहुत चिंतित था। लेकिन तभी मेरे दिल में एक चेतावनी आई: "उसे बधाई दो!" वह जो भी मिनट बिताता है, वह पूरे दिन की इबादत के बराबर है। वह किसी भी हालत में अपनी बीमारी को धैर्य और कृतज्ञता के साथ सहन कर रहा था।

तीसरा बिंदु

जैसा कि हमने एक या दो वचनों में बताया है, जब भी कोई अपने पिछले जीवन के बारे में सोचता है, तो वह अपने दिल में या अपनी जीभ से या तो “आह!” कहेगा या “ओह!” यानी उसे या तो पछतावा होगा, या वह कहेगा “धन्यवाद और भगवान की स्तुति हो!” पछतावा पूर्व सुखों के बंद होने और उनसे अलग होने से उत्पन्न होने वाले दर्द से प्रेरित होता है।

क्योंकि सुख का खत्म होना अपने आप में एक पीड़ा है। कभी-कभी क्षणिक सुख हमेशा के लिए दुख का कारण बन जाता है। इसके बारे में सोचना घाव पर छेद करने जैसा होगा, जिससे पछतावा बाहर निकल आएगा।

जहाँ तक अतीत में अनुभव किए गए क्षणिक कष्टों के समाप्त होने से मिलने वाले स्थायी आध्यात्मिक सुख की बात है, तो यह मनुष्य को यह कहने के लिए प्रेरित करता है कि, "ईश्वर का धन्यवाद और प्रशंसा हो!" मनुष्य की इस सहज प्रवृत्ति के अतिरिक्त, यदि वह दुर्भाग्य से मिलने वाले पुरस्कार और परलोक में मिलने वाले प्रतिफल के बारे में सोचता है, यदि वह यह समझता है कि दुर्भाग्य के कारण उसका संक्षिप्त जीवन एक लम्बा जीवन माना जाएगा, तो उसे केवल धैर्य रखने के बजाय धन्यवाद देना चाहिए। उसे कहना चाहिए कि, "अविश्वास और पथभ्रष्टता के अलावा हर स्थिति के लिए ईश्वर की प्रशंसा हो।"10

---

[9] मुहाजिर हाफ़िज़ अहमद बरला* में एक व्यापारी थे और रिसाले-ए-नूर के पहले छात्रों में से एक थे। 1926 के शुरुआती वसंत में बरला में पहली बार आने पर बेदिउज़्ज़मान उनके गेस्टहाउस में रुके थे, और उन्होंने बरला में रहने के दौरान साढ़े आठ साल तक बेदिउज़्ज़मान की सहायता की।

* बेदिउज़्ज़मान का निर्वासन स्थल, 1926-1934. इस्पार्टा प्रांत का एक छोटा सा गाँव दक्षिण पश्चिम तुर्की में. (ट्र.)

[10] तिर्मिधि, दावत, 45; इब्न माजा, पैगंबर, 23; प्रार्थना, 2.

यह आम तौर पर कहा जाता है कि दुर्भाग्य लंबे समय तक बना रहता है। वास्तव में ऐसा है, लेकिन इसलिए नहीं कि यह कष्टकारी और दुखद होता है जैसा कि लोग आमतौर पर कल्पना करते हैं, बल्कि इसलिए कि यह लंबे जीवन की तरह महत्वपूर्ण परिणाम देता है।

चौथा बिंदु

जैसा कि इक्कीसवें वचन के पहले चरण में बताया गया था, सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई धैर्य की शक्ति हर दुर्भाग्य के लिए पर्याप्त है, जब तक कि इसे निराधार भय पर बर्बाद न कर दिया जाए। लेकिन भ्रम की प्रबलता, मनुष्य की उपेक्षा और इस क्षणभंगुर जीवन को शाश्वत मानने की उसकी कल्पना के कारण, वह अपनी सहनशक्ति को अतीत और भविष्य पर बर्बाद कर देता है। उसका धीरज वर्तमान के दुर्भाग्य के बराबर नहीं है, और वह शिकायत करना शुरू कर देता है। ऐसा लगता है जैसे - भगवान न करे! - वह मनुष्यों से सर्वशक्तिमान ईश्वर की शिकायत कर रहा हो। सबसे अनुचित और यहां तक कि पागलपन भरे अंदाज में, वह शिकायत करता है और अपने धैर्य की कमी को प्रदर्शित करता है।

यदि बीता हुआ दिन दुर्भाग्य का प्रतीक था, तो दुख चला गया है, और केवल शांति रह गई है; दुख चला गया है और उसके समाप्त होने का आनंद रह गया है; परेशानी चली गई है, और पुरस्कार रह गया है। इसलिए हमें शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि आनंद के लिए धन्यवाद देना चाहिए। हमें दुर्भाग्य से नाराज नहीं होना चाहिए, बल्कि उससे प्रेम करना चाहिए। दुर्भाग्य के कारण अतीत का क्षणभंगुर जीवन शाश्वत और धन्य जीवन माना जाता है।

अतीत के दुखों के बारे में कल्पना मात्र से सोचना और फिर अपने धैर्य का कुछ भाग नष्ट कर देना पागलपन है।

जहाँ तक आने वाले दिनों की बात है, चूँकि वे अभी आए ही नहीं हैं, इसलिए उन दिनों में होने वाली बीमारी या दुर्भाग्य के बारे में सोचना और अधीरता दिखाना भी मूर्खता है। खुद से यह कहना कि "कल या परसों मैं भूखा और प्यासा रहूँगा" और लगातार पानी पीना और आज रोटी खाना, पूरी तरह से पागलपन है। इसी तरह, भविष्य में होने वाले दुर्भाग्य और बीमारियों के बारे में सोचना जो अभी अस्तित्व में नहीं हैं, उन्हें पहले ही झेलना, अधीरता दिखाना और बिना किसी मजबूरी के खुद पर अत्याचार करना, ऐसी मूर्खता है जो अब दया और करुणा के लायक नहीं है।

संक्षेप में, जिस प्रकार कृतज्ञता से ईश्वरीय कृपा बढ़ती है, उसी प्रकार शिकायत से भी ईश्वरीय कृपा बढ़ती है।
दुर्भाग्य को दूर भगाता है, तथा दया के सभी अवसर समाप्त कर देता है।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, एर्ज़ुरम में एक धन्य व्यक्ति एक भयानक बीमारी से पीड़ित था। मैं उससे मिलने गया और उसने मुझसे कड़वी शिकायत करते हुए कहा: "मैं सौ रातों से तकिए पर सिर रखकर सो नहीं पाया हूँ।" मैं बहुत दुखी था। अचानक मेरे मन में एक विचार आया और मैंने कहा:

"भाई, तुमने जो सौ मुश्किल दिन बिताए हैं, वे अब सौ खुशी के दिनों की तरह हैं। उनके बारे में सोचो और शिकायत मत करो; बल्कि उन्हें देखो और आभारी रहो।
जहाँ तक भविष्य के दिनों की बात है, चूँकि वे अभी तक नहीं आए हैं, इसलिए अपने दयालु और कृपालु रब पर भरोसा रखो। रोओ मत।

पराजित होने से पहले, किसी भी चीज़ से मत डरो, अस्तित्व के अभाव को अस्तित्व का रंग मत दो। वर्तमान समय के बारे में सोचो; इस समय के लिए तुम्हारा धैर्यवान सहन करने की शक्ति पर्याप्त है। उस पागल कमांडर की तरह व्यवहार मत करो जो अपने बाएं विंग से भागकर उसके साथ आने वाले दुश्मन की सेना द्वारा अपने दाहिने विंग पर सुदृढीकरण की उम्मीद करता है, और फिर दुश्मन के उसके दाहिने विंग से जुड़ने से पहले ही अपने बलों को बाएं और दाएं केंद्र में फैलाना शुरू कर देता है। फिर दुश्मन कमज़ोर होकर, कम से कम बल के साथ अपने केंद्र को नष्ट कर देता है।

भाई, उसके जैसा मत बनो। इस समय के लिए अपनी सारी शक्ति जुटाओ, और ईश्वरीय दया, परलोक में मिलने वाले पुरस्कार और कैसे तुम्हारा संक्षिप्त और क्षणभंगुर जीवन एक लंबे और शाश्वत रूप में परिवर्तित हो रहा है, के बारे में सोचो। कड़वी शिकायत करने के बजाय, खुशी से धन्यवाद दो।”

बहुत राहत महसूस करते हुए उन्होंने कहा, “भगवान की स्तुति और धन्यवाद हो, मेरी बीमारी अब पहले की तुलना में दसवां हिस्सा रह गयी है।”

पांचवां बिंदु तीन बातों से मिलकर बना है।

पहला मुद्दा : सच्चा और हानिकारक दुर्भाग्य वह है जो धर्म को प्रभावित करता है।
धर्म के मामलों में दुर्भाग्य से बचने के लिए हमें हमेशा ईश्वरीय दरबार में शरण लेनी चाहिए और मदद के लिए पुकारना चाहिए।11 लेकिन दुर्भाग्य जो धर्म को प्रभावित नहीं करते, वे वास्तव में दुर्भाग्य नहीं हैं। उनमें से कुछ परम दयालु की ओर से चेतावनी हैं। यदि कोई चरवाहा अपनी भेड़ों पर पत्थर फेंकता है, जब वे दूसरे के चरागाह पर अतिक्रमण करती हैं, तो वे समझ जाती हैं कि पत्थर उन्हें खतरनाक कार्य से बचाने के लिए चेतावनी के रूप में है; कृतज्ञता से भरे हुए वे वापस लौट जाते हैं।12 इसी तरह कई ऐसे स्पष्ट दुर्भाग्य भी हैं जो ईश्वरीय चेतावनी और चेतावनी हैं, अन्य जो पाप का प्रायश्चित करते हैं;13 और फिर अन्य जो मनुष्य की उपेक्षा की स्थिति को भंग करते हैं, उसे उसकी मानवीय असहायता और कमजोरी की याद दिलाते हैं, इस प्रकार उसे एक प्रकार की शांति प्रदान करते हैं। जहाँ तक दुर्भाग्य की विविधता का सवाल है जो बीमारी है, यह बिल्कुल भी दुर्भाग्य नहीं है, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, बल्कि यह ईश्वर की कृपा और शुद्धि का साधन है।14 एक परंपरा है जो कहती है: "जैसे पेड़ हिलाने पर अपने पके फल गिरा देता है, वैसे ही बुखार के हिलने से पाप गिर जाते हैं।"15

अय्यूब (उस पर शांति हो) ने अपनी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना नहीं की, बल्कि पूजा के उद्देश्य से उपचार की मांग की, जब

---

[11] देखें, तिर्मिधि, दावत, 79; नसाई, अल-सुनन अल-कुबरा, vi, 106।

[12] देखें, बुखारी, ईमान, 39; बुयु', 2; मुस्लिम, मुसाकत, 107; अबू नुअयम, हिलायत अल-अवलिया, मैं,
11।

[१३] देखें, तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरा 4:24; मुसनद, ii, 303, 335, 402।

[14] देखें, मुस्लिम, बीर, 52; अबू दाउद, जनाज़, 1; अल-दयालामी, अल-मुस्नद, आई, 123; अल-हकीम अल-तिर्मिधि, नवादिर अल-उसुल, आई, 286।

[15] बुखारी, मर्दा, 3, 13, 16; मुस्लिम, बीर, 45; इब्न माजा, अदब, 56; दारिमी, रिकाक, 57; मुसनद, आई, 381, 441, 455; iii, 152.

बीमारी के कारण वह अपनी जीभ से परमेश्वर को याद नहीं कर पा रहा था और अपने हृदय में परमेश्वर पर ध्यान नहीं कर पा रहा था। हमें भी प्रार्थना करते समय अपना मुख्य उद्देश्य पाप करने से उत्पन्न होने वाले आंतरिक और आध्यात्मिक घावों को ठीक करना होना चाहिए।

जहाँ तक शारीरिक बीमारियों का सवाल है, हम उनसे तब शरण ले सकते हैं जब वे हमारी पूजा में बाधा डालती हैं। लेकिन हमें विनम्रता और विनती के साथ शरण लेनी चाहिए, न कि विरोध और विलाप के साथ। अगर हम ईश्वर को अपना प्रभु और पालनहार मानते हैं, तो हमें वह सब भी स्वीकार करना चाहिए जो वह हमें प्रभु के रूप में देता है। ईश्वरीय निर्धारण और आदेश पर आपत्ति जताते हुए विलाप करना और शिकायत करना ईश्वरीय निर्धारण की एक तरह की आलोचना है, ईश्वर की करुणा पर आरोप लगाना है।

जो ईश्वरीय निर्णय की आलोचना करता है, वह अपना सिर निहाई से टकराकर तोड़ देता है। जो ईश्वर की दया पर आरोप लगाता है, वह निश्चित रूप से उससे वंचित हो जाएगा। बदला लेने के लिए टूटे हुए हाथ का इस्तेमाल करना केवल हाथ को और नुकसान पहुंचाएगा। इसी तरह, जो व्यक्ति दुर्भाग्य से पीड़ित है, वह इसका विरोध करते हुए शिकायत और चिंता के साथ जवाब देता है, वह केवल अपने दुर्भाग्य को बढ़ाता है।

दूसरा मामला: शारीरिक दुर्भाग्य तब बढ़ता है जब उसे बड़ा देखा जाता है और जब उसे छोटा देखा जाता है तो वह सिकुड़ जाता है। उदाहरण के लिए, रात में एक सपना हमारी आँखों में आता है। अगर कोई उस पर ध्यान देता है तो वह बड़ा हो जाता है और बढ़ता है; अगर नहीं देता तो गायब हो जाता है। इसी तरह अगर कोई मधुमक्खियों के हमलावर झुंड को भगाने की कोशिश करता है तो वे और भी आक्रामक हो जाती हैं; जबकि अगर कोई उन पर ध्यान नहीं देता तो वे तितर-बितर हो जाती हैं।

इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति शारीरिक दुर्भाग्य को बड़ा समझकर उसे महत्व देता है, तो वह बढ़ता है, और चिंता के कारण शरीर से निकलकर हृदय में जड़ जमा लेता है। परिणामतः आंतरिक क्लेश होता है, जिस पर बाहरी दुर्भाग्य टिक जाता है और अपने को स्थायी बनाता है। लेकिन यदि ईश्वरीय आदेश से संतुष्ट होकर और ईश्वर पर भरोसा करके चिंता को दूर कर दिया जाए, तो शारीरिक दुर्भाग्य धीरे-धीरे कम हो जाएगा, सूख जाएगा और समाप्त हो जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे एक वृक्ष जिसकी जड़ें कट गई हों। मैंने एक बार इस सत्य के वर्णन में निम्नलिखित श्लोक रचे थे:

हे दुष्ट, विपत्ति पर मत रो, आ, ईश्वर पर भरोसा रख!
क्योंकि जान लो कि चिल्लाना विपत्ति को बढ़ाता है और यह बहुत बड़ी भूल है।
दुर्भाग्य के प्रेषक को खोजें, और जानें कि यह उपहार के भीतर एक उपहार और आनंद है।
इसलिए रोना छोड़ो और धन्यवाद दो; कोकिला की तरह मुस्कुराओ
आँसू!
यदि आप उसे नहीं पाते हैं, तो जान लें कि यह संसार केवल पीड़ा, क्षणभंगुरता और हानि से भरा है।
तो फिर जब तुम्हारे ऊपर पूरी दुनिया में दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है, तो एक छोटी सी मुसीबत पर क्यों विलाप करो? आओ,
भगवान पर विश्वास रखो!

भगवान पर भरोसा रखो! दुर्भाग्य के चेहरे पर हंसो; वह भी हंसेगा।
जैसे-जैसे वह हंसेगा, वह छोटा होता जाएगा; वह परिवर्तित और रूपांतरित हो जाएगा।

यदि कोई अकेले युद्ध में अपने भयंकर शत्रु पर मुस्कुराता है, तो उसकी शत्रुता समझौतावादी हो जाती है; उसकी शत्रुता मात्र एक मजाक बन जाती है, सिमट कर गायब हो जाती है। यदि कोई ईश्वर पर भरोसा करके दुर्भाग्य का सामना करता है, तो परिणाम भी ऐसा ही होगा।

तीसरी बात : प्रत्येक युग की अपनी विशेषताएँ होती हैं। उपेक्षा के इस युग में दुर्भाग्य ने अपना रूप बदल लिया है। कुछ युगों में और कुछ व्यक्तियों के लिए दुर्भाग्य वास्तव में दुर्भाग्य नहीं, बल्कि ईश्वरीय कृपा है। चूँकि मैं वर्तमान युग में रोग से पीड़ित लोगों को सौभाग्यशाली मानता हूँ - इस शर्त पर कि उनकी बीमारी उनके धर्म को प्रभावित नहीं करती - इसलिए मुझे रोग और दुर्भाग्य का विरोध करने या पीड़ितों पर दया करने की बात नहीं सूझती। जब भी मैं किसी पीड़ित युवक से मिलता हूँ, तो पाता हूँ कि वह अपने साथियों की अपेक्षा अपने धार्मिक कर्तव्यों और परलोक के बारे में अधिक चिंतित है। इससे मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि ऐसे लोगों के लिए बीमारी दुर्भाग्य नहीं, बल्कि ईश्वर की कृपा है। यह सच है कि बीमारी उनके संक्षिप्त, क्षणिक और सांसारिक जीवन में उन्हें कष्ट पहुँचाती है, लेकिन यह उनके शाश्वत जीवन के लिए लाभदायक है। इसे एक प्रकार की पूजा ही माना जाना चाहिए। यदि वह स्वस्थ होता तो वह उस अवस्था को बरकरार नहीं रख पाता जो उसने बीमारी के दौरान भोगी थी और युवावस्था की उतावलेपन और बुढ़ापे की चंचल प्रकृति के कारण वह क्षीण हो जाता।

निष्कर्ष

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी असीम शक्ति और असीम दया को प्रदर्शित करने के लिए मनुष्य में असीम शक्तिहीनता और असीम अभाव को अंतर्निहित किया है। इसके अलावा, अपने नामों की अनंत कढ़ाई को प्रदर्शित करने के लिए, उसने मनुष्य को एक मशीन की तरह बनाया है जो असीमित प्रकार के दर्द और साथ ही अनंत प्रकार के सुख प्राप्त करने में सक्षम है। उस मानवीय मशीन के भीतर सैकड़ों यंत्र हैं, जिनमें से प्रत्येक में अलग-अलग दर्द और सुख, अलग-अलग कर्तव्य और पुरस्कार हैं। बस, दुनिया में प्रकट होने वाले सभी दिव्य नाम सूक्ष्म जगत यानी मनुष्य में भी प्रकट होते हैं। अच्छे स्वास्थ्य, कल्याण और सुख जैसे लाभकारी मामले मनुष्य को धन्यवाद देने और मानवीय मशीन को कई तरह से अपने कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं, और इस प्रकार मनुष्य धन्यवाद पैदा करने वाली फैक्ट्री की तरह बन जाता है।

[16] देखें, बहाक़ी, शुआब अल-इमान, iv, 263; खतीब अल-बगदादी, अल-जामी' ली-अखलाक अल-रवी वा अदब अल-सामी, आई, 212, 407।

इसी प्रकार, दुर्भाग्य, बीमारी और दर्द तथा अन्य गति-प्रेरक आकस्मिकताओं के माध्यम से, मानव मशीन के अन्य पुर्जे गति और क्रांति में लग जाते हैं।

मानव स्वभाव में निहित दुर्बलता, नपुंसकता और दरिद्रता की खान काम करने के लिए बनाई गई है। यह मनुष्य में ऐसी स्थिति उत्पन्न करती है, जिससे वह न केवल एक भाषा से, बल्कि अपने प्रत्येक अंग की भाषा से शरण और सहायता मांगता है। इस प्रकार उन आकस्मिकताओं के माध्यम से मनुष्य हजारों विभिन्न कलमों से मिलकर बनी चलती हुई कलम की तरह बन जाता है। वह अपने जीवन के पृष्ठ या समानताओं की दुनिया में पट्टिका पर अपने अस्तित्व के नियत मार्ग को अंकित करता है; वह ईश्वरीय नामों की घोषणा करता है; और स्वयं ईश्वर की महिमा का गान बन जाता है, इस प्रकार अपने स्वभाव के कर्तव्यों को पूरा करता है।

तीसरा फ्लैश

[इस फ्लैश में भावना और आध्यात्मिक आनंद एक सीमा तक मिश्रित हो गए हैं, और चूंकि उनका अतिरेक बुद्धि के सिद्धांतों या विचार के तराजू पर ज्यादा ध्यान नहीं देता है और न ही उनके अनुरूप है, इसलिए इसे तर्क के तराजू पर नहीं तौला जाना चाहिए।]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
हर चीज़ नष्ट हो जाएगी, परन्तु उसका चेहरा। उसी का आदेश है और उसी की ओर तुम्हें लौटना है। (28:88)

ये दो वाक्य, "हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं! * हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं!" दोनों ही उपरोक्त आयत का अर्थ व्यक्त करते हैं, और दो महत्वपूर्ण सत्य बताते हैं। इसी वजह से नक्शबंदी संप्रदाय के कुछ प्रमुखों ने वाक्यांशों की पुनरावृत्ति के आधार पर कुछ विशेष प्रार्थनाएँ संकलित कीं, और इसे नक्शी प्रार्थनाओं का एक संक्षिप्त सेट माना। यह देखते हुए कि दोनों वाक्य आयत के अर्थ को व्यक्त करते हैं, हम उनके द्वारा बताए गए महत्वपूर्ण सत्य के बारे में कई बिंदुओं को स्पष्ट करेंगे।

पहला बिंदु

पहली बार "हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं!" का उच्चारण किया जाता है, जैसे कि एक शल्य चिकित्सा
यह ऑपरेशन दिल को ईश्वर के अलावा हर चीज़ से अलग कर देता है। यह इस प्रकार है:

अपनी व्यापक प्रकृति के कारण मनुष्य लगभग सभी प्राणियों से जुड़ा हुआ है।
उसके स्वभाव में प्रेम करने की असीम क्षमता भी शामिल है। इन कारणों से वह सभी प्राणियों के प्रति प्रेम का पोषण करता है। वह विशाल संसार को अपने घर के समान प्रेम करता है और अनन्त स्वर्ग को अपने बगीचे के समान प्रेम करता है। लेकिन, वह जिन प्राणियों से प्रेम करता है, वे रुकते नहीं, विदा हो जाते हैं और वह निरंतर वियोग की पीड़ा सहता रहता है। उसका यह असीम प्रेम असीम पीड़ा का साधन बन जाता है।

हालाँकि, ऐसी पीड़ा सहने का दोष उसका है, क्योंकि उसे प्रेम करने की असीम क्षमता वाला हृदय दिया गया था ताकि वह उसे उस एक की ओर मोड़ सके जिसके पास असीम अमर सौंदर्य है। इसका दुरुपयोग करके और इसे क्षणभंगुर चीज़ों पर खर्च करके

प्राणियों के प्रति, उसने गलत काम किया है और अपनी गलती की सजा उसे अलगाव की पीड़ा के माध्यम से भुगतनी पड़ रही है।

इस प्रकार, जब वह पहली बार कहता है: "हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं!", तो यह क्षणभंगुर प्राणियों के प्रति उसकी आसक्ति को तोड़ देता है; वह प्रेम की उन वस्तुओं को छोड़ देता है इससे पहले कि वे उसे छोड़ दें और इस प्रकार वह अपने दोष से मुक्त हो जाता है। यह घोषणा करता है कि प्रेम को केवल अपने तक ही सीमित रखना चाहिए

शाश्वत प्रिय, और इस अर्थ को व्यक्त करता है: "आप एकमात्र प्राणी हैं जो टिकता है!

आपके अलावा बाकी सब कुछ क्षणभंगुर है। मेरा हृदय किसी भी क्षणभंगुर वस्तु से जुड़ नहीं सकता, क्योंकि इसे शाश्वत प्रेम के लिए बनाया गया था, ताकि अनंत काल से लेकर अनंत काल तक चलने वाला उत्साह महसूस किया जा सके। चूँकि वे असंख्य प्रियतम क्षणभंगुर हैं और वे मुझे छोड़कर चले जाते हैं, यह कहते हुए कि 'हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं!' मैं उन्हें छोड़ दूँगा इससे पहले कि वे मुझे छोड़ दें। केवल आप ही अमर हैं, और मैं जानता हूँ और मानता हूँ कि प्राणी केवल आपके द्वारा अमर बनाए जाने पर ही अमर हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में, उन्हें आपके प्रेम से प्यार किया जाना चाहिए। अन्यथा वे हृदय के स्नेह के योग्य नहीं हैं।"

इस अवस्था में जब मानव हृदय असंख्य प्रेम-वस्तुओं को त्याग देता है; तो उनकी सुन्दरता पर क्षणभंगुरता की छाप देखकर, उनसे अपनी आसक्ति तोड़ लेता है।

अन्यथा यह अपने कई प्रियजनों को घायल कर देता है। दूसरा "हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं!" उन घावों के लिए मरहम और मारक दोनों है। अर्थात्, "हे शाश्वत! चूँकि आप शाश्वत हैं, यही पर्याप्त है, आप हर चीज़ की जगह लेते हैं। चूँकि आप मौजूद हैं, इसलिए हर चीज़ मौजूद है!"

हां, प्राणियों में जो सौंदर्य, उदारता और पूर्णता है, जो प्रेम को उत्तेजित करती है, वे सामान्यतः उस परमपिता परमेश्वर के सौंदर्य, उदारता और पूर्णता के चिह्न हैं, और अनेक आवरणों से गुजरते हुए, वे उनकी फीकी छायाएं हैं; वास्तव में, वे उसके सबसे सुन्दर नामों के प्रकटीकरण की छायाओं की भी छायाएं हैं।

दूसरा बिंदु

मानव स्वभाव में अमरता का तीव्र प्रेम समाहित है। यहाँ तक कि, अपनी कल्पना शक्ति के कारण, मनुष्य हर उस चीज़ में अमरता की कल्पना करता है जिससे वह प्रेम करता है। जब भी वह उनके जाने के बारे में सोचता या देखता है, तो वह अपने अस्तित्व की गहराई से चिल्ला उठता है। वियोग में सभी विलाप अमरता के प्रेम के कारण होने वाले रोने की अभिव्यक्ति हैं। यदि कोई कल्पित अमरता न होती, तो कोई प्रेम भी नहीं होता। यह भी कहा जा सकता है कि अमरता के उस भावुक प्रेम से उत्पन्न अमरता की तीव्र इच्छा, और अमरता के लिए सहज सामान्य प्रार्थना, शाश्वत क्षेत्र और शाश्वत स्वर्ग के अस्तित्व का एक कारण है। महिमा के शाश्वत परमेश्वर ने मनुष्य की तीव्र, अडिग, सहज इच्छा और उसकी शक्तिशाली, प्रभावी, सामान्य प्रार्थना को स्वीकार किया, क्योंकि उसने उसके लिए एक शाश्वत क्षेत्र, एक क्षणभंगुर प्राणी का निर्माण किया।

क्या यह संभव है कि उदार और दयालु सृष्टिकर्ता छोटे से पेट की तुच्छ इच्छा और स्वभाव की जीभ के माध्यम से असंख्य स्वादिष्ट भोजन बनाकर अस्थायी अमरता के लिए उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर ले, और सभी मानव जाति की तीव्र इच्छा को स्वीकार न करे, जो एक प्रबल जन्मजात आवश्यकता से उत्पन्न होती है, और अमरता के लिए उसकी सार्वभौमिक, निरंतर, उचित, न्यायोचित प्रार्थना, जो शब्द और स्थिति के माध्यम से की जाती है? भगवान न करे, एक लाख बार! यह असंभव है कि वह इसे स्वीकार न करे। इसे स्वीकार न करना न तो उसकी बुद्धि, न ही उसके न्याय, न ही उसकी दया, न ही उसकी शक्ति के अनुरूप होगा।

चूँकि मनुष्य अमरता का सबसे अधिक इच्छुक है, इसलिए उसकी सभी सिद्धियाँ और सुख उसी पर निर्भर हैं। और चूँकि अमरता केवल महिमावान शाश्वत परमेश्वर के लिए है; और चूँकि शाश्वत परमेश्वर के नाम चिरस्थायी और अमर हैं; और चूँकि शाश्वत परमेश्वर के दर्पण शाश्वत परमेश्वर के रंग को धारण करते हैं, और उनके आदेश को प्रतिबिम्बित करते हैं, और एक प्रकार की अमरता को प्रकट करते हैं; इसलिए निश्चित रूप से मनुष्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात, उसका सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य, उस शाश्वत परमेश्वर के साथ संबंध बनाना और उसके नामों का पालन करना है। क्योंकि शाश्वत परमेश्वर के मार्ग पर व्यय की गई हर चीज़ एक प्रकार की अमरता प्राप्त करती है।

दूसरा वाक्य "हे सनातन, तू ही सनातन है!" इस सत्य को व्यक्त करता है। मनुष्य के असंख्य आध्यात्मिक घावों को ठीक करने के अलावा, यह उसके स्वभाव में निहित अमरता की तीव्र इच्छा को भी संतुष्ट करता है।

तीसरा बिंदु

इस संसार में, वस्तुओं पर तथा उनके बीत जाने पर समय का प्रभाव बहुत भिन्न होता है।
सभी प्राणी संकेन्द्रित वृत्तों की तरह एक दूसरे के भीतर समाहित हैं, फिर भी उनके मार्ग की गति के संबंध में उनमें भिन्नता है।

जिस प्रकार सेकण्ड गिनने वाली घड़ी की सुइयां, तथा मिनट, घंटे और दिन गिनने वाली सुइयां सतही तौर पर एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं, किन्तु उनकी गति में अंतर होता है, उसी प्रकार मनुष्य के शरीर, आत्मा, हृदय और मन के क्षेत्र भी एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।
उदाहरण के लिए, शरीर में अमरता, जीवन और अस्तित्व है, वर्तमान समय में भी, और यहाँ तक कि वर्तमान समय में भी, जबकि उसका भूतकाल और भविष्य मृत और अस्तित्वहीन है, लेकिन हृदय का अस्तित्व और जीवन का क्षेत्र वर्तमान दिन से कई दिन पहले से लेकर भविष्य के कई दिनों तक फैला हुआ है। फिर आत्मा का क्षेत्र विशाल है; इसका जीवन और अस्तित्व वर्तमान दिन से पहले के वर्षों से लेकर उसके बाद के वर्षों तक फैला हुआ है।

इस क्षमता के आधार पर - ज्ञान, प्रेम, तथा प्रभु और पालनहार ईश्वर की आराधना और उस परम दयालु की प्रसन्नता के संबंध में, जिससे हृदय और आत्मा का जीवन निकलता है - इस संसार में क्षणभंगुर जीवन अपने भीतर एक शाश्वत जीवन को समाहित करता है, जिसके परिणामस्वरूप एक शाश्वत जीवन होता है, और यह शाश्वत जीवन जैसा होता है।

हाँ, उस परमपिता परमेश्वर के प्रेम, ज्ञान और आनन्द के मार्ग पर एक क्षण भी एक वर्ष के समान है, अन्यथा एक वर्ष एक क्षण के समान है। उसके मार्ग पर एक क्षण भी अमर और अनेक वर्षों के समान है। इस संसार की ओर देखने वाले उपेक्षित लोगों के सौ वर्ष एक क्षण के समान हैं। एक प्रसिद्ध कहावत है: "एक क्षण का वियोग एक वर्ष का होता है, और एक वर्ष का मिलन एक क्षण में बीत जाता है।" मैं इसके ठीक विपरीत कहता हूँ: परमेश्वर के लिए एक क्षण का मिलन, जो अनन्त महिमावान परमेश्वर के आनन्द की सीमा में है, एक वर्ष के मिलन की नहीं, बल्कि स्थायी मिलन की खिड़की है। जबकि असावधानी और पथभ्रष्टता में व्यतीत एक वर्ष नहीं, बल्कि संभवतः एक हजार वर्ष एक क्षण में बीत जाते हैं। एक और प्रसिद्ध कहावत है जो इसकी पुष्टि करती है: "शत्रुओं के साथ विस्तृत पृथ्वी एक छोटे प्याले के समान है, जबकि मित्रों के साथ सुई की आँख एक विस्तृत मैदान बन जाती है।"

ऊपर दी गई पहली प्रसिद्ध कहावत का स्पष्ट अर्थ यह है: चूँकि क्षणभंगुर प्राणियों के साथ मिलन क्षणभंगुर है, चाहे वह कितना भी लंबा क्यों न हो, वह संक्षिप्त ही लगता है। ऐसे मिलन का एक वर्ष एक सेकंड जितना क्षणभंगुर होता है; यह एक भ्रम है, एक सपना है, जो पश्चाताप और दु:ख का कारण बनता है।
चूँकि मानव हृदय अमरता की कामना करता है, इसलिए वह एक वर्ष के मिलन में केवल एक सेकंड के अंश में ही सबसे छोटा सुख प्राप्त कर सकता है, और एक पल का वियोग एक वर्ष के समान नहीं बल्कि कई वर्षों के समान है। क्योंकि वियोग का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। चाहे एक सेकंड के लिए ही क्यों न हो, वियोग हृदय पर वर्षों का विनाश करता है, क्योंकि वह अनंत काल के लिए तरसता है। क्योंकि यह असंख्य वियोगों का संकेत देता है। जहाँ तक भौतिक और तुच्छ प्रेमों की बात है, उनके लिए अतीत और भविष्य वियोगों से भरा हुआ है।

इस विषय पर चर्चा करते हुए हम कहते हैं: हे मनुष्य! क्या तुम अपने संक्षिप्त और व्यर्थ जीवन को अमर, दीर्घ, लाभकारी और फलदायी बनाना चाहते हो? चूँकि ऐसी इच्छा मानवता की माँग है, इसलिए अपना जीवन उस सच्चे स्थाई परमेश्वर के मार्ग पर व्यतीत करो। क्योंकि जो कुछ भी उस शाश्वत परमेश्वर की ओर मुड़ता है, उसे अमरता की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है।

चूँकि हर कोई लंबे जीवन की तीव्र इच्छा रखता है और अमरता की लालसा रखता है; और चूँकि इस क्षणभंगुर जीवन को शाश्वत जीवन में बदलने का एक साधन है और इसे लंबा करना संभव है; निश्चित रूप से कोई भी व्यक्ति जिसने अपनी मानवता नहीं खोई है, वह साधन खोजेगा और संभावना को वास्तविकता में बदलने की कोशिश करेगा और उसके अनुसार कार्य करेगा। हाँ, साधन यह है: ईश्वर के लिए काम करो, ईश्वर के लिए दूसरों से मिलो, ईश्वर के लिए श्रम करो; "ईश्वर के लिए, ईश्वर के लिए, ईश्वर के कारण" की सीमाओं के भीतर कार्य करो।2 तब आपके जीवन के सभी क्षण वर्षों में बदल जाएँगे।

इस सत्य की ओर संकेत करते हुए क़ुरान की आयतों में कहा गया है कि एक रात जैसी
शक्ति की रात्रि एक हजार महीनों के बराबर है, अर्थात,

---

[1] देखें, इब्न अल-जावज़ी, अल-मुदख़िश, i, 385; अल-'अजलुनी, कशफ अल-खफा', द्वितीय, 246।

[2] देखें, तिर्मिज़ी, सुन्नत, 15; अबू दाउद, पुनरुत्थान, 60; मुसनद, iii, 438, 440.

लगभग अस्सी साल। समय का विस्तार, जो संतत्व और वास्तविकता के लोगों के बीच एक आजमाया हुआ सिद्धांत है, इस सत्य की ओर भी संकेत करता है। क्योंकि इसके रहस्य के माध्यम से, कुछ मिनटों का स्वर्गारोहण कई वर्षों में बदल गया और इस सत्य के अस्तित्व को साबित करता है और वास्तव में इसका प्रदर्शन करता है। पैगंबर (UWBP) के स्वर्गारोहण के कुछ घंटों की लंबाई, चौड़ाई और व्यापकता हजारों वर्षों की थी, क्योंकि इसके माध्यम से वह अनंत काल की दुनिया में प्रवेश कर गए, और उस दुनिया के कुछ मिनटों में इस दुनिया के हजारों साल शामिल हैं।

इसके अलावा, संतों द्वारा अनुभव की गई समय के विस्तार की अनेक घटनाएं इस सत्य पर आधारित हैं। ऐसा कहा जाता है कि उनमें से कुछ ने एक मिनट में एक दिन का काम किया, तो कुछ ने एक घंटे में एक साल का काम किया, जबकि कुछ ने एक मिनट में पूरी कुरान पढ़ ली। सत्य के ऐसे सच्चे लोग कभी भी जानबूझकर झूठ नहीं बोलेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने समय के विस्तार के तथ्य को ठीक से देखा था,3 जिसके बारे में कई बार और सर्वसम्मति से बताया गया है।

सपनों में समय के विस्तार का अनुभव होना एक प्रकार की बात है जिसकी पुष्टि सभी लोग करते हैं।
कभी-कभी एक मिनट के स्वप्न में घटित होने वाली घटनाओं, शब्दों, सुखों और पीड़ाओं का अनुभव करने के लिए जाग्रत जगत में एक दिन या कई दिन लग जाते हैं।

संक्षेप में: मनुष्य निश्चित रूप से क्षणभंगुर है, लेकिन उसे अमरता के लिए और शाश्वत परमेश्वर का दर्पण बनने के लिए बनाया गया था, और उसे ऐसे कर्तव्य सौंपे गए थे जो शाश्वत फल उत्पन्न करते हैं, और उसे एक ऐसा रूप दिया गया जो शाश्वत परमेश्वर के शाश्वत नामों की छाप को प्रकट करने का साधन है। ऐसी स्थिति में, उसका सच्चा कर्तव्य और खुशी अपनी सारी शक्तियों और क्षमताओं के साथ उस शाश्वत शाश्वत परमेश्वर के नामों से उन चीज़ों की सीमाओं के भीतर चिपके रहना है जो उसे प्रसन्न करती हैं; उसकी ओर मुड़ना और उसके पास जाना है। जैसे मनुष्य की जीभ कहती है "हे शाश्वत परमेश्वर, केवल आप ही शाश्वत हैं!", वैसे ही उसके हृदय, आत्मा, मन और उसकी सभी सूक्ष्म क्षमताओं को घोषित करना चाहिए:

"वह शाश्वत है! वह पूर्व-शाश्वत और पर-शाश्वत है! वह शाश्वत और शाश्वत है! वह वही है जिसे खोजा जाता है, प्रियतम! वह वही है जिसकी कामना की जाती है और जिसकी पूजा की जाती है!"

> पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह, तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है! (2:32)
>
> ऐ हमारे पालनहार! यदि हम भूल जाएँ या बुरा काम करें तो हमें न सज़ा दे । (2:282)

---

[3] आयतें, “उनमें से एक ने कहा: 'हम यहाँ कब तक रुके हैं?' उन्होंने कहा, 'हम एक दिन या एक दिन का हिस्सा रुके हैं,'" (18:19) और, "इस प्रकार वे अपनी गुफा में तीन सौ वर्ष रहे, और [कुछ] नौ [अधिक] जोड़ते हैं" (18:25) समय के पारगमन की ओर इशारा करते हैं, जबकि आयत, "वास्तव में आपके पालनहार की दृष्टि में एक दिन आपके हिसाब के एक हजार वर्षों के समान है" (22:47) समय के विस्तार की ओर इशारा करती है।

चौथा फ्लैश

इसका शीर्षक था , पैगंबर के आचरण का राजमार्ग
इस ग्रंथ के लिए उपयुक्त माना गया है।

[इमामत का प्रश्न गौण महत्व का मामला है, किन्तु इस पर अत्यधिक ध्यान दिए जाने के कारण, यह मानो विश्वास के मामलों में शामिल हो गया है और कलाम के विज्ञान तथा धर्म के सिद्धांतों द्वारा इसका निपटारा कर दिया गया है।1 यहाँ, आंशिक रूप से इस संबंध में तथा आंशिक रूप से कुरान तथा विश्वास के प्रति हमारे मूल कर्तव्यों के साथ इसकी प्रासंगिकता के संबंध में इस पर चर्चा की गई है।]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
अब तुम्हारे ही बीच से एक नबी आया है, उस पर बहुत बोझ है, ताकि तुम तकलीफ़ उठाओ। वह तुम्हारे लिए बड़ा चिंतित है और ईमानवालों पर दया और रहम करनेवाला है। * फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दो कि मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया है, और वही बड़े सिंहासन का पालनहार और पालनहार है। (9:128-9) कह दो कि मैं तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, सिवाय सगे- संबंधियों के प्रेम के। (42:23)

इन महिमामय श्लोकों में निहित अनेक विशाल सत्यों में से दो को हम दो स्थानों पर बताएंगे।

पहला स्टेशन

पहले स्टेशन में चार बिंदु हैं।

पहला बिंदु

यह ईश्वर के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अपने समुदाय के प्रति पूर्ण करुणा और दया का वर्णन करता है।

---

[1] अल-इजी, किताब अल-मवाक़िफ़, iii, 331; अहमद बी. मुहम्मद, किताब उसुल अल-दीन, 269, 279

विश्वसनीय कथनों के अनुसार, जब पुनरुत्थान के भय से नबियों सहित सभी लोग अपने लिए चिल्लाएँगे, तो ईश्वर के रसूल (UWBP) अपनी दया और करुणा2 को पुकार कर प्रदर्शित करेंगे: "मेरी कौम! मेरी कौम!"3 जैसा कि वास्तविकताओं को प्रकट करने वालों ने पुष्टि की है, जब वह पैदा हुए, तो उनकी माँ ने उनकी प्रार्थनाओं के बीच वही शब्द सुने।4 तब उनके जीवन का पूरा इतिहास, साथ ही साथ उन्होंने जो परोपकार सिखाया, वह उनकी संपूर्ण करुणा और क्षमाशीलता को प्रदर्शित करता है। साथ ही, अपने समुदाय की असंख्य प्रार्थनाओं5 के लिए एक असीम आवश्यकता को दर्शाकर, उन्होंने एक असीम करुणा दिखाई, क्योंकि उन्होंने दिखाया कि इसके कारण वह उन सभी की खुशी के बारे में चिंतित थे। इसलिए, आप समझ सकते हैं कि इतने दयालु और दयालु नेता के कार्यों का पालन न करना कृतज्ञता और विवेक की कितनी कमी है।

दूसरा बिंदु

अपने पैगम्बरत्व के सार्वभौमिक, सामान्य कर्तव्यों के बीच, ईश्वर के महान दूत (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने कुछ विशेष, छोटे मामलों में बहुत दया दिखाई। सतही तौर पर, ऐसे मामलों में उनका इतना दयालु व्यवहार पैगम्बरी मिशन के सर्वोच्च महत्व के लिए अनुपयुक्त लगता है। लेकिन वास्तव में, ऐसे छोटे मामले एक जंजीर के सिरे या नमूने थे जो पैगम्बरत्व के सार्वभौमिक, सामान्य कार्य को पूरा करने का साधन बनेंगे। इसलिए शक्तिशाली जंजीर की खातिर नमूने को सबसे अधिक महत्व दिया गया।

उदाहरण के लिए, ईश्वर के रसूल (यू.डब्लू.बी.पी.) ने बचपन में हसन और हुसैन के प्रति असाधारण सौम्यता दिखाई और उन्हें बहुत महत्व दिया।
यह केवल प्रेम और स्वाभाविक दयालुता और पारिवारिक भावना के कारण नहीं था, बल्कि इसलिए था क्योंकि वे प्रत्येक पैगम्बरी के पद के एक प्रकाशमान धागे की नोक थे, और एक महान महत्व के समुदाय के स्रोत, नमूना और सूचकांक थे, जिसे पैगम्बरी की विरासत प्राप्त होगी।

वास्तव में, रसूल (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) हसन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को कोमलता से अपनी बाहों में लेते थे और उनके सिर को चूमते थे7, ताकि उनसे उत्पन्न होने वाले उज्ज्वल, धन्य, महदी जैसे वंशजों की खातिर, जैसे शाह ग्यालानी, ग़ौथ अल-आज़म8, जो प्रो के उत्तराधिकारी होंगे।

---

[2] देखें, बुखारी, तौहीद, 32; मुसलमान, आस्था, 326.

[3] बुखारी, एकेश्वरवाद, 36; सूरह 17:5 पर टिप्पणी; फ़ितन, 1; मुस्लिम, ईमान, 326, 327; तिर्मिधि, पुनरुत्थान, 10; बीज, पैगम्बर, 8.

[4] देखें, सुयुति, अल-खासाईस अल-कुबरा, i, 80, 85, 91; अल-नभानी, हुज्जत अल्लाह 'अला-अल-अलामीन, 224, 227, 228।

[5] देखें, तिर्मिज़ी, पुनरुत्थान, 24।

[6] देखें, बुखारी, फ़दाएल अल-अशब, 22; मुस्लिम, फदा'इल अल-सहाबा, 56, 60।

[7] देखें, मुसनद, वी, 47; अल-तबरानी, अल-मुजम अल-कबीर, iii, 32; xx, 274.

[8] शेख 'अब्द अल-कादिर गिलानी, डी. 561/1165-6. कादिरी ऑर्डर के नामांकित संस्थापक। (ट्र.)

पैगंबर मुहम्मद के पवित्र शरीयत को कायम रखेंगे। उन्होंने पैगंबर की नज़र से देखा कि भविष्य में वे कौन सी पवित्र सेवाएं करेंगे और उनकी सराहना की।9 उन्होंने अनुमोदन और प्रोत्साहन के संकेत के रूप में हसन के सिर को चूमा।

इसके अलावा, उन्होंने हुसैन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को गले लगाया और ज़ैन अल-अबिदीन और जाफ़र अल-सादिक जैसे शानदार इमामों और असंख्य महदी जैसे चमकदार व्यक्तियों, नबीत्व के सच्चे उत्तराधिकारियों, जो उनकी उज्ज्वल वंशावली से उत्पन्न हुए थे, और इस्लाम धर्म और नबीत्व के पद के लिए उन्हें महत्व और कोमलता दिखाई।

चूँकि पैगम्बर मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) की दृष्टि और भविष्य को जानने की क्षमता ने अपने हृदय से अदृश्य के ज्ञान के साथ इस दुनिया में आनंद के युग से पुनरुत्थान की सभा को अनंत काल के बाद देखा, और धरती से स्वर्ग को देखा, और उन घटनाओं को देखा जो आदम के समय से घटित हुई थीं और अतीत के अंधेरे पर्दों में छिपी हुई थीं, और यहाँ तक कि सर्वशक्तिमान के दर्शन भी किए, तो उन्होंने निश्चित रूप से आध्यात्मिक ध्रुवों और इमामों को देखा जो नबूवत के उत्तराधिकारी होने वाले थे, और महदी, जो हसन और हुसैन की पंक्तियों का अनुसरण करेंगे। और निश्चित रूप से वह उन सभी के नाम पर उनके सिर चूमेंगे। हाँ, हसन के सिर को चूमने में शाह गेलानी का बहुत बड़ा हाथ है।

तीसरा बिंदु

एक व्याख्या के अनुसार, यह श्लोक:

> कह दो, "मैं तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, सिवाय सगे- संबंधियों के प्रेम के।" (42:23)

इसका अर्थ है: "ईश्वर के महान दूत (UWBP) दूत के कर्तव्यों को पूरा करने के लिए कोई इनाम नहीं चाहते हैं; वह केवल अपने परिवार के लिए प्यार चाहते हैं।"

अगर पूछा जाए: इसके अनुसार, ऐसा लगता है कि पारिवारिक रिश्ते से लाभ मिलता है। जबकि, अर्थ के अनुसार:

> अल्लाह के निकट तुममें सबसे अधिक सम्माननीय वह है जो सबसे अधिक डरपोक हो। (49:13)

क्या पैगम्बरत्व ईश्वर के साथ निकटता के सम्बन्ध में कार्य करता है, पारिवारिक सम्बन्धों के सम्बन्ध में नहीं?

उत्तर: अदृश्य को भेदने वाली अपनी दृष्टि से, ईश्वर के सबसे महान दूत (UWBP) ने देखा कि उनका परिवार इस्लाम की दुनिया में एक प्रकाश देने वाला वृक्ष बन जाएगा। यह उनके परिवार से ही होगा कि वे लोग जो इस्लाम की दुनिया के हर स्तर पर मानवीय उपलब्धि और पूर्णता का निर्देश देने वाले मार्गदर्शक और उपदेशक के रूप में कार्य करेंगे, उनमें से अधिकांश लोग होंगे।

---

[9] देखिये, इब्न माजा, पैगंबर, 11; मुसनद, iv, 172.

पंथ उभरेगा। उन्होंने भविष्यवाणी की कि उनके समुदाय द्वारा निर्धारित प्रार्थनाओं के अंतिम भाग में उनके परिवार के लिए की गई प्रार्थना: "हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद और हमारे स्वामी मुहम्मद के परिवार को आशीर्वाद प्रदान करें, जैसा कि आपने अब्राहम और अब्राहम के परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया था; वास्तव में, आप प्रशंसा के योग्य हैं, सबसे महान हैं"10 स्वीकार किया जाएगा। अर्थात्, जिस प्रकार अब्राहम के लोगों के बीच अधिकांश प्रकाशमान मार्गदर्शक अब्राहम के परिवार और वंश के पैगंबर थे,11

इसलिए उसने अपने समुदाय में अपने परिवार के आध्यात्मिक ध्रुवों को इस्लाम के महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन करते देखा, और अधिकांश मार्गों और सूफी आदेशों में, इसराइल के पैगम्बरों की तरह।12 इसलिए, कहने का आदेश दिया गया: "कहो: मैं तुमसे कोई प्रतिफल नहीं मांगता

करीबी रिश्तेदारों के प्यार को बचाओ," वह चाहते थे कि उनका समुदाय उनके परिवार से प्यार करे।

इस तथ्य की पुष्टि करने वाली कई कहानियाँ हैं। उन्होंने बार-बार कहा: "मैं तुम्हारे लिए दो चीज़ें छोड़ता हूँ। अगर तुम उनका पालन करोगे, तो तुम्हें मुक्ति मिलेगी: एक ईश्वर की किताब है, दूसरी मेरा परिवार है।"13 क्योंकि उनके परिवार के सदस्य उनके आचरण (सुन्नत) के स्रोत और संरक्षक थे और उन्हें हर तरह से उनका पालन करने का दायित्व सौंपा गया था। यही कारण है कि इस हदीस का उद्देश्य किताब और पैगंबर के आचरण का पालन करना था। यानी, संदेशवाहक के पद के संबंध में यह पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के आचरण थे जो उनके परिवार से मांगे गए थे। इसलिए कोई भी व्यक्ति जिसने अपने आचरण को त्याग दिया, वह वास्तव में उनके परिवार का सदस्य नहीं हो सकता था, न ही ऐसा व्यक्ति उनके लिए सच्चा दोस्त हो सकता था।

14

इसके अलावा, वह चाहता था कि उसका समुदाय उसके परिवार के इर्द-गिर्द इकट्ठा हो15 क्योंकि, ईश्वर की अनुमति से, वह जानता था कि समय के साथ यह बहुत बड़ी संख्या में हो जाएगा और इस्लाम कमज़ोर हो जाएगा। इसलिए लोगों का एक बहुत ही मज़बूत और बड़ा परस्पर सहायक समूह ज़रूरी था, जिसके ज़रिए इस्लामी दुनिया आध्यात्मिक और नैतिक रूप से आगे बढ़ सके, ईश्वर की अनुमति से। उसने इस बारे में सोचा और चाहा कि उसका समुदाय उसके परिवार के इर्द-गिर्द इकट्ठा हो।

वास्तव में, भले ही पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के परिवार के सदस्य आस्था और विश्वास के मामले में दूसरों से बहुत आगे न हों, फिर भी वे समर्पण, पक्षपात और पक्षपात के मामले में उनसे बहुत आगे थे। क्योंकि वे स्वभाव, जन्म और स्वभाव से इस्लाम के अनुयायी थे। भले ही प्राकृतिक पक्षपात कमज़ोर और अयोग्य हो, या अनुचित भी हो, लेकिन उसे उचित नहीं ठहराया जा सकता।

---

[10] बुखारी, अंबिया', 10; मुस्लिम, प्रार्थना, 65-6.

[11] देखें, इब्न अल-हजर, फतह अल-बारी, xi, 162।

[12] देखें, अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, iv, 384; अल-'अजलूनी, कशफ अल-खफा', ii, 83.

[१३] तिर्मिधि, मनाकिब, 31; मुसनद, iii, 14, 17, 26.

[14] देखें, अल-तबरानी, मुजम अल-अवसाद, iii, 338; अबू दाउद, फ़ितन, 2; मुसनद, द्वितीय, 133.

[15] देखें, अल-बज़ार, अल-मुस्नद, ix, 343; अल-तबरानी, अल-मुजम अल-कबीर, iii, 45-6; बारहवीं, 34.

तो क्या किसी व्यक्ति के लिए उस सत्य के लिए अपना समर्थन छोड़ना संभव होगा जिसके लिए उसके सभी पूर्वज - जो सबसे मजबूत, सबसे स्थिर और सच्चे और सबसे प्रतिष्ठित थे -
जिस सत्य से वे बंधे थे, और जिसके माध्यम से उन्होंने गौरव प्राप्त किया था, और जिसके लिए उन्होंने अपने जीवन का बलिदान दिया था, एक ऐसा सत्य जिसे व्यक्ति ने स्पष्ट रूप से इतना मौलिक और स्वाभाविक महसूस किया था?
इस प्रकार, इस तीव्र पक्षपात और स्वाभाविक समर्पण के कारण, पैगम्बर (यू.डब्लू.बी.पी.) के परिवार ने इस्लाम धर्म के पक्ष में किसी भी छोटे से संकेत को स्वीकार कर लिया, मानो वह एक शक्तिशाली प्रमाण हो। क्योंकि वे स्वभाव से पक्षपाती थे। अन्य लोग किसी शक्तिशाली प्रमाण के बाद ही पक्षपाती बनते हैं।

चौथा बिंदु

तीसरे बिन्दु के सम्बन्ध में हम संक्षेप में उस विषय की ओर संकेत करेंगे जिस पर शिया और सुन्नी दोनों ही पक्षों में विवाद रहा है और जिसे इस सीमा तक बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है कि उसे धर्मसिद्धान्त की पुस्तकों में, विश्वास के मूल सिद्धांतों में सम्मिलित कर लिया गया है।16

सुन्नी कहते हैं: “अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) सही मार्ग पर चलने वाले खलीफाओं में से चौथे थे। अबू बकर द वेरासी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) उनसे श्रेष्ठ थे और खिलाफत के अधिक हकदार थे, इसलिए यह पहले उनके पास आया।”17 जबकि शिया कहते हैं: “यह अली का अधिकार था। उनके साथ अन्याय हुआ। अली उन सभी में सबसे योग्य थे।” उनके दावों के लिए तर्कों का सारांश यह है। वे कहते हैं: “अली के बारे में पैगंबर (UWBP) की हदीसें,18 और उनके संतत्व के राजा की उपाधि के साथ उनका अधिकांश संतों और आध्यात्मिक मार्गों का मान्यता प्राप्त अधिकारी होना, और उनका असाधारण ज्ञान, साहस और पूजा, और पैगंबर (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) की उनके और उनके वंशजों के प्रति गहरी चिंता, ये सभी दिखाते हैं कि वे सबसे योग्य थे। खिलाफत हमेशा उनका अधिकार था; इसे उनसे छीन लिया गया।”

उत्तर: यह तथ्य कि अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने पहले तीन खलीफाओं का अनुसरण किया, जिन्हें उन्होंने बार-बार स्वीकार किया,19 और उनके शेख अल-इस्लाम का पद संभाला, शियाओं के इन दावों का खंडन करता है। इसके अलावा, पहले तीन खलीफाओं के समय में इस्लाम की जीत और उसके दुश्मनों के खिलाफ संघर्ष और अली के समय की घटनाएं, शियाओं के दावों का खंडन करती हैं, फिर से इस्लामी खिलाफत के दृष्टिकोण से। यानी सुन्नियों का दावा सही है।

अगर यह कहा जाए कि शिया दो प्रकार के हैं, संत शिया और संत शिया

---

[16] देखें, अल-तफ्ताज़ानी, शरह अल-अक़ाईद (तुर्क अनुवाद सुलेमान उलुदाग), 321।

[17] देखिए, अहमद बी. हनबल, अल-अकीदा, आई, 123; इब्न अबी 'इज़्ज़, शरह अकीदा अल-तहाविया, आई, 545, 548।

[18] तिर्मिधि, मनाकिब, 19; इब्न माजा, पैगंबर, 11; मुसनद, आई, 84, 118; चतुर्थ, 281.

[19] देखें, बुखारी, फदाएल असहाब, 5; अबू दाउद, सुन्ना, 7; मुसनद, मैं, 106।

खलीफात शिया। क्योंकि वे नफरत और राजनीति को मिलाते थे, इसलिए दूसरा समूह अन्यायी हो सकता था, लेकिन पहला समूह पक्षपातपूर्ण राजनीति से चिंतित नहीं था। हालाँकि, संतत्व शिया खलीफात शिया में शामिल हो गए। यानी, सूफी संप्रदायों के कुछ संत अली को श्रेष्ठ मानते थे और उन्होंने खलीफात शिया के दावों का समर्थन किया।

उत्तर: अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को दो पहलुओं से देखा जाना चाहिए। एक तो उनकी व्यक्तिगत पूर्णता और पद के दृष्टिकोण से, और दूसरा पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के परिवार के सामूहिक व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करने के दृष्टिकोण से। जहाँ तक इस सामूहिक व्यक्तित्व का सवाल है, यह परम महान रसूल (यूडब्ल्यूबीपी) के आवश्यक स्वभाव का एक पहलू प्रदर्शित करता है।

इस प्रकार, पहले बिंदु के संबंध में, सबसे पहले अली खुद और सभी सत्य के लोगों ने अबू बकर और उमर को प्राथमिकता दी।20 वे इस्लाम की सेवा और ईश्वर से निकटता में अपने पद को उच्चतर मानते थे। दूसरे बिंदु के लिए, पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के परिवार के सामूहिक व्यक्तित्व के प्रतिनिधि के रूप में, जो मुहम्मदी सत्य के एक पहलू का प्रतिनिधित्व करता है, अली का कोई समान नहीं है। अली के बारे में अत्यधिक प्रशंसनीय हदीसें21 इस दूसरे बिंदु को देखती हैं। एक ठोस कथन है जो इसकी पुष्टि करता है: नोबल मैसेंजर (यूडब्ल्यूबीपी) ने फैसला सुनाया: "प्रत्येक पैगंबर के वंशज खुद से हैं। मेरे वंशज अली के हैं।"22

अन्य तीन खलीफाओं की तुलना में अली की प्रशंसा करने वाली हदीसें इतनी व्यापक हो गई हैं, इसका कारण यह है कि सत्य के लोगों, यानी सुन्नियों ने उमय्यदों और खरिजियों द्वारा उन पर अन्यायपूर्ण तरीके से हमला करने और उनका अपमान करने के जवाब में उनके बारे में कई कहानियाँ फैलाईं। अन्य सही मार्ग वाले खलीफाओं को ऐसी आलोचना और निंदा का सामना नहीं करना पड़ा, इसलिए उनके बारे में हदीसों को फैलाने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं हुई।

इसके अलावा, पैगंबर (UWBP) ने भविष्यद्वाणी की दृष्टि से उन दुखद घटनाओं और आंतरिक कलह को देखा, जिसका सामना अली को भविष्य में करना था, और उन्हें निराशा से बचाने के लिए तथा उनके समुदाय को उनके बारे में नकारात्मक सोच से बचाने के लिए, उन्होंने उन्हें सांत्वना दी और अपने समुदाय को महत्वपूर्ण हदीसों के साथ मार्गदर्शन दिया जैसे कि "जिसका मैं मालिक हूँ, अली भी उसके मालिक हैं।"23

---

[20] देखें, अल-ग़ज़ाली, क़वायद अल-अक़ैद, i, 228; अल-कलाबाज़ी, अल-तारुफ़ ली-मधहब अहल तसव्वुफ़, आई, 57।

[21] तिर्मिधि, मनाकिब, 19; इब्न माजा, पैगंबर, 11; मुसनद, आई, 84, 118; चतुर्थ, 281.

[22] तबरानी, अल-मजमा अल-कबीर, संख्या: 2630; अल-हयथामी, मजमा अल-ज़वायद, x, 333; अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, 223, संख्या: 1717।

[23] तिर्मिधि, मनाकिब, 19; इब्न माजा, पैगंबर, 11; मुसनद, आई, 84, 118, 119, 152, 331; चतुर्थ, 281, 368, 370, 383; वी, 347, 366, 419; अल-कत्तानी, नज़्म अल-मुतानाथिर फ़िल-अहदीथ अल-मुतावातिर, 24; अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, vi, 218; इब्न हिब्बान, साहिह, ix, 42; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, द्वितीय, 130; iii, 134.

अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के प्रति शिया संतों का अत्यधिक प्रेम और सूफी संप्रदायों से प्रभावित होकर उन्हें श्रेष्ठ मानना, उन्हें खिलाफत शियाओं के स्तर के प्रति उत्तरदायी नहीं बनाता। क्योंकि जो लोग संतत्व के मार्ग पर चलते हैं, वे अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शकों की ओर प्रेम से देखते हैं, और प्रेम की निशानी अति है;24 वह अपने प्रिय को अपने पद से बड़ा देखना चाहता है। और वह उसे इसी तरह देखता है। प्रेम की अति को उन्मादियों द्वारा क्षमा किया जा सकता है। इसलिए उनके द्वारा अपने प्रेम के कारण अली को अधिक योग्य समझना इस शर्त पर क्षमा किया जा सकता है कि यह अन्य सही मार्ग वाले खलीफाओं का अपमान और उनके प्रति शत्रुता में न बदल जाए, और इस्लाम की मूल शिक्षाओं से परे न जाए।

जहाँ तक खिलाफत शियाओं का सवाल है, चूँकि राजनीतिक पूर्वाग्रह ने उन्हें जकड़ लिया था, इसलिए वे खुद को नफरत और आक्रामकता से मुक्त नहीं कर पाए, इसलिए उन्होंने माफ़ी मांगने का अधिकार खो दिया। यहाँ तक कि, “अली के प्यार के लिए नहीं, बल्कि उमर के प्रति नफरत के कारण” कहावत को पुष्ट करते हुए, चूँकि उमर के हाथों फ़ारसी राष्ट्रीय गौरव को चोट पहुँची थी25, इसलिए उन्होंने अली के प्रति प्रेम के रूप में अपना बदला दिखाया। इसी तरह, अम्र इब्न अल-अस द्वारा अली के विरुद्ध विद्रोह और उमर इब्न अल-साद द्वारा हुसैन के विरुद्ध दुखद युद्ध26 ने शियाओं में उमर के नाम के प्रति तीव्र क्रोध और शत्रुता पैदा की।

संत शिया को सुन्नियों की आलोचना करने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि सुन्नियों ने अली की निंदा नहीं की है, बल्कि वे उनसे सच्चे दिल से प्यार करते हैं। लेकिन वे हदीसों में खतरनाक बताए गए अत्यधिक प्रेम से बचते हैं।27 हदीसों में अली के अनुयायियों की पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) की प्रशंसा28 सुन्नियों को संदर्भित करती है। क्योंकि अली के अनुयायियों में सुन्नी ही हैं जो उनसे उदार तरीके से प्यार करते हैं और सत्य के लोग हैं। जिस तरह ईसा (उन पर शांति हो) से अत्यधिक प्रेम ईसाइयों के लिए खतरनाक है, उसी तरह हदीसों में यह स्पष्ट किया गया है कि अली के लिए इस तरह का अत्यधिक प्रेम खतरनाक है।

खतरनाक.29

यदि संतत्व शिया कहते हैं: "एक बार 'अली की संपूर्ण आध्यात्मिक उपलब्धियां स्वीकार किए जाने के बाद, अबू बकर सत्यवादी को वरीयता देना असंभव है।

जवाब: ऐसा लगता था जैसे अबू बकर की व्यक्तिगत परिपूर्णताएं,

---

[24] अबू दाउद, अदब, 113; मुसनद, वी, 194; हम, 450.

[25] देखें, इब्न साद, अल-तबक़त अल-कुबरा, vi, 12, 21; अल-तबारी, तारिख अल-उमाम वाल-मुलुक, iii, 283, 289।

[26] देखें, अल-तबरी, तारिख अल-उमाम वाल-मुलुक, iii, 298; इब्न कथिर, अल-बिदया वल-निहाया, आठवीं, 193.

[27] मुसनद, आई, 160; नसाई, अल-सुनन अल-कुबरा, वी, 137; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, iii, 132।

[28] अल-तबरानी, अल-मुजम अल-अवसाद, vi, 354; सातवीं, 343.

[29] बुखारी, तारिख अल-कबीर, द्वितीय, 257; अहमद इब्न हनबल, फदैल अल-सहाबा: 1087, 1221, 1222; अल-हेथामी, मजमा अल-ज़वायद, महिला, 133; इब्न अल-जावज़ी, अल-इलल इल-मुतानहिया, आई, 223।

सर्वोच्च सत्यनिष्ठ, और उमर, सत्य और असत्य के बीच सर्वोच्च अंतर करने वाले (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को उनके खिलाफत के दौरान उनकी उपलब्धियों के साथ एक तराजू के पलड़े में रखा गया था, जो पैगंबर (UWBP) से विरासत में मिले कर्तव्यों के प्रदर्शन के माध्यम से प्राप्त हुई थी, और दूसरे पलड़े में अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की असाधारण व्यक्तिगत परिपूर्णता के साथ आंतरिक खिलाफत संघर्षों को रखा गया था, जो उन दुखद घटनाओं के परिणामस्वरूप थे जिनमें उन्हें प्रवेश करने के लिए मजबूर किया गया था और जो संदेह और अविश्वास की वस्तु थे, और सुन्नियों ने देखा कि अबू बकर या उमर या उस्मान (जिल-नुरैयन) का पलड़ा भारी था, और इसलिए उन्होंने उन्हें वरीयता दी।

इसके अलावा, जैसा कि बारहवें और चौबीसवें शब्दों में साबित हुआ है, नबूवत को संतत्व की तुलना में इतना ऊंचा माना जाता है कि इसका एक छोटा सा रूप संतत्व के एक बड़े रूप से बेहतर है। इस संबंध में, सर्वोच्च सत्यनिष्ठ और सत्य और असत्य के बीच सर्वोच्च भेद करने वाले की अपनी खिलाफत के दौरान सफलताएं सुन्नियों के लिए एक संकेत थीं कि नबूवत की विरासत और इसके कानूनों की स्थापना में उनका हिस्सा ईश्वरीय रूप से प्रदान किया गया था। चूंकि अली की व्यक्तिगत परिपूर्णताएं उस बड़े हिस्से को खारिज नहीं करती थीं, जो पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) से विरासत में मिली थी, इसलिए उन्होंने अबू बकर और उमर, दो शानदार बुजुर्गों के लिए उनकी खिलाफत के समय में शेख अल-इस्लाम के रूप में कार्य किया और उनका सम्मान किया।

सुन्नी जो अली से प्यार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं, वे उन दो बुजुर्गों से प्यार और सम्मान क्यों नहीं कर सकते, जिनसे अली प्यार करते थे और जिनका ईमानदारी से सम्मान करते थे? आइए हम इस सच्चाई को एक उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट करें:

एक बहुत अमीर आदमी के बेटे को उसके पिता की विरासत से बीस बैटमैन31 चांदी और चार बैटमैन सोना दिया जाता है, और दूसरे को पाँच चांदी और पाँच सोना दिया जाता है। इसलिए यदि तीसरे को तीन चांदी और पाँच सोना दिया जाता है, तो निश्चित रूप से अंतिम दो को मात्रा में कम, लेकिन गुणवत्ता में अधिक मिलेगा। इस उदाहरण की तरह, ईश्वरीय तात्कालिकता के सत्य के सोने के दो बुजुर्गों के हिस्से की कम मात्रा, जो पैगंबरी की विरासत और उसके नियमों की स्थापना में प्रकट हुई थी, ईश्वरीय निकटता की महान मात्रा और संतत्व की पूर्णता से भारी होगी जो संतत्व के रत्न से उत्पन्न हुई थी। इन बिंदुओं को भी उन्हें तौलते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए। 32 लेकिन अगर उन्हें व्यक्तिगत साहस, ज्ञान और संतत्व के दृष्टिकोण से एक दूसरे के साथ तुलना की जाती है, तो मामला एक अलग रूप ले लेता है।

[30] देखें, बुखारी, फ़दाएल असहाब, 6; मुस्लिम, फ़दाएल अल-सहाबा, 15-16; तिर्मिधि, रूया, 9.

[३१] बैटमैन: 5-30 पाउंड तक का वज़न [ट्र.]

[32] देखें, तिर्मिधि, रूया, 10; अबू दाउद, सुन्ना, 8; मुसनद, वी, 44, 50।

इसके अलावा, पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के परिवार के सामूहिक व्यक्तित्व के संबंध में कोई तुलना नहीं हो सकती है, जिसका प्रतिनिधित्व अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के व्यक्तित्व में किया गया था, और मुहम्मदी सत्य, जो उस सामूहिक व्यक्तित्व में एक संपूर्ण विरासत के रूप में प्रकट हुआ था। क्योंकि इसमें खुद पैगंबर मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) का शक्तिशाली रहस्य निहित था।

जहाँ तक खिलाफत शियाओं का सवाल है, वे सुन्नियों के सामने शर्म के अलावा किसी और अधिकार का दावा नहीं कर सकते। हालाँकि वे कहते हैं कि उन्हें अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से बहुत प्यार है, लेकिन वे उनका अपमान करते हैं और उनके धर्म के अनुसार उन पर अनैतिकता का आरोप लगाना ज़रूरी है। क्योंकि वे कहते हैं कि हालाँकि अबू बकर और उमर अन्याय कर रहे थे, लेकिन अली ने उनके लिए समर्थन का दिखावा किया; शिया शब्दावली के अनुसार, उन्होंने दिखावा किया। यानी, वह उनसे डर गए और पाखंडी व्यवहार किया।33 लेकिन यह मानना प्यार नहीं है कि जो व्यक्ति इस्लाम का इतना बड़ा नायक था, जिसने अल्लाह के शेर की उपाधि प्राप्त की,34 और जो वफादारों का सेनापति और मार्गदर्शक था, वह डर और धोखे से उन लोगों के लिए प्यार का दिखावा कर रहा था जिनसे वह प्यार नहीं करता था, और बीस साल से ज़्यादा समय तक डर के मारे उनके लिए समर्थन का दिखावा कर रहा था और गलत काम करने वालों का अनुसरण कर रहा था। अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) इस तरह के प्यार से इनकार करेंगे।

इस प्रकार, सत्य के लोगों का धर्म किसी भी तरह से अली की निंदा नहीं करता, न ही उन पर अनैतिकता का आरोप लगाता है। यह उस जगह पर कायरता का आरोप नहीं लगाता, जहाँ इतनी हिम्मत थी, बल्कि यह कहता है कि अगर अली ने सही मार्ग पर चलने वाले खलीफाओं को सही नहीं माना होता, तो वह एक मिनट के लिए भी उन्हें नहीं पहचानते, न ही उनकी आज्ञा का पालन करते। इसका मतलब यह है कि चूँकि वह उन्हें सही और बेहतर समझते थे, इसलिए उन्होंने अपने साहस और प्रयास को न्याय के मार्ग पर छोड़ दिया।35

संक्षेप में: किसी भी चीज़ का बहुत ज़्यादा या बहुत कम होना अच्छा नहीं है। संयम ही बीच का रास्ता है36 और सुन्नियों ने इसे चुना है। लेकिन, अफ़सोस, ख़ारिज विचारों ने सुन्नियों में एक हद तक घुसपैठ कर ली है; राजनीति के दीवाने और कुछ नास्तिक भी अली की आलोचना करते हैं। वे कहते हैं, भगवान न करे, कि उन्हें राजनीति की समझ नहीं थी इसलिए वे पूरी तरह से खिलाफत के योग्य नहीं थे और शासन नहीं कर सकते थे, और इन अन्यायपूर्ण आरोपों के कारण, अलावी सुन्नियों से अपमानित महसूस करते हैं। जबकि सुन्नियों के पास ऐसे कोई सिद्धांत या बुनियादी विश्वास नहीं हैं जो ऐसे विचारों की आवश्यकता रखते हों। वास्तव में, वे इसके विपरीत साबित करते हैं। सुन्नी ऐसा नहीं कर सकते

[33] देखें, अल-रज़ी, इतिकाद फ़िराक अल-मुसलीमीन वाल-मुशरिकिन, मैं, 60, 61; इब्न तैमिया, मिन्हाज अल-सुन्ना, vi, 320।

[34] देखिए, अहमद बी. 'अब्दुल्ला अल-तबारी, अल-रियाद अल-नादिरा, आई, 245; ज़हैर अल-उकबा, मैं, 92।

[35] Ibn Abi al-Hadid, Sharh Nahj al-Balagha, i, 130-2.

[36] देखें, अल-बहाकी, शुआब अल-इमान, iii, 402; वी, 261; अल-'अजलुनी, कशफ अल-खफा', आई, 470।

खरिजी और नास्तिकों से आने वाले विचारों के कारण उनकी निंदा की जानी चाहिए। वास्तव में, सुन्नी, अलावियों की तुलना में अली के अधिक पक्के अनुयायी हैं। वे अपने सभी खुतबों और प्रार्थनाओं में अली का उल्लेख प्रशंसात्मक ढंग से करते हैं, जिसके वे हकदार हैं। और संतों और शुद्ध विद्वानों, जिनमें से अधिकांश सुन्नी संप्रदाय से संबंधित थे, ने उन्हें आध्यात्मिक मार्गदर्शक और संतत्व के राजा के रूप में मान्यता दी।37 अलावियों को खरिजी और नास्तिकों को नजरअंदाज करना चाहिए, जिन्होंने अलावियों और सुन्नियों दोनों की शत्रुता अर्जित की है, और सत्य के लोगों के खिलाफ पक्ष नहीं लेना चाहिए। कुछ अलावियों ने सुन्नियों के प्रति द्वेष के कारण पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) की सुन्ना को भी त्याग दिया। वैसे भी, हमने इस मामले पर बहुत कुछ कह दिया है, क्योंकि धार्मिक विद्वानों द्वारा इस पर अत्यधिक चर्चा की गई है।

हे सुन्नियों, जो सत्य के लोग हैं, और अलावियों, जिनका मार्ग पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के परिवार से प्रेम करना है! अपने बीच के इस अर्थहीन, विश्वासघाती, अन्यायपूर्ण और हानिकारक विवाद को जल्दी से समाप्त कर दो। अन्यथा नास्तिक धारा जो अब इतनी प्रभावशाली है, तुममें से एक को दूसरे के खिलाफ एक हथियार बना देगी, और एक को दूसरे को कुचलने के लिए इस्तेमाल करेगी। और एक को हराने के बाद यह हथियार को नष्ट कर देगी। ईश्वरीय एकता में विश्वास करने वालों के रूप में, यह आवश्यक है कि आप उन महत्वहीन मामलों को छोड़ दें जो विभाजन का कारण बनते हैं, क्योंकि आपके बीच सौ मौलिक पवित्र बंधन हैं जो भाईचारे और एकता को बढ़ावा देते हैं।

दूसरा स्टेशन

दूसरा स्टेशन आयत के दूसरे सत्य के बारे में होगा,

> फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, मैं उसी पर भरोसा करता हूँ, वही सिंहासन का पालनहार है।"
> सर्वोच्च!”(9:129)38

---

[37] देखें, इमाम रब्बानी, अल-मकतूबत, i, 134 (संख्या: 251)।

[38] दूसरे स्टेशन को ग्यारहवां फ्लैश नाम दिया गया।

*नोट: हमारे गुरु, हज़रत-ए-उस्ताद ने उनतीसवीं चमक के छठे अध्याय के फुटनोट में इन दो वाक्यांशों की व्याख्या में कहा, जो अरबी में है: "इन दो वाक्यांशों की डिग्री अरबी में लिखी गई थी क्योंकि वे बौद्धिक ज्ञान के बजाय भगवान का प्रतिबिंब और स्मरण हैं....." चौथी किरण, जिसे हस्बीये रिसालेसी कहा जाता है, "हमारे लिए भगवान पर्याप्त है, और वह मामलों का सबसे अच्छा निपटानकर्ता है" कविता के बारे में, बाद में तुर्की में लिखा गया था।

पांचवां फ्लैश

एक ग्रंथ लिखा जाना था जो पंद्रह डिग्री में इस आयत का अत्यधिक महत्वपूर्ण अर्थ समझाता, "हमारे लिए ईश्वर ही पर्याप्त है, और वह मामलों का सबसे अच्छा निपटारा करने वाला है," (3:173) लेकिन इसे अभी के लिए स्थगित कर दिया गया है क्योंकि यह वास्तविकता और बौद्धिक ज्ञान की तुलना में चिंतनशील विचार और ईश्वर की याद से अधिक संबंधित होगा। वास्तव में, पैगंबर के अभ्यास की सीढ़ी और नवाचार की बीमारी के लिए मारक नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ को मूल रूप से पांचवां फ्लैश के रूप में जाना जाता था, लेकिन चूंकि इसमें ग्यारह बिंदु शामिल थे, इसलिए इसे ग्यारहवां फ्लैश नामित किया गया था, और पांचवें फ्लैश का स्थान खाली रहा।

* * *

छठी फ्लैश

पुनः, पंद्रह या बीस डिग्री के चिंतनशील तरीके से कुरान की अनेक आयतों में वर्णित महत्वपूर्ण सत्य को स्पष्ट करने वाला एक ग्रंथ होना चाहिए था, जिसे इस वाक्यांश द्वारा व्यक्त किया गया था: "अल्लाह, जो सर्वोच्च, सर्वशक्तिमान है, के बिना कोई शक्ति और ताकत नहीं है।"1 ,

[2] पाँचवें फ्लैश की तरह, इसमें वे डिग्री शामिल थीं जिन्हें मैंने अपने अंदर महसूस किया था और आत्मा की यात्रा में ईश्वर के प्रतिबिंब और स्मरण के माध्यम से देखा था। इसलिए, चूँकि यह बौद्धिक ज्ञान और वास्तविकता से ज़्यादा रोशनी और आध्यात्मिक आनंद का साधन था, इसलिए इसे फ्लैश के अंत में शामिल करना उचित लगा, जो वास्तविकता के बारे में हैं, न कि उनके बीच।

---

[1] देखें, बुखारी, तहज्जुद, 21; नसाई, साहव, 83.
[2] ऊपर नोट देखें.

सातवां फ्लैश

[यह सूरा अल-फ़तह के अंत में अदृश्य के बारे में की गई सात प्रकार की भविष्यवाणियों के बारे में है।]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
वास्तव में ईश्वर ने अपने रसूल के लिए यह स्वप्न पूरा किया कि यदि ईश्वर ने चाहा तो तुम पवित्र मस्जिद में निश्चिंत होकर, सिर मुंडाकर, बाल छोटे करवाकर और बिना किसी भय के प्रवेश करोगे। क्योंकि वह वह जानता था जो तुम नहीं जानते थे, और इसके अतिरिक्त उसने तुम्हें शीघ्र ही एक विजय प्रदान की।
* वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा, ताकि उसे सभी धर्मों पर लागू करे, और एक गवाह के लिए अल्लाह ही काफ़ी है। * मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग उनके साथ हैं, वे इनकार करनेवालों पर प्रबल हैं, और आपस में दयावान हैं।

तुम देखोगे कि वे अल्लाह की कृपा और उसकी प्रसन्नता की कामना करते हुए झुकते और सजदा करते हैं। उनके चेहरों पर उनके सजदे के निशान हैं। तौरात में उनकी यही मिसाल है और इंजील में भी उनकी यही मिसाल है कि जैसे बीज अपनी टहनियाँ फैलाता है, फिर मज़बूत हो जाता है, फिर मोटा हो जाता है और अपने तने पर खड़ा हो जाता है। बीज बोनेवालों को आश्चर्य और प्रसन्नता से भर देता है। परिणामस्वरूप, यह अविश्वासियों को उनके प्रति क्रोध से भर देता है। अल्लाह ने उनमें से जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उनसे क्षमा और बड़े प्रतिफल का वादा किया है। (48:27-9)

सूरा अल-फ़तह की इन तीन आयतों में चमत्कार के कई पहलू हैं।
कुरान की चमत्कारिकता के दस सार्वभौमिक पहलू हैं; अदृश्य की खबर देने से संबंधित पहलू को इन तीन आयतों में सात या आठ तरीकों से देखा जा सकता है।

पहला

आयत के अंत में कहा गया है, "वास्तव में ईश्वर ने अपने रसूल के लिए जो स्वप्न देखा था, उसे पूरा किया" मक्का की विजय की निश्चित खबर उसके घटित होने से पहले ही दे दी गई थी। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी।[1]

[1] इब्न हिशाम, सीरत अल-नबविया, वी, 69; इब्न साद, अल-तबक़ात अल-कुबरा, द्वितीय, 139, 146।

दूसरा

"और उसने इसके अलावा, जल्द ही आने वाली जीत प्रदान की" यह दर्शाता है कि हालांकि हुदैबिया का युद्धविराम स्पष्ट रूप से इस्लाम के हितों के विपरीत था और कुरैश एक हद तक विजयी हुए, वास्तव में यह एक महान जीत थी और आगे की विजय की कुंजी थी। क्योंकि युद्धविराम के साथ भौतिक तलवार अस्थायी रूप से लटक गई थी, लेकिन कुरान की चमकती हीरे की तलवार खोल दी गई थी, और इसने दिमाग और दिलों पर विजय प्राप्त की। इसके परिणामस्वरूप, दोनों पक्ष एक दूसरे के साथ मिल गए। इस्लाम के गुणों और कुरान की रोशनी ने हठधर्मिता और कबीलाईवाद के परदे फाड़ दिए और जीत हासिल की। उदाहरण के लिए, खालिद इब्न अल-वालिद जैसे लोग, एक शानदार योद्धा, और 'अमर इब्न अल-अस, एक शानदार राजनीतिज्ञ, जो हार को स्वीकार नहीं कर सकते थे, हुदैबिया के युद्धविराम के माध्यम से प्रकट कुरान की तलवार से हार गए।2 उन्होंने मदीना में इस्लाम के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता में आत्मसमर्पण किया, और खालिद "अल्लाह की तलवार" बन गए; इस्लाम की विजय में एक तलवार।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न: क्या कारण था कि पवित्र रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथियों, जो विश्व के गौरव और सारे संसार के पालनहार के प्रिय हैं, को उहुद के अंत और हुनैन के आरम्भ में मूर्तिपूजकों ने पराजित कर दिया?

उत्तर: मूर्तिपूजकों में खालिद जैसे बहुत से लोग थे जो भविष्य में उस समय के प्रमुख सहाबा के बराबर होने वाले थे। इसलिए, भविष्य के दृष्टिकोण से उन्हें पूरी तरह से अपमानित न करने के लिए, जो उनके लिए गौरवशाली और सम्मानजनक होगा, ईश्वरीय ज्ञान ने उन्हें अतीत में उनके भविष्य के अच्छे कार्यों के लिए तत्काल प्रतिफल दिया और उनके गर्व को पूरी तरह से नष्ट नहीं किया। यानी, अतीत के सहाबा भविष्य के सहाबा से पराजित हुए, ताकि भविष्य के सहाबा चमकती तलवार के डर से नहीं बल्कि सच्चाई की चमक के लिए जोश के साथ इस्लाम में प्रवेश करें, और ताकि वे और उनकी स्वाभाविक वीरता कम न हो।

तीसरा

"और बिना किसी डर के" शब्द यह कहते हैं: "आप पूरी सुरक्षा के साथ काबा की परिक्रमा करेंगे।" हालाँकि उस समय अरब प्रायद्वीप के अधिकांश खानाबदोश लोग शत्रुतापूर्ण थे, और मक्का के अधिकांश परिवेश और कुरैश जनजाति के लोग शत्रु थे। भविष्यवाणी करके: "जल्द ही आप बिना किसी डर के काबा की परिक्रमा करेंगे," यह संकेत दे रहा था और

[2] इब्न हिशाम, सीरत अल-नबाविया, iv, 7; इब्न साद, अल-तबक़त अल-कुबरा, iv, 252।

[3] देखें, बुखारी, मग़ाज़ी, 54; जिहाद, 52, 61, 97, 167; मुस्लिम, जिहाद, 79; तिर्मिज़ी, जिहाद, 15.

भविष्यवाणी की गई थी कि अरब प्रायद्वीप आत्मसमर्पण कर देगा और सभी कुरैश इस्लाम में प्रवेश करेंगे और पूर्ण सुरक्षा स्थापित होगी। और यह सब ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी।4

चौथा

"वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य के धर्म के साथ भेजा, ताकि उसे सभी धर्मों पर घोषित किया जाए" पूरी निश्चितता के साथ भविष्यवाणी करता है कि महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) द्वारा लाया गया धर्म सभी धर्मों पर विजय प्राप्त करेगा। हालाँकि उस समय ईसाई धर्म, यहूदी धर्म और पारसी धर्म के करोड़ों अनुयायी थे और वे रोम, चीन और फारस जैसे विश्व-प्रमुख राज्यों के आधिकारिक धर्म थे, जिनके पास करोड़ों लोग थे, और अरब मुहम्मद अपने छोटे से कबीले को भी वश में करने में असमर्थ थे।

फिर भी यह भविष्यवाणी कर रहा है कि वह जो धर्म लेकर आया है, वह सभी धर्मों पर विजय प्राप्त करेगा और सभी राज्यों पर विजयी होगा। और यह सबसे स्पष्ट और स्पष्ट रूप से करता है। भविष्य ने इस भविष्यवाणी की पुष्टि की, इस्लाम की तलवार पूर्व में प्रशांत महासागर से पश्चिम में अटलांटिक महासागर तक फैली हुई है।

पांचवा

"मुहम्मद ईश्वर के रसूल हैं, और जो लोग उनके साथ हैं, वे अविश्वासियों के विरुद्ध दृढ़ हैं, [लेकिन] एक-दूसरे के प्रति दयालु हैं। तुम उन्हें झुकते और सजदा करते देखोगे।" इस आयत की शुरुआत में स्पष्ट रूप से उन उच्च गुणों और सद्गुणों की भविष्यवाणी की गई है, जिन्होंने पैगंबरों के बाद साथियों को मानव जाति में सबसे श्रेष्ठ बनाया। और सांकेतिक रूप से यह सही मार्ग पर चलने वाले खलीफाओं की ओर इशारा करता है, जो खिलाफत की संस्था के माध्यम से पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) की मृत्यु के बाद उनके पद पर आसीन होंगे, और उन बेहतरीन विशेषताओं5 की भविष्यवाणी करता है, जो उनमें से प्रत्येक को सबसे अलग करती थीं और उन्हें अलग पहचान देती थीं। यह इस प्रकार है:

"और जो लोग उसके साथ हैं" अबू बकर द वेरियस की ओर इशारा करता है, जो पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के विशेष अनुयायियों और उनकी बातचीत में शामिल होने के कारण प्रतिष्ठित थे, और फिर से उनके विशेष अनुयायियों में शामिल होने के कारण सबसे पहले मरने वाले थे। जबकि "काफिरों के खिलाफ मजबूत हैं" उमर की ओर इशारा करता है, जो भविष्य में अपनी विजयों से दुनिया के देशों को कांपने पर मजबूर कर देगा, और अपने न्याय से अत्याचारियों पर वज्र की तरह बरसेगा। और "एक दूसरे के बीच दयालु" उस्मान की खबर देता है, जो भविष्य में जब सबसे गंभीर मतभेद भड़क रहे थे, तो अपने पूर्ण जीवन से अपने जीवन और आत्मा का बलिदान कर देंगे

---

[4] इब्न हिशाम, सीरत अल-नबविया, वी, 69; इब्न साद, अल-तबक़त अल-कुबरा, द्वितीय, 139, 146।

[5] देखिए, अहमद बी. हनबल, फ़ादाइल अल-सहाबा, i, 434; बघावी, मालिम अल-तंज़िल, iv, 206।

मुसलमानों का खून न बहाया जाए, इसलिए दया की भावना रखते हुए उन्होंने कुरान पढ़ते हुए गलत तरीके से शहीद होना पसंद किया। और "आप उन्हें [प्रार्थना में] झुकते और सजदा करते हुए देखेंगे, ईश्वर से कृपा और [उसकी] प्रसन्नता की कामना करते हुए" यह बताता है कि खिलाफत और शासन संभालने की उनकी पूरी योग्यता, और उनकी वीरता, और उनके द्वारा पूर्ण तपस्या, पूजा, गरीबी और मितव्ययिता को चुनने, और जिनके झुकने और प्रार्थना में सजदा करने की सभी ने पुष्टि की, 'अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) भविष्य में अपनी स्थिति और उन युद्धों और झगड़ों के लिए जिम्मेदार नहीं थे जिनमें वे शामिल थे, और उनका इरादा और इच्छा ईश्वरीय कृपा के लिए थी।

छठी

वाक्यांश, “यह टोरा में उनकी समानता है” के बारे में भविष्यवाणियां करता है
अदृश्य को दो प्रकार से:

पहला: यह तौरात में वर्णित साथियों के उन गुणों का हवाला देता है, जो पैगंबर (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) जैसे एक अनपढ़ व्यक्ति के लिए अदृश्य दुनिया से संबंधित थे। हाँ, जैसा कि उन्नीसवें पत्र में वर्णित है, तौरात में पैगंबर के साथियों के बारे में निम्नलिखित पंक्तियाँ हैं जो समय के अंत में आने वाले थे: "पवित्र लोगों के झंडे उनके साथ हैं।"6 अर्थात्, उनके साथी पवित्र उपासक और धर्मी संत होंगे, इसलिए उन्हें "पवित्र लोग" यानी "पवित्र" के रूप में वर्णित किया गया है। तौरात को कई भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से भ्रष्ट किया गया है, फिर भी इसकी कई आयतों के साथ यह अभी भी सूरा अल-फ़तह के शब्दों की पुष्टि करता है, "यह तौरात में उनकी समानता है।"

अदृश्य की खबर देने का दूसरा पहलू यह है: इस वाक्य से यह भविष्यवाणी की जा रही है कि सहाबा और उनके बाद आने वाली पीढ़ी इबादत की ऐसी हद हासिल करेगी कि उनकी रूह की चमक उनके चेहरों पर चमकेगी और उनके माथे पर निशान साफ दिखाई देंगे, जैसे कि उनके बार-बार सजदे करने से संतत्व की मुहर लग जाती है। और वाकई भविष्य ने इसे पूरी स्पष्टता और निश्चितता के साथ शानदार ढंग से साबित कर दिया। उस अजीबोगरीब मतभेद और राजनीतिक उथल-पुथल में फंसे कई प्रमुख व्यक्तियों ने "यह तौरात में उनकी मिसाल है" के रहस्य को प्रदर्शित किया, जिन्होंने ज़ैन अल-अबिदीन की तरह दिन-रात एक हज़ार रकात की नमाज़ें अदा कीं और तवस अल-यमानी की तरह पिछली शाम के वुज़ू के साथ सुबह की नमाज़ अदा की।

---

[6] व्यवस्थाविवरण, 33:2; हलाबी, अल-सीरत अल-हलाबिया, आई, 218; यूसुफ़ नभानी, हुज्जत अल्लाह 'अला'एल-
'पता करो, 113.

[7] देखें, ग़ज़ाली, इह्या 'उलूम अल-दीन, i, 359; अल-धाहाबी, सियार आलम नुबाला', iv, 547।

सातवां

"और सुसमाचार में उनकी उपमा है: एक बीज की तरह जो अपनी पत्तियाँ फैलाता है, फिर उन्हें मज़बूत बनाता है; फिर वह मोटा हो जाता है, और अपने तने पर खड़ा हो जाता है, जिससे बोने वाले आश्चर्य और खुशी से भर जाते हैं। नतीजतन, यह अविश्वासियों को उनके प्रति क्रोध से भर देता है।" ये वाक्यांश दो तरह से अदृश्य की खबर देते हैं:

पहली भविष्यवाणी सुसमाचार में साथियों के बारे में की गई है, जो
अनपढ़ पैगंबर (UWBP) अदृश्य दुनिया से संबंधित थे।

जी हाँ, सुसमाचार में ऐसी आयतें हैं जैसे, “उसके पास लोहे की लाठी है, और उसका समुदाय उसके समान है”8 जो उस पैगम्बर का वर्णन करती हैं जो समय के अंत में आने वाला था।
अर्थात्, एक ऐसा पैगम्बर आएगा जो ईसा (यू.डब्लू.पी.) के विपरीत तलवार चलाएगा और जिहाद छेड़ने का आरोप लगाएगा, जैसा कि उसके साथियों पर भी होगा। "लोहे की छड़ी" धारण करने वाला व्यक्ति दुनिया का शासक होगा। क्योंकि सुसमाचार में एक अन्य स्थान पर यह कहा गया है: "मैं जा रहा हूँ ताकि दुनिया का शासक आए।"9 अर्थात्, दुनिया का शासक आएगा। इस प्रकार सुसमाचार में इन दो आयतों से यह समझा जा सकता है कि शुरू में साथी कम और कमज़ोर होंगे, फिर भी वे बीज की तरह अंकुरित होंगे, बढ़ेंगे, घने होंगे और ताकत पाएंगे। फिर जब अविश्वासियों के क्रोध से अभिभूत और दमित होने वाले थे, तो वे अपनी तलवारों से मानव जाति को वश में कर लेंगे और साबित करेंगे कि रसूल (यू.डब्लू.बी.पी.), उनके नेता, दुनिया के शासक थे। ये आयतें सूरा अल-फ़तह की उपरोक्त आयतों के अर्थ को बिल्कुल व्यक्त करती हैं।

दूसरा पहलू: आयतें निम्नलिखित भविष्यवाणी करती हैं: अपनी कमज़ोरी और कम संख्या के कारण साथियों ने हुदैबिया के समझौते को स्वीकार कर लिया, लेकिन थोड़े समय में ही वे बड़े हो गए और इतनी ताकत और ऊँचाई हासिल कर ली कि धरती के चेहरे पर सत्ता के हाथ से लगाए जाने पर वे सबसे ऊँचे, शक्तिशाली, फलदायी और भरपूर तरीके से बढ़े। यह उस समय की मानव जाति की शाखाओं की तुलना में सच था, क्योंकि ये बाद की उपेक्षा और लापरवाही के कारण छोटी, कमज़ोर, दोषपूर्ण और कम थीं। साथी इतने शक्तिशाली हो गए कि महान सरकारें ईर्ष्या, जलन और क्रोध में उन पर भड़क उठीं। भविष्य ने इस भविष्यवाणी को सबसे शानदार तरीके से सत्यापित किया।

भविष्यवाणी में आगे यह हल्का सा संकेत भी दिया गया है: यह शब्द "क्षमा" के माध्यम से संकेत देता है कि, यद्यपि साथियों के उत्कृष्ट गुणों की प्रशंसा करते समय उन्हें सबसे बड़े पुरस्कारों का वादा किया जाना चाहिए था, भविष्य में वे झगड़े के कारण गंभीर गलतियाँ करेंगे।

---

8 नभानी, हुज्जत अल्लाह 'अला'एल-अलामीन, 99, 114।

9 यूहन्ना, 16:7; हलाबी, अल-सीरत अल-हलाबिया, आई, 214।

क्षमा दोषों के अस्तित्व को इंगित करती है। उस समय यह क्षमा होगी, सबसे बड़ी कृपा, जिसे सहाबा चाहेंगे। सबसे बड़ा पुरस्कार दंड का अभाव होगा, क्षमा के लिए धन्यवाद। शब्द "क्षमा" दोनों इस सूक्ष्म संकेत को बनाता है, और यह सूरा की शुरुआत में आयत से जुड़ा हुआ है, "ताकि ईश्वर तुम्हारे पिछले और आने वाले दोषों को क्षमा कर दे।" (48:2) सूरा की शुरुआत में क्षमा की खुशखबरी देकर सच्चे पापों के लिए नहीं, क्योंकि रसूल (यूडब्ल्यूबीपी) पाप से मुक्त थे और उन्होंने उन्हें नहीं किया था, लेकिन नबी के पद के अनुरूप अर्थ के लिए, और सूरा के अंत में सहाबा के लिए क्षमा की खुशखबरी देकर, यह संकेत में एक और सूक्ष्मता जोड़ता है।

सूरह अल-फ़तह के आख़िर में ऊपर बताई गई तीन आयतों में मौजूद चमत्कारों के दस पहलुओं में से हमने यहाँ सिर्फ़ ग़ैब के बारे में भविष्यवाणियों से जुड़े पहलू पर चर्चा की है और उस पहलू के कई हिस्सों में से सिर्फ़ सात पर। आख़िरी आयत के अक्षरों की स्थिति में चमत्कारों की झलक छब्बीसवें शब्द के आख़िर में दिखाई देती है, जो ईश्वरीय निर्णय और मनुष्य की इच्छाशक्ति के बारे में है। यह आख़िरी आयत अपने वाक्यों के ज़रिए सहाबा की ओर देखती है और अपने शब्दों और अक्षरों के ज़रिए उनकी स्थितियों की ओर देखती है; इसी तरह अक्षरों की संख्या की पुनरावृत्ति के ज़रिए यह बद्र, उहुद, हुनैन, बेंच और रिदवान जैसे मशहूर सहाबा की श्रेणियों की ओर इशारा करती है। इसके अलावा, यह 'संयोगों' और अबजद गणना के ज़रिए कई और रहस्यों को व्यक्त करती है, जो जाफ़र के विज्ञान की शाखाएँ और इसकी कुंजियाँ हैं।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

[10] देखिए, अहमद बी. हनबल, फ़ादाइल अल-सहाबा, i, 434; इब्न अल-जौज़ी, ज़ाद अल-मसिर, vii, 446; सुयुति, अल-दुर्र अल-मंथूर, vii, 544; अलुसी, रूह अल-मानी, xxvi, 129; बघावी, मालिम अल-तंज़िल, iv, 206।

[सूरा अल-फ़तह के अंत में आयतों के सांकेतिक अर्थों द्वारा इंगित अदृश्य के संबंध में इन जैसी भविष्यवाणियों पर यहां संक्षेप में चर्चा की जाएगी, उनके सांकेतिक अर्थों के संबंध में भी।]

एक उपसंहार

और हमें उन्हें सीधा मार्ग दिखा देना चाहिए था। * जो लोग अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं, वे उन लोगों में से हैं जिन पर अल्लाह की कृपा है - अर्थात् नबियों, सच्चे लोगों, गवाहों [या शहीदों] और धर्मी लोगों में से: और ये लोग कितने अच्छे लोग हैं! (4: 68-9)

हम इन श्लोकों की व्याख्या करने वाले हजारों सूक्ष्म बिंदुओं में से दो पर प्रकाश डालेंगे।

पहला बिंदु

जिस तरह से कुरान की चमत्कारी व्याख्या अपने स्पष्ट, स्पष्ट अर्थों और भावों के माध्यम से सत्य को व्यक्त करती है, उसी तरह यह अपनी शैली और व्याख्या के तरीके के माध्यम से कई सांकेतिक अर्थों को व्यक्त करती है। इसकी प्रत्येक आयत में अर्थों के कई स्तर समाहित हैं।

कुरान सर्वव्यापी ज्ञान से आगे बढ़ता है, इसलिए इसके सभी अर्थ अभिप्रेत हो सकते हैं। इसके अर्थ मनुष्य की वाणी की तरह एक या दो तक सीमित नहीं हैं, जो उसके सीमित दिमाग और व्यक्तिगत इच्छा का उत्पाद है।

इसके परिणामस्वरूप, कुरान की आयतों में निहित अनगिनत सत्यों को कुरान के टीकाकारों द्वारा व्याख्यायित किया गया है, और बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन्हें उनके द्वारा व्याख्यायित नहीं किया गया है। इसके स्पष्ट अर्थों के अलावा, विशेष रूप से इसके अक्षरों और इसके संकेतों में बहुत महत्वपूर्ण ज्ञान निहित है।

दूसरा बिंदु

“पैगम्बरों, सच्चे लोगों, गवाहों [या शहीदों] और धर्मी लोगों के बारे में: और ये कितने अच्छे लोग हैं!” शब्दों के साथ, यह आयत सीधे मार्ग के लोगों और नबियों के समूहों, सच्चे लोगों के कारवां, शहीदों के समुदाय, धर्मी लोगों के वर्ग और उनका अनुसरण करने वालों का वर्णन करती है।

ये मानवजाति के वे सदस्य हैं जो वास्तव में दिव्य वरदान प्राप्त करते हैं।
इसके अलावा, इस्लाम की दुनिया में उन पाँच समूहों में से सबसे उत्तम को स्पष्ट रूप से इंगित करते हुए, यह उनकी प्रसिद्ध विशेषताओं का उल्लेख करके उनके नेताओं और प्रमुखों को भी इंगित करता है।

यह पुस्तक, चमत्कार की झलक के साथ अदृश्य की खबर देती है, तथा यह भविष्य में उन प्रमुखों की स्थिति के बारे में एक पहलू को निर्दिष्ट करती है।

हां, “पैगंबरों में से” का मतलब स्पष्ट रूप से रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) से है, और “सत्यवादी” का मतलब अबू बकर सत्यवादी से है। यह यह भी संकेत देता है कि वह रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) के बाद दूसरे नंबर पर होगा और उनके बाद सबसे पहले आएगा, और सत्यवादी के विशेष शीर्षक से जाना जाएगा और सभी ईमानदार और ईमानदार लोगों के बीच सबसे आगे देखा जाएगा। फिर “गवाहों [या शहीदों]” का मतलब उमर, उस्मान और अली (भगवान उन सभी से प्रसन्न हों) से है। यह संकेत देता है कि सत्यवादी के बाद वे तीनों खिलाफत के उत्तराधिकारी बनेंगे, और वे तीनों शहीद हो जाएंगे और शहादत के गुण उनके अन्य गुणों में जुड़ जाएंगे।

"धर्मी" का तात्पर्य बेंच के साथियों और बद्र और रिदवान जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों से है। जबकि इसके स्पष्ट अर्थ के साथ, "और ये कितने अच्छे लोग हैं!" दूसरों को उनका अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है, और इसके निहित अर्थ के साथ, उनके बाद आने वाली पीढ़ी को सम्मानित और प्रतिष्ठित दिखाता है, यह हसन (भगवान उनसे प्रसन्न हों) की ओर इशारा करता है, जिन्होंने पांचवें खलीफा के रूप में हदीस की पुष्टि की "मेरे बाद खिलाफत तीस साल तक चलेगी"1 - इसकी संक्षिप्त अवधि के बावजूद इसके महान मूल्य को दिखाने के लिए।

संक्षेप में: सूरा अल-फ़तह के अंत में आयतों की तरह, जो चार सही मार्गदर्शित खलीफ़ाओं की ओर देखते हैं, उनकी पुष्टि करते हैं, ये आयतें आंशिक रूप से और संकेतात्मक रूप से उनके भविष्य की स्थिति को इस तरह से देखती हैं कि वे अदृश्य की खबर देती हैं। इस तरह की चमत्कारिकता की झलकियाँ, अदृश्य के बारे में तथ्यों का खुलासा, जो कुरान की चमत्कारिकता का एक प्रकार है, इतनी अधिक हैं कि उनकी गणना नहीं की जा सकती। शाब्दिक विद्वान अपनी सतही दृष्टि के कारण उन्हें चालीस या पचास आयतों तक सीमित रखते हैं, लेकिन वास्तव में उनकी संख्या एक हज़ार से भी ज़्यादा है। कभी-कभी एक ही आयत में अदृश्य की खबर देने वाले चार या पाँच पहलू होते हैं।

ऐ हमारे पालनहार! यदि हम भूल जाएँ या बुरा काम करें तो हमें न सज़ा दे । (2:286)
पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

---

[1] अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, iii, 509; इब्न 'अब्द अल-बर्र, अल-तमहिद, viii, 67. यह भी देखें, तिर्मिधि, फ़ितन, 48; मुसनद वि, 220. 221; अल-'अल्बानी, साहिह जामी' अल-सगीर, संख्या: 3336।

दूसरा स्पष्टीकरण
उपरोक्त पोस्टस्क्रिप्ट1

सूरा अल-फ़तह के अंत में अदृश्य के बारे में भविष्यवाणियों की पुष्टि करने के अलावा, यह आयत, "सभी ... उन लोगों की संगति में हैं जिन पर ईश्वर की कृपा है -

नबियों, सच्चे, गवाहों और धर्मी लोगों की: ये कितने अच्छे लोग हैं!" (4:69) में स्पष्ट किया गया है कि सीधे मार्ग के लोगों और आयत "उन लोगों का मार्ग जिन्हें आपने आशीर्वाद दिया है" (1:7) का क्या मतलब है और अनंत काल की ओर जाने वाले लंबे रास्ते पर यात्रा करने वाले चमकदार, बड़े, परिचित, आकर्षक कारवां का वर्णन करता है। यह विश्वासियों और बुद्धिमानों से इसमें शामिल होने, इसका अनुसरण करने और साथ चलने का जोरदार आग्रह करता है। अपने स्पष्ट अर्थ के अलावा, सूरा अल-फ़तह के अंत में आयतों की तरह, यह आयत सांकेतिक और आलंकारिक अर्थों के माध्यम से संकेत देती है - जिसे बयानबाजी और मुस्ततबात अल-तरकीब3 कहा जाता है - चार सही मार्ग वाले खलीफाओं और मारीद अल-कलाम

2

हसन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो), पाँचवें खलीफ़ा। यह कई मायनों में अदृश्य के बारे में खबर देता है, जो इस प्रकार है:

जैसा कि उपरोक्त आयत अपने स्पष्ट अर्थ के माध्यम से बताती है कि नबियों का कारवां, सच्चाइयों का समूह, शहीदों और गवाहों का समुदाय, धर्मियों की श्रेणी और साथियों के बाद की पीढ़ी का वर्ग सीधे मार्ग के लोग हैं और मानव जाति में से वे लोग हैं जो उच्च ईश्वरीय उपहार प्राप्त करते हैं, और 'भलाई करने वाले' हैं; इसी तरह यह अदृश्य की भविष्यवाणी करते हुए यह भी संकेत करता है कि उन समूहों में से सबसे अच्छे और सबसे उत्कृष्ट लोग इस्लाम की दुनिया में पाए जाते हैं, जैसे: यह पैगंबरों के उत्तराधिकारियों की ओर संकेत करता है जो अंत के समय के दूत (UWBP) की नबूवत की विरासत के रहस्य के माध्यम से उत्तराधिकार में आते हैं, और सत्यनिष्ठों के कारवां की ओर जो पूर्ण सत्यनिष्ठ की सत्यता के स्रोत का अनुसरण करते हैं, और शहीदों के काफिले की ओर, जो शहादत के पद के माध्यम से तीन सही मार्ग वाले खलीफाओं से बंधे हैं, और धर्मी लोगों के समुदाय की ओर, जो "और जो लोग विश्वास करते हैं और अच्छे कर्म करते हैं" (2:82, आदि) के रहस्य के माध्यम से इससे बंधे हैं

---

[1] मेरे भाइयों ने दोनों स्पष्टीकरण लिख लिए हैं, क्योंकि उन्हें वे उपयोगी लगे।
उनमें से पर्याप्त होता।

[2] देखें, इब्न मंज़ूर, लिसान अल-अरब, vii, 183; कुर्तुबी, अल-जामी' द्वि-अहकाम अल-कुरान, x, 191, 199।

[3] देखें, इब्न हजर, फत अल-बारी, i, 406; अल-मुनावी, अल-तारीफ, आई, 32, 55; अल-हमावी, अल-अदानत अल-अदब, द्वितीय, 194।

सहाबा, जो इस रहस्य का प्रतिनिधित्व करते थे कि "कहो: यदि तुम ईश्वर से प्रेम करते हो, तो मेरे पीछे आओ: ईश्वर तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे पापों को क्षमा करेगा; क्योंकि ईश्वर अति क्षमाशील, दयावान है" (3:31) और सहाबा और सही मार्ग पर चलने वाले खलीफाओं की संगति में थे। इसी तरह, इसके सांकेतिक अर्थ के माध्यम से, यह विशेषण "और सत्यवादी" के माध्यम से समाचार देता है कि अबू बकर सत्यवादी उनके बाद महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) के पद पर आसीन होंगे, और खलीफा होंगे, जो मुस्लिम समुदाय में सत्यवादी शीर्षक के साथ प्रसिद्ध होंगे, और सत्यवादी के कारवां के प्रमुख होंगे। "शहीदों" वाक्यांश के साथ यह तीन सत्यवादी खलीफाओं की शहादत की भविष्यवाणी करता है, और सत्यवादी के बाद तीन शहीद खलीफा होंगे। क्योंकि "शहीद (शुहादा)" बहुवचन है और बहुवचन की सबसे छोटी संख्या [अरबी व्याकरण में] तीन है। इसका मतलब यह है कि उमर, उस्मान और अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) सत्यवादी के बाद इस्लाम का नेतृत्व करेंगे और शहादत प्राप्त करेंगे। और यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी।

साथ ही, यह “धर्मी” वाक्यांश के माध्यम से यह समाचार दे रहा है कि बेंच के लोगों जैसे लोग जिन्होंने अच्छे काम किए, पूजा के कार्य किए, और भगवान से डरते थे, और टोरा में उनकी प्रशंसा की गई, भविष्य में बहुत से होंगे। जबकि वाक्यांश “ये कितने अच्छे लोग हैं!” साथियों का अनुसरण करने वाली पीढ़ी की प्रशंसा करता है और सीखने और अच्छे कामों में उनका साथ देता है। और यह दिखाने के अलावा कि अनंत काल के मार्ग पर उन चार समूहों का साथ देना अच्छा और सराहनीय है, यह हसन के खलीफा के रूप में संक्षिप्त अवधि के महत्व को इंगित करता है, जैसा कि मैसेंजर (UWBP) की भविष्यवाणियों द्वारा पुष्टि की गई थी: “मेरे बाद खिलाफत तीस साल तक चलेगी,”4 और, “यह मेरा पोता हसन मनुष्यों का स्वामी है, जिसके माध्यम से भगवान दो महान समूहों को मिलाएगा,”5 इस प्रकार विवाद और संघर्ष को शांत करेगा। इस तरह यह इंगित करता है कि हसन चार सही मार्गदर्शित खलीफाओं के बाद पाँचवाँ खलीफा होगा। जबकि बयानबाजी में मुस्ततबअत अल-तराकेब नामक एक उपकरण के माध्यम से, यह पांचवें खलीफा के नाम को इस वाक्यांश के साथ दर्शाता है कि "ये लोग कितने अच्छे (हसुना) लोग हैं!"

इन भविष्यवाणियों की तरह और भी कई रहस्य हैं, लेकिन चूँकि वे हमारे उद्देश्य से बाहर हैं, इसलिए अभी उस दरवाज़े का जवाब नहीं दिया गया है। सर्वज्ञ क़ुरआन की कई आयतें कई तरह से अदृश्य के बारे में ख़बर देती हैं। अदृश्य के बारे में क़ुरआन की ऐसी भविष्यवाणियों की संख्या हज़ारों में है।

---

[4] अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, iii, 509; इब्न 'अब्द अल-बर्र, अल-तमहिद, viii, 67. यह भी देखें, तिर्मिधि, फ़ितन, 48; मुसनद, वी, 220, 221; अल-'अल्बानी, साहिह जामी' अल-सगीर, संख्या: 3336।

[5] बुखारी, फ़ितन, 20; सुलह, 9, फदाएल अशब अल-नबी, 22, मनाकिब, 25; दारिमी, सुन्ना, 12; तिर्मिधि, मनाकिब, 25; नसाई, जुमा, 27; मुसनद, वी, 38, 44, 49, 51.

निष्कर्ष

सर्व-बुद्धिमान कुरान का एक चमत्कारी, सूक्ष्म बिंदु जो इसके माध्यम से प्रकट होता है 'संयोग'1 इस प्रकार है:

सर्वज्ञ कुरान में, अल्लाह के दिव्य नाम, दयालु (रहमान), दयालु (रहीम), पालनहार (रब्ब) और अल्लाह के स्थान पर वह (हू) का उल्लेख कुल मिलाकर लगभग चार हजार बार किया गया है। वर्णमाला की व्यवस्था के अनुसार गिने जाने वाले दूसरे प्रकार के अबजद से "ईश्वर के नाम पर, दयालु, दयालु" का मूल्य भी लगभग चार हजार हो जाता है। बड़ी संख्याओं के छोटे अंश 'संयोग' को खराब नहीं करते हैं, इसलिए उन्हें अनदेखा कर दिया गया है। इसके अलावा, "अलिफ. लाम. मीम" के भीतर दो संयुग्मक वाव के साथ , यह लगभग दो सौ अस्सी होता है। सूरा अल-बक़रा में अल्लाह शब्द के लगभग दो सौ अस्सी उदाहरणों और सूरा की लगभग दो सौ अस्सी आयतों के साथ मेल खाने के अलावा, अगर दूसरे प्रकार के अबजद गणना के साथ गिना जाए, तो यह फिर से लगभग चार हजार होता है। यह ऊपर वर्णित पाँच प्रसिद्ध दिव्य नामों के साथ मेल खाता है, और यदि अंशों की उपेक्षा की जाती है, तो "ईश्वर के नाम पर, दयालु, कृपालु" के संख्यात्मक मूल्य के साथ। यह कहना है, 'संयोग' के इस रहस्य के अनुसार, "अलिफ़।

"लाम. मीम" एक उपाधि है जो उस एक को सूचित करती है जिसका वह प्रतीक है, और यह अल-बक़रा का एक नाम है, और कुरान का एक नाम है, और उन दोनों की एक संक्षिप्त सूची है, और दोनों का एक नमूना, सारांश और बीज है, और "ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।" का सारांश है।

प्रसिद्ध अबजाद प्रणाली के अनुसार, "ईश्वर के नाम पर, दयालु, कृपालु" संख्यात्मक मूल्य में पालनहार के नाम के बराबर है। इसी तरह, अगर "दयालु, दयालु (अर-रहमान, अर-रहीम)" में दोगुना रा को दो बार गिना जाए, तो यह नौ सौ नब्बे हो जाता है और कई महत्वपूर्ण रहस्यों की कुंजी बन जाता है - इसके उन्नीस अक्षरों के साथ, उन्नीस हज़ार दुनियाओं की कुंजी।

चमत्कारिक कुरान में अल्लाह शब्द के सूक्ष्म 'संयोगों' में से एक व्याख्या यह है कि पूरे कुरान में अस्सी मौक़े हैं

[1] 'संयोग' (तेवाफुक): एक या अधिक अक्षरों या शब्दों का रेखाओं या पैटर्न में मेल होना। कई पृष्ठ. (ट्र.)

पृष्ठों की निचली पंक्ति के आरंभ में दिए गए शब्द पैटर्न में एक दूसरे से मेल खाते हैं।
इसी तरह नीचे की पंक्ति के अंत में नाम के अस्सी उदाहरण एक दूसरे से एक जैसे ही दिखते हैं। और फिर नीचे की पंक्ति के ठीक बीच में अल्लाह शब्द के पचपन उदाहरण एक दूसरे के ऊपर आते हैं, जो एक साथ मिलकर नाम का एक उदाहरण बनाते हैं। अंतिम पंक्ति के आरंभ में एक और कभी-कभी तीन अक्षरों के शब्द अंक, अंतराल के साथ, पच्चीस, इस प्रकार पंक्तियों के मध्य में संयोग करने वाले पचपन में जोड़ने पर अस्सी का 'संयोग' बनता है; इससे पंक्ति के आरंभ में और अंत में अस्सी का संयोग बनता है। क्या ऐसा सूक्ष्म, बढ़िया, व्यवस्थित, सममित, चमत्कारी 'संयोग' बिना बुद्धि या सूक्ष्मता के हो सकता है? भगवान न करे, ऐसा हो ही न सके! निश्चित रूप से, इन संयोगों के सिरे से महत्वपूर्ण खजाने खोले जा सकते हैं।

ऐ हमारे पालनहार! यदि हम भूल जाएँ या बुरा काम करें तो हमें न सज़ा दे । (2:282)
पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

एस सहायता एन भालू

* * *

आठवां फ्लैश

इसे सिक्के-ए-तस्दीक-ए-गायबी (अदृश्य की पुष्टि करने वाली मुहर) के मुद्रित संस्करणों में तथा द फ्लैशेस कलेक्शन की हस्त-प्रतिकृत प्रतियों में प्रकाशित किया गया है ।

नौवां फ्लैश

[हर किसी को यह फ़्लैश नहीं पढ़ना चाहिए, क्योंकि कुछ लोग अस्तित्व की एकता की सूक्ष्म त्रुटियों को नहीं समझ पाएंगे, और उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं है।]

उसके नाम में!

और कोई चीज़ उसकी प्रशंसा से पवित्रता का गुणगान करने से नहीं चूकती । (17:44)

मेरे प्रिय, वफादार, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ भाई!

मैंने अपने भाई अब्दुलमसीद1 को अलग से पत्र नहीं लिखा, क्योंकि मैंने आपको लिखे गए पत्रों को पर्याप्त माना। हुलुसी2 के बाद अब्दुलमसीद मेरे लिए एक मूल्यवान भाई और एक छात्र है। हर सुबह और शाम वह हुलुसी के साथ मेरी प्रार्थनाओं में उपस्थित होता है, कभी-कभी पहले उसका उल्लेख किया जाता है। पहले सबरी3, फिर हक्की इफेंडी4 जो पत्र मैं आपको लिखता हूँ, उनसे लाभ उठाता है। मैं उन्हें अलग-अलग पत्र भी नहीं लिखता। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आपको उनके लिए एक धन्य बड़ा भाई बनाया।

मेरी जगह अब्दुलमसीद से पत्र-व्यवहार करो; उसे चिंता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि हुलुसी के बाद, मैं उसके बारे में सोचता हूँ।

---

[1] अब्दुलमसीद (अब्द अल-मजीद) बेदिउज्जमां के छोटे भाई थे। वे धार्मिक विज्ञान के शिक्षक थे, फिर मुफ़्ती बन गए और उन्होंने रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों का अरबी में अनुवाद किया, और इशारत अल-इजाज़ और मेसनेवी-ए-नूरिये का अरबी से तुर्की में अनुवाद किया। 1967 में उनकी मृत्यु हो गई। (अनुवाद)

[2] हुलुसी याहयागिल रिसाले-ए-नूर के पहले छात्रों में से एक थे और पूर्वी तुर्की के एलाज़ीग से थे। 1929 में सेना में कैप्टन के रूप में सेवा करते समय उन्होंने बेदिउज़्ज़मान से मुलाकात की और बेदिउज़्ज़मान के शब्दों में, "उनका उत्साह और गंभीरता ही अंतिम शब्दों (सोज़लर) और अक्षरों (मेक्तूबात) के लिखे जाने का सबसे महत्वपूर्ण कारण था।" (अनुवाद)

[3] साबरी आर्सेवेन। संतराल साबरी के नाम से मशहूर, वे बेदिउज्जमां के सबसे महत्वपूर्ण छात्रों में से एक थे बरला में और पड़ोसी गांव बेदरे के इमाम भी थे। 1954 में उनकी मृत्यु हो गई। (ट्र.)

[4] हक्की तिग्ली। वे एग्रीदिर से थे और 1935 में इस्कीशेर में बेदिउज़्ज़मान के साथ कैद किए गए थे। उन्होंने बेदिउज़्ज़मान के वकील के रूप में भी काम किया। (ट्र.)

आपका पहला प्रश्न

आप अपने पूर्वजों में से एक के बारे में एक गोपनीय प्रश्न पूछते हैं, जो स्वयं "अल-सैय्यद मुहम्मद" के रूप में हस्ताक्षर करते थे। मेरे भाई, मेरे लिए इसका कोई विद्वत्तापूर्ण उत्तर देना या इस पर शोध करना संभव नहीं है। हालाँकि, मैंने अपने साथियों से कहा: "हुलूसी न तो आज के तुर्कों जैसा दिखता है, न ही कुर्दों जैसा। मुझे उसमें अन्य गुण दिखाई देते हैं।" वे इस बात से सहमत थे। हमने कहा कि कहावत के अनुसार, "ईश्वर के उपहार प्राप्त करने के लिए किसी प्रतिभा की आवश्यकता नहीं है," हुलूसी में दिखाई देने वाली कुलीनता एक ईश्वरीय उपहार है। साथ ही, जैसा कि आप जानते हैं, ईश्वर के महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) के दो परिवार हैं। एक में उनके वंशज हैं, और दूसरा उनके पैगंबर के उज्ज्वल सामूहिक व्यक्तित्व का परिवार है। आप निश्चित रूप से उत्तरार्द्ध से संबंधित हैं, और मेरा मत है, हालांकि निराधार, कि उनके पहले परिवार के संबंध में, आपके पूर्वज का हस्ताक्षर बिना कारण नहीं था।

मेरे प्रिय भाई!

आपके दूसरे प्रश्न का सारांश

मुहीउद्दीन अल-अरबी[5] ने कहा: "आत्मा की रचना उसके प्रकट होने में निहित है।"
इस सवाल के साथ आप मुझ जैसे शक्तिहीन व्यक्ति को वास्तविकता के एक अद्भुत प्रतिभाशाली विद्वान और मुहीउद्दीन अल-अरबी जैसे रहस्यमय विज्ञान के प्रतिभाशाली व्यक्ति से मुकाबला करने के लिए मजबूर कर रहे हैं। हालाँकि, कुरान की शिक्षाओं पर भरोसा करते हुए मैं चर्चा करने का प्रयास कर सकता हूँ; भले ही मैं केवल एक मक्खी हूँ, मैं उस बाज से भी ऊँचा उड़ सकता हूँ।

मेरे भाई! तुम्हें यह समझना चाहिए कि मुहीउद्दीन धोखा नहीं देगा, लेकिन उसे धोखा दिया जा सकता था। वह सही मार्ग पर था, लेकिन अपने सभी कार्यों में मार्गदर्शक के रूप में कार्य नहीं कर सकता था। उसने जो देखा वह सही था, लेकिन वह वास्तविकता नहीं थी। मनुष्य की आत्मा की वास्तविकता, जिसके बारे में तुम पूछते हो, उनतीसवें वचन में आत्मा के बारे में चर्चा में बताई गई है।

हां, अपनी प्रकृति के संबंध में, आत्मा ईश्वरीय आदेश से आगे बढ़ने वाला एक कानून है, लेकिन यह बाहरी अस्तित्व में लिपटा हुआ और बाहरी अस्तित्व रखने वाला एक जीवित कानून है। मुहीउद्दीन ने इसके बारे में केवल इसकी आवश्यक प्रकृति के दृष्टिकोण से सोचा।
अस्तित्व की एकता का उनका मार्ग वस्तुओं के अस्तित्व को काल्पनिक मानता है।
उन्हें अद्भुत दर्शन हुए और उन्होंने वास्तविकताओं का अनावरण किया, लेकिन चूंकि उन्होंने एक स्वतंत्र मार्ग चुना था, इसलिए उन्हें कृत्रिम रूप से और जबरन व्याख्याओं के साथ, कुरान की कुछ आयतों को अपने मार्ग और अवलोकनों पर लागू करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे उनके विचारों की स्पष्टता ख़राब हो गई।

[5] मुही अल-दीन इब्न अल-अरबी, एक प्रख्यात विद्वान और विचारक जिन्होंने सूफीवाद के विकास को गहराई से प्रभावित किया। उनका जन्म 560 हिजरी में अंदलूसिया में हुआ था और 638 हिजरी में दमिश्क में उनकी मृत्यु हो गई थी।
उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृतियों में फ़ुसुस अल-हिकम और अल-फ़ुतुहात अल-मक्किया शामिल हैं।

आयतें। अपने अन्य ग्रंथों में उन्होंने कुरान और सुन्नियों के सीधे मार्ग की व्याख्या की है। वह एक पवित्र व्यक्ति थे, जिन्होंने अपना एक अलग स्थान बना रखा था, और वे अच्छी तरह से स्वीकार किए जाने वाले लोगों में से एक थे, लेकिन उन्होंने अपने असंतुलित खुलासों में सीमा पार कर ली और कई मामलों में अधिकांश विद्वान अधिकारियों का विरोध किया।

यही कारण है कि यद्यपि वह एक ऐसे उच्च और चमत्कारिक आध्यात्मिक स्तंभ थे, जिसकी युगों-युगों तक कोई बराबरी नहीं की जा सकी, फिर भी ऐसा लगता है कि उनका विशेष मार्ग बहुत छोटा था और सदरुद्दीन अल-कुनवी तक ही सीमित था।6 उनके कार्यों से केवल सीधे मार्ग पर चलने वाले ही शायद ही कभी लाभान्वित होते हैं। बहुत से आधिकारिक विद्वान उन मूल्यवान कार्यों के अध्ययन को प्रोत्साहित नहीं करते हैं और उनमें से कुछ तो इसे रोकते भी हैं।

मुहीउद्दीन के तरीके और सख्त विद्वानों के बीच बुनियादी अंतर और उनके स्रोतों को दिखाने के लिए लंबे अध्ययन और बहुत ऊंचे, व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। हां, अंतर इतने सूक्ष्म और गहरे हैं और स्रोत इतने ऊंचे और व्यापक हैं कि मुहीउद्दीन की निंदा नहीं की गई और उन्हें स्वीकार किया जाता रहा। क्योंकि अगर विचार, विद्वत्ता और ज्ञान के संबंध में अंतर और स्रोत स्पष्ट हो जाते, तो यह उनके लिए बहुत अपमानजनक होता और उन्हें गंभीर गलती करते हुए देखा जाता। चूंकि अंतर इतना गहरा है, इसलिए हम तुलना के माध्यम से इसे और स्रोतों को संक्षेप में दिखाने की कोशिश करेंगे और इस मामले में मुहीउद्दीन की गलतियाँ।

उदाहरण के लिए, सूरज दर्पण में दिखाई देता है। दर्पण में सूरज होता है और वह सूरज से ही योग्य होता है। कहने का मतलब यह है कि एक तरह से सूरज दर्पण में मौजूद होता है और दूसरी तरह से वह दर्पण को सजाता है, उसका एक चमकीला रंग, गुण और गुण बन जाता है। अगर दर्पण कैमरा होता, तो वह फोटोग्राफिक पेपर पर सूरज की छवि को स्थिर कर देता। इन मामलों में, दर्पण में सूरज, और फोटोग्राफिक पेपर पर उसकी झलक, और उसका पहलू जो दर्पण को सजाता है और दर्पण की गुणवत्ता की तरह बन जाता है, वास्तविक सूरज से अलग हैं। वे सूरज नहीं हैं, बल्कि सूरज की अभिव्यक्ति है जिसने दूसरा अस्तित्व ग्रहण कर लिया है। जहाँ तक दर्पण में दिखाई देने वाले सूरज के अस्तित्व की बात है, भले ही वह बाहर दिखाई देने वाले सूरज के समान न हो, क्योंकि वह उससे बंधा हुआ है और उसकी ओर इशारा करता है, इसलिए उसका अस्तित्व वही माना जाता है।

इसके परिणामस्वरूप, यह कहा जा सकता है: "दर्पण में वास्तविक सूर्य के अलावा कुछ भी नहीं है," जिसका अर्थ है कि दर्पण में सूर्य समाहित है और दर्पण में सूर्य के बाहरी अस्तित्व का अभिप्राय है। लेकिन अगर यह कहा जाए कि सूर्य का विस्तारित प्रतिबिंब, जो एक गुण या गुण की तरह बन गया है

[6] सदर अल-दीन अल-कुनवी (1209-74): इब्न अल-अरबी के अग्रणी छात्रों में से एक, उन्होंने सूफीवाद पर कई रचनाएँ लिखीं, जिनमें अल-नुसुस फी तहकीक अल-तवर अल-मखसुस भी शामिल है।

दर्पण का, और उसका प्रतिबिम्ब जो फोटोग्राफिक पेपर पर स्थानांतरित किया गया है, सूर्य है, यह गलत है; यह कहना एक त्रुटि है: "सूर्य के अलावा उनमें कुछ भी नहीं है।"
क्योंकि दर्पण के चमकते चेहरे पर प्रतिबिंब और उसकी पीठ पर बनी छवि होती है, और इनका अपना अलग अस्तित्व होता है। निश्चित रूप से वे अस्तित्व सूर्य की अभिव्यक्ति से हैं, लेकिन वे सूर्य नहीं हैं। मानव मन और कल्पना दर्पण के इस उदाहरण से मिलती-जुलती है, इस प्रकार:

मनुष्य के विचार के दर्पण में मौजूद सूचना के भी दो पहलू हैं: एक तरफ यह ज्ञान है, दूसरी तरफ यह ज्ञात है। अगर हम मान लें कि मन में वह सब कुछ है जो जाना जाता है, तो ज्ञात वस्तु मन द्वारा जानी जाने वाली वस्तु बन जाती है; इसका अस्तित्व मन से कुछ अलग है। अगर हम मान लें कि मन वस्तु द्वारा योग्य है, तो यह मन का गुण या गुण बन जाता है; तब वस्तु ज्ञान बन जाती है और उसका एक बाहरी अस्तित्व होता है। भले ही ज्ञात वस्तु का अस्तित्व आवश्यक (जवाहरी) हो, लेकिन इसका ज्ञान की तरह एक आकस्मिक बाहरी अस्तित्व होता है।

इस प्रकार, इन दो तुलनाओं के अनुसार, ब्रह्मांड एक दर्पण है। प्राणियों की वास्तविक प्रकृति भी दर्पण जैसी है; वे पूर्व-शाश्वत शक्ति के माध्यम से दिव्य सृजन के अधीन हैं। एक मामले में, प्रत्येक प्राणी पूर्व-शाश्वत सूर्य के नामों में से एक के लिए एक प्रकार का दर्पण है, जो अपनी कढ़ाई प्रदर्शित करता है। मुहीउद्दीन के मार्ग के अनुयायियों ने उन्हें केवल दर्पण और कंटेनर होने के संबंध में उजागर किया, जो कि इनकार के दृष्टिकोण से दर्पण में उनके अस्तित्व की समानता को प्रकट करता है। यह मानते हुए कि प्रतिबिंब प्रतिबिंबित वस्तु के समान है, उन्होंने अन्य स्तरों के बारे में नहीं सोचा।

उन्होंने कहा: “उसके अलावा कोई अस्तित्व नहीं है,” और वे ग़लतफ़हमी में थे। वे लगभग इस बुनियादी नियम को नकारने की हद तक चले गए: “अस्तित्व की वास्तविकता स्थिर है।”

जहाँ तक वास्तविकता के लोगों का सवाल है, उन्होंने नबी की विरासत के रहस्य और कुरान के निश्चित कथनों के माध्यम से देखा है कि ईश्वरीय शक्ति और इच्छा के माध्यम से चीजों के दर्पणों में जो कढ़ाई और शिलालेख अस्तित्व में आते हैं, वे उसके कार्य हैं। वे "सभी उससे हैं;" वे "सभी उससे नहीं हैं।"7 चीजों का अस्तित्व है और उनका अस्तित्व एक हद तक स्थिर है। निश्चित रूप से यह आवश्यक अस्तित्व की तुलना में कमजोर है, एक भ्रम या कल्पना की तरह, लेकिन पूर्व-अनन्त सर्वशक्तिमान की रचना, इच्छा और शक्ति के माध्यम से, यह अस्तित्व में है।

तुलना में, दर्पण में सूर्य का अस्तित्व उसकी बाह्य सत्ता से अलग उसकी समानता के माध्यम से है। और उसका विस्तृत प्रतिबिंब भी, जो दर्पण को रंग देता है और उसे सजाता है, उसका भी आकस्मिक और पृथक बाह्य अस्तित्व है। और सूर्य की छवि जो दर्पण पर चित्रित की गई है

[7] यानी सब कुछ उसी से है, वही सब कुछ पैदा करता है। सब कुछ उसका नहीं है कि वह हो जाए।
कहा "उसके अलावा कोई अस्तित्व में नहीं है।"

दर्पण के पीछे लगे फोटोग्राफिक पेपर का भी एक अलग और आकस्मिक बाह्य अस्तित्व होता है।

इसी तरह, जीवों के शिलालेख, जो पवित्र दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रकट होते हैं - इच्छा, विकल्प और शक्ति के माध्यम से होते हैं - ब्रह्मांड के दर्पण और चीजों की सर्वोत्कृष्ट प्रकृति के दर्पणों में, आवश्यक अस्तित्व से अलग एक निर्मित अस्तित्व है। और इस अस्तित्व को पूर्व-शाश्वत शक्ति के माध्यम से एक स्थायित्व दिया गया है। लेकिन अगर कनेक्शन टूट जाए, तो सभी चीजें एक बार में ही खत्म हो जाएंगी। क्योंकि उनके निरंतर अस्तित्व के लिए, सभी चीजों को हर पल अपने निर्माता द्वारा उन्हें संरक्षित करने की आवश्यकता होती है। "चीजों की वास्तविकता स्थिर है," लेकिन यह केवल उसके द्वारा इसे ऐसा बनाने के माध्यम से स्थिर और स्थायी है।

इस प्रकार, मुहीउद्दीन का यह कहना कि: "आत्मा का सृजन नहीं किया गया है; यह ईश्वरीय आदेश की दुनिया और इच्छा की विशेषता से उत्पन्न एक वास्तविकता है," कुरान और हदीसों के कई स्पष्ट कथनों के विपरीत है, और उपरोक्त जांच के अनुसार, वह भ्रमित था, धोखा खा गया था, और उसने चीजों के कमजोर अस्तित्व को नहीं देखा था।

सृष्टिकर्ता और प्रदाता जैसे दिव्य नामों के प्रकट होने के स्थान भ्रामक या काल्पनिक नहीं हो सकते। चूँकि नामों की एक वास्तविकता है, इसलिए उनके प्रकट होने के स्थानों की भी एक बाहरी वास्तविकता है।

आपका तीसरा प्रश्न

आप जाफ़र के विज्ञान में शिक्षा चाहते हैं जो इसकी कुंजी होगी।

उत्तर: हम यह काम और सेवा अपनी इच्छा और अपनी योजना से नहीं कर रहे हैं। हमारी इच्छा से बढ़कर एक बेहतर इच्छा इसे संचालित करती है। जफ़र का विज्ञान एक मनोरंजक और आनंददायक काम है, लेकिन यह हमें व्यस्त रखता है और हमें हमारे असली कर्तव्यों से दूर रखता है। अक्सर ऐसा हुआ है कि कुरान के कुछ रहस्य इसके माध्यम से प्रकट हुए हैं जैसे कि यह एक कुंजी हो, लेकिन जब मैंने सच्चे उत्साह और आनंद के साथ उनसे संपर्क किया, तो वे मुझे समझ में नहीं आए। मैंने इसमें बुद्धिमत्ता के दो उदाहरण पाए हैं:

पहला: यह "अल्लाह के अलावा कोई भी अदृश्य को नहीं जानता" के निषेध के प्रति अशिष्टता हो सकती है।

दूसरा: इस्लामी समुदाय को विश्वास की बुनियादी सच्चाइयों और कुरान के कुछ प्रमाणों के बारे में सिखाना एक पवित्र सेवा है, जो जफ़र जैसे गुप्त विज्ञानों से कहीं ज़्यादा मूल्यवान और गुणकारी है। उनके पक्के सबूत और स्पष्ट प्रमाण शोषण का कोई मौक़ा नहीं देते, लेकिन जफ़र जैसे गुप्त विज्ञान किसी भी पक्के नियम से बंधे नहीं हैं और ढोंगियों द्वारा दुरुपयोग और शोषण के लिए खुले हैं। किसी भी मामले में, जब भी ज़रूरत होती है, वास्तविकता की इस सेवा में थोड़ा-बहुत दिया जाता है।

जाफ़र की कुंजियों में सबसे आसान और शायद सबसे शुद्ध और बेहतरीन,

ये विभिन्न प्रकार के संयोग हैं। ये उत्पत्तिकर्ता (बेदी) के दिव्य नाम से उत्पन्न हुए हैं और कुरान में अल्लाह के नाम से प्रकट हुए हैं और हमारे द्वारा प्रकाशित किए गए कार्यों को सुशोभित करते हैं। इन्हें केरामेत-ए-गवसिये (अल-गौथ अल-आज़म के चमत्कार) नामक कार्य में कई स्थानों पर एक हद तक इंगित किया गया है।

उदाहरण के लिए, किसी चीज़ को कई पहलुओं में दिखाने वाले 'संयोग' एक संकेत बनाते हैं जिसमें सबूत की ताकत होती है। कभी-कभी कई निष्कर्षों के साथ, एक 'संयोग' एक सबूत बन सकता है। हालाँकि, अभी के लिए इतना ही काफी है। अगर गंभीर ज़रूरत होगी, तो आपको बता दिया जाएगा।

आपका चौथा प्रश्न

अर्थात् यह आपका प्रश्न नहीं है, बल्कि इमाम उमर एफेंदी का प्रश्न है, जिसमें एक निकम्मे डॉक्टर ने कहा कि यीशु (यू.डब्ल्यू.पी.) का एक पिता था।8 पागलपन भरी व्याख्या के साथ, डॉक्टर ने यह दिखाने का प्रयास किया कि कुरान की एक आयत उसके ऐसा कहने को उचित ठहराती है।

एक समय, वह बदकिस्मत आदमी असंबद्ध अक्षरों के साथ कुछ बनाने की कोशिश कर रहा था। वह इस पर बहुत जोश से काम कर रहा था। फिर मुझे समझ में आया कि उसने नास्तिकों के रवैये से यह समझ लिया था कि वे इस्लामी लिपि को खत्म करने का प्रयास करने जा रहे हैं। वह व्यर्थ ही संघर्ष कर रहा था मानो उस बाढ़ के सामने लिपि को बचाना चाहता हो। अब इस मामले में, और दूसरे मामले में, उसने इस्लाम के मूल सिद्धांतों के खिलाफ नास्तिकों के भयानक हमलों को देखा, और मुझे लगता है कि वह इस तरह की अर्थहीन व्याख्याओं के माध्यम से समझौता करने का एक तरीका खोजना चाहता था। चूँकि निश्चित छंद जैसे,

परमेश्वर के निकट यीशु की उपमा आदम के समान है , (3:59)

यह कहना कि यीशु (जिस पर शांति हो) का कोई पिता नहीं था, उन लोगों को कोई महत्व नहीं दिया जाना चाहिए जो ऐसे निश्चित, सत्य तथ्यों को अपनी मूर्खतापूर्ण, जबरन व्याख्याओं के साथ बदलने का प्रयास करते हैं। क्योंकि वे मानते हैं कि यह असंभव है कि मानव प्रजनन के कानून को तोड़ा जा सके। लेकिन ऐसा कोई कानून नहीं है जिसमें कोई अपवाद न हो और जिसके अधीन व्यक्ति न रहे हों। और ऐसा कोई सार्वभौमिक नियम नहीं है जिसका उल्लंघन असाधारण व्यक्तियों द्वारा न किया गया हो।

आदम के समय से लेकर अब तक ऐसा कोई कानून नहीं रहा जिस पर कोई प्रतिबंध न हो।

व्यक्तिगत अपवाद। सबसे पहले, प्रजनन के कानून का उल्लंघन किया गया था

[8] एक असाधारण इंसान की असाधारण उपलब्धियां, जो एक चौथाई मानव जाति का नेता है, जिसने मानव जाति को एक प्रकार के स्वर्गदूतों में बदल दिया, और स्वर्ग को अपना बनाने के लिए इस दुनिया को छोड़ दिया।
निवास - ये असाधारण उपलब्धियाँ प्रजनन के नियम के एक असाधारण रूप की मांग करती हैं।
उसके लिए संदिग्ध, अज्ञात, अप्राकृतिक और यहां तक कि नीच तरीके से उस कानून के अधीन होना अनुचित होता; वैसे भी उसे ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं थी। इसके अलावा, कुरान के स्पष्ट कथन व्याख्या के लायक नहीं हैं। स्वर्गदूतों की कामुकता का कानून, जो प्रजनन से बाहर है और जिसे किसी भी तरह से नहीं तोड़ा जा सकता है, मानव प्रजनन के कानून की मरम्मत के लिए कैसे तोड़ा जा सकता है, जिसे सौ तरीकों से तोड़ा गया है - यह कानून - कुरान की स्पष्ट आयतों के कानून जैसे शक्तिशाली कानूनों के साथ कैसे तोड़ा जा सकता है?

दो लाख पशु प्रजातियों की उत्पत्ति के आधार पर उत्पत्ति के बारे में विचार किया गया और उन्हें समाप्त कर दिया गया। अर्थात्, प्रजातियों के दो लाख पूर्वजों ने, बिल्कुल आदम की तरह, प्रजनन के नियम का उल्लंघन किया। वे पिता और माता से पैदा नहीं हुए थे और उन्हें कानून के बाहर अस्तित्व दिया गया था।

इसके अलावा, हम अपनी आँखों से हर वसंत में जो लाखों प्रजातियाँ देखते हैं, उनमें से ज़्यादातर - असंख्य व्यक्ति - उस नियम के बाहर, पत्तियों की सतह पर और सड़े हुए पदार्थों पर पैदा होते हैं। तो आप देख सकते हैं कि कोई व्यक्ति कितना नासमझ है जो अपने तर्क से एक हज़ार नौ सौ सालों में एक भी व्यक्ति को उस नियम से अलग नहीं मान सकता जिसका उल्लंघन और उल्लंघन उसके शुरू होने के समय से ही किया गया था और अब भी हर साल किया जा रहा है, और कुरान के निश्चित कथनों की ज़बरदस्ती की गई व्याख्याओं से चिपका हुआ है।

वे दुष्ट लोग जिन्हें प्राकृतिक नियम कहते हैं, वे नियम हैं जिन्हें 'आदत अल्लाह' या ईश्वरीय प्रथाएँ कहते हैं, जो ईश्वरीय आदेश और प्रभुत्वशाली इच्छा का एक सार्वभौमिक प्रकटीकरण है, और जिसे सर्वशक्तिमान ईश्वर बुद्धि के कुछ उदाहरणों के लिए बदलता है। वह दर्शाता है कि उसकी इच्छा और पसंद हर चीज़ और हर कानून में शासन करती है। कुछ असाधारण व्यक्ति उन प्रथाओं का उल्लंघन करते हैं। यह सत्य वह अपने आदेश के साथ इंगित करता है, "ईसा की समानता ईश्वर के सामने आदम के समान है।" (3:59)

डॉक्टर से संबंधित ओमर एफेंदी का दूसरा प्रश्न :

डॉक्टर इस मामले में बहुत ही मूर्खतापूर्ण व्यवहार करता है, इसलिए उसकी बातों को सुनना या उसे महत्व देना बहुत अपमानजनक है। दुर्भाग्यशाली व्यक्ति विश्वास और अविश्वास के बीच आधी दूरी पर रहना चाहता है। मैं निम्नलिखित बातें उसके तुच्छ शब्दों के उत्तर में नहीं, बल्कि ओमर इफेंडी के प्रश्नों के उत्तर में कहता हूँ:

शरीयत के आदेशों और निषेधों का कारण ईश्वरीय आदेश और ईश्वरीय निषेध हैं। ज्ञान के लाभ और उदाहरण उन्हें महत्व देते हैं, और वे सर्वज्ञ ईश्वरीय नाम के दृष्टिकोण से आदेश या निषेध का कारण हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति यात्रा करते समय पाँचों दैनिक नमाज़ों को छोटा कर देता है। (इल्लत) उन्हें छोटा करने का एक कारण और (हिक्मत) एक उद्देश्य या बुद्धिमत्ता का उदाहरण है।
कारण यात्रा है, जबकि उद्देश्य इसमें शामिल कठिनाई है। यदि यात्रा पर हो और कोई कठिनाई न हो, तो भी नमाज़ छोटी की जाती है। यदि यात्रा पर न हो, और व्यक्ति अपने घर में सौ कठिनाइयों का सामना कर रहा हो, तो उसे नमाज़ छोटी नहीं करनी चाहिए। क्योंकि कुछ यात्राओं में होने वाली कठिनाई ही नमाज़ छोटी करने के उद्देश्य के रूप में पर्याप्त है, और फिर यात्रा को कारण बनाने के लिए पर्याप्त है।

इस प्रकार, शरीयत के इस नियम के अनुसार, शरीयत के आदेश उद्देश्यों या ज्ञान के उदाहरणों के कारण नहीं बदलते हैं; वे सच्चे कारणों को देखते हैं। सूअर के मांस से होने वाले नुकसान और बीमारी के अलावा, जैसा कि कानून कहता है,

डॉक्टर ने कहा, कहावत के अनुसार, "जो व्यक्ति सूअर का मांस खाता है, वह कुछ मायनों में सुअर जैसा बन जाता है;"9 सुअर अन्य पालतू जानवरों की तरह हानिरहित नहीं है। इसका मांस फायदेमंद होने के बजाय काफी नुकसान पहुंचाता है। और यह चिकित्सकीय रूप से स्थापित किया गया है कि इसका शक्तिशाली वसा भी हानिकारक है, यहां तक कि यूरोप की भूमि में भी जो बहुत ठंडी है, और इस प्रकार वास्तव में और अर्थ में बेहद हानिकारक है।

इस तरह के ज्ञान के उदाहरण ईश्वरीय निषेध के उद्देश्य हैं और इसके निषिद्ध होने के लिए भी। ज्ञान हर समय और हर घटना में मौजूद नहीं होना चाहिए। उद्देश्य और ज्ञान के बदलने से कारण नहीं बदलता। अगर कारण नहीं बदलता है, तो आदेश भी नहीं बदलता। इस नियम से यह देखा जा सकता है कि जब वह बदकिस्मत आदमी बोल रहा था, तो वह शरीयत की भावना से कितना दूर था। शरीयत के बारे में उसने जो कहा, उसे कोई महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। सृष्टिकर्ता के पास तर्कहीन दार्शनिकों के रूप में कई जानवर हैं!

[9] मुझे आश्चर्य है कि क्या यह तथ्य कि यूरोप की सभी अद्भुत प्रगति और सभ्यता तथा मानवता के लिए लाभकारी विज्ञान और ज्ञान में इसकी प्रगति के बावजूद, इसके लोग सूअर का मांस खाते हैं, भौतिकवाद और प्रकृतिवाद के अंधेरे में उनके फंसने में कोई भूमिका नहीं निभाता है, जो उस प्रगति, ज्ञान और उपलब्धि के बिल्कुल विपरीत है? मैं आपसे पूछता हूँ। इस बात का सबूत कि मनुष्य का स्वभाव उसके द्वारा खाए जाने वाले भोजन से प्रभावित होता है, यह कहावत है: "जो व्यक्ति चालीस दिनों तक हर दिन मांस खाता है, उसके दिल में चिंता और दुख होगा," जो कहावत बन गई है।

आपके प्रश्न के उत्तर का एक परिशिष्ट
मुहिद्दीन अल-अरबी

प्रश्न: मुहीउद्दीन अल-अरबी अस्तित्व की एकता को सर्वोच्च स्तर का मानते थे। इसी तरह, कुछ महान संतों ने प्रेम का मार्ग अपनाया। हालाँकि, आप कहते हैं कि यह मामला सर्वोच्च स्तर का नहीं है और वास्तविक नहीं है; बल्कि यह एक हद तक उन लोगों का मार्ग है जो ईश्वर में डूबे हुए हैं और प्रेम और परमानंद के लोगों का मार्ग है। तो, संक्षेप में, क्या है?

कुरान की स्पष्ट आयतों द्वारा, पैगम्बरत्व की विरासत के रहस्य के माध्यम से, ईश्वरीय एकता की पुष्टि का उच्च स्तर क्या है? क्या आप इसे समझा सकते हैं?

उत्तर : मेरे जैसे नितांत शक्तिहीन अभागे के लिए अपनी सीमित बुद्धि से उन उच्च पदों का आकलन करना सौ गुना अधिक कठिन है। मैं केवल एक-दो अति संक्षिप्त बातें स्पष्ट करूंगा जो कि सर्वज्ञ कुरआन की वाणी से निकलती हैं। शायद वे इस मामले को समझने में उपयोगी हों।

पहला बिंदु

अस्तित्व की एकता के मार्ग में उलझने के कई कारण हैं। उनमें से एक या दो का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है:

पहला कारण: क्योंकि वे अपने मस्तिष्क में प्रभुत्व की रचनात्मकता की अधिकतम मात्रा को नहीं समाहित कर सके, और न ही अपने हृदय में इस विचार को पूरी तरह स्थापित कर सके कि सब कुछ, ईश्वरीय एकता के रहस्य के माध्यम से, सीधे प्रभुत्व की मुट्ठी में है और सभी चीजें ईश्वरीय शक्ति, चुनाव और इच्छा के माध्यम से अस्तित्व में हैं, इसलिए जो लोग इस मार्ग को अपनाते थे, उन्हें यह कहना पड़ता था कि सब कुछ या तो ईश्वर है, या उसका अस्तित्व नहीं है, या वह काल्पनिक है, या उसकी अभिव्यक्ति या उत्सर्जन है।

दूसरा कारण: भावुक प्रेम की पहचान है अपने प्रियतम से कभी अलग न होना और ऐसे अलगाव से हताश होकर भागना; बिछड़ने के विचार से कांपना, अपने प्रियतम से दूरी से डरना मानो नर्क से डर रहा हो, और क्षणभंगुरता से घृणा करना; अपनी आत्मा और जीवन के प्रेम से मिलन को प्यार करना, और अपने प्रियतम के करीब होने की लालसा करना मानो स्वर्ग की लालसा हो। इस प्रकार, सभी चीजों में दिव्य तात्कालिकता की अभिव्यक्ति का पालन करने के माध्यम से, जिन्होंने अस्तित्व की एकता का मार्ग अपनाया, उन्होंने अलगाव और दूरी की उपेक्षा की; मिलन और मिलन को स्थायी मानते हुए, उन्होंने कहा: "उसके अलावा कोई अस्तित्व नहीं है;"

प्रेम के नशे में चूर होकर और स्थायित्व, मिलन और एकता के आनंद की मांग के अनुसार, उन्होंने कल्पना की कि अस्तित्व की एकता में प्रकाश का सबसे सुखद मार्ग है जिसके द्वारा वे वियोग की भयावहता से बच सकते हैं।

अर्थात्, पहला कारण इस तथ्य से उत्पन्न हुआ कि उनकी बुद्धि का हाथ विश्वास के कुछ सत्यों तक पहुँचने में असमर्थ था, जो अत्यंत व्यापक और उच्च थे; वे उन्हें समझने में असमर्थ थे, और विश्वास के संबंध में पूरी तरह से विकसित नहीं हुए थे। जबकि दूसरे कारण का स्रोत प्रेम के दृष्टिकोण से उनके हृदयों का असाधारण प्रकटीकरण, और उनका अद्भुत विस्तार और चौड़ाई थी।

हालाँकि, ईश्वरीय एकता का सर्वोच्च स्तर, जिसे पवित्र लोगों ने देखा - जो कि संयमी लोग थे और नबूवत की विरासत के महान संत थे - कुरान की स्पष्ट व्याख्याओं के माध्यम से, न केवल अत्यंत ऊंचा है, बल्कि प्रभुत्व और रचनात्मकता के उच्चतम स्तर को भी दर्शाता है और यह भी कि सभी ईश्वरीय नाम वास्तविक हैं। यह कुरान के सिद्धांतों को सुरक्षित रखता है और प्रभुत्व के आदेशों के संतुलन को नहीं बिगाड़ता है। क्योंकि वे कहते हैं कि अपने सार की एकता और अंतरिक्ष से मुक्त होने के साथ, अपने ज्ञान के साथ सर्वशक्तिमान ईश्वर सभी चीजों को उनकी सभी विशेषताओं के साथ सीधे तौर पर शामिल और निर्धारित करता है, और अपनी इच्छा से वह उन्हें चुनता और निर्दिष्ट करता है, और अपनी शक्ति से वह उन्हें बनाता है। वह पूरे ब्रह्मांड को बनाता और निर्देशित करता है जैसे कि वह एक ही प्राणी हो।

वह फूल बनाने की सहजता से विशाल झरना बनाता है। कोई भी चीज किसी चीज में बाधा नहीं डालती। उसके संबंध में कोई विखंडन नहीं है। वह अपने ज्ञान और शक्ति के माध्यम से एक ही समय में हर जगह मौजूद है।

उसके आदेश में कोई विभाजन या वितरण नहीं है। इस रहस्य को सोलहवें वचन में तथा बत्तीसवें वचन के दूसरे पड़ाव में स्पष्ट रूप से समझाया और सिद्ध किया गया है। चूँकि, "तुलनाएँ निर्विवाद हैं" नियम के अनुसार, तुलनाओं और रूपकों में दोषों पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए, इसलिए मैं एक बहुत ही दोषपूर्ण तुलना प्रस्तुत करूँगा ताकि दोनों तरीकों के बीच का अंतर एक हद तक समझा जा सके।

उदाहरण के लिए, आइए हम एक विशाल, अद्वितीय और आश्चर्यजनक रूप से सुसज्जित मोर की कल्पना करें जो एक पल में पूर्व से पश्चिम तक उड़ सकता है, और अपने पंखों को खोलता और बंद करता है, जो उत्तर से दक्षिण तक फैले हुए हैं, सैकड़ों हजारों सुंदर आकृतियों से सजे हुए हैं, और जिनके हर एक पंख में शानदार कलाएँ समाहित हैं। अब, दो आदमी इसे देख रहे हैं; वे बुद्धि और हृदय के पंखों से इस पक्षी के उच्च गुणों, इसकी अद्भुत सजावट तक उड़ना चाहते हैं। कोई मोर की स्थिति और रूप को देखता है और उसके सभी पंखों पर शक्ति के अद्भुत शिलालेखों को देखता है; वह इसे अत्यधिक जुनून और जोश के साथ प्यार करता है; वह आंशिक रूप से अपनी चौकसी को त्याग देता है

चिंतनशील विचार, और प्रेम से चिपक जाता है। लेकिन फिर वह देखता है कि हर दिन वे प्यारी सजावटें बदलती हैं और रूपांतरित होती हैं। उसके प्यार की वे वस्तुएँ, जिनकी वह पूजा करता है, गायब हो जाती हैं और खो जाती हैं।

जबकि उन्हें कहना चाहिए था कि सच्ची दिव्य एकता के माध्यम से, जिसे वे अपने दिमाग से नहीं समझ सकते थे, और पूर्ण प्रभुत्व और दिव्य सार की एकता, वे सार्वभौमिक रचनात्मकता से युक्त एक लेखक की कलात्मक सजावट थे, उन्होंने इसके बजाय कहा - अपने आप को सांत्वना देने के लिए - कि मोर की आत्मा इतनी उदात्त थी कि उसका निर्माता उसके भीतर था, या कि मोर ही वह बन गया था, और चूंकि उसकी आत्मा उसके अस्तित्व के साथ एक हो गई थी, और उसका अस्तित्व उसके बाहरी रूप के साथ मिल गया था, इसलिए उसकी आत्मा की पूर्णता और अस्तित्व की उत्कृष्टता ने उन अभिव्यक्तियों को प्रदर्शित किया, हर पल एक अलग शिलालेख और सौंदर्य प्रदर्शित किया; यह उसकी इच्छा के माध्यम से एक सच्ची रचना नहीं थी, बल्कि एक अभिव्यक्ति, एक उत्सर्जन था।

दूसरे व्यक्ति के लिए, उन्होंने कहा कि कला से भरपूर उन सामंजस्यपूर्ण, व्यवस्थित सजावटों के लिए निश्चित रूप से इच्छा, विकल्प, इरादा और उद्देश्य की आवश्यकता होती है। इच्छा के बिना अभिव्यक्ति, विकल्प के बिना उत्सर्जन असंभव है।

हाँ, मोर का स्वभाव सुन्दर और उच्च था, लेकिन वह कर्ता नहीं हो सकता था; वह निष्क्रिय था। वह सक्रिय कर्ता के साथ एक नहीं हो सकता था। उसकी आत्मा उत्तम और उच्च थी, लेकिन वह निर्माता और निपटानकर्ता नहीं हो सकता था, केवल ग्रहणशील और साधन था। क्योंकि उसके प्रत्येक पंख में अनंत बुद्धि से की गई एक कला और अनंत शक्ति द्वारा किया गया एक शिलालेख और अलंकरण था। और ये बिना इच्छा और चुनाव के नहीं हो सकते थे। पूर्ण शक्ति के भीतर पूर्ण बुद्धि, और पूर्ण बुद्धि के भीतर पूर्ण प्रभुत्व और दया को दर्शाने वाली कलाएँ किसी प्रकार की अभिव्यक्ति का कार्य नहीं थीं। जिस लेखक ने वह सोने की परत चढ़ी नोटबुक लिखी थी, वह उसके अंदर नहीं हो सकता था और उसके साथ एक नहीं हो सकता था। बल्कि नोटबुक का संपर्क केवल लेखक की कलम की नोक से था। जिस स्थिति में, ब्रह्मांड के रूप में ज्ञात मोर की समानता की अद्भुत सजावट मोर के निर्माता का सोने की परत चढ़ी हुई संदेश थी।

अब मोर को देखो और पत्र पढ़ो। उसके लेखक से कहो: "भगवान ने क्या अद्भुत काम किया है! भगवान धन्य है! भगवान की जय हो!" जो व्यक्ति पत्र को लेखक मानता है, या लेखक को पत्र के अंदर मानता है, या पत्र को कल्पना मानता है, उसने निश्चित रूप से प्रेम के आवरण में अपनी बुद्धि को खो दिया है, और वास्तविकता के सच्चे रूप को देखने में असमर्थ रहा है।

भावुक प्रेम की किस्मों में से, जो अस्तित्व की एकता के मार्ग को सबसे अधिक जन्म देता है, वह है इस दुनिया का प्रेम। जब यह सच्चे प्रेम में बदल जाता है, तो इस दुनिया का प्रेम, जो अस्थायी है, अस्तित्व की एकता में बदल जाता है। एक व्यक्ति सांसारिक प्रेम के साथ अपने निजी प्रेमी से प्रेम करता है। फिर,

अपने हृदय में अपनी प्रेमिका की क्षणभंगुरता और क्षणभंगुरता को स्वीकार करने में असमर्थ, वह यह कहकर अपने आप को सांत्वना देता है कि उसकी प्रेमिका प्रेम और आराधना की सच्ची वस्तु की सुंदरता को प्रतिबिंबित करने वाला एक दर्पण है, और स्वयं को वास्तविकता से जोड़ लेता है, जिससे उसके लिए स्थायित्व प्राप्त होता है।

उसे सच्चे प्यार के माध्यम से पाओ।

इसी तरह, जब मृत्यु और वियोग के निरंतर आघातों के कारण विशाल संसार और ब्रह्माण्ड को अपना प्रियतम मानने वाले व्यक्ति का विचित्र प्रेम सच्चे प्रेम में बदल जाता है, तो वह अपने उस महान प्रियतम को मृत्यु और वियोग से बचाने के लिए अस्तित्व की एकता के मार्ग की शरण लेता है। यदि उसका विश्वास अत्यंत शक्तिशाली और उच्च है, तो यह एक सुखद, प्रकाशमान, स्वीकार्य स्तर बन जाता है, जैसा कि मुहीद-दीन अल-अरबी के समान है। हालाँकि, यह संभव है कि वह विभिन्न रसातल में गिर जाए, भौतिकता को अपना ले, और कारणों में डूब जाए। जहाँ तक साक्षी की एकता का सवाल है, यह हानिरहित है; यह संयमी लोगों का एक उत्कृष्ट मार्ग है।

हे ईश्वर, हमें सत्य दिखाओ और हमें उसका अनुसरण करने में समर्थ बनाओ!
पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

दसवीं फ्लैश

ईश्वरीय करुणा द्वारा दी गई चोट

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
जिस दिन हर व्यक्ति को उसके द्वारा किए गए अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों का सामना करना पड़ेगा, तो वह चाहेगा कि उसके और उसकी बुराई के बीच कोई दूरी हो। किन्तु अल्लाह तुम्हें अपने बारे में सचेत करता है। और अल्लाह अपने भक्तों पर बड़ा दयालु है। (3:30)

उपरोक्त आयत का एक अर्थ यह है कि इसे ईश्वरीय करुणा द्वारा दिए गए प्रहारों द्वारा स्पष्ट किया जाना चाहिए जो कुरान की सेवा में मेरे साथियों को मानवीय स्वभाव के कारण की गई गलतियों के लिए मिलते हैं। इसलिए कुरान की सेवा से उत्पन्न असाधारण घटनाओं के एक क्रम को गौथ अल-आज़म के चमत्कारी कार्यों के एक उदाहरण के साथ समझाया जाएगा, क्योंकि वह ईश्वर की अनुमति से इस पवित्र सेवा की देखरेख करता है और अपने पवित्र प्रभाव से इसमें सहायता करता है। फिर जो लोग इसे करते हैं वे अपनी सेवा में लगन से लगे रहें।

इस पवित्र कार्य से जुड़े तीन प्रकार के चमत्कार हैं:
प्रथम प्रकार वह पहलू है जो कार्य को तैयार करता है तथा नियोजित व्यक्तियों को उसे करने के लिए प्रेरित करता है।

दूसरा प्रकार बाधाओं को दूर करता है और अपने विरोधियों की बुराई को दूर भगाता है और उन्हें मार डालता है। इस दूसरे प्रकार के बहुत से उदाहरण हैं और वे लम्बे हैं,2 इसलिए उन्हें किसी और समय के लिए स्थगित करते हुए हम तीसरे प्रकार की चर्चा करेंगे, जो सबसे हल्के हैं।

तीसरा प्रकार यह है: जब भी वे लोग जो इस सेवा में ईमानदारी से काम करते हैं

---

[1] नोट 8, पृष्ठ 36-7 देखें।

[2] उदाहरण के लिए, जो लोग धर्म का विरोध करते हैं, वे स्वयं इस दुनिया में रिसाले-ए-नूर के छात्रों को जो यातनाएं और कष्ट देते हैं, उससे भी अधिक दंड भुगतते हैं ; उन्हें वही मिलता है जो उन्होंने दिया है।

जब वे शिथिल हो जाते हैं, तो उन्हें करुणापूर्ण थप्पड़ मिलते हैं। फिर होश में आकर वे फिर से अपना काम शुरू कर देते हैं। इस तरह की घटनाओं की संख्या सौ से भी ज़्यादा है। सिर्फ़ बीस में से तेरह या चौदह को करुणापूर्ण थप्पड़ मिले, जबकि छह या सात को संयमित थप्पड़ मिले।

पहला

यह दुर्भाग्यपूर्ण सैद के बारे में है: जब भी मैंने अपने कर्तव्यों में लापरवाही बरती है, और यह कहते हुए कि, "मुझे इससे क्या लेना-देना?", अपने निजी मामलों में व्यस्त हो गया हूँ, तो मुझे एक थप्पड़ मिला है। मैंने यह राय बना ली है कि मुझे यह मेरी लापरवाही के कारण मिला है।
क्योंकि मेरा जो भी उद्देश्य था जिसने मुझे धोखा दिया और मुझे आगे बढ़ाया, मुझे एक ऐसा थप्पड़ मिला जो उसके विपरीत था। फिर मेरे सच्चे दोस्तों को जो करुणामय थप्पड़ मिले हैं, उनका अध्ययन करने पर पता चलता है कि वे हमेशा उनके उद्देश्य के विपरीत थे - यदि वे लापरवाह थे - तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि ऐसी घटनाएँ कुरान की सेवा से उत्पन्न चमत्कार थीं।

उदाहरण के लिए, जब तक यह बदकिस्मत सईद शेख सईद की घटनाओं के समय वान में कुरान की सच्चाइयों को पढ़ाने में व्यस्त था, तब तक संदिग्ध सरकार ने मेरे साथ कोई हस्तक्षेप नहीं किया और न ही कर सकती थी। फिर जब मैंने कहा "इससे मुझे क्या लेना-देना?" और अपने बारे में सोचते हुए आख़िरत में अपनी जान बचाने के लिए माउंट एरेक की एक खंडहर गुफा में चला गया, तो उन्होंने मुझे बिना किसी कारण के गिरफ़्तार कर लिया और मुझे निर्वासित कर दिया। मुझे बुरदुर लाया गया।

वहाँ, जब तक मैं कुरान की सेवा कर रहा था... उस समय सभी निर्वासितों पर कड़ी नज़र रखी जाती थी और मुझे हर शाम व्यक्तिगत रूप से पुलिस को रिपोर्ट करना होता था, लेकिन मैं और मेरे ईमानदार छात्र खुद को अपवाद मानते थे। वहाँ के गवर्नर ने फ़ेवज़ी पाशा से शिकायत की, लेकिन फ़ेवज़ी पाशा ने जवाब दिया: "उसके साथ हस्तक्षेप न करें! उसके साथ सम्मान से पेश आएँ!" कुरान की सेवा की पवित्र प्रकृति के कारण उसने ऐसा कहा। फिर भी जब भी मैं खुद को बचाने के विचार से अभिभूत होता और केवल परलोक में अपने जीवन के बारे में सोचता और कुरान की सेवा में मेरी थोड़ी सी भी शिथिलता होती, तो मुझे मेरे इरादों के विपरीत एक थप्पड़ मिलता। यानी, मुझे निर्वासन के एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा गया। मुझे इस्पार्टा भेजा गया।

इस्पार्टा में मैंने फिर से अपना काम संभाल लिया। बीस दिन बाद, कई कायर लोगों ने चेतावनी देते हुए कहा: "शायद सरकार इस स्थिति को अच्छी तरह से नहीं देखेगी। बेहतर होगा कि आप थोड़ा संभलकर चलें।"

---

[3] पालू के शेख सईद नक्शबंदी शेख थे, जिन्होंने 1925 की शुरुआत में पूर्वी तुर्की में अंकारा सरकार के खिलाफ प्रसिद्ध विद्रोह का नेतृत्व किया था। उन्हें पकड़ लिया गया और 29 जून 1925 को दियारबकिर में मौत की सजा सुनाई गई। (ट्र.)

[4] यह तुर्की सेना के चीफ ऑफ जनरल स्टाफ मार्शल फेवजी चाकमक को संदर्भित करता है। (ट्र.)

फिर से केवल अपने बारे में सोचने का विचार मुझ पर हावी हो गया, और मैंने कहा: "किसी को भी आने मत दो!" और मुझे निर्वासन के उस स्थान से ले जाया गया और तीसरे स्थान, बरला, भेज दिया गया।

और जब भी बरला में मुझमें सुस्ती आई है और मुझे अपने बारे में ही सोचने का विचार आया है, तो 'सांसारिक'5 में से कोई एक सांप और दोमुंहा पाखंडी मुझे परेशान करने के लिए खड़ा हो गया है। इन आठ वर्षों में मेरे साथ ऐसी अस्सी घटनाएं घट चुकी हैं; मैं उन्हें गिन सकता हूं, लेकिन लोगों को बोर न करने के लिए उन्हें छोटा कर रहा हूं।

मेरे भाइयो! मैंने अपने ऊपर पड़े कुछ करुण थप्पड़ों का वर्णन किया है, अब यदि आप मुझे क्षमा करें तो मैं आपको भी कुछ ऐसी ही पीड़ाएं सुनाता हूं।
अगर कोई नाराज़ हुआ तो मैं उसका नाम नहीं लिखूंगा।

दूसरा

मेरे सच्चे भाई और सबसे पहले और सबसे श्रेष्ठ और त्यागपूर्ण छात्र अब्दुलमसीद का वैन में एक बढ़िया घर था। वह संपन्न था और वह एक शिक्षक था।
अपने विचारों का पालन करते हुए, वह उन लोगों में शामिल नहीं हुआ जो मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे सीमा क्षेत्र में भेजने का प्रयास कर रहे थे, जो कुरान की सेवा की अधिक आवश्यकता वाली जगह थी, और मेरे लाभ के लिए, उसने इसके लिए वोट नहीं दिया। मानो, अगर मैं वहाँ गया होता, तो कुरान की मेरी सेवा गैर-राजनीतिक या ईमानदार नहीं होती, और वे उसे वान से निकाल देते - इसलिए उसने भाग नहीं लिया। लेकिन उसे अपने इरादों के विपरीत एक दयालु थप्पड़ मिला, क्योंकि उसे वान, और उसका सुंदर घर, और उसका मूल क्षेत्र दोनों छोड़ना पड़ा; वह एरगानी जाने के लिए मजबूर था।

तीसरा

हुलुसी बे7 कुरान की हमारी सेवा के लिए महत्वपूर्ण थे। जब वे एग्रीदिर से अपने मूल क्षेत्र में लौटे तो कई चीजें थीं जो उन्हें बहुत आनंद और सांसारिक खुशी प्रदान कर सकती थीं, शायद यही कारण था कि वे कुरान की सेवा में ढीले पड़ गए, जो केवल परलोक से संबंधित है। क्योंकि वे अपने माता-पिता से फिर से मिल गए थे, जिन्हें उन्होंने लंबे समय से नहीं देखा था, और वे घर वापस आ गए थे, और क्योंकि वे पद और सम्मान के साथ वहां लौटे थे, इसलिए दुनिया उन पर मुस्कुरा रही थी और उन्हें अच्छा लग रहा था। हालांकि, कुरान की सेवा में लगे लोगों के लिए, या तो दुनिया उनसे परेशान होनी चाहिए, या उन्हें दुनिया से परेशान होना चाहिए, ताकि वे उस सेवा को ईमानदारी और ईमानदारी से कर सकें।

---

[5] 'सांसारिक' (एहल-ए-दुनिया): वे लोग जिनका दृष्टिकोण इस दुनिया के जीवन तक ही सीमित है, और जो परलोक की उपेक्षा करते हैं, या वे लोग जो इस दुनिया के लिए धर्म बेचते हैं। (ट्र.)

[6] नोट 1, पृष्ठ 58 देखें। (ट्र.)

[7] नोट 2, पृष्ठ 58 देखें। (ट्र.)

हुलुसी का हृदय निश्चित रूप से अडिग था, लेकिन उसकी परिस्थिति ने उसे सुस्ती की ओर धकेल दिया और उसे ईश्वरीय करुणा का एक तमाचा लगा। एक या दो साल तक कई कपटी लोग उसे परेशान करते रहे, जिससे उसका सारा सांसारिक सुख खत्म हो गया। उन्होंने दुनिया को उससे और उसे दुनिया से परेशान कर दिया। इसलिए शब्द के सही अर्थ में उसने अपने कर्तव्य को पूरी ईमानदारी से अपनाया।

चौथा

यह मुहाजिर हाफ़िज़ अहमद हैं।8 उन्होंने स्वयं निम्नलिखित कहा:

"हाँ, मैं स्वीकार करता हूँ कि परलोक में मेरे जीवन के प्रश्न और कुरान की सेवा के साथ उसके संबंध की व्याख्या करते समय मुझसे गलती हुई। मेरी एक इच्छा थी जो मुझे अपनी सेवा में शिथिलता बरतने के लिए प्रेरित करती, और मुझे एक ऐसा झटका लगा जो दयालु था, लेकिन साथ ही कठोर और प्रायश्चित था। यह इस प्रकार था: मेरे गुरु (उस्ताद) नए उपायों के पक्ष में नहीं थे। मेरी मस्जिद उनके घर के बगल में थी और तीन महीने करीब आ रहे थे। अगर मैं अपनी मस्जिद छोड़ देता, तो मैं बहुत सारा सवाब खो देता और जिले में नमाज़ न पढ़ने की आदत पड़ जाती। अगर मैं नए तौर-तरीके नहीं अपनाता, तो मुझे रोक दिया जाता। इसलिए मेरी व्याख्या के अनुसार मैं चाहता था कि मेरे गुरु, जिन्हें मैं अपने जीवन से भी अधिक प्यार करता हूँ, अस्थायी रूप से दूसरे गाँव में चले जाएँ। मुझे नहीं पता था कि अगर वे चले गए, या दूसरे क्षेत्र में चले गए, तो इससे कुरान की सेवा में अस्थायी रूप से कमी आ जाएगी। ठीक उसी समय मुझे एक झटका लगा। यह दयालुतापूर्ण था, लेकिन इतना भयानक कि तीन महीने बाद भी मैं अपने होश में नहीं आ पाया हूँ। हालाँकि, भगवान की स्तुति हो, मेरे गुरु के अनुसार, यह उन्हें प्रदान किया गया था ताकि हम ईश्वरीय दया से आशा कर सकें कि विपत्ति का प्रत्येक मिनट एक दिन की पूजा के बराबर है। क्योंकि गलती दुश्मनी के कारण नहीं हुई थी; यह इच्छा मेरे मन में केवल इसलिए आई क्योंकि मैं परलोक में अपने जीवन के बारे में सोच रहा था।”

पांचवा

यह हक्की एफेंदी है।11 चूंकि वह अब यहां नहीं है, इसलिए मैं उसके लिए काम कर रहा हूं जैसा कि मैंने हुलुसी बे के लिए किया था, और यह कहता हूं: जब हक्की एफेंदी छात्र के रूप में अपने कर्तव्यों का अक्षरशः पालन कर रहा था, तो एक अनैतिक कायमकम12 जिले में आया। इसलिए उसने जो कुछ भी था उसे छिपा दिया।
लिखा गया है ताकि किसी को कोई नुकसान न पहुंचे

---

[8] नोट 4, पृष्ठ 24 देखें। (ट्र.)

[9] अर्थात्, इस्लाम के चिन्हों के विपरीत नवाचार, जैसे तुर्की में नमाज़ के लिए आह्वान।

[10] शुहुर-उ-सेलासे (अर. अल-शुहुर अल-थलथा): रजब, शाबान और रमज़ान के तीन पवित्र महीने। (ट्र.)

[11] नोट 4, पृष्ठ 58 देखें। (ट्र.)

[12] किसी जिले का प्रमुख अधिकारी (ट्र.)

उन्होंने न तो अपने स्वामी के प्रति, न ही अपने आप के प्रति। उन्होंने अस्थायी रूप से रिसाले-ए-नूर की अपनी सेवा छोड़ दी।
अचानक, उसके खिलाफ़ एक अदालती मामला खोला गया, जो एक तरह से ईश्वरीय दया का तमाचा था। उसे एक हज़ार लीरा का जुर्माना भरना था। वह एक साल तक इस धमकी के अधीन रहा, जब तक कि वह यहाँ नहीं आया और हमसे नहीं मिला, और वापस आने पर उसने फिर से कुरान की सेवा और रिसाले-ए-नूर के छात्र होने के कर्तव्यों को संभाल लिया।

इसके बाद दयालु थप्पड़ मारने वाले की सजा हटा दी गई और उसे बरी कर दिया गया।

बाद में छात्रों के लिए एक और काम शुरू हुआ, जिसमें कुरान को नए तरीके से लिखना शामिल था।13 हक्की एफेंदी को एक भाग दिया गया। उन्होंने उत्साहपूर्वक इस पर काम शुरू किया और कुरान का तीसवाँ हिस्सा लिख डाला। लेकिन अपनी तंगी की वजह से उन्हें एक अदालती मामले में किसी की पैरवी करने के लिए गुप्त रूप से मजबूर होना पड़ा। अचानक उन्हें एक और करूणापूर्ण थप्पड़ मिला। उन्होंने अपनी कलम थामने वाली उंगली तोड़ दी। यह ऐसा था मानो उन्हें चेतावनी दे रहे हों: "यह उंगली वकील का केस और कुरान दोनों नहीं लिखेगी!" हम उनकी उंगली देखकर हैरान थे क्योंकि हमें नहीं पता था कि वे केस कर रहे हैं। तब यह समझ में आया कि कुरान की पवित्र, शुद्ध सेवा उन उंगलियों को दूसरे काम में नहीं लगाना चाहती जो कुरान के लिए खास हैं। वैसे भी मैं हुलुसी बे को वैसे ही जानता हूँ जैसे मैं खुद को जानता हूँ और उनकी जगह पर बोला हूँ, और हक्की बे भी वैसे ही हैं। अगर उन्हें मेरा अभिनय पसंद नहीं है तो वे खुद ही अपने थप्पड़ के बारे में लिख सकते हैं!

छठी

यह बेकिर इफेंडी है।14 वह इस समय यहाँ नहीं है, इसलिए जिस तरह मैंने अपने भाई अब्दुलमसीद के लिए काम किया था, उसके भरोसे और वफादारी पर भरोसा करते हुए और मेरे सभी करीबी दोस्तों जैसे कि फियामली हाफ़िज़ और सुलेमान इफेंडी ने जो कहा और जाना, मैं यह कहता हूँ: बेकिर इफेंडी ने दसवाँ वचन छपवाया। फिर हमने उसे पच्चीसवाँ वचन, कुरान की चमत्कारिकता के बारे में, नए अक्षरों के आने से पहले छपवाने के लिए भेजा।15

हमने यह भी लिखा कि हम उसे छपाई का खर्च भेज देंगे, जैसा कि हमने उसे दसवें वचन की छपाई का खर्च भेजा था। लेकिन मेरी गरीबी को देखते हुए और यह देखते हुए कि छपाई का खर्च लगभग चार सौ लीरा होगा, बेकिर इफेंडी ने खुद से सोचा: "शायद होजा खुश नहीं होगा अगर मैं इसे अपनी जेब से चुकाऊँ," और उसकी आत्मा ने उसे धोखा दिया। यह छपा नहीं और कुरान की हमारी सेवा को काफी नुकसान पहुँचा। दो महीने बाद उसके नौ सौ लीरा छप गए।

---

[13] इसका तात्पर्य है कि इसे 'संयोगों' के चमत्कार को दर्शाने के लिए लिखा गया था।
'संयोग', नोट 1, पृष्ठ 56 देखें - ट्र.)

[14] बेकिर डिकमेन 1898-1954। वह बरला का व्यापारी था। (ट्र.)

[15] अर्थात्, 1928 के अंत में लैटिन वर्णमाला का परिचय। (ट्र.)

चोरी हो गई और उसे एक दयालु लेकिन गंभीर झटका लगा। भगवान की इच्छा से, खोई हुई नौ सौ लीरा एक तरह की भिक्षा के समान थी।

सातवां

यह शमली हाफ़िज़ तेवफिक़ है।16 वह खुद कहते हैं: "हाँ, मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैंने अनजाने में और ग़लती से कुछ ऐसे काम किए थे जो क़ुरान की हमारी सेवा को नुकसान पहुँचा सकते थे, इसलिए मुझे दो करुणा भरे थप्पड़ मिले। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे उसी का नतीजा थे।

“पहला: अल्लाह की स्तुति हो, मुझे अरबी लिपि की लिखावट मिली है जो क़ुरआन लिखने के लिए एक हद तक उपयुक्त है। मेरे आका ने सबसे पहले मुझे क़ुरआन के तीन तीसवें हिस्से लिखने के लिए दिए और बाकी को दूसरों में बाँट दिया। क़ुरआन लिखने की चाहत ने रिसाले-ए-नूर के हिस्सों का कच्चा और अंतिम मसौदा लिखने की सेवा करने की मेरी इच्छा को नष्ट कर दिया। मेरे मन में यह अहंकार भी पैदा हो गया कि मैं उन लोगों से आगे निकल जाऊँ जो अरबी लिपि ठीक से लिखना नहीं जानते। जब मेरे आका ने एहतियात के तौर पर मुझसे कहा कि यह उनके लिए है, तो मैंने अहंकार में कहा था: “मैं यह जानता हूँ। मुझे इसे सीखने की ज़रूरत नहीं है।” इस गलती की वजह से मुझे एक असाधारण और अकल्पनीय थप्पड़ मिला: मैंने जो लिखा वह उस भाई (हुस्रेव) के लिखे से भी कम था जो अरबी लिपि के बारे में सबसे कम जानता था। हम सब हैरान थे। और अब हम समझ गए हैं कि यह एक थप्पड़ था।

“दूसरा: मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरे दो दृष्टिकोण कुरान की सेवा के लिए आवश्यक पूर्ण ईमानदारी के लिए हानिकारक थे, जो कि केवल ईश्वर के लिए होनी चाहिए, और मुझे एक गंभीर झटका लगा। क्योंकि मैं इस क्षेत्र में एक अजनबी और विदेशी की तरह हूँ। इसके अलावा - लेकिन मुझे शिकायत नहीं करनी चाहिए - क्योंकि मैंने अपने गुरु के महत्वपूर्ण नियमों, मितव्ययिता और संतोष का पालन नहीं किया, मैं गरीबी से पीड़ित हूँ। मैं स्वार्थी और अभिमानी लोगों के साथ घुलने-मिलने के लिए मजबूर हूँ, और इसलिए, ईश्वर इसे क्षमा करे, मुझे पाखंडी और चापलूसी तरीके से उदार होने के लिए मजबूर किया गया। मेरे गुरु ने मुझे बार-बार चेतावनी दी, याद दिलाया और डांटा, लेकिन दुर्भाग्य से मैं खुद को रोक नहीं सका। एक तरफ जिन्न और मनुष्यों में से शैतान मेरी इस स्थिति से लाभ उठा रहे थे जो कि सर्व-विवेकपूर्ण कुरान की सेवा की भावना के विपरीत थी, और दूसरी तरफ इसने हमारी सेवा में एक ठंडापन और सुस्ती पैदा कर दी।

"मेरी इस गलती के कारण मुझे बहुत बड़ा झटका लगा, लेकिन ईश्वर की इच्छा से मुझे बहुत दया आई। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह सब उसी गलती के कारण हुआ।
झटका यह था: हालाँकि आठ साल से मेरे दोनों करीबी दोस्त हैं

---

[16] तेवफिक गोक्सू, 1887-1965, बारला में बेदिउज्जमां के छात्र और मुंशी थे, और उन्हें कैद कर लिया गया था
उनके साथ इस्कीशेर और डेनिज़ली में भी रहे। उन्होंने 1911 में दमिश्क में बेदिउज़्ज़मान को देखा, जहाँ उनके पिता सेना में सेवारत थे, इसलिए उनका नाम शमली पड़ा। (ट्र.)

अपने गुरु के साथ संबंधों और उनके द्वारा लिखे गए रफ़ ड्राफ्ट और फ़ाइनल ड्राफ्ट के लेखक होने के कारण, लगभग आठ महीनों तक मैं रिसाले-ए-नूर से लाभ उठाने में असमर्थ रहा। हम इस स्थिति से हैरान थे। मैं और मेरे गुरु दोनों ने इसका कारण जानना चाहा, कि ऐसा क्यों था। अब हमें यकीन है कि कुरान की वे सच्चाईयाँ प्रकाश और प्रकाशमान हैं, और बनावटीपन, चापलूसी और अपमान के अंधेरे के साथ एक नहीं हो सकतीं।

इसलिए उन सत्यों के प्रकाश का अर्थ मुझसे दूर होता जा रहा था, वे मुझे विदेशी और अजनबी लग रहे थे। मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे ऐसी सेवा के योग्य ईमानदारी प्रदान करें, और मुझे 'सांसारिकता' के प्रति पाखंड और बनावटीपन से बचाएँ। मैं सबसे पहले अपने गुरु और अपने सभी भाइयों से प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरे लिए प्रार्थना करें।

“सबसे दोषपूर्ण,
"शम्लि हाफ़िज़ तेवफिक"

आठवां

यह सेयरानी है। हुस्रेव की तरह, वह मेरे छात्रों में से एक था जो रिसाले-ए-नूर के बारे में उत्साही था और उसे इसकी अच्छी समझ थी। मैंने इस्पार्टा में अपने छात्रों से 'संयोगों' के बारे में सलाह ली, जो कुरान के रहस्यों और जाफ़र के विज्ञान की कुंजी हैं। उन्होंने जवाब दिया और उत्सुकता से भाग लिया, लेकिन क्योंकि सेयरानी के पास अन्य विचार और रुचि के बिंदु थे, उन्होंने जवाब नहीं दिया, और इसके अलावा वे चाहते थे कि मैं वह सत्य बता दूँ जिसके बारे में मैं निश्चित था। उन्होंने मुझे एक पत्र लिखा जिसने मुझे काफी परेशान कर दिया। मैंने कहा: "काश! मैंने इस छात्र को खो दिया।" निश्चित रूप से मैं उनके विचारों को समझाना चाहता था, लेकिन एक और अर्थ ने मामले को उलझा दिया। उन्हें ईश्वरीय करुणा से झटका लगा: वे लगभग एक साल तक एकांत स्थान (यानी जेल में) में रहे।

नौवां

यह हाफ़िज़ जुहतु द एल्डर है। एक समय ऐसा था जब वह आगरस में रिसाले-ए-नूर के छात्रों की देखरेख कर रहा था, छात्रों के आध्यात्मिक सम्मान को पर्याप्त नहीं मानते हुए - हालाँकि उन्होंने पैगंबर (UWBP) के आचरण का पालन करना और नवाचारों से बचना अपना तरीका बना लिया था - उन्होंने 'दुनियावी' की नज़रों में अपनी स्थिति बढ़ाने की उम्मीद में एक गंभीर नवाचार सिखाने का बीड़ा उठाया। उन्होंने एक ऐसी गलती की जो हमारे तरीके के बिल्कुल विपरीत थी। उन्हें ईश्वरीय करुणा से एक भयानक थप्पड़ मिला। एक ऐसी घटना घटी जिसने उनके परिवार के सम्मान को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। दुर्भाग्य से, हाफ़िज़ जुहतु द यंगर भी इस दुखद घटना से प्रभावित हुए, हालाँकि वे किसी भी थप्पड़ के लायक नहीं थे। लेकिन ईश्वर की इच्छा से यह एक लाभदायक शल्य चिकित्सा के रूप में कार्य करेगा जो उनके दिल को सांसारिक मोह से मुक्त करेगा और उन्हें पूरी तरह से कुरान के प्रति समर्पित कर देगा।

दसवां

यह कोई हाफ़िज़ अहमद (अल्लाह उन पर रहम करे) नाम का शख़्स है। दो-तीन साल तक उसने हौसला बढ़ाने वाली किताबें लिखीं और उनसे फ़ायदा उठाया। फिर दुनियावी लोगों ने उसके चरित्र की कमज़ोरी का फ़ायदा उठाया। उसका उत्साह ठंडा पड़ गया। उसने दुनियावी लोगों से रिश्ता बनाया, शायद इसलिए कि उनसे नुकसान न हो और उनसे कुछ बात हो जाए, कोई ओहदा मिल जाए और अपनी थोड़ी-सी रोज़ी-रोटी को और बढ़ा ले। लेकिन इस तरह कुरान की सेवा में जो ढिलाई और नुकसान हुआ, उसके बदले में उसे दो झटके लगे। एक तो यह कि उसे अपनी कमज़ोरी से पाँच और लोगों का पेट पालना पड़ा और उसकी हालत बहुत ख़राब हो गई। दूसरा तमाचा: जो शख़्स इज्जत और आत्म-सम्मान के मामले में बहुत संवेदनशील था और किसी की आलोचना या आपत्ति बर्दाश्त नहीं कर सकता था, उसे कुछ चालाक लोगों ने अनजाने में ही ढाल की तरह इस्तेमाल किया और उसकी इज्जत पर दाग लगा दिया। उसकी 90 प्रतिशत इज्जत नष्ट हो गई और 90 प्रतिशत लोग उसके खिलाफ हो गए। भगवान उसे माफ करें! भगवान की इच्छा से, वह अपने होश में आएगा और अपने कर्तव्य पर वापस लौटेगा।

ग्यारहवां

यह इसलिए नहीं लिखा गया क्योंकि शायद वह इससे सहमत नहीं होते।

बारहवाँ

ये हैं गुरु गालिब (अल्लाह उन पर रहम करे)। जी हाँ, उन्होंने

उन्होंने ग्रंथों के अंतिम प्रारूपों को लिखने में निष्ठापूर्वक और सराहनापूर्वक महान सेवाएं दीं, किसी भी कठिनाई के सामने कोई कमजोरी नहीं दिखाई। अधिकांश दिन वे आते और उत्सुकता से सुनते, उनकी प्रतिलिपि बनाते। फिर तीस लीरा की फीस के बदले में उन्होंने पूरे शब्द और पत्र लिखवाए। उनका उद्देश्य उन्हें अपने मूल क्षेत्र में वितरित करना और वहां के लोगों को प्रबुद्ध करना था। लेकिन कुछ विचारों के कारण, उन्होंने ग्रंथों को उस तरह वितरित नहीं किया जैसा उन्होंने सोचा था और उन्हें उनके बक्से में ही छोड़ दिया। अचानक एक

एक भयंकर घटना घटी, जिसके कारण उन्हें एक वर्ष तक कष्ट भोगना पड़ा। मुट्ठी भर सरकारी शत्रुओं के स्थान पर उन्हें अनेक अन्यायी, अत्याचारी शत्रु प्राप्त हो गए, जो केवल इसलिए शत्रुतापूर्ण हो सकते थे, क्योंकि उन्होंने ग्रंथ वितरित किए थे, तथा उन्होंने अपने कुछ मित्रों को खो दिया।

तेरहवां

यह हाफ़िज़ हलीद17 (ईश्वर उन पर दया करे) हैं। उन्होंने कहा:

---

[17] पेशे से शिक्षक हाफ़िज़ हलीद टेकिन बरला के मूल निवासी थे। वे वहाँ बेदिउज़्ज़मान के करीबी छात्रों में से एक थे, और उनके मुंशी के रूप में भी काम करते थे। (अनुवाद)

"हाँ, मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैं अपने गुरु द्वारा कुरान की सेवा में वितरित किए गए कार्यों के मसौदे लिखने में बहुत व्यस्त था, जब हमारे क्वार्टर में एक मस्जिद में इमाम का पद उपलब्ध हुआ। एक बार फिर अपने पुराने लिबास में सजने और पगड़ी पहनने के इरादे से, मैंने अस्थायी रूप से अपनी सेवा की उपेक्षा की और इसे करने से परहेज किया। मुझे अपने इरादों के विपरीत एक दयालु थप्पड़ मिला। हालाँकि आठ या नौ महीने तक मैंने इमाम के रूप में काम किया, लेकिन मैं मुफ्ती के बार-बार के वादों के बावजूद असाधारण रूप से पगड़ी पहनने में असमर्थ था। मुझे कोई संदेह नहीं है कि यह दयालु थप्पड़ मेरी गलती का परिणाम था। मैं न केवल अपने गुरु द्वारा संबोधित किया जाने वाला व्यक्ति था, बल्कि उनके मसौदों का लेखक भी था। मेरी उपेक्षा के कारण उन्हें कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं।

किसी भी स्थिति में... फिर भी, भगवान का शुक्र है, हमें अपनी गलती का एहसास हुआ और समझ में आया कि कैसे
यह सेवा बहुत पवित्र है। हमें पूरा भरोसा था कि हमारे पीछे शाह गेलानी जैसे एक रक्षक देवदूत की तरह एक गुरु मौजूद हैं।

"परमेश्वर के सेवकों में सबसे कमज़ोर,
"हाफ़िज़ ख़ालिद"

चौदहवाँ

इसमें तीन मुस्तफाओं को लगाए गए तीन छोटे थप्पड़ शामिल हैं।

पहला: आठ साल तक मुस्तफा चावुस (ईश्वर उन पर रहम करे) हमारी छोटी सी निजी मस्जिद की देखभाल करते रहे और उसके चूल्हे, पैराफिन और माचिस की भी देखभाल करते रहे। बाद में मुझे पता चला कि आठ साल तक उन्होंने पैराफिन और माचिस का खर्च अपनी जेब से उठाया। खास तौर पर शुक्रवार से पहले वाली रात को वे जमात में शामिल होते थे, जब तक कि कोई और जरूरी काम न हो। फिर, उनकी सरलता का फायदा उठाते हुए 'दुनियादारों' ने उनसे कहा: "वे हाफ़िज़ के काम में दखल देने जा रहे हैं -

शब्दों के लेखकों में से एक - पगड़ी पहने हुए। उसे अस्थायी रूप से गुप्त रूप से प्रार्थना करने से भी रोकना चाहिए। आप लेखक से कहें कि वे अपनी पगड़ी उतार दें, इससे पहले कि वे उसे जबरदस्ती उतार दें।" वे नहीं जानते थे कि मुस्तफा चावुस जैसे उच्च आत्मा वाले व्यक्ति के लिए कुरान की सेवा में कार्यरत किसी अन्य व्यक्ति से उसकी पगड़ी उतारने के लिए कहना बहुत कठिन था। लेकिन उसने उसे वही बताया जो उन्होंने कहा था।

उस रात मैंने सपना देखा कि मुस्तफा चावुस कायमकम के पीछे गंदे हाथों के साथ मेरे कमरे में आया। मैंने उससे अगले दिन पूछा: "मुस्तफा चावुस, तुमने आज किसे देखा? मैंने तुम्हें कायमकम के पीछे गंदे हाथों के साथ सपना देखा।" उसने जवाब दिया: "काश!

गांव के मुखिया ने मुझसे कहा कि 'मुंशी को बता दो।' मुझे नहीं पता था कि इसके पीछे क्या था।"

इसके अलावा, उसी दिन वह मस्जिद में लगभग एक ओक्का[18] पैराफिन भी लेकर आया।
जिस तरह से उसने पहले कभी नहीं किया था, उसने दरवाजा खुला छोड़ दिया और

[18] एक ओक्का 2.9 पाउंड के बराबर था। (ट्र.)

बिल्ली का बच्चा अंदर आया। फिर एक बड़ा आदमी आया और उसने ईट में पड़े पैराफिन को पानी समझकर मस्जिद के चारों ओर छिड़क दिया, ताकि उसे साफ किया जा सके और बिल्ली के बच्चे द्वारा नमाज़ की चटाई पर छोड़ी गई गंदगी को भी साफ किया जा सके। यह असाधारण बात है कि उसे पैराफिन की गंध नहीं आई। यानी मस्जिद ने उस आदमी को पैराफिन की गंध नहीं आने दी, ताकि मुस्तफा चावुस को बता सके

स्वभाव की भाषा के माध्यम से: "हमें आपके पैराफिन की आवश्यकता नहीं है। मैंने इसे आपकी गलती के कारण स्वीकार नहीं किया है।" उस सप्ताह शुक्रवार और अन्य महत्वपूर्ण प्रार्थनाओं की पूर्व संध्या पर भी, वह मण्डली में शामिल होने में असमर्थ था, हालाँकि उसने कोशिश की थी।

तब उसने सच्चे मन से पश्चाताप किया और क्षमा मांगी, और उसका हृदय पुनः पवित्र हो गया।

दूसरे मुस्तफा: ये कुलेओनू से मेरे योग्य, परिश्रमी और महत्वपूर्ण छात्र मुस्तफा और उनके सबसे वफादार, आत्म-त्यागी दोस्त हाफ़िज़ मुस्तफा (भगवान उन्हें दया प्रदान करें) हैं। धार्मिक उत्सव के बाद मैंने उन्हें संदेश भेजा कि वे न आएं, कहीं ऐसा न हो कि 'दुनियावी' हमें परेशान करें और कुरान की हमारी सेवा में हमें हतोत्साहित करें, लेकिन अगर उन्हें आना ही है, तो उन्हें अकेले आना चाहिए। फिर एक रात, वे तीनों एक साथ आए। उनका इरादा भोर से पहले चले जाने का था। एक तरह से जो पहले कभी नहीं हुआ था, न तो मुस्तफा चावुस, न ही सुलेमान एफेंदी, न ही मैं, न ही उन्होंने, कोई स्पष्ट सावधानी बरतने के बारे में सोचा था; हमें ऐसा करना भूला दिया गया था। हम में से प्रत्येक ने इसे दूसरों पर छोड़ दिया और कोई उपाय नहीं किया। वे भोर से पहले चले गए। फिर दो घंटे तक वे ऐसे तूफान से घिरे रहे कि मैं यह सोचकर घबरा गया कि वे इससे बच नहीं पाएंगे। इस सर्दी में ऐसा कोई तूफान नहीं आया था, न ही मुझे किसी पर इतना दया आई थी। सावधानी न बरतने की सज़ा के तौर पर मैं सुलेमान को उनके पीछे भेजने वाला था ताकि पता लगा सकूं कि वे ठीक हैं या नहीं। मुस्तफ़ा चावुस ने कहा: "अगर वह चला गया, तो वह भी फंस जाएगा, और मुझे उसे खोजने के लिए उसके पीछे जाना होगा। फिर अब्दुल्ला चावुस को मेरे पीछे आना होगा।" यह कहते हुए: "हमें भगवान पर भरोसा है!" हमने इंतज़ार किया।

सवाल: आप अपने खास दोस्तों पर आने वाली मुसीबतों को थप्पड़ समझते हैं, कुरान की खिदमत में लापरवाही की सजा। जबकि जो लोग आपसे और कुरान की खिदमत से सच्चे दुश्मन हैं, वे सलामत रहते हैं। दोस्तों को थप्पड़ क्यों मारे जाते हैं, जबकि दुश्मनों को कोई तकलीफ नहीं होती?

उत्तर: "गलत काम जारी नहीं रहता, बल्कि कुफ्र जारी रहता है" के अनुसार, 19 दोस्तों की गलतियाँ कुरान की इस सेवा में एक तरह की गलतियां हैं, और इसलिए उन्हें तुरंत दंडित किया जाता है। एक व्यक्ति को एक दयालु थप्पड़ मिलता है और अगर वह समझदार है, तो उसे अपनी गलती का एहसास होता है। लेकिन दुश्मन इस सेवा का विरोध करते हैं और गुमराही के कारण इसे रोकने की कोशिश करते हैं। जानबूझकर या जानबूझकर।

[19] अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, द्वितीय, 107।

अनजाने में, हमारी सेवा के खिलाफ़ उनकी आक्रामकता नास्तिकता को बढ़ावा देती है। चूँकि अविश्वास कायम रहता है, इसलिए आम तौर पर उन्हें तुरंत कोई झटका नहीं लगता।

जिस प्रकार छोटे-मोटे अपराध करने वालों की सज़ा स्थानीय स्तर पर दी जाती है और गंभीर अपराध उच्च न्यायालयों में भेजे जाते हैं, उसी प्रकार नियमानुसार ईमान वालों और करीबी दोस्तों की छोटी-मोटी गलतियों की सज़ा इसी दुनिया में जल्दी और आंशिक रूप से दी जाती है, ताकि उन्हें जल्दी से जल्दी शुद्ध किया जा सके। लेकिन गुमराह लोगों के अपराध इतने बड़े होते हैं कि चूँकि उनकी सज़ाएँ इस छोटी सी सांसारिक ज़िंदगी से भी बड़ी होती हैं, इसलिए न्याय के अनुसार उन्हें शाश्वत क्षेत्र में सर्वोच्च न्यायालय में भेजा जाता है, और ज़्यादातर उन्हें यहाँ कोई सज़ा नहीं मिलती।

हदीस “यह दुनिया ईमान वालों की जेल और काफ़िरों की जन्नत है”20 इसी सच्चाई की ओर इशारा करती है। यानी, चूँकि इस दुनिया में ईमान वाले को अपनी गलतियों के लिए आंशिक सज़ा मिलती है, इसलिए यह उसके लिए सज़ा की जगह है। यह उसके परलोक में खुशी के संबंध में एक कालकोठरी और नर्क है। और चूँकि काफ़िरों को नर्क से रिहा नहीं किया जाएगा और उन्हें इस दुनिया में अपने अच्छे कामों के लिए आंशिक रूप से पुरस्कार मिलता है और उनके बड़े पाप स्थगित कर दिए जाते हैं, इसलिए यह दुनिया उनके परलोक में जीवन के संबंध में उनके लिए जन्नत है। क्योंकि वास्तव में और अर्थ में भी आस्तिक इस दुनिया में काफ़िरों से कहीं ज़्यादा खुश है। एक आस्तिक का ईमान उसकी आत्मा में एक जन्नत की तरह है; जबकि काफ़िरों का अविश्वास उसके अस्तित्व में एक तरह का नर्क जला देता है।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

[20] मुस्लिम, ज़ुहद, 3; तिर्मिधि, ज़ुहद, 16; इब्न माजा, ज़ुहद, 3; मुसनद, द्वितीय, 197, 323, 389, 485।

ग्यारहवीं फ्लैश

पैगंबर के आचरण की सीढ़ी (UWBP)
और नवाचारों की बीमारी के लिए मारक

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
अब तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया है। उसे इस बात का दुःख है कि तुम नष्ट हो जाओ। वह तुम्हारे लिए बड़ा चिंतित है। वह ईमानवालों के प्रति बड़ा दयावान, दयावान है। (9:128)

[इस आयत का पहला पड़ाव पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के आचरण का राजमार्ग है,1 और इसका दूसरा पड़ाव पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के आचरण की सीढ़ी है।]

फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, मैं उसी पर भरोसा करता हूँ, वही सिंहासन का पालनहार है।"
कह दो, "यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरे पीछे आओ। अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।" (3:31)

इन दो महान श्लोकों से संबंधित सैकड़ों बिंदुओं में से ग्यारह को संक्षेप में समझाया जाएगा।

पहला बिंदु

ईश्वर के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: "जो कोई भी मेरे आचरण (सुन्नत) पर कायम रहेगा, जबकि मेरी कौम भ्रष्ट हो जाएगी, उसे सौ शहीदों का सवाब मिलेगा।"

हां, पैगंबर (UWBP) की प्रथाओं का पालन करना निश्चित रूप से अत्यधिक है

[1] अर्थात्, चौथा फ्लैश। (ट्र.)

[2] इब्न 'अदिय, अल-कामिल फ़ि'एल-दुआफ़ा', द्वितीय, 739; अल-मुंधिरी, अल-तरग़िब वाल-तारिब, मैं, 41; तबरानी, अल-मजमा अल-कबीर, 1394; 'अली इब्न हुसाम अल-दीन, मुंतखबत कन्ज़ अल-उम्मल, मैं, 100; अल-हयथामी, मजमा अल-ज़वायद, viii, 132।

सराहनीय और सार्थक, और तब और भी अधिक जब नवाचार व्याप्त हों। व्यवहार के एक छोटे से मामले में भी उनका पालन करना, विशेष रूप से जब पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) का समुदाय भ्रष्ट हो, एक शक्तिशाली विश्वास और ईश्वर के प्रति भय को दर्शाता है। और प्रथाओं का पालन करना सीधे महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) को याद करता है, और इस तरह की याद ईश्वरीय उपस्थिति की याद में बदल जाती है। जिस क्षण उन्हें कम से कम महत्वपूर्ण व्यवहार में भी देखा जाता है, खाने,3 पीने,4 या सोने के आचरण में, ऐसे आदतन, प्राकृतिक कार्य शरीयत के अनुपालन में पूजा के पुण्य कार्य बन जाते हैं। क्योंकि व्यक्ति ईश्वर के रसूल (यूडब्ल्यूबीपी) का अनुसरण करने के बारे में सोचता है और अपने कार्यों को शरीयत के आचरण के रूप में मानता है। फिर वह याद करता है कि रसूल (यूडब्ल्यूबीपी) शरीयत लेकर आए थे, और फिर उसका दिल सर्वशक्तिमान ईश्वर, सच्चे कानून निर्माता की ओर मुड़ जाता है, और उसे ईश्वरीय उपस्थिति और पूजा की भावना का एक प्रकार का एहसास होता है।

इस रहस्य के आधार पर, जो व्यक्ति पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के आचरण का पालन करना अपनी आदत बना लेता है, वह अपने सभी कार्यों को पूजा में बदल देता है, और अपने पूरे जीवन को फलदायी और पुरस्कार देने वाला बना सकता है।

दूसरा बिंदु

इमाम-ए रब्बानी, अहमद फ़ारूक़ी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "मैंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा में विभिन्न स्तरों पर यात्रा करते हुए देखा कि संतों की जो श्रेणियाँ सबसे अधिक प्रतिभाशाली, शानदार, सूक्ष्म और सुदृढ़ थीं, वे वे लोग थे जिन्होंने पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के आचरणों का पालन करना अपने मार्ग का आधार बनाया। यहाँ तक कि उन श्रेणियों के साधारण संत भी अन्य श्रेणियों के सर्वोच्च संतों से अधिक शानदार दिखाई दिए।"6

जी हाँ, इमाम-ए रब्बानी, द्वितीय सहस्राब्दि के पुनर्योजी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) सच बोलते हैं। जो व्यक्ति पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के आचरण को अपने मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में लेता है, वह ईश्वर के प्रिय (यूडब्ल्यूबीपी) की छाया में ईश्वर का प्रिय होने के पद तक पहुँचता है।

तीसरा बिंदु

जिस समय यह बेचारा सैद पुराने सैद से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहा था, उसकी बुद्धि और हृदय एक भयानक आध्यात्मिक तूफान में सत्यों के बीच लड़खड़ा रहे थे, जो एक मार्गदर्शक की कमी और उसकी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा के अभिमान के कारण उत्पन्न हुआ था। वे इधर-उधर उछल रहे थे, ऊपर-नीचे हो रहे थे, कभी प्लीएडेस से ज़मीन पर, कभी ज़मीन से प्लीएडेस पर।

---

[3] देखें, तिर्मिधि, अतिमा, 47; अबू दाउद, अशरिबा, 15; इब्न माजा, अतिमा, 7; मुसनद, vi, 143, 207, 265.

[4] देखें, बुखारी, अशरीबा, 26; मुस्लिम, अशरीबा, 122-3; तिर्मिज़ी, अशरीबा, 14.

[5] देखें, बुखारी, मंगलाचरण, 8; तिर्मिधि, दावत, 29; अबू डेविड, शिष्टाचार, 177.

[6] इमाम रब्बानी, अल-मकतूबत, i, 240 (संख्या: 260)।

उस समय मैंने देखा कि जहाजों में चलने वाले मार्ग को दिखाने वाले किबला-निर्देशक कम्पास की तरह, आचरण के प्रत्येक मामले, यहां तक कि आचरण के छोटे बिंदु भी, असंख्य खतरनाक, अंधेरे रास्तों के बीच बिजली के स्विच की तरह थे।

जब भी उस आध्यात्मिक यात्रा के दौरान मैंने खुद को बहुत ज़्यादा दबाव में देखा और वास्तव में बहुत ज़्यादा बोझ से दबे हुए देखा, मैंने उस स्थिति से संबंधित अभ्यासों के मामलों का पालन किया, मुझे एक हल्कापन महसूस हुआ जैसे कि मेरे सारे बोझ मुझसे दूर हो रहे हों। उनके प्रति समर्पित होने से, मैं संदेह और शंकाओं से बच गया, यानी, ऐसी चिंताओं से जैसे: "क्या यह कार्रवाई का तरीका सही है, क्या यह फायदेमंद है?" लेकिन अगर मैंने उन्हें छोड़ दिया, तो मैंने देखा कि दबाव बहुत ज़्यादा था; कई रास्ते थे और यह नहीं पता था कि वे कहाँ ले जाएँगे। बोझ भारी था, और मैं पूरी तरह से शक्तिहीन था। मेरा दृष्टिकोण छोटा था, और रास्ता, अंधेरा। लेकिन जब भी मैंने पैगंबर (UWBP) के अभ्यासों का पालन किया, तो रास्ता रोशन और सुरक्षित दिखाई दिया। मुझे लगा जैसे कि बोझ हल्का हो गया और दबाव हट गया। उन समयों में मैंने अपने स्वयं के अवलोकन के माध्यम से पुष्टि की कि इमाम-ए रब्बानी ने क्या कहा था।

चौथा बिंदु

एक समय, मैंने खुद को एक अजीब दुनिया में देखा जो मृत्यु पर विचार करने और "मृत्यु एक वास्तविकता है" प्रस्ताव की पुष्टि करने से उत्पन्न मन की स्थिति से उत्पन्न हुई थी,7
और दुनिया की क्षणभंगुरता और गुज़रने से। मैंने खुद को तीन बड़ी लाशों के सिर पर खड़ी एक लाश के रूप में देखा।

एक: मैं सभी जीवित प्राणियों की अमूर्त लाश के सिर पर एक कब्र के पत्थर की तरह था, जिसके साथ मैं अपने जीवन से जुड़ा हुआ था और जो अतीत की कब्र में प्रवेश कर चुका था।

दूसरा: इस शताब्दी के मुख पर स्थित पृथ्वी के कब्रिस्तान में, जो उन सभी जीवित प्राणियों की प्रजातियों के अतीत की कब्र में दफन विशाल शव के शीर्ष पर स्थित समाधि का पत्थर था, जिनसे मानव जाति अपने जीवन के माध्यम से जुड़ी हुई है, मैं मात्र एक बिंदु था जिसे शीघ्रता से मिटा दिया जाएगा, एक चींटी जो शीघ्र ही मर जाएगी।

तीसरा: चूँकि प्रलय के दिन ब्रह्माण्ड का नाश होना निश्चित है, इसलिए मैंने इसे इसी प्रकार देखा।
उस विशाल शव की मृत्यु की पीड़ा से खुद को भयभीत, उसकी मृत्यु पर आश्चर्य और विस्मय में देखने के अलावा, मेरी अपनी मृत्यु भी, जो भविष्य में निश्चित है, उस समय घटित होती हुई प्रतीत हुई। "और यदि वे मुँह फेर लें" (आयत 9:129) के अनुसार, मेरी मृत्यु पर सभी प्राणी, मेरे सभी प्रियजन, मुझसे मुँह फेरकर मुझे त्यागकर और मुझे अकेला छोड़कर चले गए। मेरी आत्मा को उस ओर खींचा जा रहा था

---

[7] देखें, अहमद इब्न मुहम्मद, किताब उसुल अल-दीन, i, 213; अल-किन्नावजी, क़त्फ़ अल-थमर फ़ी बयान 'अकीदा अहल अल-अथर, आई, 121।

भविष्य अनंत काल के बाद की ओर है, जो एक असीम महासागर जैसा है। चाहे वह चाहे या न चाहे, उसे महासागर में फेंक दिया जाएगा।

उस अजीब और दुखद मनःस्थिति में, मुझे विश्वास और कुरान से मदद मिली; आयत, "लेकिन अगर वे मुँह मोड़ते हैं, तो कह दो: 'मेरे लिए ईश्वर ही काफी है, उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है; मैं उसी पर भरोसा करता हूँ - वह सर्वोच्च सिंहासन का पालनकर्ता है!'" एक सुरक्षित और भरोसेमंद नाव की तरह मेरी सहायता के लिए आया। मेरी आत्मा पूरे आत्मविश्वास और खुशी के साथ आयत पर सवार हुई। मैं समझ गया कि इसके स्पष्ट अर्थ के अलावा, एक सांकेतिक अर्थ ने मुझे सांत्वना दी थी जिससे मुझे शांति और स्थिरता मिली थी।

हां, इसका स्पष्ट अर्थ ईश्वर के महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) से कहता है: "यदि गुमराह लोग दूर हो जाएं, तुम्हारी शरीयत और आचारों से दूर हो जाएं और कुरान पर ध्यान न दें, तो चिंता न करें। कह दो: सर्वशक्तिमान ईश्वर मेरे लिए पर्याप्त है। मैं उस पर भरोसा करता हूं। वह उनके स्थान पर दूसरों को खड़ा करेगा जो मेरा अनुसरण करेंगे।

उसके शासन का सिंहासन सब कुछ समेटे हुए है; विद्रोही उसकी सीमा से बाहर नहीं निकल सकते, न ही सहायता मांगने वाले बिना सहायता के रह सकते हैं।" जबकि इसका सांकेतिक अर्थ यह कहता है:

"हे मनुष्य! हे मानवजाति के नेता और मार्गदर्शक! यदि सभी प्राणी तुम्हें छोड़कर अनित्यता के मार्ग पर चले जाएं; यदि जीव तुमसे विमुख होकर मृत्यु के मार्ग पर चले जाएं; यदि लोग तुम्हें त्यागकर श्मशान में चले जाएं; यदि उपेक्षा और पथभ्रष्ट लोग तुम्हारी बात न मानें और अंधकार में गिर जाएं; तो तुम चिन्ता मत करो।

कहो: मेरे लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर ही काफी है। जब वह मौजूद है, तो हर चीज़ मौजूद है। जो चले गए हैं, वे अस्तित्वहीन नहीं हो गए हैं, वे उसके दूसरे लोक में चले गए हैं। अपनी असीम उदारता और अपने असंख्य सैनिकों में से, वह सर्वोच्च सिंहासन का स्वामी उनके स्थान पर दूसरों को भेजता है। जो लोग कब्रिस्तान में प्रवेश कर गए हैं, वे नष्ट नहीं हुए हैं, वे दूसरी दुनिया में चले गए हैं। वह उनके स्थान पर दूसरे अधिकारियों को भेजेगा। और वह गुमराह लोगों के स्थान पर सच्चे मार्ग पर चलने वाले आज्ञाकारी सेवकों को भेज सकता है। चूँकि ऐसा है, इसलिए वह हर चीज़ का स्थान ले लेता है। कोई भी चीज़ उसके उपकारों, उसके सम्मान का स्थान नहीं ले सकती।

इस सांकेतिक अर्थ ने उन तीन भयानक लाशों को एक अलग रूप दे दिया, जिन्होंने मुझे आतंक से भर दिया था। वे एक ज्ञान-प्रदर्शन मार्ग, एक शिक्षाप्रद भ्रमण, कर्तव्यों के पालन के लिए एक यात्रा, एक सेना से मुक्ति और कर्तव्यों के साथ कार्यभार बन गए, जिससे ब्रह्मांड हिल गया, और आया और चला गया।

पांचवां बिंदु

वह उत्कृष्ट कविता,

कह दो : “यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरे पीछे आओ, अल्लाह भी तुमसे प्रेम करेगा ।” (3:31)

यह स्पष्ट रूप से बताता है कि पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के आचरण का पालन करना कितना आवश्यक और महत्वपूर्ण है। हां, तर्क के न्याय-सिद्धांतों में, यह आयत काल्पनिक या सशर्त न्याय-सिद्धांतों में सबसे शक्तिशाली और निश्चित है। यह इस प्रकार है:

एक काल्पनिक न्यायवाक्य का उदाहरण देते हुए तर्कशास्त्र में कहा गया है: "यदि सूर्य निकलेगा, तो दिन होगा।" सकारात्मक परिणाम के लिए कहा जाता है: "सूर्य निकल आया है। इसलिए कोई यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि दिन हो गया है।" नकारात्मक परिणाम के लिए कहा जाता है: "दिन नहीं निकला है। इसलिए कोई यह निष्कर्ष निकालता है कि सूर्य नहीं निकला है।"

तर्क के अनुसार, नकारात्मक और सकारात्मक ये दो निष्कर्ष निश्चित हैं।

ठीक उसी तरह, ऊपर की आयत कहती है: "यदि आप ईश्वर से प्रेम करते हैं, तो आप ईश्वर के प्रियतम (UWBP) का अनुसरण करेंगे। यदि आप उनका अनुसरण नहीं करते हैं, तो यह इस निष्कर्ष की ओर इशारा करता है कि आप ईश्वर से प्रेम नहीं करते हैं।" यदि कोई व्यक्ति ईश्वर से प्रेम करता है, तो इसका अर्थ ईश्वर के प्रियतम (UWBP) के अभ्यासों का अनुसरण करना है। हाँ, जो व्यक्ति सर्वशक्तिमान ईश्वर में विश्वास करता है, वह निश्चित रूप से उसकी आज्ञा का पालन करेगा। और उसकी आज्ञा का पालन करने के तरीकों में सबसे स्वीकार्य, सबसे सीधा और सबसे छोटा तरीका निस्संदेह ईश्वर के प्रियतम (UWBP) द्वारा दिखाया गया और उसका अनुसरण किया गया तरीका है।

हाँ, यह आवश्यक और स्वतःसिद्ध है कि वह परम सुन्दरी जो ब्रह्माण्ड को इतनी अधिक नेमतों से भरता है, बदले में चेतन प्राणियों से धन्यवाद चाहे। और स्पष्ट है कि वह परम ज्ञानी जो ब्रह्माण्ड को कला के इतने अधिक चमत्कारों से सजाता है, वह चेतन प्राणियों में से सर्वश्रेष्ठ को अपना अभिभाषक और व्याख्याकार, और अपने सेवकों का संदेशवाहक और नेता बनाएगा। और निश्चित रूप से और स्वतःसिद्ध रूप से वह परम सुन्दरी जो ब्रह्माण्ड को अपनी सुन्दरता और परिपूर्णताओं के असंख्य रूपों को प्रतिबिम्बित करता है, उस व्यक्ति को सबसे उत्तम पूजनीय मुद्रा प्रदान करेगा जो उसकी सुन्दरता, पूर्णता, नामों और कला को प्रदर्शित करने का सबसे व्यापक, उत्तम माप और साधन है, जिसे वह स्पष्ट रूप से प्यार करता है और प्रदर्शित करना चाहता है; वह अपने आचरण को दूसरों के लिए एक उत्तम उदाहरण बनाएगा और उन्हें उसका अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करेगा ताकि उसका उत्तम आचरण दूसरों में भी दिखाई दे।

संक्षेप में: ईश्वर के प्रति प्रेम के लिए पैगम्बर (यू.डब्लू.बी.पी.) के आचरणों का पालन करना आवश्यक है और उसका परिणाम भी यही है। वह व्यक्ति कितना भाग्यशाली है जो उनका बड़े पैमाने पर पालन करता है! और उस व्यक्ति पर अफ़सोस है जो उनके आचरण की सराहना नहीं करता और नवीनताएँ नहीं अपनाता!

छठा बिंदु

रसूल-अल्लाह (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: "सारी बिदकियाँ गुमराही हैं और सारी गुमराही जहन्नम की ओर ले जाती है।"[8] अर्थात, आयत के अनुसार,

> आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूरा कर दिया। (5:3)

पवित्र शरीयत के नियमों और पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के सिद्धांतों की परवाह न करना, जब वे पूरे हो गए हों और परिपूर्ण हो गए हों और नई रचनाएँ अपनाना, या ईश्वर न करे, नवाचारों का निर्माण करना, जो उन्हें अपूर्ण मानने का अर्थ है, गुमराही है और नरक की ओर ले जाता है।

इन प्रथाओं में कई स्तर होते हैं:[9] कुछ अनिवार्य हैं; इन्हें छोड़ा नहीं जा सकता। इस प्रकार के बारे में शानदार शरीयत में विस्तार से वर्णन किया गया है। वे निर्विवाद हैं और किसी भी तरह से बदले नहीं जा सकते। दूसरे प्रकार स्वैच्छिक हैं, और ये दो प्रकार के होते हैं:

एक तरह की प्रथा में इबादत से जुड़ी प्रथाएं शामिल हैं। उनका भी वर्णन शरीयत की किताबों में है और उन्हें बदलना ही नवप्रवर्तन है। दूसरी तरह की प्रथा को “आचरण” (आदब) कहते हैं; इन प्रथाओं का उल्लेख पैगम्बर (यू.डब्लू.बी.पी.) की जीवनी की किताबों में है। इनका विरोध करना नवप्रवर्तन नहीं कहा जा सकता, बल्कि यह पैगम्बर (यू.डब्लू.बी.पी.) के आचरण का एक तरह का विरोध है और इसका मतलब है कि उसकी रोशनी और सच्ची शिष्टता से लाभ न उठाना। इस तरह की प्रथा का पालन करने का मतलब है कि पारंपरिक, स्वाभाविक कार्यों और व्यवहारों में उनका अनुकरण करना, जो सर्वसम्मत रिपोर्टों के माध्यम से ज्ञात हैं। उदाहरण के लिए, बोलने का आचरण दिखाने और खाने, पीने, सोने और सामाजिक संबंधों के सिद्धांतों को समझाने वाली कई प्रथाएं हैं। इस तरह की प्रथाओं को “आचरण” कहा जाता है। जो व्यक्ति इनका अभ्यास करता है वह अपने आदतन कार्यों को इबादत में बदल देता है और महत्वपूर्ण तेज प्राप्त करता है। ऐसे आचरण के छोटे से छोटे पहलू का अभ्यास करने से ईश्वर के रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) की याद आती है, जो उसके दिल को एक रोशनी प्रदान करती है।

इन प्रथाओं में सबसे महत्वपूर्ण वे हैं जो इस्लाम का प्रतीक हैं और उसके 'चिह्नों' से जुड़े हैं। इस्लाम के चिह्न इबादत हैं, समुदाय से संबंधित हैं और एक तरह के सामान्य अधिकार हैं। जिस तरह एक व्यक्ति द्वारा इन्हें करने से पूरे समुदाय को लाभ होता है, उसी तरह अगर कोई व्यक्ति इन्हें छोड़ देता है तो भी पूरा समुदाय जवाबदेह होता है। इस तरह के चिह्नों के प्रदर्शन में कोई पाखंड नहीं हो सकता और इनका खुलेआम ऐलान किया जाना चाहिए। भले ही वे स्वैच्छिक हों, फिर भी वे व्यक्तिगत अनिवार्य कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

---

[8] मुस्लिम, जुमा, 43; अबू दाउद, सुन्ना, 5; नसाई, 'इदायन, 22; इब्न माजा, मुक़द्दिमा, 6, 7; बीज, सभोपदेशक, 16, 23; मुसनद, iii, 310, 371; चतुर्थ, 126, 127.

[9] देखें, दारिमी, मुक़द्दिमा, 49; अल-तबरानी, अल-मुजम अल-अवसत, iv, 215; अल-दयालामी, अल-मुस्नद, द्वितीय, 345।

सातवां बिंदु

नबी (स.अ.व.) के आचरण शिष्टाचार हैं। उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जिसके नीचे प्रकाश और शिष्टाचार न पाया जाता हो। ईश्वर के महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने कहा: "मेरे पालनहार ने मुझे अच्छा आचरण सिखाया, और उसने मुझे कितना अच्छा सिखाया।"10 हाँ, जो कोई भी उनकी जीवनी का अध्ययन करता है और उनके आचरण से परिचित होता है, वह निश्चित रूप से समझ जाएगा कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपने प्रिय में हर प्रकार के शिष्टाचार और अच्छे आचरण को एक साथ लाया है। इसलिए यदि कोई व्यक्ति आचरण को छोड़ देता है, तो वह शिष्टाचार को छोड़ देता है। वह इस नियम का उदाहरण है, "बुरे आचरण वाला व्यक्ति ईश्वरीय कृपा से वंचित रहता है," और इस तरह से अशिष्ट है कि उसे नुकसान होता है।

प्रश्न: सर्वज्ञ के सम्मुख विनम्रता कैसे हो सकती है?

जो सबकुछ देखता और जानता है और जिससे कुछ भी छिपा नहीं सकता?

जो परिस्थितियाँ लज्जा या शर्मिंदगी का कारण बनती हैं, उन्हें उससे छिपाया नहीं जा सकता। एक प्रकार का शिष्टाचार यह है कि आवश्यक अंगों को ढक दिया जाए और अप्रिय स्थितियों को छिपाया जाए।

परन्तु सर्वज्ञ की दृष्टि से कुछ भी छिप नहीं सकता।

उत्तर: सबसे पहले: इसे सबसे अधिक महत्व देते हुए, महान निर्माता यह दिखाना चाहता है कि उसकी कला सुंदर है; वह घृणित चीजों को छिपाता है; वह उन्हें सजाकर अपनी नेमतों की ओर ध्यान आकर्षित करता है। इसी तरह, वह सचेत प्राणियों को भी दिखाना चाहता है कि उसके जीव और सेवक सुंदर हैं। उनका बदसूरत स्थितियों में दिखाई देना उनके सुंदर, सुशोभित, सूक्ष्म और बुद्धिमान नामों के खिलाफ एक तरह का विद्रोह है, और शिष्टाचार के विपरीत है। इस प्रकार, पैगंबर (UWBP) के व्यवहारों के शिष्टाचार का अर्थ है, महान निर्माता के नामों की सीमाओं के भीतर शुद्ध शिष्टाचार का रुख अपनाना।

दूसरा: पेशेवर तौर पर, एक डॉक्टर किसी ऐसे व्यक्ति के निजी अंग की जांच कर सकता है जो उसके लिए वैधानिक रूप से अजनबी है, और यदि आवश्यक हो तो उसे दिखाया भी जा सकता है और इसे अशिष्टता नहीं कहा जा सकता। वास्तव में, यह कहा जा सकता है कि चिकित्सा के आचरण के लिए इसकी आवश्यकता होती है। लेकिन वही डॉक्टर किसी व्यक्ति, या उपदेशक या शिक्षक के रूप में अंग की जांच नहीं कर सकता है, और शिष्टाचार उसे दिखाने की अनुमति देने वाला फतवा जारी नहीं कर सकता है । ऐसा करना बेशर्मी होगी।

ठीक उसी तरह, महिमावान निर्माता के कई नाम हैं और हर एक का अलग-अलग रूप है। उदाहरण के लिए, जिस तरह क्षमाशील नाम के लिए पापों और आवरण के लिए दोषों का अस्तित्व आवश्यक है, उसी तरह सुंदर नाम कुरूपता नहीं देखना चाहता। सूक्ष्म, उदार, सर्वज्ञ और सर्व-दयालु जैसे दिव्य सौंदर्य और पूर्णता से संबंधित नामों के लिए आवश्यक है कि प्राणी सबसे सुंदर रूप और सर्वोत्तम संभव स्थितियों में हो। ऐसे नाम अपनी सुंदरता को दृष्टि में प्रदर्शित करना चाहते हैं

---

[10] अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, i, 224; इब्न तैमिया, मजमू फतवा, xviii, 375; अल-'अजलूनी, कशफ अल-खफा', मैं, 70।

स्वर्गदूतों, आत्मिक प्राणियों, जिन्नों और मनुष्यों की सुन्दर अवस्थाओं और उत्तम आचरण के द्वारा उनकी महिमा होती है। इस प्रकार आचरण का आचरण इस श्रेष्ठ आचरण के लक्षण हैं, तथा इसके सिद्धान्त और नमूने हैं।

आठवां बिंदु

आयत के बाद, "अब तुम्हारे पास एक रसूल आ गया है [आयत के अंत तक]," (9:128) जो कि महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) की अपने समुदाय के प्रति पूर्ण दयालुता और करुणा को दर्शाता है, आयत, "लेकिन अगर वे दूर हो जाते हैं, तो कह दो: 'अल्लाह मेरे लिए पर्याप्त है...'" (9:129) कहती है:

ऐ इंसानों! और ऐ मुसलमानों! तुम्हें यह समझना चाहिए कि पैगंबर मुहम्मद (यू.डब्ल्यू.बी.पी.) द्वारा बताए गए आचरण और आदेशों से मुंह मोड़ना कितना विवेकहीन और अविवेकपूर्ण है, जैसे कि उनकी स्वयंसिद्ध दया पर संदेह करना, जबकि वह असीम दयालुता के साथ तुम्हारा मार्गदर्शन करते हैं, अपनी सारी शक्ति तुम्हारे भले के लिए खर्च करते हैं, और अपने आचरण से तुम्हारे आध्यात्मिक घावों को ठीक करते हैं।

ऐ दयालु नबी और दयालू रसूल! अगर वे आपकी इस असीम दया को न पहचानें और अपनी मूर्खता के कारण पीठ फेर लें और न सुनें, तो घबराएँ नहीं। तुम्हारे लिए वह महान ईश्वर ही पर्याप्त है, जिसके अधीन आकाश और धरती की सेनाएँ हैं और जिसकी प्रभुता सर्वोच्च सिंहासन पर शासन करती है। वह तुम्हारे चारों ओर अपनी सच्ची, आज्ञाकारी सेनाएँ एकत्र करेगा और उन्हें तुम्हारी बात मानने और तुम्हारे आदेशों को स्वीकार करने के लिए मजबूर करेगा!

हां, मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) की शरीयत और उनके व्यवहारों में कोई ऐसा मामला नहीं है जिसमें ज्ञान के कई उदाहरण न हों। यह अभागा व्यक्ति दावा करता है और अपनी तमाम कमियों और शक्तिहीनता के बावजूद इसे साबित करने के लिए तैयार है। इसके अलावा, रिसाले-ए-नूर के अब तक लिखे गए सत्तर से अस्सी हिस्से सत्तर से अस्सी सच्चे गवाहों की तरह हैं जो इस बात की गवाही देते हैं कि मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) के व्यवहार और उनके शरीयत के मामले कितने ज्ञान और सच्चाई से भरे हुए हैं। अगर मैं ऐसा करने में सक्षम होता और वे लिखे गए होते, तो इस विषय पर सात हज़ार ग्रंथ ज्ञान के उन उदाहरणों का पूरी तरह से वर्णन नहीं कर सकते थे, सत्तर की तो बात ही छोड़िए।

इसके अलावा, मैंने खुद में शायद हज़ारों बार देखा और अनुभव किया है कि शरिया के सिद्धांत और मामले और पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के व्यवहार सभी आत्मा, मन और दिल की बीमारियों और विशेष रूप से सामाजिक बीमारियों के लिए अत्यधिक लाभकारी उपचार हैं, और दर्शन द्वारा प्रस्तुत मामले उनकी जगह नहीं ले सकते हैं, और एक हद तक मैंने रिसाले-ए-नूर में दूसरों को बताया है कि मैंने क्या अनुभव किया है। अगर किसी को मेरे इस दावे पर संदेह है, तो उन्हें रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों को देखना चाहिए और खुद देखना चाहिए।

इससे यह देखा जा सकता है कि ऐसे व्यक्ति के आचरण का यथासंभव अनुसरण करने का प्रयास करना कितना लाभदायक है, तथा यह अनन्त जीवन के लिए कितना लाभदायक है, तथा सांसारिक जीवन के लिए कितना लाभदायक है।

नौवां बिंदु

वास्तव में पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के आचरण के हर पहलू का अक्षरशः पालन करना केवल उच्च वर्ग के लोगों को ही दिया जाता है। यदि उनका पालन करना संभव नहीं है, तो हर कोई इरादे, उद्देश्य, उनका समर्थन और उनके प्रति पक्षपात करके ऐसा करने की कोशिश कर सकता है। किसी भी स्थिति में व्यक्ति को अनिवार्य और अनिवार्य प्रकार का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है। और भले ही उन प्रथाओं को छोड़ने में कोई पाप शामिल न हो, जो 'सिफारिश' की गई हैं, इससे पुण्य की काफी हानि होती है। और अगर उन्हें बदल दिया जाता है, तो यह एक बड़ी गलती है। जब आदतों और व्यवहार में प्रथाओं का पालन किया जाता है, तो ऐसे कार्य पूजा बन जाते हैं। जबकि अगर उनका पालन नहीं किया जाता है, तो इसकी निंदा नहीं की जानी चाहिए, लेकिन भगवान के प्रिय (यूडब्ल्यूबीपी) के दैनिक आचरण के प्रकाश से लाभ कम होता है।

उपासना से संबंधित विधियों में नई रचनाएँ नवीनता हैं, और चूँकि
नवाचार कविता के विपरीत हैं,

आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूरा कर दिया। (5:3)

उन्हें अस्वीकार किया जाना चाहिए।11 हालांकि, सूफी मार्ग के पाठ और प्रार्थनाएँ नवीनताएँ नहीं हैं, बशर्ते कि वे किताब और सुन्ना से उत्पन्न हों, और भले ही वे रूप और तरीके में भिन्न हों, उनका आधार और सिद्धांत पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के अभ्यासों का विरोध न करें या उन्हें बदल न दें, वे नवीनताएँ नहीं हैं। निश्चित रूप से कुछ विद्वानों ने इनमें से कई को नवीनता के रूप में वर्गीकृत किया, लेकिन उन्हें "प्रशंसनीय नवीनताएँ" कहा।12 इमाम-ए रब्बानी, दूसरी सहस्राब्दी के पुनरुद्धारक, (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा:

"अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर, मैंने देखा कि महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) से वर्णित शब्द चमकदार थे, उनकी प्रथाओं की किरणों से चमक रहे थे। लेकिन जब मैंने उनसे वर्णित न किए गए आह्वानों और कथनों को देखा, तो उन पर कोई प्रकाश नहीं था, भले ही वे शानदार और शक्तिशाली थे। उनमें से सबसे शानदार पहले प्रकार के सबसे कम के बराबर नहीं था। मैंने इससे समझा कि पैगंबर (UWBP) के अभ्यासों की किरणें एक अमृत हैं। साथ ही, जो लोग प्रकाश की तलाश में हैं, उनके लिए अभ्यास पर्याप्त हैं; उनके बाहर प्रकाश की तलाश करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

---

[11] देखिये, बुखारी, इतिसाम, 5; बुयु', 60; सुलह, 5; मुस्लिम, 'अक़दिया, 18; अबू दाउद, सुन्ना, 6.

[12] देखें, अल-इजी, किताब अल-मवाक़िफ़, i, 159; अल-ग़ज़ाली, इहया 'उलूम अल-दीन, द्वितीय, 256; इब्न रजब, जामी अल-उलूम वाल-हिकम, i, 267; इब्न आबिदीन, हशिया, आई, 390।

वास्तविकता और शरीयत के ऐसे नायक का यह कथन दर्शाता है कि पैगंबर (UWBP) के व्यवहार दोनों दुनिया की खुशी की आधारशिला और सभी उपलब्धियों और पूर्णता का स्रोत और स्रोत हैं।

हे ईश्वर! हमें पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) के महान आचरणों का अनुसरण करने की क्षमता प्रदान करें।

ऐ हमारे पालनहार! जो कुछ तूने अपने नबी की ओर उतारा है, हम उसपर ईमान लाए हैं। अतः हमें भी गवाही देनेवालों में लिख ले। (3:53)

दसवां बिंदु

कविता,

कह दो: “यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरे पीछे आओ, अल्लाह भी तुमसे प्रेम करेगा” (3:31)

इसमें चमत्कारिक संक्षिप्तता प्रदर्शित होती है, क्योंकि इसके तीन वाक्यों में कई वाक्य सम्मिलित हैं।
यह इस प्रकार है:

श्लोक कहता है: "यदि आप ईश्वर (उनकी महिमा का गुणगान हो) पर विश्वास करते हैं, तो आप निश्चित रूप से उनसे प्रेम करेंगे। चूँकि आप ईश्वर से प्रेम करते हैं, इसलिए आप उसी तरह कार्य करेंगे जैसे वे प्रेम करते हैं। ऐसा करने के लिए, आपको उस व्यक्ति के समान बनना होगा जिसे ईश्वर प्रेम करता है, और उसका अनुसरण करके आप उसके समान बन सकते हैं।
जब भी तुम उसका अनुसरण करोगे, भगवान भी तुमसे प्रेम करेंगे। वैसे भी तुम्हें भगवान से प्रेम करना होगा ताकि वह तुमसे प्रेम करे।”

ये वाक्यांश श्लोक का केवल संक्षिप्त और संक्षिप्त अर्थ व्यक्त करते हैं। इसका अर्थ है कि मनुष्य का सबसे श्रेष्ठ लक्ष्य सर्वशक्तिमान ईश्वर का प्रेम प्राप्त करना है। श्लोक दर्शाता है कि यह ईश्वर के प्रियतम (UWBP) और उनके अभ्यासों का अनुसरण करके प्राप्त किया जा सकता है। यदि इस स्तर पर तीन बिंदु सिद्ध हो जाते हैं, तो उपरोक्त सत्य पूरी तरह से स्पष्ट हो जाएगा।

पहला बिंदु: मनुष्य को ब्रह्मांड के निर्माता के लिए एक असीम सहज प्रेम के साथ बनाया गया था। क्योंकि उसके स्वभाव में सुंदरता के प्रति प्रेम, पूर्णता के लिए उत्साह और दान के प्रति जुनून शामिल है। उसका प्रेम सुंदरता की डिग्री के अनुपात में बढ़ता है,

पूर्णता और प्रदानता, परमानंद उत्साह की चरम सीमा तक पहुँचती है।

इसके अलावा, एक छोटे से मनुष्य के हृदय में ब्रह्मांड जितना महान प्रेम समा सकता है। हाँ, यह तथ्य कि स्मृति की क्षमता में हजारों पुस्तकों के पुस्तकालय के बराबर लेखन अंकित किया जा सकता है, जो कि एक दाल के आकार का हृदय है, यह दर्शाता है कि मानव हृदय में ब्रह्मांड समा सकता है और इतना महान प्रेम हो सकता है।

चूँकि मानव स्वभाव में प्रेम, सौन्दर्य और पूर्णता की असीम क्षमता निहित है; और चूँकि ब्रह्माण्ड के रचयिता के पास असीम पवित्र सौन्दर्य है, जिसका अस्तित्व ब्रह्माण्ड में प्रत्यक्ष उसके कार्यों द्वारा स्वतःसिद्ध है; और चूँकि उसके पास असीम पवित्र पूर्णता है, जिसका अस्तित्व प्राणियों में देखी जा सकने वाली उसकी कला की कढ़ाई द्वारा अनिवार्यतः सिद्ध होता है; और चूँकि वह सबका स्वामी है।

अनंत उपहार, जिनका अस्तित्व, वास्तव में, जीवित प्राणियों में देखी जाने वाली उनकी असीम कृपा और उपहारों की अनंत किस्मों द्वारा स्वयं-सिद्ध रूप से स्थापित होता है; ये निश्चित रूप से मनुष्य से अनंत प्रेम की मांग करते हैं, जो कि सबसे व्यापक, सबसे जरूरतमंद, सबसे विचारशील और सभी चेतन प्राणियों में सबसे अधिक लालायित है।

वास्तव में, सभी मनुष्य सर्व-महिमावान रचयिता के प्रति असीम प्रेम करने में सक्षम हैं, और उनकी सुंदरता, पूर्णता और दान के सामने, रचयिता किसी से भी अधिक प्रेम के हकदार हैं। एक आस्तिक मनुष्य के अपने जीवन, अमरता और अस्तित्व, अपने संसार, अपने आप और अन्य प्राणियों के प्रति प्रेम और गहन लगाव की सभी किस्में, ईश्वर से प्रेम करने की उसकी क्षमता की मात्र बूंदें हैं। उसकी विभिन्न तीव्र भावनाएं प्रेम करने की उस क्षमता के रूपान्तरण और अन्य रूपों में उसके आसवन हैं। यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार मनुष्य अपने सुख में आनंद लेता है, उसी प्रकार वह दूसरों के सुख में भी आनंद प्राप्त करता है, जिनसे वह जुड़ा हुआ है। और जिस प्रकार वह किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम करता है जो उसे विपत्ति से बचाता है, उसी प्रकार वह किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम करता है जो उसे प्रेम करने वालों को बचाता है। इस मानसिक दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप, यदि कोई व्यक्ति सभी मनुष्यों को प्रदान की गई दिव्य कृपाओं की सभी किस्मों में से केवल इसी के बारे में सोचता है, तो वह कहेगा: मेरे रचयिता ने मुझे अस्तित्वहीनता से, जो शाश्वत अंधकार है, बचाया और मुझे इस तरह की एक सुंदर दुनिया दी। फिर जब मेरे मरने का समय आएगा, तो वह मुझे फिर से अस्तित्वहीनता से, जो शाश्वत विनाश है, और विनाश से बचाएगा, और मुझे एक शाश्वत क्षेत्र में एक शाश्वत और वास्तव में शानदार दुनिया प्रदान करेगा। और जिस तरह उसने मुझे बाहरी और आंतरिक इंद्रियों और भावनाओं को प्रदान किया है, जिनके साथ मैं दुनिया के सभी प्रकार के सुखों और

अच्छी चीजों का लाभ उठा सकता हूं और इसके चारों ओर घूम सकता हूं और भ्रमण कर सकता हूं, उसी तरह वह मेरे सभी रिश्तेदारों, दोस्तों और साथी-लोगों पर असंख्य उपहार प्रदान करता है, जिनसे मैं प्यार करता हूं और जिनसे मैं जुड़ा हुआ हूं।

वे वरदान भी एक तरह से मेरे ही हैं, क्योंकि मैं उनके सुख से प्रसन्न होता हूँ और आनन्दित होता हूँ। चूँकि नियम के अनुसार, 'मनुष्य दान का दास है,'13

हर कोई एक तरह से परोपकार की पूजा करता है, निश्चित रूप से ऐसे असंख्य उपकारों के सामने, चूँकि मेरा हृदय ब्रह्मांड जितना महान है, इसलिए उन उपकारों से उसका प्रेम से भर जाना आवश्यक है, और मैं इसे भरना चाहता हूँ। यदि वास्तव में मैं इतना प्रेम करने में असमर्थ हूँ, तो मैं ऐसा संभावित रूप से, इरादे, विश्वास, स्वीकृति, प्रशंसा, लालसा, भाग लेने और इच्छा से कर सकता हूँ। और इसी तरह।

यहाँ संक्षेप में जिस प्रेम का उल्लेख किया गया है, उसके साथ तुलना की जा सकती है, जो मनुष्य सुंदरता और पूर्णता के लिए महसूस करता है। जहाँ तक अविश्वासियों का सवाल है, वे अपने अविश्वास के कारण असीम रूप से शत्रुतापूर्ण हैं, और यहाँ तक कि ब्रह्मांड और सभी प्राणियों के प्रति गलत और अपमानजनक शत्रुता रखते हैं।

[१३] अबू नु'आयम, हिल्या अल-अवलिया', iv, 121; अल-बहाकी, शुआब अल-ईमान, आई, 381; खतीब अल-बगदादी, iv, 276, vii, 346; अल-हकीम अल-तिर्मिधि, नवादिर अल-उसुल, आई, 149।

दूसरा बिंदु: ईश्वर से प्रेम करने के लिए मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) के आचरण का पालन करना आवश्यक है। क्योंकि ईश्वर से प्रेम करने का अर्थ है वह करना जो उसे प्रसन्न करता है, और जो चीजें उसे प्रसन्न करती हैं वे मुहम्मद (UWBP) के व्यक्तित्व में सबसे उत्तम रूप में प्रकट होती हैं। मुहम्मद (UWBP) के कार्यों और कर्मों से मिलते-जुलते दो तरीके हैं:

पहला: सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रेम करने के संबंध में तथा जो उसे प्रसन्न करता है उसकी सीमाओं के भीतर उसके आदेशों का पालन करना आवश्यक है, क्योंकि ऐसे मामलों में सबसे उत्तम नेता मुहम्मद (UWBP) का व्यक्तित्व है।

दूसरा: चूँकि मुहम्मद (UWBP) का व्यक्तित्व मनुष्य को असंख्य ईश्वरीय कृपाएँ प्राप्त करने का मुख्य साधन है, इसलिए वह निश्चित रूप से सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए असीम प्रेम का पात्र है। यदि मनुष्य किसी ऐसे व्यक्ति जैसा बनने में सक्षम है जिसे वह प्यार करता है, तो स्वभाव से वह ऐसा करना चाहता है। यह निश्चित रूप से आवश्यक है कि जो लोग ईश्वर के प्रिय (UWBP) से प्रेम करते हैं, वे उनके शानदार आचरणों का अनुसरण करके उनके जैसा बनने का प्रयास करें।

तीसरा बिंदु: सर्वशक्तिमान ईश्वर के पास असीम प्रेम है, जिस तरह से उसके पास असीम करुणा है। जिस तरह से वह ब्रह्मांड में प्राणियों के सभी अच्छे गुणों और श्रृंगार के माध्यम से खुद को असीम रूप से प्यार करता है, उसी तरह वह विशेष रूप से उन सचेत प्राणियों से प्यार करता है जो उसके द्वारा उसकी कलाकृतियों को प्यार किए जाने पर प्रेम से प्रतिक्रिया करते हैं। यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि उस सत्ता के प्रेम को आकर्षित करने का प्रयास करना कितना महत्वपूर्ण और महान उद्देश्य है, जिसकी दया की अभिव्यक्ति सभी सूक्ष्म चमत्कार और अच्छी चीजें और स्वर्ग के आनंद और उपहार हैं। चूंकि यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि उसका प्रेम केवल मुहम्मद (UWBP) के अभ्यासों का पालन करने के माध्यम से जीता जाता है, इसलिए यह निश्चित है कि यह मनुष्य का सबसे बड़ा उद्देश्य और उसका सबसे जरूरी कर्तव्य होना चाहिए।

ग्यारहवाँ बिंदु

इसमें तीन बातें शामिल हैं।

पहला मामला: पैगंबर मुहम्मद (यू.डब्लू.बी.पी.) के शानदार कार्यों के स्रोत तीन हैं: उनके शब्द, उनके कार्य और उनका आचरण। और इनमें से प्रत्येक की तीन श्रेणियाँ हैं: अनिवार्य, स्वैच्छिक और प्रशंसनीय।

जो अनिवार्य और अनिवार्य हैं, उनका पालन करना अनिवार्य है, और उन्हें छोड़ने पर दंड और सज़ा दी जाती है। हर किसी को उनका पालन करने का दायित्व सौंपा गया है। जहाँ तक स्वैच्छिक प्रकार का प्रश्न है, ईश्वर का प्रेम जीतने के साधन के रूप में, विश्वासियों को फिर से उनका पालन करने का दायित्व सौंपा गया है, लेकिन ऐसा न करने पर उन्हें कोई दंड नहीं मिलता।

हालाँकि, उनके अनुसार कार्य करना और उनका पालन करना अत्यधिक पुण्य है, जबकि उन्हें बदलना नवाचार, गुमराही और एक बड़ी गलती है। पैगंबर (UWBP) के पारंपरिक कार्यों का अनुकरण करना अत्यंत प्रशंसनीय और ज्ञान के अनुरूप है, और व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन दोनों के लिए और सभी के लिए फायदेमंद है।

मनुष्य के सभी आदतन कर्म जीवन के लिए अनेक लाभदायक चीजें उत्पन्न करते हैं, और इसके अतिरिक्त, उनका पालन करने से ऐसे आचरण और कर्म पूजा बन जाते हैं।

हाँ, चूँकि दोस्त और दुश्मन दोनों इस बात पर सहमत हैं, मुहम्मद (UWBP) के व्यक्तित्व ने नैतिक गुणों की सर्वोच्च डिग्री प्रदर्शित की; और चूँकि सभी इस बात पर सहमत हैं, वह मानव जाति के सबसे प्रसिद्ध और उत्कृष्ट सदस्य हैं; और चूँकि उनके हज़ारों चमत्कारों से संकेत मिलता है, और उनके द्वारा स्थापित इस्लाम की दुनिया और उसकी उपलब्धियों से इसकी गवाही मिलती है, और कुरान की सच्चाइयों से पुष्टि होती है, जिसका उन्होंने प्रचार और व्याख्या की, वह सबसे बेहतरीन पूर्ण मनुष्य और सबसे बेहतरीन मार्गदर्शक थे; और चूँकि उनके अनुसरण के फलस्वरूप, पूर्णता के लाखों लोग उपलब्धियों की डिग्री के माध्यम से आगे बढ़े हैं और दोनों दुनियाओं की खुशी तक पहुँचे हैं; निश्चित रूप से उनके व्यवहार और कार्य अनुसरण किए जाने वाले बेहतरीन उदाहरण हैं, और सबसे सुरक्षित मार्गदर्शक हैं, और सिद्धांतों के रूप में अपनाए जाने वाले सबसे अच्छे कानून हैं। वह व्यक्ति खुशकिस्मत है जो पैगंबर (UWBP) के व्यवहारों का अधिक से अधिक पालन करता है। जो लोग आलसी हैं और उनका पालन नहीं करते, वे भारी हानि उठाते हैं, और जो लोग उन्हें महत्वहीन समझते हैं, वे महान अपराध करते हैं, जबकि यदि वे उनकी आलोचना करते हैं, जो उनका खंडन करने के समान है, तो यह गंभीर पथभ्रष्टता है।14

दूसरा मामला: सर्वशक्तिमान ईश्वर ने विवेकपूर्ण कुरान में आदेश दिया है,

और तुम तो एक उच्च चरित्र पर खड़े हो। (68:4)

विश्वसनीय कथनों के अनुसार, जब प्रतिष्ठित सहाबी 'आयशा द वरीअस' (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने पैगम्बर (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) का वर्णन किया, तो उन्होंने कहा: "उनका चरित्र कुरान है।"15 अर्थात्, मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) कुरान द्वारा वर्णित उत्कृष्ट नैतिक गुणों का आदर्श हैं। वह किसी से भी अधिक उनका अनुपालन करते हैं, और उनका स्वभाव उनके अनुसार ही बनाया गया था।

तो पागल लोग भी समझ सकते हैं कि उसके समुदाय के वे असावधान सदस्य कितने दुर्भाग्यशाली हैं जो उस पर विश्वास तो करते हैं, परन्तु उसकी प्रथाओं को कोई महत्व नहीं देते या उन्हें बदलना नहीं चाहते, जबकि उसका प्रत्येक कार्य, कथन, वचन और कर्म मानव जाति के लिए अनुकरणीय है।

तीसरा मामला: चूँकि महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) को सबसे उत्तम रूप में सबसे उदार चरित्र के साथ बनाया गया था, इसलिए उनके कार्य और बाकी सभी संयम और

---

[14] देखिये, बुखारी, इतिसाम, 2; अहकाम, 1; जिहाद, 109; मुस्लिम, 'इमारा, 33; नसाई, बयात; 27; मुसनद, द्वितीय, 361.

[15] मुस्लिम, सलात अल-मुसाफिरिन, 139; अबू दाउद, ताताव्वु', 26; नासा'ई, तताव्वु', 2; मुसनद, वि, 54, 91, 163, 188, 216; अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, वी, 170; इब्न हिब्बन, साहिह, आई, 345; चतुर्थ, 112.

उनकी जीवनी से स्पष्ट है कि उन्होंने सदैव संयम और समभाव से काम लिया तथा अति और लापरवाही से परहेज किया ।

हाँ, ईश्वर के महान रसूल (जिन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने अनुरूपता व्यक्त की
पूरी तरह से आदेश के लिए:

> अतः जैसा तुम्हें आदेश दिया गया है, उसी प्रकार दृढ़ रहो। (11:112)

और संयम उनके सभी कार्यों, शब्दों और आचरण में स्पष्ट है। उदाहरण के लिए, चूँकि उनकी तर्क शक्ति धूर्तता और मूर्खता से मुक्त थी, जो कि अधिकता और कमी है - जो कि उसके भ्रष्टाचार और अंधकार से मिलती जुलती है, इसलिए यह हमेशा बुद्धि, मध्यम मार्ग और संयम के साधनों के साथ काम करती थी। इसी तरह, क्रोध और कायरता से दूर, जो क्रोध की शक्ति और उसकी अधिकता और कमी के भ्रष्टाचार हैं, उनकी क्रोध की शक्ति हमेशा पवित्र साहस के साथ काम करती थी, जो कि उस शक्ति के संयम का मध्यम मार्ग और साधन है। और इसी तरह, कामुकता और शीतलता से शुद्ध, जो कि पशु इच्छाओं की शक्ति और उसके भ्रष्टाचार की अधिकता और कमी है, उनकी जुनून की शक्ति हमेशा पवित्रता, उस शक्ति के संयम के साधन को, अधिकतम पुण्य की डिग्री पर, मार्गदर्शक के रूप में लेती थी। और इसी तरह। अपने सभी व्यवहारों, दैनिक आचरण और अपने शरीयत के आदेशों को पूरा करने में, उन्होंने संयम का रास्ता चुना और अधिकता और कमी, और अपव्यय और अपव्यय से परहेज किया, जो कि गलत काम और अंधकार हैं। वे फिजूलखर्ची से पूरी तरह दूर रहते थे और अपनी बातचीत में, यहां तक कि खाने-पीने में भी मितव्ययिता को अपना मार्गदर्शक मानते थे।

इस सत्य का विवरण देते हुए हज़ारों पुस्तकें लिखी गई हैं। "बुद्धिमान के लिए एक संकेत ही काफी है" के अनुसार, हम समुद्र से इस बूँद से काम चलाते हैं और कहानी को यहीं समाप्त करते हैं।

> हे ईश्वर, उस व्यक्ति को आशीर्वाद प्रदान करें जिसने अपने व्यक्तित्व में सभी अच्छे नैतिक गुणों को एक साथ लाया, और इस रहस्य को प्रकट किया, “और आप चरित्र के एक ऊंचे मानक पर खड़े हैं,” और जिसने कहा: “जो कोई भी मेरे आचरण का पालन करता है जब मेरा समुदाय भ्रष्ट हो जाता है, उसे सौ शहीदों का इनाम मिलेगा।”

> और वे कहेंगे, "प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमें इस (सफलता) की ओर मार्ग दिखाया। यदि अल्लाह मार्ग न दिखाता, तो हम मार्ग न पा सकते थे। वास्तव में यह वही सत्य है जो हमारे पालनहार के पैगम्बर हमारे पास लाए थे।" (7:43)

> पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

[16] देखें, मुसनद, vi, 68, 155; अल-तयालिसी, अल-मुस्नद, 49; अबू या'ला, अल-मुस्नद, iv, 478; अल-तबरानी, अल-मुजम अल-कबीर, एक्स, 314।

बारहवीं फ्लैश

[यह कुरान से संबंधित दो सूक्ष्म बिंदुओं की व्याख्या करता है, और रेफ़त बे द्वारा पूछे गए दो छोटे प्रश्नों के संबंध में लिखा गया है।1]

उसके नाम में उसकी महिमा हो!
और कोई चीज़ उसकी प्रशंसा से पवित्रता का गुणगान करने से नहीं चूकती । (17:44)

आप पर और आपके भाइयों पर शांति हो, तथा ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो!

मेरे प्रिय, वफादार भाई, रेफ़ेट बे,

इस मुश्किल समय में आपके सवालों ने मुझे मुश्किल में डाल दिया है। इस अवसर पर वे दोनों महत्वहीन हैं, लेकिन वे मुझे महत्वपूर्ण लगे क्योंकि वे कुरान के दो बिंदुओं से संबंधित हैं और पृथ्वी के गोले के बारे में आपका प्रश्न भूगोल और खगोल विज्ञान द्वारा पृथ्वी और आकाश के सात स्तरों के बारे में की गई आलोचनाओं को छूता है। इसलिए प्रश्नों की महत्वहीन प्रकृति को नज़रअंदाज़ करते हुए, मैं कुरान की दो आयतों के बारे में दो बेहतरीन बिंदुओं को विद्वानों और सामान्य तरीके से समझाऊंगा।

पहला विषय

इसमें दो बिंदु हैं।

प्रथम बिन्दु : श्लोक के अनुसार,

कितने ही प्राणी ऐसे हैं जो अपना भोजन स्वयं नहीं उठाते, अल्लाह ही है जो उन्हें भी खिलाता है और तुम्हें भी। (29:60) * निस्संदेह अल्लाह ही है जो रोज़ी देता है, वह प्रभुत्वशाली, अटल प्रभु है। (51:58)

जीविका की देखरेख सर्वशक्तिमान महिमावान द्वारा की जाती है और यह सीधे उसकी दया के खजाने से आती है। चूँकि सभी जीवित प्राणियों के पोषण की गारंटी पालनकर्ता द्वारा दी गई है, इसलिए किसी को भी भूख से नहीं मरना चाहिए।

[1] रेफ़ेट बारुत्चू, 1886-1975. वे पहली बार 1931 में बरला में बेदिउज़्ज़मान से मिलने गए और उसके बाद उनके करीबी छात्रों में से एक बन गए, और उनके साथ इस्कीशेर और डेनिज़ली में जेल की सज़ाएँ काटी। वे सेना में सेवानिवृत्त युज़बासी (कप्तान) थे।

जबकि जाहिर है कि बहुत से लोग इससे और भोजन की कमी से मर जाते हैं। यह एक तरफ़ एक तथ्य है और दूसरी तरफ़ एक रहस्य है, और इसे निम्न प्रकार से सुलझाया जा सकता है:

पालनहार की गारंटी सच है; कोई भी भूख से नहीं मरता। क्योंकि वह सर्वज्ञ महिमावान जो जीवित प्राणियों के शरीर में जो भोजन भेजता है, उसमें से कुछ वसा के रूप में, भंडार के रूप में संग्रहीत करता है। वास्तव में, वह प्रत्येक कोशिका में भेजे गए पोषण का एक हिस्सा कोशिका में संग्रहीत करता है, जैसे कि जब बाहर से कोई भोजन नहीं आता है तो उसे खर्च किया जाता है। भंडार समाप्त होने से पहले ही जीव मर जाते हैं। यानी, ऐसे मामलों में मृत्यु पोषण की कमी से नहीं होती है; जीव गलत आदतों से मरते हैं और गलत चीजों की इच्छा और आदत छोड़ने के परिणामस्वरूप बीमारी के कारण मरते हैं।

जी हाँ, जीवित प्राणियों के शरीर में वसा के रूप में संग्रहित प्राकृतिक पोषण आम तौर पर चालीस दिनों तक पूरी तरह से ठीक रहता है। बीमारी या कुछ विशेष आनंद की स्थिति में यह दोगुने समय तक भी चल सकता है। तेरह साल पहले (और अब यह उनतीस साल हो गए हैं) अखबारों में लिखा गया था कि अत्यधिक जिद्दीपन के कारण, लंदन की जेल में बंद एक व्यक्ति सत्तर दिनों तक बिना कुछ खाए-पिए स्वस्थ रहने में कामयाब रहा।

चूँकि प्राकृतिक पोषण चालीस दिन से लेकर सत्तर या अस्सी दिन तक रहता है; और चूँकि प्रदाता के दिव्य नाम की अभिव्यक्ति पृथ्वी के चेहरे पर वास्तव में व्यापक रूप से स्पष्ट है; और चूँकि भोजन स्तनों से और लकड़ी से पूरी तरह से अप्रत्याशित तरीके से भी निकलता है; यदि मनुष्य इतना दुष्ट है कि वह अपने गलत विकल्पों में हस्तक्षेप नहीं करता है और चीजों को भ्रमित नहीं करता है, तो वह नाम प्राकृतिक पोषण के उपभोग से पहले जीवित प्राणी की सहायता के लिए आता है, और भूख से मृत्यु को रोकता है।

ऐसे में अगर भूख से मरने वाले लोग चालीस दिन से कम समय में मरते हैं, तो यह निश्चित रूप से भोजन की कमी से नहीं होता है। बल्कि, कहावत के अनुसार, "आदत का त्याग घातक है," यह या तो किसी बुरी आदत से होता है या आदतों के त्याग से होने वाली बीमारी से। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि भूख से कोई मौत नहीं होती।

वास्तव में, देखा जाए तो पोषण शक्ति और इच्छा के विपरीत अनुपात में होता है। उदाहरण के लिए, जब बच्चे गर्भ में होते हैं, तो वे पूरी तरह से शक्ति और इच्छा से वंचित होते हैं, फिर भी उन्हें भरपूर भोजन दिया जाता है। फिर जब वे दुनिया में आते हैं, तब भी उनमें शक्ति और इच्छा की कमी होती है, लेकिन चूँकि उनमें कुछ प्रकार की क्षमता और संभावित इंद्रियाँ होती हैं, उन्हें केवल अपने मुँह को स्तन से चिपकाने की आवश्यकता होती है, इसलिए उन झरनों से उनके मुँह में सबसे उत्तम, पौष्टिक और आसानी से पचने वाला भोजन दिया जाता है, सबसे कोमल रूप में और सबसे अजीब तरीके से।

फिर जैसे ही उनमें थोड़ी शक्ति और इच्छाशक्ति आ जाती है, वह आसानी से उपलब्ध, बढ़िया भोजन उनसे छीन लिया जाने लगता है। स्तनों के झरने सूख जाते हैं और शिशुओं का भोजन कहीं और से भेजा जाता है। हालाँकि, चूँकि उनकी शक्ति और इच्छाशक्ति अभी भी उसे खोजने के लिए अपर्याप्त है, इसलिए उदार प्रदाता उनके माता-पिता की कोमलता और करुणा को उनकी सहायता के लिए भेजता है। जब भी

उनकी शक्ति और इच्छा पूर्ण हो जाती है, तब उनका भोजन उनके पास जल्दी नहीं आता और उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता। भोजन अपनी जगह पर बना रहता है, और कहता है: "आओ और मुझे खोजो और मुझे ले लो!" यानी, भोजन शक्ति और इच्छा के विपरीत अनुपात में होता है। हमने वास्तव में रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में समझाया है कि जिन जानवरों में इच्छा और शक्ति की सबसे अधिक कमी होती है, वे अधिक इच्छा और शक्ति वाले जानवरों की तुलना में बेहतर पोषित होते हैं और बेहतर जीते हैं।

दूसरा बिंदु: संभावना के विभिन्न प्रकार हैं, जैसे उचित संभावना, प्रथागत संभावना और साधारण संभावना। यदि कोई घटना उचित संभावना की सीमा के भीतर नहीं है, तो उसे अस्वीकार कर दिया जाता है, और यदि वह प्रथागत संभावना की सीमा के भीतर नहीं है, तो यह एक चमत्कार है, लेकिन इसे आसानी से आश्चर्यजनक नहीं माना जा सकता है। यदि इसके समान कुछ भी नहीं है, चाहे सामान्य उपयोग के अनुसार या सिद्धांत रूप में, इसे केवल एक स्पष्ट प्रमाण के माध्यम से ही स्वीकार किया जा सकता है, जो कि साक्षी के रूप में स्पष्ट हो।

इसके परिणामस्वरूप, सैय्यद अहमद बदावी2 की असाधारण अवस्थाएँ, जिन्होंने चालीस दिनों तक रोटी तक नहीं खाई, सामान्य संभावना की सीमा के भीतर हैं। यह चमत्कारी काम और सामान्य से हटकर एक आदतन अभ्यास दोनों हो सकता है। हाँ, सैय्यद अहमद बदावी (उनका रहस्य पवित्र हो) की अद्भुत अवस्थाओं और परमानंद में लीन होने के बारे में कई सर्वसम्मत रिपोर्टें हैं।

कभी-कभी, वह चालीस दिनों में सिर्फ़ एक बार खाना खाता था, लेकिन वह ऐसा हर बार नहीं करता था; वह कभी-कभी चमत्कार के तौर पर ऐसा कर लेता था। संभवतः यह उसकी आदत बन गई थी
उनके लिए यह इसलिए था क्योंकि उन्हें परमानंद की अवस्था में खाने की ज़रूरत महसूस नहीं होती थी। इस तरह के चमत्कारों को उनके जैसे कई संतों के बारे में विश्वसनीय रूप से बताया गया है। जैसा कि हमने पहले बिंदु में साबित किया है, संग्रहीत भोजन चालीस दिनों से अधिक समय तक समाप्त नहीं होता है, और आदत के कारण इतने लंबे समय तक खाना न खाना संभव है, और ऐसी स्थिति के बारे में विश्वसनीय रूप से उन लोगों के बारे में बताया गया है जो असामान्य थे। इसलिए इसे नकारा नहीं जा सकता।

[2] सैय्यद अहमद बदावी (मृत्यु 675/1276)। उनका जन्म मोरक्को में हुआ था और अंततः वे तांता में बस गए थे
मिस्र में। वह चार आध्यात्मिक ध्रुवों में से एक के रूप में प्रसिद्ध हैं जिनकी संत शक्तियाँ उनके बाद भी बनी रहीं
मौतें।

दूसरे प्रश्न के सम्बन्ध में दो महत्वपूर्ण बातें स्पष्ट की जाएंगी, क्योंकि भूगोल और खगोल विज्ञान के विज्ञानों ने इस आयत की आलोचना की है और मूर्खतापूर्ण तरीके से इसे अस्वीकार करने का प्रयास भी किया है, क्योंकि अपने संक्षिप्त नियमों और संकीर्ण सिद्धांतों और छोटे पैमाने के साथ वे कुरान के आकाश तक चढ़ने में असमर्थ रहे हैं, और इसके तारों में अर्थ के सात स्तरों को खोजने में असमर्थ रहे हैं।

छंद.

पहला महत्वपूर्ण मामला

यह बात धरती के बारे में है कि आकाश की तरह धरती में भी सात तल हैं। यह बात आज के दार्शनिकों को झूठी लगती है; धरती और आकाश के बारे में उनके विज्ञान इसे अस्वीकार्य मानते हैं और इसे बहाना बनाकर वे कुरान की कुछ सच्चाइयों का विरोध करते हैं। हम इस बारे में कुछ बातें संक्षेप में बताएँगे।

प्रथम: सबसे पहले, श्लोक का अर्थ एक बात है और अर्थ के भाग तथा उसे पुष्ट करने वाले बिन्दु दूसरी बात हैं। यदि सार्वभौमिक अर्थ के अनेक भागों में से एक भी भाग अनुपस्थित हो तो अर्थ को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। आकाश के सात स्तरों तथा पृथ्वी की सात परतों से सम्बन्धित सार्वभौमिक अर्थ के अनेक भागों में से, उसे पुष्ट करने वाले सात बिन्दु स्पष्ट रूप से स्पष्ट हैं।

दूसरी बात, आयत में स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा गया है कि “पृथ्वी की सात परतें हैं।” आयत का स्पष्ट अर्थ है,

अल्लाह ही वह है जिसने सात आकाश और धरती को बनाया जो उसके समान है... [आयत के अंत तक]:(65:12)

"उसने धरती को सात आसमानों के समान बनाया और उसे अपने प्राणियों के लिए निवास स्थान बनाया।" इसमें यह नहीं कहा गया है कि मैंने इसे सात स्तरों में बनाया। इसका समान होना सृष्टि के संबंध में और प्राणियों के निवास स्थान होने के संबंध में है।

दूसरा: पृथ्वी का गोला आकाश के सापेक्ष में बहुत छोटा अवश्य है, परन्तु असंख्य दिव्य कलाकृतियों का प्रदर्शन, प्रदर्शन, एकत्रीकरण स्थल तथा केन्द्र होने के कारण, विशाल, अनन्त आकाश का हृदय तथा अमूर्त केन्द्र होने के कारण वह उनके समतुल्य है, जैसे हृदय को शरीर के समतुल्य देखा जा सकता है। इस कारण वह आकाश के समतुल्य है।

कारण, पृथ्वी पर सात जलवायु हैं, जैसा कि प्राचीन काल से माना जाता था; साथ ही प्रसिद्ध सात महाद्वीप, यूरोप, अफ्रीका, ओशिनिया, दो एशिया और दो अमेरिका; साथ ही समुद्र, पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण, इस चेहरे के और नई दुनिया के चेहरे पर प्रसिद्ध सात क्षेत्र; साथ ही

[3] यहाँ सात शब्द की सात पुनरावृत्तियाँ एक अच्छा 'संयोग' बनाती हैं (तुर्की: तेवाफुक; अरबी: तवाफुक)।

केंद्र से बाहरी परत तक विभिन्न, सन्निहित सात स्तर, जिन्हें विज्ञान द्वारा स्थापित किया गया है; और प्रसिद्ध सात सार्वभौमिक तत्व जिन्हें सात स्तर कहा जाता है, जो सत्तर सरल तत्वों से मिलकर बने हैं जो सजीव प्राणियों के जीवन को बनाए रखने के साधन हैं; साथ ही जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी के चार तत्व, पशु, वनस्पति और खनिज साम्राज्य के साथ, सात स्तर और क्षेत्र बनाते हैं; पृथ्वी के सात क्षेत्र भी, जिनकी पुष्टि सृष्टि के रहस्यों को उजागर करने वालों और साक्षी लोगों द्वारा की गई है, जो बहुत अधिक हैं, उनकी गवाही है कि वे जिन्न, शैतान और अन्य विभिन्न संवेदनशील और जीवित प्राणियों के संसार और निवास स्थान हैं; साथ ही सात स्तर यह संकेत देते हैं कि हमारे ग्लोब के समान सात और ग्लोब मौजूद हैं, और वे जीवित प्राणियों के निवास स्थान हैं - इन संकेतों से यह कुरान की आयतों से समझा गया है कि पृथ्वी के भी सात स्तर हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि पृथ्वी पर सात प्रकार के स्तर हैं जो सात प्रकार से विद्यमान हैं। आठवाँ, जो अंतिम अर्थ है, दूसरे दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है; वह सात में शामिल नहीं है।

तीसरा : चूँकि परम बुद्धिमान परमेश्वर कुछ भी व्यर्थ नहीं करता और कुछ भी व्यर्थ नहीं बनाता; और चूँकि जीव चेतन प्राणियों के लिए ही हैं और चेतन प्राणियों के द्वारा ही अपनी पूर्णता प्राप्त करते हैं और उनके द्वारा ही आनन्दित होते हैं तथा उनके द्वारा ही व्यर्थता से बचते हैं; और चूँकि परम बुद्धिमान परमेश्वर, सर्वशक्तिमान महिमावान, वायु तत्त्व, जल जगत तथा पृथ्वी की परत को असंख्य प्राणियों से भर देता है; और चूँकि जैसे वायु और जल प्राणियों के आवागमन में बाधा नहीं डालते, वैसे ही पृथ्वी और पत्थर जैसे सघन पदार्थ भी विद्युत और एक्स-रे जैसे पदार्थों के आवागमन में बाधा नहीं डालते; इसलिए निश्चय ही महिमावान परमेश्वर, अमर निर्माता, हमारे पृथ्वी के केन्द्र से लेकर हमारी पृथ्वी के बाहरी आवरण तक, जो हमारा निवास और केन्द्र है, विस्तृत स्थानों, लोकों, गुफाओं तथा सात सन्निहित परतों को खाली और निर्जन नहीं छोड़ेगा। उसने निश्चय ही उन्हें आबाद किया है और उन लोकों के अनुरूप चेतन प्राणियों को वहाँ बनाया और बसाया है। चूँकि वे संवेदनशील प्राणी किसी न किसी तरह के देवदूत और आत्मिक प्राणी होंगे, इसलिए उनके लिए सबसे सघन और कठोर परत वैसी ही होगी जैसी मछलियों के लिए समुद्र और पक्षियों के लिए हवा। पृथ्वी के केंद्र में मौजूद भयानक गर्मी भी उन सचेत प्राणियों के लिए वैसी ही होगी जैसी सूर्य की गर्मी हमारे लिए है। प्रकाश से निर्मित, उन संवेदनशील आत्मिक प्राणियों के लिए अग्नि प्रकाश की तरह है।

चौथा : अठारहवें पत्र में उल्लेखित है कि प्रबुद्ध लोगों द्वारा पृथ्वी के स्तरों के विचित्र आश्चर्यों के चित्रण के बारे में तुलना की गई है, जो तर्क की सीमाओं से बाहर हैं। सारांश यह है:

प्रकट जगत में ग्लोब एक बीज है, जबकि समानता और सत्त्व की दुनिया में ग्लोब एक बीज है।
मध्यवर्ती क्षेत्र इतना विशाल है कि स्वर्ग के बराबर है।

ज्ञानवान लोगों ने धरती का एक ऐसा स्तर देखा है जो राक्षसों के लिए खास है जिसकी चौड़ाई एक हजार साल है, यह धरती के बीज में नहीं है जो प्रकट दुनिया से संबंधित है; बल्कि यह समानता की दुनिया में इसकी शाखाओं और स्तरों की अभिव्यक्ति है। चूँकि धरती का एक छोटा सा स्तर दूसरी दुनिया में इतना व्यापक रूप से प्रकट होता है, इसलिए निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि इसके सात स्तर हैं जो आकाश के सात स्तरों के बराबर हैं। उपरोक्त बिंदुओं को याद दिलाने के लिए, कुरान की आयतें चमत्कारिक रूप से संक्षिप्त तरीके से यह दिखाते हुए उनका संकेत देती हैं कि छोटी सी धरती आकाश के सात स्तरों के बराबर है।

दूसरा महत्वपूर्ण मामला

> सातों आकाश और धरती और जो कुछ उनमें है, सब उसी की स्तुति और महिमा करते हैं। (17:44) और उसी ने आकाशों को अपना स्वरूप प्रदान किया और उन्हें सात आकाश बना दिए। और वह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। (2:29)

इस तरह की कई आयतों में आसमान को सात गुना बताया गया है। यहाँ इस मामले का सिर्फ़ एक सारांश लिखना उचित है, जिसे हमने महायुद्ध के पहले साल में मोर्चे पर रहते हुए, इशरतुल-एजाज़ (चमत्कार के चिह्न) नामक टिप्पणी में बहुत ही संक्षेप में प्रस्तुत किया था। यह इस प्रकार है:

प्राचीन दर्शन ने आकाश की संख्या नौ मानी है; शरिया की भाषा में ईश्वर के सिंहासन और सात आकाशों के साथ ईश्वर के आसन को स्वीकार करते हुए उन्होंने आकाश का विचित्र ढंग से चित्रण किया। दार्शनिकों के शानदार शब्दों ने कई शताब्दियों तक मानवजाति को अपने प्रभाव में रखा। वास्तव में, कई कुरान के टीकाकारों को आयतों के स्पष्ट अर्थों को अपने स्कूल के अनुरूप बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस तरह से सर्वज्ञ कुरान की चमत्कारिकता एक हद तक छिप गई। जहाँ तक आधुनिक विज्ञान कहलाने वाले नए दर्शन का सवाल है, तो आकाश के बारे में प्राचीन दर्शन की अतिशयता के सामने यह दूसरी अति पर चला गया और सीधे तौर पर आकाश के अस्तित्व को नकार दिया। पहले वाले अतिशयता में चले गए और दूसरे वाले अपूर्ण; वे वास्तविकता को उसकी संपूर्णता में चित्रित करने में असमर्थ थे।

जहाँ तक हिकमत वाले कुरआन की पवित्र हिकमत का सवाल है, तो उसने इस तरह की अति और कमी को अलग रखा और बीच का रास्ता चुनते हुए कहा कि महान रचयिता ने आकाश के सात तल बनाए। ग्रह मछलियों की तरह आकाश में तैरते हैं और ईश्वर की स्तुति करते हैं। हदीस में कहा गया है: "आसमान रोकी हुई लहरें हैं।"[4] यानी आकाश एक सागर है जिसकी लहरें स्थिर हैं।

---

[4] तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरा 58, 1; मुसनद, द्वितीय, 370; अल-मुबारकफुरी, तुहफत अल-अहवाधि, संख्या: 3352; अल-हयथामी, मजमा अल-ज़वायद, viii, 132।

हम इस कुरानिक सत्य को नियमों और अर्थ के सात पहलुओं के साथ बहुत संक्षेप में साबित करेंगे।

पहला नियम: विज्ञान और दर्शन द्वारा यह स्थापित किया गया है कि असीम अंतरिक्ष कोई वस्तु नहीं है।
यह एक अनंत शून्य है, लेकिन ईथर नामक पदार्थ से भरा हुआ है।

दूसरा: यह विज्ञान और तर्क द्वारा, बल्कि अवलोकन द्वारा भी स्थापित किया गया है कि अंतरिक्ष में व्याप्त पदार्थ आकाशीय पिंडों को नियंत्रित करने वाले आकर्षण और प्रतिकर्षण जैसे नियमों का बंधन है, तथा पदार्थ में प्रकाश, ऊष्मा और विद्युत जैसी शक्तियों का संवाहक और संचारक है।

तीसरा: यह अनुभवजन्य रूप से स्थापित है कि ईथर के रूप में रहते हुए भी, अन्य पदार्थों की तरह इसके भी विभिन्न रूप और संरचनाएं होती हैं। जैसे एक ही पदार्थ की तीन अवस्थाएं होती हैं, द्रव, गैस और ठोस, जैसे भाप, पानी और बर्फ; वैसे ही ईथर की सात अवस्थाएं या स्तर होने से कोई भी तर्कसंगत रूप से रोक नहीं सकता; इस पर किसी भी तरह से आपत्ति नहीं की जा सकती।

चौथा: यदि आकाशीय पिंडों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए, तो यह देखा जाएगा कि स्तरों में अंतर है। वह स्तर जिसमें विशाल नेबुलर क्षेत्र है जिसे मिल्की वे कहा जाता है, निश्चित रूप से स्थिर तारों के स्तर जैसा नहीं है। ऐसा लगता है कि वे तारे गर्मियों के फलों की तरह पक गए हैं और परिपक्व हो गए हैं, जबकि मिल्की वे में बादल के रूप में दिखाई देने वाले अनगिनत तारे लगातार उभर रहे हैं और परिपक्व होने लगे हैं। सटीक अनुमान के अनुसार, स्थिर तारों का स्तर भी सौर मंडल के स्तर से अलग दिखाई देता है। और इसी तरह। कोई सात प्रणालियाँ और सात स्तर जोड़ सकता है जो एक दूसरे से भिन्न हैं।

पांचवां: यह अनुमान, भावना, प्रेरक तर्क और अनुभव से स्थापित है कि यदि किसी पदार्थ को क्रम और रूप दिया जाता है और यदि उस पदार्थ से अन्य कलाकृतियाँ बनाई जाती हैं, तो वह विभिन्न स्तरों और रूपों में परिवर्तित हो जाता है। उदाहरण के लिए, जब हीरे की खदान में काम किया जाता है, तो पदार्थ से राख, कोयला और हीरे बनते हैं। और जब आग जलाई जाती है, तो वह ज्वाला, धुआँ और अंगारे के स्तरों में अलग हो जाती है। और जब पानी और ऑक्सीजन को मिलाया जाता है, तो पानी, बर्फ और भाप जैसे स्तर बनते हैं। यानी, जब एक ही पदार्थ पर काम किया जाता है, तो वह स्तरों में अलग हो सकता है। जिस स्थिति में, जब सृजनात्मक शक्ति ने ईथर नामक पदार्थ में काम करना शुरू किया, तो श्लोक के अनुसार, "और उन्हें सात स्वर्गों में बनाया," इसने उससे अलग-अलग स्तरों के रूप में सात प्रकार के स्वर्ग बनाए।

छठा: ऊपर दिए गए संकेत निश्चित रूप से आकाश के अस्तित्व और उसकी बहुलता दोनों की ओर इशारा करते हैं। चूँकि आकाश निश्चित रूप से असंख्य हैं, और निश्चित समाचार लाने वाले (UWBP) ने कुरान की ज़बान में कहा है कि उनकी संख्या सात है, तो निश्चित रूप से वे सात हैं।

सातवां: चूँकि अरबी में सात, सत्तर और सात सौ जैसे शब्द
बहुलता को व्यक्त करने के लिए, उन सार्वभौमिक सात स्तरों में कई स्तर शामिल हो सकते हैं।

संक्षेप में: सर्वशक्तिमान महिमावान ने आकाश से सात आकाशों का निर्माण किया, तथा उसे स्तरों में ढाला, उसे एक बहुत ही बढ़िया और अद्भुत क्रम में व्यवस्थित किया और उसमें तारे बोए। चूँकि चमत्कारी व्याख्या वाला कुरान एक शाश्वत संबोधन है जो सभी मानवजाति और जिन्न के सभी वर्गों से बात करता है, इसलिए निश्चित रूप से उनमें से प्रत्येक वर्ग कुरान की आयतों से अपना हिस्सा प्राप्त करेगा और इसकी आयतों में विभिन्न और असंख्य अर्थ होंगे, स्पष्ट और निहित दोनों, इस तरह से कि प्रत्येक की समझ संतुष्ट होगी।

जी हाँ, कुरआन की व्याख्या की व्यापकता और इसके अर्थों और संकेतों की व्यापकता और इसका सबसे अशिक्षित आम लोगों से लेकर सबसे उच्च कुलीन वर्ग तक सभी की समझ के अनुरूप होना और उनकी चापलूसी करना यह दर्शाता है कि इसकी सभी आयतों का एक पहलू है जो प्रत्येक वर्ग को देखता है। इस प्रकार, उदाहरण के तौर पर इस रहस्य के परिणामस्वरूप, सात वर्ग के लोग सार्वभौमिक अर्थ "सात आकाश" से सात विभिन्न स्तरों के अर्थ को इस प्रकार समझते हैं:

एक अदूरदर्शी और संकीर्ण सोच वाले लोग "और उन्हें सात आकाश बना दिया" आयत से वायुमंडल को समझते हैं। जबकि खगोल विज्ञान से भ्रमित लोग सात ग्रहों के नाम से प्रसिद्ध सितारों और उनकी कक्षाओं को समझते हैं। एक और समूह हमारे ग्रह के सदृश सात आकाशीय ग्लोब को समझता है, जिसमें जीवित प्राणी निवास करते हैं।5 एक और समूह सौरमंडल को सात स्तरों में विभाजित समझता है, और हमारे सिस्टम के साथ सात सौरमंडल। और एक और समूह ईथर को सात स्तरों में विभाजित समझता है। व्यापक विचारों वाले लोगों का एक और वर्ग सितारों से सजे सभी दृश्यमान आसमान को स्वर्ग मानता है, और यह कहते हुए कि यह इस दुनिया का स्वर्ग है, समझता है कि इसके अलावा स्वर्ग के छह स्तर हैं। और मानवजाति का सातवां और सर्वोच्च वर्ग सात आकाशों को केवल व्यक्त जगत तक सीमित नहीं मानता, बल्कि समझता है कि परलोक और अदृश्य जगत, इस जगत और सदृश्य जगत, सभी में सात आकाश हैं, जिनमें से प्रत्येक एक घेरने वाला पात्र और छत है।

इसी प्रकार श्लोक के सार्वत्रिक अर्थ में और भी अनेक विशिष्ट अर्थ हैं, जैसे कि ऊपर बताए गए सात स्तरों के अर्थ।

हर कोई अपनी समझ के अनुसार अपना हिस्सा पाता है और हर कोई उस स्वर्गीय मेज पर अपना भोजन पाता है।

चूँकि इस आयत में इसकी पुष्टि करने वाले अनेक बिंदु हैं, इसलिए अविवेकी दार्शनिकों और मूर्ख खगोलशास्त्रियों द्वारा आकाश को नकारने के बहाने इस आयत पर इस तरह से हमला करना मूर्ख बच्चों द्वारा आकाश पर पत्थर फेंकने के समान है।

[5] देखें, अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, द्वितीय, 535; अल-तबारी, जामी अल-बयान, xxviii, 153-4।

तारे को गिराने की आशा में। क्योंकि यदि श्लोक के सार्वभौमिक अर्थ से इसकी पुष्टि करने वाले बिंदुओं में से एक सही है, तो सार्वभौमिक अर्थ सही और सत्य है। एक विशेष घटना जो शाब्दिक रूप से सत्य नहीं है, लेकिन आम तौर पर स्वीकार की जाती है, उसे आम तौर पर आयोजित विचारों के अनुरूप बनाने के लिए सार्वभौमिक अर्थ में शामिल किया जा सकता है। जबकि हमने कई विशेष बातें देखीं जो सही और सत्य हैं। अब इस अनुचित, अन्यायी भूगोल और नशे में धुत खगोल विज्ञान को देखें: ये दोनों विज्ञान कितने गलत रहे हैं, सार्वभौमिक अर्थ से अपनी आँखें बंद कर ली हैं, जो सही और सही और सत्य है, और उन पहलुओं को नहीं देख रहे हैं जो इसकी पुष्टि करते हैं और बिल्कुल सही हैं; उन्होंने एक काल्पनिक और असाधारण विशेष को श्लोक का अर्थ मान लिया है और श्लोक पर पत्थर फेंके हैं! और उन्होंने अपना सिर फोड़ लिया है और अपना विश्वास खो दिया है!

संक्षेप में: चूँकि जिन्नों और शैतानों की तरह नास्तिक भौतिकवादी विचार क़ुरआन के सात स्तरों पर नहीं चढ़ पाए, जो सात आयतों में अवतरित हुआ[6] और जिसमें सात पहलू, सात चमत्कार, सात सत्य और सात स्तंभ हैं, इसलिए वे नहीं जानते कि इसकी आयतों के सितारों में क्या है और क्या नहीं है और झूठी और गलत रिपोर्ट देते हैं। इसलिए उपरोक्त चर्चा की तरह टूटते हुए तारे उन आयतों के सितारों से उनके सिर पर उतरते हैं और उन्हें झुलसा देते हैं। हाँ, क़ुरआन के आसमान पर दर्शनशास्त्र के जिन्न-जैसे विचारों के ज़रिए नहीं चढ़ा जा सकता। इसकी आयतों के सितारों तक सिर्फ़ सच्ची बुद्धि और ईमान और इस्लाम के पंखों के ज़रिए चढ़ा जा सकता है।

हे ईश्वर! पैगम्बरी के आकाश के सूर्य और पैगम्बरी के आकाश के चंद्रमा तथा उनके परिवार और साथियों को, जो मार्ग पर चलने वालों के लिए मार्गदर्शन के सितारे हैं, आशीर्वाद प्रदान कर।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

हे ईश्वर! हे आकाशों और धरती के पालनहार! इस ग्रंथ के अनुवादक और उसके साथियों के दिलों को कुरान की सच्चाइयों और ईमान के सितारों से सजा दे। आमीन।

[6] देखें, बुखारी, फ़दाएल अल-कुरान, 5, 27; तौहीद, 553; मुस्लिम, सलात अल-मुसाफिरिन, 270: तिर्मिज़ी, क़िरात, 2।

तेरहवीं फ्लैश

यह, तेरहवीं फ्लैश, इसका अर्थ समझाती है
"मैं शापित शैतान से परमेश्वर की शरण चाहता हूँ"

[यह शैतान से बचने के लिए ईश्वर की शरण लेने के बारे में है। तेरह संकेत लिखे जाएँगे। उनमें से कुछ को छब्बीसवें वचन और रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में विभिन्न स्थानों पर समझाया और साबित किया गया है, इसलिए यहाँ केवल संक्षेप में चर्चा की जाएगी।]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
कह दो कि ऐ मेरे पालनहार! मैं शैतानों की कानाफूसी से तेरी शरण चाहता हूँ। हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि वे मेरे निकट न आएँ। (23:97-8)

पहला संकेत

प्रश्न : यद्यपि दुष्ट आत्माएँ सृष्टि के सम्बन्ध में किसी भी तरह से ब्रह्माण्ड में हस्तक्षेप नहीं करतीं; तथा अपनी दया और कृपा के द्वारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर सत्य के लोगों का पक्ष लेता है; तथा सत्य और वास्तविकता की आकर्षक सुन्दरताएँ और गुण सत्य के लोगों को मजबूत और प्रोत्साहित करते हैं, तथा गुमराही की घृणित कुरूपता गुमराह लोगों को विद्रोह कराती है; फिर भी शैतान के समूह को अक्सर बढ़त क्यों मिलती है; इसमें क्या बुद्धिमत्ता है? और सत्य के लोगों को शैतान की बुराई से हमेशा परमेश्वर की शरण क्यों लेनी चाहिए?

उत्तर: बुद्धि और उद्देश्य यह है: अधिकांश भाग के लिए, गुमराही और बुराई नकारात्मक, विनाशकारी और गैर-अस्तित्व से संबंधित हैं। जबकि अधिकांश मामलों में, मार्गदर्शन और अच्छाई सकारात्मक, रचनात्मक, मरम्मत करने वाले और अस्तित्व से संबंधित हैं। हर कोई जानता है कि एक आदमी बीस दिनों में बीस लोगों द्वारा बनाई गई इमारत को एक दिन में नष्ट कर सकता है। हाँ, एक व्यक्ति जीवन के सभी बुनियादी अंगों और स्थितियों के अस्तित्व के कारण जीवित रहता है, जीवन सर्व-महिमावान निर्माता की शक्ति के लिए विशेष है; फिर भी, एक अंग को अलग करके एक अत्याचारी व्यक्ति को जीवन के सभी पहलुओं को नष्ट करने के लिए मजबूर कर सकता है।

व्यक्ति मृत्यु को प्रकट करता है, जो जीवन के संबंध में अस्तित्वहीन है। इसलिए, कहावत "विनाश आसान है" कहावत बन गई है।

परिणामस्वरूप, गुमराह लोग कभी-कभी सत्य के लोगों पर, जो बहुत शक्तिशाली होते हैं, विजय प्राप्त कर लेते हैं, वास्तव में उनकी शक्ति बहुत कमज़ोर होती है। लेकिन सत्य के लोगों के पास एक ऐसा दुर्ग होता है जो इतना अजेय होता है कि जब वे उसमें शरण लेते हैं, तो वे भयंकर शत्रु उनके निकट नहीं आ सकते; वे कुछ नहीं कर सकते। यदि वे कुछ अस्थायी नुकसान पहुँचाते हैं, तो आयत के अनुसार,

और अन्त तो डर रखनेवालों के लिए सर्वोत्तम है। (7:128)

अनंत इनाम और लाभ नुकसान की भरपाई करते हैं। वह अभेद्य गढ़, वह किलाबंद किला, मुहम्मद (UWBP) और उनके व्यवहार का शरिया है।

दूसरा संकेत

प्रश्न: शैतानों की रचना, जो शुद्ध रूप से दुष्ट हैं, तथा उनका आस्थावान लोगों को परेशान करना, तथा उनके कारण बहुत से लोगों का आस्था न करना तथा नरक में जाना, भयानक तथा कुरूप प्रतीत होता है। परम सुन्दर, परम दयालु, परम दयालु की दया तथा सुंदरता इस असीम कुरूपता तथा भयानक विपत्ति की अनुमति कैसे देती है? बहुत से लोगों ने इस प्रश्न के बारे में पूछा है, तथा यह बहुत से लोगों के मन में आता है।

उत्तर: छोटी-मोटी बुराइयों के अलावा शैतान के अस्तित्व और मानवीय उपलब्धियों और सिद्धियों में असंख्य सार्वभौमिक अच्छे उद्देश्य हैं। हाँ, बीज से लेकर विशाल वृक्ष तक की जितनी भी डिग्री हो, मानवीय स्वभाव में निहित क्षमताओं की डिग्री उससे कहीं अधिक है। वे एक छोटे कण से लेकर सूर्य तक फैली हुई हैं। इन क्षमताओं और संभावनाओं के विकास के लिए, क्रिया की आवश्यकता है, एक लेन-देन आवश्यक है। ऐसे लेन-देन में प्रगति के तंत्र की क्रिया प्रयास के माध्यम से शुरू होती है। और प्रयास बुरी आत्माओं और हानिकारक चीजों के अस्तित्व के कारण होता है। अन्यथा मनुष्य का स्थान देवदूतों की तरह स्थिर होता; मानव जाति में कोई वर्ग नहीं होता, जो हजारों प्रजातियों जैसा है। एक छोटी सी बुराई से बचने के लिए एक हजार अच्छाइयों को छोड़ देना बुद्धि और न्याय के विपरीत है।

निश्चित रूप से अधिकांश लोग शैतान के कारण गुमराही को अपनाते हैं, लेकिन महत्व और मूल्य ज्यादातर गुणवत्ता को देखते हैं; वे मात्रा को बहुत कम या बिल्कुल नहीं देखते हैं। यदि किसी के पास एक हजार और दस बीज हैं जिन्हें वह जमीन के नीचे दबा देता है, और जमीन के नीचे उन बीजों में रासायनिक क्रिया होती है जिसके परिणामस्वरूप दस पेड़ बन जाते हैं और एक हजार सड़ जाते हैं, तो दस बीज जो पेड़ बन गए हैं, उनसे मनुष्य को जो लाभ होगा वह निश्चित रूप से होगा

वह हज़ार सड़े हुए लोगों से होने वाले नुकसान को खत्म कर देता है। ठीक उसी तरह, आत्मा और शैतान के खिलाफ संघर्ष के माध्यम से, लाभ, सम्मान, ज्ञान और मूल्य

क्योंकि दस सिद्ध पुरुषों द्वारा प्राप्त मानव जाति, जो सितारों की तरह हैं, निश्चित रूप से मानव जाति को गुमराह करने वाले लोगों द्वारा अविश्वास को अपनाने के कारण होने वाले नुकसान को कम करती है, जो इतने नीच हैं कि उन्हें कीड़े माना जाता है। चूंकि यह ऐसा है, इसलिए ईश्वरीय दया, बुद्धि और न्याय ने शैतान के अस्तित्व की अनुमति दी है, और उसे परेशान करने की अनुमति दी है

पुरुष.

ऐ ईमान वालों! इस भयानक दुश्मन के खिलाफ़ तुम्हारा कवच कुरान की कार्यपीठ पर गढ़ा गया ईश्वर का भय है, और तुम्हारी ढाल पवित्र पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के आचरण हैं, और तुम्हारा हथियार शैतान से ईश्वर की शरण मांगना, और क्षमा मांगना, और ईश्वरीय संरक्षण में शरण लेना है।

तीसरा संकेत

प्रश्न: पवित्र कुरान में गुमराह लोगों के खिलाफ़ बहुत ज़्यादा शिकायतें और सेना का जमावड़ा इसकी न्यायसंगत और उचित वाक्पटुता और इसकी शैली की संगति और संयम के साथ तर्क से मेल नहीं खाता। यह बिलकुल वैसा ही है जैसे कि यह एक अकेले व्यक्ति के खिलाफ़ सेनाएँ इकट्ठा कर रहा हो। यह उसे एक छोटी सी हरकत के लिए इस तरह धमकाता है जैसे कि उसने हज़ारों अपराध किए हों। यह उसे एक स्थिति प्रदान करता है और उसके बारे में इस तरह शिकायत करता है जैसे कि वह एक आक्रामक भागीदार हो, जबकि वह दिवालिया हो चुका है और उसके पास संपत्ति का कोई हिस्सा नहीं है।

इसका कारण क्या है और इसमें क्या बुद्धिमत्ता है?

उत्तर: इसका कारण यह है कि दुष्ट आत्माएं और उनके अनुयायी लोग, क्योंकि वे पथभ्रष्ट हो जाते हैं, इसलिए वे एक छोटे से कार्य से भी बहुत बड़ा विनाश कर सकते हैं, वे एक छोटे से कार्य से भी बहुत से प्राणियों के अधिकारों का हनन कर सकते हैं तथा बहुत अधिक हानि पहुंचा सकते हैं।

उदाहरण के लिए, किसी राजा के बड़े व्यापारी जहाज पर सवार व्यक्ति द्वारा कोई छोटा-सा काम या कोई छोटा-सा काम अनदेखा करने से, उस पर काम करने वाले लोगों के सारे प्रयासों पर पानी फिर सकता है और उनके सारे परिश्रम का फल नष्ट हो सकता है। इसलिए जहाज का प्रतिष्ठित मालिक अपने सभी लोगों के कारण, जो जहाज से जुड़े हुए हैं, विद्रोही व्यक्ति के बारे में शिकायत करता है और उसे डराता-धमकाता है। और वह उसे एक भयानक दंड देता है, उसके तुच्छ काम को नहीं बल्कि उसके भयानक परिणामों को ध्यान में रखते हुए, अपने नाम पर नहीं बल्कि अपने लोगों के अधिकारों के लिए।

ठीक इसी तरह, अपनी स्पष्ट रूप से महत्वहीन गलतियों और पापों के माध्यम से, गुमराह लोग, शैतान की टोली, जो मार्गदर्शन के लोगों के साथ पृथ्वी के जहाज पर हैं, असंख्य प्राणियों के अधिकारों का उल्लंघन करते हैं और उनके उच्च कर्तव्यों के परिणामों को नकार देते हैं। इसलिए, पूर्व-अनन्त काल और उत्तर-अनन्त काल के सम्राट की उनके बारे में भयानक धमकियाँ और शिकायतें, और उनके खिलाफ़ सेनाओं का जमावड़ा, पूर्ण वाक्पटुता के भीतर शुद्ध ज्ञान है, और सबसे उपयुक्त और उचित है।

यह परिस्थिति की आवश्यकताओं के अनुरूप है, जो वाक्पटुता की परिभाषा और उसका आधार है।1 और यह अतिशयोक्ति से मुक्त है, जो व्यर्थता है।
शब्द।

यह स्पष्ट है कि वह व्यक्ति अभागा होगा जो उन भयानक शत्रुओं के सामने सुरक्षित गढ़ में शरण नहीं लेता जो थोड़े से काम से बहुत विनाश करते हैं। ऐ ईमान वालों! ऐसा ही एक स्वर्गीय गढ़ है क़ुरआन। इसमें प्रवेश करो और बच जाओ!

चौथा संकेत

खोजी विद्वान और ज्ञान के लोग इस बात पर सहमत हैं कि अस्तित्वहीनता शुद्ध बुराई है और अस्तित्व, शुद्ध अच्छाई है। हाँ, अधिकांश मामलों में, अच्छाई, गुण और पूर्णताएँ अस्तित्व पर आधारित हैं और उससे संबंधित हैं। भले ही वे सतही तौर पर नकारात्मक हों और अस्तित्वहीनता का संकेत दें, उनका आधार अस्तित्व में है और उससे संबंधित है। जबकि सभी कुरूपता, जैसे कि गुमराही, बुराई, विपत्तियाँ और पाप, का आधार और खमीर अस्तित्वहीनता और इनकार है। उनकी बुराई और कुरूपता अस्तित्वहीनता से उत्पन्न होती है। भले ही वे सतही तौर पर सकारात्मक और अस्तित्व से संबंधित प्रतीत हों, लेकिन अनिवार्य रूप से वे अस्तित्वहीनता और इनकार हैं।

इसके अलावा, देखा जाए तो, किसी इमारत जैसी चीज़ का अस्तित्व उसके सभी भागों के अस्तित्व के ज़रिए महसूस किया जाता है। जबकि इसका विनाश, अस्तित्वहीनता और विनाश इसके मुख्य भागों में से किसी एक के न होने के ज़रिए होता है। इसके अलावा, अस्तित्व के लिए एक अस्तित्ववान कारण की आवश्यकता होती है, यह एक ऐसे कारण पर आधारित होता है जिसकी वास्तविक वास्तविकता होती है। जबकि अस्तित्वहीनता उन चीज़ों पर आधारित हो सकती है जो अस्तित्वहीनता से संबंधित हैं। ऐसी चीज़ें किसी अस्तित्वहीन चीज़ का कारण हो सकती हैं।

इस नियम के परिणामस्वरूप, जिन्न और मनुष्यों में से शैतानों द्वारा ब्रह्मांड में भयंकर विनाश और उनके द्वारा किए जाने वाले कुफ़्र, गुमराही, बुराई और विनाश की विभिन्न किस्मों के बावजूद, वे न तो सृष्टि में रत्ती भर हस्तक्षेप करते हैं और न ही ईश्वरीय प्रभुता में उनका कोई हिस्सा है। इसके अलावा, वे किसी शक्ति या योग्यता के द्वारा उन कार्यों को नहीं करते हैं; वे जो कुछ भी करते हैं, उसमें से बहुत से कार्य वे लापरवाही और कार्य से विरत रहकर करते हैं। वे भलाई को न करने देकर बुराइयां करते हैं, अर्थात वे बुरे बन जाते हैं। क्योंकि बुराई और बुराई एक प्रकार का विनाश है, इसलिए उनके कारणों के लिए किसी विद्यमान शक्ति और सक्रिय रचनात्मकता की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में, एक अस्तित्वहीन पदार्थ या एक स्थिति के निरस्त हो जाने से बहुत बड़ा विनाश होता है।

ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पारसी लोगों ने इस रहस्य को विकसित नहीं किया था।

[1] देखें, अल-खमावी, खिज़ाना अल-अदब, द्वितीय, 482; अल-क़ज़वानी, अल-इदाह फ़ि 'उलूम अल-बालाघा, आई, 15-6।

उनका मानना था कि ब्रह्मांड में अच्छाई का एक निर्माता है, जिसे यज़दान कहा जाता है, और बुराई का एक निर्माता है, जिसे अहिरमान कहा जाता है।2 हालांकि, बुराई का काल्पनिक देवता जिसे वे अहिरमान कहते थे, शैतान था, जो चुनाव की शक्ति और कार्य करने की शक्ति के माध्यम से बुराई का कारण बनता है, जिसमें सृजन करने की कोई क्षमता नहीं है।

ऐ ईमान वालों! शैतान के इस भयानक विनाश के सामने मरम्मत के लिए आपका सबसे प्रभावी हथियार और उपकरण ईश्वर से क्षमा मांगना और यह घोषणा करना है कि "मैं ईश्वर की शरण में आता हूँ," ताकि आप ईश्वर की शरण में जा सकें। और आपका गढ़ पैगंबर (UWBP) के अभ्यास हैं।

पांचवां संकेत

प्रकट किए गए धर्मग्रंथों में सर्वशक्तिमान ईश्वर मानवजाति को स्वर्ग जैसे महान पुरस्कारों और नरक जैसी भयानक सज़ाओं की ओर संकेत करता है, और वह मार्गदर्शन, कई चेतावनियाँ और अनुस्मारक, और धमकियाँ और प्रोत्साहन देता है। लेकिन विश्वासियों को सीधे मार्ग पर ले जाने के लिए इतने सारे साधन होने के बावजूद, वे शैतान के दल की कमज़ोर, अप्रतिफल देने वाली, घृणित युक्तियों के सामने पराजित हो जाते हैं।

एक बार तो इस बात ने मुझे बहुत सोचने पर मजबूर कर दिया। मैंने सोचा, ऐसा कैसे है कि वे विश्वास तो करते हैं, लेकिन सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कठोर धमकियों की अनदेखी करते हैं? उनका विश्वास ही पर्याप्त क्यों नहीं है?
वे शैतान की बेबुनियाद चालों में बह जाते हैं और ईश्वर के खिलाफ विद्रोह करते हैं, हालाँकि आयत के अनुसार, "शैतान की चालाकी वास्तव में कमज़ोर है।" (4:76) मेरे अपने कुछ दोस्त, हालाँकि वे सच्चाई के बारे में उन शिक्षाओं की ईमानदारी से पुष्टि करते थे जो उन्होंने मुझसे सौ बार सुनी थीं और मेरे बारे में और मेरे साथ संबंधों के बारे में उनकी राय बहुत अच्छी थी, वे एक भ्रष्ट व्यक्ति की तुच्छ और पाखंडी प्रशंसाओं में बह गए, और उसके पक्ष में और मेरे खिलाफ़ एक स्थिति ले ली। "भगवान की महिमा हो!", मैंने कहा, "एक व्यक्ति इतना नीचे कैसे गिर सकता है? वह कितना धोखेबाज़ आदमी था।" मैंने उसकी निंदा की और पाप किया।

बाद में, पिछले संकेतों में बताई गई सच्चाई स्पष्ट हो गई और कई अस्पष्ट बिंदुओं को प्रकाशित किया। ईश्वर का शुक्र है कि इसकी रोशनी से मुझे यह दोनों बातें समझ में आ गईं कि सर्वज्ञ कुरान की शक्तिशाली प्रेरणा और आश्वासन पूरी तरह से सही हैं, और यह कि विश्वास करने वाले लोग शैतानी चालों से धोखा खा रहे हैं, इसका कारण विश्वास की कमी या विश्वास की कमजोरी नहीं है। मैंने यह भी समझा कि

जो व्यक्ति गंभीर पाप करता है वह काफिर नहीं है, और मुताज़िलियों और कुछ ख़ारिज संप्रदाय यह कहकर ग़लती कर रहे हैं: "जो व्यक्ति गंभीर पाप करता है वह या तो अविश्वास की स्थिति में है या विश्वास और अविश्वास के बीच है,"3 और वह दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति

---

[2] देखें, अल-शाहिस्तानी, अल-मिलाल वाल-निहाल, i, 232-3; अल-इजी, किताब अल-मवाक़िफ़, iii, 65; ताहिर इब्न मुहम्मद, अल-तबसीर फिल-दीन, आई, 91, 113, 142।

[3] देखें, अल-इजी, किताब अल-मवाक़िफ़, iii, 548; इब्न अबी'एल-इज़्ज़, शरह 'अकीदा अल-तहाविया, आई, 356-62।

मेरे एक मित्र ने ऐसे दुष्ट का ध्यान आकर्षित करने के लिए वास्तव में सौ सबक त्याग दिए, यह कोई घृणित अपमान और पतन नहीं था; मैंने सर्वशक्तिमान परमेश्वर को धन्यवाद दिया और रसातल से बच गया। क्योंकि जैसा कि मैंने पहले कहा, शैतान मनुष्य को किसी तुच्छ मामले के कारण गंभीर संकट में धकेलता है जिसका वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है। इसके अलावा, मनुष्य की आत्मा हमेशा शैतान की बात सुनती है; और उसकी क्रोध और पशुवत इच्छाएँ शैतान की फुसफुसाहटों के रिसीवर और ट्रांसमीटर दोनों की तरह हैं।

इसी के परिणामस्वरूप सर्वशक्तिमान ईश्वर के क्षमाशील और दयावान नाम आस्था रखने वालों के लिए अधिकतम अभिव्यक्ति के साथ सामने आते हैं, और वह सर्वज्ञ कुरान में बताते हैं कि वह पैगम्बरों को जो सबसे बड़ा उपहार देता है वह क्षमा है और वह उनसे क्षमा मांगने का आह्वान करता है। हर सूरा की शुरुआत में मुबारक शब्द "ईश्वर के नाम से, जो दयालु और दयावान है" को दोहराते हुए और सभी अच्छे कामों की शुरुआत में इसे पढ़ने का आदेश देते हुए, वह दिखाता है कि उसकी सर्वव्यापी दया ब्रह्मांड को अपने में समाहित करती है और एक गढ़ और शरण स्थल है। और "ईश्वर की शरण में जाओ" (7:200, आदि) के आदेश से वह इस वाक्यांश को ढाल बनाता है, "मैं शैतान से ईश्वर की शरण में जाता हूँ।"

छठा संकेत

शैतान की सबसे खतरनाक चालों में से एक यह है: वह कुछ संवेदनशील और सरल लोगों को अविश्वास की कल्पना करने और उसे पुष्ट करने में उलझा देता है। वह गुमराही की कल्पना को ही उसकी पुष्टि के रूप में दिखाता है। वह उनकी कल्पनाओं में पवित्र व्यक्तियों और पवित्र चीजों के बारे में कुरूप विचार भी पैदा करता है। वह उन चीजों को भी दिखाता है जो अनिवार्य रूप से संभव हैं और साथ ही जो उचित रूप से संभव हैं, इस प्रकार उन चीजों को संदेह के रूप में दिखाता है जो विश्वास की निश्चितता के विपरीत हैं। फिर वह दुखी संवेदनशील व्यक्ति यह मान लेता है कि वह गुमराही और अविश्वास में पड़ गया है, और उसका विश्वास का निश्चय खो गया है; वह निराशा में पड़ जाता है और शैतान का खिलौना बन जाता है। शैतान उसकी निराशा, उसकी उस कमज़ोर नस और उसके भ्रम दोनों को काम में लाता है, ताकि वह या तो पागल हो जाए, या यह कहते हुए: “सब खो गया है,” गुमराही को गले लगा ले। हमने रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में बताया है कि ये शैतानी चालें कितनी सारहीन हैं, इसलिए यहाँ केवल संक्षेप में उनकी चर्चा की जाएगी, इस प्रकार:

जिस प्रकार दर्पण में साँप का प्रतिबिम्ब काट नहीं सकता, अग्नि की आकृति जला नहीं सकती, मिट्टी की परछाईं नहीं जला सकती, उसी प्रकार अविश्वास का प्रतिबिम्ब और ईश्वर के साझीदारों की संगति भी विश्वास को भ्रष्ट नहीं कर सकती, और न ही ईश्वर की छायाएं ईश्वर को भ्रष्ट कर सकती हैं।

[4] देखें, इब्न माजा, निकाह, 19; मुसनद, द्वितीय, 359; अल-नासाई, अल-सुनन अल-कुबरा, vi, 127-8; 'अब्द अल-रज्जाक, अल-मुसन्नाफ, vi, 189; इब्न हिब्बन, अल-साहिह, आई, 173-4।

गुमराह करना, या कल्पना या विचार के दर्पण में बदसूरत गाली और शब्दों की कल्पना करना विश्वास को बदल देता है, या सम्मानजनक शिष्टाचार को नुकसान पहुँचाता है। क्योंकि प्रसिद्ध नियम है, "दुर्व्यवहार की कल्पना करना गाली नहीं है, अविश्वास की कल्पना करना अविश्वास नहीं है, और गुमराह करने की कल्पना करना गुमराह करना नहीं है।"

जहाँ तक विश्वास में संदेह के प्रश्न का प्रश्न है, जो संभावनाएँ अनिवार्य रूप से संभव हैं, वे विश्वास की निश्चितता को झुठलाती नहीं हैं और उसे नुकसान नहीं पहुँचाती हैं। धर्म के सिद्धांतों के विज्ञान के स्थापित नियमों में से एक है: "एक अनिवार्य असंभवता ज्ञान द्वारा प्रदान की गई निश्चितता को नकार नहीं सकती।"[5] उदाहरण के लिए, हम निश्चित हैं कि बरला झील अपने स्थान पर पानी से भरी हुई है। हालाँकि, यह अनिवार्य रूप से संभव है कि इसी क्षण झील जमीन में डूब गई हो। यह संभावना की सीमा के भीतर है कि यह डूब सकती है। लेकिन चूँकि ऐसी संभावना को इंगित करने के लिए कुछ भी नहीं है, इसलिए यह एक उचित संभावना नहीं है और संदेह पैदा करती है। धर्म के सिद्धांतों का एक और स्थापित नियम है: "एक संभावना जो किसी प्रमाण या सबूत से उत्पन्न नहीं होती है, उसका कोई महत्व नहीं होता है।" अर्थात्, किसी भी संकेत द्वारा समर्थित नहीं होने वाली एक अनिवार्य संभावना को एक उचित संभावना नहीं माना जा सकता है और इसलिए संदेह पैदा करता है और महत्व की गारंटी देता है।

इसलिए, उन शैतानी फुसफुसाहटों के संपर्क में आने वाला बदकिस्मत आदमी यह मान लेता है कि ज़रूरी संभावनाओं के कारण उसने आस्था की सच्चाइयों में अपना कुछ विश्वास खो दिया है। उदाहरण के लिए, पवित्र रसूल (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) के मानवीय पहलुओं के बारे में कई ज़रूरी संभावनाएँ उसके मन में आ सकती हैं जो उसके दृढ़ विश्वास को कोई नुकसान नहीं पहुँचातीं, लेकिन वह कल्पना करता है कि वे नुकसान पहुँचाती हैं और इसलिए उसे नुकसान होता है।

इसके अलावा, कभी-कभी शैतान दिल में फुसफुसाहट के रूप में सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बारे में बुरी बातें सुझाता है। आदमी कांपता है, यह सोचकर कि उसका दिल भ्रष्ट हो गया है इसलिए वह ऐसी बातें कहता है। लेकिन उसका डर और कांपना और सहमति की कमी दर्शाती है कि वे शब्द उसके दिल से नहीं आए थे; बल्कि वे शैतानी फुसफुसाहट से आए थे, और शैतान द्वारा दिए गए और कल्पना किए गए थे।

इसके अलावा, मनुष्य की सूक्ष्म क्षमताओं में से एक या दो ऐसी हैं जिन्हें मैं स्पष्ट नहीं कर पाया हूँ; वे इच्छा और चुनाव की शक्ति पर ध्यान नहीं देते हैं और शायद उन्हें इसके लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाना चाहिए। कभी-कभी वे शासन करते हैं, सत्य को नहीं सुनते हैं और गलत की ओर झुकते हैं। फिर शैतान मनुष्य से फुसफुसाता है: "तुम वास्तविकता और विश्वास को प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो, इसलिए तुम अनजाने में वह करने का प्रयास करते हो जो निरर्थक और निष्फल है। इसका मतलब है कि तुम्हारे भाग्य ने तुम्हें विनाश की निंदा की है।" दुखी मनुष्य निराशा में पड़ जाता है और बर्बाद हो जाता है।

शैतान की पिछली चालों के सामने विश्वासियों का गढ़

[5] देखें, अल-ग़ज़ाली, अल-मनहुल, 122; अल-मुजद्दिदी, क़वायद अल-फ़िक़्ह, 11, 143।

ये विश्वास की सच्चाईयाँ और कुरान के निर्विवाद मामले हैं, जिनकी सीमाएँ शुद्ध और सटीक विद्वानों के सिद्धांतों द्वारा परिभाषित की गई हैं। और बाद की चालों के सामने, आस्तिक का गढ़ ईश्वर की शरण लेना और उन्हें कोई महत्व नहीं देना है। क्योंकि जितना अधिक महत्व उन्हें दिया जाता है, उतना ही यह उनकी ओर ध्यान आकर्षित करता है, और वे बढ़ते और फूलते हैं। ऐसे आध्यात्मिक घावों के लिए आस्तिक का मारक और उपाय पैगंबर (UWBP) के अभ्यासों का पालन करना है।

सातवां संकेत

प्रश्न: मुताज़िली अधिकारियों ने बुराई के निर्माण को बुराई माना, और इसलिए उन्होंने अविश्वास और गुमराही के निर्माण को ईश्वर के नाम पर नहीं रखा, मानो ऐसा करके वे उसे दोषमुक्त कर रहे हों। उन्होंने गुमराही में कहा: “मनुष्य अपने कार्यों का निर्माण स्वयं करता है।”6 उन्होंने यह भी कहा: “एक आस्तिक जो गंभीर पाप करता है, वह अपना विश्वास खो देता है,7 क्योंकि ईश्वर पर विश्वास करना और नरक की पुष्टि करना ऐसे कार्यों के साथ असंगत है। इस दुनिया में एक छोटी सी जेल की सजा के डर से, एक व्यक्ति कानून के विपरीत काम करने से खुद को रोकता है, इसलिए यदि वह गंभीर पाप करता है, जो ईश्वरीय क्रोध की अवहेलना का संकेत देता है, तो यह निश्चित रूप से उसके विश्वास की कमी की ओर इशारा करता है।”

प्रश्न के पहले भाग का उत्तर : जैसा कि ईश्वरीय निर्धारण पर ग्रंथ में स्पष्ट किया गया है, बुराई का निर्माण बुरा नहीं है; बुराई करने की प्रवृत्ति ही बुराई है। सृजन और अस्तित्व में लाने के लिए सभी परिणामों को देखें। चूँकि एक बुराई का अस्तित्व कई अच्छे परिणामों के लिए प्रारंभिक है, इसलिए उन परिणामों के आधार पर, बुराई का निर्माण अच्छा हो जाता है, और ऐसा लगता है जैसे कि अच्छा हो। उदाहरण के लिए, आग के सौ अच्छे परिणाम होते हैं, लेकिन अगर लोग अपनी इच्छाओं का दुरुपयोग करके आग को अपने लिए बुरा बना लेते हैं, तो वे यह नहीं कह सकते कि बुराई का निर्माण बुरा है। उसी तरह, शैतानों के निर्माण के कई बुद्धिमान परिणाम होते हैं जैसे कि मानव प्रगति; इसलिए अगर कोई व्यक्ति अपनी इच्छा के दुरुपयोग और गलत प्रवृत्तियों के कारण शैतान से हार जाता है, तो वह यह नहीं कह सकता कि शैतान का निर्माण बुरा है। क्योंकि उसने खुद के साथ बुरा किया क्योंकि वह खुद इसके लिए तैयार था।

हाँ, चूँकि प्रवृत्ति एक विशेष संबंध है, इसलिए इसका एक विशेष बुरा परिणाम होता है और यह बुराई बन जाती है। लेकिन चूँकि सृष्टि सभी परिणामों को देखती है, इसलिए बुराई की सृष्टि बुराई नहीं है; यह अच्छाई है। मुताज़िलियों ने इस रहस्य को नहीं समझा, इसलिए उन्होंने कहा: "बुराई की सृष्टि बुराई है, और बुरे की सृष्टि,

---

[6] देखें, अल-मटुरिदी, अल-तौहीद, i, 92, 169, 314, 315; इब्न हज़्म, अल-फ़सल फ़ि'-मिलाल, द्वितीय, 121; iii, 57, 59.

[7] देखें, अल-इजी, किताब अल-मवाक़िफ़, iii, 548; इब्न अबी'एल-इज़्ज़, शरह 'अकीदा अल-तहाविया, आई, 356-62।

[8] छब्बीसवाँ शब्द। देखें, द वर्ड्स (इस्तांबुल: सोज़लर प्रकाशन, 2008), 477-90. (ट्र.)

और सर्वशक्तिमान ईश्वर को सभी दोषों से मुक्त करने के लिए, उन्होंने बुराई के निर्माण का श्रेय उसे नहीं दिया; वे गुमराह हो गए, विश्वास के स्तंभ की गलत व्याख्या करते हुए "ईश्वरीय निर्धारण में विश्वास, इसका अच्छा और बुरा दोनों ईश्वर से हैं।"9

"जो व्यक्ति घोर पाप करता है, वह आस्तिक कैसे रह सकता है?" प्रश्न के दूसरे भाग का उत्तर : सबसे पहले, उनकी गलती पिछले संकेतों से स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है, इसलिए इसे दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरे, मनुष्य की दुष्ट आत्मा, स्थगित, छिपे हुए सुख के टन के बजाय तत्काल, वर्तमान सुख के एक औंस को पसंद करती है; इसी तरह, वह भविष्य में एक साल की पीड़ा से अधिक तत्काल थप्पड़ के डर से सिकुड़ जाता है। इसके अलावा, यदि भावनाएँ किसी व्यक्ति पर हावी हो जाती हैं, तो वे तर्क और मन पर ध्यान नहीं देती हैं। इच्छाएँ और भ्रम उस पर शासन करते हैं, और वह भविष्य में बड़े इनाम के बजाय मामूली, सबसे तुच्छ वर्तमान सुख को पसंद करता है, और वह किसी भयानक स्थगित पीड़ा से अधिक किसी मामूली वर्तमान संकट से सिकुड़ता है। क्योंकि इच्छाएँ, भ्रम और भावनाएँ भविष्य को नहीं देखती हैं, बल्कि वे इसे नकारती हैं। और यदि आत्मा उनकी सहायता करती है, तो हृदय, जो विश्वास का स्थान है, और मन चुप हो जाते हैं और पराजित हो जाते हैं। इस मामले में, गंभीर पाप करना विश्वास की कमी से उत्पन्न नहीं होता है, बल्कि प्रमुख भावनाओं, इच्छाओं और भ्रमों द्वारा हृदय और मन की हार से उत्पन्न होता है।

और जैसा कि पिछली आयतों से पता चलता है, चूँकि वासनाएँ और बुराइयाँ विनाश के ज़रिए काम करती हैं, इसलिए वे बहुत आसान हैं। जिन्न और इंसानों में से शैतान लोगों को बहुत जल्दी उस रास्ते पर ले जाते हैं। यह एक आश्चर्यजनक स्थिति है, क्योंकि हदीस के अनुसार, दुनिया की एक मक्खी के पंख के बराबर रोशनी10 उस आनंद और नेमत के बराबर है जो एक व्यक्ति को इस दुनिया में अपनी पूरी ज़िंदगी में मिलती है।

[11] फिर भी शैतान का अनुसरण करते हुए, कुछ अभागे लोग इस क्षणभंगुर संसार के सुखों को पसंद करते हैं, जो उस शाश्वत संसार के सुखों की तुलना में एक मक्खी के पंख के समान हैं, जो इस सारे संसार के बराबर हैं।

इन्हीं कारणों से पवित्र कुरान बार-बार, आग्रहपूर्वक, प्रोत्साहन और धमकी के साथ, विश्वासियों को पाप से रोकता है तथा उन्हें अच्छाई करने के लिए प्रेरित करता है।

एक बार पवित्र कुरान की इस सख्त हिदायत ने मुझे यह विचार दिया कि ये लगातार चेतावनियाँ और अनुस्मारक यह संकेत देते हैं कि ईमान वाले अस्थिर और दोषपूर्ण हैं। वे मनुष्य की ईमानदारी के साथ असंगत स्थिति का संकेत देते हैं।

---

[9] मुस्लिम, ईमान, 39; तिर्मिज़ी, ईमान, 4; अबू दाउद, सुन्ना, 17; नसाई, ईमान, 6; इब्न माजा, मुक़द्दिमा, 63.

[10] तिर्मिधि, जुहद, 13; इब्न माजा, जुहद, 3; मुसनद, वी, 154, 177.

[11] देखें, अल-कुर्तुबी, अल-जामी अल-अहकाम अल-कुरान, xiii, 7।

हालाँकि किसी अधिकारी से आज्ञाकारिता करवाने के लिए उसके वरिष्ठ अधिकारी का एक ही आदेश पर्याप्त होता है, लेकिन अगर वरिष्ठ अधिकारी उसी आदेश को दस बार दोहराए, तो अधिकारी को बहुत बुरा लगेगा। वह कहेगा: "तुम मेरा अपमान कर रहे हो। मैं विश्वासघाती नहीं हूँ।" हालाँकि, सर्वज्ञ कुरान सबसे सच्चे विश्वासियों के लिए उसी आदेश को बार-बार दोहराता है।

जिस समय मैं इस विचार पर उलझन में था, मेरे दो या तीन वफ़ादार दोस्त थे। मैं अक्सर उन्हें चेतावनी देता और याद दिलाता था कि कहीं वे शैतानी इंसानों की चालों में न फँस जाएँ। वे मुझसे नाराज़ नहीं हुए, न ही उन्होंने कहा कि मैं उनका अपमान कर रहा हूँ।

लेकिन मैं अपने आप से कहा करता था कि मैं इन निरंतर चेतावनियों से उन्हें नाराज़ कर रहा हूँ और मैं उन पर बेवफ़ाई और चंचलता का आरोप लगा रहा हूँ। फिर अचानक ऊपर बताए गए संकेतों में बताई गई और साबित की गई सच्चाई स्पष्ट हो गई। मैंने समझा कि सर्वज्ञ कुरान की लगातार दोहराई गई बातें उचित और बिल्कुल वैसी ही थीं जैसी कि स्थिति की ज़रूरत थी, और बुद्धिमत्तापूर्ण और अतिशयोक्तिपूर्ण या आरोप लगाने वाली नहीं थीं; वे शुद्ध ज्ञान और शुद्ध वाक्पटुता थीं। मैं यह भी समझ गया कि मेरे उन वफ़ादार दोस्तों को नाराज़ क्यों नहीं किया गया। सच्चाई का सारांश यह है: चूँकि दुष्ट आत्माएँ लोगों को विनाश के लिए उकसाती हैं, इसलिए वे थोड़े से कामों से बहुत बुरा काम कर देती हैं। इसलिए जो लोग सत्य और मार्गदर्शन का मार्ग अपनाते हैं, उन्हें बहुत सावधानी और बड़ी देखभाल और बार-बार चेतावनी और विभिन्न सहायता
की ज़रूरत होती है।

इसी कारण सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने हज़ारों नामों के द्वारा आस्था रखने वालों को सहायता प्रदान करता है, तथा उनकी सहायता के लिए हज़ारों दयालु हाथ बढ़ाता है। वह उनकी ईमानदारी को कम नहीं आंकता, बल्कि उसे कायम रखता है।

वह मनुष्य को छोटा नहीं दिखाता, बल्कि शैतान की बुराई को महान दिखाता है।

ऐ सत्यवादियों और मार्गदर्शन करने वालों! शैतानी जिन्न और मनुष्यों की उपर्युक्त चालों से बचने का तरीका यह है: सत्यवादियों, सुन्नियों के स्कूल को अपना मुख्यालय बनाओ; चमत्कारी व्याख्या के कुरान के निर्विवाद मामलों के गढ़ में प्रवेश करो; और पैगंबर (UWBP) के आचरण को अपना मार्गदर्शक बनाओ; सुरक्षा और मुक्ति पाओ!

आठवां संकेत

सवाल : आपने ऊपर बताई गई आयतों में साबित कर दिया है कि गुमराही का रास्ता आसान है और तबाही और हमले वाला है, इसलिए बहुत से लोग इसे अपनाते हैं। जबकि रिसाले-ए-नूर के दूसरे हिस्सों में आपने यह साबित कर दिया है कि कुफ्र और गुमराही का रास्ता इतनी मुश्किलों और परेशानियों से भरा है कि किसी को भी इसे नहीं अपनाना चाहिए; इस पर चलना संभव नहीं है। और आपने यह दिखा दिया है कि ईमान और हिदायत का रास्ता इतना आसान और साफ है कि हर किसी को इसे अपनाना चाहिए।

उत्तर: अविश्वास और गुमराही दो प्रकार की होती है।

क्रियाओं और गौण मामलों से संबंधित है, और इनकार भी है और

विश्वास के मामलों को अस्वीकार करना। इस तरह का गुमराह होना आसान है। यह सत्य को स्वीकार न करना, त्यागना, अस्तित्व न होना और स्वीकृति का अभाव है।
रिसाले-ए-नूर में इस प्रकार को आसान बताया गया है।

जहाँ तक दूसरे प्रकार का प्रश्न है, यह क्रियाओं और गौण मामलों से संबंधित नहीं है, बल्कि मन का निर्णय है और विश्वास से संबंधित है। यह न केवल विश्वास को नकारता है, बल्कि इसके विपरीत एक रास्ता खोलता है। यह जो झूठ और अमान्य है, उसकी स्वीकृति है, सत्य के विपरीत का प्रमाण है। यह न केवल विश्वास का खंडन और खंडन है, बल्कि इसका विपरीत है। यह अस्वीकृति नहीं है ताकि यह आसान हो, बल्कि गैर-अस्तित्व की स्वीकृति है, और इसे केवल गैर-अस्तित्व को साबित करके ही स्वीकार किया जा सकता है। "गैर-अस्तित्व को साबित नहीं किया जा सकता"12 नियम के अनुसार, इसे साबित करना निश्चित रूप से आसान नहीं है।

इस प्रकार, रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में दिखाया गया अविश्वास और गुमराही इतनी कठिन और समस्यापूर्ण है कि असंभव है। थोड़ी सी भी बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति इस मार्ग को नहीं अपनाएगा। इसके अलावा, जैसा कि प्रदर्शित किया गया है, यह इतनी गंभीर पीड़ा और घुटन भरा अंधकार प्रदान करता है कि कोई भी व्यक्ति जो थोड़ा भी समझदार है, वह इसका अनुसरण नहीं करेगा।

मैंने पूछा: अधिकांश लोग इसे क्यों लेते हैं, जबकि यह इतना दुःखद, अंधकारमय और कठिन है?

उत्तर: वे इसमें गिर गए हैं और खुद को इससे बाहर नहीं निकाल सकते। और क्योंकि मनुष्य में मौजूद पशु और वनस्पति शक्तियां इसके परिणामों को नहीं देखती हैं और उनके बारे में नहीं सोचती हैं, और मनुष्य की सूक्ष्म क्षमताओं पर हावी हो जाती हैं, ऐसे लोग खुद को इससे बाहर नहीं निकालना चाहते हैं, इसलिए वे तत्काल, अस्थायी सुख से खुद को सांत्वना देते हैं।

प्रश्न: चूँकि गुमराही इतनी भयंकर पीड़ा और भय को जन्म देती है, इसलिए अविश्वासी को जीने में सक्षम नहीं होना चाहिए, जीवन से आनंद प्राप्त करना तो दूर की बात है। उसे दर्द से कुचला जाना चाहिए और पूरी तरह से भयभीत होना चाहिए। हालाँकि अपनी मानवता के कारण वह असंख्य चीजों की इच्छा रखता है और जीवन से प्यार करता है, लेकिन अपने अविश्वास के कारण, वह हमेशा मौत को अपने सामने देखता है, जो कि शाश्वत विनाश और चिरस्थायी अलगाव है, और अपने दोस्तों और प्रियजनों की मृत्यु और मृत्यु को विनाश और शाश्वत बिछड़न के रूप में देखता है, तो ऐसा व्यक्ति कैसे जी सकता है? वह जीवन से आनंद कैसे प्राप्त कर सकता है?

उत्तर: वह शैतान के एक असाधारण कुतर्क के माध्यम से खुद को धोखा देता है, और जीवित रहता है। वह मानता है कि उसे एक सतही सुख मिलता है। हम एक प्रसिद्ध तुलना के साथ इसकी वास्तविक प्रकृति का संकेत देंगे।

ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने शुतुरमुर्ग से कहा: "तुम्हारे पास पंख हैं, इसलिए उड़ो!" लेकिन उसने अपने पंख मोड़ लिए और कहा: "मैं ऊँट हूँ," और उड़ नहीं पाया। इसलिए वह शिकारी के जाल में फँस गया, और नहीं चाहता था कि शिकारी उसे देखे, इसलिए उसने अपना सिर रेत में दबा लिया। हालाँकि, उसने अपना विशाल शरीर शिकारी के शिकार के रूप में खुला छोड़ दिया। वे

[12] इब्न क़य्यिम, अल-सवाइक अल-मुर्सला, iv, 1310; अल-रूह फिल-कलाम, आई, 198.

बाद में उससे कहा: “तुम कहते हो कि तुम ऊँट हो, इसलिए तुम्हें बोझ ढोना चाहिए।” इस पर उसने अपने पंख फैलाए और घोषणा की: “मैं एक पक्षी हूँ,” और इस तरह बोझ ढोने वाले जानवर बनने से बच गया।
लेकिन तब उसके पास न तो कोई रक्षक था और न ही भोजन, और शिकारियों ने उसका पीछा किया।

ठीक इसी तरह, काफ़िर ने क़ुरआन की आसमानी घोषणाओं के सामने पूरी तरह से अविश्वास छोड़ दिया और संदेह में पड़ गया। अगर उससे पूछा जाए: “तुम सोचते हो कि मौत हमेशा के लिए खत्म हो जाना है। एक इंसान कैसे जी सकता है जब वह हमेशा अपने सामने उस फांसी के तख्ते को देखता है जिस पर उसे लटकाया जाना है? वह कैसे खुश रह सकता है?” क़ुरआन की सार्वभौमिक दया और सर्वव्यापी प्रकाश के अंश के कारण वह व्यक्ति जवाब देता है: “मृत्यु का मतलब शून्य में जाना नहीं है; शायद मृत्यु के बाद भी जीवन है।” या फिर वह शुतुरमुर्ग की तरह बेपरवाही की रेत में अपना सिर धंसा लेता है ताकि नियत समय उसे देख न ले और कब्र उसे न देख ले और चीज़ों की क्षणभंगुरता उस पर अपने तीर न चला दे!

संक्षेप में: जब शुतुरमुर्ग की तरह अविश्वासी मृत्यु और पतन को विलुप्ति के रूप में देखता है, तो उसका संदेह उसे कुरान और परलोक में विश्वास के बारे में प्रकट किए गए शास्त्रों की निश्चित ख़बरों को संभव मानने के लिए मजबूर करता है। वह संभावना को समझ लेता है और उस भयानक दर्द को नहीं सहता। अगर उससे कहा जाए: "चूंकि कोई व्यक्ति अनन्त क्षेत्र में जाएगा, वहाँ एक अच्छा जीवन जीने के लिए, यहाँ उसे धार्मिक कर्तव्यों को पूरा करने की कठिनाइयों को सहना होगा," तो उसका संदेह उसे जवाब देने के लिए प्रेरित करता है: "शायद ऐसी कोई दुनिया नहीं है, इसलिए मैं किसी ऐसी चीज़ के लिए काम क्यों करूँ जो मौजूद नहीं है?" कहने का मतलब यह है कि वह कुरान के उस आदेश द्वारा प्रदान की गई अमरता की संभावना के कारण अनन्त शून्यता के दर्द से बच जाता है, और अविश्वास की संभावना से चिपके हुए, वह अपने संदेह के कारण गैर-अस्तित्व की संभावना के कारण धार्मिक दायित्वों की कठिनाई से बच जाता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि इस दृष्टिकोण से, वह मानता है कि उसे इस जीवन से विश्वासियों की तुलना में अधिक आनंद मिलता है, क्योंकि अविश्वास द्वारा प्रदान की गई संभावना के कारण वह धार्मिक दायित्वों की कठिनाई से बच जाता है, और विश्वास द्वारा प्रदान की गई संभावना के कारण, वह खुद को अनन्त पीड़ाओं के लिए उजागर नहीं करता है। हालाँकि, यह शैतानी कुतर्क बेहद सतही, अस्थायी और बिना किसी लाभ के है।

इस प्रकार, हिकमत वाला कुरआन काफिरों के लिए भी एक तरह की दया का प्रकटीकरण करता है जो एक हद तक इस दुनिया में उनके जीवन को जहन्नम बनने से बचाता है, उनमें संदेह पैदा करता है, इसलिए वे संदेह में जीते हैं। अन्यथा, परलोक की जहन्नम को याद करके वे इस दुनिया में भी एक तरह की जहन्नम की यातनाएँ भोगते और आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाते।

ऐ ईमान वालो! अपने ईमान पर पूरा भरोसा रखते हुए क़ुरआन की शरण में प्रवेश करो, जो तुम्हें अनन्त विनाश और विनाश से बचाएगा।

इस दुनिया और परलोक के नरकों से दूर रहो। विनम्रतापूर्वक और कृतज्ञतापूर्वक पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के अभ्यासों की सीमाओं के भीतर रहो, और इस तरह इस दुनिया में दुख और परलोक में पीड़ा दोनों से बचो!

नौवां संकेत

प्रश्न: ऐसा क्यों है कि मार्गदर्शन करने वाले लोग, जो ईश्वर की पार्टी हैं, अक्सर गुमराह लोगों से हार जाते हैं, जो शैतान की पार्टी हैं, जबकि दुनिया की महिमा (जिस पर आशीर्वाद और शांति हो) उनके सिर पर है और उन्हें इतनी ईश्वरीय दया और सहायता और इतने सारे उपकार प्राप्त हैं? मदीना के झूठ बोलने वालों ने गुमराही पर जोर दिया और मार्गदर्शन को स्वीकार नहीं किया, जबकि वे सील ऑफ द पैगम्बर (UWBP) और कुरान की सच्चाइयों के तेजोमय सूर्य जैसी नबूवत और संदेशवाहक होने के करीब थे, जो आकर्षण के सार्वभौमिक नियमों से भी अधिक आकर्षक हैं?

उत्तर: इस भयानक प्रश्न के दो भागों को हल करने के लिए, एक गहन
सिद्धांत को स्पष्ट किया जाना चाहिए। यह इस प्रकार है:

ब्रह्मांड के सर्व-महिमावान निर्माता के दो प्रकार के नाम हैं, एक उनकी महिमा से संबंधित है और दूसरा उनकी सुंदरता से संबंधित है। चूँकि नामों को अलग-अलग अभिव्यक्तियों के माध्यम से अपने आदेशों को प्रदर्शित करने की आवश्यकता होती है, इसलिए महिमावान निर्माता ने ब्रह्मांड में विपरीतताओं को एक साथ मिला दिया। उन्हें आमने-सामने लाकर, उन्होंने उन्हें एक बुद्धिमान और लाभकारी प्रतियोगिता के रूप में आक्रामक और रक्षात्मक स्थिति दी।

विपरीतों को एक दूसरे की सीमाओं का उल्लंघन करवाते हुए, उसने संघर्ष और परिवर्तन को अस्तित्व में लाया, और ब्रह्मांड को परिवर्तन और रूपांतरण के नियम तथा प्रगति और उन्नति के सिद्धांतों के अधीन कर दिया। सृष्टि के वृक्ष के व्यापक फल मानवजाति में, उसने प्रतिस्पर्धा के नियम को और भी विचित्र रूप दिया, और प्रयास करने का द्वार खोल दिया, जो सभी मानवीय प्रगति का साधन होगा, उसने शैतान के पक्ष को कुछ ऐसी क्षमताएँ दीं, जिनके साथ वह परमेश्वर के पक्ष को चुनौती दे सके।

इसी गूढ़ रहस्य के कारण ही पैगम्बरों को अक्सर गुमराह लोगों से हार का सामना करना पड़ा। और गुमराह लोग, जो बेहद कमज़ोर और शक्तिहीन होते हैं, वे सत्य के लोगों पर, जो वास्तव में बेहद शक्तिशाली होते हैं, अस्थायी रूप से विजय प्राप्त कर लेते हैं और उनके विरुद्ध संघर्ष करते हैं। इस विचित्र विरोध में बुद्धिमत्ता इस प्रकार है:

गुमराही और अविश्वास में गैर-अस्तित्व और चूक दोनों शामिल हैं, इसलिए वे बेहद आसान हैं और उन्हें कार्रवाई की आवश्यकता नहीं है। वे विनाश को भी जन्म देते हैं, जो आसान भी है, और इसके लिए बहुत कम कार्रवाई की आवश्यकता होती है। वे आक्रामकता का एक स्रोत भी हैं, जो थोड़े से काम से कई लोगों को बहुत नुकसान पहुंचा सकता है, और दूसरों को डराने और आत्मा की शक्ति की इच्छा को संतुष्ट करने के माध्यम से, किसी व्यक्ति के लिए पद और स्थिति सुरक्षित कर सकता है।

वहाँ भी है

गुमराही और अविश्वास में स्वतंत्रता, जो मनुष्य की वनस्पति और पशु शक्तियों को संतुष्ट करती है, जो परिणामों के प्रति अंधे हैं और वर्तमान सुख से ग्रस्त हैं, और हृदय और तर्क जैसी सूक्ष्म क्षमताओं को उनके मानवीय और दूरदर्शी कर्तव्यों को त्यागने के लिए प्रेरित करती है।

हालाँकि, सर्वोपरि महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो), सभी संसारों के पालनहार के प्रिय, तथा अगुवों और मार्गदर्शन के लोगों का पवित्र मार्ग, दोनों ही अस्तित्व से संबंधित है, और दृढ़ता से स्थापित है, और रचनात्मक है, और यह कार्य, संयम, विवेक और दूरदर्शिता, उपासना, और बुराई का आदेश देने वाली आत्मा के प्रभुत्व और स्वतंत्रता को नष्ट करने के महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर आधारित है।13 यही कारण है कि मदीना में पैगंबर (UWBP) के समय के कपटियों ने चमगादड़ जैसे चमकते सूरज के प्रति अपनी आँखें बंद कर लीं, और उस विशाल आकर्षण के सामने प्रतिकर्षण की शैतानी शक्ति के सामने खुद को समर्पित कर दिया, और गुमराह रहे।

मैं कहता हूँ कि रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सारे जहान के पालनहार के महबूब थे।14 और उन्होंने अपने हाथों में सत्य धारण किया और अपनी ज़बान से सत्य बोला।15 और उनकी सेना के सैनिकों में फ़रिश्ते थे।16 और उन्होंने एक चुल्लू पानी से पूरी सेना को सींचा।17 और चार मुट्ठी गेहूँ और एक बकरी के माँस से एक हज़ार आदमियों को दावत दी।18 और काफ़िरों की सेना पर मुट्ठी भर धूल फेंककर उन्हें भगा दिया, जो सबकी आँखों में लग गई।19 तो फिर वह शासक सेनापति जिसने इनके जैसे हज़ार चमत्कार किए थे, उहुद के अंत में और हुनैन के आरंभ में कैसे पराजित हो गया ?21

उत्तर: ईश्वर के महान दूत (जिन पर आशीर्वाद और कृपा हो)
शांति) को मानव जाति के लिए एक अनुकरणीय मार्गदर्शक और नेता के रूप में भेजा गया था ताकि

[१३] देखें, अल-बहाकी, अल-ज़ुहद, 157; अल-ग़ज़ाली, इह्या 'उलूम अल-दीन, iii, 4; अल-दयालामी, अल-मुस्नद, iii, 408; इब्न रजब, जामी अल-लुम वाल-हिकम, आई, 196; अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, वी, 538; अल-'अजलुनी, कशफ अल-खफा', आई, 160; द्वितीय, 222.

[14] देखें, तिर्मिज़ी, मनाक़िब, 1; अल-दयालामी, मुहम्मद, 8.

[15] देखिये, क़ुरआन, 17:105.

[16] देखें, कुरान, 3:123-5। इसके अलावा, बुखारी, मघाज़ी, 11.

[17] देखें, बुखारी, स्नान, 32; मनाकिब, 25; रक्त, 35; मुस्लिम, 'इमारा, 72, 73; पुरोहिती, 5-6; तिर्मिधि, मनाकिब, 6; नाज़ारेथ, ताहारा, 61; मुसनद, iii, 329.

[18] देखें, बुखारी, हिबा, 28; आत्मा, 6; रक्त, 29; मनाकिब, 25; मुस्लिम, अशरिबा, 141-2, 175;
तिर्मिधि, मनाकिब, 6; इब्न माजा, अतिमा, 47; मुवत्ता', सिफत अल-नबी, 19; मुसनद, आई, 197-8.

[19] देखें, मुस्लिम, जिहाद, 81; दारिमी, सियार, 16; मुसनद, आई, 103, 368; वी, 286, 310.

[20] देखें, बुखारी, जिहाद, 65; बद'उल-ख़ल्क़, 11; मनाकिब अल-अंसार, 22; मघाज़ी, 18; अयमान, 15; दीयात, 16; अबू दाउद, जिहाद, 106; मुसनद, iv, 293-4.

[21] देखें, बुखारी, मग़ाज़ी, 54; जिहाद, 52, 61, 97, 167; मुस्लिम, जिहाद, 79; तिर्मिज़ी, जिहाद, 15.

लोग उससे सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के नियम सीख सकते थे, पूर्णतया विवेकशील परमेश्वर के नियमों का पालन करने के आदी हो सकते थे, और उसकी बुद्धि के सिद्धांतों के अनुरूप कार्य कर सकते थे। यदि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमेशा चमत्कारों और करामातों पर भरोसा करते, तो वे पूर्ण मार्गदर्शक और नेता नहीं हो सकते थे।

इसलिए उन्होंने समय-समय पर चमत्कार दिखाए, ज़रूरत के जवाब में, सिर्फ़ इसलिए कि वे उनके पैग़म्बर होने के दावे को पुष्ट करें और अविश्वासियों के इनकार को नकार दें। अन्य समयों में उन्होंने किसी से ज़्यादा ईश्वरीय आदेशों का पालन किया, और सभी से ज़्यादा सृष्टि में ईश्वरीय नियमों के अनुसार काम किया, जो प्रभु की बुद्धि और इच्छा के ज़रिए स्थापित किए गए थे, और उनके अधीन थे। जब वे अपने सैनिकों को खाइयों में जाने का आदेश देते थे, तो वे कवच पहनते थे।23 वे दुश्मन का सामना करते थे,

22

घाव खाए और कष्ट सहे।24 इस तरह उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान के नियमों और सृष्टि के महान शरीयत का अक्षरशः पालन किया।

दसवां संकेत

इबलीस की सबसे चालाक चालों में से एक है अपने अनुयायियों को खुद से इनकार करवाना। चूँकि इस समय भौतिकवादी दर्शन से प्रभावित लोग इन स्व-स्पष्ट मामलों में झिझक रहे हैं, इसलिए शैतान की इस चाल के सामने हम एक या दो बातें कहेंगे। वे इस प्रकार हैं:

यह तो स्पष्ट है कि शैतान के काम करने वाली शारीरिक दुष्ट आत्माएँ भी हैं। यह भी निश्चित है कि जिन्नों से शरीर रहित दुष्ट आत्माएँ भी हैं।

अगर वे भौतिक शरीर धारण करते, तो वे उन दुष्ट मनुष्यों के समान होते। साथ ही, अगर वे दुष्ट आत्माएँ मानव रूप में अपने शरीर को त्यागने में सक्षम होतीं, तो वे वे जिन्न-शैतान होते। वास्तव में, इस भयानक संबंध के परिणामस्वरूप एक विकृत संप्रदाय ने घोषणा की: "मरने के बाद, मानव रूप में अत्यधिक दुष्ट आत्माएँ शैतान बन जाती हैं।"

यह सर्वविदित है कि जब उच्च गुणवत्ता वाली कोई चीज़ खराब हो जाती है तो वह कम गुणवत्ता वाली चीज़ से ज़्यादा खराब हो जाती है। उदाहरण के लिए, अगर दही और दूध खराब हो जाए तो उन्हें खाया जा सकता है, लेकिन अगर तेल खराब हो जाए तो वह खाने लायक नहीं रह जाता और जहरीला भी हो जाता है। इसी तरह, अगर सबसे महान, बल्कि सबसे महान प्राणी, मनुष्य भी खराब हो जाए तो वह एक भ्रष्ट जानवर से भी ज़्यादा भ्रष्ट हो जाता है। जैसे कीड़े-मकौड़े सड़ते हुए पदार्थ की बदबू का आनंद लेते हैं और

[22] देखें, अबू दाउद, जिहाद, 75; इब्न माजा, जिहाद, 18; मुसनद, iii, 449.

[23] देखें, बुखारी, मग़ाज़ी, 29; जिहाद, 34, 161; कादर, 16; तमन्नी, 7; मुसलमान, जिहाद, 125.

[24] देखें, बुखारी, जिहाद, 80, 85, 163; स्नान, 72; रक्त, 24; विवाह, 123; तिब्ब, 27; मुस्लिम, जिहाद, 101; तिर्मिधि, तिब्ब, 34; इब्न माजाह, चिकित्सा, 15.

साँप जो काटने और ज़हर देने में आनंद लेते हैं, वे गुमराही के दलदल की बुराइयों और दुष्ट अनैतिकता पर गर्व और आनंद लेते हैं, बुरे कामों के अंधकार के नुकसान और अपराधों से संतुष्ट होते हैं; बिलकुल सीधे शब्दों में कहें तो वे शैतान की प्रकृति को अपना लेते हैं। जी हाँ, जिन्न से शैतानों के अस्तित्व का एक निर्णायक संकेत, मानव शैतानों का अस्तित्व है।

दूसरा: उनतीसवें वचन में स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों के अस्तित्व को साबित करने वाले सैकड़ों निर्णायक प्रमाण दुष्ट आत्माओं के अस्तित्व को भी साबित करते हैं।

हम इस पहलू को उस वचन से जोड़ते हैं।

तीसरा: ब्रह्मांड में अच्छे मामलों के नियमों के प्रतिनिधि और पर्यवेक्षक, स्वर्गदूतों का अस्तित्व सभी धर्मों द्वारा स्थापित और सहमत है। इसी तरह, बुरी और शैतानी आत्माओं का अस्तित्व, जो बुरे मामलों के प्रतिनिधि और प्रवर्तक हैं और ऐसे मामलों के नियमों के साधन हैं, बुद्धि और वास्तविकता द्वारा अपेक्षित है, और निश्चित है। वास्तव में, बुरे मामलों में, एक सचेत पर्दा अधिक आवश्यक है। क्योंकि जैसा कि बाईसवें वचन की शुरुआत में कहा गया है, चूँकि हर कोई हर चीज़ की सच्ची अच्छाई को नहीं देख सकता है, इसलिए सर्व-महिमावान निर्माता ने स्पष्ट बुराइयों और दोषों के लिए एक पर्दा बनाया है, ताकि उस पर आपत्ति न की जाए, न ही उसकी दया पर आरोप लगाया जाए, न ही उसकी बुद्धि की आलोचना की जाए या उसके बारे में अनुचित रूप से शिकायत की जाए, और ताकि आपत्तियाँ, आलोचनाएँ और शिकायतें परदे पर निर्देशित की जाएँ, न कि उदार निर्माता, पूर्ण रूप से बुद्धिमान की ओर। जिस तरह से उसने बीमारी को मौत की नियत घड़ी के लिए एक पर्दा बनाया ताकि अज़राइल को मरने वाले अपने बंदों की शिकायतों से बचाया जा सके, उसी तरह उसने अज़राइल को मरने वालों की आत्माओं को जकड़ने के लिए एक पर्दा बनाया ताकि उस स्थिति में, जिसे दया की कमी माना जाता है, शिकायतें सर्वशक्तिमान ईश्वर पर न की जाएँ। और इससे भी अधिक निश्चित रूप से, प्रभुत्वशाली बुद्धि ने शैतान के अस्तित्व की मांग की, ताकि बुराइयों और बुरी चीजों के सामने आपत्तियाँ और आलोचनाएँ सर्व-महिमावान निर्माता पर न की जाएँ।

चौथा: जिस तरह मनुष्य एक छोटा संसार है, सूक्ष्म जगत है, उसी तरह संसार एक बड़ा मनुष्य है, मैक्रोएंथ्रोपोस। छोटा मनुष्य मैक्रोएंथ्रोपोस का सूचकांक और सारांश है। मनुष्य में नमूनों के बड़े मूल अनिवार्य रूप से मैक्रोएंथ्रोपोस में पाए जाएंगे। उदाहरण के लिए, मनुष्य की स्मृति की क्षमता का अस्तित्व दुनिया में संरक्षित टैबलेट के अस्तित्व का एक निश्चित संकेत है। इसी तरह हर किसी ने अपने भीतर हृदय के एक कोने में स्थित आंतरिक क्षमता का अनुभव किया है जो शैतानी सुझावों और प्रलोभनों का साधन है और एक शैतानी जीभ है जो बोलती है

[25] देखें, अबू नु'आयम, हिल्या अल-अवलिया', वी, 51; अल-हकीम अल-तिर्मिधि, नवादिर अल-उसुल, आई, 177-8; अल-सुयुति, अल-दुर्र अल-मंथूर, vi, 543।

[26] देखें, तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरा 35:2; अल-नासाई, अल-सुनन अल-कुबरा, vi, 305; अल-बज़ार, अल-मुस्नद, वी, 394; अबू या'ला, अल-मुस्नद, vii, 278; आठवीं, 417.

अनुमान लगाने की क्षमता और कल्पना की भ्रष्ट शक्ति की प्रेरणाएँ, जो एक छोटे शैतान की तरह बन जाती है और अपने मालिक की इच्छा के विपरीत और उसकी इच्छाओं के विपरीत काम करती है - ये दुनिया में महान शैतानों के अस्तित्व के निश्चित प्रमाण हैं। और चूँकि आंतरिक क्षमता जो शैतानी सुझावों का साधन है और कल्पना की शक्ति एक कान और एक जीभ है, वे एक बाहरी दुष्ट व्यक्ति के अस्तित्व का अनुमान लगाते हैं जो एक पर फूंक मारता है और दूसरे को बोलने पर मजबूर करता है।

ग्यारहवाँ संकेत

पवित्र कुरान ने चमत्कारी ढंग से कहा है कि ब्रह्मांड गुमराह लोगों की बुराई पर क्रोधित हो जाता है, और सार्वभौमिक तत्व क्रोधित और उग्र हो जाते हैं। यह आश्चर्यजनक रूप से नूह के लोगों पर आए तूफान और आकाश और पृथ्वी के हमलों को दर्शाता है, 'आद और समूद के लोगों के इनकार पर तत्व वायु के क्रोध को, और फिरौन के लोगों पर समुद्र और तत्व जल के क्रोध को, और क़ारून पर तत्व पृथ्वी के क्रोध को दर्शाता है, और आयत के अनुसार, "लगभग क्रोध से फटने वाला" (67: 8), परलोक में अविश्वास करने वालों पर नरक का क्रोध और क्रोध, और अविश्वासियों और गुमराह लोगों पर अन्य प्राणियों का क्रोध; यह चमत्कारी ढंग से गुमराह और विद्रोही लोगों को रोकता है।

प्रश्न: महत्वहीन व्यक्तियों के महत्वहीन कार्य और व्यक्तिगत पाप इस प्रकार ब्रह्माण्ड के क्रोध को क्यों आकर्षित करते हैं?

उत्तर: जैसा कि रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों और पिछले संकेतों में सिद्ध किया गया है, अविश्वास और गुमराही भयंकर आक्रामकता और अपराध हैं जो सभी प्राणियों से संबंधित हैं। ब्रह्मांड की रचना के सबसे महत्वपूर्ण परिणामों में से एक है मनुष्य की पूजा और ईश्वरीय प्रभुत्व के प्रति उसका विश्वास और समर्पण के साथ जवाब देना।

लेकिन अविश्वास और गुमराही के लोग उस नकार के कारण जो कि अविश्वास का एक हिस्सा है, उस सर्वोच्च परिणाम को अस्वीकार कर देते हैं जो कि प्राणियों के निरंतर अस्तित्व का अंतिम कारण है और इसलिए वे प्राणियों के अधिकारों के विरुद्ध एक प्रकार का उल्लंघन करते हैं। इसके अलावा, चूँकि वे प्राणियों के दर्पणों में स्पष्ट दिखने वाले दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों को नकारते हैं और उनके महत्व को बढ़ाते हैं, इसलिए वे न केवल उन पवित्र नामों का अपमान करते हैं, बल्कि सभी प्राणियों के मूल्य को कम करके, उन्हें बहुत कमज़ोर कर देते हैं।

इसके अलावा, यद्यपि प्राणी उच्च कर्तव्यों से युक्त प्रभुता संपन्न अधिकारी हैं, फिर भी अपने अविश्वास के कारण, गुमराह लोग उन्हें नीचे गिरा देते हैं, और उन्हें निर्जीव, क्षणभंगुर, अर्थहीन प्राणी दिखाकर, वे एक तरह से उन सभी के अधिकारों का उल्लंघन करते हैं।

इस प्रकार, चूँकि विभिन्न प्रकार के गुमराह करने वाले तत्व ब्रह्माण्ड की रचना में प्रमुख बुद्धि तथा विश्व के निरन्तर अस्तित्व में ईश्वरीय उद्देश्यों को न्यूनाधिक सीमा तक हानि पहुँचाते हैं, इसलिए ब्रह्माण्ड ईश्वर पर क्रोधित हो जाता है।

विद्रोही और गुमराह लोग, जैसा कि सभी प्राणी और जीव हैं।

ऐ बदकिस्मत इंसान, जिसका वजूद छोटा है, लेकिन गुनाह बड़ा और गुनाह भयंकर है! अगर तू दुनिया के गुस्से, इंसानों के गुस्से और जीवों की नफरत से बचना चाहता है, तो यह तरीका है: हिकमत वाले कुरआन की पवित्र सीमा में दाखिल हो और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) के बताए रास्ते पर चल, जो कुरआन के पैगम्बर हैं। तो खुद को इसके दायरे में रख और इसके मुताबिक चल!

बारहवां संकेत

इसमें चार प्रश्न और उत्तर हैं।

पहला प्रश्न: एक अनंत नरक में अनंत यातना के बदले में क्या हो सकता है?
क्या सीमित जीवन में सीमित पाप न्याय होगा?

उत्तर: उपर्युक्त संकेतों से, और विशेष रूप से ग्यारहवें में, यह स्पष्ट रूप से समझा गया था कि अविश्वास और गुमराही एक अनंत अपराध है और असंख्य अधिकारों का उल्लंघन है।

दूसरा सवाल: शरिया में कहा गया है कि जहन्नम उन लोगों की सज़ा है जो पाप करते हैं।
27 इसका कारण क्या है?

उत्तर: उपरोक्त संकेतों में यह स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि अपनी इच्छा शक्ति और तुच्छ इच्छाओं के साथ, मनुष्य किसी अस्तित्वहीन या सैद्धांतिक चीज़ को रूप और वास्तविकता देकर भयानक विनाश और बुराइयों का कारण बनता है। इसी तरह, चूँकि उसकी आत्मा और इच्छाएँ हमेशा बुराई और नुकसान की ओर झुकी रहती हैं, इसलिए वह अपनी तुच्छ इच्छाओं के परिणामस्वरूप होने वाली बुराइयों के लिए ज़िम्मेदार है। क्योंकि उसकी आत्मा उन्हें चाहती थी और उसकी इच्छाओं ने उन्हें जन्म दिया। और चूँकि बुराई अस्तित्वहीनता से संबंधित है, इसलिए सेवक ही इसका कर्ता है और सर्वशक्तिमान ईश्वर इसे बनाता है। अनंत अपराध के लिए जिम्मेदार होने के नाते, वह निश्चित रूप से अनंत दंड का हकदार है।

हालाँकि, चूँकि अच्छे कर्म और क्रियाएँ अस्तित्व से संबंधित हैं, इसलिए मनुष्य की इच्छा और इच्छाएँ उनके अस्तित्व का प्रत्यक्ष कारण नहीं हो सकतीं। मनुष्य ऐसे कार्यों में सच्चा एजेंट नहीं हो सकता। साथ ही, उसकी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त नहीं होती; यह ईश्वरीय दया है जो उन्हें चाहती है और प्रभुत्वशाली शक्ति जो उन्हें बनाती है। मनुष्य केवल

ईमान, इच्छा या इरादे के ज़रिए उन पर दावा करना। और उन पर दावा करने के बाद, ऐसे अच्छे कामों में ईश्वर की अनंत नेमतों के लिए शुक्रिया अदा करना शामिल है, जैसे ईमान और अस्तित्व के उपहार। ऐसा शुक्रिया पिछली नेमतों की ओर देखता है, जबकि जन्नत सबसे रहमान की नेमत है, जिसका वादा खुदा ने किया है और उसे दिया जाएगा।

जाहिरा तौर पर यह एक इनाम है, लेकिन वास्तव में यह एक उपकार है।

[27] देखें, कुरान, 10:58. यह भी देखें, बुखारी, रिकाक, 18; मर्दा, 19; मुस्लिम, सिफत अल-मुनाफिकिन, 71-3, 75-6, 78.

इसका मतलब यह है कि बुरे कामों में आत्मा ही कारण है और उसे ही सज़ा मिलनी चाहिए, जबकि अच्छे कामों में कारण और कारण दोनों ही ईश्वर की ओर से हैं। मनुष्य केवल विश्वास के ज़रिए ही उन पर दावा कर सकता है। वह यह नहीं कह सकता: “मुझे इनाम चाहिए,” लेकिन वह यह कह सकता है: “मुझे ईश्वरीय कृपा की उम्मीद है।”

तीसरा प्रश्न: उपरोक्त व्याख्याओं से यह समझा जा सकता है कि चूँकि बुराइयाँ संक्रमण और आक्रमण के माध्यम से बढ़ती हैं, इसलिए एक बुरे कर्म को एक हजार के रूप में दर्ज किया जाना चाहिए; और चूँकि अच्छे कर्म अस्तित्व से संबंधित हैं, वे न तो गुणा करते हैं और न ही वे सेवक के रचनात्मक कार्य या उसकी आत्मा की इच्छाओं के माध्यम से घटित होते हैं; इसलिए उन्हें बिल्कुल भी दर्ज नहीं किया जाना चाहिए या केवल एक के रूप में दर्ज किया जाना चाहिए। तो बुरे कर्मों को एक और अच्छे कर्मों को दस और कभी-कभी हज़ारों के रूप में क्यों दर्ज किया जाता है?28

उत्तर: इस तरह सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपनी पूर्ण दया प्रदर्शित करता है
और उसकी करुणा की सुन्दरता।

चौथा सवाल : गुमराह लोगों ने जो सफलताएं हासिल की हैं और जो ताकत दिखाई है और हिदायत वालों पर उनकी जीत से पता चलता है कि वे किसी ताकत और सच्चाई पर भरोसा करते हैं। इसका मतलब यह है कि या तो हिदायत वालों में कोई कमजोरी है या गुमराह लोगों में कोई सच्चाई है?

उत्तर: ईश्वर न करे, न तो उनके पास कोई सत्य है, न ही सत्य के लोगों में कोई कमजोरी है। लेकिन अफसोस की बात है कि कुछ साधारण लोग जो अदूरदर्शी और विवेकहीन होते हैं, वे संदेहास्पद और संकोची हो जाते हैं और उनके विश्वास को नुकसान पहुँचता है। क्योंकि वे कहते हैं: यदि सत्य के लोगों के पास पूर्ण सत्य और वास्तविकता होती, तो उन्हें इस हद तक पराजय और अपमान का सामना नहीं करना पड़ता। क्योंकि सत्य शक्तिशाली है। मूल सिद्धांत "सत्य महान है और उसे पराजित नहीं किया जा सकता" के अनुसार, शक्ति सत्य में निहित है। यदि गुमराह लोगों के पास सच्ची शक्ति और समर्थन का बिंदु न होता, तो वे सत्य के लोगों पर हावी नहीं हो सकते थे और इस हद तक जीत नहीं सकते थे।

उत्तर: जैसा कि ऊपर के संकेतों से सिद्ध है, सत्य के लोगों की पराजय शक्ति की कमी और सत्य के अभाव से नहीं होती, और जैसा कि सिद्ध है, गुमराह लोगों की जीत उनकी शक्ति और क्षमता और उनके पास समर्थन का कोई स्रोत होने से नहीं होती। इसलिए, इस प्रश्न का उत्तर उपरोक्त सभी संकेत हैं; यहाँ हम केवल उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली कुछ चालों और हथियारों की ओर इशारा करेंगे, जो इस प्रकार हैं: मैंने स्वयं अक्सर देखा है कि उपद्रवी, जो दस प्रतिशत हैं, धर्मी लोगों को हरा देते हैं, जो नब्बे प्रतिशत हैं। मैं आश्चर्यचकित और उत्सुक हुआ करता था।

जांच करने पर मुझे पक्का पता चल गया कि उनकी जीत

[28] देखें, क़ुरआन, 6:160. यह भी देखें, बुखारी, ईमान, 31; मुस्लिम, ईमान, 206.

[29] देखें, बुखारी, जनाज़, 79: "अल-इस्लाम या'लु वा ला यु'ला।"

सत्ता से नहीं, बल्कि भ्रष्टाचार, नीचता, विनाश, सत्य के लोगों के बीच मतभेदों का फायदा उठाने, उनके बीच संघर्ष बोने, उनके चरित्र के कमजोर लक्षणों से खेलने और उन्हें ऐसे लक्षणों से जोड़ने, आत्मा की भावनाओं और व्यक्तिगत घृणा को उत्तेजित करने, और मानव स्वभाव में दुष्ट क्षमताओं को काम करने के माध्यम से जो भ्रष्टाचार की खानों की तरह हैं, और प्रसिद्धि और महिमा के नाम पर आत्मा के अत्याचार की पाखंडी चापलूसी करने, और हर किसी को उनके निर्दयी विनाश से डरने के माध्यम से। इन जैसे शैतानी षडयंत्रों के माध्यम से, वे अस्थायी रूप से सत्य के लोगों पर विजय प्राप्त करते हैं। लेकिन श्लोक के अनुसार,

और अन्त तो डर रखनेवालों के लिए अच्छा है। (7:128)

और नियम, "सत्य महान है और उसे पराजित नहीं किया जा सकता है," इससे उन्हें कोई महत्वपूर्ण लाभ नहीं होगा, इसके अलावा उनकी अस्थायी विजय उनके लिए नरक और सत्य के लोगों के लिए स्वर्ग अर्जित करने का कारण बनेगी।

इस प्रकार, क्योंकि गुमराही में शक्तिहीन लोग शक्तिशाली दिखाई देते हैं और तुच्छ लोग प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं, वे सत्य के लोगों के विरोध में एक स्थिति लेते हैं। इस तरह से अभिमानी, प्रसिद्धि चाहने वाले, पाखंडी लोग अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं, हालांकि इसमें बहुत कम सार होता है और दूसरों को डराने और नुकसान पहुँचाने के माध्यम से अपने लिए एक स्थान प्राप्त करते हैं; उन्हें देखा जाता है और उनकी ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है, और जिस विनाश का वे कारण हैं, वह शक्ति और क्षमता के माध्यम से नहीं, बल्कि चूक और कार्य करने में विफलता के कारण, उनके ऊपर आरोपित किया जाता है और उनके बारे में बात की जाती है। ठीक उसी तरह जैसे प्रसिद्धि के लिए पागल व्यक्ति ने पूजा स्थल को अपवित्र कर दिया ताकि हर कोई उसके बारे में बात करे। भले ही इसका मतलब निंदित होना हो, जब तक उसके बारे में बात की जाती है, तब तक उसकी प्रसिद्धि की पूजा उसे वांछनीय लगती है। मामला कहावत बन गया।

हे अभागे मनुष्य, जो शाश्वत लोक के लिए बनाया गया है और इस क्षणभंगुर पर मोहित है।

दुनिया! इस श्लोक के अर्थ का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें,

और न आकाश ने उनपर आँसू बहाए और न धरती ने ।(44:29)

और उस पर ध्यान दो। देखो, यह क्या कहता है? अपने स्पष्ट अर्थ के साथ यह कहता है: “जब गुमराह लोग मर जाते हैं, तो आकाश और पृथ्वी, जो मनुष्य से जुड़े हुए हैं, उनके लिए रोते नहीं हैं, यानी वे उनकी मृत्यु पर प्रसन्न होते हैं।” जबकि इसके निहित अर्थ के साथ यह कहता है: “जब मार्गदर्शन करने वाले लोग मर जाते हैं तो आकाश और पृथ्वी मार्गदर्शन करने वालों के शरीर पर रोते हैं; वे नहीं चाहते कि वे चले जाएँ।” क्योंकि सारी कायनात ईमान वालों से जुड़ी हुई है और उसके प्राणी उनसे खुश हैं। क्योंकि अपने ईमान के कारण वे कायनात के रचयिता को जानते हैं, इसलिए कायनात की कीमत को समझते हैं, उसका सम्मान करते हैं और उससे प्रेम करते हैं। वे गुमराह लोगों की तरह उसके प्रति निहित शत्रुता और घृणा नहीं रखते।

ऐ इंसान, सोचो! तुम मरने वाले हो। अगर तुम अपनी आत्मा और शैतान का अनुसरण करोगे, तो तुम्हारे पड़ोसी और यहाँ तक कि तुम्हारे रिश्तेदार भी तुमसे मुक्ति पाकर खुश होंगे। लेकिन अगर तुम यह कहते हुए कि, "मैं शैतान से अल्लाह की शरण चाहता हूँ," कुरान और रहमदिल के प्यारे (UWBP) का अनुसरण करते हो, तो तुम्हारी डिग्री के अनुसार आकाश और पृथ्वी और सभी प्राणी तुम्हारे विदा होने पर दुखी होंगे, और वास्तव में रोएँगे।

ऊंचे ढंग से शोक मनाकर और तुम्हें शानदार विदाई देकर, वे संकेत देंगे कि जब तुम कब्र के द्वार से अनंत काल की दुनिया में प्रवेश करोगे, तो तुम्हारी डिग्री के अनुसार तुम्हारा अच्छा स्वागत होगा।30

तेरहवां संकेत

इसमें तीन बिंदु शामिल हैं।

पहला बिंदु: शैतान की सबसे चालाक चालों में से एक है संकीर्ण दिमाग, छोटे विचार और संकुचित दिल वाले लोगों को विश्वास की सच्चाई की विशालता के बारे में धोखा देना। वह कहता है: "ऐसा कहा जाता है कि एक ही सत्ता अपने प्रभुत्व के भीतर सभी कणों और ग्रहों और सितारों और अन्य सभी प्राणियों और उनकी सभी अवस्थाओं को निर्देशित और प्रशासित करती है। कोई व्यक्ति इतनी विशाल और असाधारण बात पर कैसे विश्वास कर सकता है?

वह हृदय में कैसे समा सकता है? मन उसे कैसे स्वीकार कर सकता है? वह मानवीय नपुंसकता के प्रति अस्वीकार की भावना जागृत करता है।

उत्तर: शैतान की इस चाल को शांत करने का तरीका है "ईश्वर सबसे महान है!" और इसका सच्चा उत्तर है "ईश्वर सबसे महान है!" हाँ, इस्लाम के सभी चिह्नों में "ईश्वर सबसे महान है!" का सबसे अधिक बार दोहराया जाना इस चाल को खत्म करने के लिए है। क्योंकि यह "ईश्वर सबसे महान है!" के प्रकाश के माध्यम से ही मनुष्य की नपुंसकता और शक्ति की कमी, कमजोरी और ताकत की कमी, और संकीर्ण विचार ऐसे असीम रूप से विशाल सत्य को देखते हैं और उनकी पुष्टि करते हैं। यह "ईश्वर सबसे महान है!" की ताकत के माध्यम से ही है कि मनुष्य उन सत्यों को बनाए रखता है, और उन्हें "ईश्वर सबसे महान है!" के दायरे में रखता है।

और वह अपने हृदय से जो संदेह करने लगता है कहता है: यह

स्वयंसिद्ध है कि ब्रह्माण्ड सर्वाधिक व्यवस्थित ढंग से प्रशासित और निर्देशित है।

फैशन। ऐसा होने के दो तरीके हैं:

पहला तरीका: यह संभव है कि अपनी अद्भुत विशालता के बावजूद, ऐसा आश्चर्यजनक कार्य अद्भुत कला के माध्यम से अद्भुत तरीके से सामने आता है। तो यह पहला तरीका है कि ब्रह्मांड एक एकल और शाश्वत रूप से प्रशंसित एक की प्रभुता, इच्छा और शक्ति के माध्यम से अस्तित्व में है, जिसके अस्तित्व के साक्षी कई प्राणी हैं, वास्तव में, सूक्ष्म कण।

दूसरा मार्ग: यह अविश्वास और ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ने का मार्ग है, जो किसी भी तरह से संभव नहीं है और इतना कठिन है कि असंभव है

[30] देखें, तिर्मिधि, क़ियामा, 26 (2460); इब्न माजाह, ज़ुहद, 31; मुसनद, द्वितीय, 364; vi, 140.

और किसी भी तरह से तर्कसंगत नहीं है। क्योंकि जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों जैसे बीसवें अक्षर और बाईसवें शब्द में निर्णायक रूप से साबित हुआ है, ब्रह्मांड में सभी प्राणियों में और यहां तक कि हर एक कण में पूर्ण दिव्यता और सर्वव्यापी ज्ञान और अनंत शक्ति मौजूद होनी चाहिए ताकि प्राणियों में देखी जाने वाली संपूर्ण व्यवस्था और नियमितता, संवेदनशील संतुलन और भेद, और कला की परिपूर्ण, सुशोभित कढ़ाई अस्तित्व में आ सके।

संक्षेप में: यदि कोई विशाल और जबरदस्त प्रभुत्व नहीं होता, जो पूरी तरह से उचित और उचित है, तो इसके लिए एक ऐसे मार्ग का अनुसरण करना आवश्यक होगा जो हर तरह से अनुचित और निषिद्ध है। यहां तक कि शैतान भी ऐसी आवश्यक विशालता से भागने का प्रस्ताव नहीं दे सकता है, और असंभवता को स्वीकार करने का सुझाव नहीं दे सकता है।

दूसरा बिंदु: शैतान की एक और चालाक चाल यह है कि वह मनुष्य को अपनी गलतियों को स्वीकार करने से रोकता है ताकि वह क्षमा मांगने और ईश्वर की शरण में जाने का रास्ता बंद कर दे। वह मनुष्य की आत्मा के अहंकार को भी भड़काता है, ताकि आत्मा एक वकील की तरह अपना बचाव करे और खुद को सभी दोषों से बरी कर ले।

हाँ, शैतान की बात सुनने वाली आत्मा अपनी गलतियों को देखना नहीं चाहती। अगर देखती भी है तो सौ तरीकों से उन्हें दूर करती है। कहावत के अनुसार: "संतुष्टि की आँख गलतियों को नहीं देखती"31 जब कोई व्यक्ति अपनी आत्मा को खुशी से देखता है, तो उसे उसकी गलतियाँ नहीं दिखती। और क्योंकि वह उन्हें नहीं देखता, इसलिए वह उन्हें स्वीकार नहीं करता, न ही माफ़ी माँगता है, न ही उनसे बचने के लिए ईश्वर से शरण माँगता है, इसलिए वह शैतान का खिलौना बन जाता है। जब जोसेफ (UWP) जैसे महान भविष्यवक्ता ने कहा, तो आत्मा पर कैसे भरोसा किया जा सकता है:

> “और न मैं अपने आप को दोषमुक्त करता हूँ, आत्मा तो बुराई में ही लगी रहती है, जब तक कि मेरा पालनहार अपनी दया न करे।” (12:53)

जो व्यक्ति अपनी आत्मा पर आरोप लगाता है, वह अपनी गलतियों को देखता है। और जो अपनी गलतियों को स्वीकार करता है, वह उनके लिए क्षमा मांगता है। और जो क्षमा मांगता है, वह ईश्वर की शरण में जाता है। और जो ईश्वर की शरण में जाता है, वह शैतान की बुराई से बच जाता है। अपनी गलतियों को न देखना पहली गलती से भी बड़ी गलती है। और अपनी गलतियों को न मानना एक गंभीर दोष है। अगर कोई गलती देख लेता है, तो वह गलती नहीं रह जाती। अगर कोई उसे स्वीकार कर लेता है, तो वह क्षमा के योग्य हो जाता है।32

तीसरी बात: समाज के जीवन को भ्रष्ट करने वाली शैतानी चाल यह है: किसी एक बुराई के कारण किसी आस्तिक के सभी गुणों को न देखना। जो अन्यायी लोग शैतान की इस चाल पर ध्यान देते हैं, वे इस तरह से शैतान के दुश्मन बन जाते हैं।

---

[३१] इब्न असाकिर, तारिख दमिश्क, xxxiii, 219; xxxvi, 319; अल-ग़ज़ाली, इहया 'उलूम अल-दीन, iii, 36; अल-क़ल्कशांडी, सुभ अल-आशा', ix, 196।

[32] देखें, अल-दयालामी, अल-मुस्नद, वी, 199; अल-क़ुदाई, मुसनद अल-शिहाब, द्वितीय, 44.

विश्वासियों। हालाँकि, जब सर्वशक्तिमान ईश्वर अंतिम निर्णय के समय सर्वोच्च तराजू पर पूर्ण न्याय के साथ कर्मों का वजन करेगा, तो वह अच्छे कर्मों की बुराईयों पर प्रधानता के अनुसार और इसके विपरीत न्याय करेगा। यह देखते हुए कि बुरे कर्मों के कारण अनेक हैं और उनका अस्तित्व आसान है, कभी-कभी वह एक अच्छे कर्म के साथ कई बुरे कर्मों को ढक देता है।

अर्थात् इस संसार में व्यवहार ईश्वरीय न्याय के अनुरूप होना चाहिए।
यदि किसी व्यक्ति के गुण या मात्रा उसकी बुराइयों से अधिक हैं, तो वह प्रेम और सम्मान का पात्र है। वास्तव में, एक ही गुण के कारण बहुत सी बुराइयों को क्षमा कर देना चाहिए। परन्तु, अपने स्वभाव में अत्याचार की रग के कारण, शैतान के उकसावे पर, एक ही बुराई के कारण दूसरों की सौ अच्छाइयों को भूल जाता है; वह अपने ईमान वाले भाई से दुश्मनी रखता है, और पाप करता है। जिस प्रकार मक्खी के पंख से आँख ढकने पर पहाड़ छिप जाता है, उसी प्रकार घृणा का पर्दा मक्खी के पंख के समान एक ही बुराई के कारण पहाड़ के समान महान गुणों को छिपा देता है; वह उन्हें भूल जाता है, अपने ईमान वाले भाई से दुश्मनी रखता है, और समाज के जीवन में भ्रष्टाचार का साधन बन जाता है।

इसी तरह की एक और चाल के ज़रिए शैतान लोगों के विचारों की ईमानदारी को भ्रष्ट करता है। वह विश्वास की सच्चाइयों के बारे में सही निर्णय लेने की क्षमता को नष्ट करता है और विचारों की ईमानदारी और शुद्धता को नुकसान पहुँचाता है। यह इस तरह है: वह विश्वास की सच्चाइयों को साबित करने वाले सैकड़ों सबूतों को नष्ट करना चाहता

है, बस उन्हें थोड़ा सा खंडन करके। जबकि यह एक स्थापित सिद्धांत है कि "एक सबूत सौ इनकारों से बेहतर है।" किसी दावे को साबित करने वाले गवाह का बयान सौ लोगों द्वारा इनकार करने से बेहतर है। इस सत्य पर निम्नलिखित तुलना के ज़रिए विचार करें: एक महल है जिसके सौ दरवाज़े बंद हैं। अगर इसका एक दरवाज़ा खोला जाए, तो महल में प्रवेश किया जा सकता है और सभी दरवाज़े खुल जाएँगे। अगर सभी दरवाज़े खुले हों और एक या दो बंद हों, तो यह नहीं कहा जा सकता कि महल में प्रवेश नहीं किया जा सकता।

इस प्रकार, विश्वास के सत्य ही महल हैं। प्रत्येक प्रमाण एक कुंजी है; यह सत्य को प्रमाणित करता है और एक द्वार खोलता है। यदि कोई द्वार बंद रहता है, तो विश्वास के सत्य को त्यागा या अस्वीकार नहीं किया जा सकता। हालाँकि, शैतान कुछ चीज़ों के परिणामस्वरूप या असावधानी या अज्ञानता के माध्यम से, एक द्वार की ओर इशारा करता है जो बंद रह गया है, जिससे व्यक्ति सभी सकारात्मक प्रमाणों की अवहेलना करता है। वह व्यक्ति को यह कहकर धोखा देता है: "देखो, इस महल में प्रवेश नहीं किया जा सकता। शायद यह महल नहीं है और शायद इसके अंदर कुछ भी नहीं है।"

हे शैतान और उसकी चालों से पीड़ित अभागे मनुष्य! यदि तुम चाहते हो कि धर्म, समाज और व्यक्तिगत जीवन सब स्वस्थ रहें, और यदि तुम चाहते हो कि विचार की पवित्रता, एक स्वस्थ दृष्टिकोण और एक सच्चा हृदय हो, तो अपने विवेक का मूल्यांकन करो।

कुरान के निर्विवाद मामलों और पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के व्यवहारों के तराजू पर अपने कार्यों और विचारों को तौलें। हमेशा कुरान और उसके व्यवहारों को अपना मार्गदर्शक मानें। कहो: "मैं शैतान से ईश्वर की शरण लेता हूँ," और सर्वशक्तिमान ईश्वर की शरण माँगता हूँ!

ऊपर दिए गए तेरह संकेत तेरह कुंजियाँ हैं। इनका उपयोग करके सूरा के सुदृढ़ गढ़ का द्वार खोलो,

> कह दो कि मैं शरण चाहता हूँ मनुष्यों के पालनहार की, मनुष्यों के शासक की, मनुष्यों के ईश्वर की, कानाफूसी करनेवाले की शरारत से, जो कानाफूसी के बाद पीछे हट जाता है। वह जो मनुष्यों के दिलों में कानाफूसी करता है।
>
> जिन्नों में भी और मनुष्यों में भी; (114:1-6)

इस सुरक्षित गढ़ में प्रवेश करें और सुरक्षा पाएं!

> पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

> कह दो कि ऐ मेरे पालनहार! मैं शैतानों की कानाफूसी से तेरी शरण चाहता हूँ और हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि कहीं वे मेरे निकट न आएँ। (23:97-8)

चौदहवाँ फ्लैश

[इसमें दो स्टेशन हैं। पहले स्टेशन में दो प्रश्नों के उत्तर हैं।]

उसके नाम में उसकी महिमा हो!
और कोई चीज़ उसकी प्रशंसा से पवित्रता का गुणगान करने से नहीं चूकती । (17:44)

आप पर शांति हो, तथा ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो!
मेरे प्रिय और वफादार भाई, रेफ़ेट बे!

बैल और मछली के बारे में आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में पाया जा सकता है। चौबीसवें वचन की तीसरी शाखा में बारह सिद्धांतों नामक बारह महत्वपूर्ण नियमों के प्रकाश में उस तरह के प्रश्न का स्पष्टीकरण है। वे सभी नियम पैगंबर (UWBP) की हदीसों की विभिन्न व्याख्याओं को समझने के लिए मानदंड प्रदान करते हैं, और उनके बारे में उत्पन्न होने वाले संदेह को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण सिद्धांत शामिल करते हैं। दुर्भाग्य से इस समय कई परिस्थितियाँ मुझे उन विद्वानों के मामलों में व्यस्त होने से रोकती हैं जो प्रेरणा नहीं हैं। इसलिए मैं आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता जैसा आपने पूछा है। जब बात मेरे दिल की आती है तो मुझे प्रेरणा में व्यस्त रहना पड़ता है, मैं इसमें व्यस्त रहने के लिए बाध्य हूँ। मैं कुछ प्रश्नों का उत्तर इसलिए देता हूँ क्योंकि वे प्रेरणाओं से मेल खाते हैं, इसलिए नाराज़ न हों। मैं सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता जैसा कि वे योग्य हैं। लेकिन इस बार मैं आपके प्रश्न का संक्षेप में उत्तर देता हूँ।

इस बार आप अपने प्रश्न में पूछते हैं: "होजा कहते हैं कि पृथ्वी एक बैल और एक मछली पर टिकी हुई है, लेकिन भूगोल इसे अंतरिक्ष में लटकी हुई और एक तारे की तरह यात्रा करती हुई देखता है। न तो कोई बैल है और न ही मछली?"

उत्तर: इब्न अब्बास (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) जैसे लोगों से जुड़ी एक अच्छी रिवायत है जिसमें कहा गया है कि महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) से पूछा गया: "दुनिया किस पर टिकी हुई है?" उन्होंने उत्तर दिया: "बैल और मछली पर।"1 एक रिवायत में,

---

[1] देखें, हकीम, अल-मुस्तद्रक, iv, 636; अल-मुंधिरी, अल-तारघिब वाल-तारिब, iv, 257; अल-हयथामी, मजमू अल-ज़वायद, आठवीं, 131; इब्न अल-जौज़ी, अल-मुंतज़म, आई, 172।

उन्होंने कहा, "बैल पर" और एक अन्य अवसर पर उन्होंने कहा, "मछली पर।" कुछ हदीस विद्वानों ने इस हदीस को इस्राइलियत से लिए गए अंधविश्वासों और कहानियों पर लागू किया, जो शुरुआती समय से संबंधित हैं। इस्राइल के बच्चों के विद्वान जो मुसलमान बन गए, उन्होंने इसे विशेष रूप से बैल और मछली के बारे में कहानियों पर लागू किया जो उन्होंने पूर्व शास्त्रों में देखी थीं, इसे बदलकर कुछ अजीब अर्थ दिया। अभी मैं आपके प्रश्न के संबंध में तीन 'सिद्धांतों' और तीन 'पहलुओं' को समझाऊंगा।

पहला सिद्धांत

जब कुछ इस्राइली विद्वान मुसलमान बन गए, तो उनका पुराना ज्ञान भी उनके साथ मुसलमान हो गया और उसे इस्लाम का हिस्सा मान लिया गया। हालाँकि, जो कुछ वे जानते थे, उसमें कुछ गलतियाँ थीं जो निश्चित रूप से उनकी गलतियाँ थीं, इस्लाम की नहीं।

दूसरा सिद्धांत

तुलनाओं और रूपकों के बारे में जो अभिजात वर्ग से आम लोगों तक पहुँचते हैं, यानी ज्ञान के हाथों से निकलकर अज्ञानी लोगों के हाथों में चले जाते हैं, समय बीतने के साथ उन्हें अक्षरशः सत्य मान लिया जाता है। उदाहरण के लिए, जब मैं बच्चा था, तब चंद्रग्रहण हुआ था। मैंने अपनी माँ से पूछा: “चंद्रमा ऐसा क्यों हो गया है?” उन्होंने जवाब दिया: “एक साँप ने इसे निगल लिया है।” “यह अभी भी देखा जा सकता है,” मैंने कहा। उन्होंने जवाब दिया: “वहाँ ऊपर साँप कांच की तरह हैं; वे अपने अंदर की चीज़ों को दिखाते हैं!”

बचपन की यह याद मुझे बहुत दिनों तक याद रही। इस पर विचार करते हुए मैं कहता था: “मेरी माँ जैसे गंभीर लोग इस तरह के झूठे अंधविश्वास को कैसे दोहरा सकते हैं?” फिर जब मैंने खगोल विज्ञान का अध्ययन किया तो मुझे एहसास हुआ कि उसके जैसे लोग इसे दोहराते हुए एक रूपक को वास्तविकता मानते हैं। क्योंकि जब राशि चक्र नामक विशाल वृत्त, जो सूर्य के अंशों को दर्शाता है, और चंद्रमा के झुकाव का वृत्त, जो उसके महलों को दर्शाता है, एक दूसरे के ऊपर से गुजरते हैं, तो यह दोनों वृत्तों में से प्रत्येक को एक चाप का रूप देता है। एक सूक्ष्म रूपक का उपयोग करते हुए खगोलविदों ने दो चापों को “दो महान सर्प” कहा। उन्होंने दो वृत्तों के प्रतिच्छेद बिंदुओं को “सिर” और “पूंछ” कहा। जब चंद्रमा सिर पर और सूर्य पूंछ पर आता है, तो खगोल विज्ञान की शब्दावली में, पृथ्वी का एक अंतर्संबंध होता है। यानी, पृथ्वी का गोला उन दोनों के ठीक बीच से गुजरता है और चंद्रमा ग्रहणग्रस्त हो जाता है।

उपर्युक्त रूपक के अनुसार, "चन्द्रमा सर्प के मुख में प्रवेश कर गया है।" इस प्रकार, जब यह उच्च और विद्वत्तापूर्ण रूपक जनसाधारण की भाषा में आया, तो कालान्तर में इसने एक विशाल सर्प का रूप धारण कर लिया, जो चन्द्रमा को निगल रहा था।

चंद्रमा।

इस प्रकार, एक पवित्र और सूक्ष्म रूपक और सार्थक संकेत के साथ, दो महान स्वर्गदूतों को बैल (T. Sevr; Ar. Thawr) और मछली (T. Hut; A. Hut) कहा गया, लेकिन प्रवेश करने पर

पैगंबरी की ऊंची भाषा से आम भाषा में, रूपक को रूपांतरित किया गया और उसे शाब्दिक अर्थ दिया गया, और उन्होंने वास्तव में एक विशाल बैल और भयानक मछली का रूप ले लिया।

तीसरा सिद्धांत

जिस तरह कुरान में रूपक और तुलनाएं हैं और उनके ज़रिए आम लोगों को गहरी बातें सिखाई जाती हैं, उसी तरह हदीसों में भी तुलनाएं और रूपक हैं; वे जानी-पहचानी तुलनाओं के ज़रिए गहरी सच्चाईयां बयान करती हैं। उदाहरण के लिए, जैसा कि हमने दो जगहों पर बताया है, एक बार पैगम्बर (यू.डब्लू.बी.पी.) की मौजूदगी में एक गहरी गड़गड़ाहट सुनाई दी। उन्होंने कहा: "यह एक चट्टान की आवाज़ है जो सत्तर सालों से नीचे की ओर लुढ़क रही है और अब जहन्नुम की तह में जा गिरी है।"2 कुछ मिनट बाद कोई आया और उसने बताया कि एक मशहूर सत्तर वर्षीय ढोंगी की मृत्यु हो गई है, इस तरह उसने महान रसूल (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) की बेहद शानदार तुलना का सही मतलब बताया।

फिलहाल, आपके प्रश्न के उत्तर में तीन 'पहलुओं' को समझाया जाएगा:

पहला: सर्वशक्तिमान ईश्वर ने चार स्वर्गदूतों को नियुक्त किया - जिन्हें ईगल (नस्र) कहा जाता है - एक्विला) और बैल (थॉर - वृषभ)3 - दिव्य सिंहासन और स्वर्ग के वाहक के रूप में, उनकी प्रमुख संप्रभुता की निगरानी करने के लिए। उन्होंने पृथ्वी के पर्यवेक्षक और वाहक के रूप में दो स्वर्गदूतों को भी नियुक्त किया, जो स्वर्ग का छोटा भाई और ग्रहों का साथी है। उनमें से एक को बैल और दूसरे को मछली कहा जाता था।

इन नामों को देने का कारण यह है:

पृथ्वी के दो भाग हैं, एक जल और दूसरा भूमि। मछलियाँ जल वाले भाग में निवास करती हैं, जबकि कृषि, जो मानव जीवन का आधार है, बैलों और बैलों द्वारा की जाती है, जो पृथ्वी के भूमि वाले भाग में निवास करते हैं; कृषि बैलों के कंधों पर टिकी हुई है। चूँकि पृथ्वी पर नियुक्त दो स्वर्गदूत कमांडर और पर्यवेक्षक दोनों हैं, इसलिए निश्चित रूप से उनका गोजातीय और मछली प्रजातियों के साथ किसी प्रकार का संबंध है। वास्तव में, "और ज्ञान ईश्वर के पास है," स्वर्गदूतों को चीजों के आंतरिक आयामों और समानताओं की दुनिया में एक बैल और एक मछली के रूप में दर्शाया गया है।4 इस प्रकार, उनके संबंध और पर्यवेक्षण और उन लोगों की ओर इशारा करते हुए

---

[2] देखें, मुस्लिम, स्वर्ग, 12; मुसनद, iii, 315, 341, 346।

[3] बहाक़ी, शुआब अल-ईमान, 433; ढाहाबी, मिज़ान अल-इतिदाल, iv, 352; अल-सुयुति, अल-दुर्र अल-मंथूर, आई, 329।

[4] पृथ्वी का गोला अंतरिक्ष के महासागरों में चलने वाला एक प्रमुख जहाज है, और एक हदीस के अनुसार, यह परलोक की खेती है, यानी एक कृषि योग्य खेत और नर्सरी। तो, उस विशाल बेजान और बेहोश जहाज को नियंत्रित करने वाले और नियमित, उद्देश्यपूर्ण तरीके से ईश्वरीय आदेश पर उसे उन समुद्रों में तैराने वाले देवदूत के लिए मछली का नाम कितना उपयुक्त है, और उस देवदूत के लिए बैल का नाम कितना उपयुक्त है जो ईश्वरीय अनुमति से उस कृषि योग्य खेत की देखरेख करता है।

पृथ्वी की दो महत्वपूर्ण प्रजातियों के बारे में, अपनी चमत्कारिक अभिव्यक्ति के साथ पैगंबर (UWBP) ने कहा: "पृथ्वी बैल और मछली पर है," इस प्रकार एक सुंदर, संक्षिप्त वाक्य में गहन सत्य का एक पृष्ठ बताया।

दूसरा पहलू : यदि यह कहा जाए कि सरकार और उसका शासन किस पर टिका है? तो उत्तर में कहा जाएगा कि तलवार और कलम पर। अर्थात् यह सैनिक की तलवार की वीरता और अधिकारी की कलम की सूझ-बूझ और न्याय पर टिका है। इसी प्रकार, चूंकि पृथ्वी सजीव प्राणियों का निवास स्थान है और सजीव प्राणियों का सेनापति मनुष्य है, तथा समुद्र के किनारे रहने वाले अधिकांश मनुष्यों की जीविका का साधन मछलियाँ हैं, तथा समुद्र के किनारे न रहने वाले अधिकांश लोग कृषि द्वारा अपना जीवन यापन करते हैं, जो बैलों और सांडों के कंधों पर टिकी है, तथा मछली भी व्यापार का एक महत्वपूर्ण साधन है, जिस प्रकार राज्य तलवार और कलम पर टिका है, उसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि पृथ्वी बैल और मछली पर टिकी है। क्योंकि यदि बैल काम न करें या मछलियाँ लाखों अंडे न दें, तो मनुष्य जीवित नहीं रह सकता; जीवन समाप्त हो जाएगा और सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता पृथ्वी को नष्ट कर देगा।

इस प्रकार, अत्यंत चमत्कारी, उच्च और बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से उत्तर देते हुए, ईश्वर के महान दूत (UWBP) ने कहा: "पृथ्वी बैल और मछली पर टिकी हुई है।" उन्होंने दो शब्दों में एक व्यापक सत्य सिखाया और दिखाया कि मनुष्य का जीवन पशु प्रजातियों के जीवन से कितनी निकटता से जुड़ा हुआ है।

तीसरा पहलू: प्राचीन ब्रह्मांड विज्ञान के अनुसार सूर्य यात्रा करता था और इसकी यात्रा के हर तीस डिग्री पर एक नक्षत्र निर्धारित होता था। यदि नक्षत्रों में तारों को एक दूसरे से जोड़ने वाली काल्पनिक रेखाएँ खींची जाएँ, तो कुछ शेर का आकार लेते हैं, कुछ तराजू का आकार लेते हैं, कुछ बैल का आकार लेते हैं और कुछ मछली का आकार लेते हैं। उन संबंधों के परिणामस्वरूप नक्षत्रों को नाम दिए गए। लेकिन इस युग के खगोल विज्ञान के अनुसार, सूर्य यात्रा नहीं करता। नक्षत्र निष्क्रिय और बिना काम के रहते हैं, क्योंकि पृथ्वी सूर्य के बजाय यात्रा करती है।

वे पृथ्वी की वार्षिक कक्षा के भीतर जमीन पर छोटे पैमाने पर आकार लेते हैं, ऊपर के उन ऊँचे निष्क्रिय नक्षत्रों के बजाय। इस प्रकार, स्वर्गीय नक्षत्र पृथ्वी की वार्षिक कक्षा से बाहर दर्शाए जाते हैं, और प्रत्येक महीने पृथ्वी किसी एक नक्षत्र की छाया और समानता में होती है। ऐसा लगता है जैसे वे पृथ्वी की दर्पण जैसी वार्षिक कक्षा में दर्शाए गए हैं।

इस कारण से, जैसा कि हमने ऊपर उल्लेख किया है, एक अवसर पर महान दूत (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने कहा: "बैल पर," और दूसरे पर उन्होंने कहा: "मछली पर।" हाँ, उन्होंने वास्तव में एक गहन सत्य का संकेत दिया जिसे कई शताब्दियों बाद ही समझा जा सकेगा, और चमत्कारी भविष्यवाणी भाषा में कहा: "बैल पर," क्योंकि उस समय पृथ्वी वृषभ राशि के समान थी। और एक महीने बाद पूछे जाने पर, उन्होंने उत्तर दिया: "मछली पर," क्योंकि तब पृथ्वी मीन राशि के नक्षत्र की छाया में थी।

हाँ, उन्होंने कहा: "बैल और मछली पर" और एक उच्च सत्य की ओर संकेत किया जिसे भविष्य में समझा जाएगा, और पृथ्वी के गति और यात्रा के कर्तव्य की ओर संकेत किया, और स्वर्गीय नक्षत्रों के सूर्य के संबंध में निष्क्रिय और अतिथिविहीन होने की ओर संकेत किया, और कहा कि जो नक्षत्र वास्तव में कार्य करते हैं वे पृथ्वी की वार्षिक कक्षा में हैं और यह पृथ्वी ही है जो नक्षत्रों में यात्रा करती है और कर्तव्यों का पालन करती है।

और परमेश्वर ही सबसे अच्छा जानता है कि क्या सही है।

कुछ इस्लामी पुस्तकों में असाधारण और अनुचित कहानियाँ या तो इस्राइलियत हैं, या वे रूपक हैं, या वे हदीस विद्वानों की व्याख्याएँ हैं, जिन्हें लापरवाह लोगों ने हदीस मान लिया है और उन्हें ईश्वर के महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) से जोड़ दिया है।

ऐ हमारे पालनहार! यदि हम भूल जाएँ या बुरा काम करें तो हमें न सज़ा दे । (2:282)

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

दूसरा प्रश्न क्लोक के लोगों के बारे में है।

मेरे भाई! क्लोक के लोगों के बारे में आपके प्रश्न के संबंध में, केवल एक ही
इसके विषय में ज्ञान के अनेक उदाहरणों को इस प्रकार समझाया जाएगा:
ईश्वर के महान् दूत में अनेक रहस्य और बुद्धिमत्ता के उदाहरण पाए जाते हैं
(उन पर आशीर्वाद और शांति हो) अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) और फातिमा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) और हसन और हुसैन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को अपने पहने हुए धन्य लबादे से ढकना, और उनके लिए आयत के साथ प्रार्थना करना,

[और अल्लाह तो बस यही चाहता है] कि ऐ घरवालो, तुमसे सारी घिनौनी चीज़ें दूर कर दे और तुम्हें पाक-साफ़ और बेदाग़ बना दे। (33:33)[5]

मैं रहस्यों पर चर्चा नहीं करूंगा, लेकिन संदेशवाहक के कार्य से जुड़ी बुद्धिमत्ता का एक उदाहरण यह है:

ईश्वर के महान दूत (यूडब्ल्यूबीपी) ने नबी की नज़र से, जो अदृश्य को भेद सकता था और भविष्य को देख सकता था, देखा कि तीस या चालीस साल बाद साथियों और उनके बाद आने वाली पीढ़ी के बीच गंभीर संघर्ष शुरू हो जाएगा, और खून बहेगा। उन्होंने देखा कि उनके लबादे के नीचे तीन लोग सबसे प्रतिष्ठित होंगे

[5] इस कथन में प्रसारण की विभिन्न पंक्तियाँ हैं, देखें, मुस्लिम, फ़दाएल अल-सहाबा, 61; तिर्मिधि, मनाकिब, 60; मुसनद, आई, 330; चतुर्थ, 107; vi, 292, 296, 298, 304; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, द्वितीय, 416; iii, 147; अल-हयथामी, मजमा अल-ज़वायद, ix, 166, 169; अल-सुयुति, अल-दुर्र अल-मंथूर, वी, 197; कंधलवी, हयात अल-सहाबा, iv, 105।

इस प्रकार वह इस्लामी समुदाय के सामने अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को दोषमुक्त और दोषमुक्त करना चाहता था; हुसैन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को सांत्वना देना और संवेदना व्यक्त करना; हसन को बधाई देना और यह घोषणा करना कि सुलह के माध्यम से गंभीर मतभेद को दूर करके उसे जो सम्मान मिलेगा, वह इस्लामी समुदाय के लिए उसका सर्वोच्च मूल्य होगा; और यह दिखाना कि फातिमा के वंशज शुद्ध और सम्मानित होंगे।

निश्चित रूप से अली ही असली खलीफा थे, लेकिन चूंकि जो खून बहाया जाना था, उसका बहुत महत्व था और चूंकि समुदाय के दृष्टिकोण से उनका दोषमुक्त होना और दोषमुक्त होना संदेशवाहक के कार्य के कारण महत्वपूर्ण था, इसलिए नोबल मैसेंजर (यूडब्ल्यूबीपी) ने इस तरह से उन्हें दोषमुक्त कर दिया। उन्होंने खारिजाइट्स और उमय्यद के आक्रामक समर्थकों को चुप रहने के लिए आमंत्रित किया, क्योंकि उन्होंने उनकी आलोचना की और उन पर गलती और गुमराह होने का आरोप लगाया। हां, खारिजाइट्स और उमय्यद के चरम समर्थकों द्वारा अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के खिलाफ किए गए अत्याचार और उनके द्वारा गुमराह करने के आरोप, और हुसैन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के समय में वास्तव में दुखद, परेशान करने वाली घटनाएं, साथ ही शिया की ज्यादतियां और नवाचार और दो शेखों को दोषमुक्त करना, ये सभी इस्लाम के लोगों के लिए सबसे ज्यादा नुकसानदेह रहे हैं।

इस प्रकार, अपने लबादे और प्रार्थना के साथ, महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने हुसैन को जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया, और उन्हें इस्लामी समुदाय के आरोपों और बुरी राय से मुक्त कर दिया। इसी तरह उन्होंने हसन को भी समुदाय के लिए सुलह करके जो अच्छा काम करना था, उसके लिए बधाई दी। और उन्होंने घोषणा की कि पैगंबर के परिवार के रूप में जाने जाने के कारण, फातिमा की धन्य संतान को मरियम की मां की तरह बहुत सम्मान दिया जाएगा,7 जिन्होंने कहा:

> मैं उसे और उसकी संतान को उस शैतान, अस्वीकार किए गए से तुम्हारी सुरक्षा में भेजता हूँ। (3:36)
>
> हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद, उनके धार्मिक, पवित्र और धर्मपरायण परिवार, तथा उनके साथियों, ईश्वर के मार्ग में महान और चुनिंदा प्रयत्नशील लोगों को आशीर्वाद प्रदान कर। आमीन।

---

[6] देखें, मुस्लिम, फ़दाएल अल-सहाबा, 61; इब्न अबी शायबा, अल-मुसन्नफ़, vi, 370।

[7] उसे हन्ना बिन्त फ़कुज़ कहा जाता था; देखें, अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, ii, 648, 651; अल-तबारी, जामी अल-सूचना, iii, 235, 237, 241, 244, 294।

दूसरा स्टेशन

इसमें हजारों रहस्यों में से छह शामिल हैं
“ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है”

नोट: ईश्वरीय दया के बारे में "ईश्वर के नाम पर, दयालु, दयालु" से एक उज्ज्वल प्रकाश दूर से मेरे सुस्त दिमाग में दिखाई दिया। मैं इसे नोट्स के रूप में अपने लिए रिकॉर्ड करना चाहता था, इसे खोजकर इसे कैप्चर करना चाहता था, और बीस से तीस रहस्यों के साथ प्रकाश को घेरना चाहता था। लेकिन दुर्भाग्य से मैं वर्तमान समय में ऐसा करने में सक्षम नहीं था और बीस या तीस रहस्य घटकर पाँच या छह रह गए। जब मैं कहता हूँ: "हे मनुष्य!", मेरा मतलब खुद से है। हालाँकि यह पाठ विशेष रूप से मेरी अपनी आत्मा को संबोधित करता है, मैं इसे अपने सावधान भाइयों की स्वीकृति के लिए चौदहवें फ्लैश के दूसरे स्टेशन के रूप में संदर्भित करता हूँ, इस उम्मीद में कि यह उन लोगों को लाभान्वित कर सकता है जिनके साथ मैं आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हुआ हूँ और जिनकी आत्माएँ मुझसे ज़्यादा समझदार हैं। यह पाठ तर्क से ज़्यादा दिल को देखता है, और तर्कसंगत प्रमाणों के बजाय आध्यात्मिक आनंद और धारणा को देखता है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
[रानी] ने कहा: "हे सरदारो! यह मेरे लिए सम्मान के योग्य पत्र है। यह सुलैमान की ओर से है, और [इस प्रकार है]: दयालु, कृपालु ईश्वर के नाम से।" (27:29-30)

इस स्टेशन में कई रहस्यों का उल्लेख किया जाएगा।

पहला रहस्य

मैंने "ईश्वर के नाम पर, दयालु,
दयालु” इस प्रकार है:

ब्रह्माण्ड के चेहरे पर, पृथ्वी के चेहरे पर, और मनुष्य के चेहरे पर तीन
एक के अंदर एक प्रभुत्व के टिकट और प्रत्येक दूसरे के नमूने दिखा रहा है।

पहला ईश्वरत्व की महान मुहर है, जो ब्रह्मांड की समग्रता में प्राणियों की आपसी सहायता, सहयोग, एक दूसरे को गले लगाने और एक दूसरे के साथ मेलजोल के माध्यम से प्रकट होती है। यह "ईश्वर के नाम पर" की ओर देखता है।

दूसरा ईश्वरीय दयालुता की महान छाप है, जो पौधों के निपटान, पालन और प्रशासन में पारस्परिक समानता और अनुपात, व्यवस्था, सामंजस्य, अनुग्रह और करुणा के माध्यम से प्रकट होती है।

और पृथ्वी के चेहरे पर जानवर। यह “ईश्वर के नाम पर, दयालु” की तरह दिखता है।

तब ईश्वरीय करुणा की उच्च छाप होती है, जो ईश्वरीय उपकार की सूक्ष्मताओं, ईश्वरीय क्षमाशीलता के सूक्ष्म बिंदुओं और मनुष्य के व्यापक स्वभाव के चेहरे पर ईश्वरीय करुणा की किरणों के माध्यम से प्रकट होती है। यह "ईश्वर के नाम पर, दयालु, दयालु" में "दयावान" की ओर देखता है।

अर्थात्, "ईश्वर के नाम पर, दयालु, करुणामय" ईश्वरीय एकता के तीन मोहरों का पवित्र शीर्षक है, जो दुनिया के पृष्ठ पर एक चमकदार रेखा, एक मजबूत डोरी और चमकदार तंतु बनाते हैं। अर्थात्, ऊपर से प्रकट होकर, "ईश्वर के नाम पर, दयालु, करुणामय" की नोक मनुष्य पर टिकी हुई है, जो ब्रह्मांड का फल और दुनिया की छोटी प्रति है; यह निचली दुनिया को ईश्वरीय सिंहासन से बांधता है; यह मनुष्य के लिए मानव सिंहासन पर चढ़ने का एक तरीका है।

दूसरा रहस्य

ईश्वरीय एकता, जो कि जीवों की असीम बहुलता में स्पष्ट है, से मन को अभिभूत न करने के लिए, चमत्कारिक व्याख्या का कुरान लगातार ईश्वरीय एकता के भीतर ईश्वरीय एकता की अभिव्यक्ति की ओर इशारा करता है। उदाहरण के लिए, सूर्य अपने प्रकाश से असंख्य वस्तुओं को घेर लेता है। सूर्य को उसके प्रकाश की समग्रता में देखने के लिए वास्तव में व्यापक वैचारिक क्षमता और व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

इसलिए, ताकि सूर्य को भुलाया न जा सके, यह हर चमकती हुई वस्तु में अपने प्रतिबिंब के माध्यम से प्रदर्शित होता है। और अपनी क्षमताओं के अनुसार, सभी चमकदार वस्तुएं सूर्य के गुणों को प्रतिबिंबित करती हैं, जैसे कि उसका प्रकाश और गर्मी और उसके प्रकाश में सात रंग, साथ ही उसके सार की अभिव्यक्ति। इसी तरह, सूर्य के गुण उसके सामने की सभी चीजों को शामिल करते हैं।

ठीक उसी तरह, "और सबसे बड़ी समानता ईश्वर की है" (16:60) - लेकिन तुलना में कोई गलती न हो - जिस तरह ईश्वरीय एकता और शाश्वत प्रार्थना सभी ईश्वरीय नामों के साथ हर चीज़ में, खास तौर पर सजीव प्राणियों में और खास तौर पर मनुष्य के दर्पण जैसे सार में प्रकट होती है; उसी तरह ईश्वरीय एकता के ज़रिए प्राणियों से जुड़े हर ईश्वरीय नाम में सभी चीज़ें समाहित हैं। इस तरह, ताकि दिमाग ईश्वरीय एकता से अभिभूत न हो जाए और दिल सबसे शुद्ध और पवित्र सार को भूल न जाए, कुरान लगातार ईश्वरीय एकता के भीतर ईश्वरीय एकता की मुहर की ओर ध्यान आकर्षित करता है। और वह मुहर, अपने तीन मुख्य बिंदुओं के साथ, "ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, दयावान है।"

तीसरा रहस्य

इस असीम ब्रह्माण्ड को आनन्दित करने वाली बात स्पष्टतः ईश्वरीय दया है।

जो इन अंधकारमय प्राणियों को प्रकाशित करता है, वह स्वयं-स्पष्ट रूप से ईश्वरीय दया है। जो अपनी अंतहीन आवश्यकताओं से जूझ रहे प्राणियों को पालता और बड़ा करता है, वह स्वयं-स्पष्ट रूप से ईश्वरीय दया है। जो पूरे ब्रह्मांड को मनुष्य की ओर मोड़ देता है, जैसे एक पेड़ अपने सभी भागों के साथ अपने फल की ओर मुड़ जाता है, और उसे उसकी ओर देखने और उसकी सहायता के लिए दौड़ने के लिए प्रेरित करता है, वह स्पष्ट रूप से ईश्वरीय दया है। जो असीम अंतरिक्ष और खाली, रिक्त दुनिया को भरता और प्रकाशित करता है और उसे आनंदित करता है, वह स्वयं-स्पष्ट रूप से ईश्वरीय दया है। और जो क्षणभंगुर मनुष्य को अनंत काल के लिए नामित करता है और उसे पूर्व-शाश्वत और उत्तर-शाश्वत एक का संबोधित और प्रिय बनाता है, वह स्वयं-स्पष्ट रूप से ईश्वरीय दया है।

हे मनुष्य! चूँकि ईश्वरीय दया इतनी शक्तिशाली, आमंत्रित करने वाली, मधुर, सहायक और प्रेमपूर्ण सत्य है, इसलिए कहो: "ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, करुणामय है," इस सत्य पर अडिग रहो और पूर्ण वीरानी तथा अनंत आवश्यकताओं की पीड़ा से बचो! पूर्व-शाश्वत और पर-शाश्वत सम्राट के सिंहासन के निकट जाओ, और ईश्वरीय दया की करुणामयी किरणों का लाभ उठाते हुए, उनके अभिभाषक, मित्र और प्रिय बनो।

ब्रह्माण्ड में प्राणियों के सभी क्षेत्र जानबूझकर मनुष्य के चारों ओर एकत्रित हैं और उसकी सभी आवश्यकताओं को अत्यंत व्यवस्थित और बुद्धिमानी से पूरा करने के लिए तत्पर हैं, जो स्पष्ट रूप से दो स्थितियों में से एक से उत्पन्न होता है। या तो प्राणियों का प्रत्येक क्षेत्र मनुष्य को जानता है, उसकी आज्ञा का पालन करता है, और उसकी सहायता के लिए दौड़ता है, जो कि पूरी तरह से तर्कहीन होने के साथ-साथ कई मामलों में असंभव भी है; या मनुष्य जैसे बिल्कुल नपुंसक प्राणी को सबसे शक्तिशाली परम प्रभु की शक्ति प्राप्त करनी पड़ती है; या यह सहायता ब्रह्माण्ड के पर्दे के पीछे एक परम शक्तिशाली के ज्ञान के माध्यम से होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा नहीं है कि ब्रह्माण्ड में विभिन्न प्राणी मनुष्य को जानते हैं, बल्कि यह है कि वे एक जानने वाले, दयालु परमेश्वर के प्रमाण हैं जो उससे परिचित है और उसे जानता है।

हे मनुष्य! होश में आओ! क्या यह संभव है कि वह सर्वशक्तिमान, जो सभी प्रकार के प्राणियों को तुम्हारी ओर आकर्षित करता है और तुम्हारी सहायता के लिए अपने हाथ बढ़ाता है, और तुम्हारी आवश्यकताओं के सामने कहता है: "हम यहाँ हैं!" - क्या यह संभव है कि वह तुम्हें नहीं जानता, तुमसे परिचित नहीं है, तुम्हें नहीं देखता है? चूँकि वह तुम्हें जानता है, इसलिए वह तुम्हें सूचित करता है कि वह अपनी दया के माध्यम से तुम्हें जानता है। इसलिए तुम्हें भी उसे जानना चाहिए, और सम्मान के साथ उसे बताना चाहिए कि तुम उसे जानते हो, और निश्चित रूप से समझो कि जो विशाल ब्रह्मांड को तुम्हारे जैसे बिल्कुल कमजोर, बिल्कुल नपुंसक, बिल्कुल जरूरतमंद, क्षणभंगुर, तुच्छ प्राणी के अधीन करता है, और उसे तुम्हारी सहायता के लिए भेजता है, वह ईश्वरीय दया का सत्य है, जिसमें बुद्धि, अनुग्रह, ज्ञान और शक्ति शामिल है।

बेशक, इस तरह की दया के लिए सार्वभौमिक और सच्चे धन्यवाद, और ईमानदार और वास्तविक सम्मान की आवश्यकता होती है। इसलिए, कहो: "ईश्वर के नाम पर, दयालु, दयालु," जो व्याख्या और अभिव्यक्ति है

इस तरह के सच्चे आभार और सच्चे सम्मान के लिए इसे दया पाने का साधन बनाओ और दयालु ईश्वर के दरबार में सिफ़ारिश करने वाला बनाओ।

ईश्वरीय दया का अस्तित्व और वास्तविकता सूर्य की तरह स्पष्ट है। क्योंकि जिस तरह एक बिंदु पर केन्द्रित बुनी हुई पट्टी सभी दिशाओं से आने वाले उसके ताने-बाने के धागों के क्रम और स्थिति से बनती है, उसी तरह ब्रह्मांड के विशाल क्षेत्र में एक हजार एक दिव्य नामों के प्रकटीकरण से फैले हुए प्रकाशमान धागे दया की मुहर के भीतर करुणा की ऐसी मुहर, क्षमा की ऐसी तासीर और परोपकार की ऐसी मुहर बुनते हैं कि वह सूर्य से भी अधिक चमकीली ढंग से मन के सामने खुद को प्रदर्शित करती है।

वह सुन्दर, दयालु परमेश्वर, जो सूर्य और चन्द्रमा, तत्वों और खनिजों, तथा पौधों और पशुओं को अपने हजार एक नामों की किरणों के माध्यम से एक विशाल बुने हुए चित्रपट के ताने-बाने के समान आदेश देता है, तथा उन्हें जीवन की सेवा करने के लिए प्रेरित करता है; तथा माताओं, पौधों और पशुओं की अत्यंत मधुर और आत्म-त्यागी करुणा के माध्यम से अपनी करुणा प्रदर्शित करता है; तथा सजीव प्राणियों को मानव जीवन के अधीन करता है, तथा इससे मनुष्य के महत्व और ईश्वरीय प्रभुत्व की एक अत्यंत मनोहर विशाल चित्रपट को प्रदर्शित करता है, तथा अपनी तेजस्वी दया को प्रकट करता है; - उस परम दयालु परमेश्वर ने, अपनी स्वयं की पूर्ण अभाव की स्थिति में, अपनी दया को सजीव प्राणियों और मनुष्य के लिए एक स्वीकार्य मध्यस्थ बनाया है।

हे मनुष्य! यदि तुम वास्तव में मनुष्य हो, तो कहो: "ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, दयावान है।" उस मध्यस्थ को खोजो! निश्चय ही, यह स्पष्ट रूप से, स्वयंसिद्ध रूप से, ईश्वरीय दया है जो बिना किसी को भूले या भ्रमित किए, पृथ्वी पर असंख्य वनस्पतियों और जानवरों की प्रजातियों को ठीक समय पर और पूर्ण व्यवस्था, बुद्धि और परोपकार के साथ पालती, पालती और संचालित करती है, और पृथ्वी के चेहरे पर ईश्वरीय एकता की मुहर लगाती है। ईश्वरीय दया का अस्तित्व पृथ्वी के चेहरे पर प्राणियों के अस्तित्व जितना ही निश्चित है, इसलिए प्राणी अपने-अपने लोगों के लिए इसकी वास्तविकता के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

जिस तरह धरती के चेहरे पर दया की मुहर और ईश्वरीय एकता की मुहर है, उसी तरह मनुष्य के स्वभाव पर भी ईश्वरीय दया की मुहर है जो ब्रह्मांड के चेहरे पर करुणा की मुहर और दया की विशाल मुहर से कम नहीं है। सीधे शब्दों में कहें तो मनुष्य का स्वभाव इतना व्यापक है कि वह मानो हज़ारों ईश्वरीय नामों का केंद्रबिंदु है।

हे मनुष्य! क्या यह संभव है कि जो तुझे यह रूप प्रदान करता है, और उस पर दया की ऐसी मोहर और एकता की ऐसी मुहर लगाता है, वह तुझे अपने हाल पर छोड़ दे, तुझे महत्व न दे, तेरे कामों पर ध्यान न दे, तेरे प्रति समर्पित समस्त ब्रह्माण्ड को व्यर्थ और निरर्थक बना दे, और सृष्टि के वृक्ष को सड़े हुए फलों से सड़ा और तुच्छ बना दे? क्या वह अपनी दया को अस्वीकार कर देगा, यद्यपि वह दया के समान ही है?

सूर्य की तरह स्पष्ट, साथ ही साथ उनकी बुद्धि, जो दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है, और जिनमें से किसी पर भी किसी भी तरह से संदेह नहीं किया जा सकता है, और न ही किसी भी तरह से कमी है? भगवान न करे!

हे मनुष्य! समझ ले कि ईश्वरीय दया के सिंहासन पर चढ़ने का एक रास्ता है, और वह है, "अल्लाह के नाम से, जो दयालु, कृपालु है।" यदि आप इस चढ़ाई के महत्व को समझना चाहते हैं, तो चमत्कारिक व्याख्या के कुरान के एक सौ चौदह सूराओं की शुरुआत और सभी मूल्यवान पुस्तकों की शुरुआत और सभी अच्छे कार्यों की शुरुआत को देखें। "अल्लाह के नाम से" की ईश्वर-निर्धारित भव्यता का एक स्पष्ट प्रमाण यह है कि इमाम शाफ़ई (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो), जो सबसे प्रमुख इस्लामी विद्वानों में से एक हैं, ने कहा: "अल्लाह के नाम से, जो दयालु, कृपालु है, केवल एक आयत है, फिर भी यह कुरान में एक सौ चौदह बार अवतरित हुई है।"

चौथा रहस्य

असीम बहुलता के भीतर दिव्य एकता की अभिव्यक्ति के सामने, यह घोषणा करना: "केवल आपकी ही हम आराधना करते हैं" (1:5) सभी के लिए पर्याप्त नहीं है; मन भटकता है। प्राणियों की समग्रता में एकता के पीछे एकमात्र को देखने के लिए, और यह कहने के लिए कि: "केवल आपकी ही हम आराधना करते हैं, और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं!" (1:5) किसी का हृदय पृथ्वी जितना ही विशाल होना चाहिए। परिणामस्वरूप, ताकि सभी प्रजातियों और प्राणियों के क्षेत्रों पर दिव्य एकता की मुहर स्पष्ट हो सके, जैसा कि यह व्यक्तिगत वस्तुओं पर स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, और ताकि वे एकमात्र को याद करें, यह दिव्य दया की मुहर के भीतर दिखाई देती है। इस प्रकार हर स्तर पर हर कोई परम शुद्ध और पवित्र की ओर मुड़ सकता है, और कह सकता है: "केवल आपकी ही हम आराधना करते हैं, और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं," सीधे उनसे संपर्क करें।

इस महान रहस्य को व्यक्त करने और ईश्वरीय एकता की मुहर को स्पष्ट रूप से इंगित करने के लिए ही सर्वज्ञ कुरान ने ब्रह्मांड के सबसे विशाल क्षेत्र का वर्णन करते समय अचानक सबसे छोटे क्षेत्र और सबसे खास पदार्थ का उल्लेख किया है, उदाहरण के लिए, आकाश और पृथ्वी का निर्माण। यानी, ताकि मन भटक न जाए, न ही दिल डूब जाए, और आत्मा सीधे अपनी सच्ची पूजा की वस्तु को पा सके, आकाश और पृथ्वी के निर्माण का उल्लेख करते हुए यह मनुष्य की रचना और आवाज़, और उसके व्यक्तित्व में मौजूद कृपा और ज्ञान के सूक्ष्म विवरणों की चर्चा शुरू करता है, उदाहरण के लिए। इस सत्य को इस आयत द्वारा चमत्कारी तरीके से प्रदर्शित किया गया है,

[1] देखें, अल-शफ़ीई, अल-उम्म, आई, 208; अल-जस्सास, अहकाम अल-कुरान, i, 8; अल-ग़ज़ाली, अल-मुस्तफ़ा, मैं, 82; इब्न अल-जावज़ी, अल-तहक़ीक़ फ़ि अहादीस अल-ख़िलाफ़, i, 345-7; अल-ज़ायलाई, नस्ब अल-राय, आई, 327।

और उसकी निशानियों में से है आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विभेदन। (30:22)

असंख्य प्राणियों और अनंत बहुलता के भीतर, सबसे बड़े मोहरे से लेकर सबसे छोटे मोहरे तक कई तरह के और डिग्री के संकेंद्रित वृत्तों की तरह एकता के मोहर हैं। लेकिन एकता चाहे जितनी भी स्पष्ट क्यों न हो, यह बहुलता के भीतर एकता ही है; यह वास्तव में पर्यवेक्षकों को संबोधित नहीं करती है। इसलिए, एकता के पीछे दिव्य एकता की मोहर होनी चाहिए ताकि एकता बहुलता को ध्यान में न लाए और परम शुद्ध और पवित्र एक के सामने सीधे हृदय तक का रास्ता खुल सके।

इसके अलावा, एक सचमुच मनमोहक डिजाइन, चमकती हुई रोशनी, मनभावन मिठास, मनभावन सुंदरता और शक्तिशाली सत्य - जो दिव्य दया की मुहर और दिव्य करुणा की मुहर है - दिव्य एकता की मुहर पर लगाई गई है ताकि नज़रें उसकी ओर आकर्षित हों और दिलों को आकर्षित करें। हाँ, यह उस दया की शक्ति है जो सचेत प्राणियों की निगाहों को आकर्षित करती है, उन्हें अपनी ओर खींचती है, और उन्हें एकता की मुहर तक पहुँचाती है और एकमात्र एक को देखती है, और उससे "केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं, और केवल आपसे ही हम सहायता चाहते हैं" का पता वास्तव में प्रकट करती है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि "ईश्वर के नाम पर, दयालु, दयालु" सूरा अल-फातिहा की अनुक्रमणिका और कुरान का संक्षिप्त सारांश है, इसलिए यह इस महान रहस्य का संकेत और व्याख्याकार है। जो व्यक्ति इसे पकड़ता है वह ईश्वरीय दया के स्तरों से होकर यात्रा कर सकता है। और जो व्यक्ति इस व्याख्याकार को बोलने के लिए कहता है वह ईश्वरीय दया के रहस्यों के बारे में जान सकता है और ईश्वरीय करुणा और दया की रोशनी देख सकता है।

पांचवां रहस्य

एक हदीस है जो कुछ इस तरह है: "ईश्वर ने मनुष्य को अत्यंत दयालु के रूप में बनाया है।"[2] कुछ सूफियों ने इसकी असाधारण तरीके से व्याख्या की है, जो विश्वास के सिद्धांतों के लिए अनुपयुक्त है। उनमें से कुछ जो परमानंदवादी थे, उन्होंने तो मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति को भी सर्व-दयालु के रूप में माना। चूँकि परमानंदवादी ज़्यादातर चिंतन में डूबे रहते हैं और भ्रमित रहते हैं, इसलिए उन्हें वास्तविकता के विपरीत विचार रखने के लिए शायद माफ़ किया जा सकता है। लेकिन विचार करने पर, लोग अपने सही होश में अपने विचारों को स्वीकार नहीं कर सकते जो विश्वास के मूल सिद्धांतों के विपरीत हैं। अगर वे ऐसा करते हैं, तो वे ग़लती कर रहे हैं।

वास्तव में, सबसे शुद्ध और पवित्र देवता, जो पूरे ब्रह्मांड को व्यवस्थित रूप से संचालित करता है जैसे कि यह एक महल या घर हो, और सितारों को घुमाता है जैसे कि वे कण हों और उन्हें अंतरिक्ष में यात्रा करने का कारण बनता है

[2] देखें, बुखारी, इस्तिदान, 1; मुस्लिम, बीर, 115; जन्ना, 28; मुसनद, ii, 244, 251, 315, 323, 434, 463, 519।

बुद्धि और सहजता, और सूक्ष्म कणों को ऐसे काम में लाता है मानो वे व्यवस्थित अधिकारी हों, उसका कोई साथी, जोड़ीदार, विपरीत या बराबर नहीं है। इसी तरह, अर्थ के अनुसार
पद्य:

> उसके तुल्य कोई चीज़ नहीं, वह सब कुछ सुनता और देखता है। (42:11)

उसका कोई रूप, प्रतिरूप या समकक्ष नहीं है, तथा उसके सदृश या उससे मिलता-जुलता कुछ भी नहीं है।
हालाँकि, निम्नलिखित श्लोक के अर्थ और इसकी दृष्टान्तात्मक तुलना के अनुसार,

> और आकाशों और धरती में सबसे बड़ी मिसाल उसी की है और वही सर्वशक्ता है।
> महान् पराक्रमी, बुद्धि से परिपूर्ण,(30:27)

उसके कामों, गुणों और नामों पर विचार किया जा सकता है। यानी उसके कामों के सिलसिले में रूपक और तुलना का इस्तेमाल किया जा सकता है। ऊपर बताई गई हदीस का एक मतलब यह है: “इंसान एक ऐसे रूप में है जो दयालु के ईश्वरीय नाम को उसकी संपूर्णता में प्रदर्शित करता है।” जी हाँ, जैसा कि हमने पहले बताया, दयालु का ईश्वरीय नाम ब्रह्मांड के चेहरे पर एक हज़ार और एक नामों की किरणों के ज़रिए प्रकट होता है, और धरती के चेहरे पर ईश्वर की पूर्ण प्रभुता की असंख्य अभिव्यक्तियों के ज़रिए स्पष्ट होता है। इसी तरह, इसका पूरा प्रकटीकरण मनुष्य के व्यापक रूप में एक छोटे से पैमाने पर स्पष्ट होता है, ठीक वैसे ही जैसे धरती और ब्रह्मांड के चेहरों पर।

हदीस यह भी बताती है कि इस तरह के सबूतों, दर्पणों और दयालु के रूपों जैसे कि जीवित प्राणियों और मनुष्य द्वारा प्रस्तुत अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के प्रमाण इतने निश्चित, स्पष्ट और प्रत्यक्ष हैं कि जैसे कि एक चमकते हुए दर्पण के बारे में कहा जा सकता है जो सूर्य की छवि को दर्शाता है: "वह दर्पण सूर्य है," जो इसकी चमक और प्रमाण की स्पष्टता को दर्शाता है, वैसे ही यह कहा गया है और कहा जा सकता है: "मनुष्य दयालु एक के रूप में है," जो उसके प्रमाण की स्पष्टता और उसके संबंध की पूर्णता को दर्शाता है। यह इस रहस्य के परिणामस्वरूप है कि अस्तित्व की एकता में विश्वास करने वालों में से अधिक उदारवादी ने कहा: "उसके अलावा कोई अस्तित्व नहीं है," इस प्रमाण की स्पष्टता और संबंध की पूर्णता को व्यक्त करने के तरीके के रूप में।

> हे ईश्वर! हे परम दयालु! परम करुणामय! “ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, करुणामय है” के लिए अपनी करुणा के अनुरूप हम पर दया करें, और हमें “ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, करुणामय है” के रहस्यों को समझने की अनुमति दें, जैसा कि आपकी करुणा के अनुरूप है। आमीन।

छठा रहस्य

हे असीम नपुंसकता और अंतहीन इच्छाओं से पीड़ित दुखी मनुष्य! निम्नलिखित से देखें कि ईश्वरीय दया कितनी मूल्यवान और स्वीकार्य मध्यस्थ है। क्योंकि यह उस सर्व-महिमावान प्रभु को जानने का एक तरीका है जिसकी सेना में तारे और सूक्ष्म कण दोनों एक साथ पूर्ण क्रम और आज्ञाकारिता में सेवा करते हैं - पूर्व-अनंत काल और उत्तर-अनंत काल का गौरवशाली सम्राट, जो आत्मनिर्भर है और बिल्कुल ज़रूरत से रहित है। वह असीम रूप से समृद्ध है और किसी भी तरह से ब्रह्मांड और उसके प्राणियों की ज़रूरत नहीं है। पूरा ब्रह्मांड उसकी आज्ञा और निर्देशन के अधीन है, उसकी महिमा और भव्यता के नीचे पूरी तरह से आज्ञाकारी है, उसकी उदात्तता के सामने विनम्र है। हे मनुष्य, यह तुम्हारे लिए ईश्वरीय दया है! यह तुम्हें उस एक की उपस्थिति में उठाता है जिसे कोई ज़रूरत नहीं है, शाश्वत प्रभु, और तुम्हें अपना मित्र, अभिभाषक और प्रिय सेवक बनाता है। किन्तु जिस प्रकार आप सूर्य तक नहीं पहुंच सकते और उससे बहुत दूर हैं, यद्यपि वह आपके दर्पण को अपने प्रकाश, प्रतिबिम्ब और अभिव्यक्ति से भर देता है, और आप किसी भी प्रकार उसके निकट नहीं जा सकते; उसी प्रकार आप परम पवित्र और परम पावन, पूर्व-अनन्त काल और पर-अनन्त काल के सूर्य से असीम रूप से दूर हैं, और उसके निकट नहीं जा सकते, किन्तु उसकी दया का प्रकाश उसे हमारे निकट लाता है।

हे मनुष्य! जो कोई इस दया को पाता है, वह प्रकाश का एक अनंत खजाना पाता है। और इसे पाने का तरीका सबसे महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) के आचरण का पालन करना है, जो दया के सबसे शानदार उदाहरण और प्रतिनिधि थे, इसकी सबसे शानदार भाषा और संदेशवाहक थे, और कुरान में उन्हें "सभी दुनियाओं के लिए दया" के रूप में वर्णित किया गया था।

इस दया के अवतार को पाने का तरीका जो सभी लोकों के लिए दया है, उस पर ईश्वर की कृपा बरसाने वाली प्रार्थना करना है। वास्तव में, इस प्रार्थना का अर्थ दया है। ईश्वरीय दया के उस जीवित अवतार के लिए दया की प्रार्थना के रूप में, यह सभी लोकों की दया (UWBP) तक पहुँचने का एक साधन है। इसलिए, इस प्रार्थना को अपने लिए सभी लोकों की दया का साधन बनाओ, और साथ ही इसे परम दयालु की दया तक पहुँचने का साधन बनाओ।

समस्त मुस्लिम समुदाय अपनी सम्पूर्ण विशालता में इस प्रार्थना का उच्चारण करता है, जो कि समस्त संसार की दया के लिए दया का पर्याय है, तथा यह शानदार ढंग से सिद्ध करता है कि ईश्वरीय दया कितनी अनमोल देन है, तथा इसका क्षेत्र कितना व्यापक है।

निष्कर्ष: जिस प्रकार धन के खजाने में सबसे कीमती रत्न है,

[3] देखें, मुस्लिम, सलात, 11, 70; तिर्मिधि, वित्र, 21; अबू दाउद, सलात, 36, 210; वित्र, 26; नसाई, जुमा, 5; अदन, 37; साहव, 55; इब्न माजा, इकामा अल-सलात, 79; दारिमी, सलात, 206; रिकाक, 58; मुसनद, द्वितीय, 168, 375, 485; iii, 102, 445: iv, 8.

दया पैगंबर मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) हैं, इसके द्वारपाल हैं, इसलिए इसकी पहली कुंजी "ईश्वर के नाम पर, दयालु, दयालु," है और इसकी सबसे आसान कुंजी पैगंबर (UWBP) के लिए प्रार्थना है।

> हे ईश्वर! "ईश्वर के नाम पर, दयालु, कृपालु" की सच्चाई के माध्यम से, जिसे आपने अपनी दया के अनुरूप सभी संसारों के लिए दया के रूप में भेजा है, और उसके और उसके सभी परिवार और साथियों के प्रति सम्मान में आशीर्वाद और शांति प्रदान करें। और हमें ऐसी दया प्रदान करें कि हम आपके अलावा किसी और की दया की कमी से मुक्त हो जाएँ।
>
> आमीन.
>
> पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

* * *

पंद्रहवीं फ्लैश

इसमें सोज़लर (शब्द), मेकटूबाट (बेदीउज्जमान सैद नूरसी - पत्र 1928-1932) और लेमलार (फ़्लैश संग्रह) की अनुक्रमणिकाएँ शामिल हैं , जो पहली से चौदहवीं फ़्लैश तक हैं। उन्हें संबंधित खंडों में शामिल किया गया है और यहाँ प्रकाशित नहीं किया गया है।

सोलहवीं फ्लैश

उसके नाम में उसकी महिमा हो!
और कोई चीज़ उसकी प्रशंसा से पवित्रता का गुणगान करने से नहीं चूकती । (17:44)

आप पर शांति हो, तथा ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो!

मेरे प्यारे और वफ़ादार भाईयों होजा साबरी, हाफ़िज़ अली, मसूद, मुस्तफ़ा, हुस्रेव, रेफ़त, बेकिर बे, रुस्तू, लुत्फ़ी, हाफ़िज़ अहमद, शेख़ मुस्तफ़ा और दूसरे भाईयों! मेरे दिल में आया कि मैं आपको चार छोटी-छोटी बातें जो जिज्ञासा और सवालों का विषय रही हैं, संक्षेप में जानकारीपूर्ण तरीके से समझाऊँ।

पहला

हमारे कुछ भाईयों जैसे कि चप्राज़ादे अब्दुल्लाह इफेंडी ने भविष्यवक्ता से सुना था कि इस आखिरी रमज़ान में सुन्नियों को मुश्किलों से मुक्ति मिलेगी, जीत मिलेगी, जबकि ऐसा नहीं हुआ। ऐसे संत और ज्ञानी लोग ऐसी भविष्यवाणियाँ क्यों करते हैं जो वास्तविकता के विपरीत हैं? उन्होंने मुझसे पूछा, और मैंने जो उत्तर दिया, जिससे मैं प्रेरित हुआ, उसका सारांश यह है:

हदीस में कहा गया है: "कभी-कभी किसी व्यक्ति पर विपत्ति आती है, लेकिन अगर वह दान से मिलती है, तो वह दूर हो जाती है।"1 इस हदीस का अंतर्निहित अर्थ यह दर्शाता है कि नियत घटनाएँ कुछ शर्तों के तहत घटित होने वाली हैं, लेकिन वे घटित नहीं होती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि नियत घटनाएँ जिनके बारे में ज्ञानी लोग जानते हैं, वे निरपेक्ष नहीं हैं, बल्कि कुछ शर्तों द्वारा सीमित हैं; यदि शर्तें पूरी नहीं होती हैं, तो घटना नहीं होती है। हालाँकि घटना, मृत्यु के नियत घंटे की तरह, जिसे निलंबित कर दिया गया है, प्रकटन और विघटन की पट्टिका में लिखी और निर्धारित की गई है,2 जो कि पूर्व-शाश्वत पट्टिका की एक तरह की नोटबुक है। यह केवल

[1] अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, i, 492; अल-'अजलूनी, कशफ अल-खफ़ा', द्वितीय, 30; तिर्मिधि, ज़कात, 28; तबरानी, अल-मुजम अल-कबीर, viii, 261; अल-बहाकी, शुआब अल-ईमान, iii, 245।

[2] देखें, अल-नवावी, शरह साहिह मुस्लिम, xvi, 114; इब्न हजर, फत अल-बारी, x, 415-6।

बहुत ही कम बार ऐसा होता है कि प्रकाश पूर्व-शाश्वत पट्टिका तक पहुंच पाता है; अधिकांशतः वे इतनी दूर तक नहीं पहुंच पाते।

परिणामस्वरूप, इस अंतिम रमज़ान और बलिदान के पर्व या अन्य समयों पर व्याख्याओं या प्रकाशों के परिणामस्वरूप की गई भविष्यवाणियाँ जो इसलिए घटित नहीं होतीं क्योंकि जिन शर्तों पर वे निर्भर थीं वे पूरी नहीं हुईं, उन लोगों को झूठा साबित न करें जिन्होंने उन्हें बताया था। क्योंकि वे निश्चित थीं, लेकिन वे पूरी नहीं हुईं क्योंकि शर्तें पूरी नहीं हुईं।

हां, सुन्नियों के बहुमत की ईमानदारी से की गई प्रार्थना कि रमज़ान के महीने में नवाचारों को समाप्त कर दिया जाए, एक शर्त और महत्वपूर्ण कारण बन गई। लेकिन चूंकि रमज़ान में नवाचार मस्जिदों में प्रवेश कर गए थे, इसलिए उन्होंने दुआओं की स्वीकृति में बाधा डाली, और राहत नहीं मिली। जिस तरह उपरोक्त हदीस के अनुसार, दान देने से विपत्तियाँ दूर होती हैं, उसी तरह बहुमत की ईमानदारी से की गई प्रार्थनाएँ आम तौर पर परेशानियों से मुक्ति दिलाती हैं। चूंकि आकर्षण की शक्ति नहीं बनी, इसलिए जीत नहीं मिली।

दूसरा जिज्ञासु प्रश्न

पिछले दो महीनों में राजनीतिक परिस्थितियाँ बहुत ही सक्रिय रही हैं, जिसके चलते मुझे और मेरे साथ जुड़े भाइयों को राहत पहुँचाने के लिए कुछ प्रयास करने चाहिए थे। हालाँकि इस बात की प्रबल संभावना थी कि ऐसा किया जा सकता था, लेकिन मैंने इस स्थिति को कोई महत्व नहीं दिया, बल्कि इसके विपरीत, मुझे उन 'दुनियावी' लोगों के समर्थन में एक विचार आया जो मुझे प्रताड़ित करते हैं। इस पर कई लोग आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने कहा: "इन नवप्रवर्तकों के मुखिया और आंशिक रूप से झूठे लोगों द्वारा अपनाई गई नीतियों के बारे में आप क्या सोचते हैं जो आपको परेशान करते हैं, ताकि आप उनके साथ कुछ न करें?" मेरे उत्तर का सारांश इस प्रकार है:

इस समय इस्लाम के लोगों के सामने सबसे बड़ा ख़तरा यह है कि विज्ञान और दर्शन से पैदा होने वाली गुमराही की वजह से उनके दिल भ्रष्ट हो रहे हैं और ईमान को नुकसान पहुँच रहा है। इसका एकमात्र समाधान प्रकाश है; प्रकाश दिखाना है ताकि उनके दिलों को सुधारा जा सके और उनके ईमान को बचाया जा सके। अगर कोई राजनीति के डंडे से काम लेता है और उन पर हावी हो जाता है, तो काफ़िर कपटी की हद तक गिर जाते हैं। और कपटी लोग काफ़िरों से भी बदतर हैं। यानी इस समय डंडा दिल को ठीक नहीं कर सकता, क्योंकि तब काफ़िर दिल में घुस जाता है और छिप जाता है, और कपट में बदल जाता है। और इस समय मेरे जैसा शक्तिहीन व्यक्ति डंडे और प्रकाश, दोनों का इस्तेमाल नहीं कर सकता। इस कारण मैं अपनी पूरी ताकत से प्रकाश को अपनाने के लिए मजबूर हूँ और राजनीति के डंडे पर विचार नहीं कर सकता, चाहे वह किसी भी रूप में हो। इस समय हम पर शारीरिक जिहाद का आरोप नहीं है, चाहे वह कर्तव्य कुछ भी क्यों न हो। हाँ, एक व्यक्ति के तरीके के अनुसार, काफ़िरों या धर्मत्यागियों के हमलों के खिलाफ़ एक अवरोध बनाने के लिए डंडा ज़रूरी है। लेकिन हमारे पास तो सिर्फ़ दो हाथ हैं। भले ही हमारे पास सौ हाथ हों

हाथ, वे केवल प्रकाश के लिए पर्याप्त होंगे। हमारे पास कोई और हाथ नहीं है जिससे हम क्लब पकड़ सकें!

तीसरा जिज्ञासु प्रश्न

आप युद्ध का हिंसक विरोध क्यों करते हैं, जबकि हाल ही में ब्रिटिश और इटालियन जैसी विदेशी ताकतों ने सरकार में हस्तक्षेप किया है, इससे इस्लामी उत्साह बढ़ता - जो इस देश की सरकार के समर्थन का सच्चा बिंदु और नैतिक शक्ति का स्रोत है - और यह इस्लाम के चिह्नों को पुनर्जीवित करने और नवाचारों को पीछे हटाने का एक साधन भी हो सकता है? आपने शांतिपूर्ण तरीकों से इसके समाधान के लिए प्रार्थना क्यों की है और नवाचारियों की सरकार का उत्साहपूर्वक समर्थन क्यों किया है? क्या यह नवाचारों का अप्रत्यक्ष समर्थन नहीं है?

उत्तर: हम राहत, मुक्ति, खुशी और जीत चाहते हैं, लेकिन काफिरों की तलवार से नहीं। उनकी तलवारें ही उनका अंत कर दें! हमें उनसे कोई लाभ नहीं चाहिए। असल में ये वही जिद्दी यूरोपियन हैं जिन्होंने आस्था रखने वालों को परेशान करने के लिए कपटियों को भेजा है और नास्तिकों को खड़ा किया है।

जहाँ तक युद्ध की विपत्ति का प्रश्न है, यह कुरान की हमारी सेवा को बहुत नुकसान पहुँचाएगा। हमारे सबसे मूल्यवान, आत्म-बलिदान करने वाले भाइयों में से अधिकांश की आयु पैंतालीस वर्ष से कम है, और युद्ध के कारण उन्हें कुरान की अपनी पवित्र सेवा को छोड़कर सेना में भर्ती होना पड़ेगा। यदि मेरे पास पैसा होता, तो मैं ऐसे प्रत्येक मूल्यवान भाई को सैन्य सेवा से मुक्त करने के लिए आवश्यक हज़ार लीरा का भुगतान खुशी-खुशी करता। मेरे सैकड़ों मूल्यवान भाइयों द्वारा रिसाले-ए-नूर की कुरानिक सेवा को छोड़कर और शारीरिक जिहाद के डंडे पर हाथ रखने से, मैं अपने अंदर एक लाख लीरा का नुकसान महसूस करता हूँ। ज़काई की सैन्य सेवा के इन दो वर्षों ने, शायद उसके अमूर्त लाभ के एक हज़ार लीरा को खो दिया है। खैर... जैसे कि सब चीज़ों पर हुकूमत करने वाला एक ही पल में बादलों से भरे वातावरण को साफ़ कर देता है और साफ़ आसमान में चमकता हुआ सूरज दिखा देता है, वैसे ही वह इन काले, बेरहम बादलों को हटा दे और सूरज की तरह शरीअत की सच्चाइयों को दिखाए और उन्हें बिना खर्च या परेशानी के दे। हम उसकी रहमत से उम्मीद करते हैं कि वह हमें उन्हें महँगे दामों पर न बेचे। वह ऊपर वालों के दिमाग को बुद्धि दे और उनके दिलों को ईमान दे; बस इतना ही काफी होगा। फिर मामले अपने आप ठीक हो जाएँगे।

चौथा जिज्ञासु प्रश्न

वे पूछते हैं: “चूँकि जो आप अपने हाथ में पकड़े हुए हैं वह प्रकाश है, कोई डंडा नहीं, और प्रकाश पर आपत्ति नहीं की जा सकती, न ही इससे भागा जा सकता है, न ही इसे दिखाने से कोई नुकसान हो सकता है, तो आप अपने दोस्तों को सावधानी बरतने की सलाह क्यों देते हैं, और उन्हें रिसाले-ए-नूर के कई प्रकाश-भरे हिस्सों को लोगों को दिखाने से क्यों रोकते हैं?”

इस प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर यह है: शीर्ष पर बैठे अधिकांश लोगों के सिर नशे में होते हैं और वे उन्हें पढ़ नहीं सकते। और यदि वे उन्हें पढ़ते भी हैं, तो वे उन्हें समझ नहीं पाते; वे उनका गलत अर्थ लगाते हैं, और हस्तक्षेप करते हैं। उन्हें तब तक उन्हें नहीं दिखाया जाना चाहिए जब तक कि वे अपने होश में न आ जाएं, नहीं तो वे हस्तक्षेप करेंगे। बहुत से बेईमान लोग भी हैं जो द्वेष, महत्वाकांक्षा या भय के कारण प्रकाश को अस्वीकार करते हैं या उससे अपनी आँखें मूंद लेते हैं। इसलिए, मैं अपने भाइयों को सलाह देता हूँ कि वे सावधान रहें और उन लोगों को सत्य न दें जो अयोग्य हैं3 या ऐसे काम न करें जो 'सांसारिक' लोगों के संदेह को उत्तेजित करते हैं4।

[3] देखें, इब्न माजा, टिप्पणीकार, 17.

[4] एक घटना के बारे में एक किस्सा जो किसी गंभीर घटना को जन्म दे सकता था: कल सुबह
मेरे एक मित्र का दामाद मेरे पास आया। खुश होकर, खुशखबरी सुनाने वाले की तरह, उसने मुझसे कहा: "आपकी एक किताब इस्पार्टा में छपी है और बहुत से लोग इसे पढ़ रहे हैं।" मैंने जवाब दिया: "वह प्रतिबंधित किताब अभी तक नहीं छपी है; हेक्टोग्राफ के ज़रिए इसकी कई प्रतियाँ प्राप्त की गई हैं, जिसके बारे में सरकार कुछ नहीं कह सकती।" और मैंने आगे कहा: "इस बारे में कुछ भी न कहना सावधान रहना

उन दो धोखेबाजों को, जो तुम्हारे दोस्त हैं। वे बहाने के तौर पर इस्तेमाल करने के लिए कुछ खोज रहे हैं।" मेरे दोस्तों!
वह आदमी मेरे एक दोस्त का दामाद था, और इस लिहाज से उसे मेरा दोस्त भी माना जा सकता है, लेकिन चूँकि वह नाई है, इसलिए वह बेईमान शिक्षक और ढोंगी जिला अधिकारी का दोस्त है। हमारे एक भाई ने जाहिर तौर पर वहाँ कुछ कहा था, लेकिन उसे इसकी जानकारी नहीं थी, इसलिए यह अच्छी बात थी कि वह पहले आया और मुझे इसके बारे में बताया। मैंने उसे चेतावनी दी और किसी भी अप्रिय घटना को टाला जा सका। और इस परदे के पीछे नकल करने वाली मशीन ने हजारों प्रतियाँ छापीं।

निष्कर्ष

आज मुझे रेफ़ेट बे का पत्र मिला। उनके प्रश्न के संबंध में
पैगम्बर (यूडब्ल्यूबीपी) की दाढ़ी के बारे में मैं यह कहता हूं:

हदीसों से यह स्थापित होता है कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) की दाढ़ी के बालों की संख्या कम थी। लेकिन उनके कम होने के बावजूद - उदाहरण के लिए, तीस, चालीस, पचास या साठ - यह तथ्य कि हज़ारों जगहों पर दाढ़ी के बाल हैं, एक बार मुझे बहुत सोचने पर मजबूर कर दिया। तब मुझे लगा कि जिसे उनकी दाढ़ी का नाम दिया गया है, वह सिर्फ़ दाढ़ी के बालों से नहीं बनी है।

बाल, बल्कि उसके धन्य सिर के बाल भी, जिन्हें साथियों ने, जिन्होंने किसी भी चीज़ की उपेक्षा नहीं की, तब सुरक्षित रखा जब उसने उसे काटा। उसके चमकीले, धन्य बाल, जो हमेशा के लिए सुरक्षित रहेंगे, हज़ारों की संख्या में थे और जो अब मौजूद हैं, उनके बराबर हो सकते हैं।

उस समय मुझे यह भी आश्चर्य हुआ कि क्या यह पुख्ता दस्तावेज़ी सबूतों के साथ स्थापित किया गया था कि सभी मस्जिदों में पाए जाने वाले बाल पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के बाल थे, ताकि वहां जाना स्वीकार्य हो। फिर मुझे लगा कि यह यात्राओं का कारण था, और महान पैगंबर (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) के लिए दुआएं की जाती थीं, और उनका सम्मान और प्यार किया जाता था,6 और इस प्रकार यह नहीं देखा जाता था कि यह वास्तव में क्या था। इसलिए, भले ही बाल वास्तव में पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) की धन्य दाढ़ी से नहीं थे, क्योंकि इसे इसकी उपस्थिति के कारण ऐसा माना जाता था, और यह सम्मान, सम्मान और आशीर्वाद के साधन के रूप में कार्य करता था, इसे प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं थी। जब तक इसके विपरीत कोई निश्चित सबूत नहीं था, तब तक यह पर्याप्त था। आम तौर पर स्वीकृत राय और इस्लामी समुदाय की स्वीकृति एक तरह के सबूत के रूप में गिनी जाती है।

अगर कुछ नेक लोग ईश्वर के भय, सावधानी या संकल्प के आधार पर ऐसी बातों पर आपत्ति करते हैं, तो वे ऐसा खास मामलों में करते हैं। और अगर वे कहते हैं कि यह एक नवाचार है, तो इसे सराहनीय नवाचारों में शामिल किया जाना चाहिए, क्योंकि यह पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के लिए आशीर्वाद का एक साधन है। रेफ़ेट बे ने अपने पत्र में कहा कि इस मामले ने भाइयों के बीच बहस को जन्म दिया है। मैं अपने भाइयों को सलाह देता हूं कि वे इस तरह से बहस न करें जिससे मतभेद और संघर्ष पैदा हो; उन्हें बिना बहस किए विचारों के आदान-प्रदान के रूप में चीजों पर चर्चा करने की आदत डालनी चाहिए।

---

[5] देखें, बुखारी, वुज़ू', 33; मुस्लिम, हज, 311-26; मुसनद, iii, 133, 137.

[6] देखें, मुस्लिम, सलात, 11, 70; तिर्मिधि, वित्र, 21; अबू दाउद, सलात, 36, 210; वित्र, 26; नसाई, जुमा, 5; अदन, 37; साहव, 55; इब्न माजा, इकामा अल-सलात, 79; दारिमी, सलात, 206; रिकाक, 58; मुसनद, द्वितीय, 168, 375, 485; iii, 102, 445: iv, 8.

उसके नाम में उसकी महिमा हो!
और कोई चीज़ उसकी प्रशंसा से पवित्रता का गुणगान करने से नहीं चूकती । (17:44)

आप पर शांति हो तथा ईश्वर की दया एवं आशीर्वाद हो।

सेनिकेंट, इब्राहीम, सुक्रू, हाफ़िज़ बेकिर, हाफ़िज़ से मेरे प्रिय और वफादार भाई हुसेन, हाफ़िज़ रिसेब एफेंदी!

नास्तिक लोग लंबे समय से उन तीन मामलों पर आपत्ति जता रहे हैं जो आपने हाफिज तेवफिक के साथ भेजे थे।

पहला: आयत के स्पष्ट अर्थ के अनुसार, "यहाँ तक कि जब वह सूर्य के अस्त होने के निकट पहुँचा, तो उसने उसे गन्दे पानी के एक सोते में डूबता हुआ पाया" (18:86) उसने सूर्य को एक गर्म, कीचड़ भरे सोते में डूबते देखा।

दूसरा: ज़ुल-क़रनैन की बाधा कहाँ है?

तीसरा: यह यीशु (UWP) के समय के अंत में आने और दज्जाल को मारने के बारे में है।

इन प्रश्नों के उत्तर लम्बे हैं, अतः उन्हें संक्षेप में बताते हुए हम यह कहते हैं: चूंकि कुरान की आयतें अरबी शैली के अनुसार, स्पष्ट अर्थों के अनुरूप, हर किसी की समझ में आने वाले तरीके से बातों को व्यक्त करती हैं, इसलिए वे अक्सर रूपकों, रूपकों और तुलनाओं के रूप में चीजों की व्याख्या करती हैं।

इसलिए इस आयत पर विचार करें, "गंदे पानी के झरने में डूबा हुआ:" ज़ुल-क़रनैन ने अटलांटिक महासागर के तट पर सूरज को डूबते देखा, जो एक उबलते, कीचड़ भरे झरने जैसा लग रहा था, या ज्वालामुखी के आग से भरे, धुएँ से भरे गड्ढे में। यानी, जाहिर है कि ज़ुल-क़रनैन को अटलांटिक महासागर दूर से एक झरने के बड़े तालाब के रूप में दिखाई दिया, जो एक दलदल से घिरा हुआ था, जो गर्मियों की भीषण गर्मी में भाप और भाप बन रहा था; उसने इसके एक हिस्से में सूरज को डूबते हुए देखा। या उसने सूरज को, आसमान की आँख को, एक ज्वालामुखी के शिखर पर एक नए, आग से भरे गड्ढे में छिपा हुआ देखा, जो चट्टानों, मिट्टी और लावा को उगल रहा था।

जी हाँ, सर्वज्ञ क़ुरआन की चमत्कारिक रूप से वाक्पटु अभिव्यक्ति इस वाक्य के ज़रिए कई बातें सिखाती है। सबसे पहले, यह बताता है कि ज़ुल-क़रनैन की पश्चिम की यात्रा गर्मियों की भीषण गर्मी, दलदली क्षेत्र, सूर्यास्त और ज्वालामुखी विस्फोट के समय के साथ हुई थी, और इस तरह यह कई शिक्षाप्रद बातों की ओर इशारा करता है, जैसे कि अफ्रीका पर पूरी तरह से कब्ज़ा करना।

यह सर्वविदित है कि सूर्य की गति प्रत्यक्ष है, जो पृथ्वी की गुप्त गति को इंगित करती है और इसकी सूचना देती है। इसका अभिप्राय सूर्य का वास्तविक अस्त होना नहीं है। साथ ही वसंत एक रूपक है। दूर से देखने पर एक

---

[7] देखें, मुस्लिम, फ़ितन, 110; तिर्मिधि, फ़ितन, 59, 62; अबू दाउद, मलाहिम, 14; इब्न माजा, फ़ितन, 33; मुसनद, iii, 420; चतुर्थ, 181, 226, 390; vi, 75.

[8] दज्जाल, मसीह विरोधी है, जो समय के अंत में प्रकट होगा। (ट्र.)

बड़ा समुद्र एक छोटा तालाब प्रतीत होता है। वाक्पटुता के रहस्यों के अनुसार यह सबसे सार्थक और उपयुक्त है कि दलदलों के पीछे दिखाई देने वाले समुद्र की तुलना गर्मी के कारण उसमें से उठने वाले कोहरे और भाप से भरे एक गंदे झरने से की जाए, जिसमें 'ऐन' शब्द है, जिसका अरबी में अर्थ है वसंत, सूर्य और आंख। दूरी के कारण यह ज़ुल-क़रनैन को ऐसा ही लगा। इसी तरह, कुरान भी सर्वोच्च सिंहासन से आता है और आकाशीय पिंडों को आदेश देता है, इसलिए इसका स्वर्गीय संबोधन यह बताता है कि अधीन सूर्य, जो परम दयालु के इस अतिथिगृह में एक दीपक का कर्तव्य निभाता है, अटलांटिक महासागर जैसे एक प्रमुख झरने में छिपा हुआ है, अपनी ऊंचाई और उदात्तता के लिए उपयुक्त है; अपनी चमत्कारी शैली के साथ यह समुद्र को एक गर्म झरना और भाप से भरी आंख दिखाता है। और यह स्वर्गीय आंखों को ऐसा ही दिखाई देता है।

संक्षेप में: अटलांटिक महासागर के लिए "गंदे झरने" शब्द का इस्तेमाल यह दर्शाता है कि ज़ुल-क़रनैन ने दूरी के कारण उस विशाल महासागर को झरने के रूप में देखा। लेकिन चूँकि क़ुरान हर चीज़ को नज़दीक से देखता है, इसलिए उसने वह नहीं देखा जो ज़ुल-क़रनैन ने देखा, जो एक तरह का भ्रम था। दरअसल, चूँकि क़ुरान आसमान से आता है और उनकी ओर देखता है, इसलिए वह कभी धरती को एक अखाड़े के रूप में देखता है, कभी महल के रूप में, कभी पालने के रूप में, और कभी पन्ने के रूप में। इसलिए विशाल धुंधले, वाष्पशील अटलांटिक महासागर को झरना कहना इसकी उदात्त उत्कृष्टता को दर्शाता है।

आपका दूसरा प्रश्न

ज़ुल-क़रनैन का अवरोध कहाँ है? गोग और मागोग कौन थे?

उत्तर: बहुत पहले मैंने इस प्रश्न के बारे में एक ग्रंथ लिखा था और इसने नास्तिकों को चुप करा दिया था। अब यह मेरे पास नहीं है, और मेरी याददाश्त काम नहीं कर रही है और मेरी मदद नहीं कर रही है। इसके अलावा, इस प्रश्न पर चौबीसवें वचन की तीसरी शाखा में संक्षेप में चर्चा की गई है। इसलिए हम इसके बारे में केवल दो या तीन बिंदुओं को ही संक्षेप में इंगित करेंगे, जो इस प्रकार हैं:

खोजी विद्वानों द्वारा दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार, और जैसा कि शीर्षक ज़ुल-क़रनैन से संकेत मिलता है, ज़ुल-यज़ान जैसे प्रत्यय धू से शुरू होने वाले नाम यमन के राजाओं द्वारा इस्तेमाल किए जाते थे, इसलिए यह ज़ुल-क़रनैन सिकंदर महान नहीं था। वह यमन के राजाओं में से एक था10 जो अब्राहम (UWP)11 के समय में रहता था और उसने शिक्षा प्राप्त की थी

---

[9] बयानबाज़ी के रहस्यों के अनुसार "गंदे पानी के झरने में" शब्द "झरना" ('आयन) एक सूक्ष्म संकेत देता है, इस प्रकार: पृथ्वी के चेहरे पर ईश्वरीय दया की सुंदरता को देखने के बाद, आकाश के चेहरे पर सूर्य की आंख - और ऊपर ईश्वरीय विशालता को देखने के बाद, पृथ्वी में समुद्र की आंख - ये दोनों आंखें एक दूसरे के भीतर बंद हो जाती हैं, और पृथ्वी पर आंखें भी बंद हो जाती हैं। इस प्रकार, एक चमत्कारी शब्द के साथ कुरान इसे याद दिलाता है, और अपनी आँखों से आराम करने की ओर इशारा करता है

कर्तव्य.10 देखें, अबू सूद, अबी सूद की व्याख्या, वी, 239-40; इब्न हजर, फत अल-बारी, vi, 385; अल-अलुसी, रूह अल-मानी, xvi, 27.

[11] देखें, अल-कुर्तुबी, अल-जामी' ली-अहकाम अल-कुरान, xi, 47; इब्न कथिर, तफ़सीर अल-कुरान, i, 180; iii, 101; इब्न हजर, फत अल-बारी, vi, 382; अल-फ़क़ीही, अहबर मक्का, iii, 221।

ख़िद्र.12 यूनानी सिकन्दर ईसा से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व हुआ था, तथा उसे अरस्तू ने शिक्षा दी थी।13

मानव इतिहास लगभग तीन हजार वर्ष पुराना है।
इतिहास का यह अपूर्ण और संक्षिप्त दृष्टिकोण अब्राहम से पहले के समय के बारे में सटीक नहीं है। यह या तो अंधविश्वास के रूप में, या इनकार के रूप में, या बहुत संक्षिप्त रूप में जारी है। यमन के ज़ुल-क़रनैन को कुरान की टिप्पणियों में शुरुआती समय से ही सिकंदर के नाम से जाना जाता था,14 या तो इसलिए क्योंकि यह उनके नामों में से एक था और वह सिकंदर महान या प्राचीन काल का सिकंदर था, या फिर निम्नलिखित:

कुरान की आयतों में वर्णित विशेष घटनाएँ सार्वभौमिक घटनाओं की सूचनाएँ हैं। इस प्रकार, अपने भविष्यसूचक मार्गदर्शन के माध्यम से, सिकंदर महान, जो कि ज़ुल-क़रनैन था, ने कुछ लोगों, अत्याचारियों और उत्पीड़ितों के बीच एक दीवार खड़ी की और उन क्रूर शत्रुओं के हमलों को रोकने के लिए चीन की प्रसिद्ध महान दीवार का निर्माण किया। इसी प्रकार, सिकंदर यूनानी जैसे कई शक्तिशाली राजाओं और विश्व विजेताओं ने भौतिक रूप से ज़ुल-क़रनैन के मार्ग का अनुसरण किया, जबकि नबी और आध्यात्मिक ध्रुव, जो मनुष्य की आध्यात्मिक दुनिया के राजा हैं, आध्यात्मिक मामलों और मार्गदर्शन में उनके पीछे चले; उन्होंने पहाड़ों के बीच दीवारें खड़ी कीं, जो अत्याचारियों से उत्पीड़ितों को बचाने का सबसे प्रभावी साधन था,15 और बाद में पर्वत चोटियों पर किले बनाए।

उन्होंने अपनी भौतिक शक्ति के माध्यम से या अपने मार्गदर्शन और योजना के माध्यम से खुद ही इनकी स्थापना की। फिर उन्होंने शहरों के चारों ओर दीवारें बनाईं और शहरों के अंदर किले बनाए, और अंत में उन्होंने मशीन-गन और ड्रेडनॉट्स बनाए, जो मोबाइल किले की तरह थे। पृथ्वी पर सबसे प्रसिद्ध अवरोध, चीन की महान दीवार, कई दिनों की यात्रा की दूरी तय करती है और भारत और चीन के उत्पीड़ित लोगों के खिलाफ़ आक्रमणों को रोकने के लिए बनाई गई थी, जो कि कुरान में गोग और मागोग के रूप में जाने जाने वाले जंगली जनजातियों के थे, और अन्यथा मंगोल और मंचूरियन के रूप में जाने जाते थे। इन जनजातियों ने कई बार मानवता की दुनिया को अराजकता में डाल दिया। हिमालय के पीछे से निकलकर, उन्होंने पूर्व से पश्चिम तक विनाश किया। हिमालय पर्वत के करीब दो पहाड़ों के बीच एक लंबी दीवार बनाई गई थी जो लंबे समय तक उन जंगली लोगों के लगातार हमलों को रोकती थी, और प्राचीन फारस के राजाओं के प्रयासों के माध्यम से भी अवरोध बनाए गए थे, जो ज़ुल-

---

[12] देखें, अल-कुर्तुबी, अल-जामी' ली-अहकाम अल-कुरान, xi, 47।

[13] देखें, इब्न हजर, फत अल-बारी, vi, 382-3; अल-शौकानी, अल-फतह अल-कादिर, iii, 307; अल-खमावी, मुजम अल-बुलदान, i, 184; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, द्वितीय, 17, 488।

[14] देखें, अल-तबरी, जामी अल-बयान, xvi, 17; अल-कुर्तुबी, अल-जामी' ली-अहकाम अल-कुरान, xi, 45; अल-शौकानी, अल-फतह अल-कादिर, iii, 307; अल-अलुसी, रूह अल-मानी, xvi, 26.

[15] पृथ्वी पर अनेक कृत्रिम अवरोध हैं जो समय के साथ लुप्त हो गए हैं।
पहाड़ों जैसा दिखने लगा है या पहचानने लायक नहीं रहा।

करनैन ने कॉकेशिया के पहाड़ों में, दरबंद के क्षेत्र में, लूटपाट करने वाले तातार लोगों के आक्रमण को रोकने के लिए एक नाकाबंदी की थी। इस तरह की बहुत सारी बाधाएँ हैं। चूँकि सर्वज्ञ कुरान सभी मनुष्यों से बात करता है, इसलिए यह एक विशेष घटना का उल्लेख करता है, और उससे मिलती-जुलती सभी घटनाओं को याद करता है। यह इस दृष्टिकोण से है कि नाकाबंदी और गोग और मागोग के बारे में कथनों में मतभेद है, साथ ही कुरान के टीकाकारों के लेखन में भी।

इसके अलावा, सर्वज्ञ कुरान विचारों के संबंध के कारण एक घटना से दूसरी दूर की घटना पर स्विच करता है। जो व्यक्ति इस संबंध के बारे में सोचने में विफल रहता है, वह दोनों घटनाओं को समय के करीब मानता है। इस प्रकार, कुरान द्वारा दुनिया के अंत की भविष्यवाणी बाधा के विनाश से इसलिए नहीं की गई है क्योंकि दोनों घटनाएँ समय के करीब हैं, बल्कि विचारों के संबंध से जुड़े दो सूक्ष्म बिंदुओं को स्पष्ट करने के लिए की गई है। यानी, दुनिया का विनाश उसी तरह होगा जिस तरह बाधा का विनाश होगा। साथ ही, जिस तरह पहाड़, जो प्राकृतिक दिव्य बाधाएं हैं, मजबूत हैं और दुनिया के अंत में ही नष्ट होंगे; उसी तरह बाधा एक पहाड़ की तरह मजबूत है और दुनिया के विनाश के समय ही धूल में मिल जाएगी। भले ही यह समय के हमलों से क्षतिग्रस्त हो जाए, लेकिन यह ज्यादातर बरकरार रहेगी। जी हाँ, चीन की महान दीवार ज़ुल-क़रनैन की बाधा के सार्वभौमिक अर्थ का एक विशेष अर्थ है और हज़ारों सालों से खड़ी है और अभी भी सभी को देखने के लिए मौजूद है। इसे प्राचीन इतिहास की एक लंबी, पत्थर जैसी, अर्थपूर्ण पंक्ति के रूप में पढ़ा जाता है, जो पृथ्वी के पृष्ठ पर मनुष्य के हाथ से लिखी गई है।

आपका तीसरा प्रश्न

यीशु (उन पर शांति हो) द्वारा दज्जाल को मारे जाने के विषय में संक्षिप्त उत्तर मिलते हैं पहले और पंद्रहवें दोनों पत्रों में, जो आपके लिए पर्याप्त होना चाहिए।

उसके नाम में!

और कोई चीज़ उसकी प्रशंसा से पवित्रता का गुणगान करने से नहीं चूकती । (17:44)

आप पर शांति हो, तथा ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो।

मेरे प्रिय त्यागी, वफादार, कर्तव्यनिष्ठ भाइयों, होजा साबरी और हाफ़िज़ अली!

सूरा लुकमान के अंत में “पाँच गुप्त बातों” (31:34)16 के बारे में आयत के बारे में आपका महत्वपूर्ण प्रश्न एक गंभीर उत्तर का हकदार है, लेकिन दुर्भाग्य से न तो मेरी वर्तमान मानसिक स्थिति और न ही मेरी शारीरिक स्थिति इसकी अनुमति देती है। मैं आपके प्रश्न से जुड़े एक या दो बिंदुओं का बहुत ही संक्षिप्त रूप से उल्लेख करूँगा।

आपके प्रश्न से संकेत मिलता है कि धर्म के सच्चे मार्ग से भटके नास्तिकों ने "पाँच गुप्त चीजों" में से बारिश के समय और गर्भ में भ्रूण की प्रकृति के बारे में आपत्तियाँ और आलोचनाएँ की हैं। उन्होंने कहा है: "वेधशाला में लगे उपकरण यह पता लगा सकते हैं कि बारिश कब होगी, इसलिए ईश्वर के अलावा कोई और जानता है। साथ ही, एक्स-रे के ज़रिए भ्रूण का लिंग भी जाना जा सकता है।

इसका मतलब यह है कि “पाँच छिपी हुई बातें” जानना संभव है।

उत्तर: बारिश का समय किसी नियम से नहीं, बल्कि सीधे ईश्वरीय इच्छा से जुड़ा है। दया के भण्डार से प्रकट होने वाली बुद्धि का एक उदाहरण किसी विशेष ईश्वरीय इच्छा पर निर्भर है:

ब्रह्मांड में सबसे महत्वपूर्ण और सबसे मूल्यवान चीजें अस्तित्व, जीवन, प्रकाश और दया हैं। ये बिना किसी मध्यस्थ या आवरण के सीधे ईश्वरीय शक्ति और एक विशेष ईश्वरीय इच्छा को देखते हैं। अन्य प्राणियों के साथ, स्पष्ट कारण ईश्वरीय शक्ति के निपटान के लिए आवरण हैं, और नियमित कानून और सिद्धांत एक हद तक ईश्वरीय इच्छा और इच्छा को छिपाते हैं। हालाँकि, अस्तित्व, जीवन, प्रकाश और दया पर ऐसा कोई आवरण नहीं रखा गया है, क्योंकि वे जिस उद्देश्य की पूर्ति करते हैं, वह उन चीजों में लागू नहीं होता है।

चूँकि अस्तित्व में सबसे महत्वपूर्ण सत्य दया और जीवन हैं, और वर्षा जीवन का स्रोत और दया का साधन है, वास्तव में शुद्ध दया है, निश्चित रूप से मध्यस्थ इसे ढक नहीं पाएंगे, न ही कानून और नीरसता उन इच्छाओं को छिपा पाएगी जो केवल ईश्वर की हैं। इस तरह हर किसी को हर परिस्थिति में हर समय धन्यवाद और पूजा और प्रार्थना और प्रार्थना करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। यदि वर्षा को किसी कानून के अंतर्गत शामिल किया जाता, तो हर कोई कानून पर निर्भर होता और धन्यवाद और प्रार्थना का द्वार बंद हो जाता।

[16] देखें, बुखारी, इस्तिस्का', 29; तफ़सीर सूरा 6:1; 13:1; 31:2; तौहीद, 4; मुसनद, द्वितीय, 24; 52, 58, 122.

यह तो स्पष्ट है कि सूर्य के उदय होने के अनेक लाभ हैं, लेकिन चूँकि यह एक नियमित नियम से बंधा हुआ है, इसलिए इसके उदय होने के लिए प्रार्थना नहीं की जाती और न ही धन्यवाद दिया जाता है। और चूँकि नियम के कारण यह मानव ज्ञान का अंग है कि यह कल फिर उदय होगा, इसलिए इसे अदृश्य की बातों में नहीं गिना जाता। लेकिन वर्षा की विशेष घटनाएँ किसी नियम का पालन नहीं करतीं, इसलिए मनुष्य को हमेशा प्रार्थना और प्रार्थना के साथ ईश्वर के दरबार में शरण लेनी पड़ती है। मानव ज्ञान वर्षा के समय को निर्दिष्ट करने में असमर्थ रहा है, इसलिए मनुष्य इसे केवल दया के भण्डार से प्राप्त एक विशेष उपहार मानते हैं, और सच्चे मन से धन्यवाद देते हैं।

परिणामस्वरूप, कविता में बारिश के गिरने के समय को "पाँच गुप्त चीजों" में शामिल किया गया है। वेधशालाओं में उपकरणों के साथ बारिश की प्रारंभिकताओं का अनुमान लगाना और वर्षा के समय को निर्दिष्ट करना अदृश्य को जानना नहीं है, बल्कि अदृश्य की दुनिया से उभरने और प्रकट दुनिया के करीब पहुँचने पर इसकी कुछ प्रारंभिकताओं का अध्ययन करके जानना है। जब अदृश्य की सबसे गुप्त घटनाएँ घटती हैं, या जब वे घटित होने के करीब होती हैं, तो उन्हें एक तरह के पूर्वाभास के माध्यम से देखा जा सकता है। लेकिन यह अदृश्य को जानना नहीं है, बल्कि यह जानना है कि कुछ मौजूद है या अस्तित्व के करीब है। वास्तव में, मैं कभी-कभी अपनी नसों में संवेदनशीलता के कारण बारिश आने से चौबीस घंटे पहले ही उसे महसूस कर लेता हूँ। यानी, बारिश की प्रारंभिकताएँ, अग्रदूत होते हैं; वे एक तरह की नमी के माध्यम से खुद को महसूस कराते हैं, जिससे यह पता चलता है कि बारिश आने वाली है। एक नियम की तरह, यह स्थिति उन मामलों तक पहुँचने का एक साधन है जो अदृश्य की दुनिया से निकल चुके हैं लेकिन अभी तक प्रकट दुनिया में प्रवेश नहीं कर पाए हैं। परन्तु यह जानना कि वर्षा कब होगी, जबकि अभी तक प्रकट जगत में उसका पैर नहीं पड़ा है, तथा जिसने किसी विशेष दैवी इच्छा से दया का भण्डार नहीं छोड़ा है, यह अदृश्य को सर्वज्ञ मानने वाले के लिए विशेष बात है।

दूसरा मामला

एक्स-रे के माध्यम से यह जानना कि गर्भ में बच्चा लड़का है या लड़की, आयत के अर्थ के विपरीत नहीं है, "और वह जो जानता है कि गर्भ में क्या है," (31:34) जो अदृश्य को संदर्भित करता है। क्योंकि आयत का अभिप्राय बच्चे की विशेष क्षमता और उसके जीवन के नियत मार्ग की प्रारंभिक जानकारी है, जिसे वह भविष्य में प्राप्त करेगा, और यहाँ तक कि उसके चेहरे पर अनंत काल तक चाहने वाले की अद्भुत मुहर भी है - इस तरह से जाना जाने वाला बच्चा अदृश्य के बारे में जानने वाले के लिए विशेष है।17 भले ही मनुष्यों के सौ हज़ार एक्स-रे जैसे दिमाग एक साथ मिल जाएँ, फिर भी वे उसकी असली विशेषताओं को नहीं खोज पाएँगे, जिनमें से प्रत्येक एक ऐसा चिह्न है जो बच्चे को मानव शरीर के अन्य सभी अंगों से अलग करता है।

[17] देखें, बुखारी, बद अल-ख़ल्क़, 6; अंबिया', 1; मुस्लिम, क़दर,1.

तो फिर वे इसकी क्षमताओं की गैर-भौतिक विशेषताओं की खोज कैसे कर सकते थे, जो इसकी भौतिक विशेषताओं से सौ गुना अधिक अद्भुत हैं।

हमने शुरू में कहा था कि अस्तित्व, जीवन और दया ब्रह्मांड में सबसे महत्वपूर्ण सत्य हैं और सबसे महत्वपूर्ण स्थान उनका है। इसलिए, जीवन के व्यापक सत्य को उसके सभी सूक्ष्म बिंदुओं और सूक्ष्मताओं के साथ ईश्वरीय इच्छा और कामना और दया की ओर देखने का एक कारण यह है: चूँकि जीवन अपनी सभी क्षमताओं के साथ धन्यवाद और पूजा का स्रोत और साधन है, इसलिए नियम और नीरसता - जो ईश्वर की इच्छा के लिए एक पर्दा हैं, और स्पष्ट मध्यस्थ - जो उसकी दया को छिपाते हैं, उस पर नहीं रखे गए हैं। सर्वशक्तिमान ईश्वर की अजन्मे बच्चों की भौतिक

और गैर-भौतिक विशेषताओं में दो अभिव्यक्तियाँ हैं।

एक दिव्य एकता, एकता और शाश्वत प्रार्थना को दर्शाता है, क्योंकि बच्चा अपने मूल अंगों और मानवीय क्षमताओं के संबंध में अन्य मनुष्यों के समान होने के द्वारा दिव्य एकता की गवाही देता है। इस जीभ से वह चिल्लाता है: "जिसने मुझे ये विशेषताएँ और अंग दिए हैं, वह सभी मनुष्यों का निर्माता है, क्योंकि वे मूल अंगों के संबंध में मेरे समान हैं, और वह सभी जीवित प्राणियों का निर्माता भी है।"

गर्भ में पल रहे बच्चे की यह भाषा अदृश्य से संबंधित नहीं है; इसे जाना जा सकता है क्योंकि यह एक कानून और सामान्य नियम और प्रजाति का पालन करती है। यह प्रकट दुनिया की एक शाखा और भाषा है जो अदृश्य की दुनिया में प्रवेश कर चुकी है।

दूसरा पहलू: अपनी विशेष क्षमता और अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं की विशेषताओं की जीभ से, यह अपने निर्माता की पसंद, इच्छा और विशेष दया की घोषणा करता है और यह कि वह किसी प्रतिबंध के अधीन नहीं है। लेकिन यह जीभ सबसे गहरे अदृश्य से आती है; पूर्व-शाश्वत ज्ञान के अलावा कोई भी इसे अस्तित्व में आने से पहले नहीं देख सकता है, न ही इसे समझ सकता है। इन विशेषताओं को गर्भ में रहते हुए नहीं जाना जा सकता है, भले ही बच्चे के हज़ार सदस्यों में से कोई एक दिखाई दे!

संक्षेप में: भ्रूण की जन्मजात क्षमता और उसकी शारीरिक विशेषताएं ईश्वरीय एकता और ईश्वरीय इच्छा और पसंद के प्रमाण दोनों ही प्रस्तुत करती हैं। यदि सर्वशक्तिमान ईश्वर सफलता प्रदान करते हैं, तो "पाँच छिपी हुई चीज़ों" के बारे में कई और बिंदु लिखे जाएँगे। लेकिन अभी मेरे पास और समय नहीं है और मेरी स्थिति इसकी अनुमति नहीं देती, इसलिए मैं यहीं समाप्त करता हूँ।

वह जो धीरज धरता है, वह वही है जो धीरज धरता है!

एस सहायता एन भालू

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

उसके नाम में उसकी महिमा हो!
और कोई चीज़ उसकी प्रशंसा से पवित्रता का गुणगान करने से नहीं चूकती । (17:44)

मेरे प्रिय, वफादार, जिज्ञासु भाई, रेफ़ेट बे!

आपने अपने पत्र में दस सूक्ष्म शक्तियों के बारे में पूछा है। वर्तमान में सूफी तरीके से शिक्षा देना उचित नहीं है; वैसे भी नक्शबंदी संप्रदाय के विद्वान शेखों द्वारा उनके बारे में लिखी गई रचनाएँ मौजूद हैं। वर्तमान समय में हमारा कर्तव्य रहस्यों को उजागर करना है, न कि मौजूदा मामलों को बताना। नाराज़ मत होइए, मैं विस्तृत जानकारी नहीं दे सकता। मैं केवल इतना ही कहूँगा: इमाम-ए रब्बानी ने दस सूक्ष्म शक्तियों को हृदय, आत्मा, आंतरिक हृदय (सिर्र), ख़फ़ी, अख़फ़ा और मनुष्य के चार तत्वों में से प्रत्येक से संबंधित एक शक्ति के रूप में परिभाषित किया है, और उन्होंने आध्यात्मिक यात्रा के प्रत्येक चरण में एक शक्ति की प्रगति पर संक्षेप में चर्चा की है।

मैं स्वयं देखता हूँ कि मनुष्य के व्यापक स्वभाव और प्राणिक क्षमताओं में अनेक सूक्ष्म क्षमताएँ हैं, जिनमें से दस प्रसिद्ध हो चुकी हैं। दार्शनिकों और साहित्यकार विद्वानों ने उन दस क्षमताओं को दूसरे रूप में अपने सिद्धांतों का आधार बनाया और उन्हें पाँच बाह्य इन्द्रियाँ और पाँच आंतरिक इन्द्रियाँ कहा, ये दस क्षमताओं की खिड़कियाँ या नमूने हैं। वास्तव में, मनुष्य की दस सूक्ष्म क्षमताएँ, जो विद्वानों और आम लोगों दोनों को ही अच्छी तरह से ज्ञात हैं, सूफियों की दस सूक्ष्म क्षमताओं से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, यदि हृदय, आत्मा और आंतरिक हृदय में विवेक, तंत्रिकाएँ, भावनाएँ, बुद्धि, इच्छाएँ, पशु तृष्णा की शक्ति और क्रोध की शक्ति जैसी क्षमताएँ जोड़ दी जाएँ, तो दस सूक्ष्म क्षमताएँ दूसरे तरीके से दिखाई देती हैं। इनके अलावा और भी बहुत सी क्षमताएँ हैं, जैसे पूर्वाभास की भावना और विभिन्न प्रेरक और क्षुधावर्धक शक्तियाँ। इस प्रश्न का पूरा विवरण देना बहुत लंबा होगा और चूँकि मेरे पास समय कम है, इसलिए मैं इसे छोटा करने के लिए बाध्य हूँ।

जहाँ तक तुम्हारे दूसरे प्रश्न का प्रश्न है, कि चीज़ों का वह पहलू जो स्वयं को देखता है, और वह पहलू जो अपने निर्माता को देखता है (मन-यी इस्मी और मन-यी हार्फ़ी), उन्हें अरबी व्याकरण की सभी पुस्तकों की शुरुआत में समझाया गया है। इसके अलावा, द वर्ड्स एंड लेटर्स नामक वास्तविकता के विज्ञान की रचनाओं में उनके बारे में पर्याप्त व्याख्याएँ, तुलनाओं के साथ मौजूद हैं। आप जैसे बुद्धिमान और सटीक व्यक्ति के लिए आगे की चर्चा अनावश्यक होगी। यदि तुम आईने को देखते समय उसे शीशे के लिए देखते हो, तो तुम जानबूझ कर शीशे को देखोगे; रेफ़त दूसरी बार, अप्रत्यक्ष रूप से आँख पर लगेगी। जबकि यदि तुम्हारा उद्देश्य अपना धन्य चेहरा देखने के लिए आईने को देखना है, तो तुम जानबूझ कर प्यारे रेफ़त को देखोगे। तुम कहोगे: "अतः धन्य है अल्लाह, जो सब से श्रेष्ठ रचयिता है!" (23:14) आईने का शीशा दूसरी बार और अप्रत्यक्ष रूप से तुम्हारी आँख पर लगेगा।

इस प्रकार, पहले उदाहरण में, दर्पण का शीशा 'वह अर्थ है जो वस्तु को ही देखता है', जबकि रेफ़ेट उसका 'संकेतक अर्थ' है। दूसरे उदाहरण में, दर्पण का शीशा 'संकेतक अर्थ' है, अर्थात, इसे अपने लिए नहीं बल्कि दूसरे अर्थ के लिए देखा जाता है; यानी प्रतिबिंब। प्रतिबिंब 'वह अर्थ है जो वस्तु को ही देखता है।' अर्थात, यह एक तरह से "यह अपने आप में एक अर्थ की ओर इशारा करता है" की परिभाषा में शामिल है। जबकि दर्पण अपने 'संकेतक अर्थ' की परिभाषा को सत्यापित करता है, जो है "यह दूसरे के अर्थ की ओर इशारा करता है।"

कुरान के अनुसार, ब्रह्मांड में सभी प्राणी अक्षर हैं, जो अपने 'संकेतक अर्थ' के माध्यम से दूसरे के अर्थ को व्यक्त करते हैं। यानी, वे उस दूसरे के नाम और गुण बताते हैं। आत्माविहीन दर्शन अधिकांशतः 'उस अर्थ के अनुसार दिखता है जो वस्तु को ही देखता है' और प्रकृति के दलदल में भटक जाता है। हालाँकि, मेरे पास अब ज़्यादा बात करने का समय नहीं है। वास्तव में, मैं इंडेक्स का अंतिम और सबसे आसान और सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा भी नहीं लिख सकता।

अपने अध्ययन साथियों को मेरा नमस्कार पहुँचाएँ, खास तौर पर हुस्रेव, बेकिर, रुशदु, लुत्फु, शेख मुस्तफ़ा, हाफ़िज़ अहमद, सेज़ई, मेहमद और होजा। मैं आपके घराने के धन्य मासूमों के लिए प्रार्थना करता हूँ।

वह जो धीरज धरता है, वह वही है जो धीरज धरता है!

आपका भाई,

एस सहायता एन भालू

सत्रहवाँ फ्लैश

[इस फ़्लैश में ज़ुहरे से लिए गए पंद्रह नोट्स शामिल हैं।]

परिचय

इस फ्लैश के लिखे जाने से बारह साल पहले, मैंने अरबी में ज़ुहरे, शुले, हब्बे, शेमे, ज़ेरे और कात्रे जैसे ग्रंथों में नोट के रूप में दिव्य एकता से संबंधित कई फ्लैश लिखे थे, जो आत्मा के विकास और मन की प्रगति और दिव्य ज्ञान में हृदय की यात्रा के दौरान प्रभु की कृपा से मेरे लिए स्पष्ट हो गए थे। लेकिन चूँकि वे एक लंबी सच्चाई के सिर्फ़ एक सिरे को दिखाने और एक चमकती हुई रोशनी की सिर्फ़ एक किरण को इंगित करने के लिए लिखे गए थे, और चूँकि प्रत्येक मेरे लिए सिर्फ़ एक स्मृति चिन्ह और अनुस्मारक के रूप में था, इसलिए दूसरों के लिए उनका लाभ सीमित था, और विशेष रूप से क्योंकि मेरे सबसे चुनिंदा और ख़ास भाइयों में से ज़्यादातर अरबी पढ़ने में असमर्थ थे। इसलिए, उनके आग्रह और ज़ोरदार अनुरोधों पर, मुझे उन नोट्स, उन फ्लैश का एक अनुमान तुर्की में लिखना पड़ा, जो आंशिक रूप से उन्हें व्याख्यायित करते थे और आंशिक रूप से उन्हें संक्षिप्त करते थे। चूँकि ये नोट्स और अरबी ग्रंथ वास्तविकता के ज्ञान से आगे बढ़ने वाले नए सईद के कार्यों में से पहला हैं, जिसे उन्होंने कुछ हद तक रोशनी के रूप में देखा था, उनके अर्थ अपरिवर्तित लिखे गए हैं। इस वजह से, कई वाक्यों को यहाँ शामिल किया गया है, जबकि उनका उल्लेख अन्य वचनों में किया गया है। और कुछ को बहुत संक्षिप्त होने के बावजूद व्याख्यायित नहीं किया गया है, ताकि मूल की परिष्कृतता खो न जाए।

[1] बारह वर्ष पहले यह 1340/1921 था।

पहला नोट

मैंने अपने आप से कहा: ऐ ग़ाफ़िल सईद! जान ले कि ऐसी चीज़ से दिल लगाना तेरे लिए नाक़ाबिले-तारीफ़ है जो दुनिया के ख़त्म होने के बाद तेरे साथ न रहे और दुनिया के खत्म होने पर तुझसे जुदा हो जाए। ऐसी चीज़ों से दिल लगाना मुनासिब नहीं जो तेरी उम्र के खत्म होने पर तुझसे मुँह मोड़ लें और तुझे छोड़ दें, और बीच की दुनिया में तेरे साथ न चलें और न क़ब्र के दरवाज़े तक तेरे साथ चलें, और जो एक या दो साल बाद तुझे हमेशा के लिए छोड़कर अपने गुनाहों से तुझे लाद लें और काम पूरा होने के वक़्त नाराज़गी में तुझे छोड़ दें।

अगर तुम समझदार हो तो तुम उन चीज़ों को छोड़ दोगे जो सांसारिक क्रांतियों और मध्यलोक की अवस्थाओं और परलोक की टकराहटों के प्रहारों में बिखर जाएँगी और नष्ट हो जाएँगी; जो अनंतकाल की यात्रा में तुम्हारा साथ देने और तुम्हारा मित्र बनने में समर्थ नहीं हैं। उन्हें महत्व मत दो! उनके जाने पर शोक मत करो!

अपनी प्रकृति पर विचार करें; आपकी सूक्ष्म शक्तियों में से एक ऐसी है जो अनंत काल और शाश्वत परमेश्वर के अलावा किसी और चीज़ से संतुष्ट नहीं होगी। यह सिर्फ़ उसी से बात कर सकती है। यह किसी और के लिए खुद को नीचा नहीं दिखा सकती। अगर आप इसे पूरी दुनिया दे दें, तो भी यह अपनी जन्मजात ज़रूरत को पूरा नहीं कर पाएगी। यह आपकी इंद्रियों और शक्तियों का स्वामी है। इसलिए इसकी आज्ञा का पालन करें, क्योंकि यह सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता की आज्ञा का पालन करती है! मोक्ष पाएँ!

दूसरा नोट

मुझे एक सच्चा सपना आया जिसमें मैंने लोगों से कहा: "हे मनुष्य! कुरान का एक सिद्धांत यह है: सर्वशक्तिमान ईश्वर के अलावा किसी और चीज़ को अपने से बड़ा मत समझो, इस हद तक कि तुम उसकी पूजा करो। और अपने आप को किसी और चीज़ से इतना बड़ा मत समझो कि तुम उसके सामने अहंकारी और घमंडी बन जाओ। क्योंकि जिस तरह सभी प्राणी पूजा के योग्य होने से दूरी के मामले में समान हैं, उसी तरह वे अपनी रचना के मामले में भी समान हैं।"

[2] देखें, बुखारी, रिकाक, 42; मुस्लिम, ज़ुहद, 5; नसाई, जनाईज़, 52; मुसनद, iii, 110.

तीसरा नोट

हे असावधान! तुम भ्रम में हो और इस अस्थाई संसार को अमर और स्थायी समझते हो। जब तुम अपने चारों ओर संसार को देखते हो, तो तुम उसे एक सीमा तक स्थिर और निरन्तर देखते हो। चूँकि तुम उसी दृष्टि से देखते हो, इसलिए तुम अपने स्वयं के क्षणभंगुर स्वरूप को भी निरन्तर मानते हो, इसलिए तुम केवल प्रलय के दिन से ही भयभीत हो। तुम केवल उससे ही भयभीत हो, मानो तुम तब तक जीवित रहने वाले हो।

अपने तर्क का उपयोग करें! आप और आपकी व्यक्तिगत दुनिया हमेशा मृत्यु और पतन के प्रहारों के अधीन हैं। आपका भ्रम और कुतर्क इस तुलना से मिलते जुलते हैं: यदि आपके पास एक दर्पण है और आप इसे किसी घर, शहर या बगीचे के सामने रखते हैं, तो उनकी छवियाँ उसमें दिखाई देंगी। यदि दर्पण को थोड़ा सा भी हिलाया जाए या उसमें थोड़ा सा भी परिवर्तन किया जाए, तो छवियाँ भ्रमित और विकृत हो जाती हैं। यह तथ्य कि दर्पण के बाहर वास्तविक घर, शहर या बगीचा जारी है और स्थिर है, आपके लिए कोई लाभ नहीं है, क्योंकि आपके हाथ में दर्पण में घर और आपका शहर और बगीचा केवल उस पैमाने और अनुपात में हैं जो दर्पण आपको देता है।

आपका जीवन ही दर्पण है। आपकी दुनिया और उसके केंद्र का आधार और दर्पण आपका जीवन है। हर पल यह संभव है कि घर, शहर और बगीचा मर जाएँ और नष्ट हो जाएँ, उनकी हालत ऐसी है कि किसी भी पल वे आपके सिर पर गिर सकते हैं और आपका प्रलय आ जाएगा। चूँकि ऐसा ही है, इसलिए अपने इस जीवन और दुनिया पर ऐसे बोझ मत डालिए जो वे उठा नहीं सकते और संभाल नहीं सकते!

चौथा नोट

जान लें कि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता का सामान्यतः यह अभ्यास है कि वह महत्वपूर्ण और मूल्यवान चीज़ों को बिल्कुल वैसा ही लौटाता है। अर्थात्, ऋतुओं के परिवर्तन और शताब्दियों के परिवर्तन में अधिकांश चीज़ों को समान रूप में नवीनीकृत करते हुए, वह मूल्यवान और महत्वपूर्ण चीज़ों को बिल्कुल वैसा ही लौटाता है। ईश्वरीय अभ्यास का यह नियम दिनों, वर्षों और शताब्दियों के पुनरुत्थान में अधिकतर अपरिवर्तित देखा जाता है।

इस निरंतर नियम के परिणामस्वरूप, हम कहते हैं: चूंकि विज्ञान की सहमति और प्रमाण के अनुसार, मनुष्य सृष्टि के वृक्ष का सबसे उत्तम फल है, और प्राणियों में सबसे महत्वपूर्ण और सबसे मूल्यवान है, और चूंकि एक मानव व्यक्ति अन्य प्राणियों की एक प्रजाति के बराबर है

[3] देखें, अल-ग़ज़ाली, इह्या' 'उलूम अल-दीन, iv, 64; अल-'अजलूनी, कशफ अल-खफा', ii, 368।

जानवरों के मामले में, यह निश्चितता के साथ अनुमान लगाया जा सकता है कि सर्वोच्च पुनरुत्थान के समय, प्रत्येक मनुष्य को उसके शरीर और उसकी सभी विशेषताओं के साथ बिल्कुल वैसा ही लौटाया जाएगा।

पांचवां नोट

पश्चिमी विज्ञान और सभ्यता का कुछ हद तक पुराने सईद के विचारों में स्थान था, इसलिए जब नए सईद ने मन और हृदय की अपनी यात्राएँ शुरू कीं, तो वे हृदय की बीमारियों में बदल गईं और अत्यधिक कठिनाइयों का कारण बन गईं। इसलिए नया सईद अपने मन से उस भ्रामक दर्शन और भ्रष्ट सभ्यता को दूर करना चाहता था। अपनी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा की भावनाओं को शांत करने के लिए, जो यूरोप के पक्ष में गवाही देती थी, वह अपनी आत्मा में यूरोप के सामूहिक व्यक्तित्व के साथ निम्नलिखित चर्चा करने के लिए बाध्य था - जो एक मामले में बहुत संक्षिप्त और दूसरे में लंबी है।

इसे गलत नहीं समझा जाना चाहिए; यूरोप दो भागों में है। एक यूरोप न्याय और अधिकार की सेवा करने वाले विज्ञानों का अनुसरण करता है और दूसरा उद्योग समाज के जीवन के लिए लाभदायक है, क्योंकि उसे सच्ची ईसाई धर्म से प्रेरणा मिली है; मैं इस पहले यूरोप की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं दूसरे भ्रष्ट यूरोप की बात कर रहा हूँ, जिसने सभ्यता की बुराइयों को अपना गुण मानकर प्रकृतिवाद के दर्शन के अंधकार के माध्यम से मानव जाति को बुराई और गुमराही की ओर धकेल दिया है। इस प्रकार:

उस समय अपनी आत्मा की यात्रा पर मैंने यूरोप के सामूहिक व्यक्तित्व से कहा था, जो लाभकारी विज्ञान और सभ्यता के गुणों के अलावा, अपने हाथ में अर्थहीन, हानिकारक दर्शन और विषैली, लम्पट सभ्यता रखता है:

हे दूसरे यूरोप, यह जान लो! तुम अपने दाहिने हाथ में एक बीमार और गुमराह दर्शन और अपने बाएं हाथ में एक हानिकारक और भ्रष्ट सभ्यता रखते हो, और दावा करते हो, "मानव जाति की खुशी इन दोनों में है!" तुम्हारे दोनों हाथ टूट जाएँ और तुम्हारे ये दो गंदे उपहार तुम्हारी मौत का कारण बनें! और ऐसा ही होगा!

हे अभागे आत्मा, जो अविश्वास और कृतघ्नता फैलाता है! क्या वह व्यक्ति जो अपनी आत्मा, अपने विवेक, अपने मन और अपने हृदय में भयंकर विपत्तियों से पीड़ित है, क्या वह अपने शरीर को दिखावटी, भ्रामक चमक-दमक और धन-दौलत में डूबाकर खुश रह सकता है? क्या यह कहा जा सकता है कि वह खुश है?

क्या तुम नहीं देखते कि किसी छोटी सी बात पर निराशा होने पर, किसी भ्रामक कामना की आशा टूट जाने पर, किसी तुच्छ काम से मोहभंग हो जाने पर, ऐसे मनुष्य की मधुर कल्पनाएं भी उसके लिए कड़वी हो जाती हैं,

जो सुखद है, वह उसे पीड़ा देता है, और संसार उसे जकड़ लेता है और उसके लिए कारागार बन जाता है? लेकिन तुम ऐसे अभागे को क्या सुख दे सकते हो, जो तुम्हारे अशुभ के कारण अपने हृदय के गहरे कोनों से लेकर आत्मा की नींव तक पथभ्रष्टता के आघातों को झेल चुका है, और जिसके कारण उसकी सारी आशाएँ बुझ गई हैं और जिसके सारे दुःख उसी से उत्पन्न हुए हैं? क्या यह कहा जा सकता है कि जिसका शरीर झूठे और क्षणभंगुर स्वर्ग में है और जिसका हृदय और आत्मा नरक की यातनाएँ भोग रहे हैं, वह सुखी है? देखो, तुमने इस प्रकार अभागे मनुष्य को भटका दिया है! तुम उन्हें झूठे स्वर्ग में नरक की यातनाएँ भोगने देते हो!

हे मानवजाति की दुष्ट आत्मा! निम्नलिखित तुलना पर विचार करें और देखें कि आपने मानवजाति को कहाँ पहुँचा दिया है। उदाहरण के लिए, हमारे सामने दो रास्ते हैं। हम उनमें से एक पर चलते हैं और देखते हैं कि हर कदम पर कोई न कोई दुखी, शक्तिहीन व्यक्ति खड़ा है। अत्याचारी उस पर हमला कर रहे हैं, उसकी संपत्ति और सामान जब्त कर रहे हैं, और उसके साधारण घर को नष्ट कर रहे हैं।

कभी-कभी वे उसे घायल भी कर देते हैं। उसकी दयनीय स्थिति पर स्वर्ग भी रोता है। जिधर देखो, सब कुछ इसी तरह चल रहा है। इस रास्ते पर जो आवाजें सुनाई देती हैं, वे अत्याचारियों की दहाड़ और उत्पीड़ितों की कराहें हैं; एक सार्वभौमिक शोक पूरे रास्ते को घेरे हुए है। मनुष्य असीम दुःख से पीड़ित है, क्योंकि अपनी मानवता के कारण मनुष्य दूसरों के दुःख को देखकर दुःखी होता है। लेकिन चूँकि उसका विवेक इतना दुःख सहन नहीं कर सकता, इसलिए इस रास्ते पर चलने वाला व्यक्ति दो कामों में से एक करने को विवश होता है: या तो वह अपनी मानवता को त्याग दे और असीम बर्बरता को अपनाते हुए ऐसा हृदय रखे कि जब तक वह सुरक्षित और स्वस्थ है, तब तक उसे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, चाहे बाकी सारी मानवजाति नष्ट हो जाए, या फिर वह हृदय और बुद्धि की माँगों को दबा दे।

हे यूरोप, जो पाप और पथभ्रष्टता से भ्रष्ट हो गया है और ईसा के धर्म से दूर चला गया है! तूने अपनी अंधी बुद्धि से मानव आत्मा को यह नारकीय स्थिति प्रदान की है, जो दज्जाल4 की तरह केवल एक आँख5 है। बाद में तूने समझा कि यह असाध्य रोग मनुष्य को ऊँचे से नीचे की ओर गिरा देता है और उसे पशुता के सबसे निचले स्तर पर गिरा देता है। इसके लिए तूने केवल मनोरंजन और मन बहलाव की कल्पनाएँ और सुखदायक मनोरंजन खोजे हैं, जो अस्थायी रूप से इंद्रियों को सुन्न कर देते हैं। तेरे ये उपचार तेरे लिए मृत्यु का कारण बन रहे हैं, और ऐसा ही होगा। बस! तूने मानवजाति के लिए जो मार्ग खोला है और जो सुख दिया है, वह इस तुलना से मिलता-जुलता है।

दूसरा मार्ग, जो पवित्र क़ुरआन ने मनुष्य को प्रदान किया है, वह इस प्रकार है: हम देखते हैं कि प्रत्येक पड़ाव, प्रत्येक स्थान, प्रत्येक नगर में न्यायप्रिय सम्राट के न्यायप्रिय सैनिक गश्त कर रहे हैं।

---

[4] दज्जाल: मसीह विरोधी, समय के अंत में आने से संबंधित। (ट्र.)

[5] देखें, बुखारी, अंबिया', 48; लिबास, 68; ताबीर, 11, 13; फ़ितन, 26; मुसलमान, आस्था, 273-6.

समय-समय पर राजा के आदेश पर सैनिकों के एक समूह को छुट्टी दे दी जाती है। उनसे राज्य से संबंधित राइफलें, घोड़े और गियर ले लिए जाते हैं और उन्हें उनके छुट्टी के कागजात दिए जाते हैं। जाहिर तौर पर वे अपनी जानी-पहचानी राइफलें और घोड़े सौंपने से दुखी होते हैं, लेकिन वास्तव में वे छुट्टी मिलने से खुश होते हैं और राजा से मिलने और उनके दरबार में वापस लौटने से बेहद प्रसन्न होते हैं।

कभी-कभी सेना से बाहर किए जाने वाले अधिकारियों को कोई नया सैनिक मिल जाता है जो उन्हें पहचानता नहीं है। वे कहते हैं, "अपनी राइफल सौंप दो!" सैनिक जवाब देता है: "मैं राजा का सिपाही हूँ और उनकी सेवा में हूँ। मैं बाद में उनके पास जाऊँगा। तुम कौन हो? अगर तुम उनकी अनुमति और सहमति से आते हो, तो मैं तुम्हें खुशी से सलाम करता हूँ, मुझे उनके आदेश दिखाओ।

अन्यथा चले जाओ और मुझसे दूर रहो। भले ही मैं अकेला रहूँ और तुम्हारे जैसे हज़ारों लोग हों, मैं फिर भी तुमसे लड़ूँगा, और यह मेरे लिए नहीं होगा, क्योंकि मैं खुद का मालिक नहीं हूँ; मैं अपने राजा का हूँ। दरअसल, मेरा खुद का और मेरे पास जो राइफल है, वह मेरे मालिक की अमानत है। मैं तुम्हारे सामने नहीं झुकूँगा क्योंकि मुझे अमानत की रक्षा करनी है और अपने राजा के सम्मान और गरिमा की रक्षा करनी है!"

यह स्थिति दूसरे रास्ते पर हज़ारों में से एक है जो खुशी और आनंद का कारण है। आप खुद ही बाकी के बारे में सोच सकते हैं। पूरी यात्रा में जन्म के नाम पर खुशी और जश्न के साथ सैनिकों का जमावड़ा और रवाना होना होता है, और मृत्यु के नाम पर जयकार और सैन्य बैंड के साथ सैनिकों का उतरना होता है। यह रास्ता इंसानों को सर्वज्ञ कुरान द्वारा प्रदान किया गया है।

जो भी व्यक्ति इस उपहार को पूरे दिल से स्वीकार करता है, वह इस दुनिया और अगले जन्म में खुशियों की यात्रा करता है। उसे न तो भूतकाल की बातों पर दु:ख होता है और न ही भविष्य की बातों से डर लगता है।

हे दूसरे भ्रष्ट यूरोप! तुम्हारी कई सड़ी-गली और निराधार नींवें इस प्रकार हैं। तुम कहते हो: “सबसे बड़े देवदूत से लेकर सबसे छोटी मछली तक हर जीवित प्राणी अपने आप का मालिक है और अपने लिए काम करता है और अपने आनंद के लिए संघर्ष करता है। उसे जीवन का अधिकार है। उसका लक्ष्य और उद्देश्य और उसका सारा प्रयास जीना और अपना जीवन जारी रखना है।” और तुम मूर्खतापूर्ण ढंग से घोषणा करते हो: “जीवन संघर्ष है,” क्योंकि तुम संघर्ष को सर्व-उदार सृष्टिकर्ता के सार्वभौमिक नियम की दयालु, उदार अभिव्यक्ति मानते हो जो पौधों के माध्यम से जानवरों की सहायता के लिए और जानवरों द्वारा मनुष्य की सहायता के लिए पारस्परिक सहायता के सिद्धांत के माध्यम से प्रकट होता है, जिसका ब्रह्मांड के सभी प्रमुख प्राणी पूर्ण आज्ञाकारिता में अनुपालन करते हैं।

शरीर की कोशिकाओं को पोषण देने के लिए पूरी तत्परता से दौड़ते हुए भोजन के कण - जो पारस्परिक सहायता के सिद्धांत का प्रकटीकरण है - संघर्ष कैसे हो सकते हैं? यह टकराव और संघर्ष कैसे हो सकता है? बल्कि यह एक उदार पालनकर्ता के आदेश पर पारस्परिक सहायता है।

आपकी एक और सड़ी हुई नींव है, जैसा कि आप कहते हैं: "हर चीज का मालिक है

खुद।" इस बात का स्पष्ट प्रमाण कि कोई भी चीज़ खुद का मालिक नहीं है, यह है: कारणों में सबसे महान और चुनाव के संबंध में सबसे व्यापक इच्छा वाला व्यक्ति मनुष्य है। लेकिन मनुष्य की इच्छा से जुड़े सबसे स्पष्ट कार्यों जैसे सोचना, बोलना और खाना, में से केवल सौवां एकल, संदिग्ध, हिस्सा ही उसकी इच्छा के अधीन है और उसकी शक्ति के भीतर है। तो यह कैसे कहा जा सकता है कि वह खुद का मालिक है?

यदि सबसे व्यापक इच्छाशक्ति वाले सर्वोच्च प्राणी भी इस सीमा तक वास्तविक शक्ति और स्वामित्व से वंचित हैं, तो जो कोई यह कहता है कि शेष सभी प्राणी, सजीव और अचेतन, स्वयं के स्वामी हैं, वह केवल यह सिद्ध करता है कि वह पशुओं से भी अधिक पशु है और निर्जीव प्राणियों से भी अधिक निर्जीव और अचेतन है।

जो चीज़ तुम्हें इस तरह की गलती करने के लिए मजबूर करती है और इस रसातल में ले जाती है, वह है तुम्हारी एक आँख वाली प्रतिभा। यानी तुम्हारी असाधारण, अशुभ प्रतिभा। अपनी उस अंधी प्रतिभा के कारण तुम अपने पालनहार को भूल गए हो, जो सब चीज़ों का रचयिता है, तुमने उसके कामों को काल्पनिक प्रकृति और कारणों पर आरोपित कर दिया है, तुमने रचयिता की संपत्ति को मूर्तियों, झूठे देवताओं में बाँट दिया है। इस संबंध में और तुम्हारी प्रतिभा के अनुसार, हर जीवित प्राणी और हर मनुष्य को अपने असंख्य शत्रुओं का सामना करना पड़ता है और अपनी अंतहीन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। वे एक छोटे कण की शक्ति, एक महीन धागे जैसी इच्छा, एक क्षणभंगुर चमक जैसी चेतना, एक तेज़ बुझने वाली लौ जैसी ज़िंदगी, एक पल में गुज़र जाने वाली ज़िंदगी के साथ ऐसा करने के लिए मजबूर हैं। लेकिन उन दयनीय चेतन प्राणियों की पूंजी उनकी हज़ारों माँगों में से एक का भी जवाब देने के लिए अपर्याप्त है। जब वे विपत्ति से पीड़ित होते हैं, तो वे बहरे, अंधे कारणों के अलावा अपने दर्द के लिए किसी और मरहम की उम्मीद नहीं कर सकते। वे श्लोक का अर्थ प्रकट करते हैं:

> क्योंकि ईमान न रखनेवालों की प्रार्थना तो बस भटकाव के सिवाय और कुछ नहीं है। (13:14)

आपकी अंधेरी प्रतिभा ने मानव जाति के दिन को रात में बदल दिया है। और उस अंधेरी, परेशान करने वाली, अशांत रात को गर्म करने के लिए, आपने केवल भ्रामक, अस्थायी दीपों से मनुष्यों को रोशन किया है। वे दीप उन पर खुशी से नहीं मुस्कुराते हैं, बल्कि उनकी दयनीय और शोकाकुल स्थिति पर मूर्खतापूर्ण तरीके से मुस्कुराते हैं। वे रोशनियाँ उनका मज़ाक उड़ाती हैं और उनका मज़ाक उड़ाती हैं।

आपके शिष्यों की दृष्टि में सभी जीव दुखी, विपत्तिग्रस्त और अत्याचारियों के आक्रमणों के अधीन हैं। संसार सार्वभौमिक शोक का स्थान है।

उसमें से मृत्यु और पीड़ा पर चीखें और विलाप निकलते हैं। जिस शिष्य ने आपकी शिक्षा को पूरी तरह आत्मसात कर लिया है, वह फिरौन बन जाता है। लेकिन वह एक अधम फिरौन है जो सबसे नीच चीजों की पूजा करता है और खुद को हर उस चीज का स्वामी मानता है जिसे वह लाभप्रद समझता है। आपका एक शिष्य जिद्दी है, लेकिन एक जिद्दी नीच जो पूरी तरह से अपमान स्वीकार करता है

एक ही सुख के लिए। वह इतना नीच है कि किसी बेकार के लाभ के लिए शैतान के पैर चूमता है। और वह एक बदमाश है। लेकिन क्योंकि उसके दिल में ऐसा कुछ नहीं है जिस पर वह भरोसा कर सके, वह एक नपुंसक बदमाश है। उसका पूरा उद्देश्य और प्रयास अपनी आत्मा की वासनाओं को संतुष्ट करना, देशभक्ति और भक्ति की आड़ में चालाकी से अपने निजी हितों की तलाश करना और अपनी महत्वाकांक्षा और गर्व को संतुष्ट करने के लिए काम करना है। वह गंभीरता से खुद के अलावा किसी और से प्यार नहीं करता और अपने लिए सब कुछ त्याग देता है।

जहाँ तक कुरान का सच्चा और समर्पित विद्यार्थी का सवाल है, वह एक इबादत करने वाला सेवक है। लेकिन वह एक सम्मानित सेवक है जो सबसे शक्तिशाली प्राणी के सामने भी झुकने के लिए नहीं झुकता और जन्नत के सर्वोच्च लाभ को अपनी इबादत का लक्ष्य नहीं बनाता। और वह नम्र और विनम्र है, लेकिन साथ ही साथ महान और कृपालु है और खुद को केवल महान निर्माता के सामने झुकाता है, और केवल उसकी अनुमति और उसके आदेश पर ही दीन के सामने झुकता है। और वह जरूरतमंद है, लेकिन उसके उदार मालिक द्वारा भविष्य में उसके लिए रखे गए इनाम के कारण वह एक ही समय में आत्मनिर्भर है। और वह कमजोर है, लेकिन वह अपनी कमजोरी में मजबूत है क्योंकि वह अपने भगवान की ताकत पर भरोसा करता है जिसकी शक्ति असीम है। क्या कुरान अपने सच्चे शिष्य को इस क्षणभंगुर, क्षणभंगुर दुनिया को अपना लक्ष्य और उद्देश्य बना देगा, जबकि उसे शाश्वत जन्नत भी उसका लक्ष्य नहीं बनाएगा? इस प्रकार आप समझ सकते हैं कि दोनों शिष्यों के उद्देश्य और प्रयास एक दूसरे से कैसे भिन्न हैं।

आप आगे चलकर विवेकपूर्ण कुरान के उत्साह और आत्म-बलिदान की तुलना कर सकते हैं
बीमार दर्शन के विद्यार्थियों के साथ छात्रों का व्यवहार इस प्रकार है:

दर्शनशास्त्र का विद्यार्थी अपने भाई से अपने स्वार्थ के लिए भाग जाता है और उसके विरुद्ध मुकदमा दायर करता है। जबकि कुरान का विद्यार्थी आकाश और पृथ्वी के सभी धर्मी उपासकों को भाई मानता है, तथा उनके लिए सच्चे मन से प्रार्थना करता है। वह उनकी खुशी से खुश होता है और अपनी आत्मा में उनके साथ एक शक्तिशाली संबंध महसूस करता है, इसलिए प्रार्थना करते हुए वह कहता है: "हे ईश्वर, सभी ईमान वाले पुरुषों और महिलाओं को क्षमा प्रदान करें!" इसके अलावा, वह सबसे बड़ी चीजों, ईश्वरीय सिंहासन और सूर्य को अपने अधीन अधिकारी, सेवक और अपने जैसे प्राणी मानता है।

इसके अलावा, नीचे दिए गए दो छात्रों की आत्मा की महानता और विस्तार की तुलना करें: कुरान अपने छात्रों की आत्माओं को इतनी खुशी से भर देता है कि निन्यानबे प्रार्थना-मालाओं के बजाय, यह उनके हाथों में निन्यानबे दुनियाओं के सूक्ष्म कण रखता है जो निन्यानबे दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित करते हैं, और उन्हें उनके साथ अपनी प्रार्थनाएँ पढ़ने के लिए कहता है। शाह गेलानी, रुफई और शाज़ली (भगवान उनसे प्रसन्न हों) जैसे कुरान के ऐसे छात्रों की प्रार्थनाएँ सुनें!

देखो, उनकी उंगलियों में हैं कणों की डोरियाँ, पानी की बूँदें, सभी की साँसें

वे प्राणियों के साथ मिलकर उनके भजन गाते हैं। वे उनके साथ मिलकर परमेश्वर की स्तुति और महिमा करते हैं और उनके सबसे सुन्दर नामों का उल्लेख करते हैं।

चमत्कारिक व्याख्या के कुरान के चमत्कारी निर्देश को देखिए और देखिए कि इससे मनुष्य कैसे ऊंचा उठता है - तुच्छ मनुष्य जो किसी छोटे से दुःख या छोटे से दुख से स्तब्ध और भ्रमित हो जाता है और एक सूक्ष्म कीटाणु से पराजित हो जाता है। उसकी आंतरिक इंद्रियाँ कैसे इतनी विस्तृत हो जाती हैं कि शक्तिशाली दुनिया के प्राणी उसके आह्वान के लिए प्रार्थना-माला के रूप में अपर्याप्त प्रतीत होते हैं। वह अपने आह्वान और दिव्य नामों के पाठ के उद्देश्य के रूप में स्वर्ग को अपर्याप्त मानता है, फिर भी वह खुद को सर्वशक्तिमान ईश्वर के सबसे निचले प्राणियों से श्रेष्ठ नहीं मानता।6 वह अत्यंत गरिमा को अत्यंत विनम्रता के साथ जोड़ता है। आप इससे देख सकते हैं कि दर्शनशास्त्र कितना नीच और नीच है

छात्र.

इस प्रकार, कुरान का मार्गदर्शन - जो अदृश्य से परिचित दो चमकती आँखों से दो दुनियाओं को देखता है और दो हाथों से मानव जाति के लिए दो खुशियों की ओर इशारा करता है - उन सत्यों के बारे में कहता है जिन्हें यूरोप के बीमार दर्शन से उत्पन्न एक-आंख वाला प्रतिभाशाली व्यक्ति गलत तरीके से देखता है:

हे मनुष्य! जो आत्मा और सम्पत्ति तूने धारण की है, वह तेरी नहीं है; वह तेरी अमानत है। अमानत का स्वामी दयालु और दानशील है, वह सब वस्तुओं पर अधिकार रखता है और सब बातों का ज्ञान रखता है। वह तुझसे वह सम्पत्ति खरीदना चाहता है, जिससे वह उसकी रक्षा कर सके और वह खो न जाए। भविष्य में वह तुझे उसका अच्छा मूल्य देगा। तू आज्ञाओं और कर्तव्यों के अधीन एक सैनिक है। उसके नाम पर काम कर और उसके लिए काम कर, क्योंकि वह तुझे वह वस्तुएँ भेजता है, जिनकी तुझे आवश्यकता है और जो वस्तुएँ तू नहीं उठा सकता, उनसे तेरी रक्षा करता है। तेरे इस जीवन का उद्देश्य और परिणाम अपने स्वामी के नाम और गुणों को प्रकट करना है। जब कोई विपत्ति तेरे मार्ग में आए, तो कह:

हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर हमें लौटना है। (2:156)

अर्थात्, "मैं अपने स्वामी की सेवा में हूँ, हे विपत्ति! यदि आप उनकी अनुमति और सहमति से आए हैं, तो नमस्कार, आपका स्वागत है! वैसे भी कुछ समय के लिए हम उनके पास लौटेंगे और उनकी उपस्थिति में प्रवेश करेंगे, और हम उनके लिए तरसेंगे। चूँकि वे हमें जीवन की ज़िम्मेदारियों से मुक्त करेंगे, इसलिए मुक्ति और मुक्ति आपके हाथों में हो, हे विपत्ति, मैं इसे स्वीकार करता हूँ। लेकिन अगर उन्होंने मेरे विश्वास को बनाए रखने में मेरी कर्तव्यनिष्ठा और निष्ठा के लिए एक परीक्षण के रूप में आपके आने का आदेश दिया है, तो उनकी अनुमति और सहमति के बिना इसे आपको सौंपने के लिए, जब तक मेरे पास शक्ति है, मैं अपने स्वामी के विश्वास को किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं सौंपूंगा जो इसे प्राप्त करने के लिए निश्चित रूप से जिम्मेदार नहीं है।"

एक हजार में से एक उदाहरण पर विचार करें और डिग्री में अंतर देखें।

---

[6] तिर्मिधि, ज़ुहद, 9; इब्न माजा, ज़ुहद, 19.

दर्शनशास्त्र की प्रतिभा और कुरान के मार्गदर्शन द्वारा दी गई शिक्षा। वास्तव में, दोनों पक्ष ऊपर वर्णित तरीके से आगे बढ़ते हैं, लेकिन मार्गदर्शन और गुमराही में लोगों की डिग्री भिन्न होती है, और असावधानी की डिग्री भिन्न होती है। हर कोई हर स्तर पर इस सत्य को पूरी तरह से नहीं समझ सकता, क्योंकि असावधानी इंद्रियों को सुन्न कर देती है। वर्तमान युग में इसने उन्हें इतना सुन्न कर दिया है कि सभ्य लोग इस गंभीर दर्द और पीड़ा को महसूस नहीं करते हैं। हालाँकि, विज्ञान के विकास और मृत्यु की चेतावनियों के कारण संवेदनशीलता बढ़ रही है और असावधानी का पर्दा फाड़ रही है जो हर दिन तीस हज़ार लाशें दिखाती है। उन लोगों के लिए घोर घृणा और हज़ार अफसोस महसूस किए जाने चाहिए जो यूरोपीय मूर्तियों और प्राकृतिक विज्ञानों के कारण गुमराही का रास्ता अपनाते हैं, और जो उनका अंधाधुंध अनुसरण करते हैं

नकल!

हे इस देश के पुत्रों! यूरोपियों की नकल करने की कोशिश मत करो! यूरोप ने तुम पर जो असीम अत्याचार और दुश्मनी दिखाई है, उसके बाद तुम उसके बुरे और अमान्य, बेकार विचारों पर कैसे भरोसा कर सकते हो और उनका अनुसरण कर सकते हो? नहीं! नहीं! तुम जो अनैतिकता में उनका अनुकरण करते हो, तुम उनका अनुसरण नहीं कर रहे हो, बल्कि अनजाने में उनके साथ मिल रहे हो और खुद को और अपने भाइयों को मौत के घाट उतार रहे हो। जान लो कि जितना अधिक तुम अनैतिकता में उनका अनुसरण करोगे, उतना ही अधिक तुम देशभक्त होने का दावा करने में झूठ बोलोगे! क्योंकि इस तरह से उनका अनुसरण करना अपने राष्ट्र का अपमान करना है, राष्ट्र का उपहास करना है!

ईश्वर हमें और आपको सीधे मार्ग पर ले चलता है।

छठा नोट

हे अभागे मनुष्य, जो अविश्वासियों की बड़ी संख्या और विश्वास की कुछ सच्चाइयों को नकारने में उनकी सहमति से घबरा गया है, और परिणामस्वरूप अपने विश्वास में डगमगा गया है! तुम्हें पता होना चाहिए कि मूल्य और महत्व मात्रा और संख्या में नहीं है। क्योंकि अगर मनुष्य सच्चा इंसान नहीं है, तो वह एक शैतानी जानवर में बदल जाता है, और जितना अधिक वह पशु लालच में बढ़ता है, उतना ही अधिक पशु बन जाता है - कुछ यूरोपीय और उनके अनुकरणकर्ताओं की तरह। तुम देख सकते हो कि संख्या में, मनुष्य असंख्य जानवरों की तुलना में बहुत कम हैं, और फिर भी वे पृथ्वी की सभी पशु प्रजातियों और उनके प्रतिनिधियों पर संप्रभु शासक हैं।

ये हानिकारक काफ़िर और उनके मार्ग पर चलने वाले दुष्ट दुष्ट लोग सर्वशक्तिमान ईश्वर के जानवरों में से एक दुष्ट प्रजाति हैं, जिन्हें सर्वज्ञ निर्माता ने दुनिया के विकास और समृद्धि के लिए बनाया है। उसने उन्हें एक माप की इकाई बनाया है ताकि अपने ईमान वाले बंदों को उन पर दिए गए नेमतों की मात्रा से अवगत करा सके, और अंत में उन जानवरों को उस जहन्नुम में डाल देगा जिसके वे हकदार हैं।

काफ़िरों और गुमराहों में ईमान की किसी सच्चाई का इन्कार या विवाद करने की कोई शक्ति नहीं है। उनके इकरार में शक्ति नहीं है; एक हज़ार इन्कार करनेवाले एक इन्कार करनेवाले के बराबर हैं। उदाहरण के लिए, अगर इस्तम्बुल की पूरी आबादी रमज़ान के शुरू में नया चाँद देखने से इन्कार करे, तो दो गवाहों की साबित गवाही उस बड़ी भीड़ के इन्कार और इकरार को अमान्य कर देती है। 7 वास्तव में कुफ़्र और गुमराही इन्कार और इन्कार ही हैं, अज्ञानता और अस्तित्वहीनता भी और बड़ी संख्या में काफ़िरों की इकरार भी कोई महत्व नहीं रखती।8 चूँकि ईमान के मामले सच्चे और स्थापित हैं और उनकी वैधता साबित है, इसलिए दो मोमिनों का एक निश्चित गवाही के आधार पर फ़ैसला उन गुमराह लोगों की बड़ी संख्या की इकरार पर वरीयता लेता है और प्रबल होता है। इसका कारण यह है: सतही तौर पर, इन्कार करनेवालों के दावे एक जैसे हैं लेकिन वास्तव में वे विविध हैं और एक नहीं हो सकते और इसलिए मज़बूती नहीं पा सकते। जबकि इकरार करनेवालों के दावे एक दूसरे से एकजुट होते हैं और मज़बूती पाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक व्यक्ति जो रमज़ान के नए चाँद को आसमान में नहीं देख पाता है, वह कहता है: "मेरे हिसाब से चाँद नहीं है। ऐसा नहीं है कि मैं देख सकूँ।" और दूसरा कहता है: "मेरे हिसाब से चाँद नहीं निकला है।"

और ऐसा ही कुछ और भी कहता है। हर कोई कहता है कि उसके विचार में चाँद नहीं है। चूँकि हर किसी का नज़रिया अलग है, और उसे न देख पाने के कारण भी अलग हो सकते हैं, इसलिए उनके दावे भी अलग-अलग हैं; हर दावा दूसरे दावों को पुष्ट नहीं कर सकता। लेकिन जो लोग इसे पुष्ट कर रहे हैं, वे यह नहीं कह रहे हैं: “मेरे विचार और राय में नया चाँद है,” बल्कि, “नया चाँद वास्तव में आकाश में दिखाई दिया है।” इसे देखने वाले सभी लोग एक ही दावा करते हैं और कहते हैं: “वास्तव में...” यानी, सभी दावे एक जैसे हैं। लेकिन चूँकि इसे नकारने वालों के विचार अलग-अलग हैं, इसलिए उनके दावे भी अलग-अलग हैं। वे जो वास्तव में है, उसके अनुसार निर्णय नहीं कर रहे हैं।

क्योंकि जो वास्तव में प्रासंगिक है उसका निषेध सिद्ध नहीं किया जा सकता; उसके लिए सर्वव्यापी प्रमाण आवश्यक है।

यह एक स्थापित नियम है कि "पूर्ण गैर-अस्तित्व को केवल अत्यंत कठिनाई से ही सिद्ध किया जा सकता है।"9 हाँ, यदि आप दावा करते हैं कि दुनिया में कोई विशेष चीज़ मौजूद है, तो उस चीज़ को इंगित करना ही पर्याप्त है। लेकिन यदि आप कहते हैं कि वह मौजूद नहीं है और आप इसे अस्वीकार करते हैं, तो इसे प्रदर्शित करने के लिए पूरी दुनिया को छानना होगा ताकि इनकार को साबित किया जा सके। इसका परिणाम यह है कि अविश्वासियों द्वारा सत्य को अस्वीकार करना किसी समस्या को हल करने या किसी संकरे छेद से गुजरने या खाई को पार करने जैसा है; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता

---

[7] देखें, अबू दाउद, सॉम, 14; अल-सरख़्सी, अल-मबसुत, iii, 139-40; अल-काशानी, बदाई अल-सनाई, ii, 81-2; अल-मार्गिनानी, अल-हिदाया, आई, 121।

[8] देखिये, कुरान, 59:14.

[9] इब्न क़य्यिम अल-जावज़ी, अल-सवाइक अल-मुर्सला, iv, 1310; इडेम., अल-रूह फ़ि'एल-कलाम, आई, 198.

चाहे एक आदमी हो या हज़ार, क्योंकि वे एक दूसरे की मदद नहीं कर सकते। लेकिन चूँकि जो लोग पुष्टि करते हैं वे मामले के मर्म और स्थिति की वास्तविकता को देखते हैं, उनके दावे एकजुट होते हैं और उनमें से प्रत्येक की व्यक्तिगत शक्ति एकजुट होती है और सभी की सहायता करती है। यह एक बड़े पत्थर को उठाने जैसा है: जितने अधिक हाथ होंगे, वे उतने ही मजबूत होंगे और यह उतना ही आसान होगा।

सातवां नोट

हे दयनीय छद्म देशभक्त, जो मुसलमानों को इस दुनिया को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है और उन्हें जबरन यूरोपीय उद्योग और प्रगति की ओर धकेलता है! सावधान, इस राष्ट्र के कुछ लोगों को धर्म से बांधने वाले बंधनों को टूटने न दें! यदि इस तरह मूर्खतापूर्ण अंधानुकरण करके और पैरों तले कुचलकर, उनके धर्म के साथ बंधन तोड़ दिए गए, तो वे अधार्मिक लोग सामाजिक जीवन के लिए घातक जहर के समान हानिकारक हो जाएंगे।

क्योंकि धर्मत्यागी का विवेक पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुका होता है और वह समाज के जीवन में जहर की तरह हो जाता है। यही कारण है कि धर्म के सिद्धांतों के विज्ञान के अनुसार, "धर्मत्यागी जीवन के अधिकार को खो देता है, जबकि यदि कोई नास्तिक संरक्षित अल्पसंख्यकों का सदस्य है या वह शांति स्थापित करता है, तो उसे जीवन का अधिकार है;" यह शरीयत का सिद्धांत है।10 इसके अलावा, हनफ़ी स्कूल के अनुसार, ऐसे नास्तिक की गवाही स्वीकार्य है,11 जबकि शरीयत के मार्ग से भटके हुए व्यक्ति की गवाही अस्वीकार कर दी जाती है। क्योंकि वह विश्वासघाती है।12

हे पापी, जो शरीयत से भटक गया है! भ्रष्ट लोगों की भीड़ को देखकर धोखा मत खाओ; यह मत कहो: "अधिकांश लोग मेरे जैसा ही सोचते हैं!" क्योंकि भ्रष्ट लोग भ्रष्टता को गले लगाना नहीं चाहते; वे इसके विपरीत उसमें गिर जाते हैं और खुद को मुक्त नहीं कर पाते। ऐसा कोई पापी नहीं है जो धार्मिक नहीं बनना चाहता और जो अपने से बड़े और प्रमुख को धार्मिक नहीं देखना चाहता। सिवाय इसके कि - मैं ईश्वर की शरण में जाऊँ! - उसका विवेक धर्मत्याग के कारण भ्रष्ट हो जाता है और वह साँप की तरह विषपान से आनंद प्राप्त करता है।

ऐ पागल दिमाग और बिगड़े दिल! क्या तुम समझते हो कि मुसलमान दुनिया से मोहब्बत नहीं करते या वे उस ग़रीबी के बारे में नहीं सोचते जिसमें वे गिर गए हैं और उन्हें नसीहत की ज़रूरत है ताकि वे दुनिया में अपने हिस्से को न भूलें?

---

[10] बुखारी, जिहाद, 149; तिर्मिधि, हुदूद, 2; मुसनद, आई, 217, 282, 322; वी, 231. अल-काशानी, बदाई अल-सनाई, द्वितीय, 254-5;

[11] vi, 266.

[12] देखें, तिर्मिज़ी, शहादत, 2; अबू दाउद, 'अक़दिया, 16; इब्न माजा, अहकाम, 30; मुसनद, द्वितीय, 181, 204, 208।

तुम्हारा अनुमान झूठा है, तुम्हारा अनुमान गलत है। उनका लालच बढ़ गया है, इसलिए वे दरिद्र हैं। क्योंकि मुसलमानों के लिए लालच नुकसान और गरीबी का कारण बनता है। कहावत बन गई है : "लालची को नुकसान और निराशा का सामना करना पड़ता है"13।

हाँ, ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं जो मनुष्य को संसार की ओर बुलाती हैं और ले जाती हैं, जैसे उसकी आत्मा और उसकी इच्छाएँ, और ज़रूरतें, और उसकी इंद्रियाँ और भावनाएँ, और शैतान, और संसार का दिखावटी प्रलोभन, और तुम्हारे जैसे झूठे दोस्त। जबकि जो लोग परलोक की ओर बुलाते हैं, जो हमेशा के लिए रहता है, और लंबे समय तक चलने वाले अनंत जीवन की ओर, वे बहुत कम हैं। अगर तुम इस देश के प्रति थोड़ी सी भी देशभक्ति रखते हो और तुम जिन उच्च आकांक्षाओं का बखान करते हो वे झूठ नहीं हैं, तो तुम्हें उन कुछ लोगों की मदद करनी चाहिए जो अनंत जीवन की ओर बुलाते हैं। क्योंकि अगर तुम उन्हें चुप करा देते हो और बहुतों की मदद करते हो, तो तुम शैतान के दोस्त बन जाओगे!

क्या आप मानते हैं कि इस देश की गरीबी किसी तरह के धार्मिक तप का नतीजा है या दुनिया को त्यागने से पैदा होने वाली आलस्य का? ऐसा मानना आपका गलत है। क्या आप नहीं देखते कि यूरोप के प्रभुत्व वाले देश, जैसे चीन और भारत के ब्राह्मण और पारसी, और अफ्रीका के अश्वेत हमसे ज़्यादा गरीब हैं? और क्या आप नहीं देखते कि मुसलमानों के पास सबसे बुनियादी जीविका के अलावा कुछ भी नहीं बचा है? बाकी सब या तो यूरोपीय काफिर तानाशाहों या एशिया के ढोंगियों द्वारा चुरा लिया जाता है या हड़प लिया जाता है।

आपको यह निश्चित रूप से पता होना चाहिए कि यदि आप लोगों को जबरन इस तरह से भ्रष्ट सभ्यता की ओर धकेलने का इरादा रखते हैं, तो आप गलत हैं और आप उन्हें गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं। क्योंकि हज़ारों धर्मनिष्ठ लोगों पर शासन करने की तुलना में सौ भ्रष्ट लोगों पर शासन करना अधिक कठिन है, जिनकी आस्था डगमगा गई है और नैतिकता भ्रष्ट हो गई है।

इस प्रकार, इन सिद्धांतों के अनुसार, इस्लाम के लोगों को दुनिया और लालच की ओर प्रेरित करने और धकेलने की आवश्यकता नहीं है। इस तरह से प्रगति और सार्वजनिक व्यवस्था को सुरक्षित नहीं किया जा सकता। बल्कि उन्हें अपने काम करने की परिस्थितियों को व्यवस्थित करने, उनके बीच सुरक्षा स्थापित करने और सहयोग के सिद्धांत को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। और ये ज़रूरतें धर्म के पवित्र आदेशों, ईश्वर के भय और धर्म के प्रति दृढ़ निष्ठा के माध्यम से पूरी की जा सकती हैं।

---

[१३] देखें, इब्न क़ैस, क़ुरा अल-दैफ़, iv,, 301; अल-मयदानी, मजमा अल-अमथल, i, 24।

आठवां नोट

हे आलसी मनुष्य! तुम प्रयास के आनंद और काम की खुशी से अनजान हो!
जान लें कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी संपूर्ण उदारता के कारण इसमें काम के लिए पुरस्कार रखा है। उन्होंने काम के भीतर ही काम के लिए मजदूरी भी शामिल की है। यही कारण है कि अपने विशेष कर्तव्यों में, जिन्हें सृजनात्मक आदेश कहा जाता है, सजीव प्राणी और यहाँ तक कि एक दृष्टिकोण से निर्जीव प्राणी भी पूरी तत्परता और एक प्रकार की खुशी के साथ प्रभु के आदेशों का पालन करते हैं। मधुमक्खियों, मक्खियों और मुर्गियों से लेकर सूर्य और चंद्रमा तक सभी अपने कर्तव्यों को पूर्ण आनंद के साथ पूरा करते हैं। इसका मतलब यह है कि उनके काम में एक आनंद है, इसलिए वे इसे पूरी तरह से करते हैं, हालाँकि वे परिणामों के बारे में नहीं सोचते हैं क्योंकि उनके पास बुद्धि नहीं है।

मैं पूछता हूँ: "जीवित प्राणियों में आनंद प्राप्त करने की क्षमता होती है, लेकिन निर्जीव प्राणी उत्सुकता और आनंद का अनुभव कैसे कर सकते हैं?"

उत्तर: जड़ प्राणी अपने लिए नहीं बल्कि उन पर प्रकट दिव्य नामों के कारण पद, पद, पूर्णता, सौंदर्य और व्यवस्था की इच्छा करते हैं और उसकी खोज करते हैं। वे प्रकाशित होते हैं और प्रगति करते हैं क्योंकि अपने स्वाभाविक कर्तव्यों का पालन करते हुए वे प्रकाश के प्रकाश के नामों के दर्पण और प्रतिबिंब के स्थान बन जाते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि पानी की एक बूंद या कांच का टुकड़ा, भले ही वे महत्वहीन और स्वयं प्रकाशहीन हों, अपने शुद्ध हृदय से सूर्य की ओर मुड़े, तो वे सूर्य के सिंहासन बन जाते हैं और आपकी ओर देखकर मुस्कुराते हैं। इसी प्रकार, परम सौंदर्य और पूर्णता से युक्त, सर्वशक्तिमान के नामों के प्रति अपने कर्तव्यों के संबंध में दर्पण बनकर, कण और प्राणी बूंद और कांच के टुकड़े की तरह बहुत ही निम्न स्थिति से अभिव्यक्ति और प्रकाश की सबसे उच्च डिग्री तक बढ़ते हैं। चूंकि वे अपने कर्तव्यों के आधार पर एक चमकदार और उच्च पद पर पहुंचते हैं, इसलिए यह कहा जा सकता है कि यदि यह संभव है और उनमें आनंद प्राप्त करने की क्षमता है, अर्थात, यदि उन्हें सामान्य जीवन का हिस्सा मिलता है, तो वे अपने कर्तव्यों को पूर्ण आनंद के साथ करते हैं।

कर्तव्यों के पालन में मिलने वाले आनंद के स्पष्ट प्रमाण के लिए अपने स्वयं के अंगों और भावनाओं पर विचार करें। प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत अस्तित्व और मानव जाति के अस्तित्व से जुड़े कर्तव्यों को निभाने में अलग-अलग आनंद मिलता है। कर्तव्य स्वयं उनके लिए आनंद का साधन हैं, और किसी कर्तव्य का त्याग करना किसी अंग के लिए एक प्रकार की पीड़ा है।

इसका एक और स्पष्ट प्रमाण है आत्म-बलिदान और साहस जो मुर्गे और चूज़ों वाली मुर्गी जैसे जानवर अपने कर्तव्यों का पालन करते समय दिखाते हैं: यहाँ तक कि

भूख लगने पर मुर्गा मुर्गियों को अपने से ज़्यादा तरजीह देता है, उन्हें खाने के लिए बुलाता है। वह खुद नहीं खाता, बल्कि उन्हें खाने देता है। और यह स्पष्ट है कि उसे इस कर्तव्य को निभाने में खुशी, गर्व और आनंद महसूस होता है। इसका मतलब यह है कि उसे खिलाने से ज़्यादा कर्तव्य निभाने में खुशी मिलती है। मुर्गी भी अपने चूज़ों के लिए अपनी जान दे देती है, कुत्ते के सामने खुद को फेंक देती है। वह भी भूखी रहेगी और उन्हें दाना देगी। यानी उसे अपने कर्तव्य में इतनी खुशी मिलती है कि वह भूख और मौत की पीड़ा को भी बेहतर समझती है।

पशु माताओं को अपने बच्चों की रक्षा करने में आनंद मिलता है, जब बच्चे छोटे होते हैं तो यह उनका कर्तव्य होता है। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो कर्तव्य समाप्त हो जाता है और आनंद भी समाप्त हो जाता है। माताएँ अपने बच्चों को पीटती हैं और उनसे चारे के दाने छीन लेती हैं।
केवल मानव माताओं के लिए ये कर्तव्य कुछ समय तक जारी रहते हैं, क्योंकि अपनी कमजोरी और नपुंसकता के कारण, मनुष्य हमेशा एक तरह से बच्चे ही रहते हैं, और उन्हें हर समय करुणा की आवश्यकता होती है।

पशु प्रजाति के नर और मादाओं पर विचार करें, जैसे कि माँ मुर्गी और मुर्गा, जो चरवाहे का काम करते हैं, और समझें कि वे ये कर्तव्य अपने लिए, अपने नाम पर या अपनी पूर्णता के लिए नहीं करते हैं। क्योंकि अगर उन्हें अपने कर्तव्यों के दौरान अपने जीवन का बलिदान करना पड़ता है, तो वे ऐसा करते हैं। वे इसे उदार दाता, सर्व-महिमावान सृष्टिकर्ता के लिए करते हैं, जो उन्हें उनके कर्तव्यों में नियुक्त करता है, जिसमें, उनकी दया के माध्यम से, उन्हें खुशी भी मिलती है।

इस बात का सबूत कि मजदूरी कर्तव्य में ही मौजूद है, यह है: पौधे और पेड़ महिमावान सृष्टिकर्ता के आदेशों का पालन इस तरह से करते हैं कि उनमें उत्सुकता और खुशी झलकती है। क्योंकि वे जो सुगंधित सुगंध फैलाते हैं, और अपने ग्राहकों की नज़रों को आकर्षित करने वाली सजावट से सजे होते हैं, और अपने अंकुरों और फलों के लिए खुद को तब तक बलिदान करते हैं जब तक वे सड़ नहीं जाते, यह सब चौकस लोगों को दिखाता है कि उन्हें ईश्वरीय आदेशों का पालन करने में इतना आनंद मिलता है कि यह उन्हें सड़ा देता है और नष्ट कर देता है।

देखो, नारियल जैसे फलदार वृक्ष, जिसके सिर पर बहुत से दूध के डिब्बे होते हैं, और अंजीर, स्वभाव की जीभ के द्वारा दया के भण्डार से दूध के समान उत्तम भोजन मांगते हैं; वे उसे ग्रहण करते हैं और अपने फलों को खाने के लिए देते हैं, जबकि वे कीचड़युक्त जल से ही तृप्त होते हैं।

बीजों में भी अंकुरित होने और अंकुर भेजने के अपने कर्तव्य में एक लालसा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। जैसे किसी सीमित स्थान में कैद व्यक्ति बगीचे या खुली जगह में जाने के लिए तरसता है, ऐसी ही लालसा, ऐसी ही आनंदमय स्थिति, बीजों में भी, अंकुरित होने के अपने कर्तव्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

यह इस दीर्घकालिक और रहस्यमय सिद्धांत के कारण है, जो ब्रह्माण्ड में प्रभावी है और जिसे दैवीय अभ्यास कहा जाता है, कि वे आलसी, निष्क्रिय लोग जो अधिकांशतः सुख और समृद्धि में रहते हैं, उन लोगों की तुलना में अधिक कष्ट भोगते हैं जो प्रयास करते हैं और काम करते हैं।
क्योंकि बेकार लोग हमेशा अपने जीवन के बारे में शिकायत करते हैं और

जो मनुष्य अपने जीवन को मनोरंजन में लगाकर जल्दी से जल्दी व्यतीत करना चाहता है, वहीं जो मनुष्य परिश्रम करता है, जो पुरुषार्थ करता है, वह कृतज्ञता प्रकट करता है, प्रशंसा करता है, तथा नहीं चाहता कि उसका जीवन जल्दी से जल्दी बीत जाए।
"आलस्य और आराम में रहने वाला व्यक्ति अपने जीवन के बारे में शिकायत करता है, जबकि मेहनती व्यक्ति आभारी होता है" यह एक सार्वभौमिक सिद्धांत है। यही कारण है कि "आराम कठिनाई में है और कठिनाई आराम में है" कहावत प्रचलित हो गई है।

वास्तव में, यदि जड़ प्राणियों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए, तो यह देखा जाएगा कि उनकी अविकसित जन्मजात क्षमताएँ और योग्यताएँ, जो महान् प्रयास और परिश्रम के द्वारा सामर्थ्य से वास्तविक की ओर बढ़ती हैं, उपर्युक्त दिव्य साधना के समान स्थिति उत्पन्न करती हैं। इससे पता चलता है कि स्वाभाविक कर्तव्य में उत्सुकता और आनंद उत्पन्न होता है। यदि जड़ प्राणी सामान्य जीवन में भाग लेता है, तो उत्सुकता उसकी अपनी है; अन्यथा वह उस वस्तु से संबंधित है जो प्राणी का प्रतिनिधित्व और पर्यवेक्षण करती है। यह भी कहा जा सकता है कि जब सूक्ष्म, कोमल जल को जमने का आदेश मिलता है, तो वह इतनी तीव्र उत्सुकता के साथ उसके अनुरूप कार्य करता है कि वह लोहे को भी टुकड़े-टुकड़े कर सकता है।

अर्थात्, अपनी जीभ से "विस्तार करो!" का प्रभुत्वपूर्ण आदेश व्यक्त करते हुए
बंद लोहे के बर्तन में रखे पानी को शून्य से भी कम तापमान पर जमा देने पर, यह अपनी तीव्र उत्सुकता से बर्तन को तोड़ देता है। यह लोहे को तोड़ देता है और खुद बर्फ बन जाता है।

आप हर चीज़ के लिए इससे तुलना कर सकते हैं। सूर्यों के घूमने और उनके परिभ्रमण से लेकर मेवलेवी जैसे घूमने और घूमने और सूक्ष्म कणों के कंपन तक, ब्रह्मांड में सभी प्रयास और गति ईश्वरीय निर्धारण के नियम पर आधारित हैं और ईश्वरीय शक्ति के हाथ से आगे बढ़ती हैं और ईश्वरीय इच्छा, ज्ञान और आदेश से युक्त रचनात्मक आदेश के माध्यम से प्रकट होती हैं।

प्रत्येक कण, प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक जीवित प्राणी, यहाँ तक कि एक सैनिक जैसा है, जिसका सेना के सभी वर्गों के साथ अलग-अलग संबंध है और प्रत्येक के लिए अलग-अलग कर्तव्य हैं; सभी कण और जीवित प्राणी इसी के समान हैं। उदाहरण के लिए, आपकी आँख में एक कण का आँख की कोशिकाओं, स्वयं आँख, चेहरे की नसों और शरीर की रक्त वाहिकाओं के साथ संबंध है; और उन संबंधों से उत्पन्न होने वाले उसके कर्तव्य हैं, और उन कर्तव्यों के अनुसार लाभ देता है। और इसी तरह, आप हर चीज़ की तुलना इससे कर सकते हैं। इस प्रकार, हर चीज़ दो मामलों में पूर्व-शाश्वत सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देती है:

पहला: अपनी शक्ति से कहीं अधिक कर्तव्यों का पालन करके, प्रत्येक वस्तु सर्वशक्तिमान के अस्तित्व की गवाही देती है।

दूसरा: दुनिया के नियमों और प्राणियों के संतुलन को बनाए रखने वाले सिद्धांतों के अनुरूप कार्य करके, हर चीज़ उस सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान की गवाही देती है। क्योंकि कणों जैसी बेजान चीज़ें और मधुमक्खियों जैसे छोटे जानवर व्यवस्था और संतुलन नहीं जान सकते,

जो स्पष्ट पुस्तक के सूक्ष्म मामले हैं। एक निर्जीव कण और छोटी मधुमक्खी स्पष्ट पुस्तक के सूक्ष्म, महत्वपूर्ण मामलों को कैसे पढ़ सकते हैं, जो कि सर्वशक्तिमान के हाथ में है, जो आकाश के स्तरों को खोलता और बंद करता है और इकट्ठा करता है जैसे कि वे एक नोटबुक के पृष्ठ हों? यदि आप पागलपन से मानते हैं कि कण के पास उस पुस्तक के बारीक अक्षरों को पढ़ने में सक्षम आंख है, तो आप कण की गवाही का खंडन करने का प्रयास कर सकते हैं!

हाँ, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने स्पष्ट पुस्तक के सिद्धांतों को अत्यंत सुंदर रूप और संक्षिप्त रूप में तथा एक विशेष आनंद और एक विशेष आवश्यकता के माध्यम से सारांशित किया है, और उन्हें प्राणियों में शामिल किया है। यदि प्रत्येक वस्तु किसी विशेष आवश्यकता से किसी विशेष आनंद के साथ इस प्रकार कार्य करती है, तो वह अनजाने में ही स्पष्ट पुस्तक के सिद्धांतों के अनुरूप हो जाती है। उदाहरण के लिए, जिस क्षण मच्छर अपनी सूंड के साथ दुनिया में आता है, वह अपने घर से निकलता है, और बिना किसी हिचकिचाहट के मनुष्य के चेहरे पर हमला करता है; वह उस पर अपनी लंबी छड़ी से प्रहार करता है जिससे जीवन का जल फूट पड़ता है, और वह उसे पी जाता है। यह अपने ऊपर निर्देशित प्रहारों से बचने में एक प्रशिक्षित योद्धा के कौशल को दर्शाता है। इस छोटे, अनुभवहीन, नवजात प्राणी को युद्ध का विज्ञान और पानी निकालने की कला किसने सिखाई?

उसने यह सब कहाँ से सीखा? मैं, यानी यह बदकिस्मत सईद, यह कबूल करता हूँ कि अगर मैं उस सूंड वाले मच्छर की जगह होता, तो मैं यह कला, यह हमला करने और पीछे हटने का युद्ध, यह पानी निकालने का काम, लंबी शिक्षा और बहुत अनुभव के बाद ही सीख पाता।

मच्छर जैसे प्राणियों से तुलना करें जैसे मधुमक्खी, जो प्रेरणा प्राप्त करती है, मकड़ी, तथा बुलबुल, जो मोजे की तरह अपना घोंसला बुनती है, फिर पौधों की तुलना भी इन प्राणियों से करें। हाँ, परम उदार परमेश्वर (उनकी महिमा हो) ने प्रत्येक जीव को सुख की कलम तथा आवश्यकता की स्याही से लिखा हुआ ज्ञापन दिया है, तथा इसके साथ ही जीव में अपने सृजनात्मक आदेशों का कार्यक्रम तथा उसके कर्तव्यों की सूची जमा कर दी है। देखें कि महिमावान सर्वज्ञ परमेश्वर ने किस प्रकार स्पष्ट पुस्तक के सिद्धांतों से मधुमक्खी के कर्तव्यों से संबंधित राशि रसीद पर लिखकर मधुमक्खी के सिर में रखे संदूक में रख दी है। तथा संदूक की कुंजी परिश्रमी मधुमक्खी का विशेष सुख है। इसके साथ ही वह संदूक खोलती है, कार्यक्रम पढ़ती है, आदेश समझती है, तथा कार्य करती है। यह पद्य का अर्थ घोषित करती है,

और तुम्हारे पालनहार ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी है। (16:68)

यदि आपने इस आठवें नोट को पूरा सुना है और इसे समझा है
पूरी तरह से, विश्वास के अंतर्ज्ञान के माध्यम से आप इसका एक अर्थ समझ जायेंगे,

और उसकी दयालुता हर चीज़ को अपने आगोश में ले लेती है (7:156)

और कविता का एक सत्य,

और कोई चीज़ उसकी प्रशंसा से पवित्रता का गुणगान तो करती ही है, (17:44)

और कविता का एक सिद्धांत,

जब वह कोई काम चाहता है तो उसका आदेश होता है कि "हो जा!" और वह हो जाता है। (36:82)

और कविता का एक बिंदु,

अतः पवित्र है वह जिसके हाथ में हर चीज़ की सत्ता है और उसी की ओर तुम सब लौटाए जाओगे। (36:83)

नौवां नोट

जान लो कि इंसानों के बीच पैगम्बरी होना ही इंसानी अच्छाई और पूर्णता का सारांश और आधार है; सच्चा धर्म समृद्धि और खुशी का सूचक है; ईमान शुद्ध, सर्वोत्कृष्ट अच्छाई है। चूँकि इस दुनिया में एक चमकती हुई खूबसूरती, एक व्यापक और उच्च अच्छाई, एक स्पष्ट सत्य और श्रेष्ठ पूर्णता स्पष्ट है, इसलिए स्वयंसिद्ध सत्य और वास्तविकता पैगम्बरी होने और पैगम्बरों के हाथों में है। जबकि बुराई, गुमराही और नुकसान उन लोगों के साथ है जो उनका विरोध करते हैं।

पूजा के हजारों गुणों में से, केवल निम्नलिखित पर विचार करें: पैगंबर (UWBP) त्योहारों और शुक्रवार की प्रार्थनाओं में दिव्य एकता के समर्थकों के दिलों को एकजुट करते हैं, और सामूहिक रूप से की जाने वाली पूजा करते हैं। वह उनकी भाषाओं को एक ही वाक्य में एक साथ लाता है ताकि एक व्यक्ति असंख्य दिलों और भाषाओं द्वारा उच्चारित आवाज़ों, प्रार्थनाओं और आह्वानों के साथ पूर्व-शाश्वत पूज्य के उदात्त संबोधन का जवाब दे। एक दूसरे को मजबूत करते हुए, एक दूसरे की सहायता करते हुए और एकजुट होते हुए, वे आवाज़ें, प्रार्थनाएँ और आह्वान पूर्व-शाश्वत सर्व-पूज्य के ईश्वरत्व के समक्ष इतनी व्यापक पूजा प्रदर्शित करते हैं कि पृथ्वी का गोला मानो आह्वानों का पाठ करता है, प्रार्थनाएँ करता है, और अपने क्षेत्रों के साथ प्रार्थना करता है, और अपने क्षेत्रों के साथ आज्ञा का पालन करता है

और नमाज़ में पाबंद रहो (2:43, आदि)

जो आकाश से परे से महिमा और प्रचण्डता के साथ प्रगट हुआ।
एकता के इस रहस्य के माध्यम से, मनुष्य, जो ब्रह्माण्ड में एक कण के समान एक छोटा, शक्तिहीन प्राणी है, उपासना की विशालता के कारण स्वर्ग और पृथ्वी के रचयिता का प्रिय सेवक, पृथ्वी का प्रतिनिधि, पृथ्वी का शासक और प्राणियों का मुखिया, तथा ब्रह्माण्ड की रचना का परिणाम और लक्ष्य बन जाता है।

हाँ, यदि पाँच दैनिक प्रार्थनाओं के बाद और विशेष रूप से त्यौहार की प्रार्थनाओं में “परमेश्वर सबसे महान है!” की घोषणा करने वाले करोड़ों लोगों की आवाज़ें प्रकट दुनिया में उसी तरह एकजुट हो जाती हैं जैसे वे अदृश्य दुनिया में होती हैं,

संपूर्ण पृथ्वी एक विशाल मानव बन जाती है। चूँकि यह शक्तिशाली आवाज़ में "ईश्वर सबसे महान है!" की घोषणा करता है, जो इसकी अपनी महानता के बराबर है, ईश्वरीय एकता में विश्वास करने वाले "ईश्वर सबसे महान है!" की घोषणा करते हुए उसी क्षण एक साथ पृथ्वी द्वारा उच्चारित एक शक्तिशाली "ईश्वर सबसे महान है!" बन जाता है। त्यौहार की प्रार्थनाओं में इस्लाम की दुनिया के आह्वान और महिमामंडन से पृथ्वी मानो एक बड़े कंपन से हिल जाती है। अपने सभी क्षेत्रों और जलवायु के साथ "ईश्वर सबसे महान है!" की घोषणा करते हुए, यह काबा के शुद्ध हृदय, अपने क़िबला के साथ अपना इरादा बनाता है, और मक्का के मुहाने में माउंट अराफात की जीभ से "ईश्वर सबसे महान है!" का उच्चारण करने पर, वह असंख्य "ईश्वर सबसे महान है" अस्तित्व में आते हैं, और स्वीकार्य पाठ और आह्वान से स्वर्ग में गूंज होती है और मध्यवर्ती क्षेत्रों में उठने और गिरने की प्रतिध्वनि होती है।

हम धरती के कण-कण की संख्या के अनुसार उस महान प्रभु की प्रशंसा और स्तुति करते हैं, जिसने धरती को इस प्रकार अपनी उपासना में समर्पित किया, उसकी स्तुति और महिमा की, तथा उसे अपने बन्दों के लिए मस्जिद और अपने प्राणियों के लिए पालना बनाया। और हम उसकी प्रशंसा करते हैं कि उसने हमें अपने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जमात में शामिल किया, जिन्होंने हमें इस प्रकार की उपासना सिखाई।

दसवाँ नोट

हे असावधान, भ्रमित साद! यदि तुम्हें ईश्वर के ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करना है और उसे देखना है, तथा संकेतों और गवाहों के दर्पणों में उसके प्रकटीकरणों को देखना है, तथा उसके प्रमाणों और साक्ष्यों को देखना है, तो तुम्हें आलोचना की उंगलियों से उसकी जांच नहीं करनी चाहिए। तुम्हें हर उस प्रकाश की आलोचनात्मक जांच नहीं करनी चाहिए जो तुम्हारे ऊपर से गुजरता है या तुम्हारे दिल में आता है या तुम्हारे दिमाग में आता है, या संकोच के हाथ से उसकी आलोचना नहीं करनी चाहिए। जो प्रकाश तुम्हें दिखाई देता है, उसे पकड़ने के लिए अपना हाथ मत बढ़ाओ!

बल्कि उन बातों से दूर रहो जो असावधानी का कारण बनती हैं, ज्योति की ओर फिरो और प्रतीक्षा करो। क्योंकि मैंने देखा है कि परमेश्वर के ज्ञान के साक्षी और प्रमाण तीन प्रकार के हैं:

एक प्रकार पानी की तरह है। यह दिखाई देता है और स्पर्शनीय है, लेकिन इसे उंगलियों से नहीं पकड़ा जा सकता। इस प्रकार के लिए, व्यक्ति को भ्रम से खुद को अलग करना होगा और खुद को समग्र रूप से उसमें डुबोना होगा। आलोचना की उंगलियों से इसकी जासूसी नहीं की जा सकती; अगर ऐसा है, तो यह बह जाता है और खो जाता है। जीवन का पानी उंगली को अपना निवास नहीं बना सकता!

दूसरा प्रकार हवा की तरह है। इसे देखा जा सकता है, लेकिन यह न तो दिखाई देता है और न ही इसे थामा जा सकता है। आपको अपने चेहरे, अपने मुंह, अपनी आत्मा से इसकी ओर मुड़ना चाहिए और दया की उस हवा के सामने खुद को थामना चाहिए। लेकिन इसकी ओर आलोचना का हाथ न बढ़ाएं, क्योंकि आप इसे थामने में असमर्थ होंगे। अपनी आत्मा से इसे सांस लें। यदि आप इसे संकोच की नजर से देखते हैं और इसकी आलोचना करके इस पर हाथ रखते हैं, तो यह आपसे दूर हो जाएगा और चला जाएगा। यह आपके हाथ को अपना निवास नहीं बनाएगा; यह इससे कभी संतुष्ट नहीं होगा!

जहाँ तक तीसरे प्रकार की बात है, यह प्रकाश की तरह है। यह दिखाई देता है, लेकिन न तो स्पर्शनीय है और न ही इसे पकड़ा जा सकता है। इसलिए आपको अपने हृदय की आँखों और आत्मा की दृष्टि से इसके सामने खुद को रखना चाहिए; आपको अपनी दृष्टि को इसकी ओर निर्देशित करना चाहिए और प्रतीक्षा करनी चाहिए। शायद यह अपने आप आ जाए। क्योंकि प्रकाश को हाथ में नहीं रखा जा सकता है या उंगलियों से शिकार नहीं किया जा सकता है; इसे केवल अंतर्दृष्टि और अंतर्ज्ञान के प्रकाश से ही पकड़ा जा सकता है। यदि आप एक लोभी, भौतिक हाथ बढ़ाकर इसे भौतिक तराजू पर तौलते हैं, भले ही यह बुझ न जाए, यह खुद को छिपा लेगा। क्योंकि जैसे ऐसा प्रकाश पदार्थ में कैद होने के लिए सहमत नहीं होगा, वैसे ही इसे प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता है, न ही यह घने पदार्थों को अपना स्वामी और मालिक मानेगा।

ग्यारहवाँ नोट

जान लें कि कुरान की अभिव्यक्ति के तरीके में बहुत दया और करुणा है, क्योंकि जिन लोगों को यह संबोधित करता है, उनमें से अधिकांश साधारण लोग हैं। उनके दिमाग सरल हैं, इसलिए उन्हें खुश करने के लिए यह आकाश और पृथ्वी के चेहरे पर अंकित संकेतों को दोहराता है, क्योंकि उनकी दृष्टि सूक्ष्म चीजों तक नहीं पहुँच पाती। यह उन बड़े अक्षरों को पढ़ने में सुविधा प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, यह उन संकेतों को सिखाता है जो स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं और आसानी से पढ़े जा सकते हैं, जैसे आकाश और पृथ्वी का निर्माण, और आकाश से बारिश का बरसना, और पृथ्वी का जीवन में वापस आना। यह शायद ही कभी बड़े अक्षरों के बीच छोटे अक्षरों में लिखे गए सूक्ष्म संकेतों पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि आम लोगों को उन्हें पढ़ने में कठिनाई न हो।

कुरान की शैली में वाक्पटुता, प्रवाह और सहजता है, जिससे यह हाफ़िज़ की तरह है; यह ब्रह्मांड के पन्नों पर सत्ता की कलम से लिखी गई आयतों को पढ़ता है। ऐसा लगता है जैसे कुरान ब्रह्मांड की किताब का पाठ और उसके क्रम की मौखिक अभिव्यक्ति है, और यह पूर्व-अनंत लेखक की विशेषताओं को पढ़ता है और उसके कार्यों और कर्मों को लिखता है। यदि आप अभिव्यक्ति की इस वाक्पटुता को देखना चाहते हैं, तो सूरा अम्मा14 और आयत जैसे आदेशों को जागरूक और ध्यानपूर्वक सुनें,

> कह दो, "ऐ अल्लाह! तू सारे साम्राज्य का रब है!" (3:26)

[14] सूरा 78, महान समाचार.

बारहवाँ नोट

हे मेरे मित्रो जो ये नोट सुन रहे हो! तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं कभी-कभी अपने पालनहार से अपने दिल की प्रार्थनाएँ, विनती और प्रार्थनाएँ लिखता हूँ, जो गुप्त होनी चाहिए, ताकि मैं ईश्वर से दया माँग सकूँ कि जब मृत्यु ने मेरी ज़ुबान के शब्दों को चुप करा दिया है, तो वे मेरे लिखे हुए शब्दों को स्वीकार करें। हाँ, मेरी अल्पकालिक ज़ुबान का पश्चाताप और खेद मेरे असंख्य पापों का प्रायश्चित करने के लिए अपर्याप्त है। लेखन की ज़ुबान एक हद तक स्थायी है, और अधिक प्रभावशाली है। इस प्रकार, तेरह साल [15] जब आत्मा के एक अशांत तूफान के परिणामस्वरूप पुराने अतीत की हँसी,

सईद को नए सईद के रोने में तब्दील किया जा रहा था - एक समय जब मैं बुढ़ापे की सुबह में जवानी की लापरवाह नींद से जागा - मैंने ये प्रार्थनाएँ और दुआएँ अरबी में लिखीं। उनमें से एक हिस्से का तुर्की अर्थ इस प्रकार है:

हे मेरे दयालु पालनहार और उदार निर्माता! मेरे गलत निर्णयों के कारण मेरा जीवन और युवावस्था नष्ट हो गई और चली गई, और उनके फलस्वरूप मेरे पास केवल भयंकर पाप, अपमानजनक दुख और गुमराह करने वाले संदेह और शंकाएं ही बची हैं। मैं इस भारी बोझ और बीमार हृदय के साथ शर्मिंदगी का सामना करते हुए कब्र के करीब पहुंच रहा हूं। अपने दिवंगत मित्रों, साथियों और रिश्तेदारों की तरह, मैं बाएं या दाएं मुड़े बिना अनजाने में कब्र के दरवाजे के पास पहुंच रहा हूं।

कब्र इस क्षणभंगुर क्षेत्र से अनंत वियोग और अनंत काल की ओर जाने वाले मार्ग पर पहला पड़ाव है; यह उस पर खुलने वाला पहला द्वार है।[16] लेकिन मैं इस संसार के क्षेत्र से जुड़ा हुआ हूँ और इससे मोहित हूँ, और मैंने पूर्ण निश्चय के साथ समझ लिया है कि यह क्षणभंगुर है और मरेगा, नष्ट होगा और चला जाएगा। इसके भीतर के प्राणी एक के बाद एक काफिले में यात्रा करते हैं और गायब हो जाते हैं, जैसा कि देखा जा सकता है।

यह दुनिया बहुत क्रूर और विश्वासघाती है, खासकर मेरे जैसे दुष्टों के लिए। एक सुख के लिए यह हज़ारों दुख देती है। एक अंगूर के लिए यह सौ थप्पड़ मारती है।

हे मेरे दयालु पालनहार और उदार सृष्टिकर्ता! जैसा कि कहावत है "जो कुछ भी आने वाला है, वह निकट है,"[17] अब मैं देख रहा हूँ कि जल्द ही मैं अपना कफ़न पहन लूँगा, अर्थी पर चढ़ जाऊँगा, अपने मित्रों को विदा करूँगा। अपनी कब्र के पास पहुँचते हुए मैं अपनी लाश की मूक जीभ और अपनी आत्मा की मुखर जीभ के माध्यम से आपकी दया के दरबार में पुकारता हूँ: "दया! दया! सबसे दयालु, सबसे दयावान! मुझे मेरे पापों की शर्म से मुक्ति दिलाओ!"

---

[15] इस ग्रंथ के लिखे जाने से तेरह वर्ष पहले (अर्थात् 1920 या 1921 - अनुवाद)

[16] देखें, तिर्मिधि, ज़ुहद, 5; इब्न माजा, ज़ुहद, 32; मुसनद, मैं, 63.

[17] इब्न माजा, पैगंबर, 7; बीज, एक्लेसिएस्टेस, 23.

अब मैं अपनी कब्र के किनारे पहुँच गया हूँ। मैं अपनी लाश के सिरहाने खड़ा हूँ और उसके बगल में लेट गया हूँ। आपकी दया के दरबार में अपना सिर उठाते हुए, मैं पूरी ताकत से विनती करते हुए पुकारता हूँ: "दया! दया! सबसे दयालु! सबसे दयालु!"

मुझे मेरे पापों के भारी बोझ से छुड़ाओ!"

अब मैं अपनी कब्र में प्रवेश कर चुका हूँ, मैं अपने कफ़न में लिपटा हुआ हूँ। जो लोग मुझे मेरे रास्ते पर भेजने आए थे, वे मुझे अकेला छोड़कर चले गए हैं। मैं आपकी क्षमा और दया की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मैं स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ कि आपके अलावा कोई शरण या सहायता का स्थान नहीं है। मैं पाप के कुरूप चेहरे, ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह के क्रूर रूप, स्थान की संकीर्णता पर अपनी पूरी ताकत से चिल्लाता हूँ:

"दया! दया! सबसे दयालु! सबसे दयावान! सबसे दयालु! न्यायप्रिय!
मुझे मेरे घिनौने पापों की संगति से छुड़ाओ! मेरा स्थान विस्तृत करो! मेरे परमेश्वर!
आपकी दया ही मेरा सहारा है। आपके प्रियतम, सभी संसारों की दया, आपकी दया का साधन। मैं आपसे नहीं, बल्कि अपनी आत्मा और अपनी स्थिति से शिकायत करता हूँ।

हे मेरे उदार सृष्टिकर्ता और दयालु पालनकर्ता! आपका सेवक और प्राणी जिसका नाम सईद है, विद्रोही, शक्तिहीन, असावधान, अज्ञानी, रोगी, नीच, पापी, वृद्ध, अन्यायी और भगोड़ा दास है; किन्तु चालीस वर्ष बाद उसने पश्चाताप किया है और आपके दरबार में लौटना चाहता है। वह आपकी दया की शरण चाहता है। वह अपने असंख्य पापों और भूलों को स्वीकार करता है। संदेह और हर प्रकार के कष्टों से पीड़ित होकर वह आपसे विनती और प्रार्थना करता है। यदि आप अपनी पूर्ण दया से उसे स्वीकार करते हैं, यदि आप उसे क्षमा करते हैं और उस पर दया करते हैं, तो यह आपको शोभा देता है। क्योंकि आप दयालुओं में सबसे अधिक दयालु हैं। यदि आप मुझे स्वीकार नहीं करते, तो मैं किसके द्वार पर जा सकता हूँ? दूसरा कौन सा द्वार है? आपके अलावा कोई पालनकर्ता नहीं है, जिसके दरबार में जाया जा सके। आपके अलावा कोई भी पूजनीय नहीं है, जिसकी शरण ली जा सके।

तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू एक है, तेरा कोई शरीक नहीं; इस दुनिया में आखिरी बात और आख़िरत और क़ब्र में पहला शब्द यह है: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके रसूल हैं, अल्लाह तआला उन्हें बरकत और शांति प्रदान करे!

तेरहवां नोट

इसमें पांच ऐसे मामले शामिल हैं जो भ्रम का कारण बने हुए हैं।

पहला मामला

यद्यपि सत्य के मार्ग पर चलने वालों को केवल अपने कर्तव्यों के बारे में ही सोचना चाहिए, किन्तु वे तो सर्वशक्तिमान ईश्वर से सम्बन्धित कर्तव्यों के बारे में ही सोचते हैं।

उनके कार्यों को उन पर थोपा जाता है, और वे गलती में पड़ जाते हैं। अदब अल-दीन वाल-दुनिया नामक रचना में लिखा है कि एक बार शैतान ने यीशु (उन पर शांति हो) को यह कहकर बहकाया: "मृत्यु का नियत समय और सभी चीजें ईश्वरीय निर्धारण द्वारा निर्दिष्ट हैं, इसलिए अपने आप को इस ऊंचे स्थान से नीचे फेंक दो, और देखो, तुम मर जाओगे।" यीशु (उन पर शांति हो) ने उत्तर दिया: "ईश्वर अपने सेवकों को परखता है, लेकिन उसके सेवक अपने पालनहार को नहीं परख सकते।"18 अर्थात्, "सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने सेवक को परखते हैं, उससे कहते हैं: यदि तुम ऐसा करो तो मैं यह करूंगा। देखते हैं, क्या तुम यह कर सकते हो? लेकिन सेवक के पास सर्वशक्तिमान ईश्वर को परखने और यह कहने का अधिकार और शक्ति नहीं है: यदि मैं ऐसा करूं, तो क्या आप ऐसा करेंगे? ऐसा रुख अपनाना, मानो सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रभुत्व को परीक्षण और जांच के अधीन करना, बुरा आचरण है और उपासना और मनुष्य के ईश्वर का दास होने के विपरीत है।" चूँकि मामला ऐसा है, इसलिए मनुष्य को अपना कर्तव्य करना चाहिए और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

यह सर्वविदित है कि जब इस्लाम के नायकों में से एक जलालुद्दीन ख़्वारज़्मशाह, जिसने कई बार चंगेज खान की सेना को हराया था, युद्ध के लिए जा रहा था, तो उसके मंत्रियों और अनुयायियों ने उससे कहा: "तुम विजयी होगे; सर्वशक्तिमान ईश्वर तुम्हें विजेता बनाएगा।" उसने उत्तर दिया: "मुझे जिहाद के रास्ते पर काम करने के लिए ईश्वर के आदेश से नियुक्त किया गया है, मैं ईश्वर के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता। हमें विजयी बनाना या पराजित करना उसका काम है।"

चूँकि उसने समर्पण के रहस्य को समझ लिया था, इसलिए वह अनेक अवसरों पर आश्चर्यजनक रूप से विजयी हुआ।

मनुष्य को अपने स्वैच्छिक कार्यों में उन परिणामों के बारे में नहीं सोचना चाहिए जो सर्वशक्तिमान ईश्वर से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, हमारे कुछ भाइयों के लिए, जब लोग रिसाले-ए-नूर में शामिल होते हैं तो यह उनके उत्साह को बढ़ाता है और उन्हें अपने प्रयासों को बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है। फिर जब दूसरे लोग नहीं सुनते हैं, तो उनमें से कमजोर लोग हतोत्साहित हो जाते हैं और उनका उत्साह कुछ हद तक कम हो जाता है। जबकि ईश्वर के महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो), जो पूर्ण स्वामी, सार्वभौमिक नेता और पूर्ण मार्गदर्शक थे, ने ईश्वरीय आदेश को अपना पूर्ण मार्गदर्शक माना,

> रसूल पर केवल संदेश पहुँचाने का दायित्व है , (5:99)

और जब लोग पीछे हट गए और उनकी बात नहीं सुनी, तो उन्होंने और अधिक प्रयास, प्रयास और ईमानदारी के साथ संदेश पहुँचाया। क्योंकि श्लोक के अनुसार,

> यह सच है कि तुम उन सभी को मार्ग नहीं दिखा सकोगे जिन्हें तुम चाहते हो, किन्तु अल्लाह ही मार्ग दिखाता है जिन्हें चाहता है (28:56)

[18] मावर्दी, अदब अल-दुनिया वाल-दीन, 12; मा'मर इब्न रशीद, अल-जामी', xi, 113; अबू नुअयम, हिल्या अल-अवलिया', iv, 12; इब्न अल-जावज़ी, तलबीस इब्लीस, i, 344; इब्न हजर, अल-इसाबा, iv, 764।

वह समझ गया कि लोगों को सुनना और उनका मार्गदर्शन करना सर्वशक्तिमान परमेश्वर की चिंता है। और उसने परमेश्वर की चिंताओं में हस्तक्षेप नहीं किया।

और इसलिए, मेरे भाइयों! आपको भी अपने कार्यों को आधार बनाकर लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए जो आपका व्यवसाय नहीं है, या अपने निर्माता का परीक्षण करने की स्थिति ले लो!

दूसरा मामला

ईश्वर की पूजा और सेवा ईश्वरीय आदेश और ईश्वरीय प्रसन्नता पर निर्भर करती है।
पूजा का कारण ईश्वरीय आदेश है और उसका परिणाम ईश्वरीय प्रसन्नता है। इसके फल और लाभ परलोक की ओर देखते हैं। लेकिन जब तक वे अंतिम कारण नहीं हैं और जानबूझकर नहीं मांगे जाते हैं, तब तक इस दुनिया को देखने वाले लाभ और अपने आप मिलने वाले और दिए जाने वाले फल पूजा के विपरीत नहीं हैं। वे बल्कि कमजोरों को प्रोत्साहित करने और उन्हें पूजा की ओर प्रवृत्त करने के लिए हैं। यदि उन फलों और लाभों को प्रार्थना या पाठ का कारण या कारण का एक हिस्सा बना दिया जाता है, तो यह पूजा को आंशिक रूप से अमान्य कर देता है। वास्तव में, यह पुण्य प्रार्थना को निष्फल कर देता है, और कोई परिणाम नहीं देता है।

इस प्रकार, जो लोग इस रहस्य को नहीं समझते हैं, वे उदाहरण के लिए ' अव्रद कुदसिया शाह नक्शबंद' पढ़ते हैं, जिससे सौ लाभ और पुण्य प्राप्त होते हैं, या 'जौशन अल-कबीर' पढ़ते हैं, जिससे एक हजार लाभ प्राप्त होते हैं, और उनमें से कुछ लाभों को अपना मुख्य उद्देश्य बनाते हैं।
तब उन्हें लाभ नहीं मिलता, और उन्हें प्राप्त नहीं होगा, और वे उन्हें प्राप्त करने के योग्य भी नहीं हैं। क्योंकि लाभ प्रार्थना का कारण नहीं हो सकते हैं और स्वयं उनका इरादा और चाहत नहीं हो सकती है। क्योंकि वे तब प्राप्त होते हैं जब बिना मांगे, ईमानदारी से प्रार्थना के परिणामस्वरूप, एक उपकार के रूप में। यदि उनका इरादा किया जाता है, तो यह एक हद तक ईमानदारी को नुकसान पहुंचाता है। वास्तव में, यह पूजा नहीं रह जाती है और इसका सारा मूल्य खो जाता है। लेकिन एक बात है, वह यह कि कमजोर लोगों को पुण्य प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कुछ चाहिए। यदि वे लाभों के बारे में सोचते हैं और उत्सुकता से उन्हें केवल ईश्वर के लिए और परलोक के लिए पढ़ते हैं, तो इससे कोई नुकसान नहीं होता है और यह स्वीकार्य भी है।

परन्तु क्योंकि ज्ञान के इस उदाहरण को समझा नहीं गया है, इसलिए उनमें से कई लोग आध्यात्मिक ध्रुवों और पूर्व पीढ़ियों के धर्मी लोगों से बताए गए लाभों पर संदेह करने लगते हैं या यहां तक कि उन्हें अस्वीकार भी कर देते हैं, जब वे उन्हें प्राप्त नहीं करते हैं।

तीसरा मामला

"वह आदमी खुश है जो अपनी सीमाओं को जानता है और उनसे आगे नहीं बढ़ता।"19 सूर्य
इसमें कांच के टुकड़े और पानी की बूंद से लेकर तालाब, समुद्र, चंद्रमा और ग्रहों तक की अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक में सूर्य का

[19] बुखारी, अल-तारिख अल-कबीर, iii, 338; तबरानी, अल-मुजम अल-कबीर, वी, 71; बहाकी, अल-सुनन अल-कुबरा, iv, 182।

अपनी क्षमता के अनुसार प्रतिबिंब और छवि बनाता है, और अपनी सीमाओं को जानता है। अपनी क्षमता के अनुसार, पानी की एक बूंद कहती है: "मुझ पर सूर्य का प्रतिबिंब है।" लेकिन यह नहीं कह सकती: "मैं सागर की तरह एक दर्पण हूँ।" ठीक उसी तरह, संतों के रैंक में दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों की विविधता के अनुसार डिग्री होती है। प्रत्येक दिव्य नाम में सूर्य की तरह अभिव्यक्तियाँ हैं, हृदय से लेकर दिव्य सिंहासन तक। हृदय भी एक सिंहासन है, लेकिन यह नहीं कह सकता: "मैं दिव्य सिंहासन की तरह हूँ।"

इस प्रकार, जो लोग अपनी शक्तिहीनता, दरिद्रता, दोष और दुर्गुणों को जानने के बजाय अनिच्छा और अभिमान के साथ आगे बढ़ते हैं, तथा ईश्वरीय दरबार के समक्ष, जो पूजा का आधार है, प्रार्थनापूर्वक दंडवत करते हैं, वे अपने छोटे हृदय को ईश्वरीय सिंहासन के बराबर मानते हैं। वे अपने बूंद-जैसे पद को संतों के सागर-जैसे पद से भ्रमित करते हैं। वे स्वयं को उन उच्च पदों के योग्य बनाने के लिए बनावटीपन, झूठे प्रदर्शन और निरर्थक आत्म-प्रशंसा का सहारा लेते हैं, और स्वयं के लिए अनेक कठिनाइयाँ खड़ी करते हैं।

संक्षेप में: एक हदीस है जिसमें कहा गया है: "जो लोग जानते हैं, उनके अलावा सभी नष्ट हो जाएँगे, और जो लोग जानते हैं, वे नष्ट हो जाएँगे, सिवाय उनके जो कार्य करते हैं, और जो कार्य करते हैं, वे नष्ट हो जाएँगे, सिवाय उन लोगों के जो सच्चे हैं, और सच्चे लोग गंभीर खतरे में हैं।"20 अर्थात्, मुक्ति और उद्धार का एकमात्र साधन ईमानदारी है। ईमानदारी हासिल करना सबसे महत्वपूर्ण है। ईमानदारी के साथ किया गया सबसे छोटा कार्य भी ईमानदारी के बिना किए गए बहुत से कार्यों से बेहतर है।21 एक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि उसके कार्यों के लिए ईमानदारी तभी प्राप्त होती है जब वह उन्हें केवल इसलिए करता है क्योंकि वे एक ईश्वरीय आदेश हैं और उनका परिणाम ईश्वरीय प्रसन्नता है, और उसे ईश्वर के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

हर चीज़ में ईमानदारी है। ईमानदारी से किया गया एक छोटा सा प्यार, ढेर सारे आधिकारिक प्यार से बेहतर है, जिसके बदले में बदले की उम्मीद की जाती है। किसी ने इस सच्चे प्यार का वर्णन किया है

इस प्रकार: "मैं प्रेम के लिए रिश्वत, प्रतिफल, प्रतिफल या पुरस्कार नहीं चाहता, क्योंकि प्रतिफल चाहने वाला प्रेम कमजोर और अल्पकालिक होता है।"22 सच्चा प्रेम मानव स्वभाव में और सभी माताओं में निहित है। माताओं की करुणा इस सच्चे प्रेम को उसके वास्तविक अर्थ में प्रकट करती है। इस बात का प्रमाण कि इस करुणा के रहस्य के माध्यम से माताएँ अपने बच्चों के प्रति अपने प्रेम के लिए पुरस्कार या रिश्वत नहीं चाहती या नहीं चाहती हैं, उनके लिए अपने जीवन और यहाँ तक कि अपने शाश्वत सुख का बलिदान करने के लिए उनकी तत्परता है। मुर्गी की सारी पूँजी उसका जीवन है, और एक मुर्गी ने अपने चूज़े के सिर को कुत्ते के जबड़े से बचाने के लिए अपना सिर बलिदान कर दिया - जैसा कि हुसेरेव ने देखा।

---

[20] देखें, अल-'अजलुनी, कशफ अल-खफा', ii, 415; अल-ग़ज़ाली, इह्या 'उलूम अल-दीन, iii, 414; iv, 179, 362. अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, iv, 341; अबू

[21] नुअयम, अल-हिल्या अल-अवलिया', i, 244।

[22] देखें, इब्न क़ैस, क़ुरा अल-दैफ़, i, 95, 207; अल-धाहाबी, तारिख अल-इस्लाम, 103।

चौथा मामला

किसी को भी ऐसे उपहार स्वीकार नहीं करने चाहिए जो कारणों के कारण प्रत्यक्ष कारणों के हाथों से आते हैं। यदि कोई कारण जैसे कि जानवर या पेड़ में इच्छाशक्ति नहीं है, तो वह सर्वशक्तिमान ईश्वर के कारण सीधे उपहार देता है। यह स्वभाव की जीभ के माध्यम से कहता है: "ईश्वर के नाम पर" और आपको देता है। इसलिए आपको भी कहना चाहिए: "ईश्वर के नाम पर," और इसे ईश्वर के लिए स्वीकार करें। यदि कारण में इच्छाशक्ति है, तो उसे कहना चाहिए: "ईश्वर के नाम पर," और आप इसे स्वीकार कर सकते हैं, अन्यथा आपको इसे अस्वीकार कर देना चाहिए। इसके स्पष्ट अर्थ के अलावा, आयत,

जिस चीज़ पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, उसे न खाओ (6:121)

इसका एक अंतर्निहित अर्थ है: उन उपहारों में हिस्सा न लें जो सच्चे वरदानदाता को याद नहीं करते हैं और उनके नाम पर नहीं दिए गए हैं।

चूँकि ऐसा है, इसलिए देने वाले और लेने वाले दोनों को कहना चाहिए "ईश्वर के नाम पर।" अगर देने वाला ऐसा न कहे और आपको ज़रूरत हो, तो आप कहें, "ईश्वर के नाम पर", और उस पर ईश्वरीय दया का हाथ देखकर, धन्यवाद में उसे चूमें और उससे उपहार लें। यानी, उपहार से उपहार की ओर देखें और उपहार से सच्चे दाता के बारे में सोचें। इस तरह से सोचना एक तरह का धन्यवाद है। फिर अगर आप चाहें, तो स्पष्ट साधन के लिए प्रार्थना करें, क्योंकि यह उपहार उन्हीं के हाथों से आपके पास भेजा गया था।

जो लोग प्रत्यक्ष कारणों की पूजा करते हैं, वे दो चीजों का एक साथ आना या एक साथ होना, जिसे 'संयोजन' कहते हैं, को धोखा देते हैं; वे मानते हैं कि दो चीजें एक दूसरे का कारण बनती हैं। साथ ही, चूँकि एक चीज का न होना किसी वरदान के न होने का कारण है, इसलिए वे मानते हैं कि उस चीज का अस्तित्व भी वरदान के अस्तित्व का कारण है। वे उस चीज के प्रति अपना धन्यवाद और कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और गलती में पड़ जाते हैं। क्योंकि किसी वरदान का अस्तित्व, वरदान की सभी शर्तों और प्रारंभिकताओं से उत्पन्न होता है। जबकि वरदान का न होना केवल एक शर्त के न होने से होता है।

उदाहरण के लिए, जो व्यक्ति बगीचे में पानी डालने के लिए नहर नहीं खोलता, वह बगीचे के सूखने और वरदानों के न होने का कारण और कारण है। लेकिन बगीचे के वरदानों का अस्तित्व मनुष्य के कर्तव्य के अलावा सैकड़ों स्थितियों पर निर्भर है और वरदान प्रभु की इच्छा और शक्ति के माध्यम से अस्तित्व में आते हैं, जो वास्तविक कारण हैं। तो समझिए कि इस कुतर्क की त्रुटि कितनी स्पष्ट है और कारणों की पूजा करने वाले कितने गलत हैं!

हां, 'संगठन' एक बात है और कारण दूसरी बात। आपको इनाम मिलता है, लेकिन
किसी व्यक्ति का आपको यह प्रदान करने का इरादा 'सहयोगी' था

यह वरदान का कारण नहीं है। इसका कारण ईश्वरीय कृपा है। यदि व्यक्ति ने आपको वरदान देने का इरादा नहीं किया होता, तो आपको वह नहीं मिलता और यह वरदान के न होने का कारण होता। लेकिन उपरोक्त नियम के परिणामस्वरूप, देने की इच्छा वरदान का कारण नहीं हो सकती; यह सैकड़ों स्थितियों में से केवल एक हो सकती है।

उदाहरण के लिए, रिसाले-ए-नूर के कुछ छात्र (जैसे हुसरेव और रेफ़त) जिन्हें सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा प्राप्त हुई है, उन्होंने 'संगति' और कारण को भ्रमित कर दिया है, और अपने स्वामी के प्रति बहुत आभारी रहे हैं। हालाँकि, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उन पर कुरान की शिक्षा से लाभ उठाने के उपहार को, जो उसने प्रदान किया था, और शिक्षा के उपहार को, जो उसने उनके स्वामी को प्रदान किया था, एक साथ जोड़ दिया; उसने दोनों को 'संगति' कर दिया। वे कहते हैं: "यदि हमारे स्वामी यहाँ न आते, तो हमें यह शिक्षा नहीं मिलती, इसलिए उनकी शिक्षा ही हमारे लाभ का कारण है।" हालाँकि, मैं कहता हूँ: "भाइयों! सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आप पर और मुझ पर जो कृपाएँ प्रदान की हैं, वे एक साथ आई हैं। दोनों कृपाओं का कारण ईश्वरीय दया है। आपकी तरह, मैंने एक समय में संगति और कारण को भ्रमित कर दिया था, और आप जैसे हीरे की कलम वाले सैकड़ों रिसाले-ए-नूर छात्रों के प्रति बहुत कृतज्ञता महसूस की थी। मैं कहता: 'यदि वे न होते, तो मुझ जैसा अल्पशिक्षित अभागा यह सेवा कैसे कर सकता था?' तब मुझे समझ में आया कि कलम के माध्यम से आपको पवित्र वरदान प्रदान करने के बाद, उन्होंने मुझे इस सेवा में सफलता प्रदान की। उन्होंने दोनों को जोड़ा; वे एक दूसरे के कारण नहीं थे। मैं आपको धन्यवाद नहीं देता, बल्कि बधाई देता हूँ। आप भी मेरे लिए प्रार्थना करें और मुझे बधाई दें, मेरे प्रति कृतज्ञ होने के बजाय।"

इस चौथे पदार्थ से यह समझा जा सकता है कि एक निश्चित अवस्था में कितने अंश होते हैं। असावधानी.

पांचवां मामला

जैसे किसी समुदाय की संपत्ति किसी एक व्यक्ति को दे देना गलत है; या अगर कोई व्यक्ति समुदाय की दान-संस्थाओं पर हाथ डालता है, तो वह गलत करता है; उसी तरह किसी समुदाय के नेता या स्वामी को उस समुदाय के श्रम के परिणाम या उसके अच्छे कामों से मिलने वाले सम्मान और गुणों का श्रेय देना समुदाय और नेता या स्वामी दोनों के लिए गलत है। क्योंकि ऐसा करने से उसका अहंकार बढ़ता है और घमंड बढ़ता है। दरबान होने के बावजूद वह खुद को राजा मानता है। वह खुद के साथ भी गलत करता है। दरअसल, वह भगवान के साथ एक तरह की गुप्त साझेदारी का रास्ता खोलता है।

हां, कर्नल किसी रेजिमेंट की लूट, जीत और गौरव का दावा खुद नहीं कर सकता जो किसी गढ़ पर विजय प्राप्त करता है। गुरु और आध्यात्मिक मार्गदर्शक को स्रोत और मूल नहीं माना जाना चाहिए, बल्कि जाना जाना चाहिए

प्रतिबिंब और अभिव्यक्ति का स्थान। उदाहरण के लिए, गर्मी और प्रकाश दर्पण के माध्यम से आप तक पहुँचते हैं। यह पागलपन होगा यदि आप सूर्य को भूल जाते हैं, और दर्पण को स्रोत मानते हैं, सूर्य के प्रति आभारी होने के बजाय उसके प्रति आभारी हैं। दर्पण को संरक्षित किया जाना चाहिए क्योंकि यह अभिव्यक्ति का स्थान है। इस प्रकार, मार्गदर्शक की आत्मा और हृदय एक दर्पण हैं; वे सर्वशक्तिमान ईश्वर से निकलने वाले तेज को प्रतिबिंबित करने का स्थान हैं। वह अपने अनुयायियों को इसके प्रतिबिंबित होने का साधन है। उसे साधन होने की तुलना में तेज के संबंध में उच्च स्थान नहीं दिया जाना चाहिए।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि स्रोत माना जाने वाला गुरु न तो अभिव्यक्ति का स्थान होता है और न ही स्रोत। अनुयायी मानता है कि उसकी ईमानदारी की शुद्धता, या उसकी आसक्ति की ताकत, या उसके गुरु पर उसकी एकाग्रता, या अन्य तरीकों से उसे जो तेज प्राप्त होता है, वह उसके गुरु की आत्मा के दर्पण से आया है। जैसे कि मेस्मेरिज्म के माध्यम से, कुछ लोग दर्पण में ध्यानपूर्वक देखने से समानता की दुनिया की एक खिड़की खोलते हैं, और दर्पण में अजीब और अद्भुत चीजें देखते हैं। लेकिन वे दर्पण में नहीं होते हैं; दर्पण पर अपना ध्यान केंद्रित करने से, दर्पण के बाहर उनकी कल्पना में एक खिड़की खुल जाती है और वे उन चीजों को देखते हैं। यह इस कारण से है कि कभी-कभी ईमानदार छात्र एक कमी वाले शेख से अधिक उन्नत हो सकता है। वह लौटता है, अपने शेख का मार्गदर्शन करता है और शेख का शेख बन जाता है।

चौदहवाँ नोट

इसमें चार छोटे संकेत हैं जो ईश्वरीय एकता की ओर संकेत करते हैं।

पहला S चिन्ह

हे कारणों के उपासक! आप देखते हैं कि एक अद्भुत महल बनाया जा रहा है, जो दुर्लभ रत्नों से बना है। इसके निर्माण में इस्तेमाल किए गए कुछ रत्न केवल चीन में पाए जाते हैं; कुछ अंडलुसिया में; कुछ यमन में; जबकि कुछ साइबेरिया के अलावा कहीं और नहीं पाए जाते हैं। यदि आप देखते हैं कि जब यह बन रहा है, तो उसी दिन उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम से कीमती पत्थर बुलाए जा रहे हैं, तो क्या आपको कोई संदेह होगा कि महल बनाने वाला मास्टर बिल्डर एक चमत्कार करने वाला था, जिसने पूरी पृथ्वी पर राज किया था?

इस प्रकार, हर जानवर एक दिव्य महल है, और मनुष्य महलों में सबसे बेहतरीन और सबसे अद्भुत है। मनुष्य नामक महल के कुछ रत्न आत्माओं की दुनिया से आते हैं, अन्य समानताओं की दुनिया और संरक्षित टैबलेट से, और अन्य हवा की दुनिया, प्रकाश की दुनिया और तत्वों की दुनिया से। वह एक अद्भुत महल भी है जिसकी ज़रूरतें अनंत काल तक फैली हुई हैं, जिसकी उम्मीदें स्वर्ग के सभी क्षेत्रों तक फैली हुई हैं

और धरती, और जिसका इस दुनिया और आख़िरत के सभी युगों से सम्बन्ध और संबंध है।

हे अपने को सच्चा मनुष्य मानने वाले! चूँकि तुम्हारा वास्तविक स्वरूप ऐसा ही है, इसलिए तुम केवल उसी के द्वारा बनाए जा सकते हो, जिसके लिए यह लोक और परलोक एक-एक निवास स्थान है, धरती और आकाश एक-एक पृष्ठ हैं, तथा जो पूर्व और परलोक पर इस प्रकार शासन करता है, जैसे कि वे कल और कल हों। ऐसी स्थिति में, मनुष्य द्वारा पूजित होने के योग्य और उसका आश्रय और रक्षक वही हो सकता है, जो धरती और आकाश पर शासन करता हो, तथा इस लोक और परलोक की बागडोर अपने हाथ में रखता हो।

दूसरा संकेत कुछ मूर्ख लोग होते

हैं, जो सूर्य को न पहचानने के कारण, यदि उसे दर्पण में देख लेते हैं, तो दर्पण से प्रेम करने लगते हैं। वे तीव्र भावना के साथ दर्पण को सुरक्षित रखने का प्रयास करते हैं, ताकि उसके भीतर का सूर्य नष्ट न हो जाए। जब भी मूर्ख व्यक्ति को यह एहसास होता है कि दर्पण के मरने से सूर्य नहीं मरता, और उसके टूट जाने से सूर्य नष्ट नहीं होता, तो वह अपना सारा प्रेम आकाश में सूर्य पर लगा देता है। तब उसे समझ में आता है कि दर्पण में दिखाई देने वाला सूर्य दर्पण पर निर्भर नहीं है, और उसका निरंतर अस्तित्व उस पर निर्भर नहीं है। बल्कि सूर्य ही दर्पण को धारण करता है और उसे चमकीला प्रकाश प्रदान करता है। सूर्य का जारी रहना दर्पण पर निर्भर नहीं है; दर्पण की सजीव चमक का जारी रहना सूर्य के प्रकट होने पर निर्भर है।

हे मनुष्य! तुम्हारा हृदय, पहचान और स्वभाव दर्पण है। तुम्हारे स्वभाव और हृदय में अमरत्व का जो तीव्र प्रेम है, वह दर्पण के लिए नहीं, न ही तुम्हारे हृदय और स्वभाव के लिए, बल्कि उस परम तेजस्वी पुरुष के प्रकटीकरण के लिए होना चाहिए, जिसका प्रकटीकरण दर्पण की क्षमता के अनुसार दर्पण में प्रतिबिम्बित होता है। लेकिन मूर्खता के कारण तुम्हारा वह प्रेम अन्य स्थानों की ओर निर्देशित हो जाता है। चूँकि ऐसा है, इसलिए कहो: "हे परम तेजस्वी! केवल तुम ही धीरजवन्त हो!" अर्थात्, "चूँकि तुम विद्यमान हो और धीरजवन्त हो, इसलिए जो भी क्षणभंगुरता और अस्तित्वहीनता हम पर आघात करना चाहती है, उसे करने दो, उसका कोई महत्व नहीं है!"

तीसरा S चिन्ह

हे मनुष्य! सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने तुम्हारे स्वभाव में जो सबसे विचित्र स्थिति रखी है, वह है पूरी दुनिया में स्थिर न हो पाना; जैसे कोई जेल में घुट रहा हो, तुम दुनिया से कहीं बड़ी जगह की तलाश में तड़प रहे हो। फिर भी तुम छोटी से छोटी चीज, एक याद, एक पल में प्रवेश कर उसमें स्थिर हो जाते हो। तुम्हारा दिल और दिमाग जो विशाल दुनिया में स्थिर नहीं हो सकता, उस छोटी सी याद में स्थिर हो जाता है। तुम उस छोटे से पल, उस छोटी सी याद में अपनी तीव्र भावनाओं के साथ घूमते हो।

और उसने आपके स्वभाव में ऐसी अमूर्त शक्तियाँ और सूक्ष्म क्षमताएँ भर दीं कि यदि
उनमें से कुछ लोग संसार को खाकर भी तृप्त नहीं होते; और कुछ लोग अपने अन्दर एक छोटा कण भी नहीं रख सकते। जैसे आँख एक बाल भी नहीं सह सकती, यद्यपि सिर भारी पत्थर उठा सकता है,

वे शक्तियाँ बाल के बराबर भी भार नहीं उठा सकतीं, अर्थात् असावधानी और पथभ्रष्टता से उत्पन्न कोई तुच्छ स्थिति। वे कभी-कभी बुझ जाती हैं और मर जाती हैं।

यहां तक की।

चूँकि यह ऐसा है, इसलिए सावधान रहें, सावधानी से चलें, डूबने से डरें! एक कौर, एक शब्द, एक बीज, एक चमक, एक संकेत, एक चुंबन में डूब न जाएँ! अपनी व्यापक क्षमताओं को, जो दुनिया को निगल सकती हैं, ऐसी चीज़ में न डुबोएँ। क्योंकि ऐसी चीज़ें हैं जो बहुत छोटी हैं जो एक तरह से बहुत बड़ी चीज़ों को निगल सकती हैं। आकाश अपने सितारों के साथ कांच के एक छोटे से टुकड़े में घुस सकता है और डूब सकता है। और आपके कार्यों के अधिकांश पृष्ठ और आपके जीवन के पत्ते आपकी स्मृति की क्षमता में प्रवेश करते हैं, जो सरसों के दाने के समान छोटे होते हैं। इसी तरह ऐसी छोटी चीज़ें भी हैं जो इतनी बड़ी चीज़ों को निगल लेती हैं और उन्हें अपने में समाहित कर लेती हैं।

चौथा S चिन्ह

हे जगत-पूजक मनुष्य! तुम अपने संसार को बहुत विस्तृत समझते हो, फिर भी वह एक संकीर्ण कब्र जैसा है। लेकिन चूँकि उस संकीर्ण कब्रनुमा घर की दीवारें कांच की हैं, इसलिए वे एक-दूसरे में प्रतिबिम्बित होती हैं और जहाँ तक नज़र जाती है, वहाँ तक फैली हुई हैं।

कब्र की तरह संकीर्ण होने के बावजूद, आपकी दुनिया एक शहर जितनी बड़ी लगती है। क्योंकि दायाँ दीवार, जो अतीत है, और बायाँ दीवार, जो भविष्य है, दोनों के अस्तित्वहीन होने के बावजूद, वे एक दूसरे के भीतर प्रतिबिम्बित होते हैं, जो वर्तमान समय के पंखों को खोलते हैं, जो अत्यंत संक्षिप्त और संकीर्ण है। वास्तविकता कल्पना के साथ मिलती है, और आप एक अस्तित्वहीन दुनिया को अस्तित्वमान मान लेते हैं।

तेजी से घुमाने पर एक रेखा सतह की तरह चौड़ी दिखाई देती है, जबकि असल में वह एक पतली रेखा होती है। आपकी दुनिया भी असल में संकीर्ण है, लेकिन आपकी असावधानी, भ्रम और कल्पना के कारण इसकी दीवारें दूर-दूर तक फैल गई हैं। अगर आप किसी विपत्ति के कारण उस संकीर्ण दुनिया में चले गए, तो आपका सिर उस दीवार से टकराएगा, जिसे आप दूर मान रहे थे। इससे आपके सिर का भ्रम दूर हो जाएगा और आपकी नींद उड़ जाएगी।

तब तुम देखोगे कि तुम्हारी वह विस्तृत दुनिया कब्र से भी संकरी है, सीरत के पुल से भी महीन है। तुम्हारी जिंदगी बिजली से भी तेज गुजर जाती है, चाय से भी तेज बह जाती है।

चूँकि सांसारिक जीवन और मांस तथा पशु जीवन इस प्रकार हैं, इसलिए पशुता से मुक्त हो जाओ, भौतिकता को पीछे छोड़ दो, हृदय और आत्मा के जीवन के स्तर में प्रवेश करो! तुम जीवन का एक क्षेत्र, प्रकाश की दुनिया पाओगे, जो तुम्हारी कल्पना की दुनिया से कहीं अधिक व्यापक है। उस दुनिया की कुंजी हृदय से पवित्र शब्द "ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है" का उच्चारण करवाना है, जो ईश्वरीय एकता और ईश्वर के ज्ञान के रहस्यों को व्यक्त करते हैं, और आत्मा को उन पर काम करने के लिए प्रेरित करना है।

पंद्रहवाँ नोट

इसमें तीन बातें शामिल हैं।23

पहला मामला

यह श्लोक है

> और जिसने कण भर भी भलाई की हो, वह उसे देखेगा, और जिसने कण भर भी बुराई की हो, वह उसे * और जो कोई देखेगा। (99:7-8)

जो पालनहार के नाम की पूर्ण अभिव्यक्ति को इंगित करता है। यदि आप सर्वज्ञ कुरान की इस सच्चाई का प्रमाण चाहते हैं, तो ब्रह्मांड की पुस्तक के पृष्ठों को देखें, जो स्पष्ट पुस्तक के नमूने पर लिखी गई है; आप पालनहार के दिव्य नाम की अधिकतम अभिव्यक्ति और इस आयत के सर्वोच्च सत्य के कई मायनों में समान कई चीजें देखेंगे।

उदाहरण के लिए, विभिन्न पेड़ों, फूलों और पौधों के मुट्ठी भर बीज लें, जो छोटे संदूकों की तरह हैं और खुद में सभी अलग-अलग और विविध हैं, फिर उन्हें सरल और निर्जीव धरती के अंधेरे में दफना दें। फिर उन्हें साधारण पानी से सींचें, जिसमें संतुलन का अभाव है, जो चीजों में अंतर नहीं कर सकता है, और जहाँ भी आप इसे डालेंगे, यह बह जाएगा।

अब वसंत ऋतु में, वार्षिक पुनरुत्थान के क्षेत्र में वापस आइये, और देखिए!
वसंत ऋतु के उस समय को ध्यान से देखें जब इसराफिल जैसा गरजने वाला फरिश्ता बारिश के लिए पुकारता है जैसे कि वह अपनी तुरही बजा रहा हो, और ज़मीन के नीचे दबे बीजों में जीवन की साँस फूँकने की खुशखबरी दे रहा हो; आप देखेंगे कि संरक्षक के दिव्य नाम के प्रकटीकरण के तहत, वे बीज जो एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं और सभी मिश्रित और भ्रमित हैं, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता से आने वाले रचनात्मक आदेशों के अनुसार पूरी तरह और बिना किसी त्रुटि के अनुरूप होते हैं। वे इतने सटीक रूप से अनुरूप होते हैं कि उनके विकास में एक शानदार चेतना, अंतर्दृष्टि, उद्देश्य, इच्छा, ज्ञान, पूर्णता और बुद्धि स्पष्ट होती है। क्योंकि आप देखते हैं कि वे बीज जो एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, अलग हो जाते हैं और एक दूसरे से अलग हो जाते हैं।

उदाहरण के लिए, यह छोटा सा बीज अंजीर का पेड़ बन गया है, इसने सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता की कृपा को हमारे सिर पर फैलाना शुरू कर दिया है। यह उन्हें वितरित करता है, अपने हाथों से उन्हें हमारी ओर बढ़ाता है। और ये दो बीज जो सतही तौर पर एक जैसे हैं, उन्होंने सूरजमुखी और पैंसी नामक फूल पैदा किए हैं। उन्होंने हमारे लिए खुद को सजाया है।

वे हमारे चेहरों पर मुस्कुराते हैं, जिससे हम उनसे प्यार करने लगते हैं। और इस तरह के बीज ने बढ़िया फल पैदा किए हैं; वे अंकुर बन गए, फिर पेड़ बन गए। उनके स्वादिष्ट स्वाद से हमारी भूख बढ़ती है

[23] पंद्रहवें नोट का दूसरा और तीसरा मामला चौबीसवें फ्लैश का हिस्सा है।
दूसरा चौबीसवें फ्लैश में शामिल है, और तीसरा बारला लाहिकासी में।

स्वाद, गंध और रूप, वे हमें अपने पास आमंत्रित करते हैं। वे अपने ग्राहकों के लिए खुद को बलिदान कर देते हैं ताकि वे वनस्पति जीवन के स्तर से पशु जीवन तक उठ सकें। और इसी तरह। आप इसी तरह से और भी उदाहरण दे सकते हैं। बीज इस तरह से विकसित हुए कि एक मुट्ठी भर बीज कई तरह के पेड़ों और फूलों से भरा बगीचा बन गया। उनमें कोई दोष या त्रुटि नहीं थी। उन्होंने कविता का अर्थ प्रदर्शित किया,

तो फिर अपनी दृष्टि फेर लो, क्या तुम्हें कोई कमी नज़र आती है? (67:3)

संरक्षक के नाम के प्रकटीकरण और प्रदान के माध्यम से, प्रत्येक बीज अपने माता-पिता और मूल से विरासत में मिली विरासत को बिना किसी भ्रम या दोष के संरक्षित और प्रदर्शित करता है।

यह एक निश्चित संकेत है कि संरक्षक जो इस अद्भुत कार्य को अंजाम देता है, वह मृतकों के पुनरुत्थान और अंतिम न्याय के समय अपने संरक्षण की सर्वोच्च अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करेगा।

हाँ, इस प्रकार दोषरहित और दोषरहित संरक्षण की अभिव्यक्ति तुच्छ, क्षणभंगुर, क्षणिक अवस्थाओं में भी इस बात का निर्णायक प्रमाण है कि मनुष्य, जो सर्वोच्च ट्रस्ट का धारक और पृथ्वी का प्रतिनिधि है, के कार्य, कर्म, वचन, तथा अच्छे कर्म और बुरे कर्म - ऐसे कर्म जिनका शाश्वत प्रभाव और सर्वोच्च महत्व है - ठीक से संरक्षित हैं और उनका लेखा-जोखा रखा जाएगा।

क्या मनुष्य यह मानता है कि उसे अपने हाल पर छोड़ दिया जाएगा? भगवान न करे! उसे अनंत काल तक, अनंत सुख और अनंत दुख के लिए नियत किया गया है। उसे अपने सभी कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा, चाहे वे छोटे हों या बड़े, अधिक हों या कम। उसे या तो पुरस्कार मिलेगा या दंड।

संरक्षण की अधिकतम अभिव्यक्ति और पहले उल्लेखित श्लोक की सच्चाई के साक्ष्यों की गिनती या गणना नहीं की जा सकती। इस मामले में हमने जो दिखाया है, वह समुद्र से एक बूंद और पहाड़ से एक अणु मात्र है।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

* * *

अठारहवाँ फ्लैश

यह सिक्के-ए-तस्दीक-ए-गैबी (इस्लाम के संविधान की पुष्टि करने वाली मुहर) में प्रकाशित हुआ है।
अनदेखे) और लेम'अलर (द फ्लैशेस कलेक्शन) के हस्त-प्रतिलिपि संस्करणों में।

* * *

उन्नीसवीं फ्लैश

मितव्ययिता पर

[यह ग्रंथ मितव्ययिता और संतोष, तथा अपव्यय और अपव्यय के बारे में है।]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
खाओ और पियो, परन्तु अधिक नष्ट न करो। (7:31)

यह श्लोक मितव्ययिता का स्पष्ट आदेश देते हुए तथा अपव्यय को स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित करते हुए अत्यंत महत्वपूर्ण तथा बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देश देता है। इस श्लोक में सात बातें कही गई हैं।

पहला बिंदु

दयालु सृष्टिकर्ता मानव जाति को दिए गए उपहारों के बदले में धन्यवाद चाहता है, जबकि अपव्यय धन्यवाद के विपरीत है, और उपहार को तुच्छ समझता है और नुकसान का कारण बनता है। हालाँकि, मितव्ययिता उपहार के प्रति सम्मान दिखाती है और लाभदायक है।

हां, मितव्ययिता एक तरह से धन्यवाद है, और उदारता में प्रकट ईश्वरीय दया के प्रति सम्मान भी दिखाती है, और निश्चित रूप से बहुतायत का कारण है। इसी तरह, संयम की तरह, यह शरीर के लिए स्वास्थ्यवर्धक है, और चूंकि यह व्यक्ति को वास्तव में भीख मांगने के पतन से बचाता है, इसलिए यह आत्म-सम्मान का कारण है। यह उदारता में मिलने वाले आनंद का अनुभव करने और उदारता में उस आनंद को चखने का एक शक्तिशाली साधन भी है, जो जाहिर तौर पर कोई आनंद नहीं देता है। जहाँ तक अपव्यय की बात है, चूँकि यह बुद्धिमत्ता के इन उदाहरणों के विपरीत है, इसलिए इसके गंभीर परिणाम हैं।

दूसरा बिंदु

सर्वज्ञ निर्माता ने मानव शरीर को एक अद्भुत महल के रूप में बनाया है और एक सुव्यवस्थित शहर जैसा दिखता है। मुंह में स्वाद की भावना एक द्वारपाल की तरह है, और तंत्रिकाएँ और रक्त वाहिकाएँ टेलीफोन और टेलीग्राफ तारों की तरह हैं; वे ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा स्वाद की भावना संचार करती है।

पेट से संवाद करता है, जो शरीर के केंद्र में है, और मुंह में जाने वाले भोजन के बारे में पेट को सूचित करता है। यदि शरीर और पेट को इसका कोई उपयोग नहीं है, तो यह कहता है: "निषिद्ध!", और इसे बाहर निकाल देता है। और कभी-कभी भोजन हानिकारक और कड़वा होने के साथ-साथ शरीर के लिए फायदेमंद नहीं होता है, और यह उसे तुरंत बाहर निकाल देता है।

इस प्रकार, चूँकि स्वाद की इन्द्रिय द्वारपाल है, इसलिए शरीर के प्रशासन की दृष्टि से पेट स्वामी और शासक है। यदि महल या नगर में आने वाले उपहार और महल के शासक को दिए जाने वाले उपहारों का मूल्य सौ लीरा है, तो द्वारपाल के लिए टिप के रूप में केवल पाँच लीरा का मूल्य उचित है, ताकि वह अभिमानी न हो जाए और भ्रष्ट न हो जाए, फिर वह अपने कर्तव्य को भूलकर क्रांतिकारियों को महल में आने दे जो उसे बड़ी टिप देंगे।

इस रहस्य के परिणामस्वरूप अब हम दो कौरों की कल्पना करेंगे। एक में पनीर और अंडा जैसे पौष्टिक खाद्य पदार्थ हैं और इसकी कीमत चालीस पैरा है, और दूसरे में बेहतरीन पेस्ट्री हैं और इसकी कीमत दस कुरुश है। मुंह में जाने से पहले, शरीर के संबंध में इन दोनों कौरों में कोई अंतर नहीं है, वे बराबर हैं। और गले से नीचे जाने के बाद भी वे शरीर को पोषण देने में बराबर हैं। वास्तव में, चालीस पैरा के बराबर पनीर कभी-कभी अधिक पौष्टिक होता है। केवल, मुंह में स्वाद की भावना को संतुष्ट करने के संबंध में, आधे मिनट का अंतर होता है। आप इससे देख सकते हैं कि आधे मिनट के लिए चालीस पैरा से दस कुरुश तक की कीमत बढ़ाना कितना व्यर्थ और हानिकारक अपव्यय है।

अब, हालांकि महल के शासक के लिए आने वाला उपहार एक लीरा के बराबर है, लेकिन द्वारपाल को उसके हक से नौ गुना ज़्यादा टिप देना उसे भ्रष्ट कर देगा। वह घोषणा करेगा: "मैं शासक हूँ," और जो भी उसे सबसे ज़्यादा टिप और सबसे ज़्यादा खुशी देगा उसे अंदर आने देगा; वह क्रांति और आगजनी करवाएगा। फिर वह उन्हें चिल्लाने पर मजबूर करेगा: "ओह! डॉक्टर को बुलाओ और उसे मेरे पेट में लगी आग बुझाने और मेरा तापमान कम करने के लिए कहो!"

इस प्रकार, मितव्ययिता और संतोष ईश्वरीय ज्ञान के अनुरूप हैं; वे स्वाद की इंद्रिय को द्वारपाल की तरह मानते हैं और उसे उसके अनुसार पारिश्रमिक देते हैं। जहाँ तक अपव्यय का प्रश्न है, चूँकि यह ज्ञान के विपरीत कार्य करता है, इसलिए यह शीघ्र ही अपनी सजा पाता है, पेट खराब करता है, और वास्तविक भूख को नष्ट कर देता है। भोजन की अनावश्यक विविधता से झूठी और कृत्रिम भूख पैदा करके, यह अपच और बीमारी का कारण बनता है।

[1] एक कुरुश में चालीस पारा और एक लीरा में सौ कुरुश होते थे । (ट्र.)

तीसरा बिंदु

हमने दूसरे बिंदु में कहा था कि स्वाद की इंद्रिय द्वारपाल है, और वास्तव में, असावधान लोगों के लिए और जिन्होंने आध्यात्मिक रूप से प्रगति नहीं की है या धन्यवाद के मार्ग में आगे नहीं बढ़े हैं, उनके लिए यह द्वारपाल की तरह है। अपव्यय नहीं करना चाहिए या स्वाद की इंद्रिय को आनंद देने के लिए इसकी कीमत एक से दस तक नहीं बढ़ानी चाहिए।

लेकिन जो लोग वास्तव में धन्यवाद के मार्ग पर हैं, जो वास्तविकता की तलाश कर रहे हैं, और जो लोग अपने दिल से वास्तविकता तक पहुँचते हैं, उनकी स्वाद की भावना ईश्वरीय दया की रसोई में एक पर्यवेक्षक और निरीक्षक की तरह है, जैसा कि छठे वचन में तुलना में समझाया गया है। इसका कर्तव्य है कि वह अपने अंदर मौजूद छोटे-छोटे तराजू पर ईश्वरीय वरदानों की विविधता को पहचाने और तौलें, और भोजन की संख्या को धन्यवाद के रूप में शरीर और पेट को बताए। इस संबंध में स्वाद की भावना केवल शारीरिक पेट को ही नहीं देखती है; क्योंकि यह हृदय, आत्मा और मन को भी देखती है, इसलिए यह पेट से बेहतर स्थान और महत्व रखती है। यह अपनी खुशी का पीछा कर सकती है, बशर्ते कि यह बेकार या फिजूलखर्ची न करे, और केवल धन्यवाद के अपने कर्तव्य को पूरा करे और ईश्वरीय वरदानों की विविधता को पहचाने और समझे, और बशर्ते कि यह वैध हो और पतन और भीख की ओर न ले जाए। वास्तव में, स्वादिष्ट भोजन को धन्यवाद देने में स्वाद की भावना को धारण करने वाली जीभ को काम में लाने के लिए पसंद किया जा सकता है। शेख गेयलानी के चमत्कारी कार्यों का एक उदाहरण निम्नलिखित है जो इस सत्य की ओर संकेत करता है:

एक समय में, ग़ौथ अल-आज़म से शिक्षा प्राप्त करते हुए, शेख़ गेलानी (उनका रहस्य पवित्र हो) एक वृद्ध और चिंतित महिला के इकलौते बेटे थे। यह सम्मानित महिला अपने बेटे की कोठरी में गई और उसने देखा कि उसके पास खाने के लिए सूखी, काली रोटी के टुकड़े के अलावा कुछ नहीं था। उसकी तपस्या के कारण उसकी दुर्बल स्थिति को देखकर उसकी मातृ दया जागृत हुई। उसे उस पर तरस आया। बाद में वह शिकायत करने के लिए ग़ौथ अल-आज़म गई, और देखा कि शेख़ भुना हुआ चिकन खा रहा था। अपनी चिंता से उसने कहा: "हे गुरु! मेरा बेटा भूख से मर रहा है जबकि आप चिकन खा रहे हैं!" जिस पर ग़ौथ अल-आज़म ने मुर्गे से कहा: "उठो, भगवान की अनुमति से!" इस पर, पके हुए मुर्गे की हड्डियाँ इकट्ठी हो गईं और पूरे जीवित मुर्गे के रूप में बर्तन से बाहर फेंक दी गईं। इसे कई विश्वसनीय और प्रलेखित चैनलों के माध्यम से सर्वसम्मति से किसी ऐसे व्यक्ति के चमत्कार के रूप में बताया गया है जिसका असाधारण चमत्कार विश्व प्रसिद्ध है। ग़ौथ अल-आज़म ने उससे कहा: "जब आपका बेटा इस स्तर पर पहुंच जाएगा, तो वह भी चिकन खा सकता है।"[2] इस प्रकार, ग़ौथ अल-आज़म के शब्दों का अर्थ यह है: जब भी आपके बेटे की आत्मा उसके शरीर पर शासन करती है, और उसका दिल

[2] देखें, गिलानी, घुन्या अल-तालिबिन, 502; नभानी, जामी करामात अल-अवलिया, द्वितीय, 203।

यदि वह अपनी आत्मा की इच्छाओं को पूरा करता है, और उसकी बुद्धि उसके पेट पर शासन करती है, और वह धन्यवाद देने के लिए सुख चाहता है, तो वह स्वादिष्ट चीजें खा सकता है।

चौथा बिंदु

हदीस के अनुसार जिसका अर्थ है: "मितव्ययी व्यक्ति को आजीविका के संबंध में कोई पारिवारिक कठिनाई नहीं होगी,"3 मितव्ययी और मितव्ययी व्यक्ति को अपने परिवार का भरण-पोषण करने में अनावश्यक परेशानी और कठिनाई नहीं होगी।

इस बात के अनगिनत प्रमाण हैं कि मितव्ययिता से बहुत कुछ मिलता है और जीवन अच्छा चलता है। उदाहरण के लिए, मैंने खुद देखा है और मैं उन लोगों की गवाही के अनुसार कह सकता हूँ जिन्होंने मुझे मित्र बनाया और मेरी सहायता की है कि मितव्ययिता से कभी-कभी मैंने दस गुना वृद्धि देखी है, और मेरे दोस्तों ने भी ऐसा ही देखा है। यहाँ तक कि, नौ साल पहले - और अब तीस साल हो गए हैं, मेरे साथ बर्दुर में निर्वासित किए गए कई आदिवासी नेताओं ने मुझे अपनी ज़कात स्वीकार करने के लिए पूरी कोशिश की ताकि मुझे पैसे की कमी के कारण अभाव और अपमान न सहना पड़े। मैंने उन अमीर नेताओं से कहा: "मेरे पास बहुत कम पैसा है, लेकिन मैं मितव्ययी और मितव्ययी हूँ और मुझे थोड़े से संतुष्ट रहने की आदत है। मैं तुमसे ज़्यादा अमीर हूँ।" मैंने उनके बार-बार और आग्रहपूर्ण प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया। यह ध्यान देने योग्य है कि दो साल बाद जिन लोगों ने मुझे ज़कात की पेशकश की थी, उनमें से कुछ ऋणग्रस्त थे क्योंकि वे मितव्ययिता नहीं कर रहे थे। भगवान का शुक्र है कि सात साल बाद, मितव्ययिता से प्राप्त होने वाली प्रचुरता के कारण वह छोटी राशि अभी भी मेरे लिए पर्याप्त थी; इसने मुझे अपमानित नहीं किया, न ही मुझे अपनी आवश्यकताओं को लोगों के सामने प्रस्तुत करने के लिए मजबूर किया, न ही मुझे आत्मनिर्भरता और लोगों से स्वतंत्र होने के मेरे मार्ग से विचलित किया, जो कि मेरे जीवन के सिद्धांतों में से एक है।

जो व्यक्ति मितव्ययिता नहीं रखता, वह निश्चित रूप से दीन-हीन होकर दरिद्र हो जाता है और वास्तव में भीख मांगने पर मजबूर हो जाता है। वर्तमान समय में, अपव्यय और अपव्यय का साधन धन अत्यंत महंगा है। कभी-कभी व्यक्ति अपना सम्मान और स्वाभिमान बेच देता है और उसे प्राप्त करने के लिए रिश्वत ली जाती है। कभी-कभी धर्म की पवित्र चीजें बेची जाती हैं, तो बदले में कुछ अशुभ धन प्राप्त होता है। यानी, सौ लीरा के अमूर्त नुकसान के बदले में दस कुरुश की भौतिक वस्तुएं प्राप्त की जाती हैं।

हालाँकि, श्लोक के निहित अर्थ के अनुसार,

> निस्संदेह, अल्लाह ही है जो हर प्रकार की रोज़ी देता है, वह सारी शक्ति और सामर्थ्य का स्वामी है। (51:58)

और श्लोक का स्पष्ट अर्थ,

> धरती में कोई भी चलता फिरता प्राणी ऐसा नहीं है जिसे रोज़ी अल्लाह ही देता हो (11:6)

[3] मुसनद, आई, 447; अल-मुनावी, फ़ैयद अल-कादिर, वी, 454, संख्या: 7939; अल-हिंदी, कन्ज़ अल-उम्माल, iii, 36; vi, 49, 56, 57.

अगर कोई व्यक्ति मितव्ययी है और अपनी ज़रूरतों को सिर्फ़ ज़रूरी चीज़ों तक सीमित रखता है, तो उसे अप्रत्याशित तरीक़ों से जीने के लिए पर्याप्त भोजन मिल जाएगा। श्लोक इसकी गारंटी देता है। हाँ, भोजन के दो प्रकार हैं:4

एक है सच्चा भोजन, जो जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त है। जैसा कि आयत में कहा गया है, पालनहार ने इसकी गारंटी दी है। जब तक मनुष्य का बुराई की ओर झुकाव नहीं होता, तब तक उसे हर परिस्थिति में यह आवश्यक भोजन मिलेगा। उसे न तो अपने धर्म, न अपने सम्मान और न ही अपने आत्मसम्मान का त्याग करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

दूसरा प्रकार रूपकीय पोषण है, जिसके दुरुपयोग से अनावश्यक आवश्यकताएं भी आवश्यक आवश्यकताओं जैसी हो जाती हैं, तथा रीति-रिवाजों और परम्पराओं के प्रकोप के कारण लोग इनके आदी हो जाते हैं और इन्हें छोड़ नहीं पाते। ऐसे पोषण की गारंटी पालनकर्ता द्वारा नहीं दी जाती, इसलिए इसे प्राप्त करना बहुत महंगा होता है -

विशेष रूप से वर्तमान समय में। ये निष्फल, अशुभ वस्तुएं सबसे पहले अपने स्वाभिमान का त्याग करके और अपमान को स्वीकार करके, कभी-कभी तो भीख मांगने, नीच लोगों के पैर चूमने और कभी-कभी धर्म की पवित्र चीजों का त्याग करके प्राप्त की जाती हैं, जो शाश्वत जीवन का प्रकाश हैं।

साथ ही, गरीबी और कठिनाई के इस समय में, भूखे और जरूरतमंदों की पीड़ा को देखकर विवेकशील लोगों को जो तकलीफ होती है, वह अवैध रूप से अर्जित धन से मिलने वाली किसी भी खुशी को खत्म कर देती है। जहाँ तक संदिग्ध वस्तुओं का सवाल है, ऐसे अजीब समय में किसी को भी उनसे न्यूनतम सीमा तक ही काम चलाना पड़ता है।

क्योंकि इस नियम के अनुसार, "आवश्यकता उसकी सीमा के अनुसार निर्धारित होती है," यदि मजबूर किया जाए, तो अवैध सामान को न्यूनतम आवश्यक सीमा तक ही लिया जा सकता है, इससे अधिक नहीं।
कोई व्यक्ति जो बहुत ज़रूरतमंद है, वह प्रतिबंधित मांस खा सकता है, लेकिन उसे पेट भर खाना नहीं पड़ेगा। वह सिर्फ़ ज़िंदा रहने के लिए ही खा सकता है। साथ ही, सौ भूखे लोगों की मौजूदगी में कोई व्यक्ति इससे ज़्यादा का आनंद नहीं ले सकता।

निम्नलिखित कहानी दर्शाती है कि मितव्ययिता ही सम्मान और विशिष्टता का कारण है:

एक बार, ख़ातिम ताई, जो अपनी उदारता के लिए विश्व-विख्यात थे, एक बड़ा भोज दे रहे थे। अपने मेहमानों को ढेर सारे उपहार देकर, वे रेगिस्तान में घूमने निकल गए। वहाँ उन्होंने एक गरीब बूढ़े आदमी को देखा जो अपनी पीठ पर काँटों और पौधों का बोझा लादे हुए था। काँटे उसकी त्वचा में चुभ रहे थे और खून बह रहा था। ख़ातिम ने उससे कहा: "ख़ातिम ताई एक बड़ा भोज दे रहे हैं और उपहार दे रहे हैं। वहाँ जाओ और तुम्हें पाँच कुरुश के बदले पाँच सौ कुरुश दिए जाएँगे।" मितव्ययी बूढ़े ने उत्तर दिया: "मैं अपने स्वाभिमान से इस काँटों वाले बोझ को उठाता और ढोता हूँ; मैं ख़ातिम ताई का एहसानमंद नहीं होने जा रहा हूँ।" बाद में, उन्होंने ख़ातिम से पूछा

[4] देखें, अल-जुरजानी, तारिख जुरजान, 366; अल-ग़ज़ाली, अल-मकसाद अल-असना, 85-6।

टे: “क्या तुमने अपने से ज़्यादा उदार और सम्माननीय किसी व्यक्ति को देखा है?” उसने उत्तर दिया: “रेगिस्तान में मुझे जो मितव्ययी बूढ़ा व्यक्ति मिला, वह मुझसे ज़्यादा सम्माननीय, श्रेष्ठ और उदार था।”5

पांचवां बिंदु

सर्वशक्तिमान ईश्वर अपनी उत्तम उदारता के कारण एक गरीब व्यक्ति को भी अपनी कृपा का आनन्द उसी प्रकार समझाता है, जैसे एक अमीर व्यक्ति को, तथा एक भिखारी को भी एक राजा के समान।
वास्तव में, भूख और मितव्ययिता के कारण एक गरीब आदमी को काली रोटी का एक सूखा टुकड़ा खाने से जो आनंद मिलता है, वह उस आनंद से कहीं अधिक है जो एक राजा या एक अमीर आदमी को थकान और भूख की कमी के कारण खाए जाने वाले बेहतरीन पेस्ट्री से मिलता है।
अधिकता।

यह आश्चर्यजनक है कि कुछ लम्पट, फिजूलखर्च लोग मितव्ययी और किफ़ायती लोगों पर कंजूस और कंजूस होने का आरोप लगाते हैं। भगवान न करे! मितव्ययिता गरिमा और उदारता है।
कंजूसी और क्षुद्रता, फिजूलखर्ची और अपव्यय करने वालों के स्पष्ट रूप से महान गुणों का आंतरिक चेहरा है। इस बात की पुष्टि करने वाली एक घटना है जो इस ग्रंथ के लिखे जाने के वर्ष में इस्पार्टा में मेरे कमरे में घटी थी। यह इस प्रकार थी:

मेरे एक शिष्य ने मुझसे आग्रह किया कि मैं अपने नियम और जीवन भर के सिद्धांत के विपरीत लगभग ढाई ओक्का शहद का उपहार स्वीकार करूँ। मैंने अपना नियम कितना ही दोहराया, वह मानने को तैयार नहीं हुआ। इसलिए मैंने अपने साथ के तीन भाइयों से कहा कि वे इसे ले लें, और कहा कि किफ़ायती रहकर वे शाबान और रमज़ान के महीनों में तीस से चालीस दिन तक शहद खाएँगे और उन्हें खाने के लिए कुछ मीठा नहीं मिलेगा और जो लाएगा, उसे इनाम मिलेगा। मैंने खुद भी एक ओक्का शहद खाया। हालाँकि मेरे तीनों दोस्त संयमी थे और किफ़ायतीपन को पसंद करते थे, क्योंकि उन्होंने एक-दूसरे को शहद दिया और एक-दूसरे की आत्मा की चापलूसी की और एक-दूसरे को अपने से ज़्यादा तरजीह दी, जो एक तरह से अच्छा गुण है, लेकिन वे किफ़ायतीपन भूल गए। उन्होंने तीन रातों में ढाई ओक्का शहद खत्म कर दिया। हँसते हुए मैंने कहा: “मैं तुम्हें तीस से चालीस दिन तक उस शहद का स्वाद चखाता, लेकिन तुमने तीस दिन घटाकर तीन दिन कर दिए। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें मज़ा आया!” मैंने अपना एक ओक्का शहद मितव्ययता से खाया। पूरे शाबान और रमज़ान दोनों में मैंने इसे खाया, और, भगवान की स्तुति हो, हर शाम को उपवास तोड़ते समय मैंने उन भाइयों में से प्रत्येक को एक चम्मच दिया,7 और यह महत्वपूर्ण सवाब का साधन बन गया। शायद जिसने भी मुझे ऐसा करते देखा, उसने सोचा होगा कि यह कंजूसी है और मेरे भाइयों ने तीन रातों तक जो किया वह उदारता थी। लेकिन बात यह है कि

---

[5] देखें, बुखारी, प्रतियोगिता, 13; ज़कात, 50; बुयु, 15; इब्न माजाह, ज़कात, 25; मुसनद, आई, 167.

[6] एक ओक्का 2.8 पाउंड के बराबर होता है। (ट्र.)

[7] यानि, एक काफी बड़ा चम्मच।

वास्तव में मैंने महसूस किया कि स्पष्ट कंजूसी के नीचे एक उच्च सम्मान, वृद्धि और प्रचुरता, और महान पुरस्कार छिपा हुआ था। यदि वे नहीं रुके होते, तो यह उदारता और अधिकता के नीचे कंजूसी से भी बदतर कुछ और ले जाता, जैसे भिखारीपन और लालच और उम्मीद से दूसरे के हाथ पर नज़र रखना।

छठा बिंदु

मितव्ययिता और कंजूसी में बहुत अंतर है। जिस तरह विनम्रता एक प्रशंसनीय गुण है जो सतही तौर पर दासता के बुरे गुण से मिलता जुलता है लेकिन उससे अलग है, और गरिमा एक प्रशंसनीय गुण है जो सतही तौर पर घमंड के बुरे गुण से मिलता जुलता है लेकिन उससे अलग है, उसी तरह मितव्ययिता भी, जो पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के श्रेष्ठ गुणों में से एक थी और वास्तव में उन चीजों में से एक है जिस पर ईश्वरीय ज्ञान में लिखा है।

ब्रह्मांड का क्रम निर्भर करता है,8 का कंजूसी से कोई संबंध नहीं है, जो कि नीचता, लोभ, कृपणता और लालच का मिश्रण है। केवल एक सतही समानता है।
इस तथ्य की पुष्टि करने वाली एक घटना निम्नलिखित है:

अब्दुल्लाह इब्न उमर, जो पैगम्बर के प्रसिद्ध साथियों में से एक थे
सात अब्दुल्लाहों के नाम से मशहूर,9 खलीफा उमर, फारूक अल-आजम के बेटों में सबसे महान और सबसे महत्वपूर्ण थे, और साथियों में सबसे प्रतिष्ठित और विद्वान थे। एक दिन बाजार में खरीदारी करते समय, किफ़ायती होने और व्यापार पर निर्भर विश्वास और ईमानदारी को बनाए रखने के लिए,10 उन्होंने कुछ कुरुश के मूल्य वाली किसी चीज़ पर गरमागरम बहस की। साथियों में से एक ने उन्हें देखा, और धरती पर पैगंबर के शानदार उत्तराधिकारी, खलीफा उमर के बेटे की कुछ कुरुश के लिए लड़ाई को असाधारण कंजूसी मानते हुए, उनके आचरण को समझने के लिए उनके पीछे चला गया। इसके बाद उसने देखा कि अब्दुल्लाह अपने धन्य घर में प्रवेश कर रहे थे और उन्होंने दरवाजे पर एक गरीब आदमी को देखा। उन्होंने उसके साथ थोड़ी देर बातचीत की, और वह आदमी चला गया। फिर वह घर के दूसरे दरवाजे से बाहर आया और एक और गरीब आदमी को देखा। उसने उसके साथ भी थोड़ी देर बातचीत की, और वह आदमी चला गया। साथी, जो दूर से देख रहा था, उत्सुक था। उसने जाकर उन गरीब लोगों से पूछा: “अब्दुल्ला तुम्हारे साथ कुछ देर रुका था। उसने क्या किया?” उनमें से प्रत्येक ने उत्तर दिया: “उसने मुझे एक सोने का सिक्का दिया।” “भगवान की जय हो!” साथी ने कहा, और खुद से सोचा: “ऐसा कैसे हो सकता है कि वह बाजार में कुछ कुरुश के लिए इस तरह झगड़ रहा था, फिर बिना किसी को बताए अपने घर में दो सौ कुरुश देने में पूरी तरह से खुश था?”

[8] अबू दाउद, अदब, 2; मुसनद, आई, 296.

[9] सात 'अब्दुल्ला' (अल-अबादिला अल-सबा): 'अब्दुल्ला बी। 'अब्बास, 'अब्दुल्ला बी. 'उमर,' अब्दुल्ला बी. मसूद, 'अब्दुल्ला बी. रावाहा, 'अब्दुल्ला बी. नमस्ते, 'अब्दुल्ला बी. 'अम्र बी. अल-'अस, 'अब्दुल्ला बी. अबी औफ़ा (आरए)। (ट्र.)

[10] देखें, तिर्मिधि, बुयु', 3; इब्न माजा, तिजारत, 1; दारिमी, बुयु', 98.

वह अब्दुल्लाह इब्न उमर के पास गया और कहा: "हे इमाम! मेरे लिए यह मुश्किल हल करें!
बाजार में तुमने ऐसा किया, जबकि अपने घर में तुमने ऐसा किया।" अब्दुल्ला ने उसे उत्तर देते हुए कहा: "बाजार में मैंने जो किया वह कंजूसी नहीं थी, बल्कि मितव्ययिता से उपजा था; यह पूरी तरह से उचित था, और विश्वास और ईमानदारी को बनाए रखने के लिए था, जो वाणिज्य का आधार और आत्मा हैं। और मैंने अपने घर में जो किया वह हृदय की करुणा और आत्मा की पूर्णता से उपजा था। न तो पहली कंजूसी थी, न ही दूसरी असंयमिता।"

इसका संकेत करते हुए इमाम अबू हनीफा ने कहा: "अच्छाई में कोई अति नहीं हो सकती, जैसे कि अधिकता में कोई अच्छाई नहीं होती।"11 अर्थात्, जिस प्रकार अच्छे कार्यों और परोपकार में कोई अति या अपव्यय नहीं हो सकता - बशर्ते कि वे योग्य लोगों के लिए हों, उसी प्रकार अपव्यय और असंयम में कोई अच्छाई नहीं है।

सातवां बिंदु

अधिकता और अपव्यय से लालच पैदा होता है, और लालच के तीन परिणाम होते हैं:

पहला है असंतोष, और असंतोष काम के प्रति प्रयास और उत्साह को नष्ट कर देता है, और असंतुष्ट व्यक्ति को धन्यवाद देने के बजाय शिकायत करने के लिए प्रेरित करता है, और उसे आलसी बनाता है। ऐसा व्यक्ति उन चीज़ों को छोड़ देता है जो भले ही संख्या में कम हों, लेकिन वैध हैं,12 और ऐसी चीज़ों की तलाश करता है जो अवैध और परेशानी मुक्त हैं। वह रास्ते में अपना आत्मसम्मान और यहाँ तक कि अपना सम्मान भी कुर्बान कर देता है।

लालच का दूसरा परिणाम निराशा और हानि है। लालची व्यक्ति जो चाहता है उसे दूर भगा देता है, अप्रिय पाता है, सहायता और मदद से वंचित हो जाता है। वह इस कहावत की पुष्टि भी करता है: "लालची व्यक्ति असफल होता है और हानि उठाता है।"13

लालच और संतोष का प्रभाव पशु जगत में एक व्यापक नियम के अनुसार होता है। उदाहरण के लिए, भोजन की ज़रूरत वाले पेड़ों की प्राकृतिक संतुष्टि उनके भोजन को जल्दी से उनके पास ले आती है; यह संतोष के बड़े लाभों को दर्शाता है। जबकि जानवरों का लालच और कठिनाई और कमी के साथ अपने भोजन के पीछे भागना लालच के बड़े नुकसान को दर्शाता है।

---

[11] देखें, अल-ग़ज़ाली, इह्या 'उलूम अल-दीन, i, 262; क़ुरतुबी, अल-जामी' ली-अहकाम अल-कुरान, vii, 110; अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, वी, 454।

[12] अपव्यय और मितव्ययिता की कमी के परिणामस्वरूप उपभोक्ता बढ़ते हैं और उत्पादक घटते हैं।
हर कोई सरकार के दरवाजे पर अपनी नज़र गड़ाए रहता है, और उद्योग, व्यापार और कृषि, जिन पर सामाजिक जीवन निर्भर करता है, कम हो जाते हैं। और राष्ट्र का पतन होता है और वह दरिद्र हो जाता है।

[१३] देखें, इब्न क़ैस, क़ुरा अल-दैफ़, iv, 301; अल-मयदानी, मजमा अल-अमथल, i, 214

इसके अलावा, असहाय बच्चों की जीभ से प्रकट होने वाली संतुष्टि तथा अप्रत्याशित स्थान से उनके लिए प्रवाहित होने वाला दूध जैसा स्वादिष्ट भोजन, जबकि जंगली जानवर लालच से उनके अपर्याप्त और गंदे भोजन पर हमला करते हैं, हमारे दावे को स्पष्ट रूप से सिद्ध करते हैं।

इसके अलावा, मोटी मछलियों का संतुष्ट रवैया उनके पूर्ण जीविका का साधन है, तथा लोमड़ी और बंदर जैसे बुद्धिमान जानवरों का लोभ के बावजूद पर्याप्त जीविका न मिलने के कारण दुर्बल और कमजोर बने रहना, यह पुनः दर्शाता है कि किस हद तक लोभ कठिनाई का कारण है और संतोष सहजता का कारण है।

इसके अलावा, कुछ लोग लालच, सूदखोरी और छल-कपट के माध्यम से केवल निर्वाह स्तर पर ही अपमानजनक, दयनीय, अवैध जीविका प्राप्त कर लेते हैं, तथा खानाबदोशों का संतुष्ट रवैया और उनका सम्मान के साथ जीवन यापन करना तथा पर्याप्त जीविका प्राप्त कर लेना, एक बार फिर निर्णायक रूप से उस बात को सिद्ध करता है, जिसे हम कह रहे हैं।

इसके अलावा, अनेक विद्वानों14 और साहित्यकारों15 का अपनी बुद्धि से उत्पन्न लालच के कारण दरिद्रता में चले जाना, तथा अनेक मूर्ख और अयोग्य लोगों का अपनी जन्मजात संतुष्टि16 के कारण धनी हो जाना, यह निर्णायक रूप से सिद्ध करता है कि वैध जीविका शक्तिहीनता और अभाव के कारण मिलती है, योग्यता और इच्छा के कारण नहीं।

वास्तव में, वैध जीविका क्षमता और इच्छा के विपरीत अनुपात में होती है। क्योंकि बच्चों की क्षमता और इच्छा जितनी अधिक बढ़ती है, उनका जीविका उतना ही कम होता जाता है, वह उनसे उतना ही दूर होता जाता है और पचाना उतना ही कठिन होता जाता है। हदीस के अनुसार, "संतुष्टि एक अचूक खजाना है,"17 संतोष अच्छे जीवन और जीवन की सहजता का खजाना है, जबकि लालच नुकसान और अपमान की खान है।

तीसरा परिणाम: लालच ईमानदारी को नष्ट कर देता है और कार्यों को नुकसान पहुंचाता है
परलोक के बारे में सोचना। क्योंकि यदि परमेश्वर का भय माननेवाला व्यक्ति लालच से ग्रस्त है, तो वह दूसरों का सम्मान चाहेगा, और जो कोई परलोक के बारे में सोचता है, वह दूसरों का सम्मान चाहेगा।

---

[14] फारसी शाह नुशिरवन के वजीर और अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध विद्वान बोजोर्गमेहर से पूछा गया, "विद्वान शासकों के दरवाज़ों पर क्यों दिखाई देते हैं और शासक विद्वानों के दरवाज़ों पर क्यों नहीं दिखाई देते, जबकि शिक्षा शासन से श्रेष्ठ है?" उन्होंने उत्तर दिया: "विद्वानों के ज्ञान और शासकों की अज्ञानता के कारण।" अर्थात्, अपने अज्ञान के कारण शासकों को शिक्षा का मूल्य नहीं पता होता, इसलिए वे इसे प्राप्त करने के लिए विद्वानों के दरवाज़े पर जाते हैं। लेकिन अपने ज्ञान के कारण, विद्वान अपने शासकों की वस्तुओं और संपत्तियों का मूल्य जानते हैं और उन्हें अपने शासकों के पास ढूँढ़ते हैं।

शासकों के दरवाज़े। इस प्रकार चतुराई से समझाते हुए कि विद्वानों की चतुराई से उत्पन्न लालच, जिसके कारण उनमें से कुछ निर्धन और अभावग्रस्त हो जाते हैं, बोज़ोर्गमेहर ने एक परिष्कृत तरीके से उत्तर दिया।

हस्ताक्षरित: हुसेरेव

[15] इसकी पुष्टि करने वाली एक घटना यह है कि फ्रांस में भिक्षावृत्ति का लाइसेंस साहित्यिक हस्तियों को दिया जाता था, क्योंकि वे भीख मांगने में निपुण होते थे।

हस्ताक्षरित: सुलेमान रुस्तु

[16] देखें, अल-दयालामी, अल-मुस्नद, iv, 385।

[17] देखें, तबरानी, अल-मुजम अल-अवसत, vii, 84; बहाकी, अल-जुहद, द्वितीय, 88; अल-'अजलूनी, कशफ अल-खफा', ii, 133।

दूसरों का ध्यान पूरी ईमानदारी से नहीं आ सकता। यह परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण और ध्यान देने योग्य है।

संक्षेप में: अधिकता और अपव्यय से संतोष की कमी होती है। और संतोष की कमी काम के प्रति उत्साह को नष्ट कर देती है; यह आलस्य का कारण बनती है, जीवन के बारे में शिकायतों का द्वार खोलती है, और असंतुष्ट व्यक्ति को लगातार बड़बड़ाने के लिए मजबूर करती है।18

इसके अलावा, यह ईमानदारी को नष्ट करता है, और पाखंड का द्वार खोलता है। और यह आत्म-सम्मान को नष्ट करता है, और भीख मांगने का मार्ग दिखाता है।

जहाँ तक मितव्ययिता और मितव्ययिता का सवाल है, तो इससे संतोष मिलता है। हदीस के अनुसार, "संतुष्ट व्यक्ति का सम्मान किया जाता है, और लालची व्यक्ति का तिरस्कार किया जाता है,"19
संतोष आत्म-सम्मान को जन्म देता है। यह प्रयास और काम को भी प्रोत्साहित करता है। यह उत्साह बढ़ाता है, और प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति ने एक दिन काम किया। क्योंकि वह शाम को मिलने वाली छोटी-मोटी मजदूरी से संतुष्ट था, इसलिए उसने दूसरे दिन फिर से काम किया। लेकिन चूँकि फिजूलखर्ची करने वाला और अत्यधिक खर्च करने वाला व्यक्ति संतुष्ट नहीं था, इसलिए उसने अगले दिन काम नहीं किया, या अगर उसने किया भी, तो बिना उत्साह के।

साथ ही, मितव्ययिता से उत्पन्न संतोष धन्यवाद का द्वार खोलता है और शिकायत का द्वार बंद करता है। संतुष्ट व्यक्ति जीवन भर धन्यवादी रहता है। और जहाँ तक वह अपने संतोष के कारण दूसरों से स्वतंत्र है, वह उनका सम्मान नहीं चाहता। ईमानदारी का द्वार खुल जाता है और पाखंड का द्वार बंद हो जाता है।

मैंने बड़े पैमाने पर फिजूलखर्ची और अधिकता के भयानक नुकसान को देखा। यह इस प्रकार था: नौ साल पहले मैं एक भाग्यशाली शहर में गया था। सर्दी का मौसम था और मैं इसके धन के स्रोतों को नहीं देख पा रहा था। कई बार शहर के मुफ्ती, भगवान उन पर दया करें, मुझसे कहा, "हमारे लोग गरीब हैं।" उनके शब्दों ने मुझे छू लिया। अगले पाँच या छह साल तक मुझे शहर के लोगों पर लगातार दया आती रही। आठ साल बाद मैं फिर गर्मियों में उस शहर में गया। मैंने बगीचों को देखा और दिवंगत मुफ्ती के शब्दों को याद किया। "भगवान की महिमा हो!", मैंने कहा, "इन बगीचों की फसलें शहर की जरूरतों से कहीं ज्यादा हैं।

इसके लोग बहुत अमीर होंगे।" मैं हैरान था। फिर एक सच्चाई को याद करते हुए जिसने मुझे कभी धोखा नहीं दिया और जो अन्य सच्चाइयों को समझने में मेरा मार्गदर्शक है, मैंने समझा कि फिजूलखर्ची और अधिकता के कारण प्रचुरता और प्रचुरता गायब हो गई थी, इसलिए हालांकि शहर में धन के ऐसे स्रोत थे, दिवंगत मुफ्ती कहते थे: "हमारे लोग गरीब हैं।"

वास्तव में, जैसा कि अनुभव से सिद्ध हो चुका है कि ज़कात देना और मितव्ययिता तथा मितव्ययिता बरतना वस्तुओं की वृद्धि और प्रचुरता का कारण है,

---

[18] जब भी आप किसी फिजूलखर्च, असंयमित व्यक्ति से मिलते हैं, तो आपको शिकायतें सुनने को मिलती हैं। चाहे वह कितना भी अमीर क्यों न हो, उसकी जुबान हमेशा शिकायत करती है। लेकिन जब आप सबसे गरीब, लेकिन संतुष्ट व्यक्ति से मिलते हैं, तो आपको सिर्फ़ धन्यवाद सुनने को मिलता है।

[19] देखें, इब्न अल-अथिर, अल-निहाया फ़ी ग़रीब अल-हदीस, iv, 114; अल-ज़बीदी, ताज अल-'अरस, xxii, 90।

इसी प्रकार असंख्य घटनाएँ दर्शाती हैं कि अपव्यय और ज़कात न देने से वृद्धि होती है और बहुत कुछ नष्ट हो जाता है।

इस्लामी संतों में प्लेटो, चिकित्सकों में शेख, और दार्शनिकों में गुरु,
प्रसिद्ध विद्वान अबू अली इब्न सिना ने इस आयत की व्याख्या इस प्रकार की,

खाओ-पीओ, पर अधिक बर्बाद मत करो(7:31)

चिकित्सा के दृष्टिकोण से, इस प्रकार: "मैं चिकित्सा विज्ञान को दो पंक्तियों में समेटता हूँ, सबसे अच्छा शब्द सबसे छोटा है; जब आप खाते हैं, तो थोड़ा खाते हैं, और चार या पाँच घंटे तक फिर से नहीं खाते हैं। स्वास्थ्य पाचन में निहित है। इसका मतलब है, उतना ही खाएँ जितना आप आसानी से पचा सकें। आपके पेट और आपके लिए सबसे भारी और सबसे थका देने वाली बात है एक के ऊपर एक कई चीज़ें खाना।"21

एक असाधारण एवं शिक्षाप्रद 'संयोग': [22] सभी में
पांच या छह लेखकों द्वारा लिखित मितव्ययिता पर ग्रंथ की प्रतियां -
उनमें से तीन अनुभवहीन थे, जो एक दूसरे से बहुत दूर अलग-अलग जगहों पर थे, अलग-अलग प्रतियों से इसे लिख रहे थे, जिनकी लिखावट अलग-अलग थी, और जिन्होंने अलिफ़्स23 को बिल्कुल भी ध्यान में नहीं रखा, जो अलिफ़्स 'संयोग से' इक्यावन या प्रार्थना के साथ तिरपन थे। ये संख्याएँ उस तारीख से मेल खाती हैं जिस दिन मितव्ययिता पर ग्रंथ लिखा और कॉपी किया गया था, जो रूमी कैलेंडर के अनुसार [13]51 और हिजरी कैलेंडर के अनुसार [13]53 थी, निस्संदेह संयोग नहीं हो सकता। यह एक संकेत है कि मितव्ययिता से उत्पन्न बहुतायत का आशीर्वाद चमत्कार की डिग्री तक बढ़ गया है, और यह वर्ष मितव्ययिता वर्ष नाम देने के लिए उपयुक्त है।

वास्तव में, मितव्ययिता का यह चमत्कार दो वर्ष बाद, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, व्यापक भूख, विनाश और बर्बादी से सिद्ध हुआ, तथा मानव जाति और प्रत्येक व्यक्ति को मितव्ययिता बरतने के लिए बाध्य किया गया।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

---

[20] देखें, अल-तबरानी, अल-मुजम अल-कबीर, एक्स, 128: इडेम., अल-मुजम अल-अवसत, ii, 161, 274; अल-बहाकी, अल-सुनान अल-कुबरा, iii, 382; चतुर्थ, 84.

[21] कहने का तात्पर्य यह है कि शरीर के लिए सबसे हानिकारक है चार-पांच घंटे का ब्रेक लिए बिना खाना खाना, या फिर सिर्फ आनंद के लिए एक के ऊपर एक कई तरह के खाद्य पदार्थों से पेट भरना।

[22] 'संयोग' (तु. तेवाफुक; अर. तवाफुक): एक या कई पृष्ठों पर पंक्तियों या पैटर्न में अक्षरों या शब्दों का पत्राचार। (ट्र.)

बीसवीं फ़्लैश

ईमानदारी पर

[सत्रहवें फ्लैश के सात मामलों में से दूसरे को बनाने वाले पाँच बिंदुओं में से पहला होने के बावजूद, यह अपने महत्व के कारण बीसवां फ्लैश बन गया।]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

कविता:

हमने यह किताब तुमपर सत्य के साथ उतारी है। अतः तुम अल्लाह की बन्दगी निष्ठापूर्वक करो, निश्चय ही अल्लाह का दीन निष्ठापूर्वक आचरण किया जानेवाला दीन है। (39:2)

और पैगम्बर (UWBP) का महान कथन:

"विद्वानों को छोड़कर सभी मनुष्य नष्ट हो जायेंगे, और सभी विद्वान नष्ट हो जायेंगे, सिवाय उन लोगों के जो अपने ज्ञान के अनुसार कार्य करते हैं, और वे सभी नष्ट हो जायेंगे, सिवाय उन लोगों के जो ईमानदार हैं, और यहाँ तक कि ईमानदार लोग भी बड़े खतरे में हैं"[1]

साथ मिलकर यह प्रदर्शित करें कि इस्लाम का एक सिद्धांत ईमानदारी कितना महत्वपूर्ण है। ईमानदारी से संबंधित अनगिनत बिंदुओं में से, हम केवल पाँच को संक्षेप में समझाएँगे।

नोट: धन्य इस्पार्टा का एक शुभ संकेत जो किसी को धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करता है वह यह है कि अन्य स्थानों की तुलना में, यहाँ धर्मपरायण लोगों, सूफी मार्ग का अनुसरण करने वालों और धार्मिक विद्वानों के बीच कोई स्पष्ट प्रतिद्वंद्विता और विवाद नहीं है। भले ही अपेक्षित सच्चा प्रेम और मिलन मौजूद न हो, तुलनात्मक रूप से कहें तो, कोई हानिकारक प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष नहीं है।

[1] देखें, अल-'अजलुनी, कशफ अल-खफा', ii, 415; अल-ग़ज़ाली, इहया 'उलूम अल-दीन, iii, 414।

पहला बिंदु

एक महत्वपूर्ण और विस्मयकारी प्रश्न: ऐसा क्यों है कि जहाँ दुनियावी और लापरवाह लोग, यहाँ तक कि गुमराह और पाखंडी लोग भी बिना किसी प्रतिद्वंद्विता के सहयोग करते हैं, वहीं धर्म के लोग, धार्मिक विद्वान और सूफी मार्ग पर चलने वाले लोग प्रतिद्वंद्विता में एक दूसरे का विरोध करते हैं, हालाँकि वे सत्य और सद्भाव के लोग हैं? वास्तव में सहमति सद्भाव के लोगों का अधिकार है और विवाद पाखंडियों का अधिकार है; ऐसा कैसे हुआ कि इन दोनों ने अपना स्थान बदल लिया है?

उत्तर: हम मृत्यु के अनेक कारणों में से सात का उल्लेख करेंगे।
यह दर्दनाक, अपमानजनक और भयानक स्थिति है, जो उत्साही लोगों को रोने पर मजबूर कर देती है।

पहला

जिस प्रकार सत्य के लोगों के बीच विवाद सत्य के अभाव से उत्पन्न नहीं होता, उसी प्रकार उपेक्षा करने वाले लोगों के बीच प्रचलित सहमति सत्य के किसी भी अधिकार से उत्पन्न नहीं होती। बल्कि यह है कि समाज में वर्गों को एक विशिष्ट कर्तव्य और विशेष कार्य सौंपा गया है, जैसे 'सांसारिक', राजनीति में लगे लोग और जिन्होंने धर्मनिरपेक्ष शिक्षा प्राप्त की है, और इस प्रकार विभिन्न समूहों, समाजों और समुदायों के कार्यों को परिभाषित किया गया है और एक दूसरे से अलग किया गया है। इसी तरह, आजीविका को बनाए रखने के लिए उन्हें अपने कार्यों के लिए जो भौतिक पुरस्कार मिलना है, साथ ही नैतिक पुरस्कार जो उनकी महत्वाकांक्षा और गर्व के लिए पुरुषों से प्राप्त ध्यान में निहित है - यह भी स्थापित और निर्दिष्ट है।3 इसलिए इस हद तक कोई भी चीज समान नहीं है कि यह संघर्ष, मतभेद और प्रतिद्वंद्विता पैदा कर सके। चाहे वे जिस भी बुरे रास्ते पर चलें, वे एकता और सहमति बनाए रखने में सक्षम होंगे।

लेकिन जहाँ तक धर्म के लोगों, विद्वानों और मार्ग पर चलने वालों का सवाल है,
प्रत्येक का कर्तव्य सभी पुरुषों से संबंधित है; उनका भौतिक पुरस्कार

---

[2] 'सांसारिक' (एहल-ए-दुनिया) : वे लोग जिनका दृष्टिकोण इस दुनिया के जीवन तक ही सीमित है और जो परलोक की उपेक्षा करते हैं, या वे जो इस दुनिया के लिए धर्म बेचते हैं। (ट्र.)

[3] ध्यान रखें कि पुरुषों का ध्यान मांगा नहीं जा सकता, बल्कि दिया ही जा सकता है। अगर दिया जाता है, तो उसे ध्यान देना चाहिए।
इसमें आनंद नहीं आता। यदि कोई इसमें आनंद लेता है, तो ईमानदारी खो जाती है और पाखंड उसकी जगह ले लेता है। यदि लोगों का ध्यान सम्मान और प्रसिद्धि की इच्छा के साथ है, तो यह पुरस्कार और इनाम नहीं है, बल्कि ईमानदारी की कमी के लिए निंदा और दंड है। लोगों का ऐसा ध्यान, ऐसा सम्मान और प्रसिद्धि, ईमानदारी को नुकसान पहुँचाती है, जो सभी अच्छे कामों के लिए जीवन शक्ति का स्रोत है, और भले ही वे कब्र के द्वार तक थोड़ी खुशी देते हों, लेकिन उस द्वार के दूसरी ओर वे पीड़ा का रूप ले लेते हैं। इसलिए किसी को लोगों के ध्यान की इच्छा नहीं करनी चाहिए, बल्कि उससे भागना और दूर रहना चाहिए। हे तुम सब जो प्रसिद्धि की पूजा करते हो और सम्मान और पद के पीछे भागते हो, सावधान हो जाओ!

निर्धारित और निर्दिष्ट नहीं; और सामाजिक सम्मान और स्वीकृति और सार्वजनिक ध्यान में उनका हिस्सा पूर्वनिर्धारित नहीं है। एक ही पद के लिए कई उम्मीदवार हो सकते हैं; प्रत्येक नैतिक और भौतिक पुरस्कार के लिए कई हाथ आगे बढ़ सकते हैं। इसलिए संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता उत्पन्न होती है; सामंजस्य कलह में बदल जाता है, और सहमति विवाद में बदल जाती है।

अब इस भयावह बीमारी का इलाज और उपाय है ईमानदारी। ईमानदारी तब प्राप्त की जा सकती है जब हम अपनी आत्मा की पूजा के बजाय ईश्वर की पूजा को प्राथमिकता दें, आत्मा और अहंकार की खुशी पर ईश्वर की खुशी को हावी होने दें और इस तरह श्लोक का अर्थ प्रकट करें:

> निस्संदेह मेरा प्रतिफल अल्लाह ही की ओर से है। (11:29)

मनुष्यों से मिलने वाले भौतिक और नैतिक प्रतिफल का परित्याग करके[4] और इस प्रकार श्लोक का अर्थ प्रकट करके:

> रसूल पर तो बस संदेश पहुँचाने का ही दायित्व है। (5:99)

और यह जानकर कि अच्छी स्वीकृति, और अनुकूल प्रभाव डालना, और लोगों का ध्यान आकर्षित करना जैसे मामले ईश्वर की चिंता और उनकी ओर से एक अनुग्रह हैं, और यह कि संदेश पहुंचाने में उनकी कोई भूमिका नहीं है, जो कि व्यक्ति का अपना कर्तव्य है, न ही वे इसके लिए आवश्यक हैं, न ही उन्हें प्राप्त करने का कोई दायित्व है - यह जानकर व्यक्ति ईमानदारी प्राप्त करने में सफल होगा, अन्यथा यह लुप्त हो जाएगी।

दूसरा कारण

गुमराह लोगों के बीच सहमति उनकी दीनता के कारण है और हिदायत वालों के बीच झगड़ा उनकी इज़्ज़त के कारण है। यानी कि गुमराह लोग, जो दुनियावी फ़िक्र में डूबे हुए गुमराह लोग हैं, कमज़ोर और दीन हैं, क्योंकि वो हक़ीकत और हक़ीकत पर भरोसा नहीं करते।

अपनी दीनता के कारण उन्हें अपनी शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता होती है, और इसी आवश्यकता के कारण वे दूसरों की सहायता और सहयोग को पूरे दिल से अपनाते हैं। भले ही वे जिस मार्ग पर चलते हैं वह कठिन हो।

---

[4] हमें दूसरों को खुद से बेहतर मानने के गुण को भी अपना मार्गदर्शक बनाना चाहिए, सहाबा के उसी गुण को जिसकी क़ुरआन में प्रशंसा की गई है। उदाहरण के लिए, कोई उपहार देते समय या कोई काम करते समय
दान के कार्य में, व्यक्ति को हमेशा स्वयं की अपेक्षा प्राप्तकर्ता को प्राथमिकता देनी चाहिए, और बिना किसी मांग या आंतरिकता के
धार्मिक सेवा के लिए किसी भी भौतिक पुरस्कार की इच्छा रखते हुए, अपने कार्य को पूरी तरह से ईश्वर की कृपा समझें और मनुष्यों पर दायित्व की भावना न थोपें। धार्मिक सेवा के बदले में कुछ भी सांसारिक नहीं मांगना चाहिए, अन्यथा ईमानदारी खो जाएगी। मनुष्यों के पास कई अधिकार और दावे हैं, और वे ज़कात के भी हकदार हो सकते हैं। लेकिन
इसकी मांग नहीं की जा सकती। जब कोई कुछ प्राप्त करता है, तो यह नहीं कहा जा सकता: "यह मेरी सेवा का पुरस्कार है।" बल्कि पूर्ण संतुष्टि में व्यक्ति को हमेशा अपने से अधिक योग्य लोगों को प्राथमिकता देनी चाहिए। इस प्रकार "वे दूसरों को अपने से अधिक पसंद करते हैं, भले ही उनका भाग्य गरीबी हो" (कुरान, 59:9) का अर्थ प्रकट करते हुए, व्यक्ति इस भयानक खतरे से बच सकता है और ईमानदारी प्राप्त कर सकता है।

वे अपनी सहमति बनाए रखते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे अपनी नास्तिकता को सत्य की पूजा का रूप दे रहे हैं, अपनी गुमराही को ईमानदारी का रूप दे रहे हैं, अपनी अधार्मिकता को एकजुटता का रूप दे रहे हैं, और अपने पाखंड को सद्भावना का रूप दे रहे हैं, और इस तरह सफलता प्राप्त कर रहे हैं। सच्ची ईमानदारी के लिए, बुराई के लिए भी, परिणाम प्राप्त करना विफल नहीं हो सकता है, और जो कुछ भी मनुष्य ईमानदारी से चाहता है, भगवान उसे प्रदान करेंगे।

लेकिन जहाँ तक मार्गदर्शन और धर्म के लोगों, धार्मिक विद्वानों और सूफी मार्ग पर चलने वालों का सवाल है, चूँकि वे सत्य और वास्तविकता पर भरोसा करते हैं और सत्य के मार्ग पर चलने वाले उनमें से प्रत्येक अपने पालनहार के बारे में ही सोचते हैं और उसकी सहायता पर भरोसा करते हैं, इसलिए वे अपने विश्वास से गौरव प्राप्त करते हैं। जब वे कमज़ोर महसूस करते हैं, तो वे मनुष्यों की ओर नहीं, बल्कि ईश्वर की ओर मुड़ते हैं और उससे सहायता माँगते हैं। दृष्टिकोण में भिन्नता के कारण, वे उस व्यक्ति की सहायता की वास्तविक आवश्यकता महसूस नहीं करते हैं जिसका दृष्टिकोण उनके अपने दृष्टिकोण के विपरीत प्रतीत होता है, और सहमति और एकता की कोई आवश्यकता नहीं देखते हैं। वास्तव में, यदि हठ और अहंकार मौजूद है, तो एक व्यक्ति अपने आप को सही और दूसरे को गलत समझेगा; कलह और प्रतिद्वंद्विता सद्भाव और प्रेम का स्थान ले लेती है। इस प्रकार ईमानदारी दूर हो जाती है और उसका कार्य बाधित हो जाता है।

अब इस भयानक स्थिति के गंभीर परिणामों के लिए एकमात्र उपाय नौ आदेश हैं:

1. सकारात्मक रूप से कार्य करना, अर्थात् अपने स्वयं के दृष्टिकोण के प्रति प्रेम रखना, अन्य दृष्टिकोणों के प्रति शत्रुता से बचना, उनकी आलोचना न करना, उनके विश्वासों और विज्ञानों में हस्तक्षेप न करना, या किसी भी तरह से उनसे संबंधित न होना।

2. किसी भी विशेष दृष्टिकोण से ऊपर उठकर इस्लाम के दायरे में एकजुट होना, तथा एकता के उन असंख्य बंधनों को याद रखना जो प्रेम, भाईचारा और सौहार्द को बढ़ावा देते हैं।

3. आचरण का उचित नियम अपनाना कि किसी भी सही दृष्टिकोण के अनुयायी को यह कहने का अधिकार है कि, “मेरा दृष्टिकोण सत्य है, या सर्वोत्तम है”, किन्तु यह नहीं कि “केवल मेरा दृष्टिकोण सत्य है,” या कि “केवल मेरा दृष्टिकोण अच्छा है”, जिससे अन्य सभी दृष्टिकोणों के मिथ्यात्व या घृणा का बोध हो।

4. यह मानना कि सत्य के लोगों के साथ मिलन ईश्वरीय सहायता का कारण है और धर्म की उच्च गरिमा.

5. यह समझना कि गुमराह और झूठ के लोगों की शक्तिशाली सामूहिक शक्ति की प्रतिभा के माध्यम से हमलों के खिलाफ सबसे शक्तिशाली व्यक्ति का व्यक्तिगत प्रतिरोध, जो उनकी एकजुटता से उत्पन्न होता है, अनिवार्य रूप से पराजित होगा, और सत्य के लोगों के संघ के माध्यम से, गुमराह करने वाले उस भयावह सामूहिक बल के सामने न्याय और अधिकार को सुरक्षित रखने के लिए एक संयुक्त और सामूहिक बल भी बनाना।

---

[5] हां, "जो कोई भी ईमानदारी से खोजेगा वह पाएगा" यह सत्य का नियम है। इसका दायरा व्यापक और इसमें चर्चा के अंतर्गत आने वाला मामला शामिल है।

6. असत्य के आक्रमणों से सत्य की रक्षा करने के लिए,
7. स्वयं और उसके अहंकार को त्यागना,
8. और आत्म-गौरव की ग़लत अवधारणा को त्याग दो,
9. और प्रतिद्वंद्विता से उत्पन्न सभी तुच्छ भावनाओं से दूर रहो।

यदि इस नौ सूत्रीय नियम का पालन किया जाए तो ईमानदारी बनी रहेगी और उसका कार्य पूर्णतः संपन्न होगा।6

तीसरा कारण

सत्य के लोगों में मतभेद उत्साह और आकांक्षा की कमी से उत्पन्न नहीं होता, न ही गुमराह लोगों में एकता आकांक्षा की उच्चता से उत्पन्न होती है। जो चीज मार्गदर्शन के लोगों को उनकी उच्च आकांक्षा का दुरुपयोग करने और इस प्रकार मतभेद और प्रतिद्वंद्विता की ओर प्रेरित करती है, वह है स्वर्गीय पुरस्कार की इच्छा जिसे परलोक के संबंध में एक प्रशंसनीय गुण माना जाता है, और परलोक से संबंधित कर्तव्यों के संबंध में अत्यधिक उत्सुकता। अपने आप से यह सोचते हुए कि, "मुझे यह पुरस्कार मिले, मैं इन लोगों का मार्गदर्शन करूं, वे मेरी बात सुनें," वह अपने सामने खड़े सच्चे भाई के प्रति प्रतिद्वंद्विता की स्थिति बना लेता है और जिसे उसके प्रेम, सहायता, भाईचारे और सहायता की वास्तविक आवश्यकता है। अपने आप से यह कहते हुए कि, "मेरे शिष्य उसके पास क्यों जा रहे हैं? मेरे पास उसके जितने शिष्य क्यों नहीं हैं?" वह अहंकार का शिकार हो जाता है, महत्वाकांक्षा की पुरानी बीमारी की ओर प्रवृत्त होता है, सारी ईमानदारी खो देता है, और पाखंड का द्वार खोल देता है।

इस भूल, इस घाव, आत्मा की इस भयानक बीमारी का इलाज यह सिद्धांत है कि "ईश्वर की प्रसन्नता केवल ईमानदारी से प्राप्त होती है", न कि बड़ी संख्या में अनुयायियों या बड़ी सफलता से। क्योंकि ये बाद वाले ईश्वर की इच्छा के कार्य हैं; इनकी मांग नहीं की जा सकती, हालाँकि कभी-कभी ये दिए जाते हैं। कभी-कभी एक शब्द किसी के उद्धार का कारण बन सकता है और इस प्रकार ईश्वर की प्रसन्नता होती है। मात्रा पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी एक व्यक्ति को सत्य की ओर ले जाना ईश्वर को हज़ारों लोगों को सत्य की ओर ले जाने जितना ही प्रसन्न कर सकता है। इसके अलावा ईमानदारी और सत्य के प्रति निष्ठा के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति यह चाहे कि मुसलमान किसी से भी और किसी भी स्थान पर लाभ उठाएँ। यह सोचना कि "वे मुझसे शिक्षा लें ताकि मैं पुरस्कार प्राप्त करूँ" आत्मा और अहंकार की चाल है।

हे परलोक में फल और कर्मों के लोभी मनुष्य!

[6] पैगंबर की प्रामाणिक परंपराओं में यह भी दर्ज है कि समय के अंत में वास्तव में पवित्र लोग ही जीवित रहेंगे। ईसाइयों के बीच कुरान के लोगों के साथ एकजुट होकर अपने साझा दुश्मन, अधर्म से लड़ेंगे। और इस समय भी, धर्म और सत्य के लोगों को न केवल अपने भाइयों और साथी विश्वासियों के साथ, बल्कि ईसाइयों के बीच सच्चे धर्मपरायण और आध्यात्मिक लोगों के साथ भी ईमानदारी से एकजुट होने की जरूरत है, अपने संयुक्त दुश्मन - आक्रामक नास्तिकता का मुकाबला करने के लिए मतभेदों के बिंदुओं पर चर्चा और बहस से अस्थायी रूप से परहेज करना चाहिए।

आपको उस इनाम का हकदार बनाता है! कुछ ऐसे पैगम्बर हुए हैं जिनके अनुयायी सीमित थे, लेकिन उन्हें पैगम्बरी के पवित्र कर्तव्य का अनंत इनाम मिला। तो, असली उपलब्धि एक विशाल अनुयायी प्राप्त करने में नहीं, बल्कि ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने में निहित है।
तुम अपने आप को क्या समझते हो, कि "सबको मेरी बात सुननी चाहिए" कहकर तुम अपना काम भूल जाते हो, और जो परमेश्वर का काम है उसमें दखल देते हो? तुम्हारे लिए स्वीकृति पाना और लोगों को तुम्हारे इर्द-गिर्द इकट्ठा करना परमेश्वर का काम है। इसलिए अपने कर्तव्य और चिंता पर ध्यान दो, और परमेश्वर की चिंता में दखल मत दो।

इसके अलावा, केवल मनुष्य ही सत्य सुनने और बोलने वालों के लिए पुरस्कार नहीं कमाते। ईश्वर और उसके दूतों की सजग और आत्मिक सत्ताओं ने ब्रह्माण्ड को भर दिया है और उसके हर भाग को सुशोभित किया है। यदि आप भरपूर पुरस्कार चाहते हैं, तो ईमानदारी को अपना आधार बनाएँ और केवल ईश्वर की प्रसन्नता के बारे में सोचें। तब आपके मुख से निकलने वाले धन्य वचनों का प्रत्येक अक्षर आपकी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से जीवित हो उठेगा और असंख्य सजग प्राणियों के कानों में जाकर उन्हें प्रकाशित करेगा और आपको पुरस्कार दिलाएगा। क्योंकि जब आप कहते हैं, "ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद हो," तो ईश्वर की अनुमति से ये लाखों शब्द, बड़े और छोटे, हवा के पृष्ठ पर लिखे जाते हैं। चूँकि सर्वज्ञ लेखक ने कोई भी काम व्यर्थ या व्यर्थ नहीं किया, इसलिए उसने असंख्य कान बनाए, जितने उन अनेक धन्य वचनों को सुनने के लिए आवश्यक थे। यदि उन शब्दों को ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से हवा में जीवित किया जाए, तो वे आत्मिक प्राणियों के कानों में मुँह में किसी स्वादिष्ट फल की तरह प्रवेश करेंगे। लेकिन अगर अल्लाह की रजा और ईमानदारी उन शब्दों को जीवन में नहीं लाती है, तो वे सुने नहीं जाएंगे, और मुंह से निकले गए एक शब्द के लिए ही सवाब मिलेगा। इस बात पर ध्यान दो, तुम कुरान पढ़ने वालों जो इस बात से दुखी हो कि तुम्हारी आवाज़ें ज़्यादा खूबसूरत नहीं हैं और ज़्यादा लोग तुम्हें नहीं सुनते!

चौथा कारण

जिस तरह से मार्गदर्शन करने वालों के बीच प्रतिद्वंद्विता और असहमति परिणामों की भविष्यवाणी करने में विफलता या अदूरदर्शिता से उत्पन्न नहीं होती है, उसी तरह गुमराह लोगों के बीच पूर्ण सहमति दूरदर्शिता या दृष्टि की उच्चता से उत्पन्न नहीं होती है। बल्कि मार्गदर्शन करने वाले लोग, सत्य और वास्तविकता के प्रभाव के माध्यम से, आत्मा की अंधी भावनाओं के आगे नहीं झुकते हैं, बल्कि इसके बजाय हृदय और बुद्धि की दूरदर्शी प्रवृत्तियों का अनुसरण करते हैं। हालाँकि, चूँकि वे अपनी दिशा और अपनी ईमानदारी को बनाए रखने में विफल रहते हैं, इसलिए वे अपना उच्च पद बनाए रखने में असमर्थ होते हैं और विवाद में पड़ जाते हैं।

जहाँ तक गुमराह लोगों का सवाल है, वे आत्मा और मनमौजीपन के प्रभाव में हैं, तथा इन्द्रिय-बोध के प्रभुत्व में हैं, जो सभी परिणामों के प्रति अंधे हैं तथा हमेशा एक टन सुख की अपेक्षा एक औंस तात्कालिक सुख को अधिक पसंद करते हैं।

भविष्य के सुख की कामना से वे तुरन्त लाभ और तुरन्त आनन्द के लिए उत्सुकतापूर्वक एकता में जुट जाते हैं। वास्तव में अहंकार के नीच और निर्दयी उपासक सांसारिक और तुरन्त सुख और लाभ के लिए एकत्रित होते ही हैं। यह सच है कि मार्गदर्शित लोगों ने हृदय और बुद्धि के उच्च निर्देशों के अनुसार परलोक और उसकी सिद्धियों के प्रति अपना ध्यान केन्द्रित किया है, किन्तु यद्यपि उचित दिशा-ज्ञान, पूर्ण ईमानदारी और आत्म-त्यागपूर्ण मिलन और मिलन संभव है, क्योंकि वे अहंकार से मुक्त होने में असफल रहे हैं और न्यूनता और अधिकता के कारण वे अपनी मिलन शक्ति के उस उच्च स्रोत को खो देते हैं और अपनी ईमानदारी को नष्ट होने देते हैं। परलोक के सम्बन्ध में उनका कर्तव्य भी नष्ट हो जाता है। ईश्वर की प्रसन्नता आसानी से नहीं मिलती।

इस गंभीर बीमारी का इलाज और उपचार है ईश्वर के लिए प्रेम के सिद्धांत के अनुसार सत्य के मार्ग पर चलने वाले सभी लोगों की संगति पर गर्व करना; उनका अनुसरण करना और उन्हें नेतृत्व सौंपना; और जो कोई ईश्वर के मार्ग पर चल रहा है उसे संभवतः अपने से बेहतर मानना, जिससे अहंकार टूट जाए और ईमानदारी वापस आ जाए। इस बीमारी से मुक्ति पाने के लिए यह जानना भी ज़रूरी है कि ईमानदारी से किया गया एक औंस कर्म, बिना ईमानदारी के किए गए एक टन कर्म से बेहतर है, और एक अनुयायी की स्थिति को नेता की स्थिति से बेहतर मानना, जिसमें सभी खतरे और जिम्मेदारी शामिल हैं। इस प्रकार ईमानदारी हासिल की जा सकती है, और परलोक की तैयारी के अपने कर्तव्यों को सही ढंग से निभाया जा सकता है।

पांचवां कारण

मार्गदर्शन करने वाले लोगों के बीच विवाद और असहमति कमज़ोरी का नतीजा नहीं है, और गुमराह लोगों का शक्तिशाली संघ ताकत का नतीजा नहीं है। बल्कि मार्गदर्शन करने वाले लोगों के संघ की कमी उस शक्ति से आती है जो पूर्ण विश्वास द्वारा प्रदान किए गए समर्थन से उत्पन्न होती है, और उपेक्षा और गुमराह लोगों का संघ किसी भी आंतरिक समर्थन की कमी के परिणामस्वरूप उनके द्वारा अनुभव की गई कमज़ोरी और नपुंसकता से आता है। कमज़ोर लोग शक्तिशाली संघ बनाते हैं क्योंकि उन्हें संघ की ज़रूरत होती है। चूँकि मज़बूत लोगों को ऐसी ज़रूरत महसूस नहीं होती, इसलिए उनके संघ कमज़ोर होते हैं। शेरों को लोमड़ियों की तरह संघ की ज़रूरत नहीं होती और इसलिए वे अलग-अलग रहते हैं, जबकि जंगली बकरियाँ भेड़ियों से खुद को बचाने के लिए झुंड बनाती हैं। कमज़ोर लोगों का समुदाय और सामूहिक व्यक्तित्व मज़बूत होता है, और मज़बूत लोगों का समुदाय और सामूहिक व्यक्तित्व कमज़ोर होता है।

[7] पश्चिम में सबसे शक्तिशाली और प्रभावी संगठनों में से एक अमेरिकी संगठन है

महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए, भले ही महिलाओं को निष्पक्ष लिंग कहा जाता है, और वे कमजोर और नाजुक हैं। इसी तरह, अर्मेनियाई लोगों का संगठन, अन्य लोगों की तुलना में उनकी कमजोरी और कम संख्या के बावजूद, अपने मजबूत, आत्म-बलिदान व्यवहार के साथ, हमारे अवलोकन का एक और सबूत प्रदान करता है।

कुरान में इन शब्दों में इसका एक सूक्ष्म संकेत है, "और शहर की महिलाओं ने कहा," (१२:३०) क्रिया "कहा" पुल्लिंग रूप में है, हालाँकि यह दो कारणों से स्त्रीलिंग होना चाहिए [महिलाएं एक स्त्रीलिंग संज्ञा है, और बहुवचन भी है - अरबी में तथाकथित "टूटी हुई" बहुवचन को हमेशा स्त्रीलिंग माना जाता है]। लेकिन इसके विपरीत शब्दों को देखें, "रेगिस्तान के अरबों ने कहा," (४९:१४) इस मामले में क्रिया ने कहा स्त्रीलिंग में है, भले ही इसका विषय पुरुषों के समुदाय को दर्शाता हो। इसमें एक संकेत निहित है, कि कमजोर, नम्र और नरम महिलाओं का एक समूह ताकत, कठोरता और बल प्राप्त करता है, और यहां तक कि एक निश्चित प्रकार का पौरुष भी प्राप्त करता है। इसलिए क्रिया के पुल्लिंग रूप का उपयोग सबसे उपयुक्त है। इसलिए उनके संगठन कमज़ोर होते हैं, क्योंकि वे कोमलता और सावधानी का रुख़ अपनाते हैं और एक तरह की स्त्रीत्व को अपनाते हैं, जिसके लिए क्रिया के स्त्रीलिंग रूप का उपयोग सबसे उपयुक्त है। इसी तरह सत्य के लोग ईश्वर में विश्वास के दृढ़ स्रोत के प्रति समर्पित होते हैं और उस पर भरोसा करते हैं; इसलिए वे अपनी ज़रूरतें दूसरों के सामने नहीं रखते या उनसे सहायता या मदद नहीं माँगते। अगर वे कभी-कभी अनुरोध करते भी हैं, तो वे किसी भी कीमत पर संबंधित व्यक्ति का साथ नहीं देंगे। लेकिन सांसारिक लोग अपने सांसारिक मामलों में समर्थन के सच्चे स्रोत की अनदेखी करते हैं; वे कमज़ोरी और नपुंसकता में पड़ जाते हैं, और सहायता की तीव्र आवश्यकता का अनुभव करते हुए, पूरे दिल से खुद को बलिदान करने के लिए एक साथ आते हैं।

सत्य के लोग एकता में पाई जाने वाली सच्ची शक्ति को नहीं पहचानते और न ही उसकी खोज करते हैं; इसलिए वे विवाद में पड़ जाते हैं, जो इस असफलता का एक बुरा और हानिकारक परिणाम है। इसके विपरीत, गुमराह और झूठ के लोग अपनी कमज़ोरी के कारण एकता में पाई जाने वाली शक्ति को समझते हैं और इस प्रकार एकता प्राप्त करते हैं, जो सभी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

सत्य के लोगों के बीच मतभेद की इस बीमारी का इलाज और उपचार यही है कि
अपने आचरण का नियम इस श्लोक में निहित दैवीय निषेध को बनाओ:

> विवाद में न पड़ो, कहीं ऐसा न हो कि तुम हिम्मत हार जाओ और तुम्हारी शक्ति जाती रहे (8:46)

और सामाजिक जीवन के लिए बुद्धिमानीपूर्ण दिव्य आदेश इस श्लोक में निहित है:

> सदाचार और धर्मपरायणता के लिए मिलकर काम करो । (5:3)

व्यक्ति को यह भी समझना चाहिए कि विवाद इस्लाम के लिए कितना हानिकारक है, तथा यह किस प्रकार गुमराह लोगों को सत्य के लोगों पर विजय पाने में मदद करता है, तथा फिर उसे पूरे दिल से तथा आत्म-बलिदान के साथ, अपनी पूरी कमजोरी तथा नपुंसकता का एहसास करते हुए, सत्य के लोगों के कारवां में शामिल हो जाना चाहिए। अंततः, व्यक्ति को यह भी समझना चाहिए कि वह सत्य के लोगों के साथ कितना अन्याय कर रहा है।

उसे अपने व्यक्तित्व को भूलना होगा, कपट और दिखावा त्यागना होगा, और ईमानदारी को अपनाना होगा।

छठा कारण

सत्य के लोगों में मतभेद पुरुषार्थ, आकांक्षा और उत्साह की कमी से उत्पन्न नहीं होता; इसी प्रकार, अपने सांसारिक मामलों के संबंध में गुमराह, लापरवाह और सांसारिक लोगों के बीच पूरे दिल से एकता पुरुषार्थ, आकांक्षा और उत्साह से उत्पन्न नहीं होती। बल्कि सत्य के लोग आम तौर पर परलोक में मिलने वाले लाभों के बारे में चिंतित रहते हैं और इसलिए वे अपना उत्साह, आकांक्षा और पुरुषार्थ उन महत्वपूर्ण और असंख्य मामलों की ओर लगाते हैं। चूँकि वे समय - मनुष्य की सच्ची पूंजी - को एक ही चिंता में नहीं लगाते, इसलिए उनका अपने साथियों के साथ एकता कभी भी दृढ़ नहीं हो सकती। उनकी चिंताएँ असंख्य और व्यापक हैं। जहाँ तक लापरवाह और सांसारिक लोगों का सवाल है, वे केवल इस दुनिया के जीवन के बारे में सोचते हैं, और वे अपनी सारी इंद्रियों, अपनी आत्मा और दिल से इस दुनिया के जीवन की चिंताओं को दृढ़ता से अपनाते हैं, और जो भी उन चिंताओं में उनकी मदद करता है, उससे दृढ़ता से चिपके रहते हैं। एक पागल की तरह

हीरा व्यापारी जो कांच के एक टुकड़े के लिए बहुत अधिक कीमत देता है, जिसकी कीमत लगभग कुछ भी नहीं है, वे समय लगाते हैं, जो कि सबसे अधिक मूल्यवान है, उन मामलों के लिए जो वास्तव में और सत्य के लोगों की दृष्टि में कुछ भी नहीं हैं। इतनी अधिक कीमत चुकाने और सभी इंद्रियों की भक्ति के साथ खुद को अर्पित करने से स्वाभाविक रूप से एक पूरे दिल से ईमानदारी का परिणाम होगा जो हाथ में मामले में सफलता प्रदान करता है, जिससे सत्य के लोग हार जाते हैं। इस हार के परिणामस्वरूप, सत्य के लोग अपमान, अपमान, पाखंड और दिखावे की स्थिति में गिर जाते हैं, और ईमानदारी खो जाती है। इस प्रकार सत्य के लोग दुनिया के मुट्ठी भर नीच और नीच लोगों के सामने चापलूसी और झुकने के लिए बाध्य हैं।

ऐ सत्य के लोगों! ऐ कानून के लोगों, वास्तविकता के लोगों और मार्ग के लोगों, सभी ईश्वर की पूजा करने वालों! कलह की इस भयानक बीमारी का सामना करते हुए, एक दूसरे की गलतियों को नज़रअंदाज़ करो, एक दूसरे की कमियों से अपनी आँखें बंद करो! कुरान की इस आयत में स्थापित शिष्टाचार के नियम के अनुसार व्यवहार करो:

> जब वे गुमराही से आगे बढ़ते हैं, तो उससे सम्मानजनक तरीके से बचते हैं। (25:72)

इसे अपना प्राथमिक कर्तव्य समझो - जिस पर तुम्हारे परलोक की स्थिति निर्भर करती है - जब कोई बाहरी दुश्मन हमला करे तो आंतरिक कलह को त्याग दो, और इस तरह सत्य के लोगों को उनके अपमान और अपमान से बचाओ! सैकड़ों कुरान की आयतों और पैगंबर (UWBP) की परंपराओं द्वारा आग्रहपूर्वक बताए गए भाईचारे, प्रेम और सहयोग का पालन करो! अपनी पूरी ताकत से अपने साथियों और दोस्तों के साथ एकता स्थापित करो

धर्म में भाईचारा सांसारिक एकता से भी अधिक शक्तिशाली है! विवाद में मत पड़ो! अपने आप से यह मत कहो कि, "अपना बहुमूल्य समय ऐसी तुच्छ बातों पर खर्च करने के बजाय, मुझे इसे अधिक मूल्यवान बातों जैसे ईश्वर का आह्वान और ध्यान पर खर्च करना चाहिए;" अन्यथा एकता पीछे हट जाएगी और कमजोर हो जाएगी। क्योंकि जिस बात को तुम इस नैतिक जिहाद में मामूली महत्व का समझते हो, वह वास्तव में बहुत बड़ी बात हो सकती है। जिस प्रकार कुछ विशेष और असामान्य परिस्थितियों में एक सैनिक द्वारा एक घंटे की निगरानी पूरे वर्ष की पूजा के बराबर हो सकती है, उसी प्रकार इस युग में जब सत्य के लोग पराजित हो चुके हैं, नैतिक संघर्ष से संबंधित किसी छोटी सी बात पर तुम्हारा खर्च किया गया बहुमूल्य दिन उस सैनिक के एक घंटे के समान हजार दिनों के बराबर हो सकता है। ईश्वर के लिए जो कुछ भी किया जाता है, उसे छोटा और बड़ा, मूल्यवान और मूल्यहीन में विभाजित नहीं किया जा सकता। ईमानदारी से और ईश्वर की प्रसन्नता के लिए खर्च किया गया एक अणु भी एक तारे के समान हो जाता है। महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि उपयोग किए गए साधनों की प्रकृति क्या है, बल्कि यह है कि उसका परिणाम क्या होता है। जब तक परिणाम ईश्वर की प्रसन्नता है और प्रयुक्त तत्व ईमानदारी है, तब तक कोई भी साधन जिसका सहारा लिया जाए वह महान होगा, छोटा नहीं।

सातवां कारण

सत्य के लोगों के बीच विवाद और प्रतिद्वंद्विता दुनिया के प्रति ईर्ष्या और लालच से पैदा नहीं होती है, और इसके विपरीत सांसारिक और लापरवाह लोगों के बीच एकता उदारता और महानता से पैदा नहीं होती है। बल्कि सत्य के लोग सत्य से उत्पन्न होने वाली उदारता और उच्च आकांक्षा को पूरी तरह से सुरक्षित रखने में असमर्थ हैं, या ईश्वर के मार्ग पर मौजूद प्रतिस्पर्धा के प्रशंसनीय रूप को बनाए रखने में असमर्थ हैं। अयोग्य लोगों द्वारा घुसपैठ किए जाने पर, वे प्रतिस्पर्धा के उस प्रशंसनीय रूप का आंशिक रूप से दुरुपयोग करते हैं और प्रतिद्वंद्विता और विवाद में पड़ जाते हैं, जिससे खुद को और इस्लामी समुदाय को गंभीर नुकसान होता है। जहाँ तक उपेक्षा और पथभ्रष्ट लोगों का प्रश्न है, वे जिस लाभ के मोह में हैं, उसे न खोने के लिए और लाभ के लिए जिन नेताओं और साथियों की वे पूजा करते हैं, उन्हें नाराज न करने के लिए, अपने घोर अपमान, अपमान और पुरुषार्थहीनता में, वे अपने साथियों के साथ हर कीमत पर एकता का अभ्यास करते हैं, चाहे वे कितने भी घृणित, विश्वासघाती और हानिकारक क्यों न हों, और अपने साझेदारों के साथ पूरे दिल से सहमत होते हैं, चाहे उनका साझा हित किसी भी रूप में क्यों न हो। इस पूरे दिल से किए गए काम के परिणामस्वरूप, वे वास्तव में वांछित लाभ प्राप्त करते हैं।

इसलिए हे सत्य के लोगों, झगड़ों में लिप्त और विपत्ति से ग्रस्त! यह आपकी ईमानदारी की कमी और इस विपत्ति के युग में ईश्वर की प्रसन्नता को अपना एकमात्र उद्देश्य न बनाने की वजह से है कि आपने सत्य के लोगों को इस अपमान और पराजय का सामना करना पड़ा है। धर्म और परलोक से संबंधित मामलों में कोई प्रतिद्वंद्विता, ईर्ष्या या जलन नहीं होनी चाहिए; वास्तव में ऐसा हो सकता है

इनमें से कुछ भी नहीं है। ईर्ष्या और जलन का कारण यह है कि जब कई हाथ एक ही चीज़ के पीछे बढ़ते हैं, जब कई आँखें एक ही जगह पर टिकी होती हैं, जब कई पेट एक ही रोटी के लिए तरसते हैं, तो पहले संघर्ष, विवाद और प्रतिद्वंद्विता के परिणामस्वरूप ईर्ष्या उत्पन्न होती है, और फिर ईर्ष्या। चूँकि दुनिया में कई लोग एक ही चीज़ चाहते हैं, और चूँकि दुनिया, जितनी संकीर्ण और क्षणभंगुर है, वह मनुष्य की असीमित इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकती, इसलिए लोग एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी बन जाते हैं। हालाँकि, आख़िरत में एक व्यक्ति को पाँच सौ साल की जन्नत दी जाएगी; उसे सत्तर हज़ार महल और हूरें दी जाएँगी; और जन्नत का हर एक व्यक्ति अपने हिस्से से पूरी तरह संतुष्ट होगा।8 इस तरह यह स्पष्ट है कि आख़िरत में प्रतिद्वंद्विता का कोई कारण नहीं है, न ही प्रतिद्वंद्विता हो सकती है। उस स्थिति में, न तो उन अच्छे कामों के संबंध में कोई प्रतिद्वंद्विता होनी चाहिए जो आख़िरत में सवाब देते हैं; यहाँ ईर्ष्या के लिए कोई जगह नहीं है। यहाँ ईर्ष्या करने वाला या तो पाखंडी है, जो अच्छे कर्मों के माध्यम से सांसारिक परिणाम चाहता है, या फिर एक ईमानदार लेकिन अज्ञानी भक्त है, जो अच्छे कर्मों के वास्तविक उद्देश्य को नहीं जानता और यह नहीं समझता कि ईमानदारी सभी अच्छे कर्मों की आत्मा और आधार है। भगवान के संतों के प्रति एक तरह की प्रतिद्वंद्विता और शत्रुता पैदा करके, वह वास्तव में भगवान की करुणा की चौड़ाई को संदेह में डाल रहा है।

इस सत्य का समर्थन करने वाला एक उदाहरण: मेरे एक पूर्व साथी ने
किसी के प्रति शत्रुता। उसके शत्रु के अच्छे कर्म और पवित्रता कभी

---

[8] एक महत्वपूर्ण व्यक्ति द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण प्रश्न: परंपरा के अनुसार पांच सौ साल का स्वर्ग में सभी को स्वर्ग दिया जाएगा। सांसारिक बुद्धि इस सत्य को कैसे समझ सकती है?

उत्तर: इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति का अपना निजी और अस्थायी रूप से सीमित संसार है, जो संसार जितना ही विस्तृत है, जिसका आधार उसका जीवन है। वह अपने संसार का उपयोग अपनी आंतरिक और बाह्य इंद्रियों के माध्यम से करता है। वह अपने आप से कहता है, "सूर्य मेरा दीपक है, तारे मेरी मोमबत्तियाँ हैं।" अन्य प्राणियों और सजीव प्राणियों का अस्तित्व किसी भी तरह से उसके स्वामित्व को अस्वीकार नहीं करता है; इसके विपरीत, वे उसके संसार को उज्ज्वल और प्रकाशित करते हैं। इसी तरह, यद्यपि एक अनंत उच्चतर तल पर, प्रत्येक आस्तिक के बगीचे के अलावा जिसमें हजारों महल और हूरियाँ हैं, सामान्य स्वर्ग से अलग, प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक निजी पाँच सौ साल का स्वर्ग है। वह अपनी इंद्रियों और भावनाओं के माध्यम से इस स्वर्ग और अनंत काल से लाभान्वित होगा, उनके विकास की डिग्री के अनुसार। यह तथ्य कि अन्य लोग सामान्य स्वर्ग में साझा करते हैं, किसी भी तरह से उसके स्वामित्व या लाभ को नुकसान नहीं पहुँचाता है, बल्कि इसके विपरीत उन्हें मजबूत करता है, और उस विशाल स्वर्ग को सुशोभित करता है। इस दुनिया में मनुष्य एक घंटे तक चलने वाले बगीचे, एक दिन तक चलने वाले तमाशे, एक महीने तक चलने वाले देश और एक साल तक चलने वाली यात्रा से अपने मुँह, अपने कान, अपनी आँख, अपने स्वाद और अपनी सभी अन्य इंद्रियों से लाभ उठाता है। इसी तरह, अनंत काल के उस क्षेत्र में, उसकी गंध और स्पर्श की इंद्रियाँ, जो इस क्षणभंगुर दुनिया में एक घंटे तक चलने वाले बगीचे से बमुश्किल लाभ उठाती हैं, उन्हें उसी तरह लाभ होगा जैसे एक बगीचे से

एक साल तक चलने वाला बगीचा। दृष्टि और श्रवण की भावना जो यहाँ एक साल तक चलने वाले भ्रमण से मुश्किल से लाभ उठाती है, क्या वहाँ पाँच सौ साल के भ्रमण से लाभ उठा पाएगी, जो उस क्षेत्र के लिए उपयुक्त है, जो अंत से अंत तक सुशोभित है। हर आस्तिक को अपने आध्यात्मिक पद के अनुसार वहाँ लाभ मिलेगा, और लाभ होगा
वह अपनी इन्द्रियों के माध्यम से आनंद और प्रसन्नता का अनुभव करेगा जो इस संसार में उसके द्वारा अर्जित पुरस्कार और उसके द्वारा किए गए अच्छे कर्मों के संबंध में विस्तारित और विकसित होगा।

उसके सामने ही उसका अच्छा वर्णन किया गया। वह ईर्ष्यालु या परेशान नहीं था। फिर किसी ने कहा, "तुम्हारा वह शत्रु साहसी और शक्तिशाली है।" हमने देखा कि उस आदमी में ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता की प्रबल भावना अचानक उभर रही है। हमने उससे कहा:

"पवित्रता और धार्मिकता अनंत जीवन के रत्न की तरह शक्ति और उत्कर्ष प्रदान करती है, फिर भी तुम उनसे ईर्ष्या नहीं करते थे। अब सांसारिक शक्ति बैलों में और साहस जंगली जानवरों में पाया जाता है; पवित्रता और धार्मिकता की तुलना में वे हीरे की तुलना में कांच के टुकड़े की तरह हैं।"

आदमी ने जवाब दिया:

"हम दोनों ने इस दुनिया में एक ही लक्ष्य पर अपनी नज़रें गड़ा रखी हैं। उस तक पहुँचने के लिए साहस और शक्ति जैसी चीज़ों से कदम मिलते हैं। यही कारण है कि मैं उससे ईर्ष्या करता था। परलोक की वस्तुएँ और पद अनगिनत हैं।

यद्यपि वह यहाँ मेरा शत्रु है, परन्तु वहाँ वह मेरा प्रिय और घनिष्ठ भाई हो सकता है।”

हे सत्य और मार्ग के लोगों! सत्य की सेवा एक महान और भारी खजाने को ले जाने और संरक्षित करने के समान है। जो लोग उस भरोसे को अपने कंधों पर उठाते हैं, वे जब भी शक्तिशाली हाथ उनकी सहायता के लिए आगे बढ़ेंगे, खुश और आभारी होंगे। ईर्ष्या करने से दूर, हमें उन लोगों की श्रेष्ठ शक्ति, प्रभावशीलता और क्षमता पर गर्व से ताली बजानी चाहिए जो सच्चे प्रेम से उनकी मदद करने के लिए आगे आते हैं। फिर सच्चे भाइयों और आत्म-त्यागी सहायकों को प्रतिद्वंद्विता की भावना से क्यों देखते हैं, जिससे ईमानदारी खो जाती है? तुम गुमराह लोगों की नज़र में भयानक आरोपों के संपर्क में आओगे, जैसे कि धर्म के माध्यम से सांसारिक हित साधना, भले ही वह तुमसे और तुम्हारे विश्वास से सौ गुना कम है, सत्य के ज्ञान के माध्यम से अपनी आजीविका कमाना और लालच और लोभ में दूसरों से होड़ करना।

इस रोग का एकमात्र उपचार यह है कि दूसरों के आरोप लगाने से पहले अपनी आत्मा पर आरोप लगाओ और हमेशा अपने साथी का पक्ष लो, अपनी आत्मा का नहीं। शास्त्रार्थ कला के विद्वानों द्वारा स्थापित सत्य और समता का नियम यह है: "जो व्यक्ति किसी विषय पर शास्त्रार्थ करते समय यह चाहता है कि उसकी बात सत्य निकले, जो व्यक्ति इस बात से प्रसन्न हो कि वह सही निकले और उसका शत्रु गलत और भूला हुआ निकले - ऐसा व्यक्ति अन्याय करता है।" इतना ही नहीं, ऐसा व्यक्ति हारता है, क्योंकि जब वह ऐसे शास्त्रार्थ में विजयी होता है, तो वह पहले से अज्ञात कोई बात नहीं सीखता है और उसका संभावित अभिमान उसे हानि पहुँचाता है। लेकिन यदि उसका विरोधी सही निकला, तो वह पहले से अज्ञात कोई बात सीखता है और इस प्रकार बिना किसी हानि के कुछ प्राप्त करता है, साथ ही अभिमान से भी बच जाता है। दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति अपने व्यवहार में निष्पक्ष और सत्य के प्रति आसक्त है, वह अपनी आत्मा की इच्छा को सत्य की माँगों के अधीन कर देता है। यदि

यदि वह अपने विरोधी को सही पाता है, तो वह उसे सहर्ष स्वीकार कर लेगा तथा उसका समर्थन करेगा।

यदि धर्म के लोग, सत्य के लोग, मार्ग के लोग, और ज्ञान के लोग इस सिद्धांत को अपना मार्गदर्शक बना लें, तो वे ईमानदारी प्राप्त कर लेंगे, और उन कर्तव्यों में सफल हो जाएंगे जो उन्हें परलोक के लिए तैयार करते हैं। ईश्वर की दया से वे इस भयावह दुर्दशा और दुर्भाग्य से छुटकारा पा लेंगे, जिससे वे इस समय पीड़ित हैं।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है । (2:32)

इक्कीसवीं फ़्लैश

ईमानदारी पर

[हालाँकि मूल रूप से यह सत्रहवीं फ्लैश के सत्रहवें नोट के सात मामलों में से चौथा था, लेकिन ईमानदारी से जुड़े होने के कारण, यह बीसवीं फ्लैश का दूसरा बिंदु बन गया। अंत में, इसके चमकदार चरित्र के कारण, इसे इक्कीसवीं फ्लैश के रूप में फ्लैश में शामिल किया गया।]

इस फ़्लैश को कम से कम हर पखवाड़े एक बार अवश्य पढ़ा जाना चाहिए

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
विवाद में न पड़ो, कहीं ऐसा न हो कि तुम हिम्मत हार जाओ और तुम्हारी शक्ति चली जाए। (8:46) * और अल्लाह के सामने भय-भरी दृष्टि से खड़े रहो । (2:238) * जो उसे शुद्ध कर ले, वह सफल हो जाता है, और जो उसे बिगाड़ ले, वह असफल हो जाता है । (91:9-10) * और मेरी आयतों को थोड़े से दाम पर न बेचो। (2:41. इत्यादि)

ऐ मेरे परलोक के भाईयों! और ऐ मेरे कुरान की सेवा में साथियों! तुम्हें पता होना चाहिए - और तुम जानते हो - कि इस दुनिया में परलोक से संबंधित कार्यों में ईमानदारी सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है; यह सबसे बड़ी ताकत है, सबसे स्वीकार्य मध्यस्थ है, सबसे मजबूत सहारा है, वास्तविकता तक पहुंचने का सबसे छोटा रास्ता है, सबसे स्वीकार्य प्रार्थना है, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का सबसे अद्भुत साधन है, सर्वोच्च गुण है, और सबसे शुद्ध पूजा है। चूँकि ईमानदारी में बहुत ताकत और ऊपर बताए गए कई प्रकाश शामिल हैं; और चूँकि इस भयानक समय में, हमारी छोटी संख्या और कमजोर, दरिद्र और शक्तिहीन स्थिति के बावजूद और भयानक दुश्मनों से भिड़ने और आक्रामक नवाचारों और गुमराह करने के बीच गंभीर उत्पीड़न सहने के बावजूद, ईश्वरीय कृपा से हमारे कंधों पर विश्वास और कुरान की सेवा करने का अत्यंत भारी, महत्वपूर्ण, सामान्य और पवित्र कर्तव्य डाला गया है, इसलिए हम ईमानदारी हासिल करने के लिए अपनी पूरी ताकत से काम करने के लिए निश्चित रूप से किसी और से अधिक मजबूर हैं। हमें अपने आप में ईमानदारी पैदा करने की सबसे अधिक आवश्यकता है। अन्यथा हमने जो हासिल किया है

अब तक हमारी पवित्र सेवा में जो कुछ भी हुआ है, वह आंशिक रूप से नष्ट हो जाएगा और कायम नहीं रहेगा; और हमें इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाएगा; हम ईश्वरीय निषेध में निहित गंभीर खतरे को प्रकट करेंगे,

> और न मेरी निशानियों को थोड़े दाम पर बेचो। (2:41, आदि)

अन्यथा हम ईमानदारी को नष्ट कर देंगे, इस प्रकार अर्थहीन, अनावश्यक, हानिकारक, दुखद, आत्म-केंद्रित, उबाऊ, पाखंडी आधार भावनाओं और महत्वहीन लाभों के लिए शाश्वत खुशी को नुकसान पहुंचाएंगे। और अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम अपने सभी भाइयों के अधिकारों का उल्लंघन करेंगे, कुरान की सेवा के कर्तव्य का उल्लंघन करेंगे, और विश्वास की सच्चाई की पवित्रता के प्रति अनादर करेंगे।

मेरे भाइयों! महत्वपूर्ण अच्छे कामों से पहले कई बाधाएँ आती हैं। शैतान उन लोगों के खिलाफ़ एक शक्तिशाली संघर्ष करता है जो उनमें सहायता करते हैं। उन बाधाओं और शैतानों का सामना करने के लिए आपको ईमानदारी की ताकत पर भरोसा करना होगा। आपको उन चीज़ों से बचना चाहिए जो ईमानदारी को नुकसान पहुँचाती हैं जैसे आप साँपों और बिच्छुओं से बचते हैं। यूसुफ (जिस पर शांति हो) के शब्दों के अनुसार,

> और न मैं अपने आप को दोषमुक्त करता हूँ, आत्मा तो बुराई में ही लगी रहती है, जब तक कि मेरा पालनहार अपनी दया न करे। (12:53)

बुराई करने वाली आत्मा पर भरोसा नहीं किया जा सकता। अहंकार और आत्मा को धोखा मत दो! ईमानदारी हासिल करने और उसे बनाए रखने के लिए आपको निम्नलिखित नियमों को अपनाना चाहिए:

आपका पहला नियम

आपको अपने कार्यों में ईश्वरीय प्रसन्नता की तलाश करनी चाहिए। यदि सर्वशक्तिमान ईश्वर प्रसन्न हैं, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि पूरी दुनिया नाराज भी हो। यदि वे किसी कार्य को स्वीकार करते हैं और बाकी सभी उसे अस्वीकार करते हैं, तो उनकी अस्वीकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। एक बार उनकी प्रसन्नता प्राप्त हो जाने पर और उन्होंने किसी कार्य को स्वीकार कर लिया, भले ही आप उनसे ऐसा न भी कहें, यदि वे ऐसा चाहते हैं और उनकी बुद्धि इसकी मांग करती है, तो वे दूसरों से भी इसे स्वीकार करवा लेंगे। वे उनसे भी इसके लिए सहमति करवा लेंगे। इस कारण, ईश्वरीय प्रसन्नता की तलाश ही इस सेवा का एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए।

आपका दूसरा नियम

इसका मतलब यह नहीं है कि आप अपने उन भाइयों की आलोचना करें जो कुरान की इस सेवा में लगे हुए हैं, और न ही अपने श्रेष्ठ गुणों का प्रदर्शन करके उनकी ईर्ष्या को भड़काएँ। क्योंकि जिस तरह एक हाथ दूसरे से मुकाबला नहीं कर सकता, उसी तरह एक आँख दूसरे की आलोचना नहीं कर सकती, न ही जीभ कान को आपत्ति दे सकती है, न ही दिल आत्मा के दोषों को देख सकता है। एक व्यक्ति का प्रत्येक अंग दूसरे की कमियों को पूरा करता है, उनके दोषों को छिपाता है, उनकी ज़रूरतों में सहायता करता है, और उनके कर्तव्यों में उनकी मदद करता है। अन्यथा उसका जीवन समाप्त हो जाएगा, उसकी आत्मा भाग जाएगी, और उसका शरीर बिखर जाएगा।

इसी तरह, एक कारखाने की मशीनरी के घटक एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते, एक दूसरे पर वरीयता नहीं ले सकते, या एक दूसरे पर हावी नहीं हो सकते। वे एक दूसरे की कमियों की जासूसी नहीं कर सकते और एक दूसरे की आलोचना नहीं कर सकते, दूसरे की काम करने की उत्सुकता को नष्ट नहीं कर सकते और उसे बेकार नहीं होने दे सकते। इसके बजाय वे साझा लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी पूरी क्षमता से एक दूसरे की गतिविधियों में सहायता करते हैं; वे सच्ची एकजुटता और एकता के साथ अपने निर्माण के उद्देश्य की ओर बढ़ते हैं। अगर थोड़ी सी भी आक्रामकता या हावी होने की इच्छा हस्तक्षेप करती है, तो यह कारखाने को अस्त-व्यस्त कर देगी, इसके उत्पादों और परिणामों को रद्द कर देगी। फिर कारखाने का मालिक कारखाने को पूरी तरह से नष्ट कर देगा।

ऐ रिसाले-ए-नूर के छात्र और कुरान के सेवक! आप और मैं ऐसे सामूहिक व्यक्तित्व के सदस्य हैं, जो पूर्ण मनुष्य की उपाधि के योग्य हैं। हम एक कारखाने की मशीनरी के घटकों की तरह हैं जो अनंत जीवन के भीतर अनंत सुख पैदा करते हैं। हम एक प्रमुख नाव पर काम करने वाले हाथ हैं जो मुहम्मद (UWBP) के समुदाय को शांति के क्षेत्र, मोक्ष के तट पर उतारेगी। इसलिए हमें निश्चित रूप से एकजुटता और सच्ची एकता की आवश्यकता है, जो ईमानदारी प्राप्त करने के माध्यम से प्राप्त होती है - क्योंकि ईमानदारी का रहस्य चार व्यक्तियों के माध्यम से एक हजार एक सौ ग्यारह की नैतिक शक्ति को सुरक्षित करता है - वास्तव में, हम इसे प्राप्त करने के लिए मजबूर हैं।

हां, अगर तीन अलिफ एक नहीं होते, तो उनका मूल्य तीन होता है, लेकिन एक होने पर, संख्याओं के रहस्य के माध्यम से वे एक सौ ग्यारह के मूल्य को प्राप्त करते हैं। अगर चार गुणा चार अलग-अलग रहते हैं, तो उनका मूल्य सोलह होता है। लेकिन अगर भाईचारे के रहस्य और एक समान लक्ष्य और संयुक्त कर्तव्य के माध्यम से, वे एक पंक्ति में कंधे से कंधा मिलाकर एक साथ आते हैं, तो वे चार हजार चार सौ चौवालीस की ताकत और मूल्य प्राप्त करते हैं। वास्तव में, कई ऐतिहासिक घटनाएं इस बात की गवाही देती हैं कि सोलह आत्म-बलिदान करने वाले भाइयों की नैतिक ताकत और मूल्य चार हजार से अधिक है।

इस रहस्य का मूल कारण यह है: एक सच्चे, ईमानदार संघ का प्रत्येक सदस्य अन्य भाइयों की आंखों से देख सकता है, और उनके कानों से सुन सकता है, जैसे कि दस के सच्चे संघ का प्रत्येक व्यक्ति बीस आंखों से देखने, दस दिमागों से सोचने, बीस कानों से सुनने, और बीस हाथों से काम करने का मूल्य और शक्ति प्राप्त करता है।[1]

---

[1] हां, ईमानदारी के रहस्य के माध्यम से हार्दिक एकजुटता और एकता असंख्य लाभ उत्पन्न करती है, और भय और यहां तक कि मृत्यु के खिलाफ एक प्रभावी ढाल और समर्थन बिंदु भी है। क्योंकि यदि मृत्यु आती है, तो उसे एक आत्मा की आवश्यकता होती है। लेकिन चूंकि सच्चे भाईचारे के रहस्य के माध्यम से परलोक से जुड़े कार्यों में दिव्य आनंद के मार्ग पर भाइयों की संख्या के बराबर आत्माएं हैं, यदि उनमें से एक मर जाता है, तो वह खुशी से मृत्यु का सामना करता है, यह कहते हुए: "मेरी अन्य आत्माएं जीवित रहती हैं, क्योंकि वे वास्तव में मुझे लगातार पुरस्कार अर्जित करके मेरे लिए जीवन जारी रखती हैं, इसलिए मैं मर नहीं रहा हूं। मैं उनकी आत्माओं के माध्यम से पुण्य के संबंध में रहता हूं; मैं केवल पाप के संबंध में मर रहा हूं।" और वह शांति से लेट जाता है।

आपका तीसरा नियम

आपको पता होना चाहिए कि आपकी सारी ताकत ईमानदारी और सच्चाई में निहित है। हाँ, ताकत सच्चाई और ईमानदारी में निहित है। यहाँ तक कि जो लोग गलत काम करते हैं, वे भी अपनी गलत हरकतों में ईमानदारी से ताकत पाते हैं।

सच्चाई और ईमानदारी में ताकत होती है, इसका सबूत हमारी यह सेवा है। हमारे काम में थोड़ी सी ईमानदारी इस दावे को साबित करती है और खुद ही इसका सबूत है। यहां सात या आठ साल की शिक्षा और धर्म की सेवा मेरे अपने मूल क्षेत्र और इस्तांबुल में की गई बीस साल की सेवा से सौ गुना बढ़कर है। और इन जगहों पर मेरी मदद करने वाले लोग मेरे साथ काम करने वाले मेरे भाइयों से सौ या हज़ार गुना ज़्यादा थे, जहाँ मैं अकेला हूँ, कोई नहीं, मैं एक अजनबी हूँ, अर्ध-शिक्षित हूँ, अन्यायी अधिकारियों की निगरानी में हूँ और उनके द्वारा सताए जा रहा हूँ। मुझे इस बात में बिलकुल संदेह नहीं है कि मैंने इन सात या आठ सालों में आपके साथ जो सेवा की है और जो नैतिक शक्ति मुझे पहले की तुलना में सौ गुना ज़्यादा सफलता दिलाती है, वह आपकी ईमानदारी से पैदा हुई है। मुझे यह भी कबूल करना है कि आपकी हार्दिक ईमानदारी से, आपने मुझे उस पाखंड से कुछ हद तक बचाया है जो प्रसिद्धि और यश के आवरण में मेरी आत्मा को खुश करता था। ईश्वर की इच्छा से, आप पूर्ण ईमानदारी प्राप्त करने में सफल होंगे, और आप मुझे भी इसे प्राप्त करने में सहायता करेंगे।

तुम्हें मालूम होना चाहिए कि इसी ईमानदारी के रहस्य के कारण अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) और ग़ौतुल आज़म (उनका रहस्य पवित्र हो) अपने चमत्कारिक चमत्कारों और अदृश्य के अद्भुत दर्शन से तुम्हें सम्मानित करते हैं। वे तुम्हें सुरक्षात्मक तरीके से सांत्वना प्रदान करते हैं और तुम्हारी सेवा की सराहना करते हैं।

हां, आपको इस बात में कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि उनका यह ध्यान ईमानदारी की वजह से है। अगर आप जानबूझकर इसे नुकसान पहुंचाते हैं, तो आपको उनसे सजा मिलेगी। आपको दसवीं फ्लैश में "करुणा के प्रहार" को ध्यान में रखना चाहिए।

यदि आप ऐसे आध्यात्मिक नायकों का समर्थन प्राप्त करना चाहते हैं, और उन्हें प्राप्त करना चाहते हैं
अपने सिर पर स्वामी के रूप में, कविता के अनुसार पूरी ईमानदारी हासिल करें,

अतः उन्हें अपने ऊपर वरीयता दो। (59:9)

सम्मान, पद, प्रशंसा और भौतिक लाभ जैसी चीज़ों में अपनी आत्मा की अपेक्षा अपने भाइयों की आत्माओं को अधिक महत्व दो, और यहाँ तक कि उन चीज़ों में भी जो तुम्हारी आत्मा को भोगनी पड़ती हैं।

---

[2] अली इब्न अबी तालिब: पैगम्बर मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) के चाचा के बेटे, जिन्हें बचपन से ही पैगम्बर (यूडब्ल्यूबीपी) ने पाला था, जिन्होंने बाद में उनकी शादी अपनी बेटी फातिमा से कर दी थी। अली कुरान के रहस्योद्घाटन पर विश्वास करने वाले पहले लोगों में से एक थे, और युद्ध में अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे। वे चौथे खलीफा बने।

[3] सैय्यद 'अब्द अल-कादिर गिलानी (गेलानी), जिन्हें गौथ अल-आज़म के नाम से जाना जाता है, कादिरी संप्रदाय के नाम से जाने जाते थे और इस्लाम के इतिहास में एक महान आध्यात्मिक व्यक्ति थे। वे 470/1077-561/1166 तक जीवित रहे और बगदाद में दफन हैं।

निर्दोष, हानिरहित लाभ एक ज़रूरतमंद आस्तिक को विश्वास के बेहतरीन सत्यों में से एक के बारे में सूचित करने के रूप में। यदि संभव हो, तो अपने किसी अनिच्छुक साथी को उसे सूचित करने के लिए प्रोत्साहित करें, ताकि आपकी आत्मा अभिमानी न हो जाए। यदि आप उसे पुरस्कार प्राप्त करने के लिए शिक्षाप्रद बात बताने की इच्छा रखते हैं, तो यह निश्चित रूप से कोई पाप नहीं है और इसमें कोई नुकसान नहीं है, लेकिन आपके बीच ईमानदारी का सार क्षतिग्रस्त हो सकता है।

आपका चौथा नियम

यह अपने भाइयों के गुणों और खूबियों को अपने अंदर कल्पित करना और उनके गौरव पर गर्व करना है। सूफियों के बीच कुछ शब्द हैं, जिन्हें वे आपस में इस्तेमाल करते हैं, 'शेख में विनाश', 'पैगंबर में विनाश'; मैं सूफी नहीं हूं, लेकिन उनके ये सिद्धांत हमारे रास्ते में 'भाइयों में विनाश' के रूप में एक अच्छा नियम बनाते हैं। भाइयों के बीच इसे 'तेफानी' कहते हैं, यानी 'एक दूसरे में विनाश'। यानी अपनी शारीरिक आत्मा की भावनाओं को भूल जाना और अपने भाइयों के गुणों और भावनाओं के साथ अपने मन में रहना। किसी भी स्थिति में, हमारे रास्ते का आधार भाईचारा है; यह पिता और पुत्र या शेख और अनुयायी के बीच का रिश्ता नहीं है; यह सच्चे भाईचारे का रिश्ता है। बहुत ज्यादा से ज्यादा एक मास्टर [उस्ताद] हस्तक्षेप करता है। हमारा रास्ता सबसे गहरी दोस्ती है। इस दोस्ती के लिए सबसे करीबी दोस्त, सबसे त्याग करने वाला साथी, सबसे आभारी साथी, सबसे महान भाई होना ज़रूरी है। ऐसी दोस्ती का सार सच्ची ईमानदारी है। जो व्यक्ति इस सच्ची ईमानदारी को बिगाड़ता है, वह इस दोस्ती के उच्च शिखर से गिर जाता है, संभवतः एक गहरे अवसाद की तह तक। ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे वह बीच में चिपक सके।

हाँ, रास्ता दो ही दिखाई देता है। ऐसी संभावना है कि जो लोग अब हमारे इस रास्ते, कुरान के महान राजमार्ग से अलग हो रहे हैं, वे अनजाने में अधर्म की ताकतों की मदद कर रहे हैं, जो हमारे दुश्मन हैं। ईश्वर की इच्छा से, जो लोग रिसाले-ए-नूर के माध्यम से चमत्कारिक व्याख्या के कुरान की पवित्र सीमा में प्रवेश करते हैं, वे हमेशा प्रकाश, ईमानदारी और विश्वास को शक्ति प्रदान करेंगे और ऐसे नुकसानों से बचेंगे।

ऐ कुरआन की सेवा में मेरे साथियों! ईमानदारी प्राप्त करने और उसे बनाए रखने का सबसे प्रभावी साधन है "मृत्यु का चिंतन।" जी हाँ, जिस तरह सांसारिक महत्वाकांक्षा ईमानदारी को नुकसान पहुँचाती है और व्यक्ति को पाखंड और दुनिया की ओर ले जाती है, उसी तरह मृत्यु का चिंतन पाखंड से घृणा पैदा करता है और ईमानदारी प्राप्त करता है। यानी मृत्यु के बारे में सोचना और यह समझना कि यह दुनिया क्षणभंगुर है, और इस तरह आत्मा की चालों से बचना। जी हाँ, सूफियों और सत्य के लोगों को सर्वज्ञ कुरआन की ऐसी आयतों से शिक्षा मिली, जैसे,

प्रत्येक प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है। (3:185) * निश्चय ही तुम भी मरोगे और निश्चय ही वे भी मरेंगे। (39:30)

मृत्यु के चिंतन को अपनी आध्यात्मिक यात्रा का मूल आधार बनाने के लिए प्रेरित किया; इसने अनंत काल के भ्रम को दूर किया, जो सांसारिक महत्वाकांक्षा का स्रोत है। उन्होंने खुद को मरा हुआ और कब्र में रखे जाने की कल्पना की। लंबे समय तक विचार करने से दुष्ट आत्मा ऐसी कल्पना से दुखी और प्रभावित हो जाती है और अपनी दूरगामी महत्वाकांक्षाओं और आशाओं को एक हद तक त्याग देती है। इस चिंतन में कई फायदे हैं। हदीस से यह सिखाया जाता है जो कुछ इस तरह कहता है, "अक्सर मौत का जिक्र करो जो खुशी को खत्म कर देती है और इसे कड़वा बना देती है।"4

हालाँकि, चूँकि हमारा तरीका सूफियों का नहीं बल्कि वास्तविकता का है, इसलिए हम इस चिंतन को उनकी तरह काल्पनिक और काल्पनिक रूप में करने के लिए बाध्य नहीं हैं। ऐसा करना वैसे भी वास्तविकता के तरीके के अनुरूप नहीं है। हमारा तरीका अंत के बारे में सोचकर भविष्य को वर्तमान में लाना नहीं है, बल्कि मन में वास्तविकता के संबंध में वर्तमान से भविष्य की यात्रा करना और उस पर नज़र डालना है। हाँ, कल्पना करने की ज़रूरत को छोड़कर, कोई अपनी लाश को देख सकता है, इस संक्षिप्त जीवन के पेड़ पर एकमात्र फल। कोई अपनी मृत्यु को देख सकता है, और अगर कोई थोड़ा आगे जाता है, तो इस सदी की मृत्यु को देखता है, और इससे भी आगे जाकर, इस दुनिया की मृत्यु को देखता है, जो पूर्ण ईमानदारी का रास्ता खोलती है।

दूसरा तरीका: निश्चित, सकारात्मक विश्वास की शक्ति के माध्यम से और प्राणियों पर चिंतन से उत्पन्न प्रकाश के माध्यम से ईश्वरीय उपस्थिति की भावना प्राप्त करके, जो निर्माता के ज्ञान की ओर ले जाता है; यह सोचकर कि दयालु निर्माता हर जगह मौजूद है और देख रहा है; और उसके अलावा किसी और का ध्यान आकर्षित न करके, और यह महसूस करके कि उसकी उपस्थिति में दूसरों की ओर देखना या उनसे मदद मांगना उसकी उपस्थिति में सही आचरण के विपरीत है, व्यक्ति इस तरह के पाखंड से बच सकता है और ईमानदारी प्राप्त कर सकता है। हालांकि, इसमें कई डिग्री और चरण शामिल हैं। व्यक्ति जिस भी डिग्री तक पहुंचता है, वह उसी सीमा तक लाभान्वित होता है। रिसाले-ए-नूर में कई सच्चाईयां हैं जो एक व्यक्ति को पाखंड से बचाएगी और उसे ईमानदारी प्रदान करेगी, इसलिए उन्हें संदर्भित करते हुए, हम यहां चर्चा को समाप्त करते हैं।

ऐसी बहुत सी बातें हैं जो ईमानदारी को नष्ट कर देती हैं और व्यक्ति को पाखंड की ओर ले जाती हैं, हम संक्षेप में दो या तीन के बारे में बताएंगे।

पहला: भौतिक लाभों के प्रति होड़ धीरे-धीरे ईमानदारी को नष्ट कर देती है। यह हमारी सेवा के परिणामों के लिए भी हानिकारक है। इसी तरह यह भौतिक लाभों को भी खो देता है। इस राष्ट्र ने हमेशा उन लोगों के लिए सम्मान का पोषण किया है जो वास्तविकता और परलोक के लिए काम करते हैं, और उनकी सहायता की है। उनकी वास्तविक ईमानदारी और कार्यों में सक्रिय रूप से हिस्सा लेने के इरादे से

[4] तिर्मिधि, ज़ुहद, 4; पुनरुत्थान, 26; नसाई, जनाईज़, 3; इब्न माजाह, ज़ुहद, 31; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, iv, 321।

वे समर्पित भाव से कार्य करते हैं, इसने हमेशा उन्हें भौतिक लाभ जैसे कि भिक्षा और उपहार देकर सम्मान दिखाया है ताकि उन्हें अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने और अपना समय बर्बाद करने से बचाया जा सके। लेकिन ऐसी सहायता और लाभ की मांग नहीं की जा सकती; यह दिया जाता है। इसे आंतरिक रूप से इच्छा करके या इसका इंतजार करके स्वभाव की जीभ के माध्यम से भी नहीं मांगा जा सकता है। इसे अप्रत्याशित रूप से दिया जाना चाहिए, अन्यथा ईमानदारी को नुकसान होगा। यह अन्यथा एक व्यक्ति को श्लोक द्वारा बताए गए निषेध के करीब ले जाएगा,

> और न ही मेरी निशानियों को थोड़े दाम पर बेचो,(2:41, आदि)

और आंशिक रूप से कार्रवाई को नष्ट कर देता है।

दुष्ट आत्मा स्वार्थवश उस विशेष सेवा में सच्चे भाई और साथी के प्रति प्रतिद्वंद्विता की भावना को उत्तेजित करती है, पहले तो वह भौतिक लाभ की इच्छा और अपेक्षा करती है, फिर उसे किसी और को नहीं जाने देती। ईमानदारी नष्ट हो जाती है, सेवा की पवित्रता नष्ट हो जाती है, और व्यक्ति वास्तविकता के लोगों की नज़र में अप्रिय हो जाता है। वह भौतिक लाभ भी खो देता है। इस विषय पर बहुत चर्चा की आवश्यकता है, लेकिन मैं इसे संक्षिप्त करूँगा और केवल दो उदाहरणों का उल्लेख करूँगा जो मेरे सच्चे भाइयों के बीच ईमानदारी और सच्ची एकता को मजबूत करेंगे।

पहला उदाहरण: 'सांसारिक' और यहाँ तक कि कुछ राजनीतिज्ञ और गुप्त समाज और समाज के जोड़-तोड़ करने वाले लोगों ने भी संपत्ति और शक्ति प्राप्त करने के लिए साझा संपत्ति को अपना मार्गदर्शक सिद्धांत बना लिया है। वे अपने सभी शोषण और नुकसानों के बावजूद असाधारण ताकत और लाभ प्राप्त करते हैं। हालाँकि, साझा संपत्ति की प्रकृति साझा करने से नहीं बदलती, इसके कई नुकसानों के बावजूद। हालाँकि प्रत्येक भागीदार एक तरह से बाकी का मालिक और पर्यवेक्षक है, लेकिन वह इससे लाभ उठाने में असमर्थ है।

फिर भी, अगर साझा संपत्ति के सिद्धांत को परलोक के कामों पर लागू किया जाए, तो इससे बहुत लाभ होता है और कोई नुकसान नहीं होता। क्योंकि इसका मतलब है कि सारी संपत्ति हर भागीदार के हाथ में चली जाती है। उदाहरण के लिए, चार या पाँच आदमी हैं।
साझा करने के विचार से, उनमें से एक पैराफिन लाता है, दूसरा बाती, तीसरा दीपक, तीसरा अलंकार, तथा पांचवां माचिस; वे दीपक को जोड़ते हैं और उसे जलाते हैं।
उनमें से प्रत्येक एक पूरे दीपक का मालिक बन जाता है। यदि उनमें से प्रत्येक भागीदार के पास दीवार पर एक पूरी लंबाई का दर्पण है, तो वह दीपक और कमरे के साथ उसमें प्रतिबिंबित होगा, बिना किसी कमी या विभाजन के।

ठीक वैसे ही जैसे ईमानदारी के रहस्य के माध्यम से परलोक की वस्तुओं में पारस्परिक भागीदारी, भाईचारे के रहस्य के माध्यम से सहयोग, और एकता के रहस्य के माध्यम से संयुक्त उद्यम: उन संयुक्त कार्यों से प्राप्त कुल और सारा प्रकाश, भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के अच्छे कर्मों की पुस्तक में दर्ज होता है। यह एक तथ्य है और इसकी गवाही दी गई है

वास्तविकता के लोग। यह ईश्वरीय दया और उदारता की चौड़ाई से भी अपेक्षित है।

हे मेरे भाइयो! यदि परमेश्वर चाहेगा तो भौतिक लाभ के कारण तुम्हारे बीच में कोई प्रतिद्वन्द्विता उत्पन्न नहीं होगी। हो सकता है कि आप भी सूफी मार्ग पर चलने वाले कुछ लोगों की तरह परलोक के लाभों के बारे में धोखा खा जाएं। लेकिन किसी व्यक्तिगत, छोटे-मोटे पुण्य की तुलना उपरोक्त उदाहरण में बताए गए साझा कर्मों के संबंध में प्रकट पुण्य और प्रकाश से कैसे की जा सकती है?

दूसरा उदाहरण: शिल्पकार अपने शिल्प के उत्पादों से अधिक लाभ कमाने के लिए सहयोग करके महत्वपूर्ण धन अर्जित कर रहे हैं। पहले सिलाई सुइयों के दस निर्माता अपने-अपने काम करते थे, और उनके व्यक्तिगत श्रम का फल प्रतिदिन तीन सुइयाँ थीं। फिर संयुक्त उद्यम के नियम का पालन करते हुए दस आदमी एकजुट हो गए।

एक लोहा लाया, एक ने भट्ठी जलाई, एक ने सुइयों को छेदा, एक ने उन्हें भट्ठी में रखा, और एक ने उनकी नोकें तेज कीं, और इसी तरह; प्रत्येक ने सुई बनाने की प्रक्रिया के केवल एक हिस्से पर ही ध्यान दिया। चूँकि जिस काम में एक आदमी को लगाया गया था वह सरल था, इसलिए उसने समय बर्बाद नहीं किया; उसने कौशल हासिल किया और काफी तेजी से काम किया। निर्माताओं ने संयुक्त उद्यम और श्रम के विभाजन के नियम के अनुसार किए गए काम को विभाजित किया: उन्होंने देखा कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक दिन में तीन सुइयों के बजाय, यह तीन सौ के बराबर था। इस घटना को 'सांसारिक' कारीगरों के बीच व्यापक रूप से प्रकाशित किया गया ताकि उन्हें अपने श्रम को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

मेरे भाईयों! चूँकि सांसारिक मामलों और सघन पदार्थों में एकता और सामंजस्य ऐसे परिणाम और लाभ देते हैं, इसलिए आप तुलना कर सकते हैं कि प्रत्येक के लिए अपने स्वयं के दर्पण में ईश्वरीय कृपा के माध्यम से सभी के प्रकाश को प्रतिबिंबित करना कितना लाभदायक है, जो कि प्रकाशमान है और परलोक से संबंधित है और जिसे विभाजित और खंडित करने की आवश्यकता नहीं है, और उन सभी का बराबर पुरस्कार प्राप्त करना है। इस विशाल लाभ को प्रतिद्वंद्विता और कपट के कारण नहीं खोना चाहिए।

ईमानदारी को नष्ट करने वाली दूसरी बाधा: यह अहंकार की चापलूसी करना और खुद पर ध्यान आकर्षित करके और लोगों की प्रशंसा करके बुराई करने वाली आत्मा को उच्च दर्जा देना है, जो प्रसिद्धि, यश और पद की इच्छा से प्रेरित है। यह एक गंभीर आध्यात्मिक बीमारी है जो पाखंड और आत्म-केंद्रितता का द्वार भी खोलती है जिसे ईश्वर के साथ भागीदारों की छिपी हुई संगति कहा जाता है, और ईमानदारी को नुकसान पहुंचाती है।

मेरे भाईयों! कुरान की सेवा में हमारा मार्ग वास्तविकता और भाईचारा है, और भाईचारे का सच्चा अर्थ अपने भाइयों के बीच अपने व्यक्तित्व को नष्ट कर देना और उनकी आत्मा को अपनी आत्मा से अधिक महत्व देना है।

---

[5] हाँ, वह व्यक्ति खुश है जो कुरान के झरने से छने हुए ताजे पानी के एक बड़े कुंड तक पहुंच प्राप्त करने के लिए अपने व्यक्तित्व और अहंकार को - जो बर्फ के टुकड़ों की तरह हैं - कुंड में डाल देता है और उन्हें पिघला देता है।

इसलिए पद और पद की लालसा से उत्पन्न होने वाली इस तरह की भावना को भड़काना नहीं चाहिए। यह हमारे तरीके के बिलकुल विपरीत है। भाइयों का सम्मान सभी व्यक्तियों का सामान्य रूप से हो सकता है; इसलिए मुझे उम्मीद है कि व्यक्तिगत, स्वार्थी, प्रतिस्पर्धी, मामूली प्रसिद्धि और यश के लिए उस महान सामूहिक सम्मान का त्याग करना रिसाले-ए-नूर के छात्रों द्वारा किया जाने वाला काम नहीं है। हाँ, रिसाले-ए-नूर के छात्रों का दिल, दिमाग और आत्मा ऐसी नीच, हानिकारक, घटिया चीजों तक नहीं गिरेंगे। लेकिन हर किसी की आत्मा में एक बुराई करने वाली आत्मा होती है, और कभी-कभी आत्मा की भावनाएँ चरित्र की कुछ नसों को प्रभावित करती हैं, और दिल, दिमाग और आत्मा के बावजूद एक हद तक प्रबल होती हैं; मैं आपके दिल, दिमाग और आत्मा पर आरोप नहीं लगा रहा हूँ। रिसाले-ए-नूर के प्रभाव के कारण मुझे आप पर भरोसा है। लेकिन आत्मा, इच्छाएँ, भावनाएँ और कल्पना कभी-कभी धोखा देती हैं। इस कारण से आपको कभी-कभी कड़ी चेतावनियाँ मिलती हैं। कठोरता आत्मा, भावनाओं, इच्छाओं और कल्पना को देखती है; सावधानी से काम करो।

हां, यदि हमारा मार्ग किसी शेख के अधीन रहना होता, तो एक ही पद होता, या सीमित पद होते, और उन्हें अनेक पद दिए जाते।
ईर्ष्या और स्वार्थ हो सकता था। लेकिन हमारा रास्ता भाईचारे का है। भाइयों के बीच पिता का कोई स्थान नहीं होता, न ही वे आध्यात्मिक मार्गदर्शक का पद ग्रहण कर सकते हैं। भाईचारे में पद बड़े होते हैं और ईर्ष्यापूर्ण धक्का-मुक्की का कारण नहीं बन सकते। अधिक से अधिक भाई भाई की सहायता और समर्थन करता है; वह अपनी सेवा पूरी करता है।

आध्यात्मिक मार्गदर्शकों के मार्ग के प्रति ईर्ष्या, आध्यात्मिक पुरस्कार के प्रति लोभ तथा उच्च आकांक्षाओं के कारण बहुत अधिक हानि तथा बहुत सी गलतियां हुई हैं, इसका प्रमाण यह है कि उनके अनुयायियों के बीच संघर्ष तथा प्रतिद्वंद्विता है, जबकि उनके पास अपार उपलब्धियां, सिद्धियां तथा लाभ हैं, जिसका विनाशकारी परिणाम यह हुआ है कि उनकी विशाल तथा पवित्र शक्ति नवीनता के तूफानों का सामना करने में असमर्थ रही है।

तीसरी बाधा: यह भय और लालच है। इस बाधा को अन्य बाधाओं के साथ-साथ छह आक्रमणों में विस्तार से समझाया गया है। इसलिए हम आपको उसी की ओर संकेत करते हैं, और दयालुतम दयालु के सभी सबसे सुंदर नामों को अपना मध्यस्थ बनाते हुए, हम प्रार्थना करते हैं कि वह हमें पूर्ण ईमानदारी प्राप्त करने में सफलता प्रदान करें।

हे ईश्वर! सूरा अल-इखलास के लिए हमें अपने उन बन्दों में शामिल कर जो ईमानदारी प्राप्त करते हैं। आमीन। आमीन।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

---

[6] देखें, बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी, पत्र 1928-1932 (इस्तांबुल: सोज़लर नेशरियात, नया संस्करण 2009) उनतीसवें पत्र का छठा खंड, पृ. 474-90. (ट्र.)

मेरे कुछ भाइयों को एक गोपनीय पत्र

मैं अपने उन भाइयों के लिए दो हदीसों के बारे में एक बात कहना चाहूँगा जो लिखने से ऊब जाते हैं, और तीन महीनों, जो इबादत के महीने हैं, के दौरान रिसाले-ए-नूर लिखने के बजाय अन्य पाठ करना पसंद करते हैं, हालाँकि ऐसा करना पाँच तरह से इबादत है।[1] ये दो हदीसें हैं:

पहला: "अंतिम निर्णय के समय, धर्म के विद्वानों द्वारा खर्च की गई स्याही का वजन शहीदों के खून के बराबर होगा।"[2]

दूसरा: "जो कोई भी मेरे सुन्नत का पालन करता है, जब मेरा समुदाय भ्रष्ट हो जाता है, तो उसे सौ शहीदों का पुरस्कार मिलेगा।"[3] अर्थात्, जो लोग पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के कार्यों और कुरान की सच्चाईयों का पालन करते हैं और उनकी सेवा करते हैं, जब नवाचार और गुमराही व्याप्त होती है, तो उन्हें सौ शहीदों का पुरस्कार मिलता है।

ऐ मेरे भाई जो आलस्य के कारण लिखने से थक गए हैं! और ऐ मेरे भाई जो सूफीवाद की ओर झुके हुए हैं! ये दो हदीसें दर्शाती हैं कि आपके पवित्र, पवित्र कलमों से निकलने वाली काली रोशनी जो इस समय में विश्वास की सच्चाई और शरिया के रहस्यों और पैगंबर (UWBP) के व्यवहारों की सेवा करती है - यहां तक कि उनके जीवन-जल जैसी स्याही की एक बूंद भी - क़यामत के दिन आपके लिए शहीदों के खून की सौ बूंदों के बराबर सवाब जीत सकती है। इसलिए इसे जीतने की कोशिश करो!

यदि आप कहें: हदीस में विद्वानों का उल्लेख है और हममें से कुछ लोग केवल लेखक हैं।

जवाब: जो कोई भी इन किताबों को एक साल तक पढ़ता है और उन्हें समझता है और स्वीकार करता है, वह इस समय एक मूल्यवान, सटीक विद्वान बन सकता है। भले ही वह उन्हें न समझे, क्योंकि रिसाले-ए-नूर के छात्रों का एक सामूहिक व्यक्तित्व है, इसमें कोई शक नहीं कि वह विद्वान है। जहाँ तक आपकी कलमों का सवाल है, वे उस सामूहिक व्यक्तित्व की अमूर्त उंगलियाँ हैं। मेरे बारे में आपकी अच्छी राय के कारण, आपने मुझे उस्ताद और धार्मिक विद्वान का पद दिया है, और मेरे साथ जुड़ गए हैं, हालाँकि मेरे विचार में मैं अयोग्य हूँ। मैं अनपढ़ हूँ और मुझे लिखने में दिक्कत होती है, इसलिए आपकी कलम को मेरा माना जा सकता है; आपको हदीस में बताए गए इनाम मिलेंगे।

एस सहायता एन भालू

---

[1] हमने उन पाँच प्रकार की उपासना के बारे में स्पष्टीकरण माँगा, जिनका संकेत हमारे गुरु ने इस बहुमूल्य पत्र में दिया है। हमें जो स्पष्टीकरण मिला, वह इस प्रकार है:

1. गुमराह लोगों के खिलाफ संघर्ष करना, सबसे महत्वपूर्ण संघर्ष।

ii. सत्य का प्रसार करने में सहायता करके अपने स्वामी की सेवा करना।

3. मुसलमानों की आस्था के अनुरूप उनकी सेवा करना।

4. कलम के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करना।

चिंतन के रूप में पूजा करना, जिसका एक घंटा कभी-कभी एक वर्ष की पूजा के बराबर हो सकता है।

हस्ताक्षरित: रुस्तु, हुसेरेव, रेफेट

[2] अल-ग़ज़ाली, इह्या 'उलूम अल-दीन, मैं, 6; अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, vi, 466; अल-अजलुनी, कशफ अल-खफा', द्वितीय, 561; अल-सुयुति, जामी अल-सगीर, संख्या: 10026।

[3] इब्न 'अदिय, अल-कामिल फ़ि'एल-दुआफ़ा', द्वितीय, 739; अल-मुंधिरी, अल-तरग़ीब वाल-तारिब, मैं, 41; तबरानी, अल-मजमा अल-कबीर, 1394; 'अली इब्न हुसामुद्दीन, मुंतखबत कन्ज़ अल-उम्मल, मैं, 100; अल-हयथामी, मजमा अल-ज़वायद, vii, 282।

बीसवीं फ्लैश

उसके नाम में उसकी महिमा हो!

यह अत्यंत गोपनीय लघु ग्रंथ, जिसे मैंने बाईस वर्ष पहले विशेष रूप से अपने सबसे करीबी और सबसे चुनिंदा और ईमानदार भाइयों के लिए लिखा था, जब मैं इस्पार्टा प्रांत के बारला गांव में था, मैं इस्पार्टा के न्यायप्रिय राज्यपाल, न्यायपालिका और पुलिस को समर्पित कर रहा हूं। यह इस्पार्टा के लोगों और अधिकारियों दोनों द्वारा दिखाई गई चिंता के कारण है। यदि उचित हो, तो पुराने या नए अक्षरों में टाइपराइटर द्वारा कई प्रतियां लिखी जानी चाहिए ताकि जो लोग पिछले पच्चीस वर्षों से मुझ पर निगरानी रख रहे हैं और मेरे रहस्यों की खोज कर रहे हैं, उन्हें पता चल जाए कि मेरे पास कोई भी छिपा हुआ रहस्य नहीं है।

उन्हें पता होना चाहिए कि मेरा सबसे गुप्त रहस्य यह ग्रंथ है!

एस सहायता एन भालू

तीन संकेत

[सत्रहवें फ्लैश के सत्रहवें नोट का तीसरा मैटर होने के बावजूद, प्रश्नों की कठोरता और व्यापकता तथा उत्तरों की मजबूती और चमक के कारण, इसे फ्लैश में इकतीसवें पत्र के बाईसवें फ्लैश के रूप में शामिल किया गया। फ्लैश को इसे जगह देनी पड़ी। यह मेरे सबसे चुनिंदा, ईमानदार और वफादार भाइयों के लिए गोपनीय और खास है।]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
और यदि कोई अल्लाह पर भरोसा रखे तो उसके लिए काफ़ी है। अल्लाह अपना उद्देश्य अवश्य पूरा करेगा। निस्संदेह अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक उचित अनुपात निर्धारित किया है। (65:3)

इस मामले में तीन संकेत हैं।

पहला संकेत

मेरे व्यक्तित्व और रिसाले-ए-नूर के बारे में एक महत्वपूर्ण सवाल: बहुत से लोग पूछते हैं, "हालाँकि आपने 'दुनियावी' की दुनिया में दखल नहीं दिया है, फिर भी वे हर मौके पर आपकी आख़िरत में दखल क्यों देते हैं? जबकि कोई भी सरकारी कानून संन्यासियों और दुनिया को त्याग चुके लोगों के मामले में दखल नहीं देता?"

उत्तर: इस प्रश्न का उत्तर नए सैद के पास मौन है। नए सैद कहते हैं: "ईश्वरीय निर्णय ही मेरे लिए उत्तर देगा।" फिर भी, चूँकि मैं बाध्य हूँ, इसलिए पुराने सैद का सिर, जिसे नए सैद ने विश्वास के आधार पर उधार लिया है, कहता है: इस प्रश्न का उत्तर देने वाले लोग इस्पार्टा प्रांत के अधिकारी और उसके लोग हैं। क्योंकि वे इस प्रश्न के अंतर्निहित अर्थ से मुझसे कहीं अधिक चिंतित हैं। चूँकि प्रशासन, जिसमें हज़ारों लोग शामिल हैं, और लोग, जिनकी संख्या लाखों में है, मेरे स्थान पर इस पर विचार करने और इसका बचाव करने के लिए बाध्य हैं, इसलिए मैं अनावश्यक रूप से अभियोजकों से बात क्यों करूँ, और अपना बचाव क्यों करूँ?

मैं इस प्रांत में नौ साल से हूं, और मैं धीरे-धीरे अपनी पीठ मोड़ रहा हूं
उनकी दुनिया में मेरी दिलचस्पी बढ़ती जा रही है। मेरे जीवन का कोई भी पहलू छिपा नहीं रह गया है। मेरे सबसे गुप्त और गोपनीय ग्रंथ भी सरकार और कुछ प्रतिनिधियों के हाथ लग गए हैं। अगर मैंने दुनियावी मामलों में दखल दिया होता, जिससे 'दुनियावी' चिंता और बेचैनी पैदा होती, या अगर मैंने दखल देने की कोई कोशिश की होती, या अगर मुझे ऐसा करने का कोई विचार होता, तो इस प्रांत और शहरों की स्थानीय सरकार को पता चल जाता। लेकिन हालांकि मैं नौ साल से उनकी निगरानी और जांच के दायरे में हूं, और मैंने भी अपने रहस्यों को उन लोगों को बताने में संकोच नहीं किया है जो मुझसे मिलने आए हैं, फिर भी अधिकारी चुप रहे हैं और मुझे परेशान नहीं किया है। अगर मैंने कोई ऐसा दोष दिखाया होता जो इस देश की खुशी और भविष्य और इसके लोगों के लिए हानिकारक हो सकता था, तो इन नौ वर्षों में राज्यपाल से लेकर गांव के पुलिस प्रमुख तक सभी जिम्मेदार होते। इसलिए खुद को ऐसी जिम्मेदारी से बचाने के लिए उन्हें उन लोगों के सामने मेरा बचाव करना होगा जो मेरे बारे में राई को पहाड़ बना देते हैं और पहाड़ों को राई बना देते हैं। ऐसी स्थिति में, मैं इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए उन्हें संदर्भित करता हूं।

इस प्रांत के लोग अधिकतर मेरा बचाव करने के लिए बाध्य हैं, इसका कारण यह है कि
मैं स्वयं यह करता हूँ कि सैकड़ों ग्रंथों के साथ, जिन्होंने भौतिक रूप से और वास्तव में अपनी प्रभावशीलता सिद्ध की है, मैंने इन नौ वर्षों में उनके शाश्वत जीवन और विश्वास की मजबूती तथा जीवन में खुशी के लिए काम किया है, क्योंकि वे दोनों भाई, मित्र और धन्य हैं; और ग्रंथों के कारण किसी को भी कोई परेशानी या हानि नहीं हुई है; और जरा सी भी नहीं

किसी भी राजनीतिक या सांसारिक चीज का संकेत नहीं मिला है; और, ईश्वर की स्तुति हो, रिसाले-ए-नूर के माध्यम से इस प्रांत ने विश्वास की ताकत और धर्म में दृढ़ता के संबंध में एक हद तक धन्यता प्राप्त की है जो पुराने समय में दमिश्क और मिस्र में अल-अजहर की धन्यता के समान है; और रिसाले-ए-नूर ने विश्वास की शक्ति को उदासीनता पर और पूजा की इच्छा को प्रांत में बुराई पर हावी कर दिया है, और इसे किसी भी अन्य प्रांत की तुलना में अधिक धार्मिक बना दिया है। चूंकि यह मामला है, यहां के सभी लोग, भले ही वे अधार्मिक हों, मेरा और रिसाले-ए-नूर का बचाव करने के लिए बाध्य हैं। जबकि उनके पास बचाव के ऐसे महत्वपूर्ण अधिकार हैं, मेरा महत्वहीन अधिकार मुझे अब अपना बचाव करने के लिए मजबूर नहीं करता है क्योंकि मैंने, सभी शक्तियों से रहित, अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है और, ईश्वर का धन्यवाद है, हजारों छात्रों ने मेरे स्थान पर काम किया है और कर रहे हैं

दूसरा संकेत

एक महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर.

'सांसारिक' पूछते हैं: "आप हमसे क्यों नाराज हैं? आपने हमसे एक बार भी आवेदन नहीं किया और चुप हैं। आप हमारे बारे में कटु शिकायत करते हैं, कहते हैं कि हम आपके प्रति अन्यायी हैं। लेकिन हमारे अपने सिद्धांत हैं, हमारे पास समय की मांग के अनुसार अपने विशेष नियम हैं, और आप स्वीकार नहीं करते कि वे आप पर लागू हों। जो व्यक्ति कानून लागू करता है वह अत्याचारी नहीं है, और जो व्यक्ति कानून को स्वीकार नहीं करता वह विद्रोही है। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता के इस युग और नए गणतंत्र युग में, जिसका हमने उद्घाटन किया है, दूसरों के उत्पीड़न और अधीनता को समाप्त करने का सिद्धांत - समानता के आधार पर - हमारा मूल कानून है। हालाँकि, आपके खुले व्यवहार और पूर्व काल में आपके साहसिक जीवन से यह पता चलता है कि होजा या तपस्वी होने के पद को ग्रहण करके, आप जनता की नज़र अपनी ओर आकर्षित करने और ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करते हैं, ताकि सरकार के प्रभाव से बाहर एक शक्ति और सामाजिक स्थिति प्राप्त कर सकें। यह वर्तमान शब्दावली के अनुसार - पूंजीपति वर्ग के निरंकुश अत्याचार के भीतर वांछनीय लग सकता है। लेकिन चूंकि शुद्ध समाजवाद और बोल्शेविज्म के सिद्धांत, जो आम लोगों की जागृति और उत्थान के साथ उभरे हैं, हमारे हितों के अधिक अनुरूप हैं, इसलिए हमने उन्हें स्वीकार कर लिया है, और आपकी स्थिति हमें असहमत करती है; यह हमारे सिद्धांतों के विपरीत है। इस कारण से आपको हमारे द्वारा आपको पहुँचाए गए कष्ट के बारे में शिकायत करने या नाराज़ होने का अधिकार नहीं है।"

उत्तर : यदि कोई मानव जीवन में एक नया रास्ता खोलता है

यदि समाज ब्रह्मांड में लागू प्राकृतिक नियमों के अनुरूप कार्य नहीं करता है, तो वह लाभकारी कार्यों और प्रगति में सफल नहीं हो सकता है। उसके सभी कार्य बुराई और विनाश के हितों की पूर्ति के लिए होते हैं। चूँकि

कर्म प्राकृतिक नियमों के अनुरूप होने चाहिए, पूर्ण समानता केवल मानव स्वभाव को बदलकर और मानव जाति के निर्माण में मौलिक ज्ञान को हटाकर ही लागू की जा सकती है। हाँ, जन्म से और जिस तरह से मैंने जीवन जिया है, मैं आम लोगों के वर्ग से हूँ, और मैं उन लोगों में से हूँ जिन्होंने स्वभाव और बौद्धिक रूप से अधिकारों की समानता के मार्ग को स्वीकार किया है। और इस्लाम से आने वाली करुणा और न्याय के कारण, मैं एक ऐसा व्यक्ति हूँ जिसने लंबे समय तक पूंजीपति वर्ग नामक कुलीन वर्ग की निरंकुशता और उत्पीड़न का विरोध किया है और उसके खिलाफ काम किया है। इसलिए मैं पूरी ताकत से पूर्ण न्याय का समर्थन करता हूँ, और अत्याचार, उत्पीड़न, मनमानी शक्ति और निरंकुशता का विरोध करता हूँ।

हालाँकि, मानव स्वभाव और मानवजाति में अंतर्निहित बुद्धि पूर्ण समानता के नियम के विपरीत है। अपनी संपूर्ण शक्ति और बुद्धि को प्रदर्शित करने के लिए, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता एक ही चीज़ से कई फसलें पैदा करता है, एक ही पृष्ठ पर कई पुस्तकें लिखवाता है, और एक ही चीज़ से कई कार्य करवाता है; और इसी तरह, वह मानवजाति द्वारा हजारों प्रजातियों के कर्तव्यों का पालन करवाता है। यह इस महान रहस्य के कारण है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मनुष्य को ऐसी प्रकृति के साथ बनाया जो हजारों प्रजातियों की शाखाओं को उत्पन्न करेगी और जीवित प्राणियों की हजारों अन्य प्रजातियों के स्तरों को प्रदर्शित करेगी। अन्य जानवरों की तरह उसकी शक्तियों, सूक्ष्म क्षमताओं और इंद्रियों पर कोई सीमा नहीं रखी गई थी; चूँकि उसने उसे स्वतंत्र छोड़ दिया और उसे एक क्षमता दी जिससे उसकी इंद्रियाँ अनंत डिग्री में घूम सकती थीं, हालाँकि केवल एक प्रजाति, मानवजाति हजारों प्रजातियों की तरह बन गई। इस कारण से, मनुष्य पृथ्वी का प्रतिरूप, ब्रह्मांड का परिणाम और चेतन प्राणियों का सम्राट बन गया।

मानव जाति में विविधता को जन्म देने वाला सबसे महत्वपूर्ण खमीर और तंत्र प्रतिस्पर्धा और विश्वास से उत्पन्न सच्चा गुण है। सद्गुण को केवल मानव स्वभाव को बदलने, तर्क को खत्म करने, हृदय को मारने और आत्मा को नष्ट करने के माध्यम से ही हटाया जा सकता है। हाँ, स्वतंत्रता के आवरण में अपने भयानक अत्याचार के साथ यह युग निम्नलिखित उत्कृष्ट पंक्तियों के साथ चेहरे पर प्रहार करने का हकदार है, जो एक सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति द्वारा लिखी गई हैं,1 को गलत तरीके से उसके चेहरे पर लहराया गया है, हालांकि वह किसी थप्पड़ का हकदार नहीं था:

अत्याचार और अन्याय के माध्यम से स्वतंत्रता को नष्ट करना संभव नहीं है;
यदि संभव हो तो मानव जाति से चेतना को हटाने का प्रयास करें।

इन पंक्तियों के स्थान पर, इस युग पर प्रहार करने के लिए मैं कहता हूँ:

अत्याचार और अन्याय के माध्यम से वास्तविकता को नष्ट करना संभव नहीं है;
यदि संभव हो तो मानव जाति के हृदय को नष्ट करने का प्रयास करें।

या,

---

[1] नामिक केमल (1840-1888) अपनी प्रसिद्ध कविता में ...

अत्याचार और अन्याय से सद्गुणों का नाश संभव नहीं है; यदि हो सके तो मानव जाति के विवेक का नाश करने का प्रयास करो।

हाँ, जिस तरह विश्वास से उत्पन्न होने वाला सद्गुण उत्पीड़न का कारण नहीं हो सकता, उसी तरह यह निरंकुशता का कारण भी नहीं हो सकता। उत्पीड़न और मनमानी निरंकुशता सद्गुण के अभाव को दर्शाती है। सद्गुणी लोग समाज के जीवन में मुख्य रूप से नपुंसकता, गरीबी और विनम्रता के माध्यम से हस्तक्षेप करते हैं। ईश्वर की स्तुति हो, मेरा जीवन इसी तरह से गुजरा है और इसी तरह से गुजर रहा है। मैं यह दावा गर्व से नहीं कर रहा हूँ कि मेरे पास कुछ सद्गुण हैं। मैं निम्नलिखित बातें धन्यवाद के रूप में और ईश्वरीय कृपा को प्रकट करने के लिए कहता हूँ:

अपनी कृपा और उदारता के माध्यम से, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मुझे विश्वास के विज्ञान और कुरान के लिए काम करने का गुण प्रदान किया। ईश्वर की सारी प्रशंसा हो, मैंने अपने पूरे जीवन में इस ईश्वरीय उपहार को इस मुस्लिम राष्ट्र के लाभ और खुशी के लिए खर्च किया है, और जिस तरह मैंने कभी भी इसका इस्तेमाल लोगों पर हावी होने और उन्हें दबाने के लिए नहीं किया है, उसी तरह एक महत्वपूर्ण कारण से मैं लोगों का ध्यान आकर्षित करने और लोगों द्वारा सम्मानित होने से घृणा करता हूं, जिसे उपेक्षित लोग चाहते हैं; मैं इससे दूर भागता हूं। मेरे पिछले जीवन के बीस साल इसके कारण बर्बाद हो गए, इसलिए मैं इसे अपने लिए हानिकारक मानता हूं। लेकिन चूंकि मैं जानता हूं कि जनता का ध्यान इस बात का संकेत है कि लोग रिसाले-ए-नूर को पसंद करते हैं, इसलिए मैं उन्हें टालता नहीं हूं।

हे तुम जिसकी दृष्टि इस संसार के जीवन तक ही सीमित है! मैंने किसी भी तरह से तुम्हारी दुनिया में दखल नहीं दिया, न ही मुझे तुम्हारे सिद्धांतों से कोई लेना-देना है, न ही जैसा कि मेरे इन नौ वर्षों के कैद से पता चलता है, मेरा फिर से संसार में दखल देने का कोई इरादा या इच्छा है। तो फिर तुमने किस कानून के अनुसार मुझ पर यह सब निगरानी और अत्याचार ढाया है, मानो मैं कोई पुराना अत्याचारी हूँ जो अवसर पाकर हमेशा अत्याचार और निरंकुशता के विचार का समर्थन करता रहता हूँ? दुनिया की कोई भी सरकार कानून से परे इस तरह के व्यवहार की अनुमति नहीं देती है, न ही इसकी कोई सिफारिश करती है। अब तक मेरे साथ जो दुर्व्यवहार हुआ है, उससे केवल मैं ही परेशान नहीं हूँ, अगर उन्हें यह पता चल जाए तो पूरी मानवजाति, यहाँ तक कि ब्रह्मांड भी घृणा करेगा!

तीसरा संकेत

एक भ्रामक, पागलपन भरा प्रश्न.

न्यायपालिका के कुछ सदस्य कहते हैं: "चूंकि आप इस देश में रहते हैं, इसलिए आपको इसके गणतंत्रीय कानूनों का पालन करना चाहिए। तो आप एकांतवासी होने की आड़ में उन कानूनों से क्यों बचते हैं? उदाहरण के लिए, सरकार के वर्तमान कानूनों के अनुसार, गणतंत्र के सिद्धांतों में से एक, जो समानता पर आधारित है, के विरुद्ध है, किसी के कर्तव्य के बाहर कुछ गुण, कुछ योग्यता ग्रहण करना और उसके माध्यम से राष्ट्र के कुछ हिस्से पर हावी होना और शक्ति और प्रभाव का प्रयोग करना। आपके हाथ क्यों चूमे जाते हैं, जबकि आप हाथ थामे हुए हैं?

कोई पद नहीं? आप खुद का विज्ञापन करके और लोगों से अपनी बात सुनने की इच्छा करके पद क्यों ग्रहण करते हैं?”

उत्तर: जो लोग कानून लागू करते हैं, वे पहले उसे खुद पर लागू करने के बाद दूसरों पर भी लागू कर सकते हैं। अगर आप दूसरों पर कोई सिद्धांत लागू करते हैं, जो आपने खुद पर लागू नहीं किया है, तो आप दूसरों के सामने अपने ही सिद्धांत और कानून का उल्लंघन और विरोध कर रहे हैं। आप पूर्ण समानता के इस कानून को मुझ पर लागू करना चाहते हैं। इसलिए मैं यह कहता हूँ:

जब भी एक आम सैनिक फील्ड मार्शल के सामाजिक पद तक पहुंचता है और राष्ट्र द्वारा फील्ड मार्शल के प्रति दिखाए जाने वाले सम्मान और प्रशंसा में हिस्सा लेता है और उसके समान ही प्रशंसा और आदर का पात्र होता है; या जब भी फील्ड मार्शल सैनिक के समान आम हो जाता है और सैनिक का निम्न पद ग्रहण कर लेता है और अपने कर्तव्य के बाहर उसका कोई मूल्य नहीं रह जाता है; और जब भी सेना को जीत की ओर ले जाने वाले सबसे प्रतिभाशाली सैन्य कमांडर को सबसे कमजोर आम सैनिक के बराबर सार्वजनिक प्रशंसा, सम्मान और स्नेह प्राप्त होता है; तब आपके इस समानता के नियम के अनुसार, आप मुझसे कह सकते हैं: "अपने आप को होजा मत कहो! सम्मान स्वीकार मत करो!

अपने सद्गुणों को त्यागो! नौकरों की सेवा करो और भिखारियों को अपना मित्र बनाओ!”

मैं कहता हूं: "सम्मान, सामाजिक स्थिति और सार्वजनिक ध्यान कार्यों के संबंध में हैं और उन लोगों के लिए विशेष हैं जो उन्हें करते हैं।

लेकिन आपका कोई कार्य नहीं है, इसलिए आप लोगों का सम्मान इस तरह स्वीकार नहीं कर सकते जैसे कि आपका कोई कार्य हो।”

उत्तर: यदि मनुष्य केवल शरीर से बना होता और वह हमेशा के लिए इस दुनिया में रहने वाला होता और यदि कब्र का द्वार बंद कर दिया जाता और मृत्यु को मार दिया जाता, तो उसके कर्तव्य और कार्य सेना और सरकारी अधिकारियों के कर्तव्यों तक ही सीमित होते और आप जो कहते हैं उसका कुछ अर्थ होता। लेकिन चूँकि मनुष्य केवल शरीर से बना नहीं है और उसके हृदय, जीभ, मन और मस्तिष्क को उसके शरीर को खिलाने के लिए नहीं निकाला जा सकता; उन्हें नष्ट नहीं किया जा सकता; उन्हें भी प्रशासित किया जाना चाहिए।

और चूँकि कब्र का दरवाज़ा बंद नहीं होता, और चूँकि कब्र से परे भविष्य की चिंता हर किसी के लिए सबसे ज़्यादा दबाव वाला सवाल है, तो राष्ट्र के सम्मान और आज्ञाकारिता पर आधारित कर्तव्य उसके सांसारिक जीवन को देखते हुए सामाजिक, राजनीतिक और सैन्य कर्तव्यों तक सीमित नहीं हैं। हाँ, जैसे विदेश यात्रा करने वालों को पासपोर्ट देना एक कर्तव्य है, वैसे ही अनंत काल की यात्रा करने वालों को पासपोर्ट देना और उन्हें उस अंधेरे रास्ते के लिए रोशनी देना भी एक कर्तव्य है, और इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण कोई और कर्तव्य नहीं है। यह एक ऐसा कर्तव्य है जिसे केवल मृत्यु को नकार कर और उन तीस हज़ार गवाहों की गवाही को झूठा साबित करके ही नकारा जा सकता है जो हर दिन अपनी लाशों की मुहरों के साथ इस दावे पर अपने हस्ताक्षर करते हैं कि “मृत्यु एक वास्तविकता है,” इसकी पुष्टि करते हैं।

चूँकि नैतिक और आध्यात्मिक कर्तव्य नैतिक और आध्यात्मिक पर आधारित हैं

ज़रूरतें पूरी करना और उन कर्तव्यों में सबसे महत्वपूर्ण है अनंत काल की यात्रा के लिए पासपोर्ट और मध्यवर्ती क्षेत्र के अंधेरे में दिल की जेब में रखी जाने वाली मशाल और विश्वास, अनंत सुख की कुंजी और विश्वास में शिक्षा और उसे मजबूत बनाना, निश्चित रूप से, जो विद्वान इन कर्तव्यों का पालन करते हैं, वे कृतघ्नता के साथ उन पर दिए गए ईश्वरीय उपहारों और विश्वास से उत्पन्न होने वाले गुणों को तुच्छ नहीं समझेंगे और पापियों और भ्रष्ट लोगों के स्तर पर नहीं उतरेंगे। वे खुद को निम्न स्तर के नवाचारों और बुराइयों से गंदा नहीं करेंगे। इस प्रकार, जो एकांत आपको पसंद नहीं है और जिसे आप असमानता मानते हैं, वह इसी वजह से है।

इस सत्य के अतिरिक्त मैं यह भी कहता हूँ, यह उन लोगों से नहीं जो तुम्हारे जैसे हैं और मुझे पीड़ा देते हैं तथा मुझे तंग करते हैं और जो अहंकार तथा समानता के कानून की अवमानना में फिरौन के समान अहंकारी हैं - क्योंकि अहंकारी लोग विनम्रता को अपमान समझते हैं, इसलिए किसी को भी उनके सामने विनम्र नहीं होना चाहिए - बल्कि मैं यह कहता हूँ जो निष्पक्ष, विनम्र और न्यायप्रिय हैं:

सारी प्रशंसा ईश्वर की है, मैं अपनी गलतियों और नपुंसकता को जानता हूँ। मैं अहंकार में आकर मुसलमानों से श्रेष्ठ कोई पद नहीं चाहता, जिसके लिए सम्मान की आवश्यकता हो। मैं हमेशा अपनी अनंत गलतियों और नितांत तुच्छता से परिचित रहता हूँ। ईश्वर से क्षमा माँगकर सांत्वना प्राप्त करते हुए, मैं लोगों से सम्मान नहीं, बल्कि उनकी प्रार्थनाएँ चाहता हूँ। मुझे लगता है कि मेरे सभी मित्र मेरे इस तरीके से परिचित हैं। हालाँकि, सर्वज्ञ कुरान की सेवा करते हुए और विश्वास की सच्चाइयों को सिखाते हुए, उन सच्चाइयों के कारण और कुरान के सम्मान में और गुमराह लोगों के सामने सिर न झुकाने के लिए, मैं अस्थायी रूप से उस गरिमापूर्ण रुख को अपनाता हूँ। मुझे नहीं लगता कि 'दुनियावी' कानून इन बातों का विरोध कर सकते हैं!

कुछ आश्चर्यजनक उपचार

यह सर्वविदित है कि शिक्षक हर जगह ज्ञान और शिक्षा के आधार पर निर्णय लेते हैं। अपने पेशे के प्रति प्रेम के कारण, जहाँ भी और जिस किसी से भी उन्हें ज्ञान और शिक्षा मिलती है, वे उस व्यक्ति के प्रति मित्रता और सम्मान का भाव रखते हैं। यदि किसी दुश्मन देश का प्रोफेसर भी हमारे देश में आता है, तो शिक्षक उसके ज्ञान और शिक्षा के प्रति सम्मान के कारण उससे मिलने जाते हैं और उसका सम्मान करते हैं।

लेकिन जब अंग्रेजों की सर्वोच्च विद्वान परिषद ने शेख अल-इस्लाम के कार्यालय से पूछे गए छह सवालों के छह सौ शब्दों में जवाब मांगा, तो एक विद्वान और शिक्षक जिसने यहां के शिक्षा अधिकारियों का अनादर किया था, उसने उन छह सवालों के छह शब्दों में जवाब दिए, जिन्हें स्वीकृति मिली और उसने सच्चे ज्ञान और शिक्षा के साथ यूरोपियन और उनके दार्शनिकों के सबसे बुनियादी सिद्धांतों का जवाब दिया और उन्हें हरा दिया। कुरान से प्राप्त शक्ति के माध्यम से, उसने यूरोपियनों और उनके दार्शनिकों के सबसे बुनियादी सिद्धांतों का जवाब दिया और उन्हें हरा दिया।

उन यूरोपीय दार्शनिकों के साथ। और दूसरे संविधान की घोषणा से छह महीने पहले इस्तांबुल में, उन्होंने धार्मिक विद्वानों और आधुनिक विज्ञान के विद्वानों दोनों को बहस करने के लिए आमंत्रित किया, और खुद कोई सवाल नहीं पूछा, बिना किसी अपवाद के उनसे पूछे गए सभी सवालों का पूरी तरह से सही जवाब दिया।2 जिन लोगों ने इस विद्वान और शिक्षक को सबसे ज्यादा परेशान किया है - जिन्होंने अपना पूरा जीवन इस देश की खुशी के लिए समर्पित कर दिया है, और लोगों की अपनी भाषा तुर्की में सैकड़ों ग्रंथ प्रकाशित करके उन्हें प्रबुद्ध किया है, और जो एक साथी नागरिक और सह-धर्मवादी और दोस्त और भाई हैं - जो लोग उनके प्रति शत्रुता का पोषण करते हैं, और वास्तव में उनके प्रति असम्मानजनक हैं, वे शैक्षिक प्रतिष्ठान के कुछ सदस्य और साथ ही कुछ आधिकारिक होजा हैं।

इस पर आपका क्या कहना है? क्या यह सभ्यता है? क्या यह शिक्षा को प्रोत्साहित कर रहा है?
क्या यह देशभक्ति है? क्या यह राष्ट्र प्रेम है? क्या यह गणतंत्रवाद है? भगवान न करे! यह कुछ भी नहीं है! बल्कि यह है कि ईश्वरीय निर्णय ने उस जगह शत्रुता दिखाई जहाँ इस विद्वान और शिक्षक ने मित्रता की आशा की थी ताकि सम्मान के कारण पाखंड उसके ज्ञान में शामिल न हो जाए, और वह ईमानदारी प्राप्त कर सके।

निष्कर्ष

एक हमला जो मेरे विचार में आश्चर्यजनक था, लेकिन धन्यवाद का कारण था

'सांसारिक' लोग, जो असाधारण रूप से अहंकारी होते हैं, अपने अहंकार में इतने संवेदनशील होते हैं कि यदि यह सचेत होता, तो यह चमत्कार या महान प्रतिभा की डिग्री तक पहुँच जाता। प्रश्न यह था: अपने अहंकार के संवेदनशील संतुलन के साथ, वे मुझमें थोड़ा सा पाखंडी अहंकार देखते हैं, जिसे मैंने अपनी आत्मा और मन से नहीं देखा था, और हिंसक तरीके से इसका सामना करते हैं। इन आठ या नौ

वर्षों में मैंने निम्नलिखित आठ या नौ बार अनुभव किया है: जब उन्होंने मेरे साथ गलत और अन्यायपूर्ण व्यवहार किया है, तो मैंने ईश्वरीय नियति पर विचार किया है और अपनी आत्मा की चालों की खोज की है, यह पूछते हुए कि वे मुझे क्यों परेशान कर रहे हैं। हर बार मैंने समझा है कि मेरी आत्मा अनजाने में और स्वाभाविक रूप से अहंकार की ओर प्रवृत्त हुई है, या फिर जानबूझकर मुझे धोखा दिया है। तो फिर मैंने कहा है कि ईश्वरीय नियति ने उन अत्याचारियों के अन्याय के भीतर मेरे साथ न्याय किया है।

---

[2] नये सईद कहते हैं: मैं यहां पुराने सईद द्वारा गर्व से कहे गए शब्दों से सहमत नहीं हूं, लेकिन मैं
मैं उसे चुप नहीं करा सकता क्योंकि मैंने उसे इस ग्रंथ में बोलने का अधिकार दिया है। सोच रहा हूँ, चलो उसे थोड़ा अहंकार दिखाओ
अहंकारियों के सामने मैं चुप हूँ।

उदाहरण के लिए, इस गर्मी में मेरे दोस्तों ने मुझे एक बढ़िया घोड़े पर बिठाया और मैं देहात की सैर पर निकल पड़ा। मेरे अंदर सुख-सुविधा की एक स्वार्थी इच्छा जागृत हुई, और 'दुनियावी' लोगों ने मेरी उस छिपी हुई इच्छा का इतना हिंसक विरोध किया कि उन्होंने मेरी उस इच्छा को और कई अन्य चीजों के लिए मेरी भूख को नष्ट कर दिया। उदाहरण के लिए, रमजान के बाद और अतीत के महान, पवित्र इमामों में से एक द्वारा हमारे लिए किए गए चमत्कारों के बारे में जानने के बाद, जो अदृश्य में प्रवेश करते थे, और अपने भाइयों की धर्मपरायणता और ईमानदारी और आगंतुकों के सम्मान और अच्छी राय का सामना करने के बाद, अनजाने में मेरी आत्मा कृतज्ञता के आवरण में एक पाखंडी स्थिति को गर्व से ग्रहण करना चाहती थी। अचानक उनकी असीम संवेदनशीलता के साथ और एक ऐसे तरीके से जिसमें पाखंड के कण भी महसूस किए जा सकते थे, 'दुनियावी लोगों' ने मुझ पर हमला किया। मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर का शुक्रिया अदा करता हूं कि उनका अत्याचार मेरे लिए ईमानदारी हासिल करने का एक साधन था।

कह दो, "ऐ मेरे पालनहार! मैं शैतानों की चालों से तेरी शरण चाहता हूँ। मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि कहीं वे मेरे निकट न आएँ।" (23:97)

हे ईश्वर! हे रक्षक! हे संरक्षक! हे सर्वश्रेष्ठ रक्षक! मुझे और मेरे साथियों को आत्मा और शैतान की बुराई से, और गुमराह और विद्रोही लोगों की बुराई से बचाइए। आमीन। आमीन। आमीन।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

तेईसवाँ फ़्लैश

प्रकृति पर

[पहले सत्रहवें फ्लैश के सोलहवें नोट के रूप में लिखा गया, रिसाले-ए-नूर के इस हिस्से को बाद में इसके महत्व के कारण तेईसवाँ फ्लैश नामित किया गया। क्योंकि यह प्रकृतिवादी नास्तिकता को बिना किसी पुनर्जीवन के साथ समाप्त कर देता है, और अविश्वास की नींव को पूरी तरह से तोड़ देता है।]

एक अनुस्मारक

यह ग्रंथ नौ 'असंभवताओं' के माध्यम से, जिनमें कम से कम नब्बे असंभवताएँ शामिल हैं, यह बताता है कि नास्तिक प्रकृतिवादियों द्वारा अपनाया गया मार्ग कितना अनुचित, भद्दा और अंधविश्वासी है। यहाँ चर्चा को संक्षिप्त करने के लिए और क्योंकि इन असंभवताओं को रिसाले-ए-नूर के अन्य खंडों में आंशिक रूप से समझाया गया है, तर्कों में कुछ चरणों को छोड़ दिया गया है। इसलिए, यह विचार आता है कि ऐसा कैसे हुआ कि उन प्रसिद्ध और कथित रूप से प्रतिभाशाली दार्शनिकों ने इस तरह के स्पष्ट अंधविश्वास को स्वीकार कर लिया और उसी मार्ग पर चलते रहे। खैर, सच तो यह है कि वे इसकी वास्तविकता को नहीं देख सकते। और मैं विस्तार से समझाने और स्पष्ट और निर्णायक तर्कों के माध्यम से उन सभी को साबित करने के लिए तैयार हूँ, जिन्हें इस पर संदेह है कि ये भद्दे, घृणित और अनुचित असंभवताएँ उनके मार्ग का आवश्यक और अपरिहार्य परिणाम हैं; वास्तव में, उनके पंथ का सार है।

[1] इस ग्रंथ को लिखने का कारण कुरान पर उन लोगों द्वारा किए जा रहे हमले थे, जो हर उस चीज को अंधविश्वास कहते थे, जिस तक उनका भ्रष्ट दिमाग नहीं पहुंच पाता था, जो प्रकृति का इस्तेमाल अविश्वास को सही ठहराने के लिए कर रहे थे, और विश्वास की सच्चाइयों को सबसे आक्रामक और बदसूरत तरीके से बदनाम कर रहे थे। उनके हमलों ने मेरे दिल में एक तीव्र क्रोध को जगाया, जिसके परिणामस्वरूप उन विकृत नास्तिकों और सत्य के मिथ्याचारियों को जोरदार और कठोर थप्पड़ मिले। अन्यथा, रिसाले -ए-नूर द्वारा आम तौर पर अपनाया जाने वाला तरीका एक सौम्य, विनम्र और प्रेरक तरीका है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
उनके नबियों ने कहा: "क्या आकाशों और पृथ्वी के निर्माता ईश्वर में कोई संदेह है?" (14:10)

एक अलंकारिक प्रश्न के माध्यम से यह घोषित करते हुए कि सर्वशक्तिमान ईश्वर के बारे में कोई संदेह नहीं हो सकता है और न ही होना चाहिए, यह श्लोक स्पष्ट रूप से ईश्वरीय अस्तित्व और एकता को प्रदर्शित करता है।

हमारी चर्चा से पहले एक बात का उल्लेख करना आवश्यक है:

जब मैं 1922 में अंकारा गया, तो इस्लाम की सेना की यूनानियों पर जीत के परिणामस्वरूप आस्था रखने वाले लोगों का मनोबल बहुत ऊंचा था। लेकिन मैंने देखा कि नास्तिकता की एक घिनौनी धारा विश्वासघाती रूप से उनके दिमागों को तोड़ने, जहर देने और नष्ट करने की कोशिश कर रही थी। "हे भगवान!" मैंने कहा, "यह राक्षस विश्वास के मूल सिद्धांतों को नुकसान पहुँचाने जा रहा है।" उस समय, चूंकि उपर्युक्त आयत ईश्वर के अस्तित्व और एकता को स्पष्ट रूप से स्पष्ट करती है, इसलिए मैंने इससे सहायता मांगी और अरबी में एक ग्रंथ लिखा जिसमें सर्वज्ञ कुरान से लिए गए प्रमाण शामिल थे जो उस नास्तिक धारा को तितर-बितर करने और नष्ट करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली थे। मैंने इसे अंकारा में येनी गुन प्रेस में छपवाया। लेकिन, अफसोस, अरबी जानने वाले कम थे और जो इसे गंभीरता से मानते थे वे दुर्लभ थे। इसके अलावा, इसका तर्क बहुत संक्षिप्त और संक्षिप्त रूप में था। परिणामस्वरूप, इस ग्रंथ का वह प्रभाव नहीं हुआ जो होना चाहिए था और दुख की बात है कि नास्तिकता की धारा बढ़ती गई और उसे बल मिला। अब, मैं प्रमाण का एक हिस्सा तुर्की में समझाने के लिए बाध्य महसूस करता हूँ।

चूँकि इसके कुछ भागों की व्याख्या रिसाले-ए-नूर के अन्य खंडों में पूरी तरह से की जा चुकी है, इसलिए इसे यहाँ सारांश रूप में लिखा जाएगा। वे अनेक प्रमाण आंशिक रूप से इस प्रमाण में सम्मिलित हैं; इसलिए प्रत्येक को इस प्रमाण के एक तत्व के रूप में देखा जा सकता है।

परिचय

ऐ इंसान! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो आम तौर पर इस्तेमाल किए जाते हैं और अविश्वास को दर्शाते हैं। ईमानवाले भी उनका इस्तेमाल करते हैं, लेकिन उनके निहितार्थों को समझे बिना। हम उनमें से तीन सबसे महत्वपूर्ण शब्दों को समझाएँगे।

पहला: “कारण इसे बनाते हैं।”

दूसरा: "यह स्वयं बनता है; यह अस्तित्व में आता है और बाद में अस्तित्वहीन हो जाता है।"

तीसरा: "यह स्वाभाविक है; प्रकृति इसकी आवश्यकता बनाती है और इसका निर्माण करती है।"

वास्तव में, चूँकि प्राणियों का अस्तित्व है और इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता, और चूँकि प्रत्येक प्राणी बुद्धिमत्तापूर्ण और कलात्मक ढंग से अस्तित्व में आता है, और चूँकि प्रत्येक समय से बाहर नहीं है, बल्कि निरंतर नवीनीकृत होता रहता है, तो हे सत्य के मिथ्यावादी!

सत्य, आप या तो यह कहने के लिए बाध्य हैं कि संसार में कारण प्राणियों का निर्माण करते हैं, उदाहरण के लिए, यह जानवर; अर्थात्, यह कारणों के एक साथ आने से अस्तित्व में आता है, या यह कि यह स्वयं को बनाता है, या इसका अस्तित्व में आना प्रकृति की आवश्यकता और आवश्यक प्रभाव है, या यह कि यह एक सर्वशक्तिमान और सर्व-महिमावान की शक्ति के माध्यम से बनाया गया है। चूँकि बुद्धि इन चार के अलावा कोई रास्ता नहीं खोज सकती है, अगर पहले तीन निश्चित रूप से असंभव, अमान्य और बेतुके साबित होते हैं, तो दिव्य एकता का मार्ग, जो चौथा रास्ता है, अनिवार्य रूप से और स्वयं-स्पष्ट रूप से और बिना किसी संदेह या संदेह के, सत्य साबित होगा।

पहला तरीका

यह कल्पना करना कि वस्तुओं, प्राणियों का निर्माण और अस्तित्व, ब्रह्मांड में कारणों के एक साथ आने से होता है। हम इसकी अनेक असंभवताओं में से केवल तीन का ही उल्लेख करेंगे।

पहली असंभवता

कल्पना कीजिए कि एक फार्मेसी है जिसमें सैकड़ों जार और शीशियाँ हैं जो बिल्कुल अलग-अलग पदार्थों से भरी हुई हैं। उन औषधियों से एक जीवित औषधि और एक जीवित उपाय की आवश्यकता होती है। इसलिए हम फार्मेसी में जाते हैं और देखते हैं कि वे वहाँ प्रचुर मात्रा में, फिर भी बहुत विविधता में पाए जाते हैं। हम प्रत्येक औषधि की जाँच करते हैं और देखते हैं कि प्रत्येक जार और शीशी से सामग्री अलग-अलग लेकिन सटीक मात्रा में ली गई है, इस से एक औंस, उस से तीन, अगले से सात, और इसी तरह। यदि एक औंस अधिक या बहुत कम लिया गया होता, तो औषधि जीवित नहीं होती और अपनी विशेष गुणवत्ता प्रदर्शित नहीं करती। इसके बाद, हम जीवित उपाय का अध्ययन करते हैं।

पुनः, सामग्री को एक विशेष माप में जार से लिया गया है, ताकि यदि बहुत छोटी मात्रा भी बहुत अधिक या बहुत कम ली गई हो, तो औषधि अपना विशेष गुण खो देगी।

अब, हालाँकि बर्तनों की संख्या पचास से ज़्यादा है, लेकिन हर बर्तन से सामग्री अलग-अलग माप और मात्रा के हिसाब से ली गई है। क्या यह किसी भी तरह से संभव या संभावित है कि शीशियाँ और बर्तन किसी अजीब संयोग या अचानक हवा के झोंके से गिर गए हों और उनमें से हर एक से ली गई सटीक, हालाँकि अलग-अलग मात्राएँ ही गिर गई हों, और फिर वे एक साथ मिलकर दवा बन गईं? क्या इससे ज़्यादा अंधविश्वास, असंभव और बेतुका कुछ भी हो सकता है? अगर कोई गधा बोल सकता, तो वह कहता: "मैं इस विचार को स्वीकार नहीं कर सकता!", और सरपट भाग जाता!

इसी प्रकार, प्रत्येक जीवित प्राणी की तुलना जीवित औषधि से की जा सकती है।
तुलना, और प्रत्येक पौधे को एक जीवित उपाय। क्योंकि वे से बने हैं

पदार्थ जो वास्तव में असंख्य और वास्तव में विभिन्न पदार्थों से सबसे सटीक माप में लिया गया है। यदि इन्हें कारणों और तत्वों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है और यह दावा किया जाता है, "कारणों ने इन्हें बनाया है," तो यह सौ गुना अनुचित, असंभव और बेतुका है, ठीक वैसे ही जैसे यह दावा करना था कि फार्मेसी में औषधि शीशियों के गिरने से अस्तित्व में आई; दुर्घटनावश।

संक्षेप में: इस ब्रह्माण्ड के विशाल भण्डार में जो महत्वपूर्ण पदार्थ हैं, जो सर्वज्ञ और सनातन परमेश्वर के दिव्य निर्धारण और आदेश के तराजू पर मापे जाते हैं, वे केवल असीम बुद्धि, अनंत ज्ञान और सर्वव्यापी इच्छा के द्वारा ही अस्तित्व में आ सकते हैं। वह अभागा व्यक्ति जो यह घोषित करता है कि वे अंधे, बहरे और असंख्य तत्वों और कारणों और प्रकृतियों के कार्य हैं, जो

बाढ़ की तरह बहते हुए; और वह मूर्ख, विह्वल व्यक्ति जो दावा करता है कि जब शीशियों को गिराया गया तो वह चमत्कारिक औषधि अपने आप बह निकली और अपने आप बन गई, निश्चित रूप से अनुचित और निरर्थक है। वास्तव में, ऐसा इनकार और अविश्वास एक मूर्खतापूर्ण मूर्खता है।

दूसरी असंभवता

यदि सब कुछ सर्वशक्तिमान और सर्व-महिमावान को, जो एकता का एकमात्र है, जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, और कारणों को जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो यह आवश्यक है कि ब्रह्मांड में मौजूद कई तत्व और कारण हर सजीव प्राणी के अस्तित्व में हस्तक्षेप करें। जबकि यह कि विभिन्न और परस्पर विरोधी और परस्पर विरोधी कारणों का अपने आप ही पूर्ण क्रम में, बेहतरीन संतुलन के साथ और एक छोटे से प्राणी, जैसे कि एक मक्खी के अस्तित्व में पूर्ण सामंजस्य के साथ एक साथ आना, इतनी स्पष्ट असंभवता है कि थोड़ी सी भी चेतना वाला कोई भी व्यक्ति कहेगा: "यह असंभव है; यह नहीं हो सकता!"

मक्खी का छोटा शरीर ब्रह्मांड के अधिकांश तत्वों और कारणों से जुड़ा हुआ है; वास्तव में, यह उनका सारांश है। यदि इसे पूर्व-शाश्वत और सर्वशक्तिमान के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो उन भौतिक कारणों के लिए मक्खी के तत्काल आसपास में मौजूद होना आवश्यक है; बल्कि, उन सभी को उसके छोटे शरीर में प्रवेश करना चाहिए; और यहां तक कि उन्हें उसकी आंखों की प्रत्येक कोशिका में प्रवेश करना चाहिए, जो उसके शरीर के सूक्ष्म नमूने हैं। क्योंकि यदि कोई कारण भौतिक प्रकृति का है, तो उसके लिए उसके प्रभाव के तत्काल आसपास और अंदर मौजूद होना आवश्यक है। और इसके लिए यह स्वीकार करना आवश्यक है कि ब्रह्मांड के घटक और तत्व उस छोटी कोशिका के अंदर भौतिक रूप से मौजूद हैं, एक जगह जो उसके एंटीना की नोक के लिए भी बहुत छोटी है, और वे वहां एक मालिक की तरह सामंजस्य में काम करते हैं।

इस तरह का तरीका तो सबसे मूर्ख सोफिस्टों को भी शर्मिंदा कर देता है।

तीसरी असंभवता

यह एक स्थापित नियम है कि, "यदि किसी प्राणी में एकता है, तो वह केवल एक ही प्राणी से, एक ही हाथ से उत्पन्न हो सकता है।" विशेष रूप से यदि वह एक परिपूर्ण व्यवस्था और संवेदनशील संतुलन के भीतर एक व्यापक जीवन प्रदर्शित करता है, तो यह स्वतः-स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि वह अनेक हाथों से उत्पन्न नहीं हुआ है, जो संघर्ष और भ्रम का कारण हैं, बल्कि यह कि वह एक ही हाथ से उत्पन्न हुआ है जो सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है। इसलिए, ऐसी सुव्यवस्थित और संतुलित सत्ता को, जिसमें एकता है, असंख्य, निर्जीव, अज्ञानी, आक्रामक, अचेतन, अराजक, अंधे और बहरे प्राकृतिक कारणों के उलझे हुए हाथों के लिए जिम्मेदार ठहराना, जिनका अंधापन और बहरापन उनके एक साथ आने और असंख्य संभावनाओं के तरीकों के बीच घुलने-मिलने से बढ़ता है, उतना ही अनुचित है जितना कि असंख्य असंभवताओं को एक साथ स्वीकार करना। यदि हम इस असंभवता को एक तरफ रख दें और मान लें कि भौतिक कारणों के प्रभाव होते हैं, तो ये प्रभाव केवल प्रत्यक्ष संपर्क और स्पर्श के माध्यम से हो सकते हैं। हालाँकि, प्राकृतिक कारणों का संपर्क जीवित प्राणियों के बाहरी हिस्सों से होता है। और फिर भी हम देखते हैं कि ऐसे प्राणियों के अंदरूनी भाग, जहाँ भौतिक कारणों के हाथ न तो पहुँच सकते हैं और न ही छू सकते हैं, कला के मामले में उनके बाह्य भागों की तुलना में दस गुना अधिक नाजुक, सुव्यवस्थित और परिपूर्ण हैं। इसलिए, यद्यपि छोटे सजीव प्राणी, जिन पर भौतिक कारणों के हाथ और अंग किसी भी तरह से स्थित नहीं हो सकते हैं, वास्तव में वे प्राणियों के बाह्य भागों को एक साथ छू भी नहीं सकते हैं, वे अपनी कला और सृजन के मामले में सबसे बड़े प्राणियों की तुलना में अधिक विचित्र और अद्भुत हैं, उन्हें उन निर्जीव, अज्ञानी, अपरिष्कृत, दूर, विशाल, परस्पर विरोधी, बहरे और अंधे कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराना केवल सजीव प्राणियों की संख्या में वृद्धि के कारण बहरेपन और अंधेपन का परिणाम हो सकता है।

दूसरा रास्ता

इसे "यह खुद ही बन जाता है" वाक्यांश द्वारा व्यक्त किया जाता है। इसमें भी कई असंभवताएँ शामिल हैं और यह कई पहलुओं में बेतुका और असंभव है। हम इन असंभवताओं के तीन उदाहरण समझाएँगे।

पहली असंभवता

हे जिद्दी इनकार करने वाले! तुम्हारे अहंकार ने तुम्हें इतना मूर्ख बना दिया है कि तुम किसी तरह सौ असंभवताओं को एक साथ स्वीकार करने का फैसला कर लेते हो। क्योंकि तुम खुद एक प्राणी हो, कोई साधारण पदार्थ नहीं जो निर्जीव और अपरिवर्तनीय हो। तुम एक बहुत ही सुव्यवस्थित मशीन की तरह हो जो लगातार नवीनीकृत हो रही है और एक अद्भुत महल जो निरंतर परिवर्तन से गुजर रहा है। तुम्हारे शरीर में कण निरंतर काम कर रहे हैं। तुम्हारे शरीर का ब्रह्मांड के साथ एक संबंध और पारस्परिक संबंध है, विशेष रूप से जीविका और प्रजातियों के स्थायित्व के संबंध में, और कण

इसके भीतर काम करने वाले लोग सावधान रहते हैं कि उस रिश्ते को खराब न करें और न ही कनेक्शन को तोड़ें। इस सतर्क तरीके से वे अपने काम में लग जाते हैं, मानो पूरे ब्रह्मांड को ध्यान में रखते हुए। इसके भीतर आपके रिश्तों को देखते हुए, वे उसी हिसाब से अपनी स्थिति लेते हैं। और आप अपनी बाहरी और आंतरिक इंद्रियों से उनके द्वारा ली गई अद्भुत स्थिति के अनुसार लाभ उठाते हैं।

यदि आप यह स्वीकार नहीं करते कि आपके शरीर के कण पूर्व-शाश्वत और सर्वशक्तिमान के नियम के अनुसार गतिशील छोटे अधिकारी हैं, या कि वे एक सेना हैं, या ईश्वरीय निर्धारण की कलम की नोंक हैं, जिनमें से प्रत्येक कण एक कलम की नोंक है, या कि वे शक्ति की कलम द्वारा अंकित बिंदु हैं, जिनमें से प्रत्येक कण एक बिंदु है, तो आपकी आंख में काम करने वाले प्रत्येक कण में एक ऐसी आंख होनी चाहिए जो आपके शरीर के प्रत्येक अंग और भाग के साथ-साथ पूरे ब्रह्मांड को देख सके, जिसके साथ आप जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त, आपको प्रत्येक कण को सौ प्रतिभाओं के बराबर बुद्धि प्रदान करनी होगी, जो आपके सभी अतीत और आपके भविष्य, और आपके पूर्वजों और वंशजों, आपके अस्तित्व के सभी तत्वों की उत्पत्ति, और आपके सभी पोषण के स्रोतों को जानने और पहचानने के लिए पर्याप्त है।

आप जैसे व्यक्ति के एक कण को, जिसके पास इस तरह के मामलों में एक कण के बराबर भी बुद्धि नहीं है, हजारों प्लेटो के ज्ञान और बुद्धिमत्ता का श्रेय देना हजार गुना अधिक पागलपन भरा अंधविश्वास है!

दूसरी असंभवता

आपका अस्तित्व एक हज़ार गुम्बदों वाले अद्भुत महल जैसा है जिसमें पत्थर बिना किसी सहारे के लटके हुए एक साथ खड़े हैं। वास्तव में, आपका अस्तित्व ऐसे महल से हज़ार गुना ज़्यादा अद्भुत है, क्योंकि आपके अस्तित्व का महल निरंतर सही क्रम में नवीनीकृत हो रहा है। आपकी वास्तव में अद्भुत आत्मा, हृदय और अन्य सूक्ष्म क्षमताओं को छोड़कर, आपके शरीर का प्रत्येक अंग महल के एक गुम्बद वाले हिस्से जैसा है। गुंबद के पत्थरों की तरह, कण एक साथ सही संतुलन और क्रम में खड़े हैं, जो उदाहरण के लिए आँख और जीभ को प्रदर्शित करते हैं, प्रत्येक एक अद्भुत इमारत, कला का असाधारण काम और शक्ति का चमत्कार है।

यदि ये कण ब्रह्माण्ड के मुख्य वास्तुकार के आदेश पर निर्भर अधिकारी न होते, तो इनमें से प्रत्येक कण को शरीर के अन्य सभी कणों पर पूर्णतया प्रभुत्वशाली तथा उनमें से प्रत्येक के पूर्णतया अधीनस्थ होना पड़ता; तथा प्रत्येक के बराबर होना पड़ता तथा अपनी प्रभुत्वपूर्ण स्थिति के संबंध में विरोधी होना पड़ता; तथा उन अधिकांश गुणों का उद्गम और स्रोत होना पड़ता जो केवल अनिवार्यतः विद्यमान एक से संबंधित होते हैं, तथा अत्यंत सीमित होते; तथा दोनों ही निरपेक्ष रूप में, तथा एक दूसरे के अधीन होने पर भी।

पूर्णतः व्यवस्थित व्यक्तिगत कलाकृति जो केवल एकता के रहस्य के माध्यम से ही एकता के एकल सत्ता का कार्य हो सकती है।

थोड़ी सी भी बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति यह समझ सकता है कि उन कणों को ऐसी कलाकृति का श्रेय देना कितनी स्पष्ट रूप से असंभव बात है।

तीसरी असंभवता

यदि आपका अस्तित्व पूर्व-शाश्वत और सर्वशक्तिमान की कलम से नहीं लिखा गया है, जो एकता का एकमात्र है, और इसके बजाय प्रकृति और कारणों से 'मुद्रित' है, तो प्रकृति में न केवल आपके शरीर में कोशिकाओं की संख्या के अनुसार, बल्कि उनके हजारों संयोजनों की संख्या के अनुसार मुद्रण-खंड होने चाहिए, जो संकेंद्रित वृत्तों में व्यवस्थित हैं। क्योंकि यदि यह पुस्तक, उदाहरण के लिए, जिसे हम अपने हाथ में पकड़ते हैं, लिखी गई है, तो एक कलम इसे इसके लेखक के ज्ञान पर भरोसा करके लिख सकती है। यदि, दूसरी ओर, यह लिखी नहीं गई है और इसे इसके लेखक की कलम का श्रेय नहीं दिया जाता है, और यदि यह कहा जाता है कि यह अपने आप मौजूद है या इसे प्रकृति का श्रेय दिया जाता है, तो, एक मुद्रित पुस्तक के रूप में, प्रत्येक अक्षर के लिए एक अलग लोहे की कलम होना आवश्यक होगा ताकि इसे मुद्रित किया जा सके।

मुद्रण-यंत्र में वर्णमाला के अक्षरों की संख्या के अनुसार टाइप के टुकड़े होने चाहिए ताकि पुस्तक के अक्षर उनके माध्यम से अस्तित्व में आ सकें; एक कलम के स्थान पर उन अक्षरों की संख्या के अनुसार कलम की आवश्यकता होती है।

जैसा कि देखा जा सकता है, कभी-कभी एक पूरा पृष्ठ उन अक्षरों में से एक बड़े अक्षर में एक छोटे पेन से बढ़िया लिपि में लिखा जाता है, जिस स्थिति में एक अक्षर के लिए हज़ार पेन की ज़रूरत होगी। इसके बजाय, अगर यह आपके शरीर का रूप ले ले, जिसमें उसके सभी घटक एक दूसरे के भीतर संकेंद्रित वृत्तों में हों, तो प्रत्येक वृत्त में, प्रत्येक घटक के लिए, उनके द्वारा बनाए गए संयोजनों की संख्या के अनुसार मुद्रण-खंड होने चाहिए।

अब, देखिए, यदि आप दावा करते हैं कि यह, जिसमें सौ असंभवताएं शामिल हैं, संभव है, तो फिर यदि वे एक ही कलम के लिए जिम्मेदार नहीं हैं, तो उन सुव्यवस्थित, कलात्मक प्रकार के टुकड़ों, दोषरहित मुद्रण-ब्लॉकों और लोहे की कलमों को बनाने के लिए, उसी संख्या में और कलमों, मुद्रण-ब्लॉकों और अक्षरों की आवश्यकता होगी।

और उन्हें भी बनाया गया होगा; और उन्हें भी सुव्यवस्थित और कलात्मक ढंग से गढ़ा गया होगा। और इसी तरह। यह क्रम अनंत तक चलता रहेगा।

तुम भी समझ लो! यह सोच ऐसी है कि इसमें तुम्हारे शरीर में मौजूद कणों की संख्या तक की असंभवता और अंधविश्वास शामिल है। हे ईश्वर को नकारने वाले! यह देखो और गुमराही का रास्ता छोड़ दो!

तीसरा रास्ता

"प्रकृति इसे आवश्यक बनाती है; प्रकृति इसे बनाती है।" इस कथन में कई अर्थ निहित हैं
हम उनमें से तीन का उदाहरण के रूप में उल्लेख करेंगे।

पहली असंभवता

यदि प्राणियों में, विशेषकर सजीव प्राणियों में, जो कला और सृजनशीलता विवेकपूर्ण और बुद्धिमान है, उसे पूर्व-अनन्त सूर्य की दिव्य निर्धारण शक्ति की कलम से न जोड़कर, प्रकृति और शक्ति से जोड़ दिया जाए, जो अन्धी, बहरी और अविवेकी है, तो यह आवश्यक हो जाता है कि प्रकृति या तो प्रत्येक वस्तु में सृजन के लिए मशीनें और मुद्रण-यंत्र रखे, या प्रत्येक वस्तु में इतनी शक्ति और बुद्धि रखे कि वह ब्रह्माण्ड का सृजन और संचालन कर सके। इसका कारण इस प्रकार है:

सूर्य की अभिव्यक्तियाँ और प्रतिबिंब पृथ्वी के चेहरे पर कांच के सभी छोटे-छोटे टुकड़ों और बूंदों में दिखाई देते हैं। यदि उन छोटे, प्रतिबिंबित काल्पनिक सूर्यों को आकाश में सूर्य के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो माचिस की तीली से भी छोटे कांच के हर छोटे टुकड़े में एक वास्तविक सूर्य के बाहरी अस्तित्व को स्वीकार करना आवश्यक है, जिसमें सूर्य के गुण होते हैं और जो आकार में छोटा होते हुए भी गहरा अर्थ रखता है; और इसलिए कांच के टुकड़ों की संख्या में वास्तविक सूर्य को स्वीकार करना आवश्यक है।

ठीक उसी तरह, यदि प्राणियों और चेतन प्राणियों को सीधे-सीधे पूर्व-अनन्त सूर्य के नामों की अभिव्यक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो यह स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक प्राणी और विशेष रूप से चेतन प्राणियों में, एक प्रकृति, एक शक्ति या बस एक ईश्वर होता है जो एक अनंत शक्ति और इच्छा, और ज्ञान और बुद्धि को बनाए रखेगा। ऐसा विचार ब्रह्मांड की सभी असंभवताओं में सबसे बेतुका और अंधविश्वासी है। यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति जो ब्रह्मांड के निर्माता की कला को काल्पनिक, तुच्छ, अचेतन प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराता है, निस्संदेह एक जानवर की तुलना में सच्चाई के प्रति कम सचेत है।

दूसरी असंभवता

यदि प्राणियों को, जो सबसे अधिक सुव्यवस्थित और सुसंयोजित, बुद्धिमान और कलात्मक रूप से निर्मित हैं, उस एक को न मानकर जो असीम रूप से शक्तिशाली और बुद्धिमान है, प्रकृति को माना जाए, तो प्रत्येक मिट्टी में उतने ही कारखाने और छापेखाने होने चाहिए जितने यूरोप में हैं, ताकि प्रत्येक मिट्टी असंख्य फूलों और फलों के विकास और निर्माण का साधन बन सके, जिनका वह उद्गम स्थल और कार्यशाला है। फूलों के बीज मिट्टी के एक कटोरे में बारी-बारी से बोए जाते हैं, जो उनके लिए फूलदान का कर्तव्य निभाता है। मिट्टी के कटोरे में एक क्षमता स्पष्ट है जो उसमें बोए गए सभी फूलों को एक दूसरे से बहुत भिन्न आकार और रूप देगी। यदि वह क्षमता सर्व-महिमावान और सर्वशक्तिमान को नहीं दी जाती, तो ऐसी स्थिति मिट्टी के कटोरे में प्रत्येक फूल के लिए अमूर्त, भिन्न और प्राकृतिक मशीनों के बिना नहीं हो सकती।

ऐसा इसलिए है क्योंकि बीज, जैसे कि शुक्राणु और अंडे, जिस पदार्थ से बने होते हैं, वह एक ही है। यानी, वे ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बन और नाइट्रोजन के एक व्यवस्थित, निराकार, पेस्ट जैसे मिश्रण से बने होते हैं। इसके साथ ही, चूंकि हवा, पानी, गर्मी और प्रकाश भी सरल, अचेतन हैं और बाढ़ की तरह हर चीज के खिलाफ बहते हैं, इसलिए यह तथ्य कि उन फूलों के सभी अलग-अलग रूप मिट्टी से सबसे सुव्यवस्थित और कलात्मक तरीके से निकलते हैं, यह स्पष्ट रूप से और अनिवार्य रूप से आवश्यक है कि कटोरे में मिट्टी में अमूर्त, लघु मुद्रण-प्रेस और कारखाने मौजूद हों, यूरोप में प्रेस और कारखानों की संख्या के बराबर ताकि वे इस बड़ी संख्या में जीवित कपड़े और हजारों विभिन्न कढ़ाई वाले कपड़े बुन सकें।

तो आप देख सकते हैं कि प्रकृतिवादियों का अविश्वासी विचार तर्क के दायरे से कितना दूर चला गया है। और यद्यपि प्रकृति को सृष्टिकर्ता मानने वाले बुद्धिहीन ढोंगी विज्ञान और तर्क के आदमी होने का दावा करते हैं, लेकिन देखिए कि उनका विचार तर्क और विज्ञान से कितना दूर है, इसलिए उन्होंने एक ऐसे अंधविश्वास को अपना रास्ता बना लिया है जो किसी भी तरह से संभव नहीं है, जो असंभव है। इसे देखिए और उन पर हंसिए!

मैं पूछता हूँ: यदि प्राणियों को प्रकृति के अधीन करने पर ऐसी असाधारण असंभवताएँ और दुर्गम कठिनाइयाँ होती हैं, तो जब उन्हें एक और शाश्वत रूप से चाहने वाले के अधीन कर दिया जाता है, तो वे कठिनाइयाँ कैसे दूर हो जाती हैं? और कठिन असंभवता उस आसान आवश्यकता में कैसे बदल जाती है?

उत्तर: हमने प्रथम असंभवता में देखा कि सूर्य के प्रतिबिम्ब की अभिव्यक्ति छोटे-छोटे काल्पनिक सूर्यों के माध्यम से अपनी चमक और प्रभाव को पूरी सहजता और बिना किसी परेशानी के सबसे छोटे निर्जीव कण से लेकर विशालतम महासागर की सतह तक हर जगह प्रदर्शित करती है। यदि प्रत्येक कण का सूर्य से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया जाए, तो यह स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है कि उन प्रत्येक सूक्ष्म कण में एक वास्तविक सूर्य का बाह्य अस्तित्व, असंभवता के स्तर पर कठिनाई के साथ, बना रह सकता है।

इसी तरह, अगर हर प्राणी को सीधे उस एक शाश्वत रूप से प्रयत्नशील व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो हर प्राणी के लिए आवश्यक हर चीज को एक कनेक्शन और अभिव्यक्ति के माध्यम से उस तक आसानी और सुविधा के साथ पहुंचाया जा सकता है जो आवश्यकता के स्तर पर है। अगर कनेक्शन टूट जाता है और हर प्राणी अपने अधिकारी के पद से कर्तव्यहीन प्राणी के रूप में वापस आ जाता है, और उसे प्रकृति और उसके अपने उपकरणों पर छोड़ दिया जाता है, तो यह मानना आवश्यक हो जाता है कि, असंभवता की हद तक पहुंचने वाली लाखों कठिनाइयों और बाधाओं के साथ, अंधी प्रकृति के पास ब्रह्मांड को बनाने और संचालित करने की शक्ति और बुद्धि है ताकि वह एक मक्खी जैसे सजीव प्राणी के अस्तित्व की अद्भुत मशीन को अस्तित्व में ला सके, जो ब्रह्मांड का एक छोटा सा सूचकांक है। यह सिर्फ एक बार नहीं बल्कि हजारों बार असंभव है।

संक्षेप में: जिस प्रकार अनिवार्यतः विद्यमान परमेश्वर के लिए अपने सार के सम्बन्ध में किसी अन्य का साझेदार या उसके समान होना असम्भव और निषिद्ध है, उसी प्रकार उसके प्रभुत्व और प्राणियों की सृष्टि में अन्य का हस्तक्षेप भी असम्भव और निषिद्ध है।

जहाँ तक दूसरी असंभवता में शामिल कठिनाइयों का सवाल है, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में साबित हुआ है, अगर सभी चीजों को एकता के एक ही व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो सभी चीजें एक ही चीज की तरह आसान और परेशानी मुक्त हो जाती हैं। जबकि अगर उन्हें कारणों और प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो एक ही चीज सभी चीजों जितनी मुश्किल हो जाती है। यह कई, निर्णायक सबूतों के साथ प्रदर्शित किया गया है और उनमें से एक का सारांश इस प्रकार है।

यदि कोई व्यक्ति सैनिक या अधिकारी होने के नाते राजा से जुड़ा है, तो इस संबंध की ताकत के कारण वह अपनी व्यक्तिगत ताकत से कहीं अधिक कर्तव्य निभा सकता है। वह कभी-कभी अपने राजा के नाम पर दूसरे राजा को पकड़ सकता है। क्योंकि वह खुद अपने कर्तव्यों और कामों को पूरा करने के लिए आवश्यक उपकरण और ताकत के स्रोत नहीं रखता है, न ही उसे ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता है। संबंध के कारण, राजा के खजाने और सेना, जो उसके पीछे है और उसका सहारा है, उसके उपकरण और ताकत के स्रोत रखती है। कहने का तात्पर्य यह है कि उसके द्वारा किए जाने वाले कर्तव्य राजा के व्यवसाय जितने भव्य और सेना के कार्यों जितने जबरदस्त हो सकते हैं।

वास्तव में, एक अधिकारी होने के कारण, एक चींटी ने फिरौन के महल को नष्ट कर दिया; संबंध के कारण, एक मक्खी ने निम्रोद को मार डाला; और संबंध के कारण, गेहूं के दाने के आकार के एक देवदार के बीज से एक विशाल देवदार के पेड़ के सभी भाग उत्पन्न हुए।[2]

अगर कनेक्शन टूट जाए और अधिकारी के तौर पर काम करने वाले व्यक्ति को छुट्टी दे दी जाए, तो उसे अपने काम के लिए ज़रूरी उपकरण और शक्ति के स्रोत खुद ही ढोने पड़ेंगे। तब वह सिर्फ़ अपनी शक्ति और गोला-बारूद के स्रोतों के अनुरूप ही कर्तव्य निभा पाएगा। अगर उसे इस स्थिति में अपने कर्तव्यों को पहली स्थिति की तरह ही बेहद आसानी से पूरा करना पड़े, तो उसे अपनी पीठ पर सेना की शक्ति के स्रोत और राजा के शस्त्रागार और गोला-बारूद के कारखानों का बोझ उठाना पड़ेगा। लोगों को हंसाने के लिए कहानियाँ और अंधविश्वास गढ़ने वाले जोकर भी इस काल्पनिक विचार पर शर्मिंदा होंगे।

---

[2] हाँ, इस संबंध के माध्यम से, बीज को ईश्वरीय निर्धारण से एक आदेश प्राप्त होता है और वह उन अद्भुत कर्तव्यों को प्रदर्शित करता है। यदि संबंध टूट जाता है, तो बीज के निर्माण की आवश्यकता होगी
शक्तिशाली देवदार के पेड़ के निर्माण की तुलना में अधिक उपकरण, शक्ति और कला की आवश्यकता होगी। क्योंकि यह आवश्यक होगा
पहाड़ पर मौजूद देवदार का पेड़, जो ईश्वरीय शक्ति का काम है, बीज के भीतर मौजूद संभावित पेड़ में अपने सभी अंगों और भागों के साथ शारीरिक रूप से मौजूद होना और ईश्वरीय निर्धारण का काम है। क्योंकि शक्तिशाली पेड़ का कारखाना बीज है। इसके भीतर का दृढ़ निश्चयी, संभावित पेड़ ईश्वरीय शक्ति के माध्यम से बाहरी दुनिया में प्रकट होता है और एक भौतिक देवदार का पेड़ बन जाता है।

संक्षेप में: सभी प्राणियों को अनिवार्यतः विद्यमान एक के अधीन मानना इतना आसान है कि यह आवश्यक है, जबकि उनकी रचना को प्रकृति के अधीन मानना इतना कठिन है कि यह असंभव है और तर्क के दायरे से बाहर है।

तीसरी असंभवता

निम्नलिखित दो तुलनाएं, जो रिसाले-आई के अन्य भागों में शामिल हैं
नूर, इस असंभवता को समझाओ।

एक जंगली जंगली एक महल में घुसा जो एक खाली रेगिस्तान में बना था और सभ्यता के सभी फलों से सुसज्जित था। उसने महल के अंदर की ओर नज़र डाली और हज़ारों अच्छी तरह से अनुपातित और कलात्मक रूप से गढ़ी गई चीज़ें देखीं।

अपनी असभ्यता और अज्ञानता के कारण उसने कहा: "इसमें किसी बाहरी व्यक्ति का हाथ नहीं है, अंदर की किसी वस्तु ने ही इस महल और इसकी सारी सामग्री को बनाया होगा," और उसने जांच शुरू कर दी। लेकिन उसकी अशिक्षित बुद्धि को भी यह संभव नहीं लगा कि उसने जो कुछ भी देखा है, उससे ये चीजें बन सकती हैं।

बाद में, उन्होंने एक नोटबुक देखी जिसमें महल के निर्माण की योजना और कार्यक्रम, उसकी सामग्री की सूची और उसके प्रशासन के नियम लिखे हुए थे।
निश्चित रूप से, नोटबुक भी, जो महल की बाकी वस्तुओं की तरह हाथ, आँख या औज़ार के बिना थी, महल के निर्माण और सजावट की क्षमता से पूरी तरह से रहित थी। लेकिन जब उसने देखा कि बाकी सभी चीज़ों की तुलना में, नोटबुक अपने सभी सैद्धांतिक नियमों को शामिल करने के कारण पूरे महल से संबंधित थी, तो उसे यह कहना पड़ा: "यह नोटबुक ही है जिसने महल को व्यवस्थित, व्यवस्थित और सजाया है, और इन सभी वस्तुओं को गढ़ा है और उन्हें उनके स्थानों पर रखा है।" उसने अपनी असभ्यता को हास्यास्पद बकवास में बदल दिया।

इस प्रकार, बिल्कुल इस तुलना की तरह, एक असभ्य व्यक्ति जो ईश्वर को नकारने वाले प्रकृतिवादी विचार का समर्थक था, ब्रह्मांड के महल में प्रवेश कर गया, जो तुलना में महल की तुलना में अनंत रूप से अधिक सुव्यवस्थित, अधिक परिपूर्ण और हर जगह ज्ञान के चमत्कारी उदाहरणों से भरा हुआ है। यह न सोचते हुए कि यह अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान की कला का कार्य है, जो आकस्मिकता के क्षेत्र से बाहर है, और उस विचार को त्यागते हुए, उसने दिव्य अभ्यास के नियमों का एक संग्रह और प्रभु कला का एक सूचकांक देखा, जो आकस्मिकता के क्षेत्र में दिव्य निर्धारण को लिखने और मिटाने के लिए एक स्लेट की तरह है, और दिव्य शक्ति के कामकाज के नियमों के लिए एक निरंतर बदलती नोटबुक की तरह है, और जिसे बहुत ही गलती से और गलत तरीके से 'प्रकृति' नाम दिया गया है, और उसने कहा:

"इन चीज़ों के लिए एक कारण की आवश्यकता होती है और ऐसा प्रतीत होता है कि इस नोटबुक में मौजूद हर चीज़ के साथ किसी और चीज़ का कोई संबंध नहीं है। यह सच है कि तर्क किसी भी तरह से यह स्वीकार नहीं करेगा कि यह अदृश्य, अचेतन और शक्तिहीन नोटबुक इस रचना को अंजाम दे सकती है, जो कि एक पूर्ण प्रभुत्व का काम है

और इसके लिए अनंत शक्ति की आवश्यकता होती है। लेकिन चूंकि मैं शाश्वत निर्माता को नहीं पहचानता, इसलिए सबसे उचित व्याख्या यह है कि नोटबुक ने इसे बनाया है, और इसे बनाता है, इसलिए मैं यही कहूंगा।”
जिसका हम उत्तर देते हैं:

हे अभागे मूर्ख! तुम्हारी मूर्खता कल्पना से परे है! प्रकृति के दलदल से अपना सिर बाहर निकालो और अपने से परे देखो! एक सर्व-महिमावान निर्माता को देखो, जिसके बारे में कण-कण से लेकर ग्रह-नक्षत्र तक सभी प्राणी अपनी-अपनी जुबान से गवाही देते हैं और जिसकी ओर अपनी उँगलियों से इशारा करते हैं! उस सनातन लेखक के प्रकटन को देखो, जो महल को गढ़ता है और जो उसका कार्यक्रम नोटबुक में लिखता है! उसके आदेश का अध्ययन करो, कुरान को सुनो! अपने उन्मादी प्रलाप से मुक्त हो जाओ!

दूसरी तुलना: एक देहाती गँवार एक शानदार महल की सीमा में दाखिल हुआ और वहाँ एक बेहद अनुशासित सेना की वर्दी में ड्रिल करते हुए देखा। उसने देखा कि एक बटालियन, एक रेजिमेंट और एक डिवीजन सावधान की मुद्रा में खड़े हैं, आराम से खड़े हैं और मार्च कर रहे हैं, और जब आदेश दिया जाता है तो गोली चलाते हैं जैसे कि वे एक ही निजी हों।

चूँकि उसका असभ्य, असभ्य मन यह नहीं समझ पाया कि देश के कानून और शाही फरमान के तहत एक कमांडर को कमान सौंपी गई थी, इसलिए उसने कल्पना की कि सैनिक एक दूसरे से रस्सियों से बंधे हुए थे। उसने सोचा कि यह कितनी अद्भुत डोरी होगी, और वह आश्चर्यचकित हो गया।

बाद में, वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ता रहा जब तक कि वह आया सोफिया जैसी शानदार मस्जिद के पास नहीं पहुँच गया। वह शुक्रवार की नमाज़ के समय वहाँ गया और मुसलमानों की भीड़ को एक आदमी की आवाज़ सुनकर उठते, झुकते, सजदा करते और बैठते देखा। चूँकि वह शरिया को नहीं समझता था, जिसमें अमूर्त, प्रकट कानूनों का संग्रह होता है, न ही कानून बनाने वाले के आदेश से आगे बढ़ने वाले अमूर्त नियमों को, इसलिए उसने सोचा कि यह भीड़ एक दूसरे से भौतिक रस्सी से बंधी हुई है, और यह अद्भुत रस्सी उन्हें अधीन कर रही है और उन्हें कठपुतलियों की तरह चला रही है।

यह विचार मन में आते ही, जो इतना हास्यास्पद था कि अज्ञानी से अज्ञानी भी हंसने पर मजबूर हो जाए, वह अपने रास्ते पर चल पड़ा।

इस तुलना की तरह ही, एक नास्तिक जो भौतिकवादी विचार को मानता था, जो कि इनकार और शुद्ध पाशविकता है, ब्रह्मांड में प्रवेश करता है, जो कि पूर्व-अनंत काल और उत्तर-अनंत काल के सम्राट की असंख्य शक्तियों के लिए एक शानदार छावनी है, और उस पूर्व-अनंत काल के सर्व-पूज्य की एक सुव्यवस्थित मस्जिद है। उसने ब्रह्मांड के क्रम के अमूर्त नियमों की कल्पना की, जो पूर्व-अनंत काल के सम्राट की बुद्धि से निकलते हैं, प्रत्येक का भौतिक और भौतिक अस्तित्व है; और उसने प्रभुत्व की संप्रभुता के सैद्धांतिक नियमों और महान शरीयत, सृष्टि के शरीयत के नियमों और अध्यादेशों को, जो अमूर्त हैं और केवल ज्ञान के रूप में मौजूद हैं, प्रत्येक का बाह्य, भौतिक और भौतिक अस्तित्व है। लेकिन ईश्वरीय शक्ति के स्थान पर उन नियमों को स्थापित करना, जो ईश्वरीय शक्ति से निकलते हैं

ज्ञान और वाणी के गुणों को ज्ञान के रूप में ही मानना, तथा उन्हें सृष्टि का नाम देना, फिर उन्हें 'प्रकृति' कहना, तथा शक्ति को, जो कि प्रभुता की अभिव्यक्ति मात्र है, एक स्वतंत्र सर्वशक्तिमान शक्ति-स्वामित्वधारी मानना, तुलनात्मक अज्ञान से हजार गुना अधिक अधम अज्ञान है।

संक्षेप में: प्रकृतिवादी जिस काल्पनिक और अवास्तविक चीज़ को प्रकृति कहते हैं, अगर उसका कोई बाहरी यथार्थ है, तो वह ज़्यादा से ज़्यादा कला का काम हो सकती है; वह कलाकार नहीं हो सकती। वह एक कढ़ाई है, और कढ़ाई करनेवाला नहीं हो सकता। वह आदेशों का एक समूह है; वह आदेशों को जारी करनेवाला नहीं हो सकता। वह सृष्टि के नियमों का एक समूह है, और वह कानून बनानेवाला नहीं हो सकता। वह ईश्वर की गरिमा के लिए एक बनाया हुआ आवरण मात्र है, और वह सृष्टिकर्ता नहीं हो सकता। वह निष्क्रिय और निर्मित है, और वह सृजनशील निर्माता नहीं हो सकता। वह एक कानून है, कोई शक्ति नहीं, और उसमें शक्ति नहीं हो सकती। वह प्राप्तकर्ता है, और वह स्रोत नहीं हो सकता।

निष्कर्ष: चूँकि प्राणी अस्तित्व में हैं, और जैसा कि इस ग्रंथ की शुरुआत में कहा गया था, तर्क चार वर्णित प्राणियों के अलावा प्राणियों के अस्तित्व को समझाने के लिए किसी अन्य तरीके के बारे में नहीं सोच सकता है, जिनमें से तीन को तीन स्पष्ट असंभवताओं के माध्यम से निर्णायक रूप से अमान्य और बेतुका साबित किया गया था, तो अनिवार्य रूप से और स्वयं-स्पष्ट रूप से दिव्य एकता का मार्ग, जो चौथा मार्ग है, निर्णायक रूप से सिद्ध होता है। चौथा मार्ग, शुरुआत में उद्धृत श्लोक के अनुसार:

क्या आकाश और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता परमेश्वर के विषय में कोई संदेह है?

यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि अनिवार्यतः विद्यमान परमेश्वर की दिव्यता के विषय में कोई संदेह या झिझक नहीं हो सकती है, तथा सभी चीजें सीधे उसकी शक्ति के हाथ से निकलती हैं, तथा आकाश और पृथ्वी उसके अधीन हैं।

हे कारण और प्रकृति के अभागे पूजक! चूँकि प्रत्येक वस्तु की प्रकृति, सभी वस्तुओं की भाँति, सृजित है, क्योंकि वह कला से परिपूर्ण है और निरंतर नवीन होती रहती है, तथा परिणाम की भाँति प्रत्येक वस्तु का प्रत्यक्ष कारण भी सृजित है; तथा चूँकि प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व के लिए बहुत से उपकरणों और बहुत से औजारों की आवश्यकता होती है, इसलिए एक परम शक्ति का स्वामी अवश्य होना चाहिए जो प्रकृति का सृजन करे और कारण को अस्तित्व में लाए। और उस परम शक्तिमान को अपने प्रभुत्व और सृजन में भाग लेने के लिए शक्तिहीन मध्यस्थों की आवश्यकता नहीं है। भगवान न करे! वह कारण और प्रभाव को एक साथ प्रत्यक्ष रूप से सृजित करता है। अपनी बुद्धि और अपने नामों के प्रकटीकरण को प्रदर्शित करने के लिए, क्रम और अनुक्रम के माध्यम से एक प्रत्यक्ष कारण संबंध और सम्बन्ध स्थापित करके, वह कारणों और प्रकृति को अपनी शक्ति के हाथ का परदा बना देता है, ताकि वस्तुओं में प्रत्यक्ष दोष, कठोरता और दोष उन्हीं पर आरोपित किए जाएँ, और इस प्रकार उसकी गरिमा सुरक्षित रहे।

क्या एक घड़ीसाज़ के लिए घड़ी के दाँते-पहिये बनाना और फिर उन्हें व्यवस्थित करके घड़ी बनाना आसान है? या क्या उसके लिए हर दाँते-पहिये में एक अद्भुत मशीन बनाना और फिर घड़ी बनाना आसान है?

घड़ी बनाने का काम उन मशीनों के बेजान हाथों पर छोड़ देना? क्या यह संभावना की सीमा से परे नहीं है? चलो, तुम अपने अनुचित तर्क से न्याय करो, और कहो!

और क्या एक लेखक के लिए स्याही, कलम और कागज इकट्ठा करना और फिर उनका उपयोग करके खुद ही एक किताब लिखना आसान है? या क्या उसके लिए कागज, कलम और स्याही से एक लेखन-मशीन बनाना आसान है, जिसके लिए किताब से ज़्यादा कला और परेशानी की ज़रूरत होती है, और जिसका उपयोग सिर्फ़ उसी किताब के लिए किया जा सकता है, और फिर वह अचेतन मशीन से कहे: "चलो, तुम लिखो!", और खुद उसमें हस्तक्षेप न करे? क्या यह खुद लिखने से सौ गुना ज़्यादा मुश्किल नहीं है?

मैं कहता हूँ: हाँ, एक ऐसी मशीन बनाना जो किताब खुद लिख सके, सौ गुना ज़्यादा मुश्किल है। लेकिन क्या यह एक तरह से आसान नहीं है, क्योंकि मशीन एक ही किताब की कई प्रतियाँ बनाने का ज़रिया है?

उत्तर: अपनी असीम शक्ति के माध्यम से, पूर्व-अनन्त लेखक अपने नामों की अनंत अभिव्यक्तियों को लगातार नवीनीकृत करता है ताकि उन्हें हमेशा अलग-अलग तरीकों से प्रदर्शित किया जा सके। और इस निरंतर नवीनीकरण के माध्यम से, वह चीजों में पहचान और विशेष विशेषताओं को इस तरह से बनाता है कि अनन्त रूप से चाहने वाले या प्रभु की पुस्तक का कोई भी संदेश किसी अन्य पुस्तक के समान नहीं हो सकता है। किसी भी मामले में, प्रत्येक में अलग-अलग अर्थ व्यक्त करने के लिए अलग-अलग विशेषताएं होंगी।

अगर आपके पास आँखें हैं, तो मानव चेहरे को देखें: आप देखेंगे कि आदम के समय से लेकर आज तक, वास्तव में, अनंत काल तक, इसके आवश्यक अंगों की अनुरूपता के साथ, प्रत्येक चेहरे में अन्य सभी के संबंध में एक विशिष्ट चिह्न है; यह एक निश्चित तथ्य है। इसलिए, प्रत्येक चेहरे को एक अलग पुस्तक के रूप में माना जा सकता है। केवल, कलाकृति को प्रस्तुत करने के लिए, अलग-अलग लेखन-सेट, व्यवस्था और रचना की आवश्यकता होती है। और सामग्री को इकट्ठा करने और व्यवस्थित करने के लिए, और प्रत्येक के अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी चीजों को शामिल करने के लिए, एक पूरी तरह से अलग कार्यशाला की आवश्यकता होगी।

अब, यह जानते हुए कि यह असंभव है, हमने प्रकृति को एक प्रिंटिंग प्रेस के रूप में सोचा। लेकिन रचना और मुद्रण के अलावा, जो प्रिंटिंग प्रेस से संबंधित है, यानी टाइप को एक विशिष्ट क्रम में सेट करना, वे पदार्थ जो एक सजीव प्राणी के शरीर का निर्माण करते हैं, जिनका निर्माण रचना और क्रम से सौ गुना अधिक कठिन है, उन्हें विशिष्ट अनुपात और विशेष क्रम में बनाया जाना चाहिए, ब्रह्मांड के सबसे दूर के कोनों से लाया जाना चाहिए, और प्रिंटिंग प्रेस के हाथों में सौंप दिया जाना चाहिए। लेकिन इन सभी चीजों को करने के लिए, अभी भी उस परम शक्तिशाली की शक्ति और इच्छा की आवश्यकता है, जो प्रिंटिंग प्रेस का निर्माण करता है। यानी, प्रिंटिंग प्रेस की यह परिकल्पना पूरी तरह से निरर्थक अंधविश्वास है।

इस प्रकार, घड़ी और पुस्तक की तुलना की तरह, सर्व-महिमावान निर्माता, जो सभी चीजों पर शक्तिशाली है, ने कारणों का निर्माण किया है, और ऐसा ही वह भी करता है।

वह प्रभाव पैदा करता है। अपनी बुद्धि के माध्यम से, वह प्रभाव को कारण से जोड़ता है। अपनी इच्छा के माध्यम से, उसने महान शरिया, सृष्टि की शरिया की अभिव्यक्ति निर्धारित की है, जिसमें ब्रह्मांड में सभी गति के क्रम से संबंधित दिव्य कानून शामिल हैं, और प्राणियों की प्रकृति निर्धारित की है, जो केवल चीजों में उस अभिव्यक्ति का दर्पण होना है, और उसका प्रतिबिंब होना है। और अपनी शक्ति के माध्यम से, उसने उस प्रकृति का चेहरा बनाया है जिसने बाहरी अस्तित्व प्राप्त किया है, और उस प्रकृति पर चीजों का निर्माण किया है, और उन्हें एक दूसरे के साथ मिलाया है।

क्या इस तथ्य को स्वीकार करना आसान है, जो असंख्य तर्कसंगत प्रमाणों का निष्कर्ष है - वास्तव में, क्या इसे स्वीकार करने के लिए कोई बाध्य नहीं है? - या उन भौतिक प्राणियों को, जिन्हें आप कारण और प्रकृति कहते हैं, जो निर्जीव, अचेतन, निर्मित, गढ़े हुए और सरल हैं, प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व के लिए आवश्यक असंख्य उपकरण और उपकरण प्रदान करना और उन कार्यों को पूरा करना, जिन्हें बुद्धिमानी और विवेक से किया जाता है, आसान है? क्या यह संभावना की सीमाओं से बिल्कुल परे नहीं है? हम इसे आपके विवेकहीन दिमाग से तय करने के लिए छोड़ देते हैं!

अविश्वासी प्रकृति-पूजक ने उत्तर दिया: "चूँकि आप मुझसे निष्पक्ष और तर्कसंगत होने के लिए कह रहे हैं, इसलिए मुझे यह स्वीकार करना होगा कि अब तक मैंने जिस गलत रास्ते का अनुसरण किया है, वह एक जटिल असंभवता है, और बेहद हानिकारक और बदसूरत है। थोड़ी सी भी बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति आपके उपरोक्त विश्लेषणों से समझ जाएगा कि सृष्टि के कार्य को कारणों और प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराना निषिद्ध और असंभव है, और सभी चीजों को सीधे अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के लिए जिम्मेदार ठहराना अनिवार्य और आवश्यक है। मैं कहता हूँ: 'विश्वास के लिए सभी प्रशंसा भगवान की है,' और मैं उन पर विश्वास करता हूँ। केवल, मुझे एक संदेह है:

"मैं मानता हूँ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर सृष्टिकर्ता है, लेकिन अगर कुछ छोटे-मोटे कारणों से तुच्छ मामलों का निर्माण होता है और वे अपने लिए थोड़ी प्रशंसा और ख्याति प्राप्त करते हैं, तो इससे उनकी प्रभुता की संप्रभुता को क्या नुकसान पहुँचता है? क्या इससे उनकी संप्रभुता किसी तरह से कम हो जाती है?"

उत्तर: जैसा कि हमने रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में निर्णायक रूप से सिद्ध किया है, शासन की पहचान हस्तक्षेप की अस्वीकृति है। सबसे तुच्छ शासक या अधिकारी अपने शासन के क्षेत्र में अपने बेटे के हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं करेगा। यह तथ्य कि खलीफा होने के बावजूद, कुछ धर्मनिष्ठ सुल्तानों ने अपने निर्दोष बेटों को इस निराधार आशंका के आधार पर मार डाला कि उनके बेटे उनके शासन में हस्तक्षेप करेंगे, यह दर्शाता है कि शासन में हस्तक्षेप की अस्वीकृति का यह कानून कितना मौलिक है। और भागीदारी की रोकथाम का कानून, जो शासन के लिए अंतर्निहित स्वतंत्रता की आवश्यकता है, ने मानव जाति के इतिहास में असाधारण उथल-पुथल के माध्यम से अपनी ताकत दिखाई है जब भी एक शहर में दो गवर्नर या एक देश में दो राजा हुए हैं।

यदि शासन और संप्रभुता की भावना, जो कि मानव प्राणियों में एक छाया मात्र है, जो शक्तिहीन हैं और जिन्हें सहायता की आवश्यकता है, इस सीमा तक हस्तक्षेप को अस्वीकार करती है, दूसरों के हस्तक्षेप को रोकती है, अपनी संप्रभुता में भागीदारी को स्वीकार नहीं करती है, और अपनी स्थिति की स्वतंत्रता को इतनी ईर्ष्या से सुरक्षित रखने का प्रयास करती है, यदि आप कर सकें, तो इसकी तुलना एक सर्व-महिमावान से करें जिसकी पूर्ण संप्रभुता प्रभुत्व की सीमा तक है, जिसका पूर्ण शासकत्व दिव्यता की सीमा तक है, पूर्ण स्वतंत्रता एकता की सीमा तक है, और आवश्यकता का पूर्ण अभाव पूर्ण शक्ति की सीमा तक है, और समझें कि उस शासकत्व की एक आवश्यक आवश्यकता और अपरिहार्य आवश्यकता हस्तक्षेप की अस्वीकृति, भागीदारी की रोकथाम, और भागीदारों का प्रतिकर्षण है।

अपने संदेह के दूसरे भाग के संबंध में आपने कहा: "यदि कुछ तुच्छ प्राणियों की पूजा कुछ कारणों की ओर निर्देशित होती है, तो क्या इससे कणों से लेकर ग्रहों तक सभी प्राणियों की पूजा में कोई कमी आती है, जो कि अनिवार्य रूप से विद्यमान एक, सभी पूजाओं के परम लक्ष्य की ओर निर्देशित होती है?"

उत्तर: ब्रह्माण्ड के सर्वज्ञ रचयिता ने ब्रह्माण्ड को एक वृक्ष की तरह बनाया, जिसके सबसे उत्तम फल चेतन प्राणी हैं, और चेतन प्राणियों में उसने मनुष्य को उसका सबसे व्यापक फल बनाया। और मनुष्य का सबसे महत्वपूर्ण फल, वास्तव में उसकी रचना का परिणाम, उसकी प्रकृति का उद्देश्य, और उसके जीवन का फल उसका धन्यवाद और आराधना है। क्या वह पूर्ण प्रभुता संपन्न और स्वतंत्र शासक, एकता का वह एकमात्र, जो स्वयं को ज्ञात और प्रिय बनाने के लिए ब्रह्माण्ड का निर्माण करता है, वह मनुष्य को, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का फल, और मनुष्य का धन्यवाद और आराधना, अपना सबसे श्रेष्ठ फल, दूसरों को दे देगा? अपनी बुद्धि के बिल्कुल विपरीत, क्या वह ब्रह्माण्ड की रचना और फल के परिणाम को व्यर्थ और निरर्थक बना देगा? भगवान न करे! क्या वह प्राणियों की पूजा को दूसरों को इस तरह देने में संतुष्ट होगा, जो उसकी बुद्धि और उसके प्रभुत्व को नकारता हो? और यद्यपि वह अपने कार्यों के माध्यम से प्रदर्शित करता है कि वह स्वयं को असीमित सीमा तक ज्ञात और प्रिय बनाना चाहता है, क्या वह अपने सबसे उत्तम प्राणियों को उनका धन्यवाद और कृतज्ञता, प्रेम और आराधना कारणों को सौंपकर उन्हें उसे भूलने देगा, और उन्हें ब्रह्माण्ड में उच्च उद्देश्यों को अस्वीकार करने के लिए प्रेरित करेगा?

हे मित्र, प्रकृति की पूजा छोड़ देने वाले! अब यह आपको कहना है! इस पर उन्होंने उत्तर दिया:

"ईश्वर की स्तुति हो, मेरे ये दो संदेह अब हल हो गए हैं। और ईश्वरीय एकता के बारे में आपके दो प्रमाण जो दर्शाते हैं कि उपासना का एकमात्र सच्चा उद्देश्य ईश्वर ही है, और उसके अलावा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है, इतने शानदार और शक्तिशाली हैं कि उन्हें नकारने के लिए उतने ही अहंकार की आवश्यकता होगी जितनी सूर्य और दिन को नकारने के लिए।"

निष्कर्ष

जिस व्यक्ति ने नास्तिक प्रकृतिवाद को त्याग दिया और विश्वास करने लगा, उसने कहा: "ईश्वर की स्तुति हो, मुझे अब कोई संदेह नहीं है, लेकिन अभी भी कुछ प्रश्न हैं जिनके बारे में मैं उत्सुक हूँ।"

पहला सवाल

"हम बहुत से आलसी लोगों और पाँचों दैनिक प्रार्थनाओं की उपेक्षा करने वालों को पूछते हुए सुनते हैं: 'हमारे इबादत के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर को क्या ज़रूरत है कि कुरान में वह उन लोगों को कठोर और आग्रहपूर्वक फटकार लगाता है जो इबादत छोड़ देते हैं और उन्हें नरक जैसी भयानक सज़ा की धमकी देता है? कुरान की शैली के साथ, जो कि उदार, सौम्य और निष्पक्ष है, एक महत्वहीन, मामूली गलती के प्रति अत्यधिक कठोरता का प्रदर्शन करना कैसे संभव है?"

जवाब: अल्लाह को तुम्हारी इबादत की ज़रूरत नहीं है, न ही किसी और चीज़ की। तुम्हें ही इबादत की ज़रूरत है, क्योंकि असल में तुम बीमार हो। जैसा कि हमने रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में साबित किया है, इबादत तुम्हारे रूहानी ज़ख्मों के लिए एक तरह का इलाज है। तुम समझ सकते हो कि यह कितना बेतुका होगा अगर एक बीमार व्यक्ति एक दयालु डॉक्टर को जवाब दे जो उसे उसकी बीमारी के लिए फायदेमंद दवाएँ लेने पर ज़ोर देता है, यह कहकर: “तुम्हें इसकी क्या ज़रूरत है कि तुम इस तरह से ज़िद कर रहे हो?”

जहाँ तक कुरान में उपासना छोड़ने के सम्बन्ध में दी गई कठोर धमकियों और भयानक दण्डों का प्रश्न है, तो उनकी तुलना एक राजा से की जा सकती है, जो अपनी प्रजा के अधिकारों की रक्षा के लिए एक साधारण व्यक्ति को उसके अपराध के अनुसार उसके अधिकारों का उल्लंघन करने के आधार पर कठोर दण्ड देता है।

इसी तरह, जो व्यक्ति पूजा और अनुष्ठान प्रार्थना को त्याग देता है, वह प्राणियों के अधिकारों का महत्वपूर्ण तरीके से उल्लंघन कर रहा है, जो कि पूर्व-अनंत काल और उत्तर-अनंत काल के सम्राट के अधीन हैं, और वास्तव में उनके प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार कर रहा है। क्योंकि प्राणियों की पूर्णता उनके उस पहलू द्वारा की गई महिमा और पूजा के माध्यम से प्रकट होती है जो उनके निर्माता की ओर निर्देशित होती है। जो व्यक्ति पूजा को त्याग देता है, वह इस पूजा को नहीं देख सकता है। वास्तव में, वह इसे अस्वीकार करता है। इसके अलावा, प्राणी अपनी पूजा और महिमा के कारण एक उच्च स्थान पर रहते हैं, और प्रत्येक प्राणी अनंत काल से मांगे जाने वाले का संदेश है, और अपने पालनहार के नामों का दर्पण है।

चूँकि वह उन्हें उनके उच्च पदों से हटा देता है और उन्हें महत्वहीन, निर्जीव, लक्ष्यहीन और कर्तव्यहीन मानता है, इसलिए वह उनका अपमान कर रहा है और उन्हें नकार रहा है।
और अपनी पूर्णता का उल्लंघन कर रहे हैं।

वास्तव में, हर कोई दुनिया को अपने ही आईने में देखता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर

मनुष्य को ब्रह्मांड के लिए एक माप और पैमाने के रूप में बनाया गया। और दुनिया से उसने प्रत्येक व्यक्ति को एक विशेष दुनिया दी। इस दुनिया को वह उसके लिए उसकी ईमानदार मान्यताओं के अनुसार रंग देता है। उदाहरण के लिए, एक निराश, विलाप करने वाला, रोने वाला व्यक्ति प्राणियों को रोते हुए और निराशा में देखता है, जबकि एक हंसमुख, आशावादी, प्रसन्न व्यक्ति ब्रह्मांड को आनंदित और मुस्कुराते हुए देखता है। गंभीर पूजा और महिमा के लिए समर्पित एक चिंतनशील व्यक्ति एक हद तक प्राणियों की निश्चित, वास्तव में विद्यमान पूजा और महिमा को खोजता और देखता है, जबकि एक व्यक्ति जो उपेक्षा या इनकार के माध्यम से पूजा को त्याग देता है, वह प्राणियों को उनकी पूर्णता की वास्तविकता के बिल्कुल विपरीत और विरोधी तरीके से देखता है और इस तरह उनके अधिकारों का उल्लंघन करता है।

इसके अलावा, चूँकि जो व्यक्ति प्रार्थना करना छोड़ देता है, वह खुद का मालिक नहीं होता, इसलिए वह अपनी आत्मा के साथ अन्याय करता है, जो अपने सच्चे मालिक की गुलाम है। उसका मालिक अपने गुलाम के अधिकारों को उसकी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा से बचाने के लिए भयानक धमकियाँ देता है।
इसके अलावा, चूंकि उसने उपासना को त्याग दिया है, जो उसकी सृष्टि का परिणाम और उसकी प्रकृति का उद्देश्य है, यह ईश्वरीय ज्ञान और प्रभुत्वशाली इच्छा के विरुद्ध आक्रमण के समान है, और इसलिए उसे दंड मिलता है।

संक्षेप में: उपासना का परित्याग करने वाला व्यक्ति अपनी आत्मा के साथ अन्याय करता है, जो सर्वशक्तिमान ईश्वर की दास और पूर्णतः स्वामित्व वाली संपत्ति है, और ब्रह्मांड की पूर्णता के अधिकारों के साथ अन्याय करता है और उनका उल्लंघन करता है। निश्चित रूप से, जिस तरह अविश्वास प्राणियों का अपमान है, उसी तरह उपासना का परित्याग ब्रह्मांड की पूर्णता का खंडन है। और चूंकि यह ईश्वरीय ज्ञान के विरुद्ध आक्रमण का कार्य है, इसलिए यह भयानक धमकियों और कठोर दंड का पात्र है।

इस प्रकार, इस योग्यता और उपरोक्त तथ्यों को व्यक्त करने के लिए ही कुरान ने चमत्कारिक ढंग से उस कठोर शैली का चयन किया है, जो वाक्पटुता के सिद्धांतों के पूर्ण अनुरूप है तथा परिस्थिति की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

दूसरा सवाल

वह व्यक्ति जो प्रकृतिवाद को त्याग चुका था और विश्वास करने लगा था, उसने अगला प्रश्न पूछा:

"यह वास्तव में एक विशाल सत्य है कि प्रत्येक प्राणी हर पहलू में ईश्वरीय इच्छा और प्रभुत्वशाली शक्ति पर निर्भर है; अपने सभी कार्यों, गुणों और कार्यों में। हमारी संकीर्ण बुद्धि इसकी विशालता के कारण इसे समझ नहीं पाती। हालाँकि, हम अपने आस-पास जो असीम प्रचुरता देखते हैं, और चीजों के निर्माण और निर्माण में असीम सहजता, और एकता के मार्ग में असीम सहजता और सुविधा, जो आपके उपरोक्त प्रमाणों के माध्यम से स्थापित हुई, और असीम सहजता जिसे कुरान की निम्नलिखित आयतें स्पष्ट रूप से प्रदर्शित और व्याख्या करती हैं,

तुम्हारी रचना और पुनरुत्थान एक आत्मा के समान है, (31:28)

और,

क़ियामत का मामला बस पलक झपकने जैसा है, या उससे भी ज़्यादा नज़दीक है (16:77)

इस महान सत्य को सबसे स्वीकार्य और तर्कसंगत विषय के रूप में प्रदर्शित करें। इस सहजता का ज्ञान और रहस्य क्या है?”

उत्तर: इस मामले को सबसे स्पष्ट, निर्णायक और ठोस तरीके से "और वह सभी चीजों पर शक्तिशाली है" की व्याख्या में स्पष्ट किया गया था, जो बीसवें पत्र का दसवां वाक्य है। और उस पत्र के परिशिष्ट में यह और भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया था कि जब एकल निर्माता को जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो सभी प्राणी एक ही प्राणी के समान आसान हो जाते हैं। यदि उन्हें एकता के उस एकल के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो एक प्राणी का निर्माण सभी प्राणियों के समान कठिन हो जाता है, और एक बीज एक पेड़ के समान समस्याग्रस्त हो जाता है। जब उन्हें उनके सच्चे निर्माता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो ब्रह्मांड एक पेड़ की तरह आसान और परेशानी मुक्त हो जाता है, एक पेड़ एक बीज की तरह आसान हो जाता है, स्वर्ग वसंत की तरह आसान हो जाता है, और वसंत एक फूल की तरह आसान हो जाता है। अब हम सैकड़ों प्रमाणों में से एक या दो प्रमाणों की ओर संक्षेप में संकेत करेंगे, जिनकी व्याख्या रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में विस्तार से की गई है, जो प्राणियों की स्पष्ट, असीम प्रचुरता और प्रचुरता, प्रत्येक प्रजाति में व्यक्तियों की बड़ी संख्या की सहजता, तथा इस तथ्य के अंतर्निहित कारणों और बुद्धिमत्ता के उदाहरणों की व्याख्या करते हैं कि सुव्यवस्थित, कलात्मक रूप से निर्मित और मूल्यवान प्राणी अत्यधिक गति और सहजता से अस्तित्व में आते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि सौ सैनिकों की कमान एक अधिकारी को दी जाए, तो यह सौ गुना आसान है, बजाय इसके कि एक सैनिक की कमान सौ अधिकारियों को दी जाए। और यदि सेना को सुसज्जित करने के लिए उसे एक मुख्यालय, एक कानून, एक कारखाना और एक राजा की कमान सौंपी जाए, तो यह एक सैनिक को सुसज्जित करने जितना ही आसान हो जाता है। इसी तरह, यदि एक सैनिक को सुसज्जित करने के लिए उसे कई मुख्यालयों, कई कारखानों और कई कमांडरों को सौंपा जाए, तो यह एक सेना को सुसज्जित करने जितना ही मुश्किल हो जाता है। क्योंकि एक सैनिक को सुसज्जित करने के लिए, उतनी ही फैक्ट्रियों की आवश्यकता होगी जितनी एक पूरी सेना के लिए आवश्यक है।

फिर, चूँकि एकता के रहस्य के कारण, एक पेड़ की महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ एक जड़, एक केंद्र के माध्यम से प्रदान की जाती हैं और एक नियम के अनुसार, यह एक फल की तरह ही आसानी से हज़ारों फल पैदा करता है। यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यदि एकता बहुलता में बदल जाती है और प्रत्येक फल के लिए सभी आवश्यक वस्तुएँ अलग-अलग स्थानों से प्रदान की जाती हैं, तो प्रत्येक फल का उत्पादन करना उतना ही कठिन हो जाता है जितना कि पेड़ का उत्पादन करना। और एक बीज का उत्पादन करना, जो कि पेड़ का एक नमूना और सूचकांक है, पेड़ जितना ही कठिन हो जाता है।

क्योंकि पेड़ के जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें बीज के लिए भी आवश्यक हैं।

इस तरह के सैकड़ों उदाहरण हैं जो दर्शाते हैं कि हज़ारों प्राणियों का एकता के ज़रिए अस्तित्व में आना, एक प्राणी के अनेकता के ज़रिए अस्तित्व में आने और ईश्वर को भागीदार बनाने से ज़्यादा आसान है। चूँकि यह सच्चाई रिसाले-ए-नूर के दूसरे हिस्सों में पूरी तरह से निश्चितता के साथ साबित हो चुकी है, इसलिए हम आपको उनका हवाला देते हैं और यहाँ सिर्फ़ ईश्वरीय ज्ञान, ईश्वरीय निर्धारण और प्रभुतापूर्ण शक्ति के दृष्टिकोण से इस आसानी और सुविधा का एक महत्वपूर्ण कारण बताते हैं। यह इस प्रकार है:

आप एक प्राणी हैं। यदि आप स्वयं को पूर्व-शाश्वत सर्वशक्तिमान मानते हैं, तो वह आपको अपनी असीम शक्ति से एक आदेश पर एक पल में शून्य से बनाता है, जैसे माचिस जलाना। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं और इसके बजाय स्वयं को भौतिक कारणों और प्रकृति से जोड़ते हैं, क्योंकि आप ब्रह्मांड का एक सुव्यवस्थित सारांश, फल और लघु सूचकांक और सूची हैं, तो आपको बनाने के लिए, ब्रह्मांड और उसके तत्वों को एक महीन छलनी से छानना और ब्रह्मांड के सभी कोनों से सटीक माप में उन पदार्थों को इकट्ठा करना आवश्यक होगा जिनसे आपका शरीर बना है। क्योंकि भौतिक कारण केवल इकट्ठा होते हैं और एक साथ जुड़ते हैं। तर्कशील लोगों द्वारा इसकी पुष्टि की गई है कि वे शून्य से वह नहीं बना सकते जो उनके अंदर मौजूद नहीं है। चूंकि यह मामला है, इसलिए उन्हें ब्रह्मांड के हर कोने से एक छोटे से सजीव प्राणी के शरीर को इकट्ठा करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

अब समझिए कि एकता, ईश्वरीय एकता में कितनी आसानी है, और गुमराह होने और ईश्वर को साझीदार ठहराने में कितनी कठिनाइयाँ हैं!

दूसरे, दिव्य ज्ञान के सम्बन्ध में भी असीम सरलता है। यह इस प्रकार है: दिव्य निर्धारण दिव्य ज्ञान का एक पहलू है; यह प्रत्येक वस्तु के लिए एक माप निर्धारित करता है, जो उसके विशिष्ट तथा अमूर्त ढांचे के समान होता है; निर्धारित माप वस्तु के अस्तित्व के लिए एक योजना या प्रतिरूप के समान होता है। जब दिव्य शक्ति सृजन करती है, तो वह निर्धारित माप के अनुसार अत्यंत सहजता से ऐसा करती है। यदि वस्तु को सर्वशक्तिशाली महिमावान के द्वारा नहीं माना जाता, जिसके पास सर्वव्यापी, अनंत तथा पूर्व-शाश्वत ज्ञान है, जैसा कि ऊपर वर्णित किया गया है, तो न केवल हजारों कठिनाइयाँ, बल्कि सैकड़ों असंभवताएँ भी सामने आती हैं। क्योंकि यदि दिव्य ज्ञान में विद्यमान निर्धारित माप न होता, तो एक छोटे से सजीव प्राणी के शरीर में भी बाह्य अस्तित्व वाले हजारों भौतिक ढांचे काम में लाने पड़ते।

अतः एकता में असीम सहजता और गुमराही तथा ईश्वर के साथ साझीदार बनाने में अनंत कठिनाइयों का एक कारण समझो। समझो कि आयत में कितना सच्चा, सही और महान सत्य कहा गया है,

क़ियामत का मामला बस पलक झपकने जैसा होगा, या उससे भी अधिक निकट होगा।

तीसरा प्रश्न

भूतपूर्व शत्रु और अब सही मार्गदर्शित मित्र ने पूछा: "दार्शनिक, जिन्होंने इन दिनों बहुत प्रगति की है, दावा करते हैं कि कुछ भी शून्य से नहीं बनता है, और कुछ भी नष्ट नहीं होता है और कुछ भी नहीं जाता है; केवल खाद और अपघटन होता है, और इसी से ब्रह्मांड का कारखाना चलता है। क्या यह सही है?"

उत्तर: चूँकि सबसे उन्नत दार्शनिकों ने, जिन्होंने कुरान की रोशनी में प्राणियों पर विचार नहीं किया, देखा कि प्रकृति और कारणों के माध्यम से प्राणियों का निर्माण और अस्तित्व इतना कठिन है कि असंभव है - जैसा कि ऊपर सिद्ध किया गया है, वे दो समूहों में विभाजित हो गए।

एक समूह सोफिस्ट बन गया; तर्क को त्याग दिया, जो कि केवल मनुष्यों के लिए है, और नासमझ जानवरों से भी नीचे गिर गया, उन्होंने ब्रह्मांड के अस्तित्व और यहां तक कि अपने स्वयं के अस्तित्व को नकारना आसान पाया, बजाय गुमराह करने के रास्ते पर चलने के, जो दावा करता है कि कारणों और प्रकृति में सृजन करने की शक्ति है। इसलिए उन्होंने खुद और ब्रह्मांड दोनों को नकार दिया और पूर्ण अज्ञानता में उतर गए।

दूसरे समूह ने देखा कि गुमराही में, जिसके अनुसार कारण और प्रकृति निर्माता हैं, एक मक्खी या बीज का निर्माण भी असंख्य कठिनाइयों को जन्म देता है और तर्क के लिए अस्वीकार्य शक्ति की आवश्यकता होती है। इसलिए वे सृजन के कार्य को नकारने और यह कहने के लिए बाध्य थे: "कुछ भी नहीं से कुछ भी अस्तित्व में नहीं आ सकता।" पूर्ण विनाश को भी असंभव मानते हुए, उन्होंने घोषणा की: "जो मौजूद है वह शून्य में नहीं जा सकता।"

उन्होंने एक काल्पनिक स्थिति की कल्पना की जिसमें कणों की गति और संयोग की हवाओं के माध्यम से संयोजन और विघटन, एकत्रीकरण और फैलाव होता है।

अब देखो! जो लोग खुद को सबसे बुद्धिमान समझते हैं, वे सबसे ज्यादा अज्ञानी और मूर्ख हैं। समझो कि गुमराही इंसान को कितना हास्यास्पद, पतित और अज्ञानी बना देती है, और उससे सबक लो!

वास्तव में, एक पूर्व-शाश्वत शक्ति ने छह दिनों में आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया, हर साल पृथ्वी पर एक साथ चार लाख प्रजातियों का निर्माण किया, और हर वसंत में छह सप्ताह में एक जीवंत दुनिया का निर्माण किया जो स्वयं दुनिया से भी अधिक कला और ज्ञान से भरी हुई है। इस प्रकार, यह सोफिस्टों, ऊपर के पहले समूह से भी अधिक मूर्खतापूर्ण और अज्ञानी है, जो सृजन के कार्य को नकारते हैं और इसे असंभव मानते हैं, जैसे कि एक रसायन जो लागू होने पर अदृश्य लेखन दिखाता है, पूर्व-शाश्वत शक्ति को प्राणियों को बाहरी अस्तित्व देना चाहिए, जो बाहरी रूप से अस्तित्वहीन होते हुए भी ज्ञान के रूप में मौजूद हैं, और जिनकी योजनाएँ और उपाय पूर्व-शाश्वत ज्ञान के दायरे में निर्धारित होते हैं।

वे अभागे लोग पूरी तरह से शक्तिहीन हैं और उनके पास इच्छाशक्ति के अलावा कुछ भी नहीं है। हालाँकि वे बहुत फूले हुए हैं

फिरौन, वे न तो कुछ नष्ट कर सकते हैं और न ही शून्य से कुछ बना सकते हैं, यहाँ तक कि एक छोटा कण भी नहीं। और इसलिए, हालाँकि वे कारणों और प्रकृति के हाथों शून्य से कुछ भी अस्तित्व में नहीं आता है, जिस पर वे भरोसा करते हैं, अपनी मूर्खता के कारण वे कहते हैं: "कुछ भी अस्तित्वहीनता से नहीं आता है, और कुछ भी अस्तित्वहीनता में नहीं जाता है।" और वे इस बेतुके और गलत सिद्धांत को परम सर्वशक्तिमान तक भी बढ़ाते हैं।

वास्तव में, सर्वशक्तिमान महिमावान के पास सृजन के दो तरीके हैं: पहला है उत्पत्ति और आविष्कार के माध्यम से। अर्थात्,

वह किसी भी चीज़ को शून्य से, गैर-अस्तित्व से अस्तित्व में लाता है, और उसके लिए आवश्यक हर चीज़ को भी शून्य से बनाता है, और उन ज़रूरतों को उसके हाथों में सौंप देता है।

दूसरा है रचना के माध्यम से, कला के माध्यम से। यानी, वह कुछ प्राणियों का निर्माण करता है
ब्रह्माण्ड के तत्वों से बाहर निकलकर ज्ञान के सूक्ष्म उदाहरण प्रदर्शित करने के लिए, जैसे कि उनकी बुद्धि की पूर्णता और उनके कई नामों की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित करना। प्रदान करने के नियम के माध्यम से, वह कणों और पदार्थों को भेजता है, जो उसके आदेश पर निर्भर हैं, इन प्राणियों के पास और उनमें कणों को नियोजित करता है।

हाँ, सर्वशक्तिमान परमेश्वर दो तरह से सृजन करता है: वह उत्पत्ति भी करता है और रचना भी करता है। जो मौजूद है उसे नष्ट करना और जो मौजूद नहीं है उसे अस्तित्व में लाना उसके लिए सबसे सरल और आसान है। यह उसके निरंतर और सार्वभौमिक नियमों में से एक है। इसलिए, जो व्यक्ति कहता है: "वह जो मौजूद नहीं है उसे अस्तित्व नहीं दे सकता" एक ऐसी शक्ति के सामने जो एक ही झटके में तीन लाख चेतन प्राणियों के रूपों और गुणों को, और उनके कणों के अलावा, उनकी सभी स्थितियों और अवस्थाओं को अस्तित्व में लाती है, ऐसे व्यक्ति को खुद ही नष्ट कर दिया जाना चाहिए!

प्रकृति को त्यागकर सत्य को अपनाने वाले व्यक्ति ने कहा: "परमात्मा की स्तुति और धन्यवाद हो, क्योंकि मैं पूर्ण विश्वास तक पहुँच गया हूँ। मैं भ्रम और गुमराही से बच गया हूँ। अब मेरा एक भी संदेह नहीं रहा।"

“इस्लाम धर्म के लिए सारी प्रशंसा ईश्वर को है, और
सम्पूर्ण एवं आदर्श विश्वास!”

तेरे लिए महिमा है! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह, तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

चौबीसवाँ फ्लैश

महिलाओं के लिए इस्लामी पोशाक पर

[पंद्रहवें नोट का दूसरा और तीसरा मामला होने के बावजूद, इस ग्रंथ को इसके महत्व के कारण चौबीसवां फ्लैश बनाया गया।]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
ऐ नबी! अपनी पत्नियों और बेटियों और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे अपने शरीर पर बाहरी वस्त्र डाल लें। (33:59)

यह आयत औरतों को पर्दा करने का आदेश देती है। लेकिन, भ्रष्ट सभ्यता कुरान के इस आदेश का विरोध करती है; वह औरतों के पर्दा करने को स्वाभाविक नहीं मानती और कहती है कि यह एक तरह की गुलामी है।1

उत्तर: हम कुरान के इस आदेश में बुद्धिमत्ता के अनेक उदाहरणों में से केवल चार की व्याख्या करेंगे, जिससे यह पता चलेगा कि यह पूर्णतः प्राकृतिक है और जो लोग इसका विरोध करते हैं, वे महिलाओं की जन्मजात प्रकृति का विरोध कर रहे हैं।

बुद्धि का पहला उदाहरण

महिलाओं के लिए घूंघट करना स्वाभाविक है और उनकी जन्मजात प्रवृत्ति इसकी मांग करती है।
क्योंकि स्त्रियाँ कमज़ोर और नाजुक होती हैं, और चूँकि उन्हें अपने और अपने बच्चों के लिए पुरुष की सुरक्षा और सहायता की ज़रूरत होती है,

---

[1] अपील न्यायालय के लिए मेरे बचाव का एक हिस्सा, जिसने [एस्कीसेहिर] न्यायालय का विरोध किया और उसे चुप करा दिया: "मैं कानून की इस अदालत से कहता हूं कि अगर धरती पर न्याय है, तो यह निश्चित रूप से उस व्यक्ति को दोषी ठहराने के फैसले को रद्द कर देगा, जिसने सबसे पवित्र, सच्चे और सही ईश्वरीय सिद्धांत की व्याख्या की है, जो कि
तीन लाख पचास हज़ार कुरान की टिप्पणियों की पुष्टि और सर्वसम्मति पर भरोसा करते हुए और एक हजार तीन सौ पचास वर्षों तक अपने पूर्वजों के विश्वासों का पालन करते हुए, हर शताब्दी में तीन सौ पचास मिलियन लोगों के सामाजिक जीवन में एक हजार तीन सौ पचास वर्षों तक बल लागू करना; यह निश्चित रूप से ऐसे फैसले को रद्द कर देगा!

वे अपने जीवन से भी अधिक प्रेम करते हैं, उनमें यह स्वाभाविक इच्छा होती है कि लोग उनसे प्रेम करें, घृणा न करें, तथा उन्हें तिरस्कृत न किया जाए।

इसके अलावा, दस में से सात महिलाएँ या तो बूढ़ी या बदसूरत होती हैं और वे अपनी उम्र या बदसूरती को सबके सामने नहीं दिखाना चाहती हैं। या वे ईर्ष्यालु होती हैं और वे दूसरों के मुकाबले बदसूरत नहीं दिखना चाहती हैं जो उनसे ज़्यादा खूबसूरत हैं। या वे हमले या बदनामी से डरती हैं और स्वभाव से खुद को ढकना चाहती हैं ताकि उन पर हमला न हो और न ही उनके पति उन पर बेवफ़ाई का आरोप लगाएँ। अगर ध्यान से देखा जाए तो पाया जाता है कि बुज़ुर्ग ही खुद को सबसे ज़्यादा छिपाते हैं। जबकि दस में से सिर्फ़ दो या तीन महिलाएँ ही जवान और खूबसूरत होती हैं और खुद को दिखाने में असहज महसूस नहीं करती हैं।

यह स्पष्ट है कि लोग उन लोगों द्वारा देखे जाने से असहज महसूस करते हैं जिन्हें वे पसंद नहीं करते या जिन्हें उबाऊ मानते हैं; वे इससे परेशान होते हैं। यदि एक सुंदर, बेढंगे कपड़े पहने महिला दस में से दो या तीन पुरुषों को देखकर खुश होती है जो कि प्रामाणिक रूप से अजनबी हैं, तो वह सात या आठ से ऊब जाती है। साथ ही, चूंकि एक भ्रष्ट नैतिकता वाली महिला संवेदनशील होती है और आसानी से प्रभावित हो जाती है, इसलिए वह निश्चित रूप से गंदी नज़रों से परेशान होगी, जिसके प्रभाव शारीरिक रूप से अनुभव किए गए हैं, वास्तव में, जहरीले हैं। हम यह भी सुनते हैं कि यूरोप में, खुले कपड़ों की जगह, कई महिलाएँ ध्यान का विषय बनने से तंग आ चुकी हैं, और पुलिस से शिकायत करते हुए कहती हैं: "ये दरिंदे हमें घूरते रहते हैं और हमें परेशान करते हैं।" इसका मतलब यह है कि वर्तमान सभ्यता की महिलाओं का पर्दा न करना उनके स्वभाव के विपरीत है, जबकि कुरान का खुद को पर्दा करने का आदेश महिलाओं के स्वभाव के साथ असंगत है, और उन्हें - करुणा की उन खानों को जो अनंत काल तक योग्य साथी हो सकती हैं - पतन, पतन, जो वास्तव में गुलामी और दुर्दशा है, से बचाता है।

इसके अलावा, स्वभाव से ही महिलाएँ अजनबी पुरुषों से डरती हैं और उनसे चिंतित रहती हैं। डर स्वाभाविक रूप से महिलाओं को घूंघट करने की मांग करता है। क्योंकि आठ या नौ महीने तक बच्चे का बोझ उठाने की कठिनाई के अलावा, जो निश्चित रूप से आठ या नौ मिनट के आनंद को कड़वा कर देता है, आठ या नौ साल तक बिना किसी संरक्षक के बच्चे को पालने की आपदा को झेलने की संभावना है।

ऐसा अक्सर होता है, इसलिए वे स्वभाव से ही अजनबियों से सचमुच डरती हैं और स्वभाव से ही उनसे छिपना चाहती हैं। कमजोर होने के कारण उनकी रचना यह मांग करती है कि वे घूंघट करके निर्धारित सीमा से बाहर के पुरुषों की इच्छाओं को न भड़काएं, न ही आक्रमण का कोई अवसर दें; उनकी कमजोर रचना शक्तिशाली चेतावनी देती है। यह दर्शाता है कि उनके लबादे और कोट ढाल और किले हैं। यह तथ्य कि, प्राप्त समाचारों के अनुसार, दुनिया के एक उच्च पदस्थ व्यक्ति की नंगी टाँग वाली पत्नी को देश की राजधानी में, दिन के उजाले में, सबके सामने एक साधारण जूता पॉलिश करने वाले ने छेड़ा, महिलाओं के घूंघट का विरोध करने वालों के बेशर्म मुँह पर तमाचा है!

बुद्धि का दूसरा उदाहरण

स्त्री-पुरुष के बीच सच्चा, प्रगाढ़ संबंध, प्रेम और स्नेह केवल सांसारिक जीवन की आवश्यकताओं से उत्पन्न नहीं होता। हाँ, स्त्री अपने पति की साथी केवल इस सांसारिक जीवन में ही नहीं, बल्कि अनंत जीवन में भी उसकी साथी होती है। चूँकि वह अनंत जीवन में अपने पति की साथी होगी, इसलिए उसे अपने पति, अपने शाश्वत मित्र और साथी के अलावा दूसरों की ओर आकर्षित नहीं होना चाहिए, और उसे नाराज़ नहीं करना चाहिए और उसे ईर्ष्यालु नहीं बनाना चाहिए। विश्वास के रहस्य के परिणामस्वरूप, उसके विश्वासी पति का उसके साथ संबंध इस सांसारिक जीवन तक ही सीमित नहीं है और उसका प्रेम केवल पशुवत और क्षणिक नहीं है, जब तक उसकी सुंदरता बनी रहती है; वह उसके प्रति सच्चा, ईमानदार प्रेम और सम्मान रखता है क्योंकि वह अनंत जीवन में उसकी साथी होगी। और वह उसके प्रति वह प्रेम और सम्मान रखता है, न केवल उसकी युवावस्था में जब वह सुंदर होती है, बल्कि तब भी जब वह बूढ़ी और बदसूरत होती है। निश्चित रूप से इसके बदले में, उसे अपनी सुंदरता केवल उसी को दिखानी चाहिए और अपना प्रेम उसी तक सीमित रखना चाहिए; यह मानवता की माँग है।

अन्यथा उसे बहुत कम लाभ होगा और बहुत अधिक हानि होगी।

शरिया के अनुसार पति को अपनी पत्नी के लिए एक अच्छा साथी होना चाहिए। यानी दोनों एक दूसरे के लिए उपयुक्त होने चाहिए। इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलू धर्म के दृष्टिकोण से है।

वह पति धन्य है जो पत्नी के दृढ़ धर्म को देखकर उसका पालन करता है, और
वह अपने अनन्त जीवन के साथी को न खोने के लिए स्वयं भी धर्मपरायण हो जाता है।

वह पत्नी धन्य है जो अपने पति को धर्म में दृढ़ देखकर स्वयं भी धर्मपरायण हो जाती है, ताकि अपने शाश्वत मित्र को न खो दे।

हाय उस पुरुष पर जो भ्रष्ट हो जाता है, वह उस धर्मी स्त्री को सदा के लिए खो देता है।

उस स्त्री के लिए अफसोस की बात है जो अपने पवित्र पति का अनुसरण नहीं करती और अपने शाश्वत धन्य मित्र को खो देती है।

और उन दुखी पति-पत्नी पर हज़ार विपत्तियाँ हैं जो पाप और बुराई में एक-दूसरे का अनुकरण करते हैं, और एक-दूसरे को नरक की आग में जाने में मदद करते हैं!

बुद्धि का तीसरा उदाहरण

पति-पत्नी के बीच आपसी विश्वास और दिल से सम्मान और प्यार के ज़रिए खुशहाल पारिवारिक जीवन कायम रहता है। बेढंगे कपड़े और उन्मुक्त व्यवहार आत्मविश्वास को नष्ट करते हैं और आपसी सम्मान और प्यार को बिगाड़ते हैं। बेढंगे कपड़े पहनने वाली दस महिलाओं में से सिर्फ़ एक ही अजनबियों को पसंद करने की कोशिश नहीं करेगी क्योंकि उसे अपने पति से ज़्यादा दूसरे पुरुष आकर्षक नहीं लगते। नौ को दूसरे अपने पति से बेहतर लगेंगे। और बीस में से सिर्फ़ एक पुरुष को दूसरे पुरुष पसंद नहीं आएंगे

औरत

अधिक आकर्षक। तब सच्चा प्यार और आपसी सम्मान गायब होने के अलावा, यह बेहद बदसूरत और नीच भावनाओं को जगा सकता है, जैसे कि:

स्वभाव से, पुरुष अपनी बहनों जैसे निर्धारित रिश्तेदारी के दायरे में आने वाली महिलाओं के प्रति कोई वासना महसूस नहीं करते, क्योंकि चूँकि ऐसे रिश्तेदारों के चेहरे उनके करीबी रिश्तेदारों के कारण दयालुता और वैध प्रेम को प्रेरित करते हैं, इसलिए यह किसी भी यौन या कामुक प्रवृत्ति को समाप्त कर देता है। लेकिन शरीर के उन हिस्सों को खुला छोड़ना जिन्हें शरीयत के अनुसार करीबी रिश्तेदारों के सामने उजागर करना जायज़ नहीं है जैसे कि पैर, कम चरित्र वाले पुरुषों में बेहद बदसूरत भावनाएँ जगा सकते हैं। क्योंकि एक करीबी रिश्तेदार का चेहरा आदमी को उनके करीबी रिश्तेदारों की याद दिलाता है और रिश्तेदारी के दायरे से बाहर किसी के चेहरे जैसा नहीं होता, लेकिन एक नंगी टाँग विहित अजनबियों के चेहरे जैसी ही होती है। पैर पर अपने मालिक के करीबी रिश्तेदारों को याद दिलाने के लिए कोई विशिष्ट चिह्न होता है, इसलिए यह आदमी में कामुक भावनाएँ जगा सकता है। ऐसी चीज़ों को देखना इतना पतित है कि किसी के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

बुद्धि का चौथा उदाहरण

यह स्पष्ट है कि हर कोई बहुत सारे बच्चे चाहता है। कोई भी राष्ट्र या सरकार ऐसी नहीं है जो जनसंख्या वृद्धि का समर्थन न करती हो। वास्तव में, ईश्वर के सबसे महान दूत (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने कहा: "विवाह करो और बढ़ो, क्योंकि अंतिम दिन मैं तुम्हारी बड़ी संख्या पर गर्व करूंगा।"[2] हालांकि, महिलाओं के लिए इस्लामी पोशाक को त्यागने से विवाह में वृद्धि नहीं होती है, बल्कि यह काफी हद तक घट जाती है। क्योंकि सबसे आलसी और आधुनिक युवा भी चाहता है कि उसकी पत्नी पवित्र हो। वह नहीं चाहता कि वह आधुनिक हो, यानी, अपने जैसे कपड़े और नैतिकता के मामले में लापरवाह हो, और इसलिए अविवाहित रहता है, और यहां तक कि वेश्याओं के पास भी जाता है।

औरतें ऐसी नहीं हैं, वे अपने पतियों के व्यवहार पर उसी हद तक प्रतिबंध नहीं लगा सकतीं। औरतों की सबसे बुनियादी विशेषताएँ वफ़ादारी और विश्वसनीयता हैं, क्योंकि घर से जुड़े सभी मामलों की निर्देशक होने के नाते, औरत पर अपने पति की संपत्ति और बच्चों की सुरक्षा और संरक्षण का दायित्व होता है। पहनावे और आचार-विचार में लापरवाही उस वफ़ादारी को नष्ट कर देती है, और उसका पति उस पर से भरोसा खो देता है और उसे अंतरात्मा की पीड़ा से गुज़रना पड़ता है। दरअसल, अगर साहस और उदारता के दो गुण, जो पुरुषों में वांछनीय हैं, महिलाओं में पाए जाते हैं, तो यह इस वफ़ादारी और आत्मविश्वास को नुकसान पहुँचाते हैं और इसलिए महिलाओं के लिए अवांछनीय हैं और बुरे गुण माने जाते हैं। लेकिन चूँकि पति का कर्तव्य वफ़ादारी और प्रबन्धन नहीं है, बल्कि सुरक्षा, दया और सम्मान है, इसलिए उसे प्रतिबंधित और परिष्कृत नहीं किया जा सकता है, और वह दूसरी महिलाओं से भी शादी कर सकता है।

[2] अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, iii, 269, संख्या: 3366; अल-'अजलुनी, कशफ अल-खफ़ा', संख्या: 1021; अल-सुयुति, जामी अल-सगीर, संख्या: 3366।

हमारे देश की तुलना यूरोप से नहीं की जा सकती, क्योंकि वहाँ पर द्वन्द्व जैसे हिंसक तरीकों से, भले ही वह कितना भी अभद्र वस्त्र क्यों न हो, सम्मान की रक्षा की जा सकती है। जो व्यक्ति किसी स्वाभिमानी व्यक्ति की पत्नी पर आँख मारता है, वह अपनी जान हथेली पर लेकर देखता है। यूरोप के लोग भी वहाँ की जलवायु की तरह ठण्डे और बर्फीले होते हैं। एशिया, अर्थात् इस्लाम के देश, अपेक्षाकृत अधिक उष्ण होते हैं। यह सर्वविदित है कि वातावरण का लोगों की नैतिकता पर प्रभाव पड़ता है। शायद उन ठण्डे देशों में अभद्र वस्त्र उन ठण्डे लोगों की पशुवत तृष्णाओं और शारीरिक इच्छाओं को उत्तेजित न करते हों, और दुर्व्यवहार का कारण न बनते हों। लेकिन गर्म देशों के आसानी से प्रभावित होने वाले और संवेदनशील लोगों की शारीरिक वासनाएँ अभद्र वस्त्रों से लगातार उत्तेजित होती रहती हैं, जो इस प्रकार बहुत अधिक दुर्व्यवहार और बरबादी का कारण बनती हैं और युवा पीढ़ी को कमजोर बनाती हैं, और शक्ति का ह्रास करती हैं।

एक व्यक्ति हर महीने या हर तीन सप्ताह में अपनी प्राकृतिक जरूरतों को पूरा करने के बजाय हर कुछ दिनों में इसे जरूरी समझता है। और फिर, चूंकि उसे हर महीने में से शायद दो सप्ताह अपनी पत्नी से दूर रहना पड़ता है, इसलिए अगर वह अपनी भूख से हार जाता है, तो वह बदनाम घरों में चला जाता है।

छोटे शहरों और गांवों की महिलाओं और खानाबदोश महिलाओं के बहाने महिलाओं का पर्दा समाप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि मासूम कामकाजी महिलाओं और कुछ हद तक असभ्य महिलाओं के आंशिक रूप से पर्दा किए जाने से कामुक इच्छाएं नहीं जागृत होतीं, क्योंकि ऐसा उनके आजीविका को सुरक्षित करने के लिए काम करने और उनके शारीरिक, थकाऊ श्रम के कारण होता है।

इसके अलावा, चूंकि बेकार और आवारा लोग बहुत कम हैं और बड़े शहरों के अनैतिक लोगों में से दस में से एक भी उनमें नहीं पाया जाता, इसलिए ऐसी तुलना नहीं की जानी चाहिए।

उसके नाम में उसकी महिमा हो!

महिलाओं के साथ बातचीत,
परलोक की मेरी विश्वासी बहनों

जब मैं तीसरी बार धन्य इस्पार्टा लौटा, जो मेद्रेसेतुज़-ज़हरा का अर्थ रखता है, तो मैंने कुछ अन्य प्रांतों में महिलाओं द्वारा रिसाले-ए-नूर के प्रति दिखाई गई ईमानदारी और उत्साही रुचि देखी थी, और महसूस किया था कि एक तरह से वे मेरे हक़ से कहीं ज़्यादा इस बात पर भरोसा करती थीं कि मैं उन्हें शिक्षा दे रहा हूँ। मैंने तब सुना कि इस्पार्टा की महिलाएँ, मेरी धन्य परलोक की बहनें, मुझसे शिक्षा प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रही थीं, जैसे कि मैं उन्हें उपदेश देने के तरीके से मस्जिदों में शिक्षा देने जा रहा हूँ। मैं पाँच या उससे ज़्यादा बीमारियों से पीड़ित था, एक दयनीय स्थिति में था, बोलने और सोचने की शक्ति नहीं थी, फिर भी उस रात मेरे दिल में निम्नलिखित बात ने मुझे प्रेरित किया: "पंद्रह साल पहले आपने कुछ युवाओं के अनुरोध पर युवाओं के लिए एक मार्गदर्शिका लिखी थी और यह कई लोगों के लिए लाभकारी स्रोत थी। हालाँकि, इस समय महिलाओं को एक मार्गदर्शक की और भी अधिक आवश्यकता है।" अपनी अत्यधिक दुर्बलता, दयनीयता और शक्तिहीनता के बावजूद, इस चेतावनी के सामने मैंने तीन बिंदुओं में बहुत ही संक्षेप में कई आवश्यक बातें लिखीं, जिन्हें मैं अब अपनी धन्य बहनों और युवा आध्यात्मिक संतानों को समझाता हूँ।

पहला बिंदु

चूँकि रिसाले-ए-नूर के मूल सिद्धांतों में से एक करुणा है और महिलाएँ करुणा की चैंपियन हैं, इसलिए वे स्वभाव से दूसरों की तुलना में रिसाले-ए-नूर से अधिक निकटता से जुड़ी हुई हैं। भगवान की स्तुति हो, यह स्वाभाविक सहानुभूति कई जगहों पर महसूस की जाती है। ऐसी करुणा के भीतर आत्म-बलिदान बदले में कुछ नहीं चाहता है और सच्ची ईमानदारी व्यक्त करता है, और इसलिए इस समय इसका सबसे अधिक महत्व है।

हां, यह तथ्य कि बदले में कुछ भी न चाहते हुए भी, एक माँ अपने बच्चे को खतरे से बचाने के लिए अपनी जान दे देती है, जैसा कि उसकी प्रकृति की मांग है और सच्ची ईमानदारी से, यह दर्शाता है कि महिलाएँ महान वीरता के लिए सक्षम हैं। इस वीरता को विकसित करके, वे इस दुनिया और परलोक दोनों में अपने जीवन को बचा सकती हैं। हालाँकि, यह महत्वपूर्ण गुण कुछ बुरे विचारों के प्रभाव में प्रकट नहीं होता है, या फिर इसका शोषण किया जाता है। सैकड़ों में से एक छोटा सा उदाहरण इस प्रकार है:

[1] मेद्रेसेतुज़-ज़हरा के लिए, नोट 21, पृष्ठ 325 देखें।

एक दयालु माँ अपने बच्चे को इस दुनिया में खतरे में न पड़ने देने के लिए हर तरह का त्याग करती है और हर तरह का लाभ और सुविधा प्राप्त करती है; वह उसे इसी दृष्टि से पालती है। यह सोचकर कि, "मेरा बेटा पाशा बनने वाला है," वह उसे अपनी सारी संपत्ति दे देती है, उसे कुरान स्कूल से निकालकर यूरोप भेज देती है। लेकिन उसे यह नहीं पता कि उसके बच्चे का शाश्वत जीवन खतरे में पड़ गया है। वह उसे इस दुनिया की कैद से बचाने की कोशिश करती है और उसे नर्क की जेल में जाने की सजा के बारे में नहीं सोचती। उस सहज करुणा को उलट कर वह अपने मासूम बच्चे को परलोक में अपने खिलाफ दावेदार बनाती है, हालाँकि उसे उसका सिफ़ारिश करने वाला होना चाहिए। वह उसे यह कहकर डाँटेगा: "तुमने मेरे ईमान को मज़बूत क्यों नहीं किया और मुझे खो क्यों नहीं दिया?" इस दुनिया में भी, चूँकि उसे उचित इस्लामी परवरिश नहीं मिली, इसलिए वह अपनी माँ की अद्भुत करुणा का उस तरह से जवाब नहीं दे सकता जिस तरह से वह उसका हकदार है; वास्तव में वह बहुत ही अपर्याप्त रूप से जवाब देता है।

अगर वह अपनी सच्ची करुणा को गलत दिशा में नहीं ले जाती और अपने दुखी बच्चे को नरक में हमेशा के लिए कैद होने और गुमराही में मरने से बचाने के लिए काम करती है, जिसका नतीजा हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा, तो बच्चे के हर अच्छे काम का बराबर हिस्सा माँ के अच्छे कामों की किताब में चला जाएगा। और उसकी मौत के बाद वह अपने अच्छे कामों से उसकी आत्मा में लगातार रोशनी भेजेगा, और परलोक में, वह दावेदार नहीं होगा, बल्कि अपनी पूरी आत्मा और जीवन के साथ उसके लिए मध्यस्थ होगा, और हमेशा के लिए उसका धन्य बच्चा होगा।

हाँ, मनुष्य का पहला गुरु और सबसे प्रभावशाली शिक्षक उसकी माँ होती है। इस संबंध में, मैं आपको निम्नलिखित बातें समझाऊँगा, जिन्हें मैंने हमेशा अपने अंदर दृढ़ता से महसूस किया है:

मैं अस्सी साल का हूँ और अस्सी हज़ार लोगों से शिक्षा प्राप्त कर चुका हूँ। फिर भी मैं कसम खाता हूँ कि मुझे जो सबसे सच्ची और सबसे अटल शिक्षा मिली है, वह मेरी दिवंगत माँ द्वारा मुझे दी गई है, जो मेरे लिए हमेशा ताज़ा रही है। वे मेरे स्वभाव में इस तरह रोपे गए हैं जैसे कि वे मेरे भौतिक अस्तित्व में बोए गए बीज हों। मैं देखता हूँ कि उन बीजों पर अन्य शिक्षाएँ भी गढ़ी गई हैं। यानी, जब मैं एक साल का था, तब मेरी माँ ने मेरे स्वभाव और आत्मा में जो शिक्षाएँ डाली थीं, उन्हें मैं अब अस्सी साल की उम्र में महान सत्यों के बीच मौलिक बीज के रूप में देखता हूँ।

उदाहरण के लिए, मैं यह निश्चित मानता हूँ कि मैंने अपनी माँ के दयालु व्यवहार और कार्यों से और उनकी शिक्षाओं से, दयालु होना सीखा है, जो मेरे मार्ग के चार सिद्धांतों में सबसे महत्वपूर्ण है, और दयालु और दयालु होना, जो रिसाले-ए-नूर का सबसे बड़ा सत्य है। हाँ, मातृत्व की करुणा में सच्ची ईमानदारी और सच्चा आत्म-बलिदान शामिल है, लेकिन परलोक के बारे में न सोचना - अपने मासूम बच्चे के लिए हीरों का खजाना - और उसका मुँह इस दुनिया की ओर मोड़ना, जो कि उसका जीवन है, इसका दुरुपयोग है।

वह कांच के अस्थायी, क्षणिक टुकड़ों के समान है, और उस तरह से उसके प्रति दयालु होना, उस करुणा का दुरुपयोग करना है।

करुणा के संबंध में महिलाओं की इस वीरता का प्रमाण, जो किसी भी तरह से कोई प्रतिफल या बदले में कुछ नहीं चाहती है, और उनकी अपनी आत्मा का बलिदान है, जो किसी भी तरह से व्यक्तिगत लाभ और कोई दिखावा नहीं चाहती है, यह है कि एक मुर्गी, जो उस करुणा का एक छोटा सा नमूना रखती है, एक शेर पर हमला करेगी और उसके चूज़ों के लिए अपने जीवन का बलिदान करेगी।

अब, ईमानदारी इस्लामी तालीम और आख़िरत से जुड़े कामों में सबसे ज़्यादा मूल्यवान और सबसे ज़रूरी उसूल है। सच्ची ईमानदारी इस तरह की करुणा की वीरता में मौजूद है। अगर ये दोनों बातें महिलाओं में विकसित होने लगें, तो इससे इस्लाम के दायरे में काफ़ी ख़ुशी होगी। जब बात मर्दों की वीरता की आती है, तो यह कभी भी बेकार नहीं जाती; वे हमेशा शायद सौ तरह से बदला चाहते हैं। कम से कम वे यश और कीर्ति तो चाहते ही हैं।

लेकिन दुर्भाग्यवश, अभागी स्त्रियां अत्याचारी पुरुषों की बुराई और उत्पीड़न से बचने के लिए दूसरे रूप में पाखंड का अभ्यास करती हैं; यह प्रकार कमजोरी और नपुंसकता से उत्पन्न होता है।

दूसरा बिंदु

इस साल, हालाँकि मैं समाज के जीवन से दूर था और एकांत में था, मैंने अपने कुछ भाई-बहनों की खातिर दुनिया को देखा जो रिसाले-ए-नूर के छात्र थे। मेरे पास आने वाले ज़्यादातर दोस्तों से मैंने उनके पारिवारिक जीवन के बारे में शिकायतें सुनीं। “हाय!”, मैंने कहा, “पारिवारिक जीवन लोगों और ख़ास तौर पर मुसलमानों की शरणस्थली है, और एक तरह का स्वर्ग और एक छोटी सी दुनिया है। क्या अब यह भी टूटने लगा है?” मैंने कारण जानना चाहा और मुझे समझ में आया कि एक या दो गुप्त समूह युवाओं को गुमराह करने और उनकी भूख को उत्तेजित करके उन्हें बुराई की ओर धकेलने का काम कर रहे हैं, ताकि इस्लामी सामाजिक जीवन और इस तरह इस्लाम धर्म को नुकसान पहुँचाया जा सके। मुझे यह भी एहसास हुआ कि एक या दो समूह महिलाओं को गलत रास्ते पर धकेलने के लिए गुप्त और प्रभावी ढंग से काम कर रहे हैं। मुझे यह भी समझ में आया कि इस मुस्लिम राष्ट्र को उस तरफ़ से एक गंभीर झटका लगेगा। इसलिए मैं अपनी बहनों और आध्यात्मिक बच्चों से स्पष्ट रूप से निम्नलिखित बातें कहता हूँ:

औरतों की आख़िरत में और इस दुनिया में भी ख़ुशियाँ बचाने का और उनके बेहतरीन जन्मजात गुणों को भ्रष्ट होने से बचाने का एकमात्र ज़रिया इस्लाम धर्म द्वारा दी गई तालीम है, इसके अलावा कोई दूसरा ज़रिया नहीं है। रूस की बदकिस्मत औरतों की हालत के बारे में आप सुनते ही होंगे। रिसाले-ए-नूर के एक हिस्से में कहा गया है कि कोई भी समझदार आदमी अपनी बीवी के लिए उसके पाँच-दस साल के दिखावटी हुस्न पर प्यार और स्नेह नहीं बनाता, बल्कि उसे उसके अच्छे आचरण पर बनाना चाहिए,

सबसे स्थायी और सबसे अच्छी सुंदरता, जो नारीत्व और उसकी करुणा के लिए विशेष है। फिर, जब दुर्भाग्यपूर्ण उम्र बढ़ती है, तो उसके पति का उसके प्रति प्रेम बना रहता है। क्योंकि उसकी पत्नी इस सांसारिक जीवन में केवल एक अस्थायी सहायक और साथी नहीं है, बल्कि अनंत जीवन में एक शाश्वत, प्यारी साथी है, इसलिए जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, एक-दूसरे के लिए उनका प्यार भी बढ़ना चाहिए, और उनकी करुणा और सम्मान भी।

संस्कृति और सभ्यता की आड़ में पारिवारिक जीवन अब एक अस्थायी पशुवत संबंध बन गया है, जिसके बाद शाश्वत अलगाव आता है, तथा इसकी बुनियाद ही नष्ट हो रही है।

रिसाले-ए-नूर में एक अन्य स्थान पर लिखा है: "वह पुरुष धन्य है जो अपने शाश्वत साथी को न खोने के लिए अपनी धर्मपरायण पत्नी की नकल करता है और इस तरह स्वयं भी धर्मपरायण बन जाता है। और वह स्त्री धन्य है जो अपने पति को धर्मपरायण देखकर स्वयं भी धर्म का पालन करती है ताकि अपने शाश्वत मित्र और साथी को न खो दे। वह पुरुष दुखी है जो अपनी पत्नी का अनुसरण पाप में करता है, उसे छोड़ने के लिए मजबूर नहीं करता, बल्कि उसके साथ जुड़ जाता है।

और वह स्त्री दुखी है जो अपने पति के पाप को देखकर दूसरे मार्ग से उसका अनुसरण करती है। और उस पति-पत्नी पर अफसोस है जो एक-दूसरे को आग में झोंकने में एक-दूसरे की मदद करते हैं। यानी जो एक-दूसरे को सभ्यता की बुराइयों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।"

इन पंक्तियों का अर्थ यह है कि इस समय शरीयत के दायरे में रहकर इस्लामी आचरण ही पारिवारिक जीवन को विकसित करने, इस दुनिया और आखिरत में सुख पाने और महिलाओं के श्रेष्ठ गुणों को प्रकट करने का एकमात्र साधन है। अब पारिवारिक जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि महिला अपने पति में बुरा आचरण और बेवफाई देखती है और उसे परेशान करने के लिए अपनी वफ़ादारी और वफादारी में कमी करती है, जो कि परिवार के संबंध में उसका कर्तव्य है, तो उस पारिवारिक जीवन की फैक्ट्री अस्त-व्यस्त हो जाएगी, ठीक उसी तरह जैसे सेना में अनुशासन बिगड़ जाता है। महिला को अपने पति के दोषों को यथासंभव सुधारने की कोशिश करनी चाहिए ताकि वह अपने अनंत साथी को बचा सके। यह हर तरह से हानिकारक है अगर वह खुद को दूसरों के सामने उजागर करना शुरू कर दे और खुद को दूसरों के लिए आकर्षक बनाने की कोशिश करे। क्योंकि जो महिला पूरी वफ़ादारी छोड़ देती है, वह इस दुनिया में भी दंड भुगतती है। क्योंकि उसके स्वभाव में उन लोगों की नज़रों से डरना और परेशान होना और उनसे दूर रहना है जो उसके लिए वैधानिक रूप से अजनबी हैं। वह बीस में से अठारह अजनबियों की शक्ल देखकर असहज महसूस करती है। पुरुषों के लिए, वे सौ में से केवल एक महिला की शक्ल देखकर असहज और परेशान होते हैं, जो उनके लिए औपचारिक रूप से अजनबी होती है। महिला को इस मामले में पीड़ा होती है, और इसलिए उस पर भी बेवफाई का आरोप लगाया जा सकता है, और अपनी कमजोरी के कारण, वह अपने अधिकारों की रक्षा करने में असमर्थ होगी।

संक्षेप में: जिस प्रकार करुणा के मामले में महिलाएं वीरता और ईमानदारी में पुरुषों के समान नहीं हैं, और पुरुष भी उनसे तुलना नहीं कर सकते हैं

इसी तरह मासूम महिलाएं भी पुरुषों के साथ किसी भी तरह से बुरा व्यवहार नहीं कर सकतीं। इस कारण से, उनकी प्रकृति और कमजोरी के कारण, वे वास्तव में अजनबियों से डरती हैं और खुद को उनके प्रचुर बाहरी कपड़ों के नीचे छिपाने के लिए मजबूर महसूस करती हैं।

क्योंकि अगर आठ मिनट के सुख के लिए कोई पुरुष पाप करता है, तो उसे केवल आठ लीरा का नुकसान होता है। लेकिन आठ मिनट के पाप के दंड के रूप में, इस दुनिया में महिला आठ महीने तक भारी बोझ उठाती है और फिर आठ साल तक असुरक्षित बच्चे को पालने का कष्ट उठाती है। इसलिए वह पुरुषों के साथ दुराचार में प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकती और उसे सौ गुना अधिक दंड भुगतना पड़ता है।

इस तरह की अक्सर होने वाली घटनाएँ यह दर्शाती हैं कि जिस तरह से महिलाएँ स्वभाव से ही उच्च नैतिकता का स्रोत होती हैं, उसी तरह से उनमें दुराचार और व्यभिचार में सांसारिक सुख की क्षमता का अभाव होता है। यानी, वे एक प्रकार की धन्य प्राणी हैं जिन्हें इस्लाम द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर परिवार में सुखी जीवन बिताने के लिए बनाया गया है। भगवान उन गुप्त समूहों को धिक्कार है जो इन धन्य प्राणियों को भ्रष्ट कर रहे हैं! और सर्वशक्तिमान ईश्वर मेरी बहनों को ऐसे दुष्ट दुष्टों की बुराई से बचाए।

मेरी बहनों! मैं तुमसे गोपनीय रूप से यह कहना चाहता हूँ कि तंगी के कारण एक बदचलन, अनैतिक, पश्चिमी पति के अधीन रहने के बजाय, अपने स्वभाव में निहित मितव्ययिता और संतोष के साथ मासूम किसान महिलाओं की तरह अपनी आजीविका चलाने की कोशिश करो; अपने आप को बेचने की कोशिश मत करो। अगर तुम्हारा भाग्य ऐसा है कि तुम्हारे लिए अनुपयुक्त पति है, तो अपने भाग्य से संतुष्ट रहो और उसे स्वीकार कर लो। ईश्वर की इच्छा से, तुम्हारे संतोष और त्याग से वह सुधर जाएगा। लेकिन तलाक के लिए अदालत में आवेदन करना, जिसके बारे में मैंने हाल ही में सुना है; यह इस्लाम के सम्मान और इस राष्ट्र के अच्छे नाम के अनुरूप नहीं है!

तीसरा बिंदु

मेरी प्यारी बहनों, आपको इस बात पर यकीन होना चाहिए कि जैसा कि रिसाले-ए-नूर में शक्तिशाली सबूतों और उदाहरणों के साथ दिखाया गया है, वैध की सीमा के बाहर सुख और आनंद में मौजूद दर्द और संकट दस गुना अधिक हैं। आप रिसाले-ए-नूर में इसके बारे में विस्तृत विवरण पा सकते हैं। उदाहरण के लिए, द शॉर्ट वर्ड्स और ए गाइड फॉर यूथ के छठे, सातवें और आठवें शब्द मेरे बजाय आपके लिए इस सत्य को पूरी तरह से स्पष्ट करेंगे। ऐसे में, वैध सुखों से काम चलाओ और उनसे संतुष्ट रहो। अपने घर में अपने मासूम बच्चों के साथ मासूम बातचीत सौ सिनेमा से ज्यादा आनंददायक है।

तुम्हें यह भी निश्चित रूप से पता होना चाहिए कि इस दुनिया की ज़िंदगी में सच्चा आनंद ईमान और आस्था के दायरे में है। सभी अच्छे कामों में एक अमूर्त आनंद पाया जाता है। रिसाले-ए-नूर ने सैकड़ों उदाहरणों से यह साबित किया है

इस बात के निर्णायक प्रमाण हैं कि इस दुनिया में भी सबसे कड़वी और दुखद पीड़ा दुराचार और गुमराही में मौजूद है। मैंने खुद कई मौकों पर खुद को इस बात का अनुभव किया है कि जन्नत का बीज ईमान में निहित है, जबकि जहन्नम का बीज दुराचार और गुमराही में पाया जाता है। रिसाले-ए-नूर में इस सच्चाई को कई बार दोहराया गया है। हालाँकि रिसाले-ए-नूर उन लोगों के हाथों में आ गया है जो इसका सबसे ज़्यादा हठ और कठोरता से विरोध करते हैं, लेकिन वे इस सच्चाई का खंडन करने में असमर्थ रहे हैं; न ही विशेषज्ञों की समितियाँ और अदालतें इसका खंडन करने में सक्षम हैं।

अब, मेरी धन्य और मासूम बहनों और आपके बच्चे जो मेरे आध्यात्मिक बच्चों की तरह हैं, सबसे पहले इस्लामी पोशाक पर ग्रंथ, और युवाओं के लिए एक मार्गदर्शिका, और संक्षिप्त शब्द आपको मेरी जगह सिखाना चाहिए।

मैंने सुना है कि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें मस्जिद में पढ़ाऊँ, लेकिन मेरी दयनीय स्थिति और मेरी बीमारी और कई अन्य परिस्थितियाँ इसकी अनुमति नहीं देती हैं। मैंने अपनी सभी बहनों को, जो इस शिक्षा को पढ़ती हैं और स्वीकार करती हैं, जो मैंने तुम्हारे लिए लिखी है, अपनी सभी प्रार्थनाओं और आध्यात्मिक लाभों में शामिल करने का फैसला किया है, जैसे कि रिसाले-ए-नूर के सभी छात्र। यदि तुम मेरे स्थान पर रिसाले-ए-नूर का हिस्सा प्राप्त करो और पढ़ो, या इसे सुनो, तो मेरे नियम के अनुसार तुम भी अपने सभी रिसाले-ए-नूर छात्रों, अपने भाइयों की प्रार्थनाओं और आध्यात्मिक लाभों में हिस्सा पाओगे।

मैं और भी लिखना चाहता था, लेकिन मैं बहुत बीमार, बहुत कमजोर और बहुत बूढ़ा हो गया हूं और मेरे पास रिसाले-ए-नूर की प्रतियों को सही करने जैसे कई काम हैं, इसलिए फिलहाल मैंने इतना ही लिखा है।

वह शाश्वत है, वह शाश्वत है!
आपका भाई जिसे आपकी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है,
एस सहायता एन भालू

पच्चीसवीं फ्लैश

बीमारों के लिए संदेश

[इस ग्रंथ में पच्चीस उपचार हैं। इसे मरहम, सांत्वना और बीमारों के लिए नुस्खे के रूप में लिखा गया था, और उनसे मिलने और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करने के लिए लिखा गया था।]

चेतावनी और माफ़ी

यह अमूर्त नुस्खा मेरी अन्य सभी रचनाओं की तुलना में अधिक गति से लिखा गया था,1 और चूंकि इसे सही करने और अध्ययन करने के लिए समय नहीं मिल पाया था, इसलिए अन्य सभी की तरह इसे केवल एक बार पढ़ा गया था, और वह भी इसकी रचना की तरह ही बहुत तेज गति से। कहने का तात्पर्य यह है कि यह पहले मसौदे की अव्यवस्थित अवस्था में ही रहा। मैंने उन बातों को ध्यान से पढ़ना आवश्यक नहीं समझा जो मेरे दिमाग में स्वाभाविक रूप से आई थीं, ताकि उन्हें व्यवस्थित करने और उन पर अनावश्यक ध्यान देने से वे खराब न हो जाएं। पाठकों और विशेष रूप से बीमार लोगों को किसी भी अप्रिय अभिव्यक्ति या कठोर शब्दों और वाक्यांशों से परेशान और आहत महसूस नहीं करना चाहिए; बल्कि उन्हें मेरे लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

जो लोग किसी मुसीबत में पड़कर कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर हमें लौटना है। (2:156) * वही मुझे खाना-पीना देता है। *और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे शिफ़ा देता है। (26:79-80)

इस फ्लैश में, हम संक्षेप में पच्चीस उपचारों का वर्णन कर रहे हैं जो बीमारों और आपदा से पीड़ित लोगों के लिए, जो मानव जाति का दसवां हिस्सा हैं, सच्ची सांत्वना और लाभकारी इलाज प्रदान कर सकते हैं।

---

1 यह ग्रंथ साढ़े चार घंटे में लिखा गया था।

हस्ताक्षरित, रुस्तू, रे'फेट, हुसेरेव, कहा।

पहला उपाय

दुखी बीमार व्यक्ति! घबराओ मत, धैर्य रखो! तुम्हारी बीमारी तुम्हारे लिए कोई बीमारी नहीं है; यह एक तरह का इलाज है। क्योंकि जीवन पूंजी की तरह चला जाता है; अगर यह कोई फल नहीं देता है, तो यह बर्बाद हो जाता है; और अगर यह आराम और लापरवाही से बीत जाता है, तो यह तेजी से बीत जाता है। बीमारी तुम्हारी उस पूंजी को भारी मुनाफा देती है। इसके अलावा, यह तुम्हारे जीवन को जल्दी से बीतने नहीं देती, यह इसे रोकती है और इसे लंबा करती है, ताकि यह अपने फल देने के बाद ही चले। बीमारी के कारण तुम्हारा जीवन लंबा हो रहा है, इसका संकेत यह बार-बार दोहराई जाने वाली कहावत है: "विपत्ति के समय लंबे होते हैं, सुख के समय, बहुत कम।"

दूसरा उपाय

ऐ रोगी, जो धैर्य से रहित है! धैर्य रखो, वास्तव में धन्यवाद दो! तुम्हारी बीमारी तुम्हारे जीवन के प्रत्येक मिनट को एक घंटे की इबादत के बराबर बना सकती है। क्योंकि इबादत दो प्रकार की होती है। एक सकारात्मक इबादत है, जैसे प्रार्थना की प्रसिद्ध इबादत और पाँच दैनिक नमाज़ें। दूसरी नकारात्मक इबादत है, जैसे बीमारी और विपत्तियाँ। इनके माध्यम से, पीड़ित लोग अपनी नपुंसकता और कमजोरी का एहसास करते हैं; वे अपने दयालु निर्माता से प्रार्थना करते हैं और उसकी शरण लेते हैं; वे ऐसी इबादत करते हैं जो सच्ची और कपट रहित होती है। हाँ, एक अच्छी रिवायत है जिसमें कहा गया है कि बीमारी में बीता जीवन मोमिन के लिए इबादत है - इस शर्त पर कि वह ईश्वर से शिकायत न करे।[2] अच्छी रिवायतों और सृष्टि की वास्तविकताओं को उजागर करने वालों ने भी यह स्थापित किया है कि कुछ लोगों की एक मिनट की बीमारी जो पूरी तरह से धैर्यवान और आभारी हैं, एक घंटे की इबादत के बराबर हो जाती है और कुछ सिद्ध पुरुषों की एक मिनट की बीमारी एक दिन की इबादत के बराबर हो जाती है। इसलिए आपको उस बीमारी के बारे में शिकायत नहीं करनी चाहिए जो आपके जीवन के एक मिनट को हजार मिनट में बदल देती है और आपको लंबी आयु प्रदान करती है; आपको धन्यवाद देना चाहिए।

तीसरा उपाय

अधीर बीमार व्यक्ति! यह तथ्य कि जो लोग इस दुनिया में आते हैं वे निरंतर चले जाते हैं, और युवा बूढ़े हो जाते हैं, और मनुष्य निरंतर मृत्यु और अलगाव के बीच घूमता रहता है, यह प्रमाणित करता है कि वह इस दुनिया में खुद का आनंद लेने और सुख प्राप्त करने के लिए नहीं आया था।

इसके अलावा, जबकि मनुष्य जीवित प्राणियों में सबसे उत्तम, सबसे श्रेष्ठ तथा अंगों और क्षमताओं के मामले में सर्वश्रेष्ठ है, वह भूतकाल के सुखों और भविष्य के दुखों पर ही विचार करता रहता है, और इस प्रकार एक दु:खद, कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

[2] अल-अल्बानी, साहिह जामी अल-सगीर, 256। यह भी देखें, अल-सुयुति, अल-फत अल-कबीर, द्वितीय, 148।

जीवन, जानवरों से भी कम है। इसका मतलब यह है कि मनुष्य इस दुनिया में एक बढ़िया तरीके से जीने और आराम और आनंद में अपना जीवन बिताने के लिए नहीं आया था। बल्कि, उसके पास बहुत बड़ी पूंजी है, और वह यहाँ एक शाश्वत, अनंत जीवन के लिए काम करने और व्यापार करने आया था।

मनुष्य को जो पूंजी दी गई है, वह उसका जीवन है। यदि बीमारी न होती, तो अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली लापरवाही का कारण बनती, क्योंकि वे दुनिया को सुखद बताते हैं और परलोक को भुला देते हैं। वे नहीं चाहते कि मृत्यु और कब्र के बारे में सोचा जाए; वे जीवन की पूंजी को तुच्छ बातों में बर्बाद कर देते हैं। जबकि बीमारी अचानक आँखें खोलती है, यह शरीर से कहती है: "तुम अमर नहीं हो। तुम्हें अपने हाल पर नहीं छोड़ा गया है। तुम्हारा एक कर्तव्य है। अपना अभिमान त्यागो, उस पर विचार करो जिसने तुम्हें बनाया है। जान लो कि तुम कब्र में जाओगे, इसलिए इसके लिए खुद को तैयार करो!"

इस दृष्टिकोण से, बीमारी एक चेतावनी देने वाला मार्गदर्शक और सलाहकार है जो कभी धोखा नहीं देता। इस संबंध में इसकी शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि इसके लिए धन्यवाद देना चाहिए। और अगर यह बहुत गंभीर नहीं है, तो इसे सहन करने के लिए धैर्य रखना चाहिए।

चौथा उपाय

शिकायत करने वाले बीमार व्यक्ति! आपको शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है; आपको जो करना चाहिए वह है धन्यवाद देना और धैर्य रखना। क्योंकि आपका शरीर और अंग और क्षमताएँ आपकी संपत्ति नहीं हैं। आपने उन्हें नहीं बनाया, न ही आपने उन्हें किसी दूसरी कार्यशाला से खरीदा है।

इसका मतलब यह है कि वे किसी और की संपत्ति हैं, और उनके मालिक को अपनी संपत्ति पर अपनी इच्छानुसार नियंत्रण रखने का अधिकार है।

जैसा कि छब्बीसवें वचन में बताया गया है, उदाहरण के लिए, एक बहुत ही धनी और कुशल कारीगर अपनी बेहतरीन कला और काफी धन-संपत्ति का प्रदर्शन करने के लिए एक गरीब आदमी को एक मॉडल के रूप में काम पर रखता है। मजदूरी के बदले में, वह थोड़े समय के लिए उस गरीब आदमी को एक रत्नजड़ित और कुशलता से गढ़ा हुआ वस्त्र पहनाता है। वह उस पर काम करता है और उसे विभिन्न रूप देता है। अपनी कला की असाधारण विविधताओं को प्रदर्शित करने के लिए, वह वस्त्र को काटता है, उसमें बदलाव करता है, और उसे लंबा और छोटा करता है। क्या उस गरीब मजदूर को उस व्यक्ति से यह कहने का अधिकार है: “तुम मुझे परेशान कर रहे हो, तुम मुझे इस रूप से परेशान कर रहे हो, मुझे झुकने और खड़े होने के लिए मजबूर कर रहे हो?” क्या उसे यह कहने का अधिकार है कि वह उस वस्त्र को छोटा करके और काटकर उसकी सुंदर उपस्थिति को खराब कर रहा है जो उसे सुंदर बनाता है? क्या वह उससे कह सकता है कि वह निर्दयी और अनुचित व्यवहार कर रहा है?

हे रोगी! इस तुलना की तरह, तेरे शरीर रूपी वस्त्र को, जो उसने तुझे पहनाया है, जो नेत्र, कान, बुद्धि और हृदय जैसी तेजस्वी शक्तियों से तथा उसके सुन्दरतम नामों की कढ़ाई से सुशोभित है, दिखाने के लिए, सर्व-महिमावान सृष्टिकर्ता तुझे अनेक अवस्थाओं में घुमाता है तथा अनेक स्थितियों में तुझे बदलता है। ठीक इसी प्रकार, तेरे शरीर रूपी वस्त्र को, जो नेत्र, कान, बुद्धि और हृदय जैसी तेजस्वी शक्तियों से तथा उसके सुन्दरतम नामों की कढ़ाई से सुशोभित है, दिखाने के लिए, सर्व-महिमावान सृष्टिकर्ता तुझे अनेक अवस्थाओं में घुमाता है तथा अनेक स्थितियों में तुझे बदलता है।

जैसे आप भूख के माध्यम से उसके प्रदाता के नाम को जानते हैं, वैसे ही अपनी बीमारी के माध्यम से उसके उपचारक के नाम को भी जानें। चूँकि दुख और विपत्तियाँ उसके कुछ नामों के आदेशों को दर्शाती हैं, इसलिए उन ज्ञान की चमक और दया की किरणों में अच्छे के कई उदाहरण पाए जा सकते हैं। यदि बीमारी का पर्दा, जिससे आप डरते और घृणा करते हैं, हटा दिया जाए, तो इसके पीछे आपको कई सुखद और सुंदर अर्थ मिलेंगे।

पांचवां उपाय

हे रोग से पीड़ित! मैंने अनुभव से इस समय यह राय बना ली है कि कुछ लोगों के लिए बीमारी ईश्वरीय वरदान है, दयालु का उपहार है। यद्यपि मैं इसके योग्य नहीं था, फिर भी पिछले आठ-नौ वर्षों में अनेक युवा अपनी बीमारी के संबंध में मुझसे प्रार्थना करने के लिए आए हैं। मैंने देखा है कि वे सभी अन्य युवाओं की अपेक्षा परलोक के बारे में अधिक सोचने लगे हैं। उनमें युवावस्था का नशा नहीं रहा, तथा उन्होंने कुछ हद तक पशुवत इच्छाओं और प्रमाद का त्याग कर दिया है। इसलिए मैं उन पर विचार करता हूँ और फिर उन्हें याद दिलाता हूँ कि उनकी बीमारियाँ सहनीय सीमा के भीतर ईश्वरीय वरदान हैं। मैं उनसे कहता हूँ: "भाई! मैं तुम्हारी इस बीमारी का विरोधी नहीं हूँ। मुझे इस कारण तुम पर दया नहीं आती कि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँ। जब तक बीमारी तुम्हें पूरी तरह से जगा न दे, तब तक धैर्य रखने का प्रयास करो, और जब यह अपना कर्तव्य पूरा कर लेगी, तो दयालु सृष्टिकर्ता ईश्वर की इच्छा से तुम्हें स्वस्थ कर देगा।"

मैं उनसे यह भी कहता हूँ: "अच्छे स्वास्थ्य की आपदा के कारण, आपके कुछ साथी लापरवाह हो जाते हैं, पाँचों दैनिक प्रार्थनाएँ छोड़ देते हैं, कब्र के बारे में नहीं सोचते हैं, और सर्वशक्तिमान ईश्वर को भूल जाते हैं। थोड़े समय के सांसारिक जीवन का सतही आनंद उन्हें शाश्वत जीवन को हिलाकर रख देता है और नुकसान पहुँचाता है, और यहाँ तक कि उसे नष्ट भी कर देता है। जबकि अपनी बीमारी के कारण, आप कब्र को देखते हैं, जिसमें आप किसी भी स्थिति में प्रवेश करेंगे, और उसके परे परलोक के निवास, और आप उसी के अनुसार कार्य करते हैं। इसलिए, आपके लिए बीमारी अच्छा स्वास्थ्य है, जबकि आपके कुछ साथियों के लिए अच्छा स्वास्थ्य एक बीमारी है।"

छठा उपाय

हे अपने दुख की शिकायत करने वाले बीमार व्यक्ति! मैं तुमसे कहता हूँ: अपने पिछले जीवन के बारे में सोचो और सुखद, खुशी के दिनों और कष्टदायक, परेशानी भरे समय को याद करो, और तुम निश्चित रूप से या तो “ओह!” या “आह!” कहोगे। यानी, तुम्हारा दिल और ज़बान या तो कहेगा “सारी प्रशंसा और धन्यवाद भगवान को!”, या “हाय और हाय!” ध्यान से देखो, जो चीज़ तुम्हें “प्रशंसा और धन्यवाद भगवान को!” कहने पर मजबूर करती है, वह है अपने ऊपर आए दुखों और विपत्तियों के बारे में सोचना; वे एक तरह का आनंद पैदा करते हैं ताकि तुम्हारा दिल धन्यवाद दे, क्योंकि दर्द का गुज़र जाना एक खुशी है। दर्द और विपत्तियों के गुज़र जाने के साथ, आत्मा में आनंद की एक विरासत रह जाती है, जो सोचने से जागृत होने पर आत्मा से धन्यवाद के रूप में निकलती है।

जो बात आपको “हाय और हाय!” कहने पर मजबूर करती है, वह है अतीत में आपके द्वारा अनुभव किए गए सुखद और खुशनुमा पल, जो बीत जाने के साथ ही आपकी आत्मा में निरंतर दर्द की विरासत छोड़ जाते हैं। जब भी आप उनके बारे में सोचते हैं, तो दर्द फिर से उत्तेजित हो जाता है, जिससे पछतावा और दुख बाहर निकलता है।

चूँकि एक दिन का अवैध सुख कभी-कभी आत्मा में एक साल की पीड़ा का कारण बन जाता है, और एक क्षणभंगुर बीमारी के दर्द के साथ-साथ कई दिनों का सुख और प्रतिफल भी मिलता है, इसलिए इस अस्थायी बीमारी के परिणाम के बारे में सोचो जिससे तुम अभी पीड़ित हो, और इसके आंतरिक चेहरे की खूबियों के बारे में सोचो। कहो: "सब कुछ भगवान की ओर से है! यह भी बीत जाएगा!", और शिकायत करने के बजाय धन्यवाद दो।

छठा उपाय[3]

हे भाई! जो इस संसार के सुखों का चिन्तन करता है और रोग से दु:खी होता है!
अगर यह दुनिया हमेशा के लिए होती, और अगर हमारे रास्ते में कोई मौत नहीं होती, और अगर अलगाव और मृत्यु की हवाएँ नहीं चलतीं, और अगर भविष्य में विपत्तिपूर्ण और तूफानी आत्मा की सर्दियाँ नहीं होतीं, तो मुझे तुम्हारे साथ-साथ तुम पर भी दया आती। लेकिन चूँकि एक दिन दुनिया हमें इसे छोड़ने के लिए कहेगी और हमारी पुकार पर कान बंद कर लेगी, इसलिए हमें इन बीमारियों की चेतावनियों के ज़रिए अभी से इसके प्रति अपने प्यार को त्याग देना चाहिए, इससे पहले कि यह हमें बाहर निकाल दे। हमें इसे अपने दिलों में छोड़ने की कोशिश करनी चाहिए इससे पहले कि यह हमें छोड़ दे।

हाँ, बीमारी हमें यह चेतावनी देती है: "तुम्हारा शरीर पत्थर और लोहे से नहीं बना है, बल्कि विभिन्न पदार्थों से बना है जो हमेशा अलग होने के लिए तैयार रहते हैं। अपना अभिमान छोड़ो, अपनी नपुंसकता को समझो, अपने स्वामी को पहचानो, अपने कर्तव्यों को जानो, सीखो कि तुम इस दुनिया में क्यों आए हो!" यह हृदय के कानों में गुप्त रूप से यह घोषणा करता है।

इसके अलावा, चूँकि इस दुनिया के सुख और भोग हमेशा नहीं रहते, और खास तौर पर अगर वे अवैध हैं तो वे क्षणभंगुर, पीड़ा से भरे और पापपूर्ण होते हैं, इसलिए बीमारी के बहाने रोना मत क्योंकि तुमने उन सुखों को खो दिया है। इसके विपरीत, बीमारी में मिलने वाली पूजा और परलोक के सवाब के बारे में सोचो और उनसे सुख पाने की कोशिश करो।

सातवां उपाय

हे बीमार व्यक्ति, जिसने स्वास्थ्य का सुख खो दिया है! तुम्हारी बीमारी ईश्वरीय कृपा के सुख को नष्ट नहीं करती, बल्कि उन्हें अनुभव कराती है और बढ़ाती है। क्योंकि अगर कोई चीज निरंतर बनी रहे, तो उसका प्रभाव खत्म हो जाता है। वास्तविकता के लोग तो यहां तक कहते हैं कि "चीजें उनके माध्यम से जानी जाती हैं

[3] यह घटना मेरे साथ स्वाभाविक रूप से घटित हुई, और छठे उपाय में दो उपाय शामिल किए गए हैं। हमने इसे स्वाभाविकता को खराब न करने के लिए ऐसे ही छोड़ दिया है; वास्तव में, हमने यह सोचकर इसमें कोई बदलाव नहीं किया कि इसमें कुछ रहस्य छिपा हो सकता है।

विपरीत।" उदाहरण के लिए, यदि अंधकार न हो, तो प्रकाश ज्ञात नहीं होगा और कोई आनंद नहीं होगा। यदि ठंड न हो, तो गर्मी को समझा नहीं जा सकता। यदि भूख न हो, तो भोजन कोई आनंद नहीं देगा। यदि पेट की प्यास न हो, तो पानी पीने में कोई आनंद नहीं होगा। यदि कोई बीमारी न हो, तो अच्छे स्वास्थ्य से कोई आनंद नहीं मिलेगा।

सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने मनुष्य को अनेक अंगों और शक्तियों से सुसज्जित किया है, ताकि वह ब्रह्माण्ड में असंख्य प्रकार की नेमतों को अनुभव कर सके और उन्हें पहचान सके, इससे यह पता चलता है कि वह उसे अपनी हर तरह की नेमतों से परिचित कराना चाहता है और उसे निरंतर धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करना चाहता है।

चूँकि ऐसा है, इसलिए वह बीमारी, रोग और पीड़ा देगा, ठीक वैसे ही जैसे वह अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली देता है। मैं आपसे पूछता हूँ: यदि आपके सिर या हाथ या पेट में यह बीमारी न होती, तो क्या आप अपने सिर, हाथ या पेट के अच्छे स्वास्थ्य के सुखद और आनंददायक ईश्वरीय उपहार को महसूस करते और धन्यवाद देते?

यकीनन, आपने इसके बारे में सोचा भी नहीं होगा, इसके लिए धन्यवाद देना तो दूर की बात है! आपने अनजाने में ही उस अच्छे स्वास्थ्य को लापरवाही में और शायद फिजूलखर्ची में भी खर्च कर दिया होगा।

आठवां उपाय

ऐ आख़िरत की चिंता करने वाले बीमार! बीमारी गुनाहों की गंदगी को साबुन की तरह धो देती है और पाक-साफ़ कर देती है। एक सही हदीस में है कि बीमारियाँ गुनाहों का प्रायश्चित हैं। और एक दूसरी हदीस में है: "जैसे पके हुए फल अपने पेड़ पर हिलने से गिरते हैं, वैसे ही मोमिन के पाप बीमारी से हिलने से गिर जाते हैं।"

पाप अनंत जीवन की पुरानी बीमारियाँ हैं, और इस सांसारिक जीवन में वे हृदय, विवेक और आत्मा की बीमारियाँ हैं। यदि आप धैर्य रखते हैं और शिकायत नहीं करते हैं, तो आप इस अस्थायी बीमारी के माध्यम से कई चिरस्थायी बीमारियों से बच जाएँगे। यदि आप अपने पापों के बारे में नहीं सोचते हैं, या परलोक को नहीं जानते हैं, या ईश्वर को नहीं पहचानते हैं, तो आप एक ऐसी बीमारी से पीड़ित हैं जो इतनी भयावह है कि यह आपकी वर्तमान छोटी बीमारियों से लाखों गुना बदतर है। उस पर चिल्लाएँ, क्योंकि दुनिया के सभी प्राणी आपके हृदय, आत्मा और आत्मा से जुड़े हुए हैं। मृत्यु और अलगाव से वे संबंध लगातार टूटते रहते हैं, जिससे असंख्य घाव खुलते हैं। विशेष रूप से जब आप परलोक को नहीं जानते हैं और मृत्यु को शाश्वत अस्तित्वहीनता मानते हैं, जैसे कि क्षत-विक्षत और घायल, आपका अस्तित्व दुनिया भर की बीमारी से पीड़ित है।

---

[4] बुखारी, मर्दा, 1, 2, 13, 16; मुस्लिम, बीर, 45; बीज, पतला, 57; मुसनद, आई, 371, 441; द्वितीय, 303, 335; iii, 4, 18, 38, 48, 61, 81.

इस प्रकार, सबसे पहले आपको विश्वास के इलाज की खोज करनी है, जो आपके उस असीम रूप से घायल और बीमार, व्यापक अमूर्त अस्तित्व को पीड़ित करने वाली असंख्य बीमारियों के लिए निश्चित उपचार है; आपको अपने विश्वासों को सही करना होगा। इस तरह के इलाज को खोजने का सबसे छोटा रास्ता है अपनी कमजोरी और नपुंसकता की खिड़की के माध्यम से महिमा के सर्वशक्तिमान की शक्ति और दया को पहचानना, जो आपकी शारीरिक बीमारी से फटी हुई लापरवाही के पर्दे के पीछे आपको दिखाई देती है।

जी हाँ, जो परमेश्ंवर को नहीं पहचानता, वह संसार भर के क्लेशों से पीड़ित होता है।
जबकि जो व्यक्ति उसे पहचानता है उसका संसार प्रकाश और आध्यात्मिक खुशी से भरा होता है; वह इन्हें अपने विश्वास की शक्ति के अनुसार अनुभव करता है। तुच्छ शारीरिक बीमारियों से होने वाला दुख विश्वास से उत्पन्न होने वाले अमूर्त आनंद, उपचार और सुख से विलीन हो जाता है; दुख दूर हो जाता है।

नौवां उपाय

ऐ बीमार इंसान जो अपने पैदा करने वाले को पहचानता है! बीमारी दर्द, डर और बेचैनी को जन्म देती है क्योंकि यह कभी-कभी मौत की ओर ले जाती है। चूँकि सतही तौर पर और असावधान लोगों के लिए मौत डरावनी है, इसलिए ऐसी बीमारियाँ जो मौत की ओर ले जाती हैं, डर और आशंका का कारण बनती हैं।

अतः सर्वप्रथम यह जान लो और दृढ़तापूर्वक विश्वास रखो कि नियत समय निश्चित है और बदलता नहीं। जो लोग गंभीर रूप से बीमार लोगों के पास रो रहे हैं और जो पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं, वे मर चुके हैं, जबकि जो गंभीर रूप से बीमार हैं, वे ठीक हो गए हैं और जीवित हैं।

दूसरी बात: मौत उतनी डरावनी नहीं है जितनी ऊपरी तौर पर दिखाई देती है। हिकमत वाले कुरान की रोशनी से, रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में हमने पूरी तरह से निश्चित और निर्विवाद रूप से साबित कर दिया है कि ईमान वालों के लिए मौत जिंदगी के बोझिल कर्तव्यों से मुक्ति है। उनके लिए यह इबादत से आराम है, जो इस दुनिया की परीक्षा के मैदान में शिक्षा और प्रशिक्षण का काम करती है। यह उनके दोस्तों और रिश्तेदारों से मिलने का एक जरिया भी है, जिनमें से सौ में से निन्यानबे लोग पहले ही परलोक चले गए हैं। यह उनके सच्चे वतन और खुशी के शाश्वत निवास में प्रवेश करने का एक जरिया भी है। यह इस दुनिया की कालकोठरी से जन्नत के बागों की दावत भी है। और यह वह समय है जब वे परम दयालु निर्माता की उदारता से उसकी सेवा के बदले में अपना पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं। चूंकि मौत की वास्तविकता यही है, इसलिए इसे भयानक नहीं बल्कि इसके विपरीत दया और खुशी का परिचय माना जाना चाहिए।

इसके अलावा, परमेश्वर के कुछ लोग मृत्यु से डरते हैं, भय के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि वे जीवन के कर्तव्यों को जारी रखते हुए और अधिक अच्छे कार्य करके अतिरिक्त पुण्य प्राप्त करने की आशा करते हैं।

हां, ईमान वालों के लिए मौत ईश्वरीय दया का द्वार है, जबकि गुमराह लोगों के लिए यह अनंत अंधकार का गड्ढा है।

दसवां उपाय

ऐ बीमार इंसान जो बेवजह चिंता करता है! तू अपनी बीमारी की गंभीरता के बारे में चिंता करता है और यही चिंता उसे और बढ़ा देती है। अगर तू चाहता है कि तेरी बीमारी कम गंभीर हो जाए तो चिंता न कर। यानी अपनी बीमारी के फ़ायदे और उसके लिए मिलने वाले फ़ायदे के बारे में सोच और यह सोच कि यह बीमारी जल्दी ठीक हो जाएगी, इससे चिंता दूर हो जाएगी और बीमारी जड़ से खत्म हो जाएगी।

वास्तव में, चिंता बीमारी को दोगुना कर देती है, क्योंकि यह शारीरिक बीमारी के नीचे हृदय की एक अभौतिक बीमारी उत्पन्न करती है; शारीरिक बीमारी उसी के माध्यम से जीवित रहती है और बनी रहती है।

यदि समर्पण, संतोष और बीमारी के कारण की समझ के माध्यम से चिंता समाप्त हो जाती है, तो बीमारी का एक बड़ा हिस्सा समाप्त हो जाता है; यह कम गंभीर हो जाती है और आंशिक रूप से गायब हो जाती है। कभी-कभी एक छोटी शारीरिक बीमारी चिंता के कारण दस गुना बढ़ जाती है। यदि चिंता समाप्त हो जाती है, तो बीमारी का नौ दसवां हिस्सा गायब हो जाता है।

चिंता बीमारी को बढ़ाती है। यह ईश्वरीय ज्ञान के विरुद्ध एक आरोप और ईश्वरीय दया की आलोचना तथा दयालु सृष्टिकर्ता के विरुद्ध शिकायत भी है। इस कारण से, जो व्यक्ति चिंता करता है, उसे तिरस्कार मिलता है तथा यह उसके इरादों के विपरीत उसकी बीमारी को बढ़ाता है। हाँ, जिस प्रकार धन्यवाद उदारता को बढ़ाता है, उसी प्रकार शिकायत बीमारी और क्लेश को बढ़ाती है।

इसके अलावा, चिंता अपने आप में एक बीमारी है। इसका इलाज बीमारी में समझदारी और उसके उद्देश्य को पहचानना है। चूँकि अब आप ये सब सीख चुके हैं, इसलिए अपनी चिंता पर मरहम लगाएँ और राहत पाएँ! “ओह!” के बजाय “आह!” कहें, और आहें भरने और विलाप करने के बजाय “हर परिस्थिति के लिए भगवान की स्तुति हो” कहें।

ग्यारहवां उपाय

हे मेरे अधीर बीमार भाई! यद्यपि बीमारी आपको तत्काल कष्ट देती है, परन्तु अतीत से लेकर आज तक की आपकी बीमारी आपको आध्यात्मिक सुख और खुशी देती है, जो इसे सहने के लिए प्राप्त पुरस्कार से उत्पन्न होती है। आज से, इस घंटे से भी, बीमारी का अस्तित्व नहीं है, और निश्चित रूप से न होने से कोई दर्द नहीं होता। और यदि कोई दर्द नहीं है, तो कोई संकट भी नहीं हो सकता। आप अधीर हो जाते हैं, क्योंकि आप चीजों की गलत कल्पना करते हैं। क्योंकि आज से पहले की शारीरिक बीमारी और उसका दर्द दोनों ही चले गए हैं; जो कुछ बचा है, वह उसका पुरस्कार और उसके जाने का सुख है। इससे आपको लाभ और खुशी मिलनी चाहिए, इसलिए पिछले दिनों के बारे में सोचना और दुखी और अधीर महसूस करना पागलपन है। भविष्य के दिन अभी नहीं आए हैं। अभी उन पर विचार करना, और एक ऐसे दिन की कल्पना करके परेशान और अधीर महसूस करना जो अस्तित्व में नहीं है और एक ऐसी बीमारी जो अस्तित्व में नहीं है और एक ऐसा संकट जो अस्तित्व में नहीं है, अस्तित्व को तीन डिग्री के गैर-अस्तित्व में डालना है - यदि यह पागलपन नहीं है, तो क्या है?

यदि पिछली घड़ी बीमारी की थी, तो वह आनन्द प्रदान करती है; और चूँकि वर्तमान घड़ी के बाद का समय अस्तित्वहीन है, तथा बीमारी और कष्ट दोनों ही अस्तित्वहीन हैं, अतः सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा तुम्हें दी गई धैर्य की शक्ति को दायें-बायें मत बिखेरो, बल्कि वर्तमान घड़ी की पीड़ा के सामने उसे इकट्ठा करो; कहो: "हे परम धैर्यवान!" और उसका सामना करो।

बारहवां उपाय

ऐ बीमार इंसान जो बीमारी की वजह से अपनी इबादत और दुआएं अदा नहीं कर सकता और इस कमी से दुखी है! जान लो कि हदीस में है कि "जो नेक मोमिन बीमारी की वजह से अपनी दुआएं अदा नहीं कर सकता, उसे उसके बराबर सवाब मिलता है।"5 अगर बीमार इंसान सब्र और खुदा पर भरोसा रखते हुए अपनी वाजिब इबादत को जहां तक हो सके अदा करे, तो उस सख्त बीमारी के वक्त में बीमारी सुन्नत इबादत की जगह ले लेती है - और वह भी सच्चे रूप में।

इसके अलावा, बीमारी व्यक्ति को उसकी नपुंसकता और कमज़ोरी का एहसास कराती है; यह उसे मौखिक रूप से और अपनी नपुंसकता और कमज़ोरी के बारे में जीभ से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करती है। क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मनुष्य को असीम नपुंसकता और अनंत कमज़ोरी प्रदान की है ताकि वह हमेशा ईश्वरीय दरबार में शरण ले और प्रार्थना और प्रार्थना करे। आयत,

> कह दो, "यदि तुम नमाज़ न पढ़ते तो तुम्हारा पालनहार तुम्हारी परवाह न करता।" (25:77)

इसका अर्थ है, "यदि आप प्रार्थना और प्रार्थना न करें तो आपका क्या महत्व रहेगा?" इसके अनुसार, सच्ची प्रार्थना और प्रार्थना ही मनुष्य के निर्माण और उसके मूल्य का कारण है। चूँकि बीमारी इसका एक कारण है, इसलिए इस दृष्टि से इसकी शिकायत नहीं करनी चाहिए बल्कि इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और प्रार्थना का जो नल बीमारी से खुलता है उसे स्वास्थ्य प्राप्त करके बंद नहीं करना चाहिए।

तेरहवां उपाय

हे दुखी इंसान जो बीमारी पर शिकायत करता है! कुछ लोगों के लिए बीमारी एक अमीर
खजाना, एक अनमोल ईश्वरीय उपहार। हर बीमार व्यक्ति अपनी बीमारी के बारे में इसी तरह सोच सकता है।

नियत समय का पता नहीं है: मनुष्य को पूर्ण निराशा और पूर्ण असावधानी से बचाने के लिए, तथा उसे आशा और भय के बीच में बनाए रखने के लिए और इस प्रकार इस लोक और परलोक दोनों को सुरक्षित रखने के लिए, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी बुद्धि से नियत समय को छिपा रखा है; यह किसी भी समय आ सकता है। यदि यह मनुष्य को असावधानी में जकड़ लेता है, तो यह अनन्त जीवन को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है।

---

5 बुखारी, जिहाद, 134; मुसनद, iv, 410, 418।

बीमारी, हालांकि, असावधानी को दूर करती है; यह व्यक्ति को परलोक के बारे में सोचने पर मजबूर करती है; यह मृत्यु की याद दिलाती है, ताकि वह खुद को तैयार कर सके। कुछ बीमारियाँ इतनी लाभदायक होती हैं कि बीस दिन में व्यक्ति को वह पद प्राप्त हो जाता है, जो अन्यथा बीस वर्षों में भी प्राप्त नहीं हो सकता।

उदाहरण के लिए, मेरे मित्रों में दो युवक थे, ईश्वर उन पर दया करे।
एक थे सबरी जो लेमा गांव से थे, दूसरे थे वजीरजादे मुस्तफा जो स्लैमकोय गांव से थे।
मैं यह देखकर आश्चर्यचकित हो जाता था कि यद्यपि ये दोनों लिख नहीं सकते थे, फिर भी वे ईमानदारी और ईमान की सेवा के मामले में सबसे आगे थे। मुझे इसका कारण नहीं मालूम था। उनकी मृत्यु के बाद मैंने समझा कि दोनों को कोई गंभीर बीमारी हुई थी। बीमारी के कारण उनमें ईश्वर के प्रति काफी भय था, उन्होंने बहुत मूल्यवान सेवा की और परलोक के लिए लाभदायक स्थिति प्राप्त की, जबकि अन्य युवा लापरवाही से अनिवार्य उपासना को छोड़ देते थे। ईश्वर की इच्छा से, दो वर्ष की बीमारी के कष्ट ने उन्हें लाखों वर्ष के अनंत जीवन का सुख प्राप्त करने की अनुमति दी। अब मैं समझता हूँ कि मैंने कभी-कभी उनके स्वास्थ्य के लिए जो प्रार्थनाएँ की थीं, वे इस दुनिया के लिए अभिशाप थीं। ईश्वर की इच्छा से, परलोक में उनके कल्याण के लिए उनकी प्रार्थनाएँ स्वीकार की गईं।

इस प्रकार, मेरे विश्वास के अनुसार, उन दोनों ने उतना ही लाभ प्राप्त किया जितना कि दस वर्ष तक ईश्वर के भय से प्राप्त किया जा सकता है। यदि कुछ युवकों की तरह उन्होंने अपनी युवावस्था और अच्छे स्वास्थ्य पर भरोसा करके स्वयं को असावधानी और दुराचार में झोंक दिया होता और मृत्यु ने उनका पीछा करते हुए उन्हें उनके पापों की गंदगी के बीच में ही पकड़ लिया होता, तो वे अपनी कब्रों को प्रकाश के उस भण्डार के स्थान पर बिच्छुओं और साँपों के घोंसले बना देते।

चूँकि बीमारियों में ऐसे लाभ निहित हैं, इसलिए इनके बारे में शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि धैर्य के साथ, ईश्वर पर भरोसा रखते हुए, वास्तव में, ईश्वर को धन्यवाद देते हुए तथा उनकी दया पर भरोसा रखते हुए इन्हें सहन करना चाहिए।

चौदहवाँ उपाय

हे रोगी व्यक्ति जिसकी आँखों में मोतियाबिंद हो गया है! यदि आप जानते कि मोतियाबिंद के नीचे एक प्रकाशमय और आध्यात्मिक आँख क्या होती है, जो एक आस्तिक की आँखों को ढक सकती है, तो आप कहेंगे: "मेरे दयालु पालनहार को एक लाख धन्यवाद!" मैं इस मरहम को समझाने के लिए एक घटना का वर्णन करूँगा। यह इस प्रकार है:

एक बार बरला के सुलेमान की बुआ, जिसने आठ साल तक पूरी निष्ठा और तत्परता से मेरी सेवा की, अंधी हो गई। मेरे बारे में उसकी अच्छी राय, जो कि मेरी योग्यता से सौ गुना बेहतर थी, के कारण उस नेक महिला ने मुझे मस्जिद के दरवाजे पर पकड़ लिया और मुझसे कहा कि मैं उसकी दृष्टि वापस पाने के लिए प्रार्थना करूँ। इसलिए मैंने उस नेक महिला की नेकनीयती को अपनी प्रार्थना का माध्यम बनाया और सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना की,

प्रार्थना की: "हे प्रभु! उसकी धार्मिकता के सम्मान में उसकी दृष्टि वापस कर दो।" दो दिन बाद, बुरदुर से एक नेत्र विशेषज्ञ आया और उसने मोतियाबिंद हटा दिया। चालीस दिन बाद वह फिर से अपनी दृष्टि खो बैठी। मैं बहुत दुखी हुआ और उसके लिए बहुत प्रार्थना की। ईश्वर की इच्छा से, उसके परलोक में जीवन के लिए प्रार्थना स्वीकार हुई, अन्यथा मेरी वह प्रार्थना उसके लिए गलत अभिशाप बन जाती। उसके मरने में चालीस दिन बाकी थे; चालीस दिन बाद वह मर गई - ईश्वर उस पर दया करे।

इस प्रकार, बुढ़ापे की आँखों से बरला के बागों को उदास होकर देखने के बजाय, उसने अपनी कब्र में लाभ उठाया क्योंकि वह चालीस हज़ार दिनों तक जन्नत के बागों को देख सकी। क्योंकि उसका ईमान मज़बूत था और वह पूरी तरह से नेक थी।

हां, अगर कोई मोमिन अपनी दृष्टि खो देता है और अंधे की तरह कब्र में चला जाता है, तो अपनी डिग्री के अनुसार वह प्रकाश की दुनिया को अपनी कब्रों में पड़े दूसरे मृतकों की तुलना में कहीं ज़्यादा हद तक देख सकता है। जिस तरह हम इस दुनिया में बहुत सी ऐसी चीज़ें देखते हैं जो अंधे मोमिन नहीं देख पाते, अगर अंधे मोमिन ईमान के साथ चले जाते हैं, तो वे अपनी कब्रों में पड़े दूसरे मृतकों की तुलना में कहीं ज़्यादा हद तक देख सकते हैं। वे अपनी डिग्री के अनुसार जन्नत के बगीचों को देख सकते हैं और उन्हें सिनेमा की तरह देख सकते हैं जैसे कि सबसे शक्तिशाली दूरबीनों से देख रहे हों।

अतः कृतज्ञता और धैर्य के द्वारा तुम अपनी वर्तमान आँख के परदे के नीचे एक ऐसी आँख पा सकते हो जो इस प्रकार प्रकाश से भरी हुई है, और जिसके द्वारा तुम धरती के नीचे रहते हुए आकाश के ऊपर स्वर्ग को देख सकते हो। जो तुम्हारी आँख से परदा हटा देगा, वह नेत्र चिकित्सक जो तुम्हें उस आँख से देखने की अनुमति देगा, वह विवेकपूर्ण कुरआन है।

पंद्रहवां उपाय

ऐ बीमार, तू जो आहें भरता है और विलाप करता है! बीमारी के बाहरी पहलू को मत देख और आहें भर, बल्कि उसके अर्थ पर विचार कर और प्रसन्न हो। अगर बीमारी अर्थ में अच्छी न होती, तो दयालु सृष्टिकर्ता उसे अपने सबसे प्रिय बंदों को न देता। क्योंकि एक हदीस है जिसका अर्थ है, "सबसे कठिन परीक्षाओं से पीड़ित लोग नबी हैं, फिर संत और उनके जैसे लोग।"[6] अर्थात्, "जो लोग सबसे अधिक कष्टों और कठिनाइयों से पीड़ित हैं, वे सबसे अच्छे, सबसे पूर्ण व्यक्ति हैं।"

सबसे पहले हज़रत अय्यूब (अलैहिस्सलाम) और दूसरे नबियों ने, फिर संतों ने, फिर धर्मियों ने, अपनी बीमारियों को सच्ची इबादत और रहमान के उपहार के रूप में देखा है, उन्होंने धैर्य के साथ धन्यवाद दिया है और उन्होंने उन्हें दयालु सृष्टिकर्ता की दया से की गई शल्यक्रिया के रूप में देखा है।

[6] अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, i, 519, संख्या: 1056; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, iii, 343; बुखारी, मर्दा, 3; तिर्मिधि, ज़ुहद, 57; इब्न माजा, फ़ितन, 23; दारिमी, रिकाक, 67; मुसनद, आई, 172, 174, 180, 185; vi, 369.

ऐ तुम जो चिल्लाते हो और विलाप करते हो! अगर तुम इस चमकदार कारवां में शामिल होना चाहते हो, तो धैर्य के साथ शुक्रिया अदा करो। क्योंकि अगर तुम शिकायत करोगे, तो वे तुम्हें स्वीकार नहीं करेंगे। तुम गुमराह लोगों के गड्ढों में गिर जाओगे, और एक अंधेरी राह पर चलोगे।

हां, कुछ बीमारियां ऐसी होती हैं जो अगर मौत का कारण बनती हैं, तो एक तरह की शहादत होती हैं; वे भी संतत्व की एक समान डिग्री प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, जो लोग प्रसव के साथ होने वाली बीमारियों और पेट के दर्द, डूबने, जलने और प्लेग से मरते हैं, वे शहीद हो जाते हैं। कई धन्य बीमारियाँ भी हैं जो उनसे मरने वालों के लिए संतत्व की डिग्री प्राप्त करती हैं। इसके अलावा, चूँकि बीमारी दुनिया के प्रति प्रेम और उससे लगाव को कम करती है, इसलिए यह मृत्यु के माध्यम से दुनिया से अलग होने को हल्का करती है, जो सांसारिक लोगों के लिए बेहद दुखद और दर्दनाक है, और कभी-कभी यह उन्हें बहुत दुखी भी कर देती है।

यह वांछनीय है.

सोलहवां उपाय

हे बीमार व्यक्ति जो अपनी परेशानी पर शिकायत करता है! बीमारी सम्मान और करुणा को प्रेरित करती है, जो मानव सामाजिक जीवन में सबसे महत्वपूर्ण और अच्छा है। क्योंकि यह मनुष्य को आत्मनिर्भरता से बचाता है, जो उसे असामाजिकता और निर्दयता की ओर ले जाती है। क्योंकि श्लोक के अर्थ के अनुसार,

वास्तव में मनुष्य सभी सीमाओं का उल्लंघन करता है * वह अपने आप को आत्मनिर्भर मानता है, (96: 6-7)

एक दुष्ट आत्मा जो अच्छे स्वास्थ्य और भलाई के कारण आत्मनिर्भर महसूस करती है, कई मामलों में अपने भाइयों के प्रति सम्मान महसूस नहीं करती है, जो इसके हकदार हैं। और वह बीमारों और विपत्ति से पीड़ित लोगों के प्रति दया महसूस नहीं करती है, हालाँकि वे दया और दया के पात्र हैं। जब भी वह बीमार होता है, तो वह अपनी खुद की शक्तिहीनता और अभाव को समझता है और अपने भाइयों के प्रति सम्मान महसूस करता है जो इसके हकदार हैं।

वह अपने उन विश्वासी भाइयों के प्रति सम्मान महसूस करता है जो उससे मिलने आते हैं या उसकी सहायता करते हैं। वह मानवीय दयालुता महसूस करता है, जो सहानुभूति से उत्पन्न होती है, और आपदा से पीड़ित लोगों के लिए करुणा, जो सबसे महत्वपूर्ण इस्लामी विशेषता है। और खुद से उनकी तुलना करते हुए, वह शब्द के सही अर्थ में उन पर दया करता है और उनके लिए करुणा महसूस करता है। वह उनकी मदद करने के लिए जो कुछ भी कर सकता है, करता है और कम से कम उनके लिए प्रार्थना करता है और उनसे मिलने जाता है कि वे कैसे हैं, जो शरीयत के अनुसार सुन्नत है, और इस तरह सवाब कमाता है।

[7] बीमारी के माध्यम से यह शहादत प्राप्त करने की अवधि लगभग चालीस दिन की होती है।

सत्रहवाँ उपाय

ऐ बीमार इंसान जो बीमारी की वजह से अच्छे काम न कर पाने की शिकायत करता है! शुक्रिया अदा करो! बीमारी ही तुम्हारे लिए सबसे नेक कामों का दरवाज़ा खोलती है। बीमार इंसान और अल्लाह के लिए उसकी देखभाल करने वालों को लगातार सवाब मिलने के अलावा, बीमारी दुआओं की स्वीकृति का सबसे अहम ज़रिया है।

वास्तव में, बीमारों की देखभाल करने वाले ईमान वालों के लिए बहुत बड़ा सवाब है। उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछना और बीमारों से मिलना - बशर्ते कि उन पर कर न लगाया जाए - सुन्नत है8
और पापों के लिए प्रायश्चित भी। एक हदीस में है जिसमें कहा गया है, "बीमारों की प्रार्थना स्वीकार करो, क्योंकि वे स्वीकार्य हैं।"9

बीमारों की देखभाल करना, खास तौर पर अगर वे रिश्तेदार हों या खास तौर पर माता-पिता, महत्वपूर्ण इबादत है, जिससे महत्वपूर्ण सवाब मिलता है। बीमार व्यक्ति के दिल को खुश करना और उसे सांत्वना देना एक तरह से महत्वपूर्ण दान है। वह व्यक्ति भाग्यशाली है जो बीमारी के समय पिता और माता के दिल को खुश करता है और उनकी प्रार्थना स्वीकार करता है। यहां तक कि फ़रिश्ते भी ताली बजाते हैं और कहते हैं: “माशाअल्लाह! बरेकल्लाह!” उन अच्छे बच्चों के वफादार दृश्यों के सामने जो अपने माता-पिता की बीमारी के समय पूर्ण सम्मान और संतानोचित दयालुता के साथ प्रतिक्रिया करते हैं, मानवता की महानता को दर्शाते हैं - क्योंकि वे समाज के जीवन में सम्मान के सबसे योग्य हैं।

हाँ, बीमारी के समय सुखों का अनुभव होता है जो आस-पास के लोगों की दया, दया और करुणा से उत्पन्न होते हैं, और बहुत ही सुखद और सुखद होते हैं और बीमारी के दर्द को कम कर देते हैं। बीमारों की प्रार्थनाओं की स्वीकार्यता एक महत्वपूर्ण बात है। पिछले तीस या चालीस वर्षों से, मैं खुद कटिवात की बीमारी से ठीक होने के लिए प्रार्थना करता रहा हूँ जिससे मैं पीड़ित हूँ। हालाँकि, मैंने समझा कि बीमारी प्रार्थना के लिए दी गई थी। चूँकि प्रार्थना से प्रार्थना को दूर नहीं किया जा सकता है; यानी, चूँकि प्रार्थना खुद को दूर नहीं कर सकती है, इसलिए मैंने समझा कि प्रार्थना के परिणाम परलोक से संबंधित हैं,10 और यह एक प्रकार की पूजा है, क्योंकि बीमारी के माध्यम से व्यक्ति अपनी नपुंसकता को समझता है और ईश्वर के दरबार में शरण लेता है। इसलिए, हालाँकि तीस साल से मैं ठीक होने के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ और जाहिर तौर पर मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई है, फिर भी मुझे इसे छोड़ने का ख्याल नहीं आया। क्योंकि बीमारी प्रार्थना का समय है। ठीक होना प्रार्थना का परिणाम नहीं है। यदि सर्वशक्तिमान और दयालु ईश्वर उपचार प्रदान करता है, तो वह अपनी असीम कृपा से ऐसा करता है।

---

[8] अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, द्वितीय, 45, संख्या: 1285।

[9] इब्न माजा, जनाईज़, 1; दयालामी, मुस्नद अल-फिरदौस, आई, 280।

[10] हां, जबकि कुछ बीमारियां प्रार्थना के अस्तित्व का कारण हैं, अगर प्रार्थना
बीमारी के अस्तित्व न होने का कारण, प्रार्थना का अस्तित्व उसके स्वयं के अस्तित्व न होने का कारण होगा, और ऐसा नहीं हो सकता।

इसके अलावा अगर दुआएँ हमारी मर्ज़ी के मुताबिक़ क़बूल न हों तो यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे क़बूल नहीं हुईं। हम से ज़्यादा समझदार पैदा करने वाला जानता है। वह जो हमारे हित में है, वही देता है। कभी-कभी वह हमारी दुनिया की दुआओं को आख़िरत की तरफ़ मोड़ देता है और उसे उसी तरह क़बूल करता है। किसी भी सूरत में, बीमारी की वजह से और कमज़ोरी, नपुंसकता, दीनता और ज़रूरत की वजह से की गई दुआ क़बूल होने के बहुत करीब होती है। बीमारी दुआ को सच्चा बनाती है। बीमार जो धार्मिक हैं और मोमिन जो बीमारों की देखभाल करते हैं, दोनों को इस दुआ का फ़ायदा उठाना चाहिए।

अठारहवाँ उपाय

हे बीमार व्यक्ति, तू जो धन्यवाद देना छोड़ देता है और शिकायत करने लगता है! शिकायत अधिकार से उत्पन्न होती है, और तेरा कोई भी अधिकार नष्ट नहीं हुआ है कि तू शिकायत करे।
बेशक बहुत से शुक्रिया हैं जो तुम्हारे लिए फर्ज हैं, तुम्हारे ऊपर हक हैं और तुमने उन्हें अदा नहीं किया। अगर अल्लाह ने तुम्हें हक नहीं दिया है तो तुम इस तरह शिकायत कर रहे हो जैसे हक मांग रहे हो और जो हक का नहीं है। तुम दूसरों को देखकर शिकायत नहीं कर सकते जो तुमसे बेहतर हैं और जो स्वस्थ हैं। बल्कि तुम्हारा काम है बीमारों को देखना जो स्वास्थ्य के मामले में तुमसे कम हैं और तुम्हें शुक्रिया अदा करना चाहिए। अगर तुम्हारा हाथ टूटा है तो उनका हाथ देखो जो कटा हुआ है। अगर तुम्हारी एक आंख है तो अंधे को देखो जिसकी दोनों आंखें नहीं हैं और अल्लाह का शुक्र अदा करो!

बेशक किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह अपने से बड़े लोगों की तरफ़ देख कर फ़ायदे के बारे में शिकायत करे। मुसीबतों के मामले में हर किसी को यह अधिकार है कि वह अपने से ऊपर वालों की तरफ़ देखे ताकि वह शुक्र अदा करे। इस रहस्य को रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर तुलना के साथ समझाया गया है; इसका सारांश इस प्रकार है:

एक आदमी एक बेचारे आदमी को मीनार के ऊपर ले जाता है। हर कदम पर वह उसे एक अलग उपहार, एक अलग इनाम देता है। सबसे ऊपर जाकर वह उसे सबसे बड़ा उपहार देता है। यद्यपि वह उन सभी उपहारों के बदले में धन्यवाद और कृतज्ञता चाहता है, लेकिन वह चिड़चिड़ा आदमी प्रत्येक सीढ़ी पर मिले उपहारों को भूल जाता है, या उन्हें महत्वहीन मानता है, और धन्यवाद न देकर, ऊपर की ओर देखकर शिकायत करना शुरू कर देता है, कि "काश मीनार ऊंची होती, तो मैं और भी ऊपर चढ़ सकता था। यह उस पहाड़ या उस दूसरी मीनार जितनी ऊंची क्यों नहीं है?" अगर वह इस तरह शिकायत करने लगे, तो यह कितनी बड़ी कृतघ्नता होगी, कितनी बड़ी गलती होगी!

ठीक उसी तरह, मनुष्य भी शून्य से अस्तित्व में आता है, न कि चट्टान या पेड़ या जानवर के रूप में, बल्कि एक इंसान और मुसलमान के रूप में, और अधिकांश समय वह अच्छे स्वास्थ्य का अनुभव करता है और उच्च स्तर की कृपा प्राप्त करता है। इन सबके बावजूद, शिकायत करना और अधीरता प्रदर्शित करना क्योंकि वह नहीं है

कुछ उपहारों के योग्य, या क्योंकि वह गलत विकल्पों या दुर्व्यवहार के कारण उन्हें खो देता है, या क्योंकि वह उन्हें प्राप्त नहीं कर सकता है, और ईश्वरीय प्रभुत्व की आलोचना करते हुए कहता है कि “मैंने ऐसा क्या किया है कि मेरे साथ ऐसा हुआ?”, मन की एक स्थिति और आध्यात्मिक बीमारी शारीरिक बीमारी से भी अधिक भयावह है। टूटे हाथ से लड़ने की तरह, शिकायत उसकी बीमारी को और भी बदतर बना देती है। समझदार वह व्यक्ति है जो श्लोक के अर्थ के अनुसार,

> जो लोग जब किसी मुसीबत में फंस जाते हैं तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की ओर हमें लौटना है (2:156)

वह समर्पण करता है और धैर्य रखता है, ताकि बीमारी अपना कर्तव्य पूरा कर ले, और फिर चली जाए।

उन्नीसवां उपाय

जैसा कि शाश्वत रूप से प्रार्थित एक के गुण, "सबसे सुंदर नाम" से संकेत मिलता है, महिमा के सभी सर्व-सुंदर एक के नाम सुंदर हैं। प्राणियों में, जीवन शाश्वत प्रार्थितता का सबसे सूक्ष्म, सबसे सुंदर और सबसे व्यापक दर्पण है। सुंदर का दर्पण सुंदर हो जाता है। सुंदरता के गुणों को प्रदर्शित करने वाला दर्पण सुंदर हो जाता है। जिस तरह से ऐसी सुंदरता द्वारा दर्पण के साथ जो कुछ भी किया जाता है वह अच्छा और सुंदर होता है, वास्तविकता के संबंध में जीवन में जो कुछ भी घटित होता है, वह अच्छा होता है। क्योंकि यह सबसे सुंदर नामों के सुंदर प्रभावों को प्रदर्शित करता है, जो अच्छे और सुंदर हैं।

अगर जीवन हमेशा के लिए स्वस्थ और खुशहाली के बिना नीरसता से गुज़रता है, तो यह एक अपूर्ण दर्पण बन जाता है। एक तरह से, यह अस्तित्वहीनता, अस्तित्वहीनता और शून्यता का संकेत देता है और थकावट का कारण बनता है। यह जीवन के मूल्य को कम करता है और जीवन के आनंद को संकट में बदल देता है। यह सोचकर कि वह अपना समय जल्दी से जल्दी बिता लेगा, ऊब के कारण व्यक्ति खुद को या तो बुरी आदतों में या मौज-मस्ती में झोंक देता है। वह अपने मूल्यवान जीवन के प्रति शत्रुतापूर्ण हो जाता है और उसे मार डालना चाहता है और उसे जल्दी से जल्दी खत्म कर देना चाहता है, जैसे कि यह जेल की सज़ा हो। लेकिन जब यह परिवर्तन और क्रिया और विभिन्न अवस्थाओं में घूमता है, तो जीवन अपना मूल्य, अपना महत्व और आनंद महसूस कराता है। ऐसा व्यक्ति नहीं चाहता कि उसका जीवन जल्दी से जल्दी बीत जाए, भले ही वह कठिनाई और क्लेश में हो। वह थक कर शिकायत नहीं करता, यह कहते हुए कि, “हाय! सूरज अभी तक नहीं डूबा है,” या, “अभी भी रात है।”

हाँ, किसी धनी और आलसी सज्जन से, जो विलासिता की गोद में जी रहा हो, पूछिए, “आप कैसे हैं?” आपको एक दयनीय उत्तर सुनने को मिलेगा, जैसे: “समय कभी नहीं बीतता।
चलो बैकगैमौन का खेल खेलते हैं। या चलो समय बिताने के लिए कुछ मनोरंजन ढूंढते हैं।”
अन्यथा आप सांसारिक महत्वाकांक्षा से उत्पन्न शिकायतें सुनेंगे, जैसे: "मुझे वह नहीं मिला; काश मैंने ऐसा-ऐसा किया होता।"

फिर किसी आपदा से पीड़ित व्यक्ति या किसी मजदूर या गरीब आदमी से पूछिए

गरीबी: “आप कैसे हैं?” अगर वह समझदार है, तो वह जवाब देगा: “भगवान का शुक्र है, मैं काम कर रहा हूँ। अगर शाम इतनी जल्दी नहीं होती, तो मैं यह काम पूरा कर सकता था!
समय बहुत जल्दी बीत जाता है, और जीवन भी; वे पलक झपकते ही बीत जाते हैं। निश्चित रूप से मेरे लिए चीजें कठिन हैं, लेकिन वे भी बीत जाएंगी। सब कुछ जल्दी बीत जाता है।" वह वास्तव में कहता है कि जीवन कितना मूल्यवान है और इसके बीत जाने पर उसे कितना अफसोस है। इसका मतलब है कि वह कठिनाई और श्रम के माध्यम से जीवन के आनंद और मूल्य को समझता है। जहाँ तक सहजता और स्वास्थ्य की बात है, वे जीवन को कड़वा बनाते हैं और इसके जल्दी बीत जाने की आशा करते हैं।

मेरे बीमार भाई! जान लो कि अस्तित्वहीनता ही विपत्तियों और बुराइयों और यहाँ तक कि पापों का मूल और खमीर है, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में निर्णायक और विस्तृत रूप से सिद्ध किया गया है। जहाँ तक अस्तित्वहीनता का सवाल है, यह बुराई है। नीरस अवस्थाएँ जैसे सहजता,
मौन, शांति और गिरफ्तारी अस्तित्वहीनता और शून्यता के करीब हैं, और इसलिए अस्तित्वहीनता के अंधेरे को महसूस कराते हैं और परेशानी का कारण बनते हैं। जहाँ तक क्रिया और परिवर्तन का सवाल है, वे अस्तित्व हैं और अस्तित्व को महसूस कराते हैं। और अस्तित्व शुद्ध अच्छाई है; यह है

रोशनी।

चूँकि वास्तविकता यह है, इसलिए आपकी बीमारी को आपके अस्तित्व में एक अतिथि के रूप में भेजा गया है ताकि वह आपके बहुमूल्य जीवन को शुद्ध करने, उसे मजबूत बनाने और उसे प्रगति प्रदान करने जैसे कई कर्तव्य निभाए, तथा आपके अस्तित्व में मौजूद अन्य मानवीय क्षमताओं को सक्रिय करने के लिए प्रेरित करे।
अपने बीमार अंग की देखभाल करने और सर्वज्ञ निर्माता के विभिन्न नामों को प्रदर्शित करने के लिए। ईश्वर की इच्छा से, यह अपने कर्तव्यों को शीघ्रता से पूरा करेगा और प्रस्थान करेगा, और अच्छे स्वास्थ्य के लिए कहेगा: "आओ, और मेरे स्थान पर स्थायी रूप से रहो, और अपने कर्तव्यों का पालन करो।
यह घर तुम्हारा है। तुम स्वस्थ रहकर यहीं रहो।”

बीसवां उपाय

हे बीमार व्यक्ति! जो अपनी बीमारियों के लिए इलाज खोज रहा है! बीमारी दो प्रकार की होती है।
एक प्रकार वास्तविक है, दूसरा काल्पनिक। जहाँ तक वास्तविक प्रकार की बात है, तो सर्वशक्तिमान और महान चिकित्सक ने पृथ्वी के अपने शक्तिशाली औषधालय में हर बीमारी का इलाज सुरक्षित रखा है। दवाइयाँ प्राप्त करना और उनका उपचार के रूप में उपयोग करना वैध है, लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि उनका प्रभाव और उपचार सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर से है। वह बीमारी भी देता है और इलाज भी करता है।

कुशल, ईश्वर-भक्त डॉक्टरों की सलाह पर चलना एक कारगर दवा है। क्योंकि ज़्यादातर बीमारियाँ दुर्व्यवहार, संयम की कमी, अपव्यय, गलतियों, अपव्यय और देखभाल की कमी से पैदा होती हैं। एक धार्मिक डॉक्टर निश्चित रूप से वैधानिक सीमाओं के भीतर सलाह और निर्देश देगा। वह दुर्व्यवहार और ज्यादतियों को मना करेगा और सांत्वना देगा। बीमार व्यक्ति को उसकी सलाह और सांत्वना पर भरोसा होता है और उसकी बीमारी कम हो जाती है; यह उसके लिए परेशानी के स्थान पर सहजता पैदा करता है।

लेकिन जब काल्पनिक बीमारी की बात आती है, तो सबसे प्रभावी दवा यह है कि इसे दिया जाए।
इसका कोई महत्व नहीं है। इसे जितना अधिक महत्व दिया जाता है, यह उतना ही बढ़ता है

और फूल जाता है। अगर इस पर ध्यान न दिया जाए तो यह कम हो जाता है और बिखर जाता है। मधुमक्खियां जितनी ज्यादा परेशान होती हैं, उतनी ही ज्यादा वे किसी व्यक्ति के सिर के चारों ओर झुंड बनाकर घूमती हैं, लेकिन अगर उन पर ध्यान न दिया जाए तो वे बिखर जाती हैं। इसी तरह, अंधेरे में अपनी आंखों के सामने लहराते हुए धागे के टुकड़े को जितना ज्यादा महत्व दिया जाता है और इससे होने वाली आशंका को जितना ज्यादा महत्व दिया जाता है, उतना ही यह बढ़ता है और आपको पागलों की तरह भागने पर मजबूर करता है। जबकि अगर कोई इसे महत्व न दे तो वह देखता है कि यह एक साधारण धागा है, सांप नहीं और अपनी घबराहट और चिंता पर हंसता है।

अगर हाइपोकॉन्ड्रिया क्रॉनिक है, तो यह हकीकत में बदल जाता है। यह एक गंभीर बीमारी है जो नर्वस और कल्पनाशील लोगों को प्रभावित करती है; ऐसे लोग राई का पहाड़ बना देते हैं और उनका मनोबल टूट जाता है। फिर अगर वे निर्दयी 'आधे' डॉक्टरों या अनुचित डॉक्टरों से मिलते हैं, तो यह उनके हाइपोकॉन्ड्रिया को और भड़का देता है। अगर वे अमीर हैं, तो वे अपनी संपत्ति खो देते हैं, या वे अपनी बुद्धि या अपने स्वास्थ्य को खो देते हैं।

इक्कीसवाँ उपाय

मेरे बीमार भाई! तुम्हारी बीमारी के साथ शारीरिक पीड़ा भी है। लेकिन तुम एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सुख से घिरे हुए हो जो उसके प्रभाव को दूर कर देगा। क्योंकि अगर तुम्हारे पिता, माता और सम्बन्धी तुम्हारे साथ हैं, तो उनकी सबसे सुखद करुणा जो तुम बचपन से भूल चुके हो, वह फिर से जागृत हो जाएगी और तुम फिर से बचपन में मिले दयालु भावों को देख पाओगे। इसके अलावा, मित्रताएँ जो गुप्त और छिपी हुई थीं, वे भी बीमारी के आकर्षण से तुम्हारी ओर प्रेम से देखती हैं। इनके सामने तुम्हारा शारीरिक दुख महत्वहीन हो जाता है। इसके अलावा, तुम स्वामियों के स्वामी बन गए हो क्योंकि जिनकी तुम पहले गर्व से सेवा करते थे, वे अब बीमारी के आदेश पर तुम्हारी दया से सेवा करते हैं। इसके अलावा, तुमने लोगों में सहानुभूति और मानवीय दया को अपनी ओर आकर्षित किया है और इसलिए तुम्हें अनेक सहायक मित्र और दयालु साथी मिले हैं। और फिर, तुम्हें अपनी बीमारी से कई कठिन कर्तव्यों से विश्राम करने का आदेश मिला है और तुम विश्राम कर रहे हो। निश्चय ही, इन अमूर्त सुखों के सामने, तुम्हारा छोटा-मोटा दुख तुम्हें शिकायत नहीं, बल्कि धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करेगा।

बाईसवां उपाय

मेरे भाई जो एक गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं, जैसे कि दौरा पड़ना! सबसे पहले मैं आपको खुशखबरी देता हूँ कि विश्वासियों के लिए दौरा पड़ना एक धन्य घटना मानी जाती है। बहुत समय पहले मैं पवित्र लोगों से यह सुनता था और मुझे इसका कारण नहीं पता था। अब, मुझे इसका एक कारण समझ में आता है, जो इस प्रकार है:

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ एकता प्राप्त करने, इस संसार के आध्यात्मिक संकटों से बचने, तथा शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए, परमेश्वर के लोगों ने दो सिद्धांतों का पालन करना चुना है:

पहला है मृत्यु का चिंतन। यह सोचते हुए कि संसार क्षणभंगुर है, और वे स्वयं भी अस्थायी मेहमान हैं, जिन्हें कर्तव्य सौंपा गया है, वे इस तरह से शाश्वत जीवन के लिए काम करते हैं।

दूसरा: उपवास, धार्मिक अभ्यास और तप के माध्यम से, वे बुरी आत्मा को मारने की कोशिश करते हैं और इसके खतरों और अंध भावनाओं से बच जाते हैं।

और तुम, मेरे भाई, जिसने अपने आधे शरीर का स्वास्थ्य खो दिया है! बिना चुने ही तुम्हें ये दो सिद्धांत दिए गए हैं, जो कि क्षणभंगुर और सरल हैं तथा सुख का कारण हैं। इस प्रकार, तुम्हारी सत्ता की स्थिति तुम्हें निरंतर संसार की क्षणभंगुर प्रकृति के बारे में चेतावनी देती है और यह कि मनुष्य क्षणभंगुर है। संसार अब तुम्हें डुबा नहीं सकता, न ही प्रमाद तुम्हारी आँखें बंद कर सकता है। और निश्चय ही, दुष्ट आत्मा नीच वासना और पशु तृष्णाओं से आधे मनुष्य की अवस्था में किसी को धोखा नहीं दे सकती; वह आत्मा की परीक्षाओं से शीघ्र ही बच जाता है।

इस प्रकार, ईश्वर में विश्वास और उसके प्रति समर्पण तथा उस पर निर्भरता के रहस्य के माध्यम से, एक आस्तिक व्यक्ति थोड़े समय में ही अपोप्लेक्सी जैसी गंभीर बीमारी से लाभ उठा सकता है, जो संतों के गंभीर परीक्षणों के समान है। इस प्रकार ऐसी गंभीर बीमारी बहुत सस्ती हो जाती है।

तेईसवां उपाय

दुखी बीमार व्यक्ति जो अकेला और अजनबी है! भले ही आपका अकेलापन और निर्वासन आपकी बीमारी के साथ-साथ कठोरतम हृदयों में आपके प्रति सहानुभूति जगाए और दया और करुणा को आकर्षित करे, क्या यह आपके दयालु निर्माता का विकल्प हो सकता है? क्योंकि वह सभी कुरान की सूराओं की शुरुआत में "दयालु और दयावान" के गुणों के साथ खुद को हमारे सामने प्रस्तुत करता है, और अपनी दया की एक झलक से सभी माताओं को उस अद्भुत कोमलता के साथ अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए प्रेरित करता है, और उसकी दया की एक अभिव्यक्ति से हर वसंत धरती को उपहारों से भर देता है। जन्नत में अनंत जीवन अपने सभी चमत्कारों के साथ उसकी दया का एक ही प्रकटीकरण है। फिर निश्चित रूप से विश्वास के माध्यम से उसके साथ आपका संबंध, उसे पहचानना और अपनी बीमारी और निर्वासन में अपने अकेलेपन के दुःख से उत्पन्न नपुंसकता की जीभ के माध्यम से उससे विनती करना, उसकी दया की दृष्टि को आपकी ओर आकर्षित करेगा, जो हर चीज का स्थान ले लेती है। चूंकि वह मौजूद है और वह आपकी ओर देखता है, इसलिए सब कुछ आपके लिए मौजूद है। जो लोग वास्तव में अकेले और निर्वासित हैं, वे वे लोग हैं जो विश्वास और समर्पण के माध्यम से उनके साथ जुड़े नहीं हैं, या उस संबंध को कोई महत्व नहीं देते हैं।

चौबीसवां उपाय

हे तुम जो मासूम बीमार बच्चों या बुज़ुर्गों की देखभाल करते हो, जो मासूम बच्चों के समान हैं! तुम्हारे सामने परलोक के लिए महत्वपूर्ण व्यापार है। इसलिए इसे अपने उत्साह और प्रयास के माध्यम से प्राप्त करो! यह वास्तविकता के लोगों द्वारा स्थापित किया गया है कि मासूम बच्चों की बीमारियाँ उनके नाजुक शरीर के लिए प्रशिक्षण और इंजेक्शन और प्रभु की शिक्षा की तरह हैं जो उन्हें भविष्य में दुनिया की उथल-पुथल का सामना करने की अनुमति देती हैं; कि बच्चे के सांसारिक जीवन से संबंधित ज्ञान के कई उदाहरणों के अलावा, वयस्कों में पापों के प्रायश्चित के बजाय जो आध्यात्मिक जीवन को देखता है और जीवन को शुद्ध करने का साधन है, बीमारियाँ इंजेक्शन की तरह हैं जो भविष्य में या परलोक में बच्चे की आध्यात्मिक प्रगति सुनिश्चित करती हैं; और यह कि ऐसी बीमारियों से प्राप्त होने वाले पुण्य माता-पिता के अच्छे कार्यों की पुस्तक में चले जाते हैं, और विशेष रूप से उस माँ के, जो करुणा के रहस्य के माध्यम से अपने बच्चे के स्वास्थ्य को अपने स्वास्थ्य से अधिक प्राथमिकता देती है।

जहाँ तक बुज़ुर्गों की देखभाल का सवाल है, यह बात पुख्ता रिवायतों और कई ऐतिहासिक घटनाओं में स्थापित है कि बुज़ुर्गों और ख़ास तौर पर माता-पिता की दुआएँ सुनना, उनके दिलों को खुश करना और उनकी वफ़ादारी से सेवा करना, बहुत बड़ा सवाब पाने के साथ-साथ इस दुनिया और आख़िरत में भी खुशियाँ लाता है। और यह बात कई घटनाओं से स्थापित है कि जो ख़ुशकिस्मत औलाद अपने बुज़ुर्ग माता-पिता की हर बात का पालन करती है, उसके साथ उसकी औलाद भी वैसा ही व्यवहार करती है, लेकिन अगर कोई बदकिस्मत औलाद अपने माता-पिता को चोट पहुँचाती है, तो उसे इस दुनिया और आख़िरत में बहुत सी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। हाँ, इस्लाम की माँग है कि न सिर्फ़ बुज़ुर्ग या मासूम रिश्तेदारों की देखभाल की जाए, बल्कि बुज़ुर्ग मोमिनों की भी देखभाल की जाए, अगर वे उनसे मिलें - सच्चे ईमान के रहस्य के ज़रिए - और ज़रूरत पड़ने पर आदरणीय बीमार बुज़ुर्गों की पूरी क्षमता से सेवा की जाए।

पच्चीसवाँ उपाय

मेरे बीमार भाइयों! यदि आप सबसे अधिक लाभकारी और वास्तव में आनंददायक पवित्र इलाज चाहते हैं, तो अपने विश्वास को मजबूत और विकसित करें! यानी, विश्वास, उस पवित्र इलाज और उस दवा का उपयोग करें जो पश्चाताप और क्षमा मांगने और पाँच दैनिक प्रार्थनाओं और पूजा के माध्यम से विश्वास से उत्पन्न होती है।

तुम मानो इस संसार के प्रेम और आसक्ति के कारण संसार के समान ही एक बीमार अमूर्त सत्ता के स्वामी हो, जैसे कि असावधान लोग। हमने रिसाले-ए-नूर के कई भागों में यह सिद्ध किया है कि ईमान तुरन्त ही तुम्हारी उस अमूर्त सत्ता को स्वस्थ कर देता है, जो मृत्यु और वियोग के आघातों से घायल और क्षत-विक्षत हो गई है, उसे घावों से बचाता है और वास्तव में उसे स्वस्थ कर देता है। लेकिन मैं यहाँ चर्चा को संक्षिप्त कर रहा हूँ, ताकि तुम थक न जाओ।

जहाँ तक ईमान की दवा का सवाल है, यह तब अपना असर दिखाती है जब आप अपने धार्मिक कर्तव्यों को यथासंभव पूरा करते हैं। असावधानी, बुराई, आत्मा की वासनाएँ और अवैध मनोरंजन इसके प्रभाव को कम करते हैं। बीमारी असावधानी को दूर करती है, भूख को कम करती है, अवैध सुखों में बाधा डालती है, इसलिए इसका लाभ उठाएँ। तौबा और क्षमा याचना, और प्रार्थना और प्रार्थना के माध्यम से ईमान की पवित्र दवाओं और प्रकाश का उपयोग करें।

सर्वशक्तिमान ईश्वर आपको स्वास्थ्य प्रदान करें और आपकी बीमारियों को आपके पापों का प्रायश्चित बना दें। आमीन। आमीन। आमीन।

> और वे कहते हैं, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमें इसकी ओर मार्ग दिखाया। यदि वह मार्ग अल्लाह की ओर से न होता, तो हम कदापि मार्ग न पा सकते थे। निस्संदेह हमारे पालनहार के रसूल सत्य ही लेकर आए थे।" (7:43)
>
> पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)
>
> हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद को आशीर्वाद प्रदान कर, हमारे दिलों के लिए दवा और उनका उपचार, हमारे शरीरों का अच्छा स्वास्थ्य और उनकी चिकित्सा, हमारी आँखों की रोशनी और उनकी चमक, और उनके परिवार और साथियों को आशीर्वाद प्रदान कर और उन्हें शांति प्रदान कर।

* * *

पच्चीसवें फ्लैश का परिशिष्ट

यह सत्रहवाँ पत्र है, जो मेकतूबात (पत्र 1928-1932) में शामिल होने के कारण यहाँ शामिल नहीं किया गया है।

* * *

छब्बीसवाँ फ्लैश

बुजुर्गों के लिए ग्रंथ

[इस फ्लैश में छब्बीस आशाएं, रोशनियां और सांत्वनाएं शामिल हैं।१]

स्मरण: मैंने प्रत्येक आशा की शुरुआत में अपने दुखों और कष्टों का वर्णन इस तरह किया है कि आप भी दुखी हो जाएंगे, क्योंकि मैं यह दिखाना चाहता हूं कि पवित्र कुरान से मिलने वाले उपचार असाधारण रूप से प्रभावशाली हैं। बुजुर्गों के बारे में यह फ्लैश तीन या चार मामलों में अपनी अभिव्यक्ति की सुंदरता को बनाए रखने में असमर्थ रहा है:

पहला: यह मेरे जीवन की उन घटनाओं के बारे में है, जिन्हें मैंने अपनी कल्पना में फिर से दोहराया है; यह उस समय की मनःस्थिति में लिखा गया था। इसलिए, जिस तरह से इसे प्रस्तुत किया गया है, उसमें व्यवस्थित व्यवस्था बनाए रखना संभव नहीं था।

दूसरा: यह उस समय लिखा गया था जब मैं सुबह की प्रार्थना के बाद अत्यधिक थका हुआ महसूस कर रहा था, और मैं इसे तेजी से लिखने के लिए बाध्य था; इसलिए इसकी अभिव्यक्ति का तरीका भ्रमित हो गया।

तीसरा: मेरे साथ लिखने के लिए हमेशा कोई नहीं रहता था और जो लेखक मेरे साथ होता था, उसके पास रिसाले-ए-नूर से जुड़े चार या पाँच अन्य काम होते थे। इसलिए हमें इसे ठीक करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता था और यह अव्यवस्थित अवस्था में ही रहता था।

चौथा: हम दोनों ही इसकी रचना के बाद थक गए थे, और अर्थ के बारे में ध्यान से नहीं सोचते हुए, इसे केवल सतही रूप से सुधारने से काम चला लिया; इसलिए अभिव्यक्ति के तरीके में त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। मैं उदार बुजुर्गों से अनुरोध करता हूँ कि वे ऐसी त्रुटियों को सहनशीलता से देखें और जब वे ईश्वरीय न्यायालय में अपने हाथ उठाएँ तो हमें अपनी प्रार्थनाओं में शामिल करें, क्योंकि ईश्वरीय दया धन्य बुजुर्गों की प्रार्थनाओं को अस्वीकार नहीं करती है।

[1] इस फ्लैश की हस्तलिखित प्रति में, जिसे सम्मानित लेखक ने संशोधित किया है, लिखा है: "चौदहवें से छब्बीसवें तक की शेष आशाएँ, सुप्रसिद्ध आपदा (एस्कीशेहिर जेल) के कारण नहीं लिखी जा सकीं; अब उन्हें लिखने का समय बीत चुका है, इसलिए वे बिना लिखे रह गई हैं।" (चौदहवें से सोलहवें तक की रचनाएँ बाद में की गईं। त्र.)

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
कफ. हा. या. ऐन. सद. * [यह] तुम्हारे पालनहार की अपने बन्दे ज़करिया पर की गई दया का वर्णन है। * देखो! उसने गुप्त रूप से अपने पालनहार को पुकारा, प्रार्थना करते हुए: "ऐ मेरे पालनहार! वास्तव में मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हैं, और मेरे सिर के बाल सफ़ेद हो गए हैं; लेकिन ऐ मेरे पालनहार, मैं आपकी प्रार्थना में कभी भी अभागा नहीं हूँ। " (19:1-4) *

पहली आशा

आदरणीय बुज़ुर्ग भाई-बहन जो परिपक्वता तक पहुँच चुके हैं! आपकी तरह, मैं भी बुज़ुर्ग हूँ। मैं अपनी बुढ़ापे में मिली 'आशाओं' और मेरे साथ हुई कुछ चीज़ों के बारे में लिखने जा रहा हूँ, ताकि मैं आपके साथ उन सांत्वना की रोशनी को साझा कर सकूँ जो उनमें निहित हैं। बेशक मैंने जो रोशनी देखी है और उम्मीद के जो दरवाज़े देखे हैं, वे मेरी दोषपूर्ण और भ्रमित क्षमताओं के अनुसार देखे और खोले गए हैं। ईश्वर की इच्छा से, आपके शुद्ध, ईमानदार स्वभाव उन रोशनियों को और अधिक चमकाएँगे और मेरी पाई गई आशाओं को मज़बूत करेंगे।

इस प्रकार, निम्नलिखित आशाओं और प्रकाशों का स्रोत, स्त्रोत और फव्वारा ईश्वर में विश्वास है।

दूसरी आशा

एक दिन जब मैं बुढ़ापे की ओर बढ़ रहा था, शरद ऋतु में दोपहर की प्रार्थना के समय, मैं एक ऊंचे पहाड़ से दुनिया को देख रहा था। अचानक मेरे मन में एक करुण, दुख और एक तरह से अंधकारमय मनःस्थिति ने मुझे घेर लिया। मैंने देखा कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। दिन भी बूढ़ा हो गया था, और साल भी; और दुनिया भी बूढ़ी हो गई थी। बुढ़ापे की इन घटनाओं के बीच जब दुनिया से विदा होने और अपने प्रियजनों से अलग होने का समय करीब आ रहा था, तो मेरा अपना बुढ़ापा मुझे बुरी तरह झकझोर रहा था। अचानक ईश्वरीय दया इस तरह प्रकट हुई कि उसने उस करुण दुख और वियोग को एक शक्तिशाली आशा और सांत्वना की चमकती हुई रोशनी में बदल दिया। हाँ, आप जो मेरे जैसे बुज़ुर्ग हैं! दयालु सृष्टिकर्ता ने स्वयं को हमारे सामने पवित्र क़ुरआन में सौ स्थानों पर सबसे दयालु के रूप में प्रस्तुत किया है, और हमेशा अपनी दया को धरती पर रहने वाले उन प्राणियों की सहायता के लिए भेजता है जो इसकी तलाश करते हैं, और हर साल वसंत को अदृश्य से असंख्य उपहारों और उपहारों से भर देता है, उन्हें हम तक भेजता है जो जीविका के लिए जरूरतमंद हैं, और हमारी कमजोरी और नपुंसकता के सापेक्ष अपनी दया को अधिक मात्रा में प्रकट करता है। इसलिए, हमारे बुढ़ापे में उसकी दया हमारी सबसे बड़ी आशा और सबसे शक्तिशाली प्रकाश है। इसे ईमान के माध्यम से दयालु व्यक्ति के साथ संबंध बनाने और उसके प्रति आज्ञाकारी होकर पाँचों दैनिक प्रार्थनाएँ अदा करने से प्राप्त किया जा सकता है।

तीसरी आशा

एक बार जब मैं जवानी की रात की नींद से बुढ़ापे की सुबह जागा तो मैंने खुद को देखा और पाया कि मेरी ज़िंदगी कब्र की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी जैसे कि ढलान से नीचे की ओर भाग रही हो। जैसा कि नियाज़ी मिस्री ने कहा:

हर दिन मेरे जीवन की इमारत से एक पत्थर ज़मीन पर गिरता है;
बेखबर! तुम सो रहे हो, इस बात से अनजान कि इमारत खंडहर हो चुकी है!

मेरा शरीर, मेरी आत्मा का निवास, हर दिन एक पत्थर के गिरने से जीर्ण-शीर्ण होता जा रहा था। मेरी आशाएँ और महत्वाकांक्षाएँ जो मुझे दुनिया से मजबूती से बांधे हुए थीं, उससे टूटने लगी थीं। मुझे लगा कि वह समय निकट आ रहा है जब मैं अपने असंख्य मित्रों और जिनसे मैं प्यार करता हूँ, उनसे अलग हो जाऊँगा। मैंने उस गहरे और स्पष्ट रूप से असाध्य आध्यात्मिक घाव के लिए मरहम की तलाश की, लेकिन मुझे कोई नहीं मिला। फिर से नियाज़ी मिस्री की तरह मैंने कहा:

जबकि मेरा हृदय इसकी अमरता चाहता था, वास्तविकता को मेरे शरीर के त्याग की आवश्यकता थी;
मैं एक असाध्य रोग से पीड़ित हूँ, जिसे लुकमान भी ठीक नहीं कर सका! [2]

फिर अचानक महान पैगम्बर (यूडब्ल्यूबीपी) की रोशनी और मध्यस्थता, जो ईश्वरीय करुणा की भाषा, आदर्श, आदर्श, संदेशवाहक और प्रतिनिधि हैं, और मानव जाति के लिए उनके द्वारा लाए गए मार्गदर्शन के उपहार ने उस घाव को शांत और ठीक कर दिया, जिसे मैं लाइलाज और अंतहीन मानता था।

हाँ, आदरणीय बुजुर्ग पुरुष और महिलाएँ जो मेरी तरह ही अपने बुढ़ापे को महसूस करते हैं! हम जा रहे हैं, खुद को धोखा देने से कोई फायदा नहीं है। भले ही हम इस पर अपनी आँखें बंद कर लें, हम यहाँ नहीं रहेंगे। एक लामबंदी है। मध्यवर्ती क्षेत्र की भूमि, जो हमें अंधकारमय और अलगाव से भरी हुई लगती है, जो कि लापरवाही और आंशिक रूप से गुमराह लोगों के कारण उत्पन्न होने वाले उदास भ्रमों के कारण है, दोस्तों की मिलन-स्थली है। यह वह दुनिया है जहाँ हम सबसे पहले ईश्वर के प्रियतम (जिन पर आशीर्वाद और शांति हो) और अपने सभी दोस्तों से मिलेंगे।

हम उस व्यक्ति की दुनिया में जा रहे हैं, जो प्रति वर्ष एक हजार तीन सौ पचास वर्षों से एक हजार तीन सौ पचास करोड़ लोगों का शासक, उनकी आत्माओं का प्रशिक्षक, उनके मन का शिक्षक और उनके हृदय का प्रिय रहा है; जिसके अच्छे कार्यों की पुस्तक में, "कारण जैसा ही कर्ता है" के अर्थ के अनुसार, हर दिन उसके समुदाय द्वारा किए गए सभी अच्छे कार्यों के बराबर जोड़ा जाता है; जो वह साधन है जिसके द्वारा ब्रह्मांड में उच्च दिव्य उद्देश्य पूरे होते हैं और प्राणियों का उच्च मूल्य साकार होता है।

प्रामाणिक कथाओं और सटीक भविष्यवाणी के अनुसार जब वह संसार में आया,

[2] कहने का तात्पर्य यह है कि यद्यपि मेरा हृदय पूरी शक्ति से चाहता था कि मेरा शरीर अमर हो जाए, परन्तु ईश्वरीय बुद्धि ने इसे नष्ट करना आवश्यक समझा। मैं एक ऐसे असाध्य रोग से पीड़ित था जिसका समाधान लुकमान विवेकी भी नहीं कर सकता था।

वास्तविकता में, उन्होंने कहा: "मेरा समुदाय! मेरा समुदाय!" इसी तरह अंतिम निर्णय पर भी जब हर कोई केवल अपने बारे में सोचता है, तो वह फिर से घोषणा करेगा: "मेरा समुदाय! मेरा समुदाय!", और पवित्र, उच्च आत्म-बलिदान के साथ उसकी सहायता के लिए अपने हस्तक्षेप के साथ जल्दी करो। हम ऐसे संसार में जा रहे हैं, जो उस सूर्य (UWBP) के चारों ओर घूमने वाले अनगिनत संतों और शुद्ध विद्वानों के सितारों से रोशन है।

इस प्रकार, उस सत्ता (UWBP) की मध्यस्थता में हिस्सा लेने और उसके प्रकाश से लाभ उठाने, तथा मध्यवर्ती क्षेत्र के अंधकार से बचने का तरीका, उसके गौरवशाली अभ्यासों का अनुसरण करना है।

चौथी आशा

बुढ़ापे के करीब पहुँचते-पहुँचते मेरा शारीरिक स्वास्थ्य, जो हमेशा लापरवाही को बढ़ावा देता है, टूट गया। बुढ़ापे और बीमारी ने एक साथ मुझ पर हमला किया। मेरे सिर पर वार करके उन्होंने मेरी नींद उड़ा दी। परिवार, बच्चे और संपत्ति के अलावा मेरे पास दुनिया से जुड़ने के लिए कुछ भी नहीं था। जवानी की चकाचौंध में अपनी ज़िंदगी की सारी पूंजी बरबाद करके मैंने देखा कि उसमें सिर्फ़ पाप और गलतियाँ ही हैं। नियाज़ी मिस्री की तरह चिल्लाते हुए मैंने कहा:

मैंने कोई व्यापार नहीं किया था; जीवन की सारी पूंजी खो गई थी;
मैं सड़क पर आया तो पाया कि कारवां अनजान होकर आगे बढ़ चुका था।
विलाप करते हुए, मैं सड़क पर आगे बढ़ता रहा, बिल्कुल अकेला, एक अजनबी;
मेरी आंखें रो रही हैं, मेरा हृदय व्यथित है, मेरा मन भ्रमित है, अनजान है।

मैं उस समय निर्वासन में था; मुझे निराशा भरा दुख, पश्चाताप, सहायता की लालसा महसूस हुई। अचानक, सर्वज्ञ कुरान मेरी सहायता के लिए आया। इसने आशा का एक ऐसा द्वार खोला जो इतना शक्तिशाली था और सांत्वना की एक ऐसी सच्ची रोशनी प्रदान की जो मेरे से सौ गुना अधिक गहन निराशा और अंधकार को दूर कर सकती थी।

हाँ, आदरणीय बुजुर्ग पुरुष और महिलाएँ जिनका संसार से लगाव टूटना शुरू हो गया है और उन्हें जोड़ने वाले बंधन टूटने लगे हैं! क्या यह संभव है कि वह सर्व-महिमावान निर्माता जिसने इस संसार को एक सुव्यवस्थित शहर या महल के रूप में बनाया है, वह अपने सबसे महत्वपूर्ण मेहमानों और मित्रों से बात न करे या उनसे न मिले? चूँकि उसने जान-बूझकर महल बनाया और अपनी इच्छा और पसंद से उसे व्यवस्थित और सजाया, तो निश्चित रूप से जैसा बनाने वाला जानता है, वैसा ही जानने वाला भी बोलेगा। चूँकि उसने इस महल और शहर को हमारे लिए एक बढ़िया अतिथिगृह और व्यापार का स्थान बनाया है, इसलिए निश्चित रूप से उसके पास हमारे साथ अपने संबंधों और हमसे जो वह चाहता है, उसे समझाने के लिए एक पुस्तक, एक फ़ाइल होगी।

इन पुस्तकों में सबसे पवित्र है चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान; यह चालीस मामलों में चमत्कार है और हर पल कम से कम दस करोड़ लोगों की ज़बान पर रहता है; यह प्रकाश फैलाता है, और इसका हर अक्षर बहुत कुछ सिखाता है।

कम से कम दस पुण्य और पुरस्कार, और जन्नत के फल और मध्यवर्ती क्षेत्र में रोशनी, और कभी-कभी दस हज़ार, और कभी-कभी - शक्ति की रात के रहस्य के माध्यम से - तीस हज़ार। इस संबंध में इसके साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए ब्रह्मांड में कोई किताब नहीं है और कोई भी इसे आगे नहीं ला सकता है। चूंकि यह कुरान जो हमारे पास है, वह आकाश और पृथ्वी के सर्व-महिमावान निर्माता का शब्द है, जो उसकी पूर्ण प्रभुता, उसके ईश्वरत्व की महानता और उसकी सर्वव्यापी दया से आगे बढ़ता है, और उसका आदेश और उसकी दया का स्रोत है; इस पर कायम रहो। इसमें हर बीमारी का इलाज, हर अंधेरे के लिए एक रोशनी और हर निराशा के लिए एक उम्मीद है। और इस शाश्वत खजाने की कुंजी ईश्वर के प्रति विश्वास और समर्पण है, और कुरान को सुनना और इसे स्वीकार करना और इसका पाठ करना है।

पांचवी आशा

एक बार जब मेरी उम्र बढ़ने लगी और मुझे एकांत की चाहत हुई, तो मैं माउंट जोशुआ, इस्तांबुल बोस्फोरस में यूसा टेपेसी में चला गया। मेरी आत्मा एकांत में आराम की तलाश कर रही थी। एक दिन उस ऊंची पहाड़ी पर, मैंने अपने चारों ओर विस्तृत क्षितिज को देखा, और मैंने अपने जीवन के वृक्ष के पैंतालीसवें वर्ष की चालीसवीं शाखा की ऊंची स्थिति से उसके निचले स्तरों पर नज़र डाली। मैंने देखा कि प्रत्येक वर्ष की निचली शाखाओं के नीचे उन लोगों की अनगिनत लाशें थीं जिन्हें मैं जानता था, प्यार करता था और जिनसे मैं जुड़ा था। मुझे उनके बिछड़ने और अलग होने पर वास्तव में बहुत दुख हुआ, मैं फ़ुज़ुली बगदादी की तरह उन दोस्तों के लिए रोया जिनसे मैं अलग हो गया था:

जब मैं उनकी संगति को याद करता हूँ तो रो पड़ता हूँ,
जब तक इस सूखे शरीर में सांस है, मैं चिल्लाता रहूंगा।

मैं एक सांत्वना, एक रोशनी, एक आशा की ओर ले जाने वाला द्वार तलाश रहा था। अचानक परलोक में विश्वास मेरी सहायता के लिए आया, एक अमिट रोशनी बिखेरते हुए, एक अविनाशी आशा प्रदान करते हुए।

हाँ, मेरे जैसे बुज़ुर्ग भाईयों और बहनों! चूँकि आख़िरत मौजूद है और हमेशा रहेगी, और यह इस दुनिया से बेहतर है; और चूँकि जिसने हमें बनाया है वह सर्वज्ञ और दयालु दोनों है, इसलिए हमें अपनी बुढ़ापे पर शिकायत नहीं करनी चाहिए और न ही पछताना चाहिए। इसके विपरीत, हमें इस बात पर खुश होना चाहिए कि उम्र के साथ व्यक्ति उपासना और विश्वास के ज़रिए पूर्ण परिपक्वता तक पहुँच जाता है, और यह इस बात का संकेत है कि व्यक्ति को बुढ़ापे से मुक्ति मिलेगी।

जीवन के कर्तव्यों का निर्वहन करें और विश्राम करने के लिए दया की दुनिया में प्रस्थान करें।

कथाओं के अनुसार, कुछ ने गवाही पर और कुछ ने 'पूर्ण निश्चय' पर भरोसा करते हुए, मानव जाति के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों, एक लाख चौबीस हजार पैगम्बरों3 ने सर्वसम्मति से इस बात की खबर दी है।

---

[3] मुसनद, वी, 266; वली अल-दीन तबरीज़ी, मिश्कत अल-मसाबीह, iii, 122; इब्न अल-क़य्यिम अल-जौज़ी, ज़ाद अल-मआद (तहकीक: अल-अर्नावुद) i, 43-4।

परलोक के अस्तित्व को प्रमाणित करते हुए, तथा यह कि मनुष्य वहाँ भेजे जाएँगे और ब्रह्माण्ड का रचयिता अपने निश्चित वादे के अनुसार इसे पूरा करेगा। इसी प्रकार, भविष्यद्वक्ताओं की रिपोर्टों को 'ज्ञान की डिग्री पर निश्चितता' के रूप में प्रकाश और साक्ष्य के माध्यम से पुष्टि करते हुए, एक सौ चौबीस मिलियन संतों ने परलोक के अस्तित्व की गवाही दी है। और इस दुनिया में उनके द्वारा प्रदर्शित अभिव्यक्तियों के माध्यम से, ब्रह्माण्ड के सर्वज्ञ निर्माता के सभी नाम स्वयं-स्पष्ट रूप से एक शाश्वत क्षेत्र की आवश्यकता बताते हैं। इसी प्रकार अनंत पूर्व-शाश्वत शक्ति और असीम शाश्वत ज्ञान जो हर साल वसंत में कुछ भी व्यर्थ और उद्देश्यहीन नहीं होने देता, "'हो!' की आज्ञा के साथ जीवित हो जाता है और यह हो जाता है" (36:83, आदि) पृथ्वी के चेहरे पर मृत पेड़ों की असंख्य लाशों को जीवित करता है, उन्हें मृत्यु के बाद जीवन प्रकट करता है, और मृतकों के पुनरुत्थान के हजारों नमूनों के रूप में पौधों और जानवरों की तीन लाख प्रजातियों को पुनर्जीवित करता है। ये स्पष्ट रूप से परलोक के अस्तित्व को आवश्यक बनाते हैं, जैसे कि शाश्वत दया और शाश्वत अनुग्रह जो पूर्ण करुणा और अद्भुत ढंग से जीविका की आवश्यकता वाले सभी जीवों की आजीविका प्रदान करते हैं और वसन्त ऋतु में थोड़े समय के लिए अपनी असंख्य प्रकार की सजावट और अलंकरण प्रदर्शित करते हैं; वे भी परलोक के अस्तित्व को आवश्यक बनाते हैं।

मनुष्य, जो ब्रह्माण्ड का सबसे उत्तम फल है और इसके रचयिता का सबसे प्रिय प्राणी है, जो सभी प्राणियों में से ब्रह्माण्ड के प्राणियों के साथ सबसे अधिक निकटता से जुड़ा हुआ है, तथा अमरता के लिए उसकी तीव्र, अविचल, निरंतर इच्छा और अनंत काल तक फैली उसकी आशाओं के स्पष्ट संकेत और निश्चित प्रमाण - ये सभी इतने निर्णायक रूप से सिद्ध करते हैं कि इस क्षणभंगुर संसार के बाद एक शाश्वत संसार होगा, परलोक और शाश्वत सुख का एक क्षेत्र होगा, कि वे स्वयं-स्पष्ट रूप से परलोक के अस्तित्व को स्वीकार करने को आवश्यक बनाते हैं।4

चूँकि सबसे महत्वपूर्ण बात जो सर्वज्ञ कुरान हमें सिखाता है वह है परलोक में विश्वास, और चूँकि यह विश्वास इतना शक्तिशाली है और यह ऐसी आशा और सांत्वना प्रदान करता है कि यदि कोई व्यक्ति बुढ़ापे से एक लाख बार भी अधिक परेशान हो, तो इस विश्वास से उत्पन्न सांत्वना

---

[4] किसी निश्चित बात की सूचना देने में आसानी और उसका इन्कार करने में कठिनाई को इस तुलना में देखा जा सकता है: यदि एक व्यक्ति कहता है: “पृथ्वी पर एक अद्भुत बगीचा है जिसके पेड़ों पर दूध के डिब्बे जैसे फल लगते हैं,” और दूसरा कहता है: “ऐसा नहीं है,” तो इसका दावा करने वाले को केवल यह बताना होगा कि वह कहाँ है या उसके कुछ फल हैं ताकि इसे आसानी से साबित किया जा सके। जबकि इन्कार करने वाला केवल पृथ्वी का पूरा चेहरा देखकर और दिखाकर ही अपना इन्कार साबित कर सकता है। ठीक उसी तरह, भले ही कोई जन्नत की उन लाखों निशानियों, फलों और चिह्नों को नज़रअंदाज़ कर दे जो उसके बारे में बताने वालों ने बताए हैं, उसके निश्चित अस्तित्व के बारे में दो सच्चे गवाहों की गवाही पर्याप्त है; जबकि इन्कार करने वाला केवल अनंत ब्रह्मांड और अनंत, कभी न खत्म होने वाले समय को देखने और उसे देखने और उसकी गहन जांच करने के बाद ही अपना इन्कार साबित कर सकता है; तभी वह इसके अस्तित्व को साबित कर सकता है। और इसलिए, मेरे बुजुर्ग भाइयों, आप समझ सकते हैं कि परलोक में विश्वास कितना शक्तिशाली है।

इसका सामना करना ही पर्याप्त है; निश्चय ही हम बुज़ुर्ग लोगों को अपने बुढ़ापे से प्रेम करना चाहिए और कहना चाहिए: “पूर्ण विश्वास के लिए सारी प्रशंसा परमेश्वर की हो!”

छठी आशा

एक बार अपनी कष्टदायक कैद के दौरान, मैं लोगों की संगति से दूर, बारला की पहाड़ियों में, चाम दा के शिखर पर, अकेला था। मैं अपने अकेलेपन में रोशनी की तलाश कर रहा था। एक रात उस ऊँचे पहाड़ की चोटी पर एक ऊँचे देवदार के पेड़ के ऊपर छोटे से चबूतरे पर, बुढ़ापे ने मुझे एक के भीतर एक तीन-चार निर्वासितों की याद दिला दी। जैसा कि छठे पत्र में वर्णित है, उस एकांत, शांत, दूर की रात में पेड़ों की सरसराहट, बड़बड़ाहट की उदास ध्वनि ने मेरे बुढ़ापे और निर्वासन में मुझे बहुत प्रभावित किया। बुढ़ापे ने मुझे यह विचार दिया: जैसे दिन इस काली कब्र में बदल गया और दुनिया ने अपना काला कफन पहन लिया, वैसे ही तुम्हारे जीवन का दिन भी रात में बदल जाएगा, और दुनिया का दिन मध्यवर्ती क्षेत्र की रात में बदल जाएगा, और जीवन की गर्मी मृत्यु की सर्दियों की रात में बदल जाएगी। इसने मेरे दिल के कानों में यह फुसफुसाया। तब मेरी आत्मा कहने के लिए बाध्य हुई:

हाँ, मैं अपनी जन्मभूमि से बहुत दूर हूँ, लेकिन अपने पचास साल के जीवनकाल में जिन लोगों से मैंने प्यार किया है, जो मर चुके हैं, उनसे अलग होना और उनके लिए रोना, मेरे देश से निर्वासन से कहीं ज़्यादा दुखद और दुखदायी निर्वासन है। इसके अलावा, मैं रात और पहाड़ के उदास निर्वासन से कहीं ज़्यादा दुखद और दर्दनाक निर्वासन के करीब पहुँच रहा हूँ: बुढ़ापा मुझे बताता है कि मैं दुनिया से अलग होने के समय के करीब पहुँच रहा हूँ। तब मैंने इन एक-दूसरे के भीतर मौजूद दुखद निर्वासनों से एक रोशनी, एक उम्मीद की तलाश की। अचानक ईश्वर में विश्वास मेरी मदद के लिए आया और मुझे ऐसा परिचय दिया कि अगर मैं जिस जटिल वीरानी में था, वह हज़ार गुना बढ़ भी जाती, तो भी उसकी सांत्वना पर्याप्त होती।

बुजुर्ग पुरुष और महिलाएं! चूँकि हमारे पास एक दयालु निर्माता है, इसलिए हमारे लिए कोई निर्वासन नहीं हो सकता! चूँकि वह मौजूद है, इसलिए हमारे लिए सब कुछ मौजूद है। चूँकि वह मौजूद है, इसलिए देवदूत मौजूद हैं। दुनिया खाली नहीं है। एकाकी पहाड़ और खाली रेगिस्तान सर्वशक्तिमान ईश्वर के सेवकों से भरे हुए हैं। उनके सचेत सेवकों के अलावा, पत्थर और पेड़ उनके प्रकाश और उनके कारण से देखे जाने पर परिचित मित्र बन जाते हैं। वे हमारे साथ बातचीत कर सकते हैं और हमें आनंद दे सकते हैं।

हाँ, ब्रह्माण्ड में प्राणियों की संख्या तथा विश्व की इस विशाल पुस्तक के अक्षरों की संख्या के प्रमाण और साक्षी हमारे सर्वेश्वर के अस्तित्व की गवाही देते हैं।
दयालु, उदार, अंतरंग, प्रेममय सृष्टिकर्ता, निर्माता और रक्षक; वे हमें जीवित प्राणियों के अंगों, खाद्य पदार्थों और उपहारों के प्रति अपनी दया दिखाते हैं, जो प्राप्त करने का एक साधन हो सकता है

उनकी करुणा, दया और कृपा, और उनके दरबार का संकेत देते हैं। नपुंसकता और कमजोरी उनके दरबार में सबसे स्वीकार्य मध्यस्थ हैं। और बुढ़ापा वास्तव में नपुंसकता और कमजोरी का समय है। इसलिए किसी को बुढ़ापे पर नाराज़गी महसूस नहीं करनी चाहिए, जो इस प्रकार एक दरबार में स्वीकार्य मध्यस्थ है, बल्कि उससे प्यार करना चाहिए।

सातवीं आशा

एक बार जब मैं बूढ़ा हो रहा था, तब जब पुराने सईद की हंसी नए सईद के रोने में बदल रही थी, यह मानते हुए कि मैं अभी भी पुराना सईद हूँ, अंकारा में सांसारिक लोगों ने मुझे वहाँ आमंत्रित किया, और मैं चला गया। शरद ऋतु के अंत में मैं गढ़ के शीर्ष पर चढ़ गया, जो मुझसे कहीं अधिक पुराना, जीर्ण और घिसा हुआ था।

मुझे लगा कि यह सब ऐतिहासिक घटनाओं से बना है। वर्ष के मौसम की उम्र के साथ-साथ मेरी उम्र, गढ़ की उम्र, मानव जाति की उम्र, शानदार ओटोमन साम्राज्य की उम्र, खिलाफत के शासन की मृत्यु, और दुनिया की उम्र, इन सबने मुझे उस ऊंचे गढ़ में अतीत की घाटियों और भविष्य के पहाड़ों को बहुत दुखी, दयनीय और उदास अवस्था में देखने पर मजबूर कर दिया। जब मैंने अंकारा में एक बेहद काली मन:स्थिति का अनुभव किया, जो बुढ़ापे के अंधेरे की चार या पांच परतों से घिरी हुई थी,5 तो मैंने एक रोशनी, एक सांत्वना, एक उम्मीद की तलाश की।

जब मैंने दाईं ओर, यानी अतीत की ओर देखते हुए सांत्वना मांगी, तो मेरे पिता और पूर्वज तथा मानव जाति एक विशाल कब्र के रूप में प्रकट हुए और मुझे सांत्वना देने के बजाय निराशा से भर दिया। उपाय की तलाश में मैंने भविष्य की ओर देखा, जो मेरे बाईं ओर था। मैंने देखा कि यह मेरे लिए, मेरे समकालीनों और भावी पीढ़ियों के लिए एक विशाल, अंधेरी कब्र के रूप में दिखाई दिया; इसने परिचितता के स्थान पर भय पैदा किया।

बाएं और दाएं की ओर से निराश महसूस करते हुए, मैंने वर्तमान दिन को देखा। यह मेरी लापरवाह, ऐतिहासिक आँखों को एक ताबूत की तरह लगा जिसमें मेरी आधी-मरी, पीड़ित और हताश संघर्षरत लाश थी। उस दिशा से भी निराश होकर, मैंने अपना सिर उठाया और अपने जीवन के पेड़ की चोटी पर देखा, और वहाँ मेरी लाश थी; यह पेड़ की चोटी पर खड़ी थी और मुझे देख रही थी। इस दिशा में भी भयभीत महसूस करते हुए, मैंने अपना सिर झुका लिया। मैंने अपने जीवन के पेड़ के पैर, उसकी जड़ों की ओर देखा, और देखा कि वहाँ की मिट्टी, वह धरती जो मेरे निर्माण का स्रोत थी और मेरी हड्डियों की धूल एक साथ मिल गई थी, उसे पैरों तले रौंदा जा रहा था। यह कोई उपाय नहीं था, इसने मेरे दुख को और बढ़ा दिया।

फिर मुझे पीछे देखने पर मजबूर होना पड़ा। मैंने देखा कि यह अस्थिर, क्षणभंगुर दुनिया शून्यता की घाटियों में लुढ़क रही थी, गायब हो रही थी और

[5] उस समय मेरी मन:स्थिति ने मुझे फ़ारसी में एक प्रार्थना लिखने के लिए प्रेरित किया। यह फ़ारसी में छपी थी। अंकारा ने हुबाब नामक एक ग्रंथ में इसका उल्लेख किया है।

अस्तित्वहीनता का अंधकार। मैं अपने दर्द के लिए मरहम ढूँढ रहा था, लेकिन इसने सिर्फ़ जहर घोल दिया। चूँकि मुझे उस दिशा में कुछ भी अच्छा नहीं दिख रहा था, इसलिए मैंने अपने सामने देखा, मैंने अपना नज़र भविष्य की ओर बढ़ाया। मैंने देखा कि कब्र का दरवाज़ा मेरे रास्ते के ठीक बीच में खुला था; वह अपना मुँह खोले मुझे देख रहा था। उसके पार राजमार्ग जो अनंत काल तक फैला हुआ था, और उस राजमार्ग पर यात्रा कर रहे काफिले, दूर से ही आँखों को चौंका देते थे। लेकिन इन छह दिशाओं से आने वाली भयावहता के सामने मेरे समर्थन और रक्षात्मक हथियार के रूप में एक सीमित इच्छाशक्ति के अलावा, मेरे पास कुछ भी नहीं था।

इच्छाशक्ति, जो असंख्य शत्रुओं और अनंत हानिकारक चीजों के खिलाफ मनुष्य का एकमात्र हथियार है, दोषपूर्ण, छोटी और कमजोर है, और इसमें सृजन करने की शक्ति का अभाव है, इसलिए वह 'अधिग्रहण' के अलावा कुछ भी करने में सक्षम नहीं है। यह न तो अतीत में जा सकता है ताकि वहां से मेरे पास आने वाले दुखों को शांत कर सके, न ही यह भविष्य में प्रवेश कर सकता है ताकि वहां से उत्पन्न होने वाले भय को रोक सके। मैंने देखा कि यह अतीत और भविष्य के बारे में मेरी आशाओं और पीड़ाओं के लिए कोई लाभ नहीं था।

जब मैं इन छह दिशाओं से आने वाले भय, वीरानी, अंधकार और निराशा से जूझ रहा था, तो अचानक मेरी मदद के लिए कुरान के चमत्कारिक विवरण के आकाश में चमकने वाले ईमान के प्रकाश आ गए। उन्होंने उन छह दिशाओं को इस हद तक रोशन कर दिया कि अगर मैंने जो भय और अंधकार देखा था वह सौ गुना बढ़ जाता, तो भी वह प्रकाश उनका सामना करने के लिए पर्याप्त होता। एक-एक करके उसने उन सभी भयावहताओं को सांत्वना में और वीरानी को परिचितता में बदल दिया।

यह इस प्रकार था:

विश्वास ने अतीत के उजाड़ दृश्य को एक विशाल कब्र के रूप में फाड़ दिया, और दिखाया कि
इस बात का पूरा भरोसा था कि यह मित्रों का एक परिचित, प्रबुद्ध समूह होगा।

और विश्वास ने भविष्य को, जो मेरी असावधान आँखों के सामने एक विशाल कब्र के रूप में दिखाई दे रहा था, निश्चित रूप से परम दयालु परमेश्वर द्वारा आनन्द के रमणीय महलों में आयोजित भोज के रूप में दिखाया।

और विश्वास ने वर्तमान समय को एक ताबूत के रूप में फाड़ दिया, जैसा कि यह मेरे असावधान दृष्टिकोण को दिखाई दिया था, और निश्चित रूप से दिखाया कि यह परलोक के लिए व्यापार का स्थान और दयालु एक का एक शानदार अतिथिगृह है।

और विश्वास ने पूर्ण निश्चयता के साथ दर्शाया कि जीवन के वृक्ष के शीर्ष पर एकमात्र फल एक शव नहीं था जैसा कि मेरी उपेक्षापूर्ण आंखों को दिखाई दिया था, बल्कि यह कि मेरी आत्मा, जो अनन्त जीवन को प्रकट करेगी और अनन्त खुशी के लिए नामित है, सितारों के चारों ओर यात्रा करने के लिए अपने जीर्ण-शीर्ण घर को छोड़ देगी।

और अपने रहस्य के माध्यम से, विश्वास ने दिखाया कि मेरी हड्डियाँ और पृथ्वी जो मेरी रचना का स्रोत थी, वे पैरों तले कुचली गई मूल्यहीन चूर्णित हड्डियाँ नहीं थीं, बल्कि यह कि पृथ्वी ईश्वरीय दया का द्वार थी और स्वर्ग के गलियारों के समक्ष पर्दा थी।

और कुरान के रहस्य के माध्यम से, विश्वास ने दिखाया कि दुनिया

जो मेरी लापरवाह आँखों को मेरे पीछे शून्यता और अस्तित्वहीनता में गिरता हुआ दिखाई दे रहा था, जिसमें अनंत काल से मांगे जाने वाले के संदेश और सजावट और कढ़ाई के पन्ने थे जो ईश्वर की महिमा करते थे, जिन्होंने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया था, अपने अर्थ बता दिए थे, और अपने परिणामों को अपने स्थान पर छोड़ दिया था। इसने पूरी निश्चितता के साथ दुनिया की असली प्रकृति को जाना।

और कुरान की रोशनी के ज़रिए, ईमान ने दिखाया कि भविष्य में जो कब्र अपनी आँखें खोलेगी और मुझे देखेगी, वह किसी कुएँ का मुँह नहीं है, बल्कि वह प्रकाश की दुनिया का दरवाज़ा है, और उसके पार अनंत काल तक फैला राजमार्ग शून्यता और अस्तित्वहीनता की ओर नहीं, बल्कि अस्तित्व, प्रकाश के क्षेत्र और शाश्वत आनंद की ओर ले जाता है। चूँकि ईमान ने इसे इस हद तक प्रदर्शित किया कि इससे पूर्ण विश्वास प्राप्त हुआ, इसलिए यह मेरे कष्टों के लिए एक उपाय और मरहम दोनों था।

और प्राप्त करने की एक बहुत छोटी सी क्षमता के स्थान पर, विश्वास इच्छा की सीमित क्षमता के हाथ में एक दस्तावेज देता है जिसके माध्यम से वह एक अनंत शक्ति पर भरोसा कर सकता है और उन असंख्य शत्रुओं और अंधकार की परतों के सामने एक असीम दया से जुड़ सकता है। वास्तव में, विश्वास मनुष्य की इच्छा के हाथ में एक दस्तावेज है, और यद्यपि इच्छा का यह मानवीय हथियार अपने आप में छोटा, शक्तिहीन और अपूर्ण है, जैसे कि जब एक सैनिक राज्य के कारण अपनी आंशिक शक्ति का उपयोग करता है, तो वह अपनी खुद की शक्ति से कहीं अधिक कर्तव्यों का पालन करता है, उसी तरह विश्वास के रहस्य के माध्यम से, यदि इच्छा की सीमित क्षमता का उपयोग सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर और उसके मार्ग में किया जाता है, तो यह पाँच सौ वर्षों जितना व्यापक स्वर्ग भी प्राप्त कर सकता है।

और विश्वास शरीर के हाथों से इच्छाशक्ति की लगाम ले लेता है, जो अतीत और भविष्य तक नहीं पहुंच सकती, और उसे हृदय और आत्मा को सौंप देता है।

चूँकि उनके जीवन का क्षेत्र शरीर की तरह वर्तमान समय तक सीमित नहीं है, और इसमें अतीत के बहुत से वर्ष और भविष्य के बहुत से वर्ष शामिल हैं, इसलिए इच्छा सीमित होना बंद हो जाती है और सार्वभौमिकता प्राप्त कर लेती है। विश्वास की शक्ति से यह अतीत की सबसे गहरी घाटियों में प्रवेश कर सकती है और अपने दुखों के अंधेरे को दूर कर सकती है; इसी तरह विश्वास के प्रकाश से यह भविष्य के सबसे दूर के पहाड़ों तक भी उठ सकती है और अपने डर को दूर कर सकती है।

मेरे बुजुर्ग भाईयों और बहनों, जो मेरी तरह बुढ़ापे की तकलीफ़ों से जूझ रहे हैं! चूँकि, ईश्वर की स्तुति हो, हम आस्तिक हैं, और विश्वास में ही हमें कई चमकदार, सुखद, मनभावन और संतुष्टिदायक ख़ज़ाने मिलते हैं; और चूँकि हमारा बुढ़ापा हमें ख़ज़ाने की चीज़ों की ओर और भी ज़्यादा प्रेरित करता है, इसलिए निश्चित रूप से, विश्वास के साथ बुढ़ापे के बारे में शिकायत करने के बजाय, हमें अंतहीन धन्यवाद देना चाहिए।

आठवीं आशा

एक समय था जब मेरे बालों में बुढ़ापे की निशानी, सफेद बाल आने लगे थे, प्रथम विश्व युद्ध की उथल-पुथल, जिसने युवावस्था की गहरी नींद को और भी भारी बना दिया था, युद्ध-बंदी के रूप में मेरी कैद की उथल-पुथल, इस्तांबुल लौटने पर मुझे दी गई महान प्रसिद्धि और सम्मान की स्थिति, और खलीफा, यहां तक कि शेख अल-इस्लाम और सेना के कमांडर-इन-चीफ से लेकर धर्म के छात्रों तक सभी से मुझे मिलने वाला मेरे हक से कहीं अधिक स्नेह और ध्यान, युवावस्था का नशा, और मेरी स्थिति से उत्पन्न मानसिक स्थिति, - सभी ने युवावस्था की नींद को इतना भारी बना दिया था कि मैं बस दुनिया को स्थायी और खुद को एक अद्भुत अमर स्थिति में देखता था।

फिर एक दिन रमज़ान में मैं बायज़ीद मस्जिद गया ताकि सच्चे दिल से क़ुरान पढ़ने वालों को सुन सकूँ। उनकी ज़बानों से, चमत्कारी व्याख्या का क़ुरान अपनी महान स्वर्गीय वाणी के साथ यह आदेश सुना रहा था:

प्रत्येक जीवित प्राणी मृत्यु का स्वाद चखेगा ,(3:185, आदि)

जो मनुष्य और सभी सजीव प्राणियों की मृत्यु की खबर बहुत शक्तिशाली ढंग से देता है। यह मेरे कानों में घुस गया, मेरे दिल की गहराइयों में घुस गया और वहीं बस गया; इसने मेरी गहरी नींद और असावधानी को तोड़ दिया। मैं मस्जिद से बाहर चला गया। मेरे सिर में लंबे समय से जो नींद की मूर्छा थी, उसके कारण कई दिनों तक उसमें तूफ़ान चलता रहा और मैं खुद को एक नाव की तरह देखता रहा जिसमें धुआँ उगल रहा था और कंपास घूम रहा था। जब भी मैं शीशे में अपने बालों को देखता, तो मेरे सफ़ेद बाल मुझसे कहते: "हम पर ध्यान दो!" और इस तरह मेरे सफ़ेद बालों की चेतावनी के ज़रिए स्थिति स्पष्ट हो गई।

मैंने देखा कि मेरी जवानी जो मुझे अपने सुखों से इतना मोहित करती थी और जिस पर मुझे इतना भरोसा था, वह मुझे अलविदा कह रही थी, और यह सांसारिक जीवन जिसे मैं इतना प्यार करती थी और जिसके साथ मैं इतनी जुड़ी हुई थी, वह बुझने लगी थी, और वह दुनिया जिसके साथ मैं बहुत करीब से जुड़ी हुई थी और जिसका मैं बस प्रेमी था, मुझसे कह रही थी: "आपकी यात्रा मंगलमय हो!", और मुझे चेतावनी दे रही थी कि मैं इस गेस्टहाउस को छोड़कर जा रही हूँ। यह भी "अलविदा" कह रही थी, और जाने की तैयारी कर रही थी।

कुरान की चमत्कारिक व्याख्या की आयत के संकेतों से मेरे हृदय में निम्नलिखित अर्थ उभर रहा था,

हर जीवित प्राणी मृत्यु का स्वाद चखेगा:

मानव जाति एक जीवित प्राणी है; इसे पुनर्जीवित होने के लिए मरना होगा। पृथ्वी का गोला एक जीवित प्राणी है; यह भी एक शाश्वत रूप लेने के लिए मर जाएगा। दुनिया भी एक जीवित प्राणी है; यह परलोक का रूप लेने के लिए मर जाएगा।

इस अवस्था में रहते हुए मैंने अपनी स्थिति पर विचार किया। मैंने उस युवावस्था को देखा, जो
सुख का स्रोत, चला जा रहा था; जबकि दुःख का स्रोत, बुढ़ापा,

जीवन जो इतना उज्ज्वल और प्रकाशमान है, विदा ले रहा है; मृत्यु जो भयावह और अंधकारमय प्रतीत होती है, आने की तैयारी कर रही है; और वह प्यारा संसार, जो स्थायी माना जाता है और जो असावधानों का प्रिय है, अपने अंत की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

खुद को धोखा देने और फिर से अपने सिर को लापरवाही में डुबाने के लिए मैंने इस्तांबुल में अपने सामाजिक रुतबे के सुखों पर विचार किया, जो मेरे हक से कहीं ज़्यादा था, लेकिन इसमें कोई फ़ायदा नहीं था। लोगों का सारा सम्मान, ध्यान और सांत्वना मुझे केवल कब्र के नज़दीक आने वाले दरवाज़े तक ही साथ दे सकती थी; वहाँ यह बुझ जाएगी। चूँकि मैंने इसे एक उबाऊ पाखंड, ठंडा दंभ और महिमा और यश के अलंकृत आवरण के नीचे अस्थायी मूर्खता के रूप में देखा, जो कि प्रसिद्धि का पीछा करने वालों का भ्रामक लक्ष्य है, इसलिए मैंने समझा कि ये चीज़ें जो अब तक मुझे धोखा दे रही थीं, मुझे कोई सांत्वना नहीं दे सकती थीं, उनमें कोई रोशनी नहीं थी।

मैंने फिर से बायजीद मस्जिद में कुरान की तिलावत सुनना शुरू कर दिया ताकि मैं कुरान की स्वर्गीय शिक्षा सुन सकूँ और एक बार फिर जाग सकूँ। इसकी महान शिक्षा से मैंने पवित्र आदेशों के माध्यम से शुभ समाचार सुना,

और जो लोग ईमान लाए हैं उन्हें शुभ सूचना दे दो। (2:25)

इसकी चमक से मैंने उन जगहों पर सांत्वना, उम्मीद और रोशनी की तलाश की, जहाँ मैंने भय, वीरानी और निराशा महसूस की थी, न कि उनके बाहर। सर्वशक्तिमान ईश्वर का अनंत धन्यवाद, मैंने बीमारी के भीतर ही इलाज पाया, मैंने अंधेरे के भीतर ही रोशनी पाई, मैंने भय के भीतर ही सांत्वना पाई।

सबसे पहले, मैंने मौत का चेहरा देखा, जिसे सबसे भयानक माना जाता है और जो सभी को डराती है। कुरान की रोशनी के माध्यम से मैंने देखा कि यद्यपि इसका पर्दा काला, अंधेरा और बदसूरत है, लेकिन विश्वासियों के लिए इसका असली चेहरा चमकदार और सुंदर है। हमने इस सत्य को रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में निर्णायक रूप से साबित किया है। उदाहरण के लिए, जैसा कि हमने आठवें शब्द और बीसवें अक्षर में समझाया है, मृत्यु विनाश और अलगाव नहीं है, बल्कि शाश्वत जीवन का परिचय, इसकी शुरुआत है। यह जीवन के कर्तव्यों की कठिनाइयों से आराम है, एक विमुद्रीकरण है। यह निवास का परिवर्तन है। यह अपने दोस्तों के कारवां से मिलना है जो पहले से ही मध्यवर्ती दुनिया में चले गए हैं; इत्यादि। मैंने इन सत्यों के माध्यम से मृत्यु का सच्चा, सुंदर चेहरा देखा। मैंने मृत्यु के चेहरे को भय से नहीं, बल्कि एक प्रकार की लालसा के साथ देखा। मैंने सूफियों के मृत्यु के चिंतन का एक अर्थ समझा।

फिर मैंने अपनी गुज़री हुई जवानी पर गौर किया - वो जवानी जिसके गुज़रने पर हर कोई रोता है, जो उन्हें मोहग्रस्त कर देती है और उन्हें इच्छाओं से भर देती है, जिससे वे इसे पाप और असावधानी में गुज़ार देते हैं। मैंने देखा कि उसके सुंदर कढ़ाईदार परिधान के भीतर एक बदसूरत, नशे में धुत्त, स्तब्ध चेहरा था। अगर मैंने इसके बारे में नहीं सीखा होता

अगर मैं इतने लंबे समय तक दुनिया में रहता तो यह मुझे सौ साल तक रुलाता, जबकि यह मुझे कुछ सालों तक मदहोश और खुश रखता। जैसा कि एक ऐसे ही व्यक्ति ने विलाप करते हुए कहा:

"काश एक दिन मेरी जवानी लौट आती, तो मैं उसे बताता कि बुढ़ापे ने मुझे कितनी परेशानियाँ दी हैं।"

वास्तव में, ऊपर बताए गए बुज़ुर्ग लोग जो जवानी के वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते, अपनी जवानी के बारे में सोचते हैं और पछतावे और लालसा से रोते हैं। लेकिन जब जवानी स्वस्थ मन और दिल वाले ईमान वालों की होती है, तो यह परलोक के लिए अच्छे कामों और व्यापार को सुरक्षित करने का सबसे शक्तिशाली, सुखद और सुखद साधन है, जब तक कि वे इसे उपासना और उस व्यापार और उन अच्छे कामों में खर्च करते हैं। जो लोग अपने धार्मिक कर्तव्यों को जानते हैं और अपनी जवानी को व्यर्थ नहीं गंवाते, उनके लिए यह एक बहुमूल्य और सुखद ईश्वरीय उपहार है। लेकिन जब इसे संयम, सच्चाई और ईश्वर के भय से नहीं बिताया जाता, तो इसमें कई खतरे होते हैं; यह शाश्वत सुख और इस दुनिया के जीवन को नुकसान पहुँचाता है। एक या दो साल की जवानी के सुखों के बदले में, बुढ़ापे में कई साल दुख और पीड़ा का कारण बनता है।

चूँकि ज़्यादातर लोगों के लिए जवानी नुकसानदेह होती है, इसलिए हम बुज़ुर्ग लोगों को भगवान का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि हम इसके खतरों और नुकसान से बच गए हैं। हर चीज़ की तरह जवानी के सुख भी चले जाते हैं। अगर उन्हें पूजा-पाठ और अच्छे कामों में खर्च किया गया है, तो ऐसी जवानी के फल हमेशा अपनी जगह पर बने रहते हैं और अनंत जीवन में जवानी पाने का ज़रिया बनते हैं।

इसके बाद मैंने दुनिया पर विचार किया, जिसके प्रति अधिकांश लोग आसक्त हैं और जिसके वे आदी हैं। कुरान की रोशनी में मैंने देखा कि इसके तीन चेहरे हैं, एक दूसरे के भीतर:

प्रथम ईश्वरीय नामों की ओर देखता है; यह उनके लिए एक दर्पण है

इसका दूसरा मुख परलोक की ओर देखता है, तथा इसकी खेती है।

इसका तीसरा मुख सांसारिक लोगों की ओर देखता है; यह असावधान लोगों का क्रीडास्थल है।

इसके अलावा, इस दुनिया के भीतर हर किसी की अपनी एक विशाल दुनिया है। बस, जितने मनुष्य हैं, उतने ही संसार एक दूसरे के भीतर हैं। हर व्यक्ति की निजी दुनिया का आधार उसका अपना जीवन है। अगर उसका शरीर हार जाता है, उसकी दुनिया उसके सिर पर गिर जाती है, तो उसके लिए प्रलय का दिन आ जाता है। चूँकि असावधान और लापरवाह लोग यह नहीं समझते कि उनकी दुनिया इतनी जल्दी नष्ट हो जाएगी, इसलिए वे इसे सामान्य दुनिया की तरह स्थायी मानते हैं और इसकी पूजा करते हैं। मैंने मन ही मन सोचा: "मेरी भी एक निजी दुनिया है जो दूसरों की दुनिया की तरह जल्दी ही ढह जाएगी और नष्ट हो जाएगी। इस निजी दुनिया, मेरे इस संक्षिप्त जीवन का क्या मूल्य है?"

फिर, कुरान की रोशनी के माध्यम से, मैंने देखा कि मेरे लिए और बाकी सभी के लिए, यह दुनिया व्यापार का एक अस्थायी स्थान है, एक गेस्टहाउस जो हर दिन भरता और खाली होता है, राहगीरों के लिए सड़क पर लगाया गया एक बाज़ार है-

यह पुस्तक, जो कि पूर्व-शाश्वत लेखक की एक सदैव नवीनीकृत नोटबुक है, जो कि निरंतर लिखी और मिटाई जाती है, तथा जो कि प्रत्येक वसंत में एक स्वर्णिम पत्र है, तथा प्रत्येक ग्रीष्म ऋतु में एक अच्छी तरह से रचित स्तुति है; यह सर्व-महिमावान निर्माता के नामों की अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करने तथा नवीनीकृत करने वाले दर्पणों से बनी है; यह परलोक का बीज-बिस्तर है, ईश्वरीय दया का पुष्प-बिस्तर है, तथा साइनबोर्ड बनाने के लिए एक विशेष, अस्थायी कार्यशाला है, जिसे अनंत काल की दुनिया में प्रदर्शित किया जाएगा।

मैंने उस महान रचयिता को लाख-लाख शुक्रिया अदा किया जिसने दुनिया को इस तरह बनाया है। और मैंने समझा कि दुनिया के खूबसूरत, आंतरिक चेहरों के लिए प्यार जो आख़िरत और ईश्वरीय नामों की ओर देखते हैं, इंसानों को दिया गया था, क्योंकि उन्होंने इसे इसके क्षणभंगुर, बदसूरत, हानिकारक, असावधान चेहरे पर खर्च किया, उन्होंने हदीस का अर्थ प्रकट किया: "इस दुनिया की मोहब्बत सभी ग़लतियों में सबसे बड़ी है।"6

बुज़ुर्गो! मैंने इस हक़ीकत को हिकमत वाले क़ुरआन की रोशनी और बुढ़ापे की चेतावनियों और ईमान की आँखों के खुलने से महसूस किया है। और मैंने इसे रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर निर्णायक सबूतों के साथ साबित किया है। मैंने एक सच्ची तसल्ली, शक्तिशाली उम्मीद और चमकती हुई रोशनी का अनुभव किया। मैं अपने बुढ़ापे के लिए शुक्रगुज़ार था और मैं ख़ुश था कि मेरी जवानी गुज़र गई। तुम भी रोओ मत, बल्कि शुक्र अदा करो। चूँकि ईमान है और हक़ीकत यही है, इसलिए ग़ाफ़िलों को रोना चाहिए और गुमराहों को विलाप करना चाहिए।

नौवीं आशा

प्रथम विश्व युद्ध में, एक कैदी के रूप में, मैं उत्तर-पूर्वी रूस के सुदूर कोस्तुरमा प्रांत में था। प्रसिद्ध वोल्गा नदी के किनारे तातारों की एक छोटी सी मस्जिद थी। मैं अपने दोस्तों, दूसरे अधिकारियों के बीच थक जाता था। मैं एकांत चाहता था, फिर भी मैं बिना अनुमति के बाहर नहीं घूम सकता था। फिर वे मुझे वोल्गा के किनारे तातार क्वार्टर में, उस छोटी सी मस्जिद में जमानत पर ले गए। मैं वहाँ अकेला सोता था। वसंत करीब था। मैं उस उत्तरी देश की लंबी-लंबी रातों में बहुत जागा रहता था; वोल्गा की उदास छींटे और बारिश की खुशनुमा फुहारें और उस अंधेरे निर्वासन की उन अंधेरी रातों की हवा की उदास आहें मुझे थोड़ी देर के लिए लापरवाही की गहरी नींद से जगा देती थीं। मैं अभी तक खुद को बूढ़ा नहीं मानता था, लेकिन जिन्होंने महायुद्ध का अनुभव किया था वे बूढ़े थे। क्योंकि वे दिन थे, जो मानो इस कविता को साकार कर रहे थे:

वह दिन जिसमें बच्चों के बाल सफ़ेद हो जायेंगे (73:17)

बच्चों को भी बूढ़ा बना दिया। जब मैं चालीस साल का था, तब मुझे लगा कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ।

6 अल-'अजलुनी, कशफ अल-खफ़ा', संख्या: 1099; अल-सुयुति, अल-दुरार अल-मुन्ततिरा, 97; इस्फ़हानी, हिलियाट अल-अवलिया', vi, 388; अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, iii, 368, संख्या: 3662।

अस्सी। उन लंबी, अंधेरी रातों और दुःखद निर्वासन और उदासी की स्थिति में, मैं जीवन और अपनी मातृभूमि से निराश हो गया। मैंने अपनी शक्तिहीनता और अकेलेपन को देखा, और मेरी आशा टूट गई।

फिर, जब मैं उसी अवस्था में था, तब पवित्र क़ुरआन से सहायता प्राप्त हुई, और मेरी ज़बान ने कहा:

अल्लाह ही हमारे लिए काफ़ी है, और वह कितना अच्छा संरक्षक है । (3:173)

और रोते हुए, मेरा दिल चिल्लाया: "मैं एक अजनबी हूँ, मैं अकेला हूँ, मैं कमजोर हूँ, मैं हूँ शक्तिहीन: मैं दया चाहता हूँ, मैं क्षमा चाहता हूँ, मैं आपसे मदद चाहता हूँ, हे मेरे भगवान!

और, अपने देश के पुराने दोस्तों के बारे में सोचते हुए, और खुद को मरते हुए कल्पना करते हुए वहाँ निर्वासन में, नियाज़ी मिस्री की तरह, मेरी आत्मा ने ये पंक्तियाँ उगल दीं:

दुनिया के दुःख से भागकर,
जोश और लालसा के साथ उड़ान भरते हुए,
शून्य की ओर अपने पंख खोलकर,
हर साँस के साथ रोता हूँ, दोस्त! दोस्त!

वह अपने दोस्तों को खोज रहा था।

वैसे भी, निर्वासन की उस उदास, दयनीय, वियोग-पीड़ित, लंबी रात में मेरी कमज़ोरी और नपुंसकता ईश्वरीय दरबार में इतनी शक्तिशाली मध्यस्थ और साधन बन गई कि आज भी मुझे इस पर आश्चर्य होता है। कई दिनों बाद मैं सबसे अप्रत्याशित तरीके से, अपने आप, रूसी भाषा न जानते हुए, उस दूरी को पार करके भाग गया, जिसे पैदल चलने में एक साल लग जाता। मैं ईश्वरीय कृपा से एक अद्भुत तरीके से बच गया, जो मेरी कमज़ोरी और नपुंसकता के परिणामस्वरूप मिली थी। फिर, वारसॉ और ऑस्ट्रिया से गुजरते हुए, मैं इस्तांबुल पहुंचा, इसलिए इस तरह से इतनी आसानी से बच जाना काफी असाधारण था। मैंने लंबी उड़ान इतनी आसानी और सुविधा के साथ पूरी की कि सबसे साहसी और सबसे चालाक रूसी-भाषी भी ऐसा नहीं कर सकते थे।

वोल्गा के किनारे मस्जिद में बिताई गई उस रात ने मुझे यह तय करने पर मजबूर कर दिया कि मैं अपनी बाकी की ज़िंदगी गुफ़ाओं में गुज़ारूँगा। लोगों के इस सामाजिक जीवन में घुलना-मिलना अब बहुत हो गया। चूँकि मैं आखिरकार अकेले ही कब्र में जा रहा हूँ, इसलिए मैंने कहा कि अब से मैं एकांत को चुनूँगा ताकि मैं इसका आदी हो जाऊँ। लेकिन अफ़सोस की बात है कि इस्तांबुल में मेरे कई और गंभीर दोस्त, वहाँ की चमक-दमक भरी दुनियावी ज़िंदगी और ख़ास तौर पर मुझे जो शोहरत और सम्मान मिला, जो मेरे हक़ से कहीं ज़्यादा था, जैसी महत्वहीन चीज़ों ने मुझे कुछ समय के लिए अपना फ़ैसला भूलने पर मज़बूर कर दिया। ऐसा लगा जैसे निर्वासन की वह रात मेरी ज़िंदगी की आँखों में एक चमकीला कालापन था और इस्तांबुल का चमकता हुआ सफ़ेद दिन, उसमें एक रोशनीहीन सफ़ेदी। वह आगे नहीं देख सकता था, वह अभी भी सो रहा था। दो साल बाद ग़ौथ अल-ग़ायलानी ने अपनी किताब फ़ुतुह अल-ग़ायब के ज़रिए एक बार फिर मेरी आँखें खोलीं।

हे वृद्ध पुरुषों और महिलाओं! जान लो कि बुढ़ापे की कमजोरी और शक्तिहीनता ईश्वरीय कृपा और दया को आकर्षित करने का साधन है। धरती पर दया की अभिव्यक्ति इस सत्य को सबसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है, जैसा कि मैंने कई अवसरों पर खुद में देखा है। क्योंकि सबसे कमजोर और सबसे शक्तिहीन जानवर बच्चे होते हैं। लेकिन फिर वे ही हैं जो दया की सबसे मधुर और सबसे सुंदर अभिव्यक्ति प्राप्त करते हैं। पेड़ के शीर्ष पर घोंसले में एक युवा पक्षी की शक्तिहीनता दया की अभिव्यक्ति को अपनी माँ को एक आज्ञाकारी सैनिक की तरह काम पर लगाने के लिए आकर्षित करती है।

उसकी माँ उड़कर उसे खाना खिलाती है। जब उसके पंख मजबूत हो जाते हैं और बच्चा अपनी नपुंसकता भूल जाता है, तो उसकी माँ उसे कहती है कि जाओ और अपना खाना खुद ढूंढो, और फिर उसकी बात नहीं सुनती।

जिस तरह दया का यह रहस्य युवाओं के लिए प्रभावी है, उसी तरह यह बुजुर्गों के लिए भी प्रभावी है, जो कमज़ोरी और नपुंसकता के मामले में युवाओं जैसे होते हैं। मेरे पास ऐसे अनुभव हैं, जिनसे मुझे यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि जिस तरह शिशुओं को उनकी नपुंसकता के कारण ईश्वरीय दया से अद्भुत तरीके से पोषण मिलता है, जो स्तनों के झरनों से बहता है; उसी तरह विश्वास करने वाले बुज़ुर्गों को, जो मासूमियत हासिल करते हैं, भरपूर मात्रा में पोषण मिलता है।

यह सत्य हदीस से भी प्रमाणित होता है, जिसमें कहा गया है: "यदि तुम्हारे बुजुर्ग लोग अपनी झुकी हुई पीठों के साथ न होते, तो विपत्तियाँ तुम पर बाढ़ के रूप में आतीं।"7 यह दोनों बातें बताती है कि एक घर की समृद्धि का स्रोत उसके बुजुर्ग निवासी हैं, और यह कि बुजुर्ग ही हैं जो परिवार को विपत्तियों से बचाते हैं।

चूँकि वृद्धावस्था की दुर्बलता और नपुंसकता इस सीमा तक ईश्वरीय दया को आकर्षित करने का साधन है; और चूँकि इसकी आयतें:

> चाहे तुम्हारे जीवन में उनमें से एक या दोनों वृद्ध हो जाएँ, तो उनसे घृणा का एक शब्द भी न कहो, न ही उन्हें पीछे हटाओ, बल्कि उन्हें सम्मान के साथ सम्बोधित करो। * और दयालुता से नम्रता का पंख नीचे करो, और कहो: “मेरे पालनहार!
>
> उन पर अपनी दया प्रदान कर, जिस प्रकार उन्होंने मुझे बचपन में पाला था।" (17:23-)
> 4)

पवित्र कुरान बच्चों को अपने बुजुर्ग माता-पिता के प्रति दयालु और सम्मानपूर्ण होने के लिए पांच तरीकों से चमत्कारिक ढंग से आह्वान करता है; और चूंकि इस्लाम धर्म बुजुर्गों के प्रति सम्मान और करुणा का आदेश देता है; और चूंकि मानव स्वभाव भी बुजुर्गों के प्रति सम्मान और करुणा की मांग करता है, इसलिए हम बुजुर्गों को युवावस्था के क्षणभंगुर भौतिक सुखों और भूखों के स्थान पर ईश्वरीय कृपा और मानवीय भावना से निश्चित रूप से महत्वपूर्ण, निरंतर दया और सम्मान मिलता है, साथ ही आध्यात्मिक सुख भी मिलता है।

7 अल-'अजलुनी, कशफ अल-खफा', द्वितीय, 163; अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, वी, 344, संख्या: 7523; अल-बहाकी, अल-सुनन अल-कुबरा, iii, 345।

सम्मान और करुणा। चूंकि यह मामला है, इसलिए हम अपने इस बुढ़ापे को सौ युवाओं के बदले में नहीं बदलेंगे। हां, मैं आपको निश्चित रूप से बता सकता हूं कि भले ही वे मुझे पुराने सईद की जवानी के दस साल दें, मैं नए सईद के बुढ़ापे का एक साल भी नहीं दूंगा। मैं अपने बुढ़ापे से संतुष्ट हूं, और आपको भी अपने बुढ़ापे से संतुष्ट होना चाहिए!

दसवीं आशा

युद्ध बंदी के रूप में वापस आने के बाद इस्ताम्बुल में एक या दो साल तक मैं असावधानी से घिरा रहा। दिन भर की राजनीति ने मेरा ध्यान खुद से हटाकर बाहरी दुनिया पर केंद्रित कर दिया। फिर एक दिन मैं इस्ताम्बुल में एयूब सुल्तान कब्रिस्तान की घाटी के ऊपर एक ऊंचे स्थान पर बैठा था, जब मैं नीचे देख रहा था, तो मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरी निजी दुनिया मर रही है और मेरी आत्मा पीछे हट रही है। मैंने कहा: "मुझे आश्चर्य है कि क्या यह कब्रों पर लिखे शिलालेख हैं जो मुझे ऐसे भ्रम दे रहे हैं?", और मैंने अपनी नज़र वापस खींच ली। मैंने दूर की ओर नहीं, बल्कि कब्रिस्तान की ओर देखा। तब मेरे दिल में यह बात डाली गई: "तुम्हारे आस-पास का यह कब्रिस्तान इस्ताम्बुल को सौ गुना समेटे हुए है, क्योंकि इस्ताम्बुल को यहाँ सौ बार खाली किया जा चुका है। तुम उस सर्वज्ञ और शक्तिशाली की आज्ञा से बच नहीं सकते जिसने इस्ताम्बुल के सभी लोगों को यहाँ डाला है; तुम कोई अपवाद नहीं हो; तुम भी चले जाओगे।"

मैं कब्रिस्तान से निकलकर उन भयानक विचारों के साथ सुल्तान एयूब मस्जिद की एक छोटी सी कोठरी में दाखिल हुआ, जहाँ मैं पहले भी कई बार रुका था। मैंने खुद से सोचा, मैं तीन तरह से मेहमान हूँ: मैं इस छोटे से कमरे में मेहमान हूँ, मैं इस्तांबुल में भी मेहमान हूँ, और इस दुनिया में भी मेहमान हूँ। मेहमान को रास्ते के बारे में सोचना पड़ता है। जैसे मैं इस कमरे को छोड़ दूँगा, वैसे ही एक दिन मैं इस्तांबुल को भी छोड़ दूँगा, और फिर एक दिन मैं इस दुनिया से चला जाऊँगा।

इस मनःस्थिति में, मैं, मेरा हृदय, अत्यंत दयनीय, गंभीर दुःख से अभिभूत था। मैं केवल एक या दो मित्रों को नहीं खो रहा था; मैं इस्तांबुल में रहने वाले हजारों लोगों से अलग हो जाऊंगा, और मैं इस्तांबुल से भी अलग हो जाऊंगा, जिसे मैं बहुत प्यार करता था। और जिस तरह मैं इस दुनिया में रहने वाले लाखों मित्रों से अलग हो जाऊंगा, उसी तरह मैं इस खूबसूरत दुनिया को भी छोड़ दूंगा, जिससे मैं मोहित था और जिससे मैं प्यार करता था। इस पर विचार करते हुए, मैं एक बार फिर कब्रिस्तान में उस स्थान पर चढ़ गया। मैं समय-समय पर सीखने के लिए सिनेमा में जाता था, और तभी इस्तांबुल के सभी मृतक मुझे घूमते हुए दिखाई दिए, जैसे कि सिनेमा वर्तमान में अतीत की छवियों को दिखाता है। और उस समय मुझे जितने भी लोग दिखाई दे रहे थे, वे सभी लाशें घूम रही थीं। मेरी कल्पना ने मुझे बताया: कब्रिस्तान में रहने वाले कुछ मृतक सिनेमा के पर्दे पर घूमते हुए दिखाई देते हैं, इसलिए आपको वर्तमान के लोगों को देखना चाहिए, जो बंधे हुए हैं

भविष्य में कब्रिस्तान में प्रवेश करना, मानो वे उसमें प्रवेश कर चुके हों; वे भी लाशें हैं, जो इधर-उधर घूम रही हैं।

अचानक कुरान की रोशनी और ग़ौस अल-आज़म, शेख़ गेलानी के मार्गदर्शन के ज़रिए मेरी दुःखद स्थिति एक सुखद स्थिति में बदल गई। यह कुछ इस तरह था:

कुरान से निकलने वाली रोशनी ने मुझे निम्नलिखित विचार दिया: उत्तर-पूर्व में कोस्तुरमा में निर्वासन में युद्ध-बंदी के रूप में आपके एक या दो अधिकारी मित्र थे। आप जानते थे कि वे किसी भी स्थिति में इस्तांबुल जाएंगे। यदि उनमें से किसी ने आपसे पूछा होता: "क्या आप इस्तांबुल जाना चाहते हैं, या यहाँ रहना चाहते हैं?" निश्चित रूप से यदि आपके पास थोड़ी सी भी बुद्धि होती, तो आप खुशी-खुशी इस्तांबुल जाना चुनते। क्योंकि एक हजार एक दोस्तों में से नौ सौ निन्यानबे पहले से ही इस्तांबुल में थे। केवल एक या दो वहाँ रह गए, और वे भी चले गए। आपके लिए इस्तांबुल जाना एक दुखद प्रस्थान और दुखद अलगाव नहीं होगा। इसके अलावा आप यहाँ आए हैं और क्या आप ऐसा करके खुश नहीं हैं? आप उस दुश्मन देश की लंबी, अंधेरी रातों और ठंडी, तूफानी सर्दियों से मुक्त हो गए। आप इस्तांबुल, एक सांसारिक स्वर्ग में आ गए।

ठीक उसी तरह, बचपन से लेकर आज की उम्र तक, आपके चाहने वालों में से सौ में से निन्यानबे लोग कब्रिस्तान चले गए हैं, जिससे आप डरे हुए हैं। इस दुनिया में आपके एक या दो दोस्त अभी भी हैं, और वे भी चले जाएँगे। इस दुनिया में आपकी मृत्यु वियोग नहीं है; यह मिलन है; यह उन सभी दोस्तों के साथ फिर से मिलना है। मुझे याद दिलाया गया कि वे, यानी वे अमर आत्माएँ, धरती के नीचे अपने जीर्ण-शीर्ण आवास छोड़ गई हैं, और उनमें से कुछ सितारों के इर्द-गिर्द और कुछ मध्यवर्ती क्षेत्र के स्तरों में यात्रा कर रही हैं।

हां, कुरान और ईमान ने इस सच्चाई को इतना पक्का साबित कर दिया है कि अगर आपमें दिल और रूह की कमी नहीं है और गुमराही ने आपके दिल को नहीं दबाया है तो आपको इसे ऐसे मानना चाहिए जैसे कि आप इसे देख रहे हैं। क्योंकि निश्चित रूप से और खुद-ब-खुद यह बात साबित हो जाती है कि वह सर्व-उदार निर्माता जो इस दुनिया को अनगिनत तरह के उपहारों और नेमतों से सजाता है और अपनी प्रभुता को उदारता और दया से प्रदर्शित करता है और बीज जैसी कम महत्वपूर्ण चीज़ों को भी सुरक्षित रखता है, वह इंसान को इतनी निर्दयता और उद्देश्यहीनता से नष्ट या नष्ट नहीं करेगा जैसा कि सतही तौर पर लगता है, क्योंकि वह अपनी रचनाओं में सबसे परिपूर्ण, व्यापक, महत्वपूर्ण और प्रिय है। बल्कि, एक किसान द्वारा धरती पर बिखेरे गए बीजों की तरह, दयालु निर्माता अपने उस प्यारे प्राणी को अस्थायी रूप से ज़मीन के नीचे फेंक देता है, जो दया का द्वार है, ताकि दूसरे जीवन में अंकुर पैदा हो सकें।

[8] यह सत्य रिसाले-नूर के अन्य भागों में, विशेषकर दसवें और उनतीसवें शब्दों में, दो दो बराबर चार के रूप में स्पष्ट रूप से सिद्ध किया गया है।

कुरान की यह याद दिलाने के बाद, कब्रिस्तान मेरे लिए इस्तांबुल से ज़्यादा जाना-पहचाना हो गया। बातचीत और संगति की तुलना में एकांत और एकांत मेरे लिए ज़्यादा सुखद हो गया, और मैंने बोस्फोरस के सरयेर में अपने लिए एकांत की जगह ढूँढ़ ली। वहाँ ग़ौथ अल-आज़म (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) अपने फ़ुतूह अल-ग़ैब के ज़रिए मेरे लिए गुरु, डॉक्टर और मार्गदर्शक बन गए, जबकि इमाम रब्बानी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) अपने मकतूबत (पत्रों) के ज़रिए मेरे साथी, हमदर्द दोस्त और शिक्षक बन गए। तब मैं बेहद ख़ुश था कि मैं बुढ़ापे के करीब पहुँच गया, सभ्यता से दूर हो गया, और सामाजिक जीवन से मुक्त हो गया। मैंने भगवान का शुक्रिया अदा किया।

ऐ सम्मानित लोगों, जो बुढ़ापे में प्रवेश कर चुके हैं और जो अक्सर इसकी चेतावनियों के ज़रिए मौत को याद करते हैं! कुरान द्वारा सिखाई गई ईमान की शिक्षाओं की रोशनी के अनुसार, हमें बुढ़ापे, मौत और बीमारी को अच्छी नज़र से देखना चाहिए और एक मामले में उनसे प्यार भी करना चाहिए। चूँकि हमारे पास ईमान जैसी अनमोल सौगात है, इसलिए बुढ़ापा, बीमारी और मौत सब अच्छी हैं। अगर कुछ चीज़ें अप्रिय हैं, तो वे हैं पाप, बुराई, अविष्कार और गुमराही।

ग्यारहवीं आशा

कैद से लौटने के बाद, मैं अपने भतीजे अब्दुर्रहमान9 के साथ इस्तांबुल में कैमलीका की पहाड़ी पर एक विला में रह रहा था। सांसारिक जीवन के दृष्टिकोण से, मेरी स्थिति को हम जैसे लोगों के लिए सबसे भाग्यशाली माना जा सकता था। क्योंकि मैं युद्ध-बंदी होने से बच गया था और दारुल-हिकमत में हम अपने पेशे, विद्वान पेशे के अनुरूप उच्च तरीके से ज्ञान का प्रचार करने में सफल हो रहे थे। मुझे जो सम्मान और आदर मिला, वह मेरे हक़ से कहीं ज़्यादा था। मैं कैमलीका में रह रहा था, जो इस्तांबुल की सबसे खूबसूरत जगह है।

मेरे लिए सब कुछ एकदम सही था। मैं अपने भतीजे स्वर्गीय अब्दुर्रहमान के साथ था, जो बेहद बुद्धिमान और आत्म-त्यागी था, और मेरा छात्र, नौकर, लेखक और आध्यात्मिक पुत्र दोनों था। लेकिन फिर, खुद को दुनिया में किसी और की तुलना में अधिक भाग्यशाली मानते हुए, मैंने आईने में देखा और मैंने अपने बालों और दाढ़ी में सफ़ेद बाल देखे।

अचानक, मुझे वह आध्यात्मिक जागृति फिर से महसूस हुई जो मैंने कोस्तुरमा की मस्जिद में कैद के दौरान अनुभव की थी। मैंने उन परिस्थितियों और कारणों का अध्ययन करना शुरू किया जिनसे मुझे सच्चा लगाव था और जिन्हें मैं इस दुनिया में खुशी का स्रोत मानता था। लेकिन मैंने उनमें से जिसका भी अध्ययन किया, मैंने पाया कि वह सड़ा हुआ था; वह लगाव के लायक नहीं था; वह

---

[9] अब्दुर्रहमान बेदिउज्जमान के बड़े भाई अब्दुल्ला के बेटे थे। उनका जन्म 1903 में नूर में हुआ था और वे बेदिउज्जमान के आध्यात्मिक पुत्र, छात्र और सहायक थे। प्रथम विश्व युद्ध के बाद वे अपने चाचा के साथ इस्तांबुल में रहने लगे और उस समय उनकी एक छोटी जीवनी प्रकाशित की। 1928 में अंकारा में उनकी मृत्यु हो गई, जहाँ उन्हें दफनाया गया। (ट्र.)

धोखेबाज़। उस समय के आसपास, मुझे एक ऐसे दोस्त के हाथों बेवफ़ाई और विश्वासघात का अप्रत्याशित और अकल्पनीय कृत्य सहना पड़ा, जिसे मैं सबसे ज़्यादा वफ़ादार मानता था। मुझे दुनिया से घृणा होने लगी। मैंने खुद से कहा: "क्या मैं पूरी तरह से धोखा खा गया हूँ? मैं देखता हूँ कि बहुत से लोग हमारी स्थिति को ईर्ष्या से देखते हैं, जबकि वास्तव में हमें दया करनी चाहिए।

क्या ये सभी लोग पागल हैं, या मैं ही पागल हो गया हूँ, जो इन सभी सांसारिक लोगों को इस रूप में देखता हूँ?"

वैसे भी, बुढ़ापे के कारण मुझमें जो तीव्र जागृति आई, उसके परिणामस्वरूप सबसे पहले मैंने उन सभी क्षणभंगुर चीजों की क्षणभंगुरता देखी, जिनसे मैं जुड़ा हुआ था। फिर मैंने खुद को देखा, और मैंने खुद को पूरी तरह से नपुंसक पाया। तो तब मेरी आत्मा ने घोषणा की, जो अमरता की इच्छा रखती थी और क्षणभंगुर प्राणियों को अमर मानने की कल्पना करते हुए उनसे मोहित थी: "चूंकि मैं अपने शरीर के संबंध में एक क्षणभंगुर प्राणी हूं, इसलिए इन क्षणभंगुर चीजों से क्या लाभ हो सकता है? चूंकि मैं शक्तिहीन हूं, इसलिए मैं इन शक्तिहीन चीजों से क्या उम्मीद कर सकता हूं? मुझे एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो शाश्वत और स्थायी हो, जो शाश्वत और सर्वशक्तिमान हो, जो मेरी बीमारियों का इलाज करे।" और मैंने खोज शुरू कर दी।

फिर, सबसे पहले, मैंने पुराने समय में पढ़ी हुई विद्या का सहारा लिया, मैंने एक सांत्वना, एक उम्मीद की तलाश शुरू की। लेकिन दुर्भाग्य से, उस समय तक मैंने अपने मन को दर्शनशास्त्र के साथ-साथ इस्लामी विज्ञानों से भी भर लिया था, और पूरी तरह से ग़लतफ़हमी में मैंने उन दार्शनिक विज्ञानों को प्रगति का स्रोत और ज्ञान का साधन मान लिया था। हालाँकि, उन दार्शनिक विषयों ने मेरी आत्मा को बहुत गंदा कर दिया था और मेरे आध्यात्मिक विकास में बाधा बन गए थे। अचानक, सर्वशक्तिमान ईश्वर की दया और उदारता के माध्यम से, सर्वज्ञ कुरान की पवित्र बुद्धि मेरी सहायता के लिए आई। जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में समझाया गया है, इसने उन दार्शनिक विषयों की गंदगी को धो दिया और साफ कर दिया।

उदाहरण के लिए, विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न आध्यात्मिक अंधकार ने मेरी आत्मा को ब्रह्मांड में डुबो दिया। मैं जिस ओर भी प्रकाश की तलाश में देखता, मुझे उन मामलों में एक भी किरण नहीं मिलती, मैं साँस नहीं ले पाता। और ऐसा तब तक चलता रहा जब तक कि सर्वज्ञ कुरान के इस वाक्यांश द्वारा दी गई ईश्वरीय एकता की शिक्षा "उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं" ने अपने तेज प्रकाश से अंधकार की उन सभी परतों को दूर नहीं कर दिया, और मैं आराम से साँस ले सका। लेकिन गुमराह लोगों और दार्शनिकों से जो कुछ उन्होंने सीखा था, उस पर भरोसा करके, मेरी आत्मा और शैतान ने मेरे तर्क और मेरे दिल पर हमला किया। भगवान का शुक्र है, मेरी आत्मा के साथ होने वाली बहस के परिणामस्वरूप मेरे दिल की जीत हुई। उन आदान-प्रदानों का वर्णन रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में किया गया है। इसलिए उन्हें पर्याप्त मानते हुए, यहाँ मैं दिल की उस जीत का एक हजारवाँ हिस्सा दिखाने के लिए हज़ारों में से केवल एक प्रमाण की व्याख्या करूँगा। इस तरह यह कुछ बुज़ुर्ग लोगों की आत्माओं को भी शुद्ध कर सकता है जो

अपनी युवावस्था में ही वे गंदे हो गए हैं, और उनके दिल बीमार हो गए हैं और आत्माएँ उन बातों से खराब हो गई हैं जिन्हें पश्चिमी दर्शन या सभ्यता का विज्ञान कहा जाता है, लेकिन वे आंशिक रूप से गुमराह करने वाली और आंशिक रूप से तुच्छ बातें हैं। और दिव्य एकता के माध्यम से, वे शैतान और आत्मा की बुराई से बच सकते हैं। यह इस प्रकार है:

मेरी आत्मा ने विज्ञान और दर्शन के नाम पर कहा: "वस्तुओं की प्रकृति के अनुसार, ब्रह्मांड में प्राणी अन्य प्राणियों में हस्तक्षेप करते हैं। हर चीज़ किसी कारण की ओर देखती है। फल को पेड़ से और बीज को मिट्टी से खोजना पड़ता है। तो भगवान से सबसे छोटी और कम से कम महत्वहीन चीज़ की तलाश करना और उसके लिए उनसे विनती करना क्या मतलब है?"

कुरान की रोशनी में ईश्वरीय एकता का अर्थ इस प्रकार प्रकट हुआ: सबसे बड़ी चीज की तरह, सबसे छोटी और सबसे खास चीज भी सीधे पूरे ब्रह्मांड के रचयिता की शक्ति से निकलती है और उसके खजाने से निकलती है। यह किसी और तरीके से नहीं हो सकता। जहां तक कारणों की बात है, वे महज एक पर्दा हैं। क्योंकि कला और सृजन के संबंध में, कभी-कभी वे प्राणी जिन्हें हम सबसे छोटे और सबसे कम महत्वपूर्ण मानते हैं, सबसे बड़े प्राणियों से भी बड़े होते हैं। भले ही एक मक्खी मुर्गे से बड़ी कला वाली न हो, लेकिन वह कम कला वाली भी नहीं है। ऐसी स्थिति में, महान और छोटे के बीच कोई अंतर नहीं किया जाना चाहिए। या तो सभी को भौतिक कारणों के बीच विभाजित किया जाना चाहिए, या सभी को एक ही सत्ता के लिए एक साथ जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। और जैसे पहला असंभव है, वैसे ही दूसरा आवश्यक और अनिवार्य है।

क्योंकि यदि प्राणियों को एक ही सत्ता, अर्थात् एक पूर्व-शाश्वत सर्वशक्तिमान से संबद्ध किया जाए, क्योंकि उसका ज्ञान, जिसका अस्तित्व सभी प्राणियों में व्यवस्था और बुद्धि के कारण निश्चित है, सब कुछ को समाहित करता है; और चूँकि सभी चीज़ों का माप उसके ज्ञान में निर्धारित होता है; और चूँकि देखा जाए तो अनंत कला से परिपूर्ण प्राणी निरंतर अनंत सहजता से शून्य से अस्तित्व में आते हैं; और चूँकि असंख्य शक्तिशाली प्रमाणों के अनुसार सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान "'हो जाओ' की आज्ञा से कुछ भी बना सकता है और यह हो जाता है" माचिस जलाने जितना सरल है, और जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई भागों में समझाया गया है और विशेष रूप से बीसवें पत्र में और तेईसवें फ्लैश के अंत में साबित किया गया है, उसके पास असीमित शक्ति है - चूँकि ऐसा है, असाधारण सहजता और सुविधा जो हम देखते हैं वह उस सर्वव्यापी ज्ञान और विशाल

शक्ति।

उदाहरण के लिए, यदि अदृश्य स्याही से लिखी गई पुस्तक पर कोई विशेष घोल लगाया जाए, तो वह विशाल पुस्तक अचानक अपना अस्तित्व प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित कर देती है और स्वयं ही पढ़ी जाने लगती है। ठीक उसी प्रकार, प्रत्येक वस्तु का विशेष रूप और नियत माप, पूर्व-शाश्वत सर्वशक्तिमान के सर्वव्यापी ज्ञान में निर्धारित होता है। "'हो जाओ' और यह हो जाता है" की आज्ञा के द्वारा और अपनी उस असीम शक्ति और भेदक इच्छा के साथ, जैसे कि लेखन पर घोल फैलाते हुए, परम सर्वशक्तिमान एक उपाय लागू करता है।

वह अपनी शक्ति को उस सत्ता के समक्ष प्रकट करता है जो ज्ञान के रूप में विद्यमान है तथा अत्यन्त सरलता और सुविधा के साथ उसे बाह्य अस्तित्व प्रदान करता है; वह अपनी बुद्धि की कढ़ाई को प्रदर्शित करता है और उसे पढने देता है।

यदि सभी वस्तुओं का श्रेय उस सनातन सर्वशक्तिमान को न दिया जाए, जो सब वस्तुओं को जानता है, तो फिर न केवल संसार के अधिकांश प्राणियों में से एक विशेष मात्रा में एक मक्खी जैसे सबसे छोटे जीव के शरीर को एकत्रित करना होगा, बल्कि उस छोटी मक्खी के शरीर में काम करने वाले कणों को भी मक्खी की सृष्टि के रहस्यों और उसकी संपूर्ण कला को उसके सभी सूक्ष्मतम विवरणों सहित जानना होगा।

क्योंकि सभी बुद्धिमान इस बात पर सहमत हैं कि प्राकृतिक कारण और भौतिक कारण शून्य से सृजन नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में, यदि वे सृजन करते हैं, तो वे अस्तित्व को एक साथ एकत्रित करेंगे। और चूंकि वे इसे एक साथ एकत्रित करेंगे - चाहे वह कोई भी सजीव प्राणी हो, उसके भीतर अधिकांश तत्वों और अधिकांश प्रकार के प्राणियों के नमूने हैं, क्योंकि जीवित प्राणी बिल्कुल ब्रह्मांड के बीज या सार की तरह हैं - इसलिए निश्चित रूप से उनके लिए पूरे वृक्ष से एक बीज और पूरी धरती से एक सजीव प्राणी को एक साथ एकत्रित करना आवश्यक होगा, उन्हें एक महीन छलनी से छानकर और सबसे संवेदनशील तराजू से मापकर। और चूँकि प्राकृतिक कारण अज्ञानी और निर्जीव होते हैं, और उनके पास कोई ज्ञान नहीं होता जिससे वे कोई योजना, सूचकांक, मॉडल या कार्यक्रम निर्धारित कर सकें जिसके अनुसार वे उन कणों को पिघला सकें और डाल सकें जो संबंधित सत्ता के अमूर्त साँचे में प्रवेश करते हैं, ताकि वे बिखर न जाएँ और उसके क्रम को बिगाड़ न दें, यह स्पष्ट है कि यह मानना संभावना और तर्क से कितना दूर है कि, साँचे या माप के बिना, वे तत्वों के कणों को जो बाढ़ की तरह बहते हैं, बिना बिखरे एक व्यवस्थित द्रव्यमान के रूप में एक दूसरे पर बने रह सकते हैं, क्योंकि हर चीज का एक ही रूप और माप होता है बिना गणना या गिनती के संभावनाओं के बीच। निश्चित रूप से, हर कोई जो अपने दिल में अंधेपन से ग्रस्त नहीं है, वह इसे देखेगा। हाँ, इस सत्य के परिणामस्वरूप, श्लोक के अर्थ के अनुसार,

> अल्लाह के सिवा जिन लोगों को तुम पुकारते हो, वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, यदि वे सब मिलकर भी ऐसा ही करें। (22:73)10

यदि सभी भौतिक कारणों को एक साथ इकट्ठा किया जाए और यदि उनमें इच्छाशक्ति हो, तो वे एक मक्खी के अस्तित्व और उसके तंत्रों और अंगों को उनके विशेष संतुलन के साथ एक साथ इकट्ठा नहीं कर सकते। और भले ही वे उन्हें एक साथ इकट्ठा कर सकें, वे उन्हें अस्तित्व के निर्दिष्ट माप में नहीं रख सकते। और भले ही वे उन्हें इस तरह से बनाए रख सकें, वे उन सूक्ष्म कणों को, जो लगातार नवीनीकृत हो रहे हैं और अस्तित्व में आ रहे हैं और काम कर रहे हैं, नियमित रूप से और क्रम में काम नहीं कर सकते। जिस स्थिति में,

---

[10] अर्थात्, "यदि परमेश्वर को छोड़ जितनी वस्तुओं को तुम पुकारते और पूजते हो, वे सब इकट्ठी हो जाएं, साथ मिलकर वे एक मक्खी भी नहीं बना सकते थे।"

यह बात तो स्पष्ट है कि कारण किसी भी चीज़ पर स्वामित्व का दावा नहीं कर सकते। यानी उनका असली मालिक कोई और है।

वास्तव में, उनका सच्चा मालिक ऐसा है कि, आयत के अनुसार,

तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक आत्मा के समान है, (32:28)

वह धरती के सभी जीवित प्राणियों को उतनी ही आसानी से जीवित कर देता है, जितनी आसानी से वह एक मक्खी को जीवित कर देता है। वह वसंत को उतनी ही आसानी से बनाता है, जितनी आसानी से वह एक फूल बनाता है। क्योंकि उसे चीजों को एक साथ इकट्ठा करने की कोई जरूरत नहीं है। चूँकि वह "'हो जाओ' और यह हो जाता है" के आदेश का स्वामी है; और चूँकि वह हर वसंत से वसंत के असंख्य प्राणियों के असंख्य गुणों, अवस्थाओं और रूपों को उनके भौतिक अस्तित्व के तत्वों के साथ बनाता है; और चूँकि वह अपने ज्ञान में हर चीज की योजना, मॉडल, सूचकांक और कार्यक्रम निर्धारित करता है; और चूँकि सभी सूक्ष्म कण उसके ज्ञान और शक्ति के क्षेत्र में गतिशील हैं; इसलिए वह हर चीज को असीम आसानी से बनाता है, जैसे कि माचिस जलाना। और कोई भी चीज इसकी गति को इतना भी भ्रमित नहीं करती, जितना कि एक कण। और सूक्ष्म कण एक नियमित, अनुशासित सेना की तरह हैं, जिस तरह से ग्रह एक आज्ञाकारी सेना हैं।

चूँकि वे उस पूर्व-शाश्वत शक्ति पर निर्भर होकर गतिशील हैं और उस पूर्व-शाश्वत ज्ञान के सिद्धांतों के अनुसार कार्य करते हैं, इसलिए वे कार्य उस शक्ति के अनुसार अस्तित्व में आते हैं। इसलिए उनके महत्वहीन व्यक्तित्व पर विचार करके उन्हें महत्वहीन नहीं माना जा सकता। क्योंकि उस शक्ति से जुड़े होने की शक्ति से एक मक्खी निम्रोद को मार सकती है, एक चींटी फिरौन के महल को नष्ट कर सकती है, और देवदार का छोटा सा बीज अपने कंधे पर पहाड़ जितने ऊँचे देवदार के पेड़ का बोझ उठा सकता है। हमने रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर इस सत्य को साबित किया है: जैसे सेना में भर्ती होने और राजा से जुड़े होने के कारण एक साधारण सैनिक दूसरे राजा को अपनी क्षमता से लाखों गुना अधिक बंदी बना सकता है; उसी तरह, पूर्व-शाश्वत शक्ति से जुड़े होने से, सभी चीजें प्राकृतिक कारणों की क्षमता से लाखों गुना अधिक कला के चमत्कार प्रकट कर सकती हैं।

संक्षेप में: यह तथ्य कि सभी चीजें अनंत कला और अनंत सहजता दोनों के साथ अस्तित्व में आती हैं, यह दर्शाता है कि वे एक पूर्व-शाश्वत सर्वशक्तिमान के कार्य हैं, जिसके पास सर्वव्यापी ज्ञान है। अन्यथा, लाखों कठिनाइयों के साथ अस्तित्व में आना तो दूर, संभावना की सीमाओं को छोड़कर असंभवता की सीमाओं में प्रवेश करना, कुछ भी अस्तित्व में नहीं आ सकता, वास्तव में, उनका अस्तित्व में आना असंभव और निषिद्ध होगा।

इस प्रकार, इस अत्यंत सूक्ष्म, शक्तिशाली, गहन और स्पष्ट प्रमाण के माध्यम से, मेरी आत्मा, जो शैतान की अस्थायी शिष्या और गुमराह लोगों और दार्शनिकों की प्रवक्ता थी, चुप हो गई और, ईश्वर की स्तुति हो, पूरी तरह से विश्वास करने लगी। उसने कहा:

हाँ, मुझे एक रचयिता और पालनहार की आवश्यकता है, जो मेरे हृदय के छोटे से छोटे विचार और मेरी गुप्ततम इच्छाओं को जानने की शक्ति रखता हो; और जिस प्रकार वह मेरी आत्मा की गुप्ततम आवश्यकताओं को पूरा करेगा, उसी प्रकार वह मुझे शाश्वत सुख देने के लिए इस विशाल पृथ्वी को परलोक में बदल देगा, और इस संसार को हटाकर परलोक को उसके स्थान पर स्थापित कर देगा; और जिस प्रकार वह मक्खी बनाता है, उसी प्रकार वह आकाश को बनाएगा; और जिस प्रकार वह सूर्य को आकाश के मुख पर आँख की तरह स्थिर करता है, उसी प्रकार वह मेरी आँख की पुतली में एक कण को स्थापित कर सकता है। क्योंकि जो मक्खी नहीं बना सकता, वह मेरे हृदय के विचारों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता और मेरी आत्मा की प्रार्थनाओं को नहीं सुन सकता। जो आकाश नहीं बना सकता, वह मुझे शाश्वत सुख नहीं दे सकता। इस मामले में, मेरा पालनहार वह है, जो मेरे हृदय के विचारों को शुद्ध करता है, और जिस प्रकार वह एक घंटे में आकाश को बादलों से भर देता है और खाली कर देता है, उसी प्रकार वह इस संसार को परलोक में बदल देगा, स्वर्ग बनाएगा, और मेरे लिए इसके द्वार खोल देगा, और मुझे प्रवेश करने का आदेश देगा।

मेरे बुज़ुर्ग भाईयों, जिन्होंने दुर्भाग्य के कारण, मेरी आत्मा की तरह, अपने जीवन का कुछ हिस्सा प्रकाशहीन पश्चिमी भौतिकवादी दर्शन और विज्ञान पर बिताया है! कुरान की ज़ुबान से लगातार बोले जाने वाले "कोई ईश्वर नहीं है लेकिन वह है" के पवित्र आदेश से समझें कि यह कितना शक्तिशाली, सच्चा, अडिग, अखंड, अपरिवर्तनीय और पवित्र विश्वास का स्तंभ है, और यह कैसे सभी आध्यात्मिक अंधकार को दूर करता है और सभी आध्यात्मिक घावों को ठीक करता है!

मैंने इस लंबी कहानी को अपने बुढ़ापे की उम्मीद के दरवाज़ों में शामिल कर लिया, जैसे कि अनजाने में। मैं इसे शामिल नहीं करना चाहता था, बल्कि मैंने ऐसा करने से इसलिए रोका क्योंकि मुझे लगा कि यह उबाऊ होगा। लेकिन मुझे कहना होगा कि मैं इसे लिखने के लिए मजबूर था।
खैर, मुख्य विषय पर लौटते हैं:

मेरे बालों और दाढ़ी में सफ़ेद बाल आने और एक वफ़ादार दोस्त की बेवफ़ाई के कारण, मुझे इस्तांबुल के सांसारिक जीवन के सुखों से घृणा होने लगी जो इतने चमकदार और सतही रूप से सुखद और सुनहरे थे। मेरी आत्मा उन सुखों के स्थान पर आध्यात्मिक सुखों की खोज करती थी जिनसे वह ग्रस्त थी। उसे इस बुढ़ापे में एक रोशनी, एक सांत्वना चाहिए थी जो असावधान लोगों की दृष्टि में ठंडा, बोझिल और अप्रिय है। और सारी प्रशंसा ईश्वर की हो और एक लाख धन्यवाद, जिस तरह मैंने "उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है" में विश्वास का सच्चा, स्थायी और मधुर सुख पाया और उन सभी झूठे, अप्रिय, क्षणभंगुर सांसारिक सुखों के स्थान पर ईश्वरीय एकता के प्रकाश में, वैसे ही ईश्वरीय एकता के प्रकाश के माध्यम से, मैंने बुढ़ापे को देखा जो असावधान लोगों की दृष्टि में ठंडा और बोझिल है, सबसे हल्का, गर्म और प्रकाशमान।

ऐ बुज़ुर्ग मर्दों और औरतों! चूँकि तुम ईमान रखते हो और तुम ऐसी दुआएँ और प्रार्थनाएँ करते हो जो ईमान को रोशन करती हैं और बढ़ाती हैं, इसलिए तुम अपने बुढ़ापे को हमेशा जवानी समझ सकते हो। क्योंकि इसके ज़रिए तुम हमेशा जवानी पा सकते हो। बुढ़ापा जो सच में ठंडा, बोझिल, बदसूरत, अंधेरा और दर्द से भरा होता है, वह गुमराह लोगों का बुढ़ापा होता है, दरअसल, उनकी जवानी भी हमेशा जवानी ही होती है।

ठीक है। उन्हें ही आहें भरकर और पछताकर रोना चाहिए। जबकि आपको, आदरणीय विश्वासी बुज़ुर्ग लोगों को, खुशी से यह कहते हुए धन्यवाद देना चाहिए: "हर परिस्थिति के लिए सारी प्रशंसा और धन्यवाद परमेश्वर को हो!"

बारहवीं आशा

एक बार मैं इस्पार्टा प्रांत के बरला जिले में निर्वासन नामक एक कष्टदायक कैद में था, वास्तव में दयनीय स्थिति में, बीमारी, बुढ़ापे, घर से दूर, और अकेले एक गाँव में, किसी से भी दूर, किसी से भी मिलने-जुलने और बातचीत से दूर। फिर, अपनी पूर्ण दया में, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मुझ पर सर्वज्ञ कुरान के सूक्ष्म बिंदुओं और रहस्यों के बारे में एक प्रकाश प्रदान किया जो मेरे लिए सांत्वना का स्रोत था। इसके साथ, मैंने अपनी दयनीय, दुखद स्थिति को भूलने की कोशिश की। मैं अपनी जन्मभूमि, अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को भूलने में सक्षम था, लेकिन अफसोस, एक व्यक्ति था जिसे मैं नहीं भूल सका और वह था अब्दुर्रहमान, जो मेरा भतीजा, मेरा आध्यात्मिक पुत्र, मेरा सबसे समर्पित शिष्य और मेरा सबसे बहादुर दोस्त था। वह मुझसे छह या सात साल पहले अलग हो गया था। न तो वह जानता था कि मैं कहाँ हूँ ताकि वह मेरी मदद और सांत्वना देने के लिए जल्दी कर सके, न ही मैं उसकी स्थिति जानता था ताकि मैं उससे पत्र-व्यवहार कर सकूँ और हम एक-दूसरे पर भरोसा कर सकें। अब बुढ़ापे में मुझे उनके जैसे वफादार और त्यागी व्यक्ति की जरूरत थी।

फिर अचानक किसी ने मुझे एक पत्र दिया। मैंने उसे खोला और देखा कि यह अब्दुर्रहमान का पत्र था, जिसे इस तरह से लिखा गया था कि वह अपनी असली पहचान को दर्शा सके। इसका एक हिस्सा जिसमें स्पष्ट रूप से चमत्कार के तीन उदाहरण दिखाए गए हैं, सत्ताईसवें पत्र के अंशों में शामिल किया गया है। यह पत्र पढ़कर मैं रो पड़ा, और आज भी रोता हूँ। दिवंगत अब्दुर्रहमान ने पत्र में गंभीरता और ईमानदारी से लिखा था कि वह दुनिया के सुखों से घृणा करता है और उसकी सबसे बड़ी इच्छा है कि वह मेरे पास आए और बुढ़ापे में मेरी ज़रूरतों का ध्यान रखे, जैसे मैंने उसकी जवानी में उसकी ज़रूरतों का ध्यान रखा था। वह अपनी सक्षम कलम से कुरान के रहस्यों को फैलाने में मेरी मदद करना चाहता था, जो इस दुनिया में मेरा सच्चा कर्तव्य है। उसने अपने पत्र में यहाँ तक लिखा था: "मुझे बीस या तीस ग्रंथ भेजो और मैं प्रत्येक की बीस या तीस प्रतियाँ लिखूँगा और दूसरों से लिखवाऊँगा।"

उनके पत्र ने मुझे दुनिया के प्रति बहुत आशावान बना दिया। इस विचार के साथ कि मुझे एक साहसी छात्र मिला है जो इतना बुद्धिमान है कि एक प्रतिभाशाली व्यक्ति है और एक सच्चे बेटे से भी अधिक निष्ठा और अधिक लगाव के साथ मेरी सहायता करेगा, मैं अपनी यातनापूर्ण कैद, अकेलेपन, निर्वासन और बुढ़ापे को भूल गया।

पत्र लिखने से पहले उन्होंने परलोक में विश्वास के बारे में दसवें वचन की एक प्रति प्राप्त की थी। ऐसा लग रहा था जैसे यह उनके लिए उन सभी आध्यात्मिक घावों को ठीक करने का उपाय था जो उन्हें उन छह या सात वर्षों के दौरान मिले थे। फिर उन्होंने मुझे पत्र ऐसे लिखा जैसे वे अपनी मृत्यु का सच्चे दिल से इंतजार कर रहे हों।

दृढ़ और उज्ज्वल विश्वास। फिर एक या दो महीने बाद जब मैं अब्दुर्रहमान के साथ फिर से एक सुखी सांसारिक जीवन बिताने के बारे में सोच रहा था, तो अफ़सोस, मुझे उसकी मृत्यु की खबर मिली। मैं इतना हिल गया था कि पाँच साल बाद भी मैं उसके प्रभाव में हूँ। इसने मुझे दु:ख, शोक और अलगाव की भावना से पीड़ित किया जो उस समय की यातनापूर्ण कैद, अकेलेपन, निर्वासन, बुढ़ापे और बीमारी से कहीं ज़्यादा था। मेरी निजी दुनिया का आधा हिस्सा मेरी माँ की मृत्यु के साथ ही मर गया था, और अब अब्दुर्रहमान की मृत्यु के साथ ही बाकी आधा भी मर गया। दुनिया से मेरा नाता अब पूरी तरह से टूट चुका था। क्योंकि अगर वह जीवित होता, तो वह मेरे कर्तव्यों में एक शक्तिशाली मदद हो सकता था जो परलोक की ओर देखता था, और मेरे बाद मेरी जगह पूरी तरह से भरने वाला एक योग्य उत्तराधिकारी और सबसे अधिक त्याग करने वाला दोस्त और सांत्वना होता। वह मेरा सबसे चतुर छात्र और साथी होता, और रिसाले-ए-नूर का सबसे भरोसेमंद रक्षक और मालिक होता।

हाँ, मानवता के सम्बन्ध में, मेरे जैसे लोगों के लिए इस तरह की क्षति अत्यन्त व्यथाजनक और पीड़ादायक है। यह सही है कि मैं बाह्य रूप से इसे सहने का प्रयत्न कर रहा था, किन्तु मेरी आत्मा में भयंकर तूफान उठ रहा था। यदि समय-समय पर कुरान की रोशनी से मिलने वाली सांत्वना मुझे सांत्वना न देती, तो मैं इसे सहन न कर पाता। उस समय मैं बरला के पहाड़ों और घाटियों में अकेला भटकता रहता था। अपने दुखों के बीच एकान्त स्थानों पर बैठकर, अब्दुर्रहमान जैसे अपने वफ़ादार शिष्यों के साथ बिताए गए अपने सुखी जीवन के चित्र सिनेमा की तरह मेरी कल्पना में घूमते थे; चूँकि वृद्धावस्था और निर्वासन के कारण मैं शीघ्र ही प्रभावित हो गया था, इसलिए उन्होंने मेरा प्रतिरोध तोड़ दिया। अचानक आयत का पवित्र अर्थ मेरे मन में आया,

> सब कुछ नष्ट हो जाएगा सिवाय उसके चेहरे के; उसका आदेश है, और
> तुम उसी की ओर लौटकर जाओगे (28:88)

मेरे सामने प्रकट हुआ। इसने मुझे यह घोषणा करने के लिए प्रेरित किया: "हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं!
हे सनातन, केवल आप ही सनातन हैं!", और सचमुच मुझे सांत्वना दी।

फिर, इस श्लोक के अर्थ से प्रेरित होकर, जैसा कि ग्रंथ में वर्णित है ,
पैगंबर के आचरण का राजमार्ग (UWBP), मैंने खुद को उस एकाकी घाटी और दुखद स्थिति में, तीन विशाल लाशों के सिर पर देखा:

एक दृश्य था खुद को पचास मृतकों की कब्र पर एक कब्र के पत्थर के रूप में देखना
मेरे पचास-पचास साल के बेटे जो मेरे जीवन के दौरान दफन हो गए थे।

दूसरी लाश मेरे उन सभी साथियों की विशाल लाश थी जो आदम (यूडब्ल्यूपी) के समय से मर चुके थे और अतीत की कब्र में दफनाए गए थे। मैंने खुद को उस लाश के सिर पर एक छोटी सी चींटी जैसी जीवित प्राणी के रूप में देखा, जो इस सदी के चेहरे पर भटक रही थी, जो इसकी कब्र के पत्थर की तरह थी।

तीसरी लाश बड़ी दुनिया थी जो इंसानों और

जो भ्रमणशील संसार प्रतिवर्ष मरते हैं, वे भी - उपर्युक्त श्लोक के अनुसार - मर जायेंगे; यह मेरी कल्पना के सामने साकार हो गया था।

फिर कविता,

> फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, उसी पर मैं भरोसा करता हूँ, वह सिंहासन का पालनहार है।"
> सर्वोच्च!”(9:129)

अब्दुर्रहमान की मृत्यु पर मेरे दुःख से उत्पन्न उस विस्मयकारी दर्शन ने अपनी सच्ची सांत्वना और अमिट रोशनी से मुझे आलोकित किया; यह अपने सांकेतिक अर्थ के साथ मेरी सहायता के लिए आया, जिसमें कहा गया है: चूंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर मौजूद है, वह हर चीज का स्थान लेता है।
चूँकि वे शाश्वत हैं, इसलिए वे निश्चित रूप से पर्याप्त हैं। उनकी कृपा का एक ही प्रकटीकरण पूरे संसार का स्थान ले लेता है। उनके प्रकाश का एक प्रकटीकरण ऊपर वर्णित तीन विशाल शवों में जीवन भर देता है, यह दर्शाता है कि वे शव नहीं हैं, बल्कि अपने कर्तव्यों को पूरा करके दूसरे लोकों में चले गए हैं। इस रहस्य को तीसरे फ्लैश में समझाया गया है, इसलिए उपरोक्त के साथ ही, यहाँ मैं केवल इतना ही कहूँगा कि वाक्यांश के दो दोहराव: "हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं! हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं!", जो "उसके चेहरे को छोड़कर सब कुछ नष्ट हो जाएगा [कविता के अंत तक]" (28:88) का अर्थ दर्शाता है, ने मुझे उस परेशान, उदास स्थिति से बचाया। यह इस तरह था:

जब मैंने पहली बार कहा, "हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं!", तो इसने मुझे दुनिया के और इस दुनिया के दोस्तों के जाने से उत्पन्न अंतहीन आध्यात्मिक घावों पर एक शल्य चिकित्सा के रूप में ठीक करना शुरू कर दिया, जिनसे मैं जुड़ा हुआ था, और मुझे बांधने वाले संबंधों के टूटने से।

दूसरी बार, "हे शाश्वत, केवल आप ही शाश्वत हैं!" यह वाक्य उन सभी असंख्य घावों के लिए मरहम और मारक दोनों था। कहने का तात्पर्य यह है: "आप शाश्वत हैं। यदि बाकी चले जाते हैं, तो उन्हें जाने दें; आप मेरे लिए पर्याप्त हैं। चूँकि आप हमेशा के लिए रहते हैं, इसलिए आपकी दया का एक भी प्रकटीकरण सभी क्षणभंगुर चीजों के स्थान पर पर्याप्त है।

चूँकि आप मौजूद हैं, इसलिए हर चीज़ उस व्यक्ति के लिए मौजूद है जो आपके अस्तित्व के साथ विश्वास के ज़रिए स्थापित संबंध को जानता है और इस्लाम उस संबंध के अनुसार कार्य करता है। क्षणभंगुरता और गिरावट, मृत्यु और अस्तित्वहीनता एक पर्दा है, एक नवीनीकरण है; जैसे अलग-अलग क्षेत्रों से यात्रा करना।" यह सोचते हुए, मेरी दर्दनाक, उदास, दुखद, अंधकारमय, भयानक, अलगाव से भरी मनःस्थिति एक खुश, हर्षित, सुखद, चमकदार, प्यारी, परिचित स्थिति में बदल गई। मेरी जीभ और दिल, वास्तव में स्वभाव की जीभ के माध्यम से मेरे अस्तित्व के सभी कण, चिल्ला उठे: "सभी प्रशंसा भगवान की है!"

उस दया की अभिव्यक्ति का एक हजारवां हिस्सा यह है: मैं उस दुःख भरी घाटी और मन की उदासी की स्थिति से बारला लौटा, जहाँ मैंने देखा कि कुलेओनलू मुस्तफा नाम का एक युवक मुझसे कुछ पूछने आया था

पाँचों समय की नमाज़ों और वज़ू के बारे में सवाल पूछे। हालाँकि मैं उस समय आगंतुकों को स्वीकार नहीं करता था, लेकिन मेरी आत्मा ने उसकी आत्मा की ईमानदारी और भविष्य में रिसाले-ए-नूर के लिए उसके द्वारा की जाने वाली मूल्यवान सेवाओं को दूर से ही समझ लिया था,11 और मैंने उसे ठुकराया नहीं, बल्कि उसे स्वीकार कर लिया।12 बाद में यह स्पष्ट हो गया कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अब्दुर्रहमान के स्थान पर एक नमूने के रूप में मुस्तफ़ा को मेरे पास भेजा था, जो एक योग्य उत्तराधिकारी के रूप में रिसाले-ए-नूर के काम में एक सच्चे उत्तराधिकारी का कर्तव्य पूरी तरह से निभाएगा, मानो कह रहा हो: "मैंने तुमसे एक अब्दुर्रहमान लिया, लेकिन बदले में मैं तुम्हें मुस्तफ़ा जैसे तीस और लोग दूँगा, जो तुम देख रहे हो, जो शिष्य, भतीजे, आध्यात्मिक पुत्र, भाई और धर्म के लिए इस कर्तव्य में आत्म-बलिदान करने वाले साथी होंगे।"

हाँ, ईश्वर की स्तुति हो, उसने मुझे तीस अब्दुर्रहमान दिए। इसलिए मैंने खुद से कहा: "हे रोते हुए दिल! चूँकि तुमने यह नमूना देखा है और उसके ज़रिए उसने तुम्हारे सबसे गंभीर आध्यात्मिक घावों को ठीक किया है, इसलिए निश्चिंत रहो कि वह बाकी सभी घावों को भी ठीक कर देगा।"

मेरे बुज़ुर्ग भाई-बहन जिन्होंने मेरी तरह बुढ़ापे में अपने किसी बच्चे या रिश्तेदार को खो दिया है, जिन्हें बुढ़ापे के बोझ के साथ-साथ जुदाई का भी दर्द सहना पड़ रहा है! मेरी स्थिति से आप समझ गए होंगे कि भले ही यह आपकी स्थिति से ज़्यादा गंभीर थी, लेकिन कुरान की एक आयत से इसका इलाज और उपचार हो गया। ऐसा होने पर, उस पवित्र दवाखाने में आपकी सभी परेशानियों को ठीक करने के उपाय मौजूद हैं। अगर आप ईमान के ज़रिए उसका सहारा लें और उन उपायों का इस्तेमाल करें

---

[11] मुस्तफा के छोटे भाई कुकुक अली ने अपनी बेहतरीन कलम से रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों की सात सौ से ज़्यादा प्रतियाँ लिखीं और खुद अब्दुर्रहमान बन गए। उन्होंने कई दूसरे अब्दुर्रहमानों को भी प्रशिक्षित किया।

[12] उन्होंने सचमुच दिखा दिया कि वे न केवल स्वीकार किये जाने के योग्य हैं, बल्कि भविष्य के भी योग्य हैं।*

* एक घटना जो उस्ताद की भविष्यवाणी की पुष्टि करती है कि रिसाले-ए-नूर का पहला छात्र मुस्तफा भविष्य के योग्य था:

कुर्बानी के त्यौहार ईद-उल-अज़हा की पूर्व संध्या पर उस्ताद ने बाहर जाकर हवा लेने का इरादा किया। जब उन्होंने मुझे घोड़ा लाने के लिए भेजा, तो मैंने उनसे कहा: "आप नीचे मत जाइए। मैं पीछे से दरवाज़ा बंद करके लकड़ी के गोदाम से बाहर चला जाऊँगा।" उस्ताद ने कहा: "नहीं। आप दरवाज़े से बाहर जाइए।" और वे नीचे चले गए। मेरे बाहर जाने के बाद उन्होंने मेरे पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया। मैं बाहर चला गया और वे ऊपर लौट आए। फिर वे सो गए। थोड़ी देर बाद कुलेओनलू मुस्तफ़ा हाजी उस्मान के साथ आए। उस्ताद स्वीकार नहीं कर रहे थे

किसी को भी, और वह किसी को भी स्वीकार नहीं करने वाला था। वह कभी भी दो लोगों को एक साथ नहीं लेता, खासकर उस समय, और उन्हें दूर कर देता। फिर भी, जब हमारे भाई कुलेओनलू
मुस्तफा, जिसकी हम यहाँ बात कर रहे हैं, हाजी उस्मान के साथ आया था, ऐसा लगा जैसे दरवाज़े ने स्वभाव की भाषा में उससे कहा: “उस्ताद तुम्हें स्वीकार नहीं करेंगे, लेकिन मैं तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दूँगा।” और हालाँकि वह अंदर से बंद था, लेकिन मुस्तफा के लिए दरवाज़ा अपने आप खुल गया। यानी, जैसे भविष्य ने उस्ताद द्वारा उसके बारे में कही गई बात को सत्यापित किया: “मुस्तफा भविष्य के योग्य है,” वैसे ही दरवाज़े ने भी इसकी गवाही दी।

हस्ताक्षर: हुसेरेव हाँ, हुसेरेव

ने जो लिखा है वह सही है और मैं इसकी पुष्टि करता हूँ। दरवाज़े ने दोनों को इस धन्य का स्वागत किया
मैंने अपनी जगह मुस्तफा को रखा और उसे स्वीकार कर लिया। नर्सी ने कहा

उपासना के माध्यम से आपके बुढ़ापे का भारी बोझ और आपके दुख काफी हद तक कम हो जायेंगे।

इस लंबे लेख को लिखने का उद्देश्य अब्दुर्रहमान के लिए और अधिक प्रार्थनाएँ करना था, न कि आपको थका देना। साथ ही, मेरे सबसे बुरे घाव को अत्यंत दुखद और अप्रिय तरीके से दिखाने का मेरा उद्देश्य, जो आपको अनावश्यक रूप से परेशान कर सकता है और आपको निराश कर सकता है, यह प्रदर्शित करना है कि सर्व-विवेकपूर्ण कुरान का पवित्र मारक कितना अद्भुत उपाय और शानदार प्रकाश है।

तेरहवीं आशा13

इस आशा में मैं अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण दृश्य का वर्णन करूंगा; यह अवश्य ही होगा
यह लेख थोड़ा लम्बा है, इसलिए मुझे उम्मीद है कि आप इससे ऊबेंगे नहीं या नाराज नहीं होंगे।

महायुद्ध के दौरान रूस में कैद से बचाए जाने के बाद, दारुल-हिकमत में धर्म की सेवा करने के कारण मैं दो या तीन साल तक इस्तांबुल में रहा। फिर, सर्वज्ञ कुरान के मार्गदर्शन और ग़ौथ अल-आज़म के आध्यात्मिक प्रभाव और बुढ़ापे की जागृति के कारण, मुझे इस्तांबुल के सभ्य जीवन से थकान और इसके चमक-दमक वाले सामाजिक जीवन से घृणा होने लगी। अपनी जन्मभूमि के लिए तरसने की भावना मुझे वहाँ ले गई, मैं इस विचार के साथ वान गया कि चूँकि मुझे मरना ही है, इसलिए मैं अपने देश में ही मरूँगा।

सबसे पहले, मैं वैन में अपने मदरसे, होरहोर को देखने गया। रूसी कब्जे के दौरान अर्मेनियाई लोगों ने इसे, बाकी इमारतों की तरह, ध्वस्त कर दिया था। यह वैन के प्रसिद्ध गढ़ के ठीक नीचे और बगल में था, जो एक पहाड़ की तरह एक विशाल मोनोलिथ है। मेरे सच्चे दोस्त, भाई और मदरसे के करीबी छात्र मेरी आँखों के सामने समाहित हो गए। उन समर्पित दोस्तों में से कुछ वास्तविक शहीद बन गए थे, जबकि अन्य उस आपदा के कारण मर गए थे और वास्तव में शहीद हो गए थे।

मैं खुद को रोने से रोक नहीं पाया। मैं गढ़ के शिखर पर चढ़ गया, जो मेदरेस के ऊपर था, दो मीनारों की ऊँचाई पर, और मैं बैठ गया। मैं अपनी कल्पना में सात या आठ साल पीछे चला गया। एक शक्तिशाली कल्पना के साथ, मैं अपने मन में उस समय के चारों ओर घूमता रहा। मेरा ध्यान भटकाने और मुझे वापस खींचने वाला कोई नहीं था। क्योंकि मैं अकेला था। जैसे-जैसे उन सात या आठ सालों के बारे में मेरा नज़रिया विस्तृत होता गया, मैंने एक सदी भर के लिए पर्याप्त देखा। मैंने देखा कि गढ़ के तल पर बसा शहर पूरी तरह से जलकर नष्ट हो गया था। ऐसा लग रहा था जैसे मैंने इसे पहले जब देखा था, तब से दो सौ साल बीत चुके थे, यह उन्हें बहुत दुखद लग रहा था।

अधिकांश घरों के निवासी मेरे मित्र थे और

---

[१३] यह एक सूक्ष्म 'संयोग' है कि मेदरेस* की घटना, जिसका वर्णन इस तेरहवीं आशा में किया गया है, तेरह वर्ष पहले घटित हुई थी। (1921 - अनुवाद)

* मेदरेस: वह स्कूल जहाँ धार्मिक विज्ञान पढ़ाया जाता था। यह भी देखें, नोट 21, पृष्ठ 325. (ट्र.)

परिचित। उनमें से अधिकांश पलायन में मर गए थे, भगवान उन पर दया करे, या एक दयनीय निर्वासन में चले गए थे। केवल अर्मेनियाई क्वार्टर बचा था, वैन के सभी मुस्लिम घर जमींदोज हो गए थे। मेरा दिल टूट गया था। मैं इतना आहत था, अगर मेरी एक हजार आँखें होतीं तो वे सब एक साथ रोते। मैं निर्वासन से अपने वतन लौट आया था; मैंने सोचा था कि मैं निर्वासन से बच गया हूँ। लेकिन अफसोस! सबसे दुखद निर्वासन मैंने अपने वतन में अनुभव किया। मैंने देखा कि मेरे सैकड़ों छात्र और दोस्त, जिनसे मैं बहुत जुड़ा हुआ था, जैसे कि बारहवीं आशा में अब्दुर्रहमान, कब्र में चले गए थे और उनके घर खंडहर बन गए थे।

कुछ पंक्तियाँ ऐसी थीं जो मेरे दिमाग में बहुत दिनों से थीं, लेकिन मैं उनका सही मतलब नहीं समझ पाया था। अब उस दुखद दृश्य से पहले मुझे उनका पूरा मतलब समझ में आ गया था।
ये पंक्तियाँ थीं: "अगर दोस्तों से जुदाई न होती, तो मौत हमारी आत्माओं को पकड़ने का कोई रास्ता नहीं खोज पाती।"14 यानी, इंसान को सबसे ज़्यादा मार डालने वाली चीज़ है उनसे जुदाई जिन्हें वह प्यार करता है। हाँ, उस स्थिति ने मुझे जितना दुख और पीड़ा पहुँचाई, उतनी किसी और चीज़ ने नहीं पहुँचाई। अगर कुरान और ईमान से मदद न मिलती, तो मेरा दुख और पीड़ा मेरी आत्मा को उड़ा ले जाती।

प्राचीन काल से ही कवि अपनी कविताओं में उन स्थानों के समय के साथ नष्ट हो जाने पर विलाप करते रहे हैं, जहाँ वे अपने प्रियजनों के साथ रहे हैं। मैंने इसे अपनी आँखों से बहुत ही दर्दनाक तरीके से देखा था। दो सौ साल बाद किसी प्रिय मित्र के घर से गुज़रने के दुख में मेरा दिल और आत्मा मेरी आँखों के साथ रोने लगे। फिर एक-एक करके जीवन के वे सुखद दृश्य, जो मैंने अपने मूल्यवान विद्यार्थियों के साथ अध्ययन करते हुए लगभग बीस साल गुज़ारे थे, जब वे स्थान जो अब खंडहर हो चुके थे, समृद्ध और खुशहाल थे, सिनेमा के चित्रों की तरह मेरे सामने जीवंत हो उठे, फिर फीके पड़ गए और गायब हो गए। यह मेरी कल्पना की आँखों के सामने कुछ समय तक चलता रहा।

फिर मुझे संसारियों की दशा देखकर आश्चर्य हुआ कि वे अपने आपको कैसे धोखा देते हैं? क्योंकि वहाँ की स्थिति से स्पष्ट था कि यह संसार क्षणभंगुर है और मनुष्य इसमें अतिथि है। मैंने अपनी आँखों से देखा कि वास्तविकता के लोगों के बार-बार दोहराए जाने वाले शब्द कितने सत्य हैं: "संसार क्रूर है, विश्वासघाती है, बुरा है; इससे धोखा मत खाओ!" मैंने यह भी देखा कि जिस तरह मनुष्य अपने शरीर और घर से जुड़ा होता है, उसी तरह वह अपने शहर, अपने देश और दुनिया से भी जुड़ा होता है। क्योंकि अपने शरीर के प्रति बुढ़ापे की दयनीयता पर अपनी दो आँखों से रोते हुए, मैं न केवल अपने गुरु के बुढ़ापे पर, बल्कि उसकी मृत्यु पर भी दस आँखों से रोना चाहता था। और मुझे अपनी सुंदर मातृभूमि की अर्ध-मृत्यु पर सौ आँखों से रोने की आवश्यकता महसूस हुई।

---

[14] ये पंक्तियाँ मूल पाठ में अरबी भाषा में हैं, और मुतनबी द्वारा लिखी गयी हैं। (अनुवाद)

हदीस में कहा गया है कि हर सुबह एक फ़रिश्ता पुकारता है: “तुम मरने के लिए पैदा हुए हो, और इमारतें बनाओ ताकि वे नष्ट हो जाएँ।”15 मैं यह सच्चाई अपने कानों से नहीं, बल्कि अपनी आँखों से सुन रहा था।

दस साल बाद भी जब मैं उस स्थिति के बारे में सोचता हूँ तो रोता हूँ, क्योंकि उस समय मैं भी रोया था। हाँ, हज़ारों साल पुराने प्राचीन गढ़ के तलहटी में बने घरों के खंडहर, और आठ साल में आठ सौ साल बूढ़ा होता शहर, और मेरे एक समय के समृद्ध मेदरेस की मृत्यु जो दोस्तों के जमावड़े का स्थान था, ये सब उस समय के सभी मेदरेस की अमूर्त लाश की विशालता को दर्शाते हैं, जो अब मर चुके थे; वैन के गढ़ का विशाल मोनोलिथ उन सभी के लिए कब्र का पत्थर बन गया था। ऐसा लग रहा था जैसे मेरे छात्र जो आठ साल पहले मेदरेस में मेरे साथ थे, वे मेरे साथ अपनी कब्रों में रो रहे थे। वास्तव में, शहर की खंडहर दीवारें और उसके बिखरे हुए पत्थर मेरे साथ रो रहे थे। मैंने उन्हें रोते हुए देखा।

तब मुझे समझ में आया कि मैं अपनी जन्मभूमि में इस निर्वासन को सहन नहीं कर सकता। मैंने सोचा कि या तो मुझे उनके साथ कब्र में जाना होगा, या पहाड़ों में एक गुफा में जाकर अपनी मृत्यु का इंतजार करना होगा। मैंने खुद से कहा: "ये असहनीय, तीखे अलगाव जो धैर्य और प्रतिरोध को नष्ट कर देते हैं, निश्चित रूप से मृत्यु को जीवन से बेहतर बनाते हैं।

ऐसे जीवन की पीड़ा असहनीय है।”

फिर मैंने उन छह पहलुओं पर नज़र डाली और पाया कि वे सभी काले थे। मेरे गहरे दुख से उपजी लापरवाही ने मुझे दुनिया को भयावह, खाली, उजाड़ और मेरे सिर पर गिरने के लिए तैयार दिखाया। मेरी आत्मा असंख्य शत्रुतापूर्ण विपत्तियों के सामने एक सहारे की तलाश कर रही थी। इसकी अंतहीन इच्छाएँ जो अनंत काल तक फैली हुई थीं, उन्हें संतुष्ट करने के लिए कुछ खोज रही थीं। उन अंतहीन अलगाव और मृत्यु, उस अंतहीन तबाही से उत्पन्न होने वाले दुख के सामने सांत्वना की प्रतीक्षा करते हुए, अचानक सर्वज्ञ कुरान की आयतों की सच्चाई प्रकट हुई:

> जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, वह परमेश्वर की स्तुति और महिमा का बखान करे, क्योंकि वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है। आकाशों और धरती का राज्य उसी का है। वही जीवन और मृत्यु देता है और हर चीज़ पर उसकी सामर्थ्य है। (57:1-2)

इसने मुझे उस दयनीय, भयानक, दुखद, विरह-रंजित कल्पना से बचाया और मेरी आँखें खोल दीं। मैंने देखा कि फलों के पेड़ों के शीर्ष पर लगे फल मेरी ओर देख रहे थे मानो मुस्कुरा रहे हों। "हमें भी ध्यान में रखो," वे कह रहे थे। "केवल खंडहरों को मत देखो।"

श्लोक की सच्चाई ने निम्नलिखित विचार को मन में लाया:

---

[15] अल-'अजलूनी, कशफ अल-खफा', ii, 128, संख्या: 2041; अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, वी, 483, संख्या: 8053; अल-हयथामी, मजमा अल-ज़वायद, आई, 94।

"एक आदमी के हाथ से शहर के रूप में लिखा गया एक कृत्रिम पत्र, जो वैन के मैदान के पृष्ठ पर एक अतिथि है, रूसी आक्रमण नामक एक विनाशकारी बाढ़ द्वारा मिटा दिया जाना आपको इस हद तक दुखी क्यों करता है? पूर्व-अनन्त लेखक, हर चीज के सच्चे मालिक और पालनहार पर विचार करें, क्योंकि इस पृष्ठ पर उनके संदेश शानदार ढंग से लिखे गए हैं, जिस तरह से आप देखते थे। उन उजाड़ खंडहरों पर आपका रोना उनके सच्चे मालिक को भूलने की गलती से उत्पन्न होता है, यह नहीं सोचना कि मनुष्य मेहमान हैं और उन्हें मालिक मानते हैं।"

मेरी भूल से, उस भयावह दृश्य से, वास्तविकता का द्वार खुल गया और मेरी आत्मा वास्तविकता को पूरी तरह से स्वीकार करने के लिए तैयार हो गई। जैसे लोहे को आग में डुबोया जाता है ताकि वह नरम हो जाए और उससे लाभ उठाया जा सके, वह दुखद दृश्य और भयानक स्थिति आग थी जिसने मेरी आत्मा को नरम कर दिया। उपरोक्त आयतों की वास्तविकता के माध्यम से, चमत्कारिक व्याख्या के कुरान ने मेरी आत्मा को विश्वास की सच्चाईयों की चमक दिखाई, जिससे वह इसे स्वीकार करने के लिए प्रेरित हुई।

हाँ, ईश्वर का धन्यवाद हो, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के बीसवें अक्षर जैसे भागों में निर्णायक रूप से सिद्ध किया गया है, ईश्वर में विश्वास की चमक के माध्यम से, आयतों की सच्चाई आत्मा और हृदय के लिए शक्ति का स्रोत बन जाती है जो प्रत्येक व्यक्ति के विश्वास की दृढ़ता के अनुपात में प्रकट होती है। यह इतना शक्तिशाली था कि इसने मुझे उन विपत्तियों का सामना करने की शक्ति प्रदान की जो मैंने देखी स्थिति से सौ गुना अधिक भयानक थीं। इसने यह याद दिलाया: "हर चीज़ इस देश के सच्चे मालिक, आपके निर्माता के आदेश के अधीन है। वह सभी चीज़ों की बागडोर संभालता है।

उसके साथ तुम्हारा सम्बन्ध पर्याप्त होना चाहिए।”

अपने रचयिता को पहचान कर उस पर भरोसा करने से, जो चीज़ें मुझे दुश्मनी लगती थीं, वे सब दुश्मनी छोड़ कर चली गईं और जो दुखदायी चीज़ें मुझे रुलाती थीं, वे मुझे खुश करने लगीं। जैसा कि हमने रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर कुछ प्रमाणों के साथ दिखाया है, परलोक में ईमान से आने वाली रोशनी के ज़रिए, कि पहचान और भरोसा मेरी अंतहीन इच्छाओं के सामने ऐसी मदद करता है कि यह न सिर्फ़ तुच्छ, अस्थायी, संक्षिप्त सांसारिक दोस्ती के प्रति मेरी आसक्ति और चाहत के लिए बल्कि स्थायित्व की दुनिया में, अनंत काल तक शाश्वत खुशी के लिए मेरी असंख्य दूरगामी इच्छाओं के लिए पर्याप्त है। क्योंकि अपनी दया के एक प्रकटीकरण के ज़रिए, सर्व-दयालु और दयालु हर बसंत में उस मौसम की मेज़ पर अपने एक या दो घंटे के मेहमानों को खुश करने के लिए असंख्य रमणीय, कलात्मक उपहार रखता है। फिर उन्हें ये सब प्रदान करने के बाद, जो एक प्रकार का नाश्ता या क्षुधावर्धक है, वह अपने बन्दों के लिए असंख्य प्रकार की नेमतें तैयार करता है, और अपने शाश्वत निवासों में से उनसे आठ स्थाई जन्नतें अनंत काल तक भर देता है। जो व्यक्ति ईमान और दया के साथ ऐसे दयालु और दयावान की दया पर भरोसा करता है,

जानता है कि उसके सम्बन्ध को अवश्य ही सहायता का ऐसा स्रोत मिलता है कि उसकी अल्पतम मात्रा भी अनन्त काल तक पहुंचने वाली असंख्य आशाओं को प्रदान करती है, तथा उन्हें जारी रखती है।

इसके अलावा, आयतों की वास्तविकता के माध्यम से, विश्वास की चमक से निकलने वाला प्रकाश इस तरह से प्रकट हुआ कि इसने उन छह अंधेरे पहलुओं को दिन के उजाले की तरह रोशन कर दिया। इसने मेरे छात्रों और मेरे मदरसे और शहर में दोस्तों के लिए मेरे दुख को इस याद के साथ रोशन कर दिया: "जिस दुनिया में तुम्हारे दोस्त चले गए हैं वह अंधेरी नहीं है। वे बस कहीं और चले गए हैं; तुम फिर से मिलोगे।" इसने मेरे आंसुओं को पूरी तरह से रोक दिया, और मुझे यह समझा दिया कि मैं इस दुनिया में उनके जैसे अन्य लोगों को पाऊंगा जो उनकी जगह लेंगे।

हाँ, ईश्वर की स्तुति हो, उसने मृत वैन मेदरेस को इस्पार्टा के मेदरेस के साथ जीवित किया, और उसने मेरे दोस्तों को यहाँ के अधिक संख्या में और मूल्यवान छात्रों और दोस्तों के साथ जीवन में वापस लाया। इसने यह भी ज्ञात किया कि दुनिया खाली और अर्थहीन नहीं है और इसे एक उजड़े हुए देश के रूप में सोचना गलत था: अपनी बुद्धि के अनुसार, सच्चा मालिक मनुष्य द्वारा बनाए गए कृत्रिम दृश्यों को बदलता है और अपने संदेशों को नवीनीकृत करता है। जितने अधिक पेड़ों के फल तोड़े जाते हैं, उतने ही अधिक अन्य उनके स्थान पर उगते हैं; इसी तरह मानव जाति के बीच मृत्यु और अलगाव नवीनीकरण और परिवर्तन का निर्माण करते हैं। विश्वास के संबंध में, वे नवीनीकरण हैं जो दोस्तों की कमी से उत्पन्न होने वाले गंभीर दुख को नहीं, बल्कि किसी अन्य, बेहतर जगह पर फिर से मिलने की उम्मीद में बिछड़ने से पैदा होने वाले मीठे दुख को उत्पन्न करते हैं।

इन आयतों ने ब्रह्मांड में उन प्राणियों के चेहरे को भी रोशन कर दिया जो पहले की भयावह स्थिति में अंधकारमय दिखाई दे रहे थे। मैं इसके लिए धन्यवाद देना चाहता था, और मेरे दिमाग में ये अरबी पंक्तियाँ आईं, जो उस वास्तविकता का सटीक वर्णन करती हैं। मैंने कहा:

"विश्वास के प्रकाश के लिए परमेश्वर की स्तुति हो, जो प्राणियों के शत्रुतापूर्ण अजनबी, मरणासन्न और असभ्य, रोते हुए अनाथ होने के भ्रम को दूर करता है, और उन्हें प्रेममय भाई, जीवित और परिचित दिखाता है, जो परमेश्वर के नामों का उल्लेख करने और उसकी महिमा करने में प्रसन्नतापूर्वक लगे रहते हैं।"

अर्थात्, मेरी दुःखद मनःस्थिति से उत्पन्न असावधानी के कारण, ब्रह्मांड के कुछ प्राणी मेरी उपेक्षापूर्ण आत्मा को शत्रुतापूर्ण और विचित्र प्रतीत हुए,16 अन्य लोग भयानक लाशों के समान, तथा कुछ अन्य लोग अपने अकेलेपन में रोते हुए अनाथों के समान। विश्वास के प्रकाश में मैंने देखा कि वे सभी मित्र और भाई थे। जहाँ तक भयानक लाशों का प्रश्न है, उनमें से कुछ जीवित और मित्रवत थे, जबकि अन्य अपने कर्तव्यों से मुक्त हो चुके थे। विश्वास के प्रकाश में अनाथों के विलाप को बड़बड़ाहट के समान देखना

[16] जैसे भूकंप, तूफान, आंधी, प्लेग और आग।

ईश्वर की याद और महिमा के लिए, मैंने महिमावान सृष्टिकर्ता को अनंत प्रशंसा और धन्यवाद दिया, क्योंकि उसने मुझे विश्वास दिया, जो इन असंख्य उपहारों का स्रोत है। और यह देखते हुए कि यह मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने व्यक्तिगत संसार में सभी प्राणियों के बारे में सोचूं, जो कि संसार जितना ही विशाल है, ईश्वर की स्तुति और महिमा में लगे हुए हैं, और उनका उपयोग करने के इरादे से, इसका मतलब है कि मैं उन सभी प्राणियों के साथ "विश्वास के प्रकाश के लिए ईश्वर की सभी प्रशंसा और धन्यवाद" कहता हूं, जो इसे स्वभाव की जीभ के माध्यम से अकेले और समग्र रूप से बोलते हैं।

इसके अलावा, जीवन के सुख, जो मेरी लापरवाह और भयानक मनःस्थिति के कारण शून्य हो गए थे, और मेरी आशाएँ, जो पूरी तरह से मुरझा गई थीं, और मेरे निजी आनंद और उपहार, जो संकीर्ण सीमाओं में सीमित थे, वास्तव में नष्ट हो गए थे, अचानक विश्वास के प्रकाश के माध्यम से मेरे दिल के चारों ओर का वह संकीर्ण क्षेत्र इतना विस्तृत हो गया कि उसमें पूरा ब्रह्मांड समा गया - जैसा कि रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में स्पष्ट रूप से साबित हुआ है - और होरहोर मेदरेस के बगीचे में मुरझाने वाले और अपना स्वाद खो देने वाले उपहारों के स्थान पर इसने इस दुनिया और परलोक के क्षेत्रों को उपहारों की एक दयालु मेज बना दिया। इसने दिखाया कि न केवल दस या इतने ही मानव अंग जैसे कि आँख, कान और हृदय, बल्कि सौ अंग भी एक बहुत लंबी भुजा थे जिन्हें विश्वासी अपनी-अपनी डिग्री के अनुसार, परम दयालु की उन दो मेजों तक बढ़ा सकते थे, ताकि हर तरफ से उपहारों को इकट्ठा कर सकें। उस समय, मैंने इस महान सत्य को व्यक्त करने के लिए, तथा उन अनंत उपहारों के लिए धन्यवाद स्वरूप, निम्नलिखित शब्द कहे:

"मैं अपने सृष्टिकर्ता को अपने अस्तित्व के सभी कणों के साथ, विश्वास के प्रकाश और उदारता के लिए प्रशंसा और धन्यवाद देता हूं, क्योंकि यह मुझे दिखाता है कि यह दुनिया और परलोक उदारता और दया से भरपूर हैं, और मुझे और सभी सच्चे विश्वासियों को अपनी सभी इंद्रियों के हाथों से उन दो विशाल मेजों से लाभ उठाने की अनुमति देता है, जो विश्वास और इस्लाम के प्रकाश के माध्यम से विकसित और प्रकट होते हैं।"

चूँकि इस संसार में विश्वास इतना अधिक प्रभावशाली है, तो निःसंदेह शाश्वत क्षेत्र में भी इसके ऐसे फल और तेज होंगे कि उन्हें इस संसार में मन से न तो समझा जा सकता है और न ही वर्णित किया जा सकता है।

हे वृद्धजनों, तुम भी मेरी तरह बुढ़ापे के कारण अनेक मित्रों से वियोग का दुःख भोगते हो! तुममें से जो सबसे बड़ा है, वह मुझसे उम्र में चाहे जितना बड़ा हो, मेरा अनुमान है कि अर्थ की दृष्टि से मैं उससे बड़ा हूँ। क्योंकि स्वभाव से ही मैं अपने साथियों के प्रति अत्यधिक दया और करुणा महसूस करता हूँ, इसलिए मैंने अपने दुखों के साथ-साथ अपने हजारों भाइयों के दुखों को भी भोगा है और ऐसा महसूस करता हूँ, जैसे मैं सैकड़ों वर्षों से जी रहा हूँ। तुमने वियोग का दुख चाहे जितना भी भोगा हो, तुमने उसे उतना नहीं भोगा जितना मैंने भोगा है। क्योंकि मेरा कोई बेटा नहीं है, जिसके बारे में मैं केवल सोचूँ

मैं हज़ारों मुस्लिम बेटों और उनके दुखों और यहां तक कि मासूम जानवरों के प्रति भी दर्द और सहानुभूति महसूस करता हूं, क्योंकि मेरे स्वभाव में अत्यधिक दया और करुणा है। मेरा अपना कोई घर नहीं है कि मैं सिर्फ़ उसके बारे में सोचूं; मैं इस्लामी जोश के कारण इस देश और यहां तक कि इस्लामी दुनिया से इस तरह बंधा हुआ हूं, जैसे कि वे मेरा घर हों। मैं उन दो महान घरों में अपने साथी मुसलमानों के दर्द से दुखी हूं, और उनसे अलग होने पर दुखी हूं!

इस प्रकार ईमान की रोशनी मेरे लिए तथा बुढ़ापे से उत्पन्न होने वाले मेरे सभी दुखों और वियोग की पीड़ाओं के लिए पर्याप्त थी। इसने मुझे कभी न बुझने वाली आशा, कभी न टूटने वाला ईमान, कभी न बुझने वाली रोशनी, कभी न खत्म होने वाली सांत्वना दी। तो फिर बुढ़ापे के अंधकार, असावधानी, दुखों और पीड़ाओं के सामने ईमान तुम्हारे लिए निश्चित रूप से पर्याप्त है। वास्तव में वह बुढ़ापा जो पूरी तरह से अंधकारमय है, जिसमें प्रकाश और सांत्वना नहीं है, तथा जो सबसे अधिक दुःखदायी और भयानक वियोग है, वह बुढ़ापा और वियोग है जो गुमराह लोगों और भटके हुए लोगों द्वारा भोगा जाता है। आशा, प्रकाश और सांत्वना प्रदान करने वाले ईमान और उसके प्रभावों का अनुभव बुढ़ापे के योग्य और इस्लाम के अनुकूल सचेतन उपासनापूर्ण रवैया अपनाने से संभव है। यह युवाओं की नकल करने, असावधानी में सिर डुबोने और बुढ़ापे को भूल जाने से संभव नहीं है।

हदीस पर गौर करो, जिसका अर्थ है: "तुम्हारे बीच सबसे अच्छे युवा वे हैं जो परिपक्व उम्र के लोगों की तरह हैं, जबकि तुम्हारे बुजुर्गों में सबसे बुरे वे हैं जो युवाओं की तरह हैं।"17 अर्थात्, "सबसे अच्छे युवा वे हैं जो संयम और बुराई से दूर रहने में बुजुर्गों के समान हैं, जबकि सबसे बुरे बुजुर्ग वे हैं जो खुद को व्यभिचार और असावधानी में युवाओं के समान रखते हैं।

मेरे बुज़ुर्ग भाइयो और बहनो! एक हदीस में है कि: "ईश्वरीय दया साठ या सत्तर साल के बुज़ुर्गों द्वारा ईश्वरीय दरबार में की गई प्रार्थनाओं को अनुत्तरित छोड़ने में शर्मिंदा है।"18 चूँकि ईश्वरीय दया आपको इस तरह का सम्मान देती है, इसलिए अपनी इबादत करके इस सम्मान के प्रति सम्मान रखें!

चौदहवीं आशा

चौथी किरण की शुरुआत में, चमकदार छंद "हमारे लिए ईश्वर ही काफी है" (3:173) पर सारांश बताता है कि कैसे 'सांसारिक' द्वारा हर चीज से अलग-थलग कर दिए जाने के कारण, मैं पाँच तरह के निर्वासन से पीड़ित था। संकट से उत्पन्न असावधानी ने मुझे ईश्वर की सांत्वना देने वाली रोशनी की ओर देखने से रोक दिया।

---

[17] 'अली मावर्दी, अदब अल-दुनिया वाल-दीन, 27; अल-ग़ज़ाली, इह्या' 'उलूम अल-दीन, आई, 142; अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, iii, 487; अल-हयथामी, मजमा' अल-ज़वायद, एक्स, 270. अल-'अजलूनी, कशफ अल-खफा', आई, 244; अल-

[18] हयथामी, मजमा अल-ज़वायद, x, 149।

रिसाले-ए-नूर जो मेरी मदद कर सकता था, लेकिन सीधे मेरे दिल और मेरी आत्मा को। मैंने देखा कि मेरे अंदर अमरता की प्रबल इच्छा, अस्तित्व के प्रति तीव्र प्रेम, जीवन के लिए एक महान तड़प, साथ ही एक असीम नपुंसकता और अंतहीन इच्छा शासन कर रही थी। लेकिन एक भयानक क्षणभंगुरता अमरता को बुझा रही थी। इस मनःस्थिति से पीड़ित होकर, मैंने कवि की तरह कहा:

वास्तविकता मेरे शरीर का अंत चाहती थी, यद्यपि मेरा हृदय उसकी अमरता चाहता था;

मैं एक ऐसे असाध्य रोग से पीड़ित था जिसका इलाज लुकमान भी नहीं कर सकता था!

मैंने निराशा में अपना सिर झुका लिया। अचानक यह श्लोक मेरी सहायता के लिए आया, "हमारे लिए ईश्वर ही पर्याप्त है, और वह सभी मामलों का सबसे अच्छा निपटारा करने वाला है" और मुझे इसे ध्यान से पढ़ने के लिए प्रेरित किया। इसलिए मैंने इसे हर दिन पाँच सौ बार पढ़ा। जितना अधिक मैंने इसे पढ़ा, इसके अनेक प्रकाशों में से अर्थ के नौ स्तर मेरे सामने प्रकट हुए, 'ज्ञान की डिग्री पर निश्चितता' के स्तर पर, और यहाँ तक कि 'साक्षी की डिग्री पर निश्चितता' के स्तर पर।

प्रकाशमान पद का प्रथम स्तर “हमारे लिए परमेश्वर ही पर्याप्त है”

मेरे सारभूत अस्तित्व में महिमा और पूर्णता वाले उस एक के नाम की अभिव्यक्ति की छाया के कारण, जो पूर्ण पूर्णता से युक्त है, स्वयं ही है और किसी अन्य कारण से प्रेम के योग्य नहीं है, मुझमें अमरता की एक सहज इच्छा थी, जो मेरी अपनी अमरता की ओर नहीं बल्कि उस पूर्णतया परिपूर्ण के अस्तित्व, पूर्णता और अमरता की ओर निर्देशित थी। लेकिन असावधानी के कारण वह सहज प्रेम अपना मार्ग खो बैठा, छाया से आसक्त हो गया और अमरता के दर्पण से मोहित हो गया। तब यह श्लोक, "हमारे लिए ईश्वर पर्याप्त है, और वह सर्वोत्तम मामलों का निपटानकर्ता है" ने पर्दा उठाया। मैंने देखा, महसूस किया और 'पूर्ण निश्चय' की डिग्री पर अनुभव किया कि मेरी अमरता का आनंद और खुशी बिल्कुल और अधिक परिपूर्ण रूप में पूर्णता के स्थायी एक की अमरता में और मेरे पालनहार और ईश्वर की पुष्टि करने में, और उस पर विश्वास करने और उसके प्रति समर्पण करने में निहित है। इसका प्रमाण चौथी किरण में, "हमारे लिए ईश्वर पर्याप्त है" श्लोक पर आधारित ग्रंथ में, बारह खंडों में समझाया गया है, जो अत्यंत गहन और सूक्ष्म है तथा उत्कृष्ट संवेदनशीलता वाले किसी भी व्यक्ति को आश्चर्य से भर देगा।

प्रकाशमान पद का दूसरा स्तर “हमारे लिए परमेश्वर ही पर्याप्त है”

ऐसे समय में जब मेरे बुढ़ापे, निर्वासन, अकेलेपन और अलगाव में, 'सांसारिक' लोग मेरी असीम जन्मजात नपुंसकता के बावजूद अपने जासूसों और चालों से मुझ पर हमला कर रहे थे, मैंने अपने दिल से कहा: "पूरी सेनाएँ एक अकेले आदमी पर हमला कर रही हैं जिसके हाथ बंधे हुए हैं और जो बीमार और कमज़ोर है। क्या ऐसा कुछ नहीं है जिससे वह मदद माँग सके?" मैंने इस आयत का सहारा लिया "हमारे लिए ईश्वर ही काफी है और वही सबसे अच्छा काम करने वाला है," और इसने मुझे निम्नलिखित बातों की जानकारी दी:

विश्वास के दस्तावेज़ के माध्यम से, आप एक शासक से जुड़ जाते हैं

परम शक्ति जो हर वसंत में पृथ्वी पर चार लाख विभिन्न राष्ट्रों से बनी सभी वनस्पतियों और पशुओं की सेनाओं को उत्तम क्रम में सुसज्जित करती है।

इसके अलावा, वह दयालु के 'अर्क' में बीज और अनाज रखता है, जो मांस, चीनी और अन्य खाद्य अर्क की तरह है जिसे सभ्यता के लोगों ने हाल ही में खोजा है लेकिन सौ गुना अधिक परिपूर्ण है, जो कि सबसे बड़े मनुष्य और सभी जानवरों की विशाल सेनाओं का सारा पोषण है। वह उन अर्क के अंदर उनके पकाने और विकास के बारे में दिव्य निर्धारण के निर्देशों को समेटता है, और उन्हें उनके छोटे सुरक्षात्मक बक्सों में रखता है। उन छोटे-छोटे खजानों का निर्माण "काफ़ नुन" कारखाने से इतनी आसानी, तेज़ी और प्रचुरता से होता है, जो "'हो!' और यह हो जाता है" के आदेश से संचालित होता है, कि कुरान कहता है: "निर्माता केवल आदेश देता है और यह अस्तित्व में आता है।" विश्वास के रिश्ते के दस्तावेज़ के साथ इस तरह का समर्थन प्राप्त करके, आप एक अनंत शक्ति और शक्ति पर भरोसा कर सकते हैं। जैसा कि मैंने आयत से इस सबक को आत्मसात किया, मुझे विश्वास से उत्पन्न ऐसी नैतिक शक्ति मिली कि इसकी शक्ति के माध्यम से मैं न केवल अपने वर्तमान दुश्मनों, बल्कि पूरी दुनिया को चुनौती दे सकता था। मैंने पूरे जोश से घोषणा की: “हमारे लिए ईश्वर ही पर्याप्त है, और वही सर्वोत्तम निर्णयकर्ता है!”

प्रकाशमान श्लोक का तीसरा स्तर “हमारे लिए परमेश्वर ही पर्याप्त है”

एक समय जब मैंने पाया कि उन निर्वासनों और बीमारियों के उत्पीड़न को सहने के कारण संसार से मेरी आसक्ति टूट गई है, और मुझे यह विश्वास हो गया कि मुझे एक शाश्वत संसार में, एक शाश्वत क्षेत्र में शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए नियत किया गया है, तो मैंने खेदपूर्वक आहें भरना छोड़ दिया, जिससे और अधिक दुःख और लालसा उत्पन्न होती थी, और मैं प्रसन्न और प्रसन्न हो गया।

हालाँकि, मनुष्य की कल्पना और आत्मा और प्रकृति के परिणाम का यह लक्ष्य केवल एक सर्वशक्तिमान की असीम शक्ति के माध्यम से ही साकार हो सकता है, जो सभी प्राणियों के क्रियाकलाप, विश्राम, आचरण और अवस्थाओं को वचन और कर्म में जानता और दर्ज करता है, और तुच्छ और बिल्कुल शक्तिहीन मनुष्य को अपना मित्र और संबोधितकर्ता बनाता है, उसे सभी प्राणियों से श्रेष्ठ दर्जा देता है; यह केवल मनुष्य के प्रति उसके असीम उपकार और उसे दिए गए महत्व के माध्यम से ही साकार हो सकता है। इन दो बिंदुओं, यानी ऐसी शक्ति की गतिविधि और स्पष्ट रूप से तुच्छ मनुष्य के महत्व के बारे में सोचते हुए, मैं एक ऐसी व्याख्या चाहता था जो विश्वास को गहरा करे और दिल को संतुष्ट करे। फिर से मैंने श्लोक का सहारा लिया, और इसने मुझे “ना\,” “हमारे लिए” पर ध्यान देने और ध्यान देने के लिए कहा कि मेरे साथ कौन कह रहा है “हमारे लिए भगवान पर्याप्त है”।

मैंने तुरन्त देखा कि असंख्य पक्षी और मक्खियाँ, जो कि छोटे पक्षी हैं, और असंख्य जानवर, और असीमित पौधे और पेड़, मेरी तरह, स्वभाव की जीभ से कह रहे थे कि "हमारे लिए ईश्वर ही पर्याप्त है, और वह सर्वोत्तम कार्य-निर्णयकर्ता है।" वे सभी को याद दिलाते हैं कि

एक शक्ति की विशालता और महिमा जो हमारी आँखों के सामने, खास तौर पर वसंत ऋतु में, सबसे प्रचुर मात्रा में, सबसे बड़ी सहजता से और विशाल पैमाने पर, अंडों, बीजों, अनाजों और तरल पदार्थ की बूंदों से, जो सभी एक दूसरे से मिलते जुलते हैं और जिनका पदार्थ एक ही है, पक्षियों की लाखों प्रजातियाँ, जानवरों की लाखों किस्में, पौधों की लाखों किस्में और पेड़ों की लाखों किस्में, बिना किसी त्रुटि, दोष या भ्रम के, सुशोभित, संतुलित, सुव्यवस्थित तरीके से और एक दूसरे से अलग रूपों में। वे इस तरह से एक दूसरे के भीतर और एक दूसरे के समान होने के द्वारा हमें उसकी एकता और एकरूपता का प्रदर्शन करते हैं। मैंने समझा कि निपटान के प्रमुख, रचनात्मक कार्य में कोई हस्तक्षेप या भागीदारी जो इस तरह से असंख्य चमत्कार प्रदर्शित करती है, संभव नहीं थी। जो लोग मेरे व्यक्तित्व और मानवीय चरित्र को समझना चाहते हैं, जो सभी विश्वासियों की तरह है, और जो लोग मेरे जैसा बनना चाहते हैं, उन्हें "हमारे लिए ईश्वर पर्याप्त है" में प्रथम पुरुष बहुवचन 'हम' में 'मैं' की व्याख्या को देखना चाहिए, यानी, स्वयं की व्याख्या। मेरा स्पष्ट रूप से महत्वहीन, अभावग्रस्त अस्तित्व क्या है - सभी विश्वासियों की तरह? जीवन क्या है? मानवता क्या है? इस्लाम क्या है? निश्चित, सकारात्मक विश्वास क्या है? ईश्वर का ज्ञान क्या है? प्रेम कैसा होना चाहिए? उन्हें समझना चाहिए और सबक लेना चाहिए!

प्रकाशमान श्लोक का चौथा स्तर “हमारे लिए परमेश्वर ही पर्याप्त है”

एक समय था जब मैं बुढ़ापे, निर्वासन, बीमारी और हार से हिल रहा था, और एक समय था जब मैं असावधानी का दौर देख रहा था। मैं बहुत चिंतित था कि मेरा अस्तित्व, जिससे मैं बहुत जुड़ा हुआ था और जिसके द्वारा मैं मोहित था, वास्तव में सभी प्राणी, अस्तित्वहीनता की ओर जा रहे थे, तब मैंने फिर से श्लोक का सहारा लिया। इसने मुझसे कहा: "मेरे अर्थ को ध्यान से सुनो और विश्वास की दूरबीन से देखो!"

इसलिए मैंने विश्वास की नज़र से देखा और पाया कि सभी विश्वासियों की तरह, मेरा छोटा सा अस्तित्व एक असीम अस्तित्व का दर्पण था, और अनंत विस्तार के माध्यम से, असंख्य अस्तित्वों को प्राप्त करने का साधन था, और ज्ञान का एक शब्द था जो खुद से कहीं अधिक मूल्यवान असंख्य स्थायी अस्तित्वों के फल पैदा करता था। मैं 'ज्ञान की डिग्री पर निश्चितता' के साथ जानता था कि इस संबंध में एक पल के लिए जीना एक शाश्वत अस्तित्व जितना ही मूल्यवान था। क्योंकि मैंने विश्वास की चेतना के माध्यम से समझा कि मेरा यह अस्तित्व कला, कलाकृति और अनिवार्य रूप से विद्यमान एक की अभिव्यक्ति का काम था। इसलिए अकेलेपन की चिंता और असंख्य अलगाव और उनके दर्द से बचकर, मैंने प्राणियों और विशेष रूप से जीवित प्राणियों से जुड़े दिव्य कृत्यों और नामों की संख्या के अनुसार प्राणियों के साथ भाईचारे के संबंध और बंधन बनाए, और मुझे पता था कि जिन सभी प्राणियों से मैं प्यार करता था, उनके साथ एक स्थायी मिलन था, और केवल एक अस्थायी अलगाव था। और इसलिए, विश्वास और विश्वास के संबंधों के माध्यम से, सभी प्राणियों की तरह, मेरा अस्तित्व प्राप्त हुआ

असंख्य अस्तित्वों की ज्योतियाँ जो वियोग से अछूती हैं। यदि वह विदा भी हो जाए, तो वे पीछे रह जाएँगी और वह ऐसे प्रसन्न होगी जैसे वह स्वयं ही रह गई हो।

संक्षेप में कहें तो मृत्यु अलगाव नहीं है, यह मिलन है; यह निवास का परिवर्तन है; यह जीवन का अंतिम चरण है।
एक अनन्त फल का उत्पादन.

प्रकाशमय श्लोक का पांचवा स्तर “हमारे लिए भगवान पर्याप्त है”

एक बार जब मेरी ज़िंदगी मुश्किल हालातों से हिल रही थी, तो उन्होंने मेरा ध्यान ज़िंदगी की तरफ़ खींचा। मैंने देखा कि मेरी ज़िंदगी तेज़ी से जा रही थी; आख़िरत नज़दीक आ रही थी; मैं जिस ज़ुल्म को झेल रहा था, उसकी वजह से मेरी ज़िंदगी बुझने लगी थी। जैसा कि रिसाले-ए-नूर के उस हिस्से में बताया गया है जिसमें हमेशा रहने वाले ईश्वर के नाम का ज़िक्र है, मैंने दुख के साथ सोचा कि कैसे अपने अहम कामों, और महान फ़ायदों और खूबियों के साथ ज़िंदगी इतनी जल्दी बुझने की हकदार नहीं थी, बल्कि लंबे समय तक टिकी रहनी चाहिए। मैंने फिर से अपने गुरु की आयत का सहारा लिया, "हमारे लिए ईश्वर काफ़ी है, और वही सबसे अच्छा काम करने वाला है।" इस बार उसने मुझसे कहा: "ज़िंदगी को उस हमेशा रहने वाले और खुद्दार के नज़रिए से देखो, जो तुम्हें ज़िंदगी देता है!"

इसलिए मैंने देखा कि अगर मेरे जीवन का सिर्फ़ एक पहलू मेरी ओर देखता है, तो सौ पहलू हमेशा जीवित और आत्मनिर्भर ईश्वर की ओर देखते हैं। और अगर इसके परिणामों में से एक मेरी ओर देखता है, तो हज़ार पहलू मेरे रचयिता की ओर देखते हैं। चूँकि यह मामला है, इसलिए ईश्वरीय आनंद की सीमाओं के भीतर एक पल के लिए जीना पर्याप्त है; लंबे समय की आवश्यकता नहीं है। इस सत्य को चार मामलों में समझाया जा सकता है। जो कोई भी मरा नहीं है या जो जीवित रहना चाहता है, उसे उन चार मामलों में जीवन की प्रकृति और वास्तविकता और उसके सच्चे अधिकारों की तलाश करनी चाहिए; वे उन्हें पा लेंगे और जीवन में वापस आ जाएँगे!

सारांश यह है: जितना अधिक जीवन सदा-जीवित और स्वयं-निर्भर परमेश्वर की ओर देखता है, और जितना अधिक विश्वास जीवन और जीवन की आत्मा बन जाता है, उतना ही यह शाश्वत हो जाता है और स्थायी फल पैदा करता है। यह इतना ऊंचा भी हो जाता है कि इसे अनंत काल की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है; यह अब जीवनकाल की संक्षिप्तता या लंबाई की ओर नहीं देखता।

प्रकाशमान श्लोक का छठा स्तर "हमारे लिए परमेश्वर ही पर्याप्त है"

ऐसे समय में जब मेरी बढ़ती उम्र और बुढ़ापा समय के अंत की घटनाओं के बीच मेरे विशेष बिछड़ने की चेतावनी दे रहे थे, जो दुनिया के विनाश, सामान्य बिछड़ने के समय की बात कहते हैं, मेरे स्वभाव में सुंदरता के प्रति प्रेम और सुंदरता के प्रति जुनून और पूर्णता के प्रति आकर्षण की भावनाएँ असाधारण रूप से संवेदनशील तरीके से सामने आ रही थीं। मैंने असाधारण स्पष्टता और दुःख के साथ देखा कि क्षणभंगुरता और गिरावट, जो हमेशा विनाशकारी होती हैं, और मृत्यु और अस्तित्वहीनता, जो हमेशा अलगाव का कारण बनती हैं, इस खूबसूरत दुनिया और इन खूबसूरत प्राणियों को भयानक तरीके से तोड़ रही थीं और उनकी सुंदरता को नष्ट कर रही थीं। प्रतीकात्मक प्रेम

मेरे स्वभाव में उबाल आ गया और मैंने इस स्थिति के खिलाफ विद्रोह कर दिया। सांत्वना पाने के लिए, मैंने फिर से इस श्लोक का सहारा लिया “हमारे लिए भगवान ही काफी है।” इसने मुझसे कहा: “मुझे पढ़ो और मेरे अर्थ पर ध्यान से विचार करो!”

तो मैंने सूरा अल-नूर की आयत की वेधशाला में प्रवेश किया,

अल्लाह आकाश और धरती का प्रकाश है [आयत के अंत तक],(24:35)

और विश्वास की दूरबीन से "हमारे लिए ईश्वर ही पर्याप्त है" श्लोक के सबसे दूरस्थ स्तरों को देखा, फिर विश्वास की अंतर्दृष्टि के सूक्ष्मदर्शी से उसके सबसे सूक्ष्म रहस्यों को देखा, और निम्नलिखित देखा:

दर्पण, कांच के टुकड़े, पारदर्शी चीजें और यहां तक कि बुलबुले भी सूर्य के प्रकाश और उसके प्रकाश में सात रंगों की विभिन्न छिपी हुई सुंदरता को दिखाते हैं; और अपने लुप्त होने और नवीनीकरण, और विभिन्न क्षमताओं और अपवर्तन के माध्यम से, वे उस सुंदरता को नवीनीकृत करते हैं; और अपने प्रतिबिंबों के साथ, वे सूर्य और उसके प्रकाश की छिपी हुई सुंदरता और सुंदरता को प्रदर्शित करते हैं। ठीक उसी तरह, महिमा के सर्व-सुंदर एक, पूर्व-शाश्वत और उत्तर-शाश्वत सूर्य की पवित्र सुंदरता और उनके सबसे सुंदर नामों की शाश्वत सुंदरता के लिए दर्पण के रूप में कार्य करने और उनकी अभिव्यक्तियों को नवीनीकृत करने के लिए, ये सुंदर प्राणी, ये प्यारी कलाकृतियाँ, ये उत्तम प्राणी, बिना रुके आते और चले जाते हैं। रिसाले-ए-नूर में शक्तिशाली प्रमाण विस्तार से बताए गए हैं जो प्रदर्शित करते हैं कि उन पर दिखाई देने वाली सुंदरताएं उनकी नहीं हैं, बल्कि वे एक पारलौकिक, पवित्र सुंदरता के संकेत, संकेत, चमक और अभिव्यक्तियाँ हैं जो प्रकट होना चाहती हैं। स्पष्टीकरण की शुरुआत यह कहकर होती है कि इनमें से तीन प्रमाणों का उल्लेख संक्षेप में और सबसे तर्कसंगत रूप से किया गया है। यह ग्रंथ हर उस व्यक्ति को आश्चर्यचकित कर देता है जो इसे देखकर समझदार है और खुद इससे लाभ उठाने के अलावा, दूसरों को भी इससे लाभ उठाने की कोशिश करना ज़रूरी समझता है।

जिस किसी का मन सड़ा हुआ नहीं है और हृदय भ्रष्ट नहीं है, वह दूसरे प्रमाण में बताए गए पाँच बिंदुओं की सराहना, प्रशंसा और अनुशंसा करेगा, और यह कहते हुए: "मा'शाअल्लाह! बरकल्लाह!" यह समझेगा और पुष्टि करेगा कि यह एक अद्भुत चमत्कार है जो उसके स्पष्ट रूप से दीन, अभावग्रस्त अस्तित्व को ऊंचा उठाएगा।

पंद्रहवीं आशा19

एक बार जब मैं एमिरदाग में अनिवार्य निवास पर था, [20] में क्या

[19] यह पंद्रहवीं आशा एक नूरजू द्वारा भविष्य में बुजुर्गों के लिए ग्रंथ को पूरा करने के लिए, और इसकी रचना के लिए एक स्रोत के रूप में लिखी गई थी, क्योंकि रिसाले-ए नूर के लेखन की अवधि तीन साल पहले समाप्त हो गई थी।

[20] मध्य अनातोलिया का छोटा शहर जहाँ डेनिज़ली जेल से रिहा होने के बाद 1944 में बेदिउज़्ज़मान को निर्वासित किया गया था। वह 1951 तक अनिवार्य निवास में रहा, जनवरी 1948 से सितंबर 1949 तक अफ़योन जेल में बीस महीने के अंतराल के साथ। (ट्र.)

मैं वस्तुतः एकांत कारावास में था, मैं जीवन से ऊब गया था क्योंकि वे मुझे उनकी निगरानी और मनमाने व्यवहार से पीड़ा पहुँचाते थे, जिसे मैं सहन नहीं कर पाता था, और मुझे जेल से रिहा होने का अफ़सोस था। मैं अपनी पूरी आत्मा से डेनिज़ली जेल के लिए तरस रहा था, और कब्र में प्रवेश करना चाहता था। लेकिन जब मैं सोच रहा था कि जेल और कब्र ऐसे जीवन से बेहतर हैं, और एक या दूसरे में जाने का फैसला कर रहा था, तो ईश्वरीय कृपा मेरी मदद के लिए आई: इसने मेद्रेसेतुज़-ज़हरा के छात्रों पर कृपा की,21 जिनकी कलम नकल करने वाली मशीनों की तरह थी, जो मशीनों में से एक थी, जो अभी-अभी आई थी।

एक ही कलम से रिसाले-ए-नूर के बहुमूल्य संग्रह की पाँच सौ प्रतियाँ एक साथ प्रकाशित हुईं। उनकी नई जीत की भविष्यवाणी ने मुझे उस कष्टदायक जीवन से प्रेम करने के लिए प्रेरित किया, और मुझे अनंत आभार व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया।

कुछ समय बाद, रिसाले-ए-नूर की जीत को बर्दाश्त न कर पाने के कारण, इसके गुप्त शत्रुओं ने सरकार को हमारे विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए प्रेरित किया। फिर से मेरे लिए जीवन कठिन हो गया। फिर अचानक प्रभु की कृपा प्रकट हुई: मामले से जुड़े अधिकारी, जिन्हें रिसाले-ए-नूर की सबसे अधिक आवश्यकता थी, ने अपने कर्तव्यों के दौरान जब्त की गई प्रतियों का अत्यंत उत्सुकता और सावधानी से अध्ययन किया, और इसके ग्रंथों ने उनके दिलों में इसके प्रति पक्षपात की भावना पैदा की। जैसे-जैसे वे इसकी आलोचना करने के बजाय इसकी सराहना करने लगे, रिसाले-ए-नूर के अध्ययन का दायरा बहुत बढ़ गया। इसने हमारे भौतिक नुकसानों से सौ गुना अधिक लाभ कमाया, जिससे हमारी चिंता और परेशानी बिल्कुल कम हो गई।

फिर, गुप्त, शत्रुतापूर्ण ढोंगियों ने सरकार का ध्यान मेरी ओर आकर्षित किया। उन्होंने मेरी पिछली राजनीतिक गतिविधियों को याद किया। उन्होंने न्यायपालिका, शिक्षा अधिकारियों, पुलिस और गृह मंत्रालय दोनों में मेरे बारे में संदेह पैदा किया। ये विभिन्न दलों और छिपे हुए कम्युनिस्ट अराजकतावादियों के उकसावे के कारण फैले। उन्होंने हम पर दबाव डालना शुरू कर दिया और हमें गिरफ्तार कर लिया, और रिसाले-ए-नूर के उन हिस्सों को जब्त कर लिया जो उनके हाथों में पड़ गए। रिसाले-ए-नूर के छात्रों की गतिविधियाँ रुक गईं। कई अधिकारियों ने झूठे आरोप लगाए जिन पर कोई भी विश्वास नहीं कर सकता था। उन्होंने सबसे असाधारण बदनामी फैलाने की कोशिश की, लेकिन वे किसी को भी उस पर विश्वास नहीं दिला सके।

फिर उन्होंने मुझे सर्दियों के सबसे ठंडे दिनों में किसी सामान्य बात पर गिरफ्तार कर लिया

[21] पूर्वी अनातोलिया में जिस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए बेदिउज़्ज़मान ने जीवन भर प्रयास किया, उसका नाम है, जहाँ धार्मिक विज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ पढ़ाया जाएगा। उन्हें धन प्राप्त हुआ सुल्तान रेसाद से और 1911 में लेक वान के तट पर इसकी नींव रखी गई, लेकिन प्रथम विश्व युद्ध छिड़ जाने के कारण यह पूरा नहीं हो सका। गणतंत्र के पहले दशकों में रिसाले-ए नूर के प्रसार के साथ, रिसाले-ए नूर मेदरेस, या वे स्थान जहाँ रिसाले-ए नूर का अध्ययन किया गया या इसकी प्रतियाँ लिखी गईं, पूरे तुर्की में खुल गए। बेदिउज़्ज़मान ने तब रिसाले-ए नूर के छात्रों को मेद्रेसेतुज़-ज़हरा के छात्र कहा। (ट्र.)

बहाने से, और मुझे जेल में एक बड़े और बेहद ठंडे वार्ड में एकांत कारावास में डाल दिया, जिससे मुझे दो दिन तक बिना चूल्हे के रहना पड़ा। मैं अपने छोटे से कमरे में दिन में कई बार चूल्हा जलाने का आदी था और अंगीठी में हमेशा जलते हुए कोयले होते थे, इसलिए अपनी बीमारी और कमज़ोरी के कारण मैं इसे बहुत मुश्किल से सहन कर पाया। बुखार और सर्दी, और भयानक संकट और क्रोध से पीड़ित इस स्थिति में संघर्ष करते हुए, ईश्वरीय कृपा से मेरे दिल में एक सच्चाई उभरी। इसने मेरी आत्मा को निम्नलिखित चेतावनी दी:

"आपने जेल को मदरसे-ए-यूसुफिये - पैगंबर जोसेफ का स्कूल कहा, और जब आप डेनिज़ली में थे, तो आपके संकट से हज़ार गुना ज़्यादा राहत और आध्यात्मिक लाभ जैसी चीज़ें, और दूसरे कैदियों को रिसाले-ए-नूर और इसकी व्यापक जीत से लाभ मिला, इन सभी ने आपको शिकायत करने के बजाय अंतहीन धन्यवाद देने के लिए मजबूर किया। उन्होंने आपके कारावास और कठिनाई के हर घंटे को दस घंटे की पूजा के बराबर बना दिया, और उन गुज़रते घंटों को अनंत बना दिया। ईश्वर की इच्छा से, जोसेफ के इस तीसरे स्कूल में विपत्ति से पीड़ित लोग रिसाले-ए-नूर से लाभ उठाएँगे और सांत्वना पाएँगे, जो आपके इस ठंडे, गंभीर संकट को गर्म करेंगे और इसे खुशी में बदल देंगे। अगर आप जिन लोगों पर गुस्सा करते हैं, वे धोखा खा रहे हैं और बिना जाने-समझे आपके साथ बुरा व्यवहार कर रहे हैं, तो वे गुस्सा करने लायक नहीं हैं। और यदि वे तुम्हें जानबूझ कर, द्वेष के कारण और गुमराही के कारण पीड़ा पहुँचा रहे हैं, तो वे थोड़े समय में ही मृत्यु के अनन्त दण्ड के कारण कब्र के एकान्त कारावास में प्रवेश करेंगे, जहाँ वे अनन्त यातना और यातना भोगेंगे। उनका उत्पीड़न तुम्हारे लिए पुण्य और आध्यात्मिक सुख दोनों अर्जित कर रहा है, और क्षणभंगुर घंटों को शाश्वत बना रहा है, और तुम्हें ईमानदारी के साथ विद्वत्तापूर्ण और धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने की अनुमति दे रहा है।"

मैंने अपनी पूरी ताकत से कहा: "सब प्रशंसा ईश्वर की है!" मानवता के नाते, मुझे उन अत्याचारियों पर दया आई और मैंने प्रार्थना की: "हे मेरे पालनहार, उन्हें सुधारो!" जैसा कि मैंने आंतरिक मामलों के मंत्रालय को दिए अपने बयान में लिखा था, इस नई घटना में असली दोषी वे अत्याचारी हैं जो दस मामलों में कानून के नाम पर गैरकानूनी काम करते हैं। उन्होंने अपने झूठे आरोपों और मनगढ़ंत बातों से किसी भी निष्पक्ष व्यक्ति को यह दिखाने के लिए असाधारण बहाने ढूंढ़ लिए, जिससे उन्हें सुनने वाले हंसते और सच्चाई के चाहने वाले रोते, कि वे रिसाले-ए-नूर और उसके छात्रों पर कानून और अधिकार के मामले में हमला करने का कोई रास्ता नहीं खोज सकते, इसलिए वे पागलपन की ओर बढ़ रहे हैं।

उदाहरण के लिए, एक महीने तक हम पर जासूसी करने वाले अधिकारियों को कुछ भी आपत्तिजनक नहीं मिला, इसलिए उन्होंने एक ज्ञापन लिखा जिसमें लिखा था: "सैद के नौकरों ने एक दुकान से रक खरीदा और उसे उसके पास ले गए।" उन्हें ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने वाला कोई नहीं मिला, लेकिन आखिरकार उन्होंने एक शराबी अजनबी को गिरफ्तार कर लिया और उसे धमकाकर उस पर हस्ताक्षर करवा लिए। उसने भी कहा: "भगवान हमें माफ करें! इस असाधारण झूठ पर कौन हस्ताक्षर करेगा?" इसलिए उन्हें इसे फाड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

दूसरा उदाहरण: एक व्यक्ति जिसे मैं नहीं जानता था और अब भी नहीं जानता, उसने मुझे अपना घोड़ा उधार दिया ताकि मैं सैर के लिए बाहर जा सकूं। मैं गर्मियों में अपनी बीमारी के कारण और थोड़ी हवा लेने के लिए अक्सर कुछ घंटों के लिए बाहर जाता था। मैंने वचन दिया था कि मैं घोड़े के मालिक को पचास लीरा की कीमत की फिटन किताबें और उपहार दूंगा, ताकि मैं अपना नियम न तोड़ूं और उसका कर्जदार न बन जाऊं। क्या ऐसी बात से कोई नुकसान हो सकता है?

लेकिन फिर राज्यपाल, दरबारी और पुलिस ने घोड़े के मालिक के बारे में हमसे पचास बार पूछताछ की। मानो यह सार्वजनिक सुरक्षा को प्रभावित करने वाली कोई महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना हो! एक व्यक्ति ने तो इस निरर्थक पूछताछ को रोकने के लिए वफादारी से कहा कि घोड़ा उसका है और दूसरे ने कहा कि फिटन उसकी है, और वे दोनों मेरे साथ गिरफ्तार कर लिए गए। हमने इन दो उदाहरणों जैसी कई बचकानी हरकतें देखीं और हंसते-हंसते रो पड़े। और हम समझ गए कि रिसाले-ए-नूर और उसके छात्रों पर हमला करने वाले खुद को मूर्ख बनाते हैं।

उन उदाहरणों में से एक मज़ेदार घटना: मेरी गिरफ़्तारी को अधिकृत करने वाले कागज़ पर कारण "सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ना" बताया गया था। दस्तावेज़ न देखने के कारण, मैंने सरकारी वकील से कहा: "मैंने कल रात आपको बदनाम किया। मैंने पुलिस अधिकारी से, जो पुलिस प्रमुख के लिए मुझसे पूछताछ कर रहा था, कहा: 'अगर मैंने इस देश की सार्वजनिक सुरक्षा के लिए एक हज़ार सरकारी अभियोजकों और एक हज़ार पुलिस प्रमुखों के बराबर सेवा नहीं की है - तीन बार - तो भगवान मुझे धिक्कारें!'"

ठीक उसी समय, जब उन ठंडी परिस्थितियों में मुझे आराम की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी और ठंड से बचने और दुनिया के बारे में न सोचने की, मैं उन लोगों के प्रति क्रोध और झुंझलाहट से भर गया जिन्होंने मुझे इस असहनीय निर्वासन, एकांत, कारावास और उत्पीड़न में भेजा था, जो उनकी नफ़रत और बुरे इरादों को दर्शाता था। ईश्वरीय कृपा मेरी सहायता के लिए आई, और मेरे दिल में निम्नलिखित बातें डाली गईं:

“ईश्वरीय निर्णय, जो शुद्ध न्याय है, का बहुत बड़ा हिस्सा है जो ये लोग तुम पर अन्यायपूर्ण अत्याचार कर रहे हैं। इस जेल में तुम्हारे पास खाने के लिए भोजन है; तुम्हारी उसी जीविका ने तुम्हें यहाँ बुलाया है। इसे संतोष और त्याग के साथ स्वीकार करना चाहिए। इसमें प्रभुतापूर्ण ज्ञान और दया का बहुत बड़ा हिस्सा है, जो इस जेल में बंद लोगों को प्रकाश देना, उन्हें सांत्वना देना और तुम्हें पुरस्कार दिलाना है। इस हिस्से का अंतहीन धन्यवाद और धैर्य के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए। इसमें तुम्हारी आत्मा का भी हिस्सा है, क्योंकि उसके दोष हैं जिनके बारे में तुम नहीं जानते थे। इसके सामने, तुम्हें पश्चाताप करके और क्षमा मांगकर अपनी आत्मा से कहना चाहिए कि वह इस आघात के योग्य थी। इसमें तुम्हारे कुछ गुप्त शत्रुओं का भी हिस्सा है, जो अपनी साज़िशों और कुछ भोले-भाले और संदिग्ध अधिकारियों को धोखा देकर उन्हें इस तरह के उत्पीड़न के लिए उकसा रहे हैं। इस हिस्से के सामने, रिसाले-ए-नूर द्वारा उन कपटियों पर किए गए भयानक अमूर्त प्रहारों ने तुम्हारा पूरा बदला ले लिया है। उनके लिए इतना ही काफी है। अंतिम

भाग तो अधिकारीगण हैं जो वास्तविक साधन थे। इस भाग के सामने, नियमानुसार उन्हें क्षमा करना उदारता का कार्य है,

जो लोग अपने क्रोध को दबाते हैं और लोगों को क्षमा कर देते हैं, निस्संदेह अल्लाह अच्छे लोगों को प्रिय है , (3:134)

चाहे वे चाहते हों या नहीं, विश्वास के संबंध में रिसाले-ए-नूर से उन्हें लाभ हो सकता था, हालांकि वे इसकी आलोचना करने के इरादे से इसे देखते थे।

इस सत्य चेतावनी पर मुझे इतनी खुशी और कृतज्ञता महसूस हुई कि मैंने कोई हानिरहित अपराध करने और जेल की सजा भुगतने का फैसला किया, ताकि मैं जोसेफ के इस नए स्कूल में रह सकूं और शायद उन लोगों की भी मदद कर सकूं जो मेरे विरोधी थे। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए जो पचहत्तर साल का था, बिना किसी लगाव के, और इस दुनिया में उसके चाहने वाले सत्तर लोगों में से केवल पाँच ही जीवित बचे थे, कब्र इस जेल से सौ गुना बेहतर थी। क्योंकि रिसाले-ए-नूर के ग्रंथों की सत्तर हज़ार प्रतियाँ मुफ़्त में प्रचलन में थीं और रिसाले-ए-नूर से संबंधित मेरे कर्तव्यों को पूरा करती थीं, और मेरे भाई और उत्तराधिकारी थे जो मेरी एक ज़बान के बदले हज़ारों ज़बानों से ईमान की सेवा करते रहेंगे। यह जेल भी उस अत्याचार और उत्पीड़न के अधीन बाहर की आज़ादी से सौ गुना ज़्यादा आरामदायक और ज़्यादा फ़ायदेमंद थी। क्योंकि जेल में सैकड़ों अधिकारियों की मनमानी से बाहर अकेले ही कष्ट सहने के बजाय, सैकड़ों अन्य कैदियों के साथ, जेल के गवर्नर और चीफ वार्डर जैसे एक या दो लोगों की थोड़ी-बहुत मनमानी सहनी पड़ती है, जिससे लाभ मिलता है। और इसके बावजूद, कई साथी कैदियों की भाईचारे वाली दया और सांत्वना मिलती है। यह सोचकर कि इस्लाम और मानव स्वभाव की करुणा ऐसी स्थिति में बुजुर्गों के प्रति दया के रूप में दिखाई देती है, इस प्रकार जेल की कठिनाई को दया में बदल देती है, मैंने जेल जाने के लिए तैयार हो गया।

जिस समय मैं इस तीसरे मुकदमे में शामिल हुआ, कमजोरी, बुढ़ापे और बीमारी के कारण अपने पैरों पर खड़े होने में कठिनाई के कारण, मैं अदालत के दरवाजे के बाहर एक कुर्सी पर बैठा था। जज अचानक प्रकट हुए और अपमानजनक तरीके से गुस्से में पूछा: "वह अपने पैरों पर क्यों नहीं खड़ा है?" मैं अपनी बुढ़ापे के सामने इस निर्दयता पर क्रोधित था। फिर मैंने देखा कि हमारे चारों ओर बड़ी संख्या में मुसलमान इकट्ठा हो गए थे और बहुत दयालु और भाईचारे के अंदाज में देख रहे थे, और तितर-बितर नहीं हो रहे थे। मुझे अचानक निम्नलिखित दो सच्चाइयों की चेतावनी दी गई:

प्रथम: मेरे और रिसाले-नूर के गुप्त शत्रुओं ने कुछ भोले-भाले अधिकारियों को धोखा देकर रिसाले-नूर की विजयों को रोकने का इरादा किया था, ताकि जनता की मेरे बारे में अच्छी राय को नष्ट किया जा सके, जो कि मैं किसी भी हालत में नहीं चाहता था, और मेरे चरित्र को नष्ट किया जा सके।

लोगों का दृष्टिकोण; उन्होंने उन अधिकारियों को मेरे प्रति इस तरह से अवमाननापूर्ण व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया था। उस एक व्यक्ति के अपमान के स्थान पर इन सौ लोगों को देखिए! ईमान के प्रति रिसाले-ए-नूर की सेवा के बदले में - एक ईश्वरीय उपकार के रूप में - वे आपकी सेवा की सराहना करके, आपका स्वागत करके और आपको विदा करके अपनी सहानुभूति व्यक्त कर रहे हैं। यहां तक कि, जब मैं मुकदमे के दूसरे दिन सरकारी वकील के सवालों का जवाब देने के लिए जांच मजिस्ट्रेट के कार्यालय में था, तो अदालत की खिड़कियों के सामने आंगन में लगभग एक हजार लोग एकत्र हुए और अपनी चिंता व्यक्त की; ऐसा लग रहा था कि वे स्वभाव की भाषा में उनसे कह रहे थे कि वे हम पर दबाव न डालें। पुलिस उन्हें तितर-बितर नहीं कर सकी। मेरे दिल में यह बात बैठ गई थी कि इस खतरनाक युग में ये लोग एक सच्ची सांत्वना, एक कभी न बुझने वाला प्रकाश, शक्तिशाली विश्वास और शाश्वत सुख के बारे में निश्चित अच्छी खबर चाहते हैं, और वे स्वभाव से ही इनकी तलाश करते हैं। उन्होंने अवश्य ही सुन लिया होगा कि जिस चीज की वे तलाश कर रहे हैं, वह रिसाले-ए-नूर में मिलेगी, ताकि वे मुझ महत्वहीन व्यक्ति को उससे कहीं अधिक ध्यान दें, जिसका मैं हकदार हूं, क्योंकि मैंने ईमान के लिए कुछ छोटी-छोटी सेवाएं की हैं।

दूसरा सत्य: मुझे याद दिलाया गया कि कुछ तिरस्कारपूर्ण, धोखेबाज व्यक्तियों ने हमें अपमानित करने और हमारे प्रति जनता के सम्मान को नष्ट करने के इरादे से हमारे साथ जो दुर्व्यवहार किया, उसके बदले में हमें वास्तविकता के असंख्य लोगों और आने वाली पीढ़ियों की प्रशंसा और सराहना मिली।

हां, निश्चित, सकारात्मक विश्वास की ताकत के माध्यम से, इस देश के हर हिस्से में रिसाले-ए-नूर और उसके छात्र साम्यवाद के मुखौटे के नीचे सार्वजनिक व्यवस्था को नष्ट करने के लिए भयानक भ्रष्टाचार और अराजकता के प्रयासों को रोकते हैं। वे सार्वजनिक व्यवस्था और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए काम करते हैं ताकि इन बीस वर्षों में तीन या चार संबंधित अदालतें और दस प्रांतों की पुलिस रिसाले-ए-नूर के छात्रों से जुड़ी सार्वजनिक व्यवस्था के उल्लंघन से जुड़ी किसी भी घटना को न तो खोज पाए और न ही दर्ज कर पाए, जिनकी संख्या बहुत अधिक है और जो देश के हर हिस्से में पाए जाते हैं। और तीन प्रांतों की निष्पक्ष पुलिस ने कहा: “रिसाले-ए-नूर के छात्र नैतिक पुलिस हैं। वे सार्वजनिक व्यवस्था को बनाए रखने में हमारी सहायता करते हैं। निश्चित, सकारात्मक विश्वास के माध्यम से, वे रिसाले-ए-नूर को पढ़ने वाले हर व्यक्ति के दिमाग में कुछ ऐसा छोड़ जाते हैं जो उन्हें गलत काम करने से रोकता है। वे सार्वजनिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए काम करते हैं।”

इसका एक उदाहरण डेनिज़ली जेल है। जब रिसाले-ए-नूर ने वहां प्रवेश किया और कैदियों के लिए विश्वास के फल लिखे गए, तो तीन या चार महीनों के भीतर उनमें से दो सौ से ज़्यादा कैदी इतने असाधारण रूप से आज्ञाकारी हो गए और ऐसे धार्मिक और धार्मिक आचरण को अपना लिया कि एक व्यक्ति जिसने तीन या चार लोगों की हत्या की थी, वह खटमल को भी मारने से परहेज़ करता था। वे पूरी तरह से दयालु, हानिरहित सदस्य बन गए

राष्ट्र के। अधिकारी इस स्थिति पर आश्चर्यचकित थे और प्रशंसा से देखते रहे। कुछ युवाओं ने अपनी सजा पाने से पहले कहा: "यदि नूरजस जेल में रहे, तो हम खुद को दोषी ठहराने की कोशिश करेंगे ताकि हम उनसे सीख सकें और उनके जैसे बन सकें। हम उनके निर्देश के माध्यम से खुद को सुधारेंगे।"

इसलिए जो लोग रिसाले-ए-नूर के छात्रों पर सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने का आरोप लगाते हैं, वे निश्चित रूप से गंभीर रूप से धोखा खा रहे हैं, या मूर्ख बन गए हैं, या जाने-अनजाने अराजकता के कारण सरकार को धोखा दे रहे हैं, और हमें कुचलने और दबाने की कोशिश कर रहे हैं। हम उनसे यह कहते हैं:

चूँकि मृत्यु को मारना नहीं है, और कब्र को बंद नहीं करना है, और दुनिया के इस अतिथिगृह में यात्री, काफिले के बाद काफिले बड़ी तेजी और शोरगुल के साथ धरती में प्रवेश करते हैं, और गायब हो जाते हैं; निश्चित रूप से हम बहुत जल्द ही एक दूसरे से अलग हो जाएँगे। तुम्हें अपने अत्याचार के लिए भयानक तरीके से सजा मिलेगी। कम से कम तुम मृत्यु और अनंत विलुप्ति की फाँसी पर चढ़ोगे, जो विश्वास के उत्पीड़ित लोगों के मुक्ति पत्र हैं। इस दुनिया में तुमने जो क्षणभंगुर सुख प्राप्त किए हैं, उन्हें शाश्वत समझकर, वे अनन्त, गंभीर पीड़ाओं में बदल जाएँगे।

अफ़सोस की बात है कि हमारे गुप्त छद्म शत्रु कभी-कभी इस्लाम की वास्तविकता को सूफीवाद का नाम देते हैं, जिसे इस धार्मिक राष्ट्र के संतों और वीर युद्ध दिग्गजों के पद पर बैठे करोड़ों शहीदों की तलवारों और खून से हासिल और संरक्षित किया गया है। जबकि सूफीवाद का मार्ग उस सूरज की एक किरण मात्र है, वे इसे सूरज बताते हैं और कुछ लापरवाह सरकारी अधिकारियों को धोखा देते हैं। रिसाले-ए-नूर के छात्रों को "सूफी" और "राजनीतिक समाज के सदस्य" कहते हैं - क्योंकि वे कुरान और विश्वास की सच्चाइयों के लिए प्रभावी ढंग से काम करते हैं - वे उन्हें हमारे खिलाफ भड़काना चाहते हैं। हम उनसे और हमारे खिलाफ उनकी बात सुनने वालों से वही कहते हैं जो हमने डेनिज़ली की न्याय अदालत से कहा था:

"हमें भी इस पवित्र सत्य के लिए बलिदान होना चाहिए जिसके लिए करोड़ों लोगों ने बलिदान दिया है! भले ही आप हमारे आस-पास की दुनिया में आग लगा दें, हम जो कुरान की सच्चाई के लिए खुद को बलिदान करते हैं, नास्तिकता के सामने अपने हथियार नहीं डालेंगे; हम अपने पवित्र कर्तव्य को नहीं छोड़ेंगे, अगर ईश्वर चाहे तो!"

बुढ़ापे में होने वाले कष्टों और निराशा के लिए ईमान और कुरान से मिलने वाली पवित्र सांत्वना के लिए धन्यवाद, मैं अपने बुढ़ापे के इस सबसे कष्टदायक वर्ष को अपनी जवानी के दस सबसे सुखद वर्षों के लिए नहीं बदलूंगा - खासकर इसलिए क्योंकि जो लोग पश्चाताप करते हैं और अनिवार्य नमाज़ अदा करते हैं, उनके लिए जेल में बिताया गया हर घंटा दस घंटे की इबादत के बराबर होता है, और पुण्य के संबंध में, बीमारी और उत्पीड़न में बिताया गया हर क्षणिक दिन अनंत जीवन के दस दिन प्राप्त करता है। इस प्रकार मैंने उन चेतावनियों से समझा कि मेरे जैसे किसी व्यक्ति के लिए ये दिन कितने धन्यवाद के पात्र हैं जो अपने जीवन की प्रतीक्षा कर रहा है।

कब्र के दरवाजे पर मुड़ो। मैंने कहा: "मेरे पालनहार का अनंत धन्यवाद!", और अपने बुढ़ापे पर खुश था और अपनी कैद से प्रसन्न था। क्योंकि जीवन रुकता नहीं है, यह तेजी से बीत जाता है। यदि यह सुख और खुशी में बीतता है, क्योंकि सुख का बीतना दुख है, तो यह क्षणभंगुर हो जाता है, बिना धन्यवाद और लापरवाही के बीतता है; सुखों के स्थान पर पाप छोड़कर, यह चला जाता है। जबकि यदि यह जेल और कठिनाई में बीतता है, क्योंकि दर्द का बीतना एक तरह का सुख है, और चूंकि इसे एक तरह की पूजा माना जाता है, यह एक तरह से शाश्वत हो जाता है, और इसके अच्छे फलों के माध्यम से अनंत जीवन प्राप्त होता है।

यह उन गलतियों का प्रायश्चित बन जाता है जो पिछले पापों और कारावास का कारण थीं, और उन्हें शुद्ध करता है। इस दृष्टिकोण से, जो कैदी अनिवार्य नमाज़ों के अनिवार्य भाग अदा करते हैं, उन्हें धैर्य के साथ धन्यवाद देना चाहिए।

सोलहवीं आशा

एक बार बुढ़ापे में मुझे एक साल की सजा काटने के बाद एस्कीशेहर जेल से रिहा कर दिया गया। उन्होंने मुझे कस्तमोनू में निर्वासित कर दिया22 जहाँ मैं दो-तीन महीने तक पुलिस स्टेशन में मेहमान बनकर रहा। यह समझा जा सकता है कि ऐसी जगह पर मेरे जैसे एकांतप्रिय व्यक्ति को कितनी पीड़ा हुई होगी, जो अपने वफ़ादार दोस्तों को देखकर भी थक जाता था और कपड़ों में होने वाले बदलावों को बर्दाश्त नहीं कर पाता था।23 इस निराशा को झेलते हुए अचानक ईश्वरीय कृपा मेरे बुढ़ापे में मदद के लिए आई। थाने में इंस्पेक्टर और पुलिस वाले पक्के दोस्त जैसे हो गए। उन्होंने मुझे एक बार भी टोपी न पहनने के बारे में नहीं चेताया और मेरे नौकरों की तरह मुझे शहर में घुमाने ले जाते थे।

फिर मैंने पुलिस स्टेशन के सामने कस्तमोनू के रिसाले-ए-नूर मदरसे में निवास किया और रिसाले-ए-नूर के आगे के हिस्से लिखना शुरू किया। फेज़ी, एमिन, हिल्मी, सादिक, नाज़िफ़ और सलाहद्दीन जैसे वीर रिसाले-ए-नूर छात्र ग्रंथों की नकल करने और उन्हें प्रसारित करने के लिए मदरसे में गए। हमने अपने पुराने छात्रों के साथ अपनी युवावस्था में आयोजित की गई विद्वानों की बहसों से भी अधिक शानदार बहसें कीं।

फिर हमारे छिपे हुए दुश्मनों ने कुछ अधिकारियों और कुछ अहंकारी होजाओं और शेखों को हमारे बारे में संदेह पैदा कर दिया। उन्होंने हमें और पाँच-छह प्रांतों के रिसाले-ए-नूर के छात्रों को डेनिज़ली जेल के जोसेफ़ स्कूल में इकट्ठा करवा दिया। इस सोलहवीं उम्मीद का विवरण उन संक्षिप्त पत्रों में स्पष्ट रूप से वर्णित है जो मैंने अपने भाइयों को गुप्त रूप से भेजे थे।

[22] तुर्की के उत्तर में इल्गाज़ पर्वतमाला में एक प्रांतीय केंद्र। मार्च 1936 में एस्कीशेहर जेल से रिहा होने के बाद बेदिउज़्ज़मान को यहाँ निर्वासित कर दिया गया था। वह 1943 तक सात साल तक कस्तमोनू में रहा, जब उसे डेनिज़ली जेल भेज दिया गया। (ट्र.)

[23] यह 1890 में पारित पोशाक कानूनों के बाद यूरोपीय पोशाक को अनिवार्य रूप से अपनाने से संबंधित है।
गणतंत्र के पहले वर्षों में। 1925 के हैट एक्ट ने यूरोपीय शैली की टोपियों के अलावा किसी भी अन्य हेडगियर को पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया। (ट्र.)

डेनिज़ली जेल में, कस्तमोनू से भेजे गए पत्रों में, और अदालत के बचाव भाषणों वाले संग्रह में। इसलिए उन पत्रों और मेरे बचाव भाषण का विवरण देते हुए, मैं यहाँ केवल बहुत संक्षेप में इसका उल्लेख करूँगा:

मैंने गोपनीय और महत्वपूर्ण संग्रहों को, खास तौर पर सूफ़ियान और रिसाले-ए-नूर के चमत्कारों के बारे में, कोयले और लकड़ी के नीचे छिपा दिया था ताकि मेरी मौत के बाद या अधिकारियों के होश में आने और सच्चाई सुनने के बाद उन्हें प्रकाशित किया जा सके। फिर, जब मैं इस पर सहज महसूस कर रहा था, तो कुछ जासूसों और सहायक सरकारी अभियोजक ने अचानक मेरे घर पर छापा मारा। उन्होंने लकड़ी के नीचे से उन गुप्त और महत्वपूर्ण ग्रंथों को निकाला और मुझे गिरफ्तार कर लिया और मुझे इस्पार्टा जेल भेज दिया, हालाँकि मेरी तबीयत खराब थी। रिसाले-ए-नूर को हुए नुकसान से बहुत परेशान और दुखी होने के बावजूद, ईश्वरीय कृपा ने हमारी मदद की। अधिकारियों ने ध्यान से और उत्सुकता से उन महत्वपूर्ण ग्रंथों को पढ़ना शुरू किया जो छिपाए गए थे, जिनकी उन्हें बहुत ज़रूरत थी, और सरकारी कार्यालय रिसाले-ए-नूर के अध्ययन केंद्र बन गए। हालाँकि उन्होंने आलोचना के विचार से पढ़ना शुरू किया, लेकिन उन्होंने उनकी सराहना की। डेनिज़ली में भी, हालाँकि हम इसके बारे में नहीं जानते थे, बहुत से लोगों ने आधिकारिक और अनौपचारिक रूप से आयतुल-कुबरा (सर्वोच्च संकेत) का मुद्रित संस्करण पढ़ा और अपने विश्वास को मजबूत किया। इससे जेल में हमारी पीड़ा कम हो गई।

बाद में वे हमें डेनिज़ली जेल ले गए और मुझे एक बदबूदार, ठंडे, नम वार्ड में एकांत कारावास में डाल दिया। मैं अपनी वृद्धावस्था और बीमारी से और मेरे कारण मेरे मित्रों पर आई कठिनाइयों से बहुत दुखी था। मैं रिसाले-ए-नूर की जब्तियों और उसकी गतिविधियों में रुकावट से सबसे अधिक व्यथित महसूस कर रहा था, जब अचानक ईश्वरीय कृपा मेरी सहायता के लिए आई। इसने उस विशाल जेल को रिसाले-ए-नूर मदरसे में बदल दिया, जिससे साबित हुआ कि यह यूसुफ का स्कूल था। रिसाले-ए-नूर मदरसेतुज़-ज़हरा के नायकों की हीरे जैसी कलमों के ज़रिए फैलने लगा।24 रिसाले-ए-नूर के महान नायक ने उन कठोर परिस्थितियों में भी, तीन या चार महीनों के अंतराल में द फ्रूट्स ऑफ़ बिलीफ़ और डिफेंस स्पीचेज़ कलेक्शन की बीस से अधिक प्रतियाँ लिखीं।

विजय की शुरुआत जेल के अंदर और बाहर दोनों जगह हुई। इसने उस विपत्ति में हमारे नुकसान को महत्वपूर्ण लाभ में बदल दिया और हमारे दुख को खुशी में बदल दिया। इसने एक बार फिर इस श्लोक का अर्थ दिखाया,

> किन्तु यह भी सम्भव है कि जो चीज़ तुम्हारे लिए अच्छी हो, उसे तुम नापसंद करो। (2:216)

फिर हम पहली विशेषज्ञ समिति के गलत और सतही बयानों और शिक्षा मंत्री के क्रूर हमलों के कारण कड़ी आलोचनाओं के शिकार हुए। हमारे खिलाफ एक बयान प्रकाशित किया गया। तब ठीक उसी समय जब कुछ रिपोर्टों के अनुसार वे कार्यकारी को सुरक्षित करने की कोशिश कर रहे थे

---

[24] नोट 21, पृष्ठ 325 देखें।

हममें से कुछ लोगों की आलोचना के बावजूद, ईश्वरीय कृपा हमारी सहायता के लिए आई। मुख्य रूप से, अंकारा में विशेषज्ञ समिति से एक गंभीर आलोचनात्मक रिपोर्ट की उम्मीद करते हुए, उन्होंने एक प्रशंसात्मक रिपोर्ट भेजी। और यद्यपि उन्हें रिसाले-ए-नूर की प्रतियों के पाँच बक्सों में दस से भी कम गलतियाँ मिलीं, हमने अदालत में साबित कर दिया कि जिन बिंदुओं को उन्होंने त्रुटियाँ बताया था वे पूरी तरह से सही थे और जिन मामलों को उन्होंने गलत बताया था उनमें वे स्वयं भी त्रुटिपूर्ण थे; हमने उनकी पाँच-पृष्ठ की रिपोर्ट में पाँच से दस त्रुटियाँ और गलतियाँ दर्शाईं। और जब हम सात सरकारी दफ़्तरों को भेजे गए द फ्रूट्स ऑफ़ बिलीफ़ एंड डिफेंसेस कलेक्शन और न्याय मंत्रालय को भेजे गए पूरे रिसाले-ए-नूर के सामने गंभीर प्रतिशोध की प्रतीक्षा कर रहे थे, और विशेष रूप से गोपनीय ग्रंथों द्वारा दिए गए प्रभावी, चुभने वाले थप्पड़ों के बदले में, उन्होंने बहुत ही नरमी से जवाब दिया, और प्रधान मंत्री द्वारा हमें भेजे गए सांत्वना पत्र की तरह, वे सबसे अधिक समझौतावादी थे और उन्होंने हम पर हमला नहीं किया। इससे यह बात निर्णायक रूप से सिद्ध हो गई कि ईश्वरीय कृपा के चमत्कार के रूप में रिसाले-ए-नूर की सच्चाइयों ने उन्हें पराजित कर दिया था, तथा उन्हें इसके ग्रंथों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया था, मानो यह एक मार्गदर्शक हो। इसने उन व्यापक मंडलियों को एक तरह के अध्ययन मंडल में बदल दिया तथा असंख्य झिझकते और भ्रमित लोगों के विश्वास को बचा लिया, जिससे हमें आध्यात्मिक आनंद और लाभ मिला, जो हमारे दुख से कहीं अधिक था।

फिर हमारे छिपे हुए दुश्मनों ने मुझे ज़हर दे दिया; और रिसाले-ए-नूर के शहीद नायक स्वर्गीय हफ़ज़ अली मेरी जगह अस्पताल गए, मेरी जगह मध्यवर्ती क्षेत्र की यात्रा की, और हमें निराशा से रुलाया। इस विपत्ति से पहले, कई मौकों पर मैंने कस्तमोनू के पहाड़ पर जोर दिया था: "मेरे भाइयों, घोड़े को मांस और शेर को घास मत दो!" यानी: "सभी ग्रंथ हर किसी को मत दो, कहीं ऐसा न हो कि वे उनका इस्तेमाल हम पर हमला करने के लिए करें।" हालाँकि हफ़ज़ अली (भगवान उन पर रहम करे) पैदल लगभग सात दिन दूर थे, जैसे कि उन्होंने अपने आध्यात्मिक टेलीफोन से सुना हो, उसी समय वे मुझे लिख रहे थे: "हाँ, उस्ताद, यह रिसाले-ए-नूर का आश्चर्य है कि घोड़ों को मांस नहीं दिया जाना चाहिए, न ही शेरों को घास। बल्कि, चूँकि घोड़ों को घास और शेरों को मांस दिया जाना चाहिए, इसलिए उन्होंने उस शेर जैसे होजा को ईमानदारी पर ग्रंथ दिया।" मुझे उनका पत्र सात दिन बाद मिला। हमने इस पर काम किया, और जिस समय मैं पहाड़ पर चिल्लाकर यह बात कह रहा था, उसी समय वह अपने पत्र में अजीब शब्द लिख रहा था।

इस प्रकार, ठीक उस समय जब रिसाले-ए-नूर के नायक की मृत्यु हो गई, और हम पर गुप्त धोखेबाजों द्वारा दबाव डाला जा रहा था, जो हमारे खिलाफ अपने षड्यंत्रों के माध्यम से हमें दंडित करने की कोशिश कर रहे थे, और हम चिंतित थे कि मुझे सरकारी आदेश पर अस्पताल भेजा जाएगा क्योंकि मैं जहर से बीमार था, दिव्य कृपा हमारी सहायता के लिए आई।

मेरे धन्य भाइयों की सच्ची प्रार्थनाओं के कारण विष के कारण मेरे जीवन को जो खतरा था, वह टल गया; और शक्तिशाली संकेतों के अनुसार हमारा शहीद अपनी कब्र में रिसाले-ए-नूर के साथ लेटा हुआ था, और प्रश्न करने वाले फ़रिश्तों को रिसाले-ए-नूर के साथ उत्तर दे रहा था; और

डेनिज़ली नायक हसन फ़ेज़ी (भगवान उन पर दया करें), जो हाफ़िज़ अली की प्रणाली के अनुसार काम करते थे, और उनके दोस्त गुप्त रूप से रिसाले-ए-नूर की प्रभावी रूप से सेवा कर रहे थे; और क्योंकि अन्य कैदियों को रिसाले-ए-नूर द्वारा सुधारा जा रहा था, यहाँ तक कि हमारे दुश्मनों ने भी हमें जेल से रिहा किए जाने का समर्थन किया; और गुफा के साथियों की तरह, रिसाले-ए-नूर के छात्रों ने उस कठिन परीक्षा के स्थान को पुराने समय के तपस्वियों की गुफा में बदल दिया; यह सब, रिसाले-ए-नूर को लिखने और आसान दिल से प्रसारित करने के उनके प्रयासों के साथ, यह साबित करता है कि ईश्वरीय कृपा हमारी सहायता के लिए आई थी।

मेरे दिल में यह भी आया कि जब इमाम आज़म जैसे महान क़ानून के व्याख्याता को क़ैद की सज़ा मिली; और इमाम अहमद इब्न हंबल जैसे महान मुजाहिद को क़ुरआन के एक मामले के लिए जेल में बहुत यातनाएँ दी गईं और उन्होंने पूरे धैर्य के साथ सब कुछ सहा, फिर भी उस मामले के बारे में चुप नहीं रहे; और बहुत से धार्मिक नेता और विद्वान पूरी तरह से धैर्यवान और अविचल थे, और आपसे कहीं ज़्यादा यातनाएँ झेलने के बावजूद भी उन्होंने शुक्रिया अदा किया; तो बेशक आपको उन बहुत कम कठिनाइयों के लिए अंतहीन शुक्रिया अदा करना चाहिए जो आप झेलते हैं, हालाँकि आपको क़ुरआन की उन बहुत सी सच्चाइयों के लिए बहुत बड़ा इनाम मिलता है। हाँ, मैं संक्षेप में मनुष्य के अन्यायपूर्ण अत्याचार के बीच ईश्वरीय कृपा की अभिव्यक्ति का वर्णन करूँगा:

जब मैं बीस साल का था, तो मैं बार-बार कहा करता था: "अपने जीवन के अंत में मैं समाज के जीवन से अलग होकर किसी गुफा या पहाड़ पर चला जाऊंगा, जैसे पुराने समय के लोग दुनिया को छोड़कर गुफाओं में चले जाते थे।" फिर जब महायुद्ध में मुझे उत्तर-पूर्व में कैदी के रूप में रखा गया, तो मैंने यह निर्णय लिया: "इसके बाद मैं अपना जीवन गुफाओं में बिताऊंगा। मैं राजनीतिक और सामाजिक जीवन से दूर हो जाऊंगा। अब उनमें घुलना-मिलना बहुत हो गया।" उस समय प्रभु की कृपा और ईश्वरीय निर्णय का न्याय दोनों ही प्रकट हुए। इसने मेरे द्वारा कल्पना की गई गुफाओं को जेलों, एकांत स्थानों, अकेलेपन के स्थानों, कठिन परीक्षा और एकांत कारावास में बदल दिया, जो मेरे बुढ़ापे के लिए मेरे निर्णय और इच्छा से कहीं बेहतर था। इसने मुझे जोसेफ के स्कूल और एकांत कारावास के स्थान दिए, जहाँ मेरा समय बर्बाद नहीं होगा, जो तपस्वियों और एकांतवासियों की पहाड़ी गुफाओं से कहीं बेहतर थे। इससे गुफा के परलोक से जुड़े लाभ तो मिलते ही हैं, साथ ही ईमान और कुरान की सच्चाइयों की कठोर सेवा भी होती है। मैंने तो यहां तक ठान लिया था कि मैं अपने दोस्तों के रिहा होने के बाद भी खुद को किसी अपराध का दोषी साबित करूंगा और जेल में ही रहूंगा। हुस्रेव और फेजी जैसे एकांतवासी मेरे साथ रहते और किसी बहाने से मैं एकांतवास वार्ड में ही रहता ताकि लोगों से न मिलूं और अपना समय अनावश्यक बातचीत और अहंकारी बनावटीपन में बर्बाद न करूं।

लेकिन फिर दिव्य निर्धारण और हमारे

भाग्य ने हमें एक और कठिन परीक्षा की जगह पर भेज दिया। मेरी वृद्धावस्था के प्रति दया और विश्वास की सेवा में हमें और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित करने के लिए, जोसेफ के इस तीसरे स्कूल में हमें हमारी इच्छा और शक्ति से परे कर्तव्य दिए गए, इस श्लोक के अनुसार, "लेकिन यह संभव है कि आप किसी ऐसी चीज को नापसंद करें जो आपके लिए अच्छी हो," और कहावत: "अच्छाई उसी में निहित है जिसे ईश्वर चुनता है।"

हां, ईश्वरीय कृपा से रिसाले-ए-नूर की सेवा के संबंध में ज्ञान और महत्वपूर्ण लाभों के तीन उदाहरण हैं - मेरे बुढ़ापे के प्रति दया से - मेरी जवानी की गुफाओं को, जब मेरा कोई शक्तिशाली, छिपा हुआ दुश्मन नहीं था, एकांत में बदल दिया।

कारावास की सजा:

बुद्धि और लाभ का पहला उदाहरण: केवल यूसुफ के स्कूल में ही रिसाले-ए-नूर के छात्र बिना किसी नुकसान के एक साथ इकट्ठा हो सकते हैं। बाहर यह महंगा है और अगर वे एक साथ मिलते हैं तो संदेह पैदा होता है। कुछ लोग जो मुझसे मिलने आते थे, वे चालीस या पचास लीरा खर्च करते थे, फिर मुझसे केवल बीस मिनट मिलते थे या बिल्कुल नहीं मिलते थे, और उन्हें वापस लौटना पड़ता था। मैं अपने कुछ भाइयों के करीब रहने के लिए जेल की कठिनाई को स्वेच्छा से चुनता। इसका मतलब है कि हमारे लिए जेल एक इनाम और दया का उदाहरण है।

बुद्धि और लाभ का दूसरा उदाहरण: इस समय रिसाले-ए-नूर के माध्यम से ईमान की सेवा हर जगह इसका विज्ञापन करके और जरूरतमंदों का ध्यान आकर्षित करके की जानी चाहिए। रिसाले-ए-नूर की ओर ध्यान हमारी कैद से आकर्षित होता है; यह एक विज्ञापन की तरह है। सबसे जिद्दी या सबसे जरूरतमंद इसे पा लेते हैं और अपना ईमान बचा लेते हैं; उनकी जिद टूट जाती है और वे खतरे से बच जाते हैं, और रिसाले-ए-नूर का अध्ययन-क्षेत्र विस्तृत हो जाता है।

ज्ञान और लाभ का तीसरा उदाहरण: रिसाले-ए-नूर के छात्र जो जेल भेजे जाते हैं, वे एक दूसरे के आचरण, गुणों, ईमानदारी और आत्म-बलिदान से सीखते हैं, और वे अपनी सेवा में सांसारिक लाभ की तलाश नहीं करते हैं। हाँ, चूँकि यूसुफ के स्कूल में उन्होंने अपनी आँखों से हर कठिनाई और परेशानी के लिए दस और शायद सौ लाभ प्राप्त किए हैं, और अच्छे परिणाम, और विश्वास के लिए व्यापक और ईमानदार सेवा देखी है, वे शुद्ध ईमानदारी प्राप्त करने में सफल होते हैं और अब छोटे, व्यक्तिगत लाभ की तलाश में खुद को नीचा नहीं करते हैं।

इन यातना स्थलों के बारे में एक सूक्ष्म लेकिन दुखद, फिर भी एक ही समय में सुखद बात जो केवल मुझे चिंतित करती है, वह यह है: मैं यहाँ वही स्थिति देखता हूँ जो मैंने अपनी युवावस्था में अपने मूल क्षेत्र के पुराने मदरसों में देखी थी। पारंपरिक रूप से पूर्वी प्रांतों में, कुछ मदरसों के छात्रों की ज़रूरतें बाहर से पूरी की जाती थीं, और कुछ मदरसों में उनका खाना मदरसों में पकाया जाता था। ऐसे और भी तरीके थे जिनसे वे इस यातना स्थल से मिलते जुलते थे। जब मैं यहाँ की जेल को देखता हूँ, तो मुझे एक सुखद पछतावा और लालसा महसूस होती है, और मैं अपनी कल्पना में युवावस्था के उन सुखद दिनों की यात्रा करता हूँ, और बुढ़ापे की कठिनाइयों को भूल जाता हूँ।

छब्बीसवें फ्लैश का परिशिष्ट

यह इक्कीसवाँ पत्र है, जिसे मेकतूबात (पत्र) में शामिल किया गया है 1928-1932), को यहां नहीं जोड़ा गया है।

* * *

सत्ताईसवाँ फ्लैश

इसमें एस्कीशेहर मुकदमों में बचाव पक्ष के भाषण शामिल हैं, जिन्हें द फ्लैशेस कलेक्शन के हस्त-प्रतिलिपि संस्करणों में तथा आंशिक रूप से जीवनी में प्रकाशित किया गया है।

* * *

अट्ठाईसवाँ फ्लैश

[इस फ्लैश में कुछ लघु रचनाएँ हैं जो मैंने अपने भाइयों के लिए सांत्वना के रूप में लिखी थीं, जो एस्कीशेहर जेल में मेरे सामने वाले वार्ड में थे, उस समय मुझे उनसे घुलने-मिलने या बात करने की मनाही थी।]

सुलेमान रुस्तु के साथ एक मनोरंजक और दिलचस्प बातचीत,[1]
अपनी निष्ठा के लिए प्रसिद्ध और हृदय की ईमानदारी के लिए प्रतिष्ठित

एक महत्वपूर्ण श्लोक के विषय में एक छोटी सी बात

शरद ऋतु आ चुकी थी और मक्खियों को उनके कर्तव्यों से मुक्त करने का समय आ रहा था, और उनकी छोटी-छोटी परेशानियों के कारण, स्वार्थी मनुष्य उन्हें खत्म करने के लिए मेरी जेल की कोठरी में रसायनों का इस्तेमाल कर रहे थे। यह देखकर मेरे अंदर गहरी दया पैदा हुई। मेरी कोठरी में एक कपड़े धोने की रस्सी थी। मनुष्यों को रोकने के लिए मक्खियाँ और भी बढ़ गईं।

शाम को वे छोटे पक्षी लाइन पर सबसे व्यवस्थित तरीके से खड़े हो जाते थे। जब वह कपड़े टाँगना चाहता था, तो मैंने रुफ़्लू से कहा: "उन छोटे पक्षियों को परेशान मत करो; इसे कहीं और टाँग दो।" जिस पर उसने पूरी गंभीरता से जवाब दिया: "हमें लाइन की ज़रूरत है; मक्खियों को अपने लिए कहीं और ढूँढ़ने दो।"

खैर... सुबह-सुबह इस आदान-प्रदान के सिलसिले में चर्चा शुरू हुई, मक्खियों और चींटियों जैसे असंख्य छोटे जीवों के बारे में। मैंने उनसे निम्नलिखित बातें कहीं:

---

[1] सुलेमान रुस्तु चाकिन, 1899-1974. उनका जन्म इस्पार्टा में हुआ था, जहाँ वे कर निर्धारण कार्यालय के निदेशक थे। वे बेदिउज़्ज़मान के करीबी छात्रों में से एक बन गए और उनके साथ इस्कीशेर और डेनिज़ली में कैद रहे।

जिन प्रजातियों की प्रतियां इतनी अधिक होती हैं, उनके महत्वपूर्ण कर्तव्य होते हैं तथा उनका मूल्य भी बहुत अधिक होता है, जैसे किसी पुस्तक की प्रतियां, पुस्तक के महत्व के अनुसार बढ़ती जाती हैं।
कहने का तात्पर्य यह है कि मक्खियों की प्रजातियों के पास महत्वपूर्ण कर्तव्य और उच्च मूल्य हैं, इसलिए सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने ईश्वरीय निर्णय के उन छोटे-छोटे संदेशों और ईश्वरीय शक्ति के शब्दों की प्रतियों को बहुत अधिक बढ़ा दिया है। सर्वज्ञ कुरान में कहा गया है:

> ऐ लोगो! यह एक मिसाल है, सुनो! अल्लाह के सिवा जिन लोगों को तुम पुकारते हो, वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे सब मिलकर भी एक मक्खी पैदा करें और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे उसे मक्खी से छुड़ाने की शक्ति नहीं रखते। कमज़ोर हैं वे लोग जो प्रार्थना करते हैं और वे लोग जिन्हें प्रार्थना करते हैं! (22:73)

यानी अगर गुमराह लोगों द्वारा ईश्वर कहे जाने वाली चीजें सर्वशक्तिमान ईश्वर के अलावा सभी कारणों और झूठे देवताओं को इकट्ठा कर लें, तो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर पाएंगे। यानी मक्खी का पैदा होना एक ऐसा प्रभु का चमत्कार और सृजनात्मक कार्य का स्पष्ट संकेत है कि अगर सभी कारण इकट्ठे भी हो जाएं तो भी वे उसके जैसा कुछ नहीं बना पाएंगे या उसकी नकल नहीं कर पाएंगे और उस प्रभु के संकेत को चुनौती नहीं दे पाएंगे।

मक्खियाँ, जो उपरोक्त आयत का महत्वपूर्ण विषय है, ने निम्रोद को पराजित कर दिया, और जब मूसा (उन पर शांति हो) ने उनके द्वारा परेशान किये जाने की शिकायत करते हुए कहा: "हे मेरे पालनहार! आपने इन परेशान करने वाले जीवों को इतनी अधिक संख्या में क्यों बनाया है?", तो प्रेरणा के माध्यम से उन्हें निम्नलिखित उत्तर मिला:

"आपने एक बार मक्खियों के बारे में आपत्ति की है, जबकि मक्खियाँ कई बार पूछती हैं: 'हे हमारे पालनहार! इस आदमी का सिर बहुत बड़ा है, फिर भी यह आपकी स्तुति केवल एक जीभ से करता है, और कभी-कभी वह ऐसा करने में भी चूक जाता है। यदि आपने हमें केवल इसके सिर से बनाया होता, तो हमारे जैसे प्राणी हजारों जीभों से आपकी स्तुति करते!'"

इसके अलावा मक्खियाँ, जिन्होंने मूसा की शिकायत के विरुद्ध अपनी रचना में बुद्धिमता का बचाव किया, इतनी ताकत से कि वे हज़ारों आपत्तियों का सामना कर सकें, वे भी बहुत सफाई का पालन करती हैं। ये कीट लगातार अपने चेहरे, आँखें और पंख धोते रहते हैं, जैसे कि वे स्नान कर रहे हों, और उनके महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं। आम दृष्टिकोण अदूरदर्शी है; यह अभी भी उन कर्तव्यों को समझने में असमर्थ है।

वास्तव में, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मांसाहारी प्राणियों के एक व्यवस्थित समूह को एक प्रकार के सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों के रूप में बनाया है; वे प्रतिदिन लाखों की संख्या में मरने वाले अन्य समुद्री जीवों की लाशों को इकट्ठा करके समुद्र को साफ करते हैं ,

---

[2] एक मछली हज़ारों अंडे और हज़ारों बच्चे पैदा करती है। इसलिए संतुलन बनाए रखने के लिए, दस लाख अंडों वाले अंडे से जो बच्चे निकलते हैं और जीवित रहते हैं, वे मरने वाली मछलियों के बराबर होंगे। साथ ही, माँ मछली हमेशा अपने बच्चों की देखरेख नहीं कर सकती क्योंकि उनके बीच आकार में बहुत अंतर होता है, और वह उन जगहों में प्रवेश नहीं कर सकती जहाँ वे छिपते हैं। इसलिए ईश्वरीय करुणा की अभिव्यक्ति के रूप में, सर्वज्ञ और दयालु भगवान बच्चों में से एक को दूसरों की देखरेख करने के लिए बढ़ावा देते हैं, और छोटे जीव को माँ के कर्तव्यों में नियुक्त करते हैं।

और समुद्र को उनकी लाशों से प्रदूषित और घिनौना होने से बचाएँ। अगर समुद्र के वे सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारी अपने अत्यंत नियमित कर्तव्यों का पालन न करें, तो समुद्र दर्पण की तरह चमक नहीं पाएगा; बल्कि यह एक दुखद और मार्मिक मैलापन प्रदर्शित करेगा।

इसके अलावा, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मांसाहारी और सड़ा हुआ मांस खाने वाले पक्षियों और जंगली जानवरों को सफाई और सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों की तरह बनाया है जो हर दिन लाखों की संख्या में मरने वाले जंगली जानवरों और पक्षियों की लाशों को इकट्ठा करते हैं, धरती के चेहरे को उन सड़े हुए अवशेषों से साफ करते हैं, और अन्य सजीव प्राणियों को ऐसे दुखद, असुविधाजनक दृश्यों से बचाते हैं। उदाहरण के लिए, चील जैसे कुछ लोग, एक दिव्य आवेग के माध्यम से, पाँच या छह घंटे की दूरी से एक शव के स्थान को आश्चर्यजनक रूप से पहचान लेते हैं, हालाँकि वह छिपा हुआ और दूर होता है, और उसे हटाने के लिए जल्दी करते हैं। यदि देश के वे स्वास्थ्य अधिकारी अपने आधिकारिक कर्तव्यों को पूरा करने में अत्यंत कुशल और व्यवस्थित नहीं होते, तो धरती का चेहरा ऐसा हो जाता कि सभी रो पड़ते।

मांसाहारी जानवरों का वैध भोजन मृत जानवरों का मांस है। जीवित जानवरों का मांस उनके लिए अवैध है। अगर वे इसे खाते हैं, तो उन्हें सज़ा मिलती है। हदीस में कहा गया है: "पुनरुत्थान के दिन सींग रहित भेड़ के लिए सींग वाले भेड़ का बदला लिया जाएगा"[3] यह बताता है कि यद्यपि अमर आत्माओं वाले जानवरों के शरीर नष्ट हो जाते हैं, लेकिन उन्हें शाश्वत क्षेत्र में उनके लिए उचित तरीके से पुरस्कार और दंड मिलेगा। परिणामस्वरूप, यह कहा जा सकता है कि जीवित जानवरों का मांस जंगली जानवरों के लिए अवैध है।

इसके अलावा, चींटियों को छोटे जीवों की लाशों और उपहार के छोटे कणों और टुकड़ों को इकट्ठा करने के लिए सफाई अधिकारियों के रूप में नियुक्त किया जाता है। उन्हें सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों के रूप में दिव्य उपहार के छोटे कणों को बर्बाद होने, पैरों तले कुचले जाने, अवमानना और व्यर्थता से बचाने और अन्य छोटे जीवों की लाशों को इकट्ठा करने का काम दिया जाता है।

इसी तरह, मक्खियों को जहरीले पदार्थों और रोगाणुओं को साफ करने का काम सौंपा गया है जो बीमारी को जन्म देते हैं और मानव आंखों के लिए अदृश्य होते हैं। वे रोगाणुओं को संचारित नहीं करते हैं, इसके विपरीत, हानिकारक रोगाणुओं को चूसकर और उन्हें आत्मसात करके वे उन्हें नष्ट कर देते हैं और उन्हें एक अलग अवस्था में बदल देते हैं; वे कई संक्रामक रोगों के प्रसार को रोकते हैं। इस बात का संकेत है कि वे स्वास्थ्य कार्यकर्ता और सफाई अधिकारी और रसायनज्ञ दोनों हैं और वे व्यापक ज्ञान का प्रदर्शन करते हैं, यह तथ्य है कि

[3] मुसनद, द्वितीय, 235.

वे बहुत अधिक हैं। क्योंकि मूल्यवान और लाभदायक वस्तुएँ बढ़ती जाती हैं।

हे स्वार्थी मनुष्य! मक्खियों के निर्माण में हजारों बुद्धिमानी भरे उदाहरणों के अलावा, निम्नलिखित छोटे से लाभ पर विचार करें जो आपके लिए चिंता का विषय है और उनके प्रति अपनी शत्रुता को त्याग दें। क्योंकि जिस तरह वे आपको आपके निर्वासन, एकांत और अकेलेपन में कुछ परिचितता प्रदान करते हैं, उसी तरह वे आपको असावधानी और आपके विचारों को भटकने से भी सावधान करते हैं। आप मक्खियों को देखते हैं जो अपने नाजुक व्यवहार और अपने चेहरे और आँखों को धोने के माध्यम से आपको एक सबक दे रही हैं और आपको कर्म और सफाई जैसे मानवीय कर्तव्यों की याद दिला रही हैं।

इसके अलावा, मधुमक्खियाँ, जिन्हें मक्खी की तरह माना जा सकता है, आपको खाने के लिए शहद देती हैं, जो सबसे मीठा और सबसे नाज़ुक उपहार है। और जैसा कि चमत्कारिक व्याख्या के क़ुरान में कहा गया है, वे दिव्य प्रेरणा प्राप्त करके प्रतिष्ठित हैं। इसलिए उनके प्रति शत्रुतापूर्ण होना, हालाँकि उन्हें प्यार किया जाना चाहिए; वास्तव में, उन प्राणियों के प्रति शत्रुतापूर्ण होना जो मनुष्य की सहायता करने के लिए मित्रता में जल्दबाजी करने में सभी प्रकार की कठिनाइयों को झेलते हैं, गलत और अन्यायपूर्ण है। हम हानिकारक प्राणियों से केवल उनके नुकसान को दूर करने के लिए लड़ सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम भेड़ियों से भेड़ों को उनके हमले से बचाने के लिए लड़ते हैं।

मच्छर और पिस्सू हानिकारक पदार्थों से प्रदूषित नसों में बहते गंदे रक्त पर टूट पड़ते हैं, वास्तव में वे प्रदूषित रक्त को पीने के लिए जिम्मेदार होते हैं। इसलिए गर्मी के मौसम में जब शरीर की ज़रूरत से ज़्यादा रक्त होता है, तो वे प्राकृतिक रूप से रक्त क्यों नहीं पीते? यह संभव है...

उसकी जय हो जिसकी कला मन को मोह लेती है!

एक बार जब मैं अपनी दुष्ट आत्मा से संघर्ष कर रहा था, तो वह अपने अंदर मौजूद उपहारों को अपनी संपत्ति समझ रही थी और वह अहंकारी, घमंडी और डींग मारने वाली बन गई। मैंने उससे कहा: “यह संपत्ति तुम्हारी नहीं है, यह अमानत पर है।” तो उसने अपना अहंकार और घमंड छोड़ दिया लेकिन आलसी बन गई, उसने कहा: “मैं किसी ऐसे व्यक्ति की क्यों चिंता करूँ जो मेरा नहीं है? उसे मरने दो, मुझे इससे क्या लेना-देना?” अचानक मैंने देखा कि एक मक्खी मेरे हाथ पर बैठ गई थी और उसने अपनी आँखें, चेहरा और पंख, जो ईश्वर की ओर से उसकी अमानत थे, अच्छी तरह से साफ करना शुरू कर दिया था। मक्खी खुद को ऐसे धो रही थी जैसे एक सैनिक अपनी राइफल और वर्दी को अच्छी तरह से साफ करता है, जो राज्य के हैं। मैंने अपनी आत्मा से कहा: “तुम इसे देखो!” उसने देखा और एक अच्छा सबक सीखा। जहाँ तक मक्खी का सवाल है, वह मेरी घमंडी और आलसी आत्मा की शिक्षक और प्रशिक्षक बन गई।

मक्खी का मल चिकित्सकीय दृष्टि से हानिकारक नहीं है; वास्तव में, कभी-कभी यह मीठा होता है

[4] प्रसिद्ध यूनुस एमरे की निम्नलिखित पंक्तियाँ कितनी सुन्दरता और सूक्ष्मता से मक्खी के पंख और शरीर जैसी अद्भुत कला की अद्भुत कृतियों की ओर संकेत करती हैं: "मैंने एक मक्खी के पंख को चालीस बैलगाड़ियों पर लादा; उनमें से चालीस उसे खींच नहीं सकीं; यह इसी प्रकार बनी रही।"

सिरप। क्योंकि यह प्रभु के ज्ञान से दूर नहीं है, यह वास्तव में उस ज्ञान का एक कार्य है, कि जबकि मक्खियों में उनके द्वारा खाए गए भोजन से हजारों हानिकारक पदार्थ, रोगाणु और जहर होते हैं, वे छोटे परिवर्तन और शुद्धिकरण मशीनों की तरह हैं। मधुमक्खियों के अलावा, उड़ने वाले कीड़ों की अन्य प्रजातियाँ[5] हैं जो विभिन्न सड़े हुए पदार्थों को खाती हैं और फिर गंदगी के स्थान पर सिरप की बूंदें लगातार उत्सर्जित करती हैं।

उन सड़े हुए, जहरीले पदार्थों को मीठे और उपचारात्मक सिरप में बदलकर, दिव्य शक्ति का एक मिश्रण, जो पेड़ों की पत्तियों पर बरसता है, वे साबित करते हैं कि वे एक पदार्थ को दूसरे में बदलने की मशीन हैं। वे किसी की आँखों के सामने दिखाते हैं कि ये छोटे-छोटे व्यक्ति कितने शक्तिशाली राष्ट्र और समूह बनाते हैं। अपने अस्तित्व की ज़ुबान से वे कहते हैं: "हमारी छोटी-सी बात को मत देखो, हमारी प्रजाति की विशालता पर विचार करो, और घोषणा करो, 'सारी महिमा परमेश्वर की हो!'"

---

[5] वसंत के अंत में एक प्रजाति की छोटी मक्खी होती है जो काले पदार्थ के रूप में बनती है और बादाम और जंगली खुबानी के पेड़ों की शाखाओं से चिपक जाती है और वहीं रहती है। अपशिष्ट पदार्थों की जगह मक्खियों से लगातार बूंदें निकलती रहती हैं। ये बूंदें शहद की तरह होती हैं और मक्खियों की दूसरी प्रजातियाँ उनके चारों ओर इकट्ठा होकर उन्हें चूस लेती हैं।

एक और प्रजाति पौधों और कुछ पेड़ों के फूलों के परागण में काम आती है, जैसे अंजीर। जिस तरह जुगनू देखने लायक है, क्योंकि यह एक तरह की मक्खी है जो चमकती है, चमकती है और चमकदार होती है; उसी तरह दूसरी प्रजातियाँ जो सोने की तरह चमकती हैं और सोने की तरह चमकती हैं, ध्यान देने लायक हैं। साथ ही, हमें भालों से लैस मक्खियों और जंगली मधुमक्खियों को नहीं भूलना चाहिए, जो लुटेरों की तरह हैं। अगर दयालु सृष्टिकर्ता ने उनकी लगाम नहीं खींची होती, अगर वे इंसानों पर पिस्सू की तरह हमला नहीं करते, जिस तरह से उन हथियारबंद प्रजातियों ने निम्रोद को मारा था, तो वे मानव जाति पर हमला करते और इस आयत का निहित अर्थ बताते, “और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले।” इस प्रकार, विशेष गुणों वाली इन जैसी मक्खियों की सौ प्रसिद्ध प्रजातियाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं, इसलिए यह महान आयत उन्हें अपना विषय बनाती है:

> ऐ लोगो! यह एक दृष्टान्त है, इसे सुनो! जिन लोगों को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे सब मिलकर भी एक मक्खी पैदा करें! और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन ले, तो वे उसे मक्खी से छुड़ाने की शक्ति नहीं रखते। कमज़ोर हैं वे लोग जो प्रार्थना करते हैं और वे लोग जिनसे प्रार्थना करते हैं!

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

निस्संदेह जब वह कोई काम करना चाहता है तो उसका आदेश होता है कि "हो जा!" और वह हो जाता है। (36:82)

जैसा कि यह आयत संकेत करती है, सृष्टि एक आदेश के माध्यम से होती है। ईश्वरीय शक्ति के भण्डार कफ और नून में हैं।[1] इस सूक्ष्म रहस्य के अनेक पहलुओं का उल्लेख रिसाले-ए-नूर में विभिन्न स्थानों पर किया गया है। यहाँ, कुरान के अक्षरों की विशेषताओं, गुणों और भौतिक प्रभावों के बारे में हदीसों को इस सदी के भौतिकवादी दृष्टिकोण में और अधिक समझने योग्य बनाने के लिए, और विशेष रूप से कुछ सूराओं के आरंभ में असंबद्ध अक्षरों को, हम इस रहस्य को एक भौतिक उदाहरण के साथ स्पष्ट करेंगे।

सर्वशक्तिमान, महान सिंहासन के स्वामी, के चार सिंहासन हैं जिनके द्वारा वह पृथ्वी पर प्राणियों को निर्देश देता है, जो कि विश्व के केंद्र और ब्रह्मांड का हृदय और क़िबला है:

एक है संरक्षण और जीवन का सिंहासन, जो पृथ्वी है। यह संरक्षक और जीवनदाता के दिव्य नामों की अभिव्यक्ति है।

दूसरा सिंहासन उदारता और दया का सिंहासन है, जो जल तत्व का प्रतीक है।

तीसरा ज्ञान और बुद्धि का सिंहासन है, जो प्रकाश का तत्व है।

चतुर्थ भाव इच्छा और आदेश का सिंहासन है, जो वायु तत्व है।

हम अपनी आँखों से देखते हैं कि खनिज और असंख्य विभिन्न पौधे साधारण मिट्टी से बनते हैं, जिसके माध्यम से जानवरों और मनुष्यों की असंख्य ज़रूरतें पूरी होती हैं - पूर्ण व्यवस्था के साथ एकता से असीम बहुलता, एक साधारण तत्व से प्रजातियों की अनंत विविधता, एक सादे पृष्ठ पर असंख्य नियमित कढ़ाई। और हालाँकि पानी, और विशेष रूप से जानवरों का शुक्राणु, एक साधारण तरल पदार्थ है, कला के असंख्य चमत्कार इसके माध्यम से कई सजीव प्राणियों में प्रकट होते हैं। यह दर्शाता है कि इन दो सिंहासनों के समान, प्रकाश और वायु, पूर्व-शाश्वत लेखक, महिमा के सर्वज्ञ व्यक्ति की ज्ञान, आज्ञा और इच्छा की कलम के अद्भुत चमत्कारों की अभिव्यक्ति के स्थान हैं, उनके सरल स्वभाव के बावजूद।

अभी हम प्रकाश के तत्व को छोड़ देंगे, और यहाँ हमारे प्रश्न के संबंध में, वायु के तत्व के भीतर आदेश और इच्छा के चमत्कारों को थोड़ा उजागर करने का प्रयास करेंगे, जो पृथ्वी के लिए दिव्य आदेश और इच्छा का सिंहासन है।

हम अपने मुँह में हवा भरकर अक्षर और शब्द बोते हैं जो तुरंत ही

[1] "कुन!" शब्द में अरबी वर्णमाला के दो अक्षर, अर्थात्, "हो!" (ट्र.)

अंकुरित होते हैं और अंकुर भेजते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, एक पल में, बिल्कुल भी समय नहीं लगता, एक शब्द हवा में एक बीज बन जाता है, जो आस-पास की हवा में अंकुरित होता है और चारों ओर हवा में एक ही शब्द के असंख्य उदाहरणों की शूटिंग करता है, बड़े और छोटे। हम वायु के तत्व पर विचार करते हैं और हम देखते हैं कि यह "'हो!' और यह है" के आदेश के प्रति इतना आज्ञाकारी और अधीन है कि यह एक नियमित सेना के सैनिक की तरह है, इसका प्रत्येक कण मानो हमेशा उसके आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा है, "हो!" के आदेश से प्रकट आदेशों के साथ अपने अनुपालन और समर्पण का प्रदर्शन कर रहा है, जो दूर के दूसरे कण से तुरंत आ रहा है।

उदाहरण के लिए, यह तथ्य कि मानव भाषण को रेडियो ट्रांसमीटर और रिसीवर के माध्यम से हवा में कहीं भी सुना जा सकता है - बशर्ते कि रिसीवर हो -

पृथ्वी पर हर जगह, एक ही क्षण में, तुरन्त, यह प्रदर्शित करता है कि हवा का प्रत्येक कण कितनी पूर्णता से आज्ञाकारी रूप से "'हो!' की आज्ञा के प्रकटीकरण के अनुरूप है और यह हो जाता है।" पवित्रता के संबंध में और अनुपालन के रहस्य के अनुसार, अक्षर, जिनका हवा में अस्थिर अस्तित्व है, कई बाहरी प्रभाव और भौतिक गुण प्रकट कर सकते हैं।

इस प्रकार के असंख्य चिह्न दर्शाते हैं कि अक्षर, जो वायु के प्राणी हैं, और विशेष रूप से पवित्र और कुरानिक अक्षर, और विशेष रूप से कुछ सूराओं के आरंभ में दिव्य अंकों के अक्षर, व्यवस्थित और असीम रूप से संवेदनशील हैं, और मानो तात्कालिक आदेशों को सुनते हैं और तदनुसार कार्य करते हैं, इसलिए वे निश्चित रूप से वायु के कणों को अपने भौतिक गुणों और अद्भुत गुणों के अधीन कर देते हैं, जो "'हो जाओ' और यह हो जाता है" के आदेश और पूर्व-शाश्वत इच्छा की अभिव्यक्ति को प्रतिबिंबित करते हैं।

इस रहस्य के परिणामस्वरूप, कभी-कभी चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान ईश्वरीय शक्ति के कार्यों का वर्णन इस तरह करता है जैसे कि वे इच्छा और वाणी के गुणों से आगे बढ़ते हैं, जिसका अर्थ है कि वे सृजन की पूरी गति, चीजों की अधीनता और प्राणियों के अधीनता से अलग शक्ति की तरह शासन करते हैं। यानी, सृजनात्मक आदेश से निकलने वाले अक्षर प्राणियों के अस्तित्व में भौतिक शक्ति की तरह शासन करते हैं, और सृजनात्मक आदेश शक्ति और इच्छा के साथ समान रूप से प्रकट होता है।

हाँ, इच्छाशक्ति और सृजनात्मक आदेश के कार्य इस प्रकार के प्राणियों में शक्ति के समान प्रतीत होते हैं, जिनका भौतिक अस्तित्व अदृश्य है, हवा की तरह, जो अर्ध-भौतिक और अर्ध-अभौतिक है; वास्तव में, वे शक्ति के समान हैं। यह वैसा ही है जैसा कि

यद्यपि कुरान में चमत्कारिक व्याख्या का आदेश है, "वास्तव में, जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उसका आदेश होता है 'हो जाओ!' और वह हो जाती है" ताकि उन प्राणियों की ओर ध्यान आकर्षित किया जा सके जो भौतिक और अभौतिक के बीच एक समस्थानिक हैं।

इस प्रकार यह 'हा' जैसे दिव्य अक्षरों के पवित्र अर्थ के अनुरूप है ।

मीम. ता. सिन., और अलिफ. लाम. मीम. कि वे प्रत्येक वायु के कणों के बीच स्विच होने चाहिए ताकि छिपे हुए, सूक्ष्म संबंधों के तारों को कंपन किया जा सके और इस प्रकार पृथ्वी और दिव्य सिंहासन के बीच अमूर्त पवित्र वायरलेस और दूरसंचार का साधन हो; यह पूरी तरह से उचित है कि यह उनका कार्य होना चाहिए।

दुनिया भर में फैले हवा के सभी कणों के कर्तव्यों के अलावा, वायरलेस, रेडियो, टेलीफोन और टेलीग्राफ जैसी चीज़ों के संबंध में आदेशों का पालन करना और बिजली जैसी सूक्ष्म शक्तियों के रिसीवर और कंडक्टर के रूप में कार्य करना - मैंने अपने बादाम के पेड़ के फूल में एक और कर्तव्य का अनुमान लगाया और देखा। बहती हवा में हवा के स्पर्श से पेड़ ने जो स्थिति हासिल की - उसके कण रिसीवर की तरह उसी के अनुरूप हैं

एक ही क्षण में आदेश - और पृथ्वी के चेहरे पर सभी पेड़ एक अनुशासित सेना की तरह, मुझे दो और दो चार के बराबर एक निश्चित विश्वास प्रदान करते हैं।

अर्थात्, वायु पृथ्वी पर एक तेज और चपल सेवक है, जो परम दयालु और करुणामयी के अतिथियों की सेवा करती है। रेडियो और टेलीफोन रिसीवर तथा आदेश के अधीन सैनिकों के समान, इसके सभी कण उस परम दयालु के पवित्र आदेशों को पौधों और जानवरों तक पहुँचाते हैं। "'हो!' और यह हो जाता है" के आदेश पर वे उन प्राणियों के लिए पंखे के रूप में कार्य करने, उनकी श्वसन सहायता करने जैसे अनेक व्यवस्थित कर्तव्य निभाते हैं; अर्थात्, उनके रक्त को शुद्ध करने, जीवन के जल को, और उनके शरीर की ऊष्मा को, जीवन की अग्नि को प्रज्वलित करने का कर्तव्य निभाने के बाद, वे उनसे निकलते हैं और उनके मुँह में शब्द बनाने का साधन बनते हैं।

हवा के इस गुण के परिणामस्वरूप, जब अक्षर, हवा के प्राणी, पवित्रता प्राप्त करते हैं; अर्थात, जब वे ग्रहणकर्ता होने का स्थान लेते हैं; अर्थात, वे ग्रहणकर्ता होने का स्थान लेते हैं क्योंकि वे कुरान के अक्षर हैं, और स्विच की तरह बन जाते हैं, और इससे भी अधिक जब कुछ सूरा के आरंभ में अक्षर उन गुप्त संबंधों के संवेदनशील केंद्रीय स्विच बन जाते हैं, जिस तरह हवा में उनके अस्तित्व में यह गुण होता है, उसी तरह मन में और यहां तक कि शिलालेखों के रूप में उनके अस्तित्व में भी इसका हिस्सा होता है। यानी, भौतिक दवाओं की तरह, उन अक्षरों को पढ़ने और लिखने से उपचार और अन्य उद्देश्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

एस सहायता एन भालू

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
कह दो, "यदि सागर मेरे पालनहार के शब्दों की स्याही होती, तो सागर मेरे पालनहार के शब्दों से कहीं अधिक जल्दी समाप्त हो जाता, चाहे हम उसकी सहायता के लिए उसके समान एक और सागर जोड़ दें।" (18:109)

[यह महान श्लोक एक विशाल, ऊंचा महासागर है। इसके सभी रत्नों का वर्णन करने के लिए एक बड़ी मात्रा। इसलिए उन कीमती रत्नों को किसी और समय के लिए स्थगित करते हुए, अभी मैं उन सत्यों को याद करने के लिए एक सूक्ष्म बिंदु की कुछ किरणों की व्याख्या करूँगा। वे कुछ दिन पहले पाँच दैनिक प्रार्थनाओं के बाद पढ़ी जाने वाली तस्बीहात के दौरान मेरे सामने धुंधले रूप से दिखाई दिए, जो मेरे लिए एक महत्वपूर्ण समय है, और मेरा ध्यान आकर्षित किया। मैंने उन्हें उस समय नहीं लिखा और वे धीरे-धीरे धुंधले होते गए। इसलिए इससे पहले कि वे पूरी तरह से खो जाएँ ताकि उन बिंदुओं की अभिव्यक्ति का पता लगाया जा सके, मैं कुछ शब्द कहूँगा जैसे कि उन्हें घेर रहा हूँ।]

प्रथम शब्द: ज्ञान और शक्ति की तरह ईश्वरीय गुण होने के नाते, पूर्व-शाश्वत वाणी अनंत है। निश्चय ही, यदि समुद्र किसी अनंत वस्तु की स्याही होते, तो वे कभी भी उसके अंत तक नहीं पहुँच पाते।

दूसरा शब्द: वाणी सबसे स्पष्ट और सबसे शक्तिशाली चीज़ है जो किसी के अस्तित्व को ज्ञात कराती है। किसी की वाणी सुनने से यह साबित होता है कि वह हज़ारों प्रमाणों की तरह स्पष्ट रूप से मौजूद है, बल्कि उसे देखने से भी उतना ही स्पष्ट है। इस प्रकार अपने सांकेतिक अर्थ के माध्यम से, यह श्लोक कहता है:

"यदि समुद्र ईश्वरीय वाणी की सीमा तक स्याही होते, जो सर्व-महिमावान पालनकर्ता के अस्तित्व को प्रदर्शित करता है, और पेड़ कलम होते, और उन्हें उनकी वाणी लिखनी होती, तो वे कभी समाप्त नहीं होते। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह कोई भी वाणी अपनी सीमा तक और उसे बोलने वाले के अस्तित्व की गवाही देने की सीमा तक इंगित करती है, उसी तरह जिस सीमा तक उपरोक्त वाणी उसे बोलने वाले की ओर इशारा करती है और उसके बारे में बताती है - वह एकमात्र और शाश्वत रूप से चाहने वाला - माप से परे है, इसलिए यदि सभी समुद्र स्याही होते, तो भी वे इसे लिखने के लिए अपर्याप्त होते।"

तीसरा वचन: सभी वर्गों के लोगों को विश्वास की सच्चाई सिखाते समय, चमत्कारिक व्याख्या की कुरान स्पष्ट रूप से उसी सत्य को दोहराती है, जो किसी सत्य को स्थापित करने, सत्यापित करने और उन्हें विश्वास दिलाने की बुद्धि के अनुसार है। यह आयत वास्तव में यहूदी विद्वानों द्वारा, जो उस समय के विद्वान लोग थे, इस संबंध में पैगंबर मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) पर किए गए पूरी तरह से अनुचित हमलों का जवाब है, क्योंकि वह अनपढ़ और विद्वान नहीं थे। यह इस प्रकार है:

श्लोक कहता है: “अनेक लाभों से युक्त सत्य का दोहराव

और ज्ञान के अनेक उदाहरणों, जैसे सत्यापन और अनुनय के लिए अलग-अलग और चमत्कारी तरीकों से परिणाम, सीमित भाषण या बौद्धिक कमी या पूंजी की कमी से उत्पन्न नहीं होते हैं। न ही ऐसे मामलों की पुनरावृत्ति जैसे विश्वास के स्तंभ, जिनमें हज़ारों सत्य शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक असीम रूप से मूल्यवान है, ताकि उन्हें विशेष रूप से लोगों के दिलों में स्थापित किया जा सके। क्योंकि कुरान ईश्वरीय वाणी के अनंत, अनंत पूर्व-शाश्वत खजाने से निकलता है, और अदृश्य दुनिया के कारण प्रकट दुनिया की ओर मुड़ा हुआ है, मनुष्य और जिन्न, आत्माओं और फ़रिश्तों से बात करता है, प्रत्येक व्यक्ति के कानों में गूंजता है। यदि समुद्र स्याही होते, संवेदनशील प्राणी लेखक होते, पौधे कलम होते, और पूर्व-शाश्वत वाणी के शब्दों को गिनने के लिए कलम की नोक होते, जो कुरान का स्रोत है, तो भी वे कभी भी उनके अंत तक नहीं पहुँचेंगे। क्योंकि वे सीमित हैं, जबकि ईश्वरीय वाणी अनंत है।”

चौथा शब्द: यह स्पष्ट है कि किसी अप्रत्याशित वस्तु से वाणी निकलने से वाणी की प्रभावकारिता बढ़ जाती है और उस पर ध्यान दिया जाता है। बादलों और खास तौर पर वायुमंडल जैसे बड़े पिंडों की वाणी जैसी आवाजें हर किसी को सुनने पर मजबूर कर देती हैं। पहाड़ के आकार के ग्रामोफोन की आवाज और भी अधिक ध्यान आकर्षित करती है। कुरान की स्वर्गीय आवाज, जो आकाश के स्तरों को ग्रामोफोन रिकॉर्ड के रूप में लेती है, पृथ्वी के ग्लोब के प्रमुख को सुनने के लिए निकलती है। और रेडियो की शक्ति से, हवा के अणु उसके अक्षरों के रिसीवर और ट्रांसमीटर की तरह बन जाते हैं। यह आयत इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि वायु के अणु प्रत्येक, सर्वज्ञानी कुरान के अक्षरों के लिए दर्पण, जीभ, सुई की नोंक और कान बन जाते हैं, और यह इंगित करता है कि वे अक्षर कितने महत्वपूर्ण, मूल्यवान, सार्थक और जीवित हैं, और कहता है: "कुरान, जो ईश्वरीय वाणी है, इतनी जीवित और मूल्यवान है कि यदि सभी समुद्र स्याही बन जाएं, और फ़रिश्ते लेखक, और सूक्ष्म कण नोंक, और पौधे और बाल कलम बन जाएं, जितने कान इसे सुनते हैं और इसे सुनते हैं, और जितने पवित्र शब्द उन कानों में प्रवेश करते हैं, तब भी वे कभी भी समाप्त नहीं हो सकते।"

नहीं, वे कभी भी समाप्त नहीं हो सकते, क्योंकि यदि सर्वशक्तिमान ईश्वर मनुष्य की दुर्बल, प्राणहीन वाणी को वायु में लाखों गुना बढ़ा दे, तो निश्चय ही आकाश और पृथ्वी के उस अद्वितीय अधिपति की वाणी का प्रत्येक शब्द, जो समस्त पृथ्वी और आकाश को देखता है तथा उनमें स्थित सभी चेतन प्राणियों को सम्बोधित करता है, वायु के कणों की संख्या के बराबर शब्द होगा।

पाँचवाँ शब्द : इसमें दो अक्षर हैं।

प्रथम अक्षर: जिस प्रकार वाणी के दिव्य गुण में शब्द होते हैं, उसी प्रकार शक्ति में देहधारी शब्द होते हैं, तथा ज्ञान में भी दिव्य निर्णय के बुद्धिमान शब्द होते हैं; ये सभी प्राणी हैं। जीवित प्राणी, तथा छोटे प्राणी।

विशेष रूप से जीव, प्रत्येक प्रभुत्वशाली शब्द हैं जो भाषण से कहीं अधिक शक्तिशाली तरीके से पूर्व-शाश्वत वक्ता की ओर इशारा करते हैं। यदि समुद्र स्याही होते तो वे कभी भी समाप्त नहीं हो सकते थे। अर्थात्, यह पद इस अर्थ को भी सांकेतिक रूप में देखता है।

दूसरा पत्र: स्वर्गदूतों और मनुष्यों, और यहाँ तक कि जानवरों द्वारा प्राप्त सभी प्रेरणाएँ एक प्रकार की दिव्य वाणी हैं। इसके शब्द निश्चित रूप से अनंत हैं। इसका मतलब है कि यह श्लोक हमें बता रहा है कि दिव्य आदेश की प्रेरणाएँ और शब्द कितने असंख्य और अनंत हैं जो पूर्ण संप्रभुता के असंख्य समूहों को लगातार प्राप्त होते रहते हैं।

ज्ञान केवल अल्लाह के पास है। अल्लाह के अलावा कोई भी अदृश्य को नहीं जानता।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
और हमने लोहा उतारा, जिसमें बड़ी लड़ाई के लिए सामान है और लोगों के लिए बहुत-से लाभ भी हैं। (57:25)

[उपर्युक्त श्लोक के बारे में पूछे गए प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर, जो बहुत महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि इसके द्वारा आधुनिक विज्ञान के ज्ञान वाले एक प्रमुख व्यक्ति ने कई होजों को चुप करा दिया था।]

प्रश्न: सामान्यतः यह कहा जाता है कि लोहा धरती से निकाला जाता है, तो फिर इस आयत में यह क्यों कहा गया है कि “हमने उतारा” या “प्रकट किया” बजाय इसके कि हमने खोदा या निकाला; यह अनुचित प्रतीत होता है?

उत्तर: “हमने भेजा” वाक्यांश के साथ, चमत्कारिक व्याख्या का कुरान लोहे की विशाल और महत्वपूर्ण उदारता को याद दिलाता है। क्योंकि यह लोहे को केवल अपने लिए नहीं मानता है ताकि इसे निकाला जाए, बल्कि लोहे में मौजूद जबरदस्त ईश्वरीय उदारता को याद करता है और यह कि मानव जाति इसके लिए कितनी जरूरतमंद है। इसका उदारता होने का पहलू नीचे से ऊपर की ओर नहीं आता है, बल्कि दया के खजाने से नीचे आता है। दया का खजाना निश्चित रूप से ऊंचा, ऊपर और उच्च स्तर पर है, इसलिए उदारता ऊपर से उतरती है; और जरूरतमंद मानव जाति का स्तर निश्चित रूप से नीचे है। उदारता का दान जरूरत से बेहतर है, इसलिए इस तथ्य को व्यक्त करने का सही तरीका कि उदारता मानव जाति की जरूरत को पूरा करने के लिए दया के खजाने से आती है, यह है कि “हमने भेजा;” यह नहीं है कि हमने निकाला।

साथ ही, चूँकि लोहे का क्रमिक निष्कर्षण मनुष्य के हाथ में है, इसलिए निष्कर्षण शब्द लापरवाह व्यक्ति को इसके गुणों के बारे में सचेत नहीं करता। यदि इसका अर्थ लोहे के भौतिक पदार्थ से है, तो इसे इसकी भौतिक स्थिति के अनुसार निकाला जाता है। लेकिन लोहे का गुणधर्म, जो यहाँ अभिप्रेत अर्थ है, अमूर्त है। यह अर्थ भौतिक स्थिति को नहीं, बल्कि अमूर्त डिग्री या स्तर को देखता है। दया के खजाने से आने वाले उपहार, जो कि परम दयालु की असीम रूप से उच्च डिग्री का प्रकटीकरण है, निश्चित रूप से उच्चतम स्तर से निम्नतम स्तर तक भेजे जाते हैं। इस प्रकार, सही अभिव्यक्ति है "हमने भेजा:" यह मानव जाति को याद दिलाता है कि लोहा सबसे महान दिव्य उपहारों में से एक है।

हाँ, लोहा ही मानव जाति के सभी उद्योगों, उसकी उन्नति और प्रगति का स्रोत है, और उसकी शक्ति और ताकत का साधन है। इसलिए इस महान उदारता और अनुग्रह के उपहार को याद करने के लिए, कुरान ने बहुत ही शानदार ढंग से कहा है:

और हमने लोहा उतारा, जिसमें बड़ी लड़ाई के लिए सामग्री है और लोगों के लिए बहुत-से लाभ भी हैं।

इसी प्रकार यह दाऊद के महत्वपूर्ण चमत्कार के बारे में घोषणा करता है:

और हमने उसके लिए लोहे को नरम कर दिया। (34:10)

अर्थात्, यह लोहे के नरम होने की ओर इशारा करता है, जो एक महान पैगम्बर के लिए एक महान चमत्कार और महान उपहार है।

दूसरा: ऊपर और नीचे सापेक्ष हैं। वे पृथ्वी के केंद्र के संबंध में ऊपर और नीचे हैं। वास्तव में, जो चीज हमारे संबंध में नीचे है, वह अमेरिकी महाद्वीप के दृष्टिकोण से ऊपर है। इसका मतलब है कि पृथ्वी के केंद्र से इसकी सतह पर आने वाले पदार्थों की स्थिति सतह पर लोगों की स्थिति के अनुसार बदलती है।

चमत्कारों की भाषा में, चमत्कारों की व्याख्या करने वाला कुरान कहता है कि लोहे में इतने सारे लाभ हैं और इसके इतने व्यापक उपयोग हैं कि यह पृथ्वी के भंडार से निकाला जाने वाला कोई सामान्य पदार्थ नहीं है, और यह कोई प्राकृतिक पदार्थ नहीं है जिसका किसी आकस्मिक आवश्यकता के लिए उपयोग किया जा सके। बल्कि, लोहे के सामान्य उपयोगों को व्यक्त करने के लिए यह कहता है कि यह ब्रह्मांड के निर्माता द्वारा दया के खजाने और ब्रह्मांड की विशाल कार्यशाला में संग्रहीत एक उपहार है जिसे उसने पृथ्वी के निवासियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए आकाश और पृथ्वी के पालनहार की अपनी राजसी उपाधि के माध्यम से भेजा है। यह ऐसा है जैसे कि बारिश, गर्मी और रोशनी की तरह, जो आसमान से उतरती हैं, इसमें ऐसे सर्वव्यापी लाभ हैं कि इसे ब्रह्मांड की कार्यशाला से भेजा गया था, न कि पृथ्वी के संकीर्ण भंडार से। इसे ब्रह्मांड के महल में दया के महान खजाने में तैयार किया गया था, और पृथ्वी के भंडार में रखा गया था, जहां से इसे सदियों से जरूरत के हिसाब से थोड़ा-थोड़ा करके निकाला जाता है।

क़ुरआन इस छोटे से भंडार से थोड़ा-थोड़ा करके निकाले जाने वाले लोहे को सिर्फ़ इस्तेमाल किए जाने के रूप में नहीं बताना चाहता, बल्कि इसे धरती के गोले के साथ सर्वोच्च खजाने से एक बहुत बड़ी सौगात के रूप में उतारना चाहता है। यानी धरती के घर के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ लोहा है, क्योंकि जब महान रचयिता ने धरती को सूरज से अलग करके इंसानों के लिए उतारा, तो उसने उसके साथ लोहा भी उतारा और इंसानों की ज़्यादातर ज़रूरतें इसी से पूरी कीं। हिकमत वाला क़ुरआन चमत्कारी अंदाज़ में हुक्म देता है: “इस लोहे का इस्तेमाल अपने कामों में करो और इसे खोदकर निकालने की कोशिश करो और इसका फ़ायदा उठाओ।”

आयत में दो वरदानों का वर्णन किया गया है; शत्रुओं का प्रतिकार और लाभों का आकर्षण। कुरान के अवतरण से पहले लोहे का उपयोग महत्वपूर्ण मानवीय उपयोगों के लिए किया जाता था, लेकिन "जिसमें शक्तिशाली युद्ध के लिए सामग्री है" वाक्यांश के साथ यह इंगित करता है कि भविष्य में, इसका उपयोग समुद्र, हवा और भूमि के माध्यम से यात्रा करने के लिए किया जाएगा, और यह दुनिया को आश्चर्यजनक रूप से और आश्चर्यजनक रूप से अपने अधीन कर लेगा, और एक अद्भुत मृत्यु-प्रधान शक्ति का प्रदर्शन करेगा। इस प्रकार इसके विभिन्न प्रकार के चमत्कारों में से, यह भविष्य की भविष्यवाणी करने में चमत्कारीता की एक झलक दिखाता है।

उपरोक्त बिंदु पर चर्चा करते समय, सुलैमान के हूपो का विषय सामने आया। हमारे भाइयों में से एक लगातार सवाल पूछने वाले ने पूछा: "हूपो ने सर्वशक्तिमान ईश्वर को "जो आकाश और पृथ्वी में छिपी हुई चीज़ों को प्रकाश में लाता है" (27:25) वाक्य में अपेक्षाकृत महत्वहीन विशेषता के साथ वर्णित करने का क्या कारण है, जबकि अधिक महत्वपूर्ण दिव्य गुण हैं?

उत्तर: वाक्पटुता का एक पहलू यह है कि वक्ता को उस व्यवसाय या शिल्प को समझाना होता है जिसमें वह ज़्यादातर काम करता है। खानाबदोश ज्योतिषियों की तरह जो अरब प्रायद्वीप में सहज रूप से उन जगहों का पता लगाते हैं जहाँ पानी पाया जा सकता है, सोलोमन का हुपु, पक्षियों और जानवरों में से एक ज्योतिषी, एक धन्य पक्षी था जिसे विभिन्न कर्तव्यों में नियुक्त किया गया था और उसने सोलोमन (जिस पर शांति हो) के लिए पानी भी खोजा था, ताकि उसका इस्तेमाल किया जा सके। यह अपनी कला के माध्यम से बता रहा है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर आकाश और पृथ्वी में छिपी चीज़ों को बताकर अपनी पूजा और सजदा करने की योग्यता साबित करता है।

हां, हूपो ने इसे अच्छी तरह से समझा, क्योंकि धरती के नीचे मौजूद असंख्य बीजों और खनिजों की स्वाभाविक प्रवृत्ति नीचे से ऊपर की ओर उभरने की नहीं है।
क्योंकि ऐसे प्राणियों में जीवन और इच्छाशक्ति का अभाव होता है, इसलिए वे अपनी इच्छा से ऊपर नहीं जा सकते; वे केवल नीचे की ओर ही गिर सकते हैं। धरती के भारीपन के नीचे छिपा हुआ शरीर निश्चित रूप से अपने कंधों से उस भारी बोझ को उतारकर ऊपर नहीं उठ सकता। इसका मतलब है कि वह ऐसा किसी अद्भुत शक्ति के माध्यम से करता है।

हुपु ने अपनी भविष्यवाणी के माध्यम से ईश्वर की उपासना के लिए योग्यता के इस सबसे गुप्त और महत्वपूर्ण प्रमाण को समझ लिया था, इसलिए सर्वज्ञानी कुरान ने इसके बारे में अपने कथन को एक चमत्कारिकता प्रदान की।

[1] यह रेफेट को संदर्भित करता है, जो प्रश्न पूछने में तो मेहनती है, लेकिन लिखने में आलसी है!

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
और उसने तुम्हारे लिए आठ चौपाये जोड़े-जोड़े उतारे। वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों में एक के बाद एक क्रम से पैदा करता है। (39:6)

इस श्लोक में वही बात समाहित है जिसे हमने श्लोक की चर्चा में समझाया था,
"और हमने लोहा उतारा।" (57:25) यह उसी की पुष्टि करता है और उसी से प्रमाणित भी होता है।

सूरा अल-जुमर में यह कहकर कि, "और उसने तुम्हारे लिए आठ गायों को जोड़े में उतारा," और यह न कहकर कि: और उसने तुम्हारे लिए आठ गायों को जोड़े में बनाया, चमत्कारिक व्याख्या का कुरान कह रहा है: "आठ प्रकार के धन्य जानवर तुम्हारे लिए दया के खजाने से उतारे गए हैं, जैसे कि वे स्वर्ग के उपहार हैं।" हाँ, वे धन्य जानवर अपने सभी अंगों के साथ मानव जाति के लिए एक उपहार हैं, क्योंकि उनके ऊन या बालों से खानाबदोशों के मोबाइल घर और कपड़े बनाए जाते हैं, उनके मांस से अच्छा भोजन बनाया जाता है, उनके दूध से स्वादिष्ट भोजन मिलता है, उनके चमड़े से जूते और अन्य चीजें बनाई जाती हैं, खेती की जमीन को उनके गोबर से पोषण मिलता है और लोग उससे ईंधन बनाते हैं। यह ऐसा है जैसे कि वे धन्य जानवर शुद्ध उपहार और मूर्त दया हैं।

इसी कारण से जैसे बारिश को "दया" (रहमा) कहा जाता है, वैसे ही इन धन्य जानवरों को "उपकार" (अन'आम) कहा जाता है। जैसे कि देहधारी दया बारिश बन जाती है, वैसे ही देहधारी कृपा बकरियों, भेड़ों, मवेशियों, जल-भैंसों और ऊँटों का रूप ले लेती है।
यह तो निश्चित है कि उनके भौतिक शरीर पृथ्वी पर बनाए गए हैं, लेकिन चूंकि उदारता का गुण और दया का अर्थ उनके भौतिक अस्तित्व पर पूरी तरह से हावी है, इसलिए वाक्यांश "और उसने भेजा" के अनुसार, दयालु निर्माता ने इन धन्य जानवरों को अपनी दया की उच्च डिग्री और अपने उन्नत, अमूर्त स्वर्ग से सीधे दया के खजाने से उपहार के रूप में भेजा।

कभी-कभी उच्च मूल्य की कला ऐसी सामग्री में मौजूद होती है जिसका मूल्य लगभग शून्य होता है। इसे कला के संबंध में महत्व दिया जाता है, न कि सामग्री के मूल्य के आधार पर, जैसे कि एक मक्खी की छोटी सी सामग्री और उसके भीतर उत्कृष्ट प्रभुत्वशाली कला। कभी-कभी पाँच लीरा की मूल्यवान सामग्री में कुछ भी मूल्य न होने वाली कला होती है; तब सामग्री प्रमुख हो जाती है।

ठीक उसी तरह, कभी-कभी किसी भौतिक पदार्थ में उदारता और दया का अर्थ इस हद तक पाया जाता है कि वह भौतिक पदार्थ से सौ गुना ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है। भौतिक पदार्थ बिलकुल छिपा हुआ है और उदारता का उसका पहलू प्रबल है। इस प्रकार, जिस तरह लोहे के विशाल लाभ और उससे मिलने वाले कई उत्पाद उसके भौतिक पहलू को छिपा देते हैं, उसी तरह वर्णित धन्य जानवरों के प्रत्येक सदस्य में उदारता मौजूद है।

ऊपर वाले ने उनके भौतिक पदार्थ को उदारता में बदल दिया है। इसी कारण से उनके अभौतिक गुणों पर विचार किया गया है, और उनके भौतिक अस्तित्व की उपेक्षा की गई है, और इसे इन वाक्यांशों के साथ व्यक्त किया गया है, "और उसने भेजा," और, "और हमने भेजा।"

ये दोनों वाक्यांश वास्तविकता के संदर्भ में उपर्युक्त बिंदु को बताते हैं, और वे वाक्पटुता के संबंध में चमत्कारिक रूप से एक महत्वपूर्ण अर्थ व्यक्त करते हैं। यह इस प्रकार है:

अपनी अत्यंत कठोर प्रकृति के साथ-साथ, तथा अक्सर गहरे भूमिगत छिपे होने के कारण, लोहा हर जगह पाया जाता है, तथा इसे आसानी से नरम होने का गुण प्राप्त है। इसलिए हर कोई इसे हर जगह हर चीज के लिए आसानी से प्राप्त कर सकता है। इसे व्यक्त करने के लिए, यह वाक्यांश “और हमने लोहा उतारा” के माध्यम से बताता है कि लोहे के औजार इतनी आसानी से प्राप्त होते हैं जैसे कि वे ऊपर किसी कार्यक्षेत्र से प्राकृतिक, स्वर्गीय उपहार के रूप में भेजे गए हों, तथा मनुष्य के हाथ में दिए गए हों।

इसके अलावा, हालांकि मच्छर से लेकर सांप, बिच्छू, भेड़िये और शेर तक कुछ जानवरों की प्रजातियाँ इंसानों के लिए हानिकारक हैं, लेकिन बड़े जानवर जैसे कि भैंस, बैल और ऊँट, जो जानवरों में महत्वपूर्ण हैं, बेहद विनम्र और आज्ञाकारी होते हैं। इतना कि उन्हें एक बच्चा भी चला सकता है। उनकी आज्ञाकारिता के विचार को व्यक्त करने के लिए, "और उसने तुम्हारे लिए आठ गायों को जोड़े में भेजा" आयत में कहा गया है कि न तो जंगली और न ही खतरनाक होने के कारण, ये धन्य जानवर सांसारिक जानवरों जैसे नहीं हैं। वे बल्कि स्वर्ग के जानवरों की तरह उपयोगी और हानिरहित हैं। उन्हें ऊपर से, यानी दया के खजाने से भेजा गया है।

शायद यही कारण है कि कुछ कुरान के टीकाकारों ने कहा है कि ये जानवर जन्नत से उतारे गए हैं। सर्वज्ञ कुरान के एक अक्षर के बारे में पूरा पेज लिखना कोई अतिशयोक्ति नहीं है, क्योंकि यह ईश्वर का वचन है। इसलिए "और हमने उतारा" इस कथन पर दो या तीन पेज लिखना व्यर्थ नहीं है।

कभी-कभी कुरान का एक अक्षर खजाने की कुंजी होता है।

---

[1] कुछ कुरानिक टिप्पणीकारों का यह कहना कि "उनका उद्गम आकाश था" का आशय यह था कि यह: "अन'अम" के नाम से जाने जाने वाले जानवरों का निरंतर अस्तित्व पोषण के माध्यम से है, और उनका पोषण चारा है। चारे का पोषण बारिश है। बारिश जीवन और दया का पानी है; इसलिए पोषण भी स्वर्ग से आता है। आयत, "और स्वर्ग में हमारा पोषण है" (51:22) इसी बात का संकेत देती है।

चूँकि उन जानवरों का निरंतर नवीनीकृत अस्तित्व आसमान से आने वाली बारिश में निहित है, इसलिए "और उसने नीचे भेजा" अभिव्यक्ति उपयुक्त है, क्योंकि यह नीचे से भेजे जाने का अर्थ व्यक्त करता है।

आकाश।

एस्कीशेहिर जेल में लिखी गई रचनाएँ
रिसाले-ए-नूर के छात्रों के लिए एक सच्ची सांत्वना के रूप में

मेरे प्यारे भाइयो!

मैं तुम्हारे लिए बहुत दुखी था; मैं दुख से टूट गया था। लेकिन मुझे यह बताया गया कि ईश्वरीय निर्णय और तुम्हारे भाग्य ने तुम्हें इस जेल का पानी पीने और खाने के लिए रोटी, सब एक साथ दिया है। मैंने देखा कि ईश्वरीय दया और प्रभु की कृपा के प्रतीक के रूप में, तुम्हारा एक साथ यह रोटी खाना और यह पानी पीना सबसे आसान, सबसे हल्का, सबसे अच्छा और सबसे पुण्य का तरीका था; यह जेल रिसाले-ए-नूर के छात्रों के लिए शिक्षा का सबसे लाभदायक स्थान था, और अग्नि परीक्षा का सबसे शानदार स्थान था; यह परीक्षा का सबसे कठिन स्थान था जो सिखाता था कि अपने दुश्मनों के सामने विवेक से काम करना कितना आवश्यक है। मैंने इसे अध्ययन और टेकके के एक चमकदार स्थान के रूप में देखा, जहाँ हम अपने दोस्तों के उच्च गुणों और अच्छी विशेषताओं से सीख सकते हैं और लाभ उठा सकते हैं, जो सभी अलग-अलग हैं, और उनके बीच भाईचारे को स्थापित और नवीनीकृत कर सकते हैं। इसलिए मैंने इस स्थिति के बारे में शिकायत नहीं की, बल्कि अपनी पूरी आत्मा के साथ धन्यवाद दिया। हाँ, हमारा तरीका धन्यवाद है।

और यह हर चीज में दया का एक पहलू, उदारता का एक पहलू देखना है।

आपके भाई की ओर से जो आप सभी के दुखों से दुखी है,

एस सहायता एन भालू

* * *

एक नियम

रिसाले-ए-नूर के छात्रों को रिसाले-ए-नूर के घेरे के बाहर प्रकाश की तलाश नहीं करनी चाहिए, और वे इसकी तलाश नहीं कर सकते। अगर वे ऐसा करेंगे, तो उन्हें रिसाले-ए-नूर की खिड़की से प्रकाश देने वाले अमूर्त सूर्य की जगह एक दीपक मिलेगा, और शायद वे सूर्य को खो देंगे।

इसके अलावा, रिसाले-ए-नूर के दायरे में दोस्ती और भाईचारे का शुद्ध और शक्तिशाली तरीका, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए कई आत्माओं को प्राप्त करता है और नबूवत की विरासत के रहस्य के माध्यम से साथियों के भाईचारे के तरीके को दर्शाता है, उस क्षेत्र के बाहर आध्यात्मिक मार्गदर्शक या पिता की तलाश करने की कोई आवश्यकता नहीं छोड़ता है, एक तरह से जो उनके लिए तीन मामलों में हानिकारक है; यह एक पिता के स्थान पर कई अबेई यानी बड़े भाइयों को प्रदान करता है। बड़े भाइयों की संयुक्त करुणा एक पिता की करुणा को शून्य कर देती है।

रिसाले-ए-नूर मंडल में प्रवेश करने से पहले जिस व्यक्ति के पास कोई शेख है, वह प्रवेश करने के बाद भी उसे अपने पास रख सकता है। लेकिन जिस व्यक्ति के पास कोई शेख नहीं है, वह केवल मंडल के भीतर ही मार्गदर्शक की तलाश कर सकता है।

इसके अलावा, रिसाले-ए-नूर के दायरे में सिखाया जाने वाला वास्तविकता का ज्ञान, जो पैगम्बरत्व की विरासत, महान संतत्व की चमक प्रदान करता है, उस दायरे के बाहर सूफी सम्प्रदायों की कोई आवश्यकता नहीं छोड़ता - जब तक कि वे आत्म-भोगी लोग न हों जो सूफीवाद के मार्ग को गलत समझते हों, सुखद सपनों और कल्पनाओं, प्रकाश और आध्यात्मिक सुखों के आदी हों, और सांसारिक, काल्पनिक सुखों की इच्छा रखते हों जो परलोक के गुणों से भिन्न हों, और ऐसा पद चाहते हों जहां लोग उनका सहारा ले सकें।

यह संसार श्रम और सेवा का निवास है; प्रतिफल कष्ट और कठिनाई के अनुरूप है; यह पुरस्कार का स्थान नहीं है। इसलिए वास्तविकता के लोग प्रकाश और चमत्कारों के सुखों और प्रकाशों को कोई महत्व नहीं देते। वास्तव में, वे कभी-कभी उनसे भाग जाते हैं और उन्हें छिपाना चाहते हैं।

इसके अलावा, रिसाले-ए-नूर का दायरा बहुत बड़ा है और इसके छात्र भी बहुत ज़्यादा हैं। यह ऐसे किसी को नहीं चाहता जो इससे अलग हो जाए। यह उन्हें कोई महत्व नहीं देता और शायद उन्हें फिर से स्वीकार भी न करे। हर किसी का दिल एक ही होता है और एक ही दिल दायरे के अंदर और बाहर दोनों जगह नहीं हो सकता।

इसके अलावा, जो लोग बाहर मार्गदर्शन चाहते हैं, उन्हें रिसाले-ए-नूर के छात्रों के साथ खुद को व्यस्त नहीं करना चाहिए। क्योंकि उन्हें तीन तरह से नुकसान हो सकता है। जो लोग ईश्वर के डर की सीमा के भीतर हैं, उन्हें मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है, लेकिन इसके बाहर बहुत से लोग हैं जो पाँचों समय की नमाज़ें नहीं पढ़ते हैं। बाद की नमाज़ को छोड़कर पहले की नमाज़ में खुद को व्यस्त रखना मार्गदर्शन नहीं है। अगर ऐसा व्यक्ति छात्रों से प्यार करता है, तो उसे पहले मंडली में शामिल होना चाहिए और पिता नहीं, बल्कि भाई बनना चाहिए, और अगर वह बहुत गुणी है, तो बड़ा भाई बनना चाहिए।

इस घटना से यह भी स्पष्ट हो गया है कि रिसाले-ए-नूर से लगाव बहुत महत्वपूर्ण है और इसकी बहुत बड़ी कीमत है। अगर वह समझदार है तो जो व्यक्ति यह कीमत देकर इस्लामी दुनिया के नाम पर अधर्म के खिलाफ संघर्ष करने का रुख अपनाएगा, वह हीरे के समान मूल्यवान इस रास्ते को छोड़कर दूसरे रास्ते को नहीं अपनाएगा।

कहा

एस्कीशेहिर जेल में लिखा गया एक छोटा सा लेख

मेरे भाइयो!

कई मौकों पर मैंने रिसाले-ए-नूर के छात्रों का इस तरह से बचाव किया है

जिसके वे हकदार हैं। ईश्वर की इच्छा से, मैं इसे अदालत में जोर से बोलूंगा। मैं दुनिया को रिसाले-ए-नूर और उसके छात्रों के मूल्य दोनों के बारे में सुनाऊंगा। हालाँकि, मैं आपको निम्नलिखित बातों की याद दिलाता हूँ: मेरे बचाव में आपके मूल्य का यह उल्लेख रखने की शर्त यह है कि आप इस मामले में अपने दर्दनाक अनुभवों के कारण रिसाले-ए-नूर पर, न ही अपने गुरु पर, न ही अपने भाइयों पर उन कठिनाइयों के बहाने घृणा महसूस करें जो आप झेल रहे हैं, न ही एक दूसरे पर दोष निकालें या आरोप लगाएँ।

आपको याद होगा कि ईश्वरीय निर्धारण पर ग्रंथ में हमने साबित किया है कि हमारे साथ होने वाली गलतियों के दो पहलू हैं: एक है मनुष्य का पहलू, दूसरा है ईश्वरीय निर्धारण का पहलू। इसी तरह, मनुष्य गलत करता है, लेकिन ईश्वरीय निर्धारण निष्पक्ष है और न्याय के साथ काम करता है। हमारे इस मामले में, हमें मनुष्य के अत्याचार और गलत कामों की तुलना में ईश्वरीय निर्धारण के न्याय और ईश्वरीय ज्ञान के रहस्य के बारे में अधिक सोचना चाहिए।

हां, ईश्वरीय आदेश ने रिसाले-ए-नूर के छात्रों को इस सभा में बुलाया था।

और इसमें समझदारी उनकी कोशिशों और संघर्ष का प्रकटीकरण था, जिसने उन्हें जोसेफ के इस सचमुच बहुत ही दुखद स्कूल की ओर धकेल दिया। मनुष्य का अत्याचार और बहाने ही साधन थे। इसलिए सावधान रहें, एक दूसरे से यह न कहें: "अगर मैंने ऐसा-ऐसा नहीं किया होता तो मुझे गिरफ्तार नहीं किया जाता।"

एस सहायता एन भालू

* * *

मेरे बचाव भाषण का एक अंश,
जिसे यहां शामिल किया गया था और बाद में हटाया नहीं गया

मैं न्यायालय के प्रमुख और सदस्यों से एक महत्वपूर्ण अधिकार की मांग करता हूं, जो इस प्रकार है:

इस मामले में सिर्फ़ मेरा व्यक्तित्व ही जांच के दायरे में नहीं है, इसलिए मुझे दोषमुक्त करने और मामले की वास्तविकता से अवगत होने से मामला सुलझ जाएगा। क्योंकि धर्मपरायण और विद्वान लोगों का सामूहिक व्यक्तित्व राष्ट्र की नज़रों में कलंकित हो चुका है, और सरकार में धर्मपरायण और धार्मिक विद्वानों के प्रति अविश्वास पैदा हो चुका है, और उन्हें यह जानने की ज़रूरत है कि वे उनके खिलाफ़ ख़तरनाक और हानिकारक प्रयासों से कैसे बचें। इसलिए मैं अनुरोध करता हूँ कि यह

मेरे बचाव का अंतिम भाग नए अक्षरों में छपवाकर वितरित किया जाए। तब धर्मात्मा और विद्वान षडयंत्रों के बहकावे में नहीं आएंगे, और न ही किसी खतरनाक और नुकसानदेह उद्यम में शामिल होंगे। उनका सामूहिक व्यक्तित्व राष्ट्र की नजरों में संदिग्ध होने से बच जाएगा। सरकार को भी विद्वानों पर भरोसा हो जाएगा और यह गलतफहमी खत्म हो जाएगी। इस तरह की घटनाएं और गलतफहमियां, जो सरकार और राष्ट्र और देश के लिए बेहद हानिकारक हैं, फिर कभी नहीं दोहराई जाएंगी।

एस सहायता एन भालू

* * *

मेरे भाइयो!

यदि सभी लोग, यहाँ तक कि मैं भी, रिसाले-ए-नूर की रक्षा और संरक्षण से पीछे हट जाऊँ, तो हमारे पाँच भाइयों को पीछे नहीं हटना चाहिए। ये हैं हुसेन उस्ता, हलील 'ब्राहिम, रेफ़ेट बे, हुसेरेव और हक्क' इफ़ेंडी। पहले तीन की अनैच्छिक सावधानी की कमी... बाद के दो के खुले दुश्मनों की व्यक्तिगत शिकायतों के कारण - इरादा रिसाले-ए-नूर को अत्यधिक नुकसान पहुँचाना था। यदि इसके परिणामस्वरूप रिसाले-ए-नूर जैसी बड़ी इनामी राशि का वितरण और महत्वपूर्ण हद तक लोगों तक पहुँचाया न गया होता, तो ये भाई इतने सारे निर्दोष रिसाले-ए-नूर छात्रों को दुखी करने के कारण बहुत दुखी होते। इसलिए, सभी से ज़्यादा, इन पाँच भाइयों को सतर्क और एकजुट रहना चाहिए।

एस सहायता एन भालू

* * *

मेरे भाइयो!

मेरे दिल में यह बात घर कर गई कि जिस तरह मथनावी कुरान के सूर्य से प्रकट होने वाले सात सत्यों में से एक का दर्पण है, इस प्रकार एक पवित्र महिमा प्राप्त करता है और मेवलवी के अलावा दिल के असंख्य लोगों का अमर मार्गदर्शक बन जाता है; उसी तरह रिसाले-ए-नूर के दर्पण में कुरान के सूर्य के प्रकाश के सात रंग और उसके विभिन्न, बहुरंगी तेजोमय प्रकाश एक साथ दर्शाए गए हैं। ईश्वर की इच्छा से, यह वास्तविकता के लोगों के लिए एक शाश्वत मार्गदर्शक और शिक्षक होगा, जो सात मामलों में प्रतिष्ठित और पवित्र होगा, जितना कि सात मथनावी।

* * *

मेरे भाइयो!

महान रक्षक की सुरक्षा को देखिए! रिसाले-ए-नूर के ग्रंथों की संख्या के साथ संयोग से, एक सौ बीस लोगों से उनके गोपनीय दस्तावेजों के साथ पूछताछ की गई। फिर भी विदेशियों की साज़िशों और गुप्त समाजों की चालों के बावजूद, रिसाले-ए-नूर के किसी भी छात्र को कई मौजूदा संगठनों में से किसी से जोड़ने के लिए कुछ भी नहीं मिला। यह प्रभु की सुरक्षा और ईश्वरीय संरक्षण का सबसे स्पष्ट और शानदार उदाहरण था, और इमाम अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) और ग़ौतुल-आज़म (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की रिसाले-ए-नूर के बारे में अद्भुत भविष्यवाणियों की पुष्टि करने वाले परम दयालु की कृपा थी। हमारे बयालीस निर्दोष, अन्यायी भाइयों के हाथ ईश्वरीय दरबार में प्रार्थना में उठे, उन पर निर्देशित एक मिसाइल को रोक दिया, इसे वापस कर दिया और वास्तव में इसे उन लोगों के सिर पर विस्फोट कर दिया जिन्होंने इसे चलाया था। हमारा नुकसान केवल कुछ मामूली कट और चोटों तक सीमित है, जिसका हमें इनाम मिलेगा। पिछले साल से चार्ज की जा रही बंदूक से इतनी मामूली चोट के साथ बच जाना एक चमत्कार है। इस तरह के महान उपहार के लिए किसी को धन्यवाद और खुशी के साथ जवाब देना चाहिए। इसके बाद हमारा जीवन हमारा अपना नहीं होगा, क्योंकि भ्रष्टाचार फैलाने वालों की योजनाओं के अनुसार, हमें पूरी तरह से मिटा दिया जाना था। इसका मतलब है कि इसके बाद हमें अपने जीवन को खुद के लिए नहीं, बल्कि सच्चाई और वास्तविकता के लिए समर्पित करना चाहिए। हमें हमेशा चीजों में दया के निशान, चेहरे और सार को देखने की कोशिश करनी चाहिए, जो हमें शिकायत करने के बजाय धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करेगा।

एस सहायता एन भालू

* * *

मैं अपने भाइयों से अनुरोध करता हूँ कि वे किसी परेशानी, या आत्मा की परेशानी, या मितव्ययिता, या शैतान की चालों से धोखा खाने, या उनमें से कुछ के द्वारा कही गई अपमानजनक भाषा के कारण एक दूसरे पर नाराज़ न हों। उन्हें यह नहीं कहना चाहिए कि उनके सम्मान का अपमान किया गया है। जो भी बुरे शब्द बोले जाते हैं, मैं उन्हें अपने ऊपर ले लेता हूँ।

उन्हें बुरा नहीं मानना चाहिए। अगर मेरे पास सौ सम्मान होते तो मैं अपने भाइयों के बीच प्रेम और सौहार्द के लिए उन सभी को त्याग देता।

एस सहायता एन भालू

* * *

मेरे भाइयो!

पिछले दो-तीन दिनों में मुझे यह बात समझ में आ गई है कि दुर्भाग्य से हमें ईश्वरीय कृपा का झटका लगा है। मुझे यह भी समझ में आ गया है कि विद्रोह करने वाले लोगों के बारे में लिखी गई एक आयत में कई संकेत दिए गए हैं, जो हमारी ओर इशारा करते हैं। यह है:

फिर जब वे अपनी चेतावनी भूल गए जो उन्हें दी गई थी, तो हमने उनसे जवाब माँगा (6:44; 7:165)

अर्थात्, “जब उन्होंने उस शिक्षा और सलाह को भूला दिया जिससे हमने उन्हें सावधान किया था और उसके अनुसार कार्य नहीं किया, तो हमने उन्हें पकड़ लिया और उन पर विपत्ति डाल दी।”

हां, हाल ही में हमें ईमानदारी के अर्थ पर एक ग्रंथ लिखने के लिए प्रेरित किया गया था। सच में, यह भाईचारे का सबसे उज्ज्वल और ऊंचा नियम था, एक पवित्र सिद्धांत जो दस लोगों को उन विपत्तियों और घटनाओं का सामना करने की अनुमति देता है, जिनका सामना आम तौर पर हजारों की ताकत से ही किया जा सकता है। लेकिन दुर्भाग्य से हमने, और सबसे बढ़कर मैंने, चेतावनी के अनुसार काम नहीं किया। आयत के सांकेतिक अर्थ के अनुसार, जाफ़र के विज्ञान के अनुसार, "हमने उनसे जवाब मांगा" का मूल्य एक हज़ार तीन सौ बावन है। हमें उसी तारीख को गिरफ्तार किया गया था। हममें से कुछ लोगों ने ईश्वरीय करुणा से एक थप्पड़ खाया। दूसरों ने ऐसा झटका नहीं सहा, लेकिन हमारे भाइयों को सांत्वना देने के लिए इन कष्टों में शामिल किया गया, जिन्होंने इसे झेला, ताकि यह पुरस्कार और लाभ कमाने का एक साधन हो सके।

तीन महीने तक मुझे दूसरों से मिलने-जुलने से रोका गया, लेकिन पिछले तीन दिनों से मैं अपने भाइयों की मनःस्थिति को जानने में सक्षम हूँ। ईमानदारी के अर्थ के विपरीत एक अकल्पनीय घटना घटी, जिसमें मेरे विचार से भाई सबसे ईमानदार थे। इससे मुझे समझ में आया कि आयत का एक सांकेतिक अर्थ, "लेकिन जब वे उस चेतावनी को भूल गए जो उन्हें मिली थी.... तो अचानक हमने उनसे जवाब मांगा" हमें दूर से दिखाई दिया। गुमराह लोगों के लिए, जिनके लिए यह आयत उतरी है, यह सज़ा है, लेकिन हमारे लिए यह हमारी आत्माओं को प्रशिक्षित करने, पापों के प्रायश्चित के रूप में, और ताकि हम अपने आध्यात्मिक स्तर को बढ़ा सकें, ईश्वरीय करुणा से एक झटका है। इस बात का सबूत कि हमें यह झटका इसलिए लगा क्योंकि हमने ईश्वरीय कृपा के मूल्य को पूरी तरह से नहीं समझा, यह है कि हम रिसाले-ए-नूर के माध्यम से कुरान की अपनी पवित्र सेवा से संतुष्ट नहीं थे, जो ईश्वर के मार्ग में सबसे पवित्र प्रयास है जो नबूवत की विरासत के रहस्य के माध्यम से 'महान संतत्व' की चमक प्राप्त करता है और साथियों के मार्ग का सार प्राप्त करने का एक साधन है। कई मौकों पर मेरी सख्त चेतावनियों के कारण, सूफी संप्रदाय में शामिल होने की इच्छा को रोक दिया गया, जिसके लाभ इस समय हमारे लिए बहुत कम हैं और संभवतः हमें बहुत नुकसान पहुंचा सकते थे।

इस स्थिति में नुकसान पहुँचाना उचित नहीं है। अन्यथा, हमारी एकता नष्ट हो जाती, और इससे विचारों में मतभेद पैदा होते, जिससे चार अलिफ़ों का मूल्य - जो एकजुटता के माध्यम से एक हजार एक सौ ग्यारह होते हैं - घटकर चार हो जाता, और आपसी विरोध, जिससे हमारी ताकत शून्य हो जाती।

गुलिस्तान के लेखक शेख सादी शिराज़ी कहते हैं: "मैंने एक दिलवाले को आध्यात्मिक यात्रा में व्यस्त रहते हुए टेकके में देखा। कई दिनों बाद मैंने उसे मदरसे में छात्रों के बीच देखा। मैंने उससे पूछा कि वह दीप्तिमान टेकके को छोड़कर धार्मिक विद्यालय में क्यों आया है। उसने उत्तर दिया कि वहाँ हर कोई खुद को बचा सकता है, अगर वह सफल हो जाए, जबकि यहाँ धार्मिक विद्यालय में उच्च आकांक्षा वाले लोग खुद के अलावा कई अन्य लोगों को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। कुलीनता और उच्च प्रयास उनके थे; गुण और परिश्रम उनके थे; इसीलिए वह वहाँ गया था।

शेख सादी ने अपनी पुस्तक 'गुलिस्तान' में इसका सारांश लिखा है।

इसलिए यदि छात्रों द्वारा क्रियाओं का विश्लेषण करने का छोटा सा मामला, टेककों में पाठ करने से बेहतर है, क्योंकि रिसाले-ए-नूर विश्वास के स्वीकारोक्ति के पवित्र सत्यों को सबसे स्पष्ट और सबसे निश्चित तरीके से सिखाता है: "मैं ईश्वर, और उसके फ़रिश्तों, और उसकी किताबों, और उसके पैगम्बरों, और अंतिम दिन में विश्वास करता हूँ" और सबसे कट्टर नास्तिकों और हठी दार्शनिकों को इसे त्यागने, या इसकी गतिविधियों को ठप्प करने, या इससे संतुष्ट न होने, और रिसाले-ए-नूर की अनुमति लिए बिना विघटित सूफी टेककों में प्रवेश करने के लिए सूफी तरीके की इच्छा करने को चुप करा देता है, तो यह पूरी तरह से गलत है और दिखाता है कि हम ईश्वरीय करुणा के इस प्रहार के कितने हकदार हैं।

एस सहायता एन भालू

* * *

एक चेतावनी

[दो लघु कथाएँ]

पहला : पंद्रह साल पहले जब मैं रूस के उत्तर में युद्ध बंदी था, तब मुझे नब्बे अन्य अधिकारियों के साथ एक बड़े कारखाने में रखा गया था। असुविधा और दमनकारी परिस्थितियों के कारण कई बार बहस और उपद्रव हुए। मैं उन्हें शांत करता था, क्योंकि वे सभी मेरा बहुत सम्मान करते थे। मैंने शांति बनाए रखने के लिए चार-पांच अधिकारियों को नियुक्त किया और उनसे कहा: "जब भी तुम शोरगुल सुनो, वहाँ जाओ और जो पक्ष गलत है उसकी मदद करो।" यह सच है कि इस एहतियात से शोर बंद हो गया। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैंने उन लोगों की मदद क्यों की जो गलत थे। जवाब में मैंने उनसे कहा:

गलत लोग अन्यायी होते हैं। वे किसी भी लाभ को नहीं छोड़ते

सार्वजनिक शांति के लिए चालीस गुना ज़्यादा। जबकि जो व्यक्ति सही है वह निष्पक्ष है। वह अपने मित्र के लाभ के लिए अपने अधिकार का त्याग करता है, जिसका मूल्य बहुत कम है, जो सार्वजनिक शांति का हिस्सा है और बहुत मूल्यवान है। अशांति समाप्त हो जाती है और शांति बहाल हो जाती है। इस वार्ड के नब्बे लोग आराम से रह सकते हैं। अगर सही व्यक्ति की मदद की जाए, तो शोर और भी बढ़ जाएगा। इस तरह के सामुदायिक जीवन में, सामान्य भलाई को प्राथमिकता दी जाती है।

और इसलिए, मेरे भाईयों! हमारे इस सामूहिक जीवन में, यह मत कहो: "मैं अपने भाई से तंग आ गया हूँ, क्योंकि उसने मेरे साथ अन्याय किया है।" ऐसा करना एक बहुत बड़ी गलती है। अगर आपके ऐसे किसी दोस्त ने आपको थोड़ा नुकसान पहुँचाया है, तो आपका उस पर गुस्सा होना हमें बहुत बड़ी कीमत चुकाने वाला नुकसान पहुँचाता है। यह संभव है कि इससे रिसाले-ए-नूर को भी बहुत नुकसान हो। लेकिन, भगवान का शुक्र है कि हमारे दोस्तों को बार-बार पूछताछ के लिए जाने से रोक दिया गया, इसलिए हमारे शक्तिशाली और उचित बचाव को कोई नुकसान नहीं पहुँचा। अन्यथा किसी की आँख में मक्खी का पंख लग जाना या बारूद में चिंगारी गिर जाना, जैसे थोड़ी सी नाराज़गी के कारण भाई-बहन बहुत बड़ा नुकसान पहुँचा सकते हैं।

दूसरी कहानी: एक बार एक बुजुर्ग महिला के आठ बेटे थे। उसने अपने पास मौजूद रोटियों में से हर एक को एक रोटी दी, लेकिन अपने लिए एक भी नहीं बची। इसलिए हर एक ने अपनी आधी रोटी उसे दे दी। उसके पास चार रोटियाँ रह गईं, जबकि उनकी आधी रोटी रह गई।

मेरे भाइयो! मैं भी आप चालीस लोगों की इस विपत्ति में आधी पीड़ा अनुभव करता हूँ। मैं अपनी विपत्तियों पर ध्यान नहीं देता। एक दिन मैं बहुत दुखी हुआ और अपनी पिछली स्थिति पर विचार करने लगा कि क्या मैं अपने किसी पाप का दण्ड भुगत रहा हूँ। मैंने देखा कि इस विपत्ति को भड़काने और भड़काने में मेरा कोई हाथ नहीं था; इसके विपरीत मैंने इसे टालने के लिए हर संभव उपाय किया था। इसका अर्थ है कि यह ईश्वरीय आदेश है। पिछले वर्ष से षड्यंत्रकारियों ने हमारे विरुद्ध इसकी योजना बनाई थी और इसे अपरिहार्य बना दिया था। इसे टालना संभव नहीं था। यह अपरिहार्य था कि हम इसमें उलझें। सर्वशक्तिमान ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद कि उन्होंने इस विपत्ति को सौ से घटाकर एक कर दिया।

इसलिए इस तथ्य के परिणामस्वरूप, मुझे यह कहकर दोष न दें कि "हम इस विपत्ति को आपके कारण झेल रहे हैं!" बल्कि मुझे क्षमा करें, और मेरे लिए प्रार्थना करें। और एक-दूसरे की आलोचना न करें, यह कहते हुए कि: "यदि आपने ऐसा-ऐसा नहीं किया होता, तो यह नहीं होता।" उदाहरण के लिए, हमारे एक भाई ने दो या तीन हस्ताक्षरों का उल्लेख किया, जिससे उपद्रवी लोग बहुत से लोगों को विपत्ति में फँसाने की जो योजना बना रहे थे, उस पर रोक लग गई और बहुत से लोग इससे बच गए। यह नुकसान का कारण नहीं था, बल्कि बहुत बड़ा लाभ था। इसके परिणामस्वरूप बहुत से निर्दोष लोग इस विपत्ति से बच गए।

एस सहायता एन भालू

[यह लेख बहुत मूल्यवान है। दूसरे बिंदु तक हर कोई इससे लाभ उठा सकता है।]

एस्कीशेहिर में घटित कुछ अप्रिय स्थितियों के संबंध में
जेल, बुरी नैतिकता के कारण नहीं, बल्कि संकट के कारण, यह एक प्रसिद्ध श्लोक के एक अच्छे बिंदु के बारे में है जो अभी तक प्रकट नहीं हुआ है, और अच्छे आचरण से संबंधित एक बिंदु है।

पहला बिंदु

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी संपूर्ण उदारता, करुणा और न्याय के कारण अच्छे कामों में तत्काल पुरस्कार और बुरे कामों में तत्काल दंड शामिल किया है। उसने अच्छे कामों में आध्यात्मिक सुख शामिल किया है जो परलोक के पुरस्कारों की याद दिलाता है, जबकि बुरे कामों में आध्यात्मिक दंड शामिल किया है जो नरक की यातनाओं की याद दिलाता है।

उदाहरण के लिए, विश्वासियों के बीच प्रेम विश्वासियों के लिए एक सराहनीय कार्य है। उस अच्छे काम में आध्यात्मिक आनंद, संतुष्टि, मन की शांति शामिल है जो परलोक के भौतिक पुरस्कारों को याद करती है। जो कोई भी अपने दिल का जिक्र करता है, उसे यह आनंद महसूस होगा।

और उदाहरण के लिए, विश्वासियों के बीच दुश्मनी और शत्रुता एक ऐसी बुराई है जो नेक आत्माओं को अंतरात्मा की पीड़ा का एहसास कराती है जो दिल और आत्मा पर हावी हो जाती है। मैंने खुद इसे शायद सौ से ज़्यादा बार अनुभव किया है: जब मैंने किसी विश्वासी भाई के प्रति दुश्मनी महसूस की है तो मुझे इतनी पीड़ा हुई है कि मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं रह गया है कि यह मेरे बुरे काम की तत्काल सज़ा थी।

और उदाहरण के लिए, सम्मान के योग्य लोगों के प्रति सम्मान दिखाना, और दया के योग्य लोगों के प्रति दया दिखाना और उनकी सहायता करना अच्छे कर्म हैं, अच्छे कर्म हैं। वे इतने बड़े आनंद और संतुष्टि को देते हैं कि वे परलोक में पुरस्कार का एहसास कराते हैं। और वे सम्मान और करुणा को इतना बढ़ाते हैं कि व्यक्ति अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार हो जाता है। एक माँ को अपने बच्चे के लिए महसूस की गई करुणा के माध्यम से जो आनंद और पुरस्कार मिलता है, वह इतना बड़ा हो सकता है कि वह इसके लिए अपने जीवन का बलिदान कर दे। मुर्गी जो अपने बच्चे को बचाने के लिए शेर पर हमला करती है, वह पशु जगत में इस सत्य का एक उदाहरण है। इसका मतलब है कि करुणा और सम्मान में तत्काल पुरस्कार है। उच्च आकांक्षा वाले उदार लोग इसे महसूस करते हैं, और इस कारण से वे अपना वीर रवैया अपनाते हैं।

और उदाहरण के लिए, लालच और अपव्यय में ऐसी सज़ा है जो उसके दिल और आत्मा को पीड़ित करती है, यह मनुष्य को शिकायती और चिंतित बनाती है, और उसे भ्रमित करती है। और ईर्ष्या और जलन में ऐसी तत्काल सज़ा है जो उसे महसूस करने वाले को जला देती है। जबकि संतोष और भरोसे में

ईश्वर पर श्रद्धा रखने से ऐसा तत्काल, आनंददायक प्रतिफल मिलता है कि वह गरीबी और दरिद्रता के सभी कष्टों और क्लेशों को दूर कर देता है।

और उदाहरण के लिए, अभिमान और अहंकार में भारी बोझ है, क्योंकि अभिमानी व्यक्ति सभी से सम्मान चाहता है। और क्योंकि इस इच्छा के कारण उसे तिरस्कृत किया जाता है, इसलिए वह निरंतर पीड़ा सहता है। हाँ, सम्मान दिया जाता है, इसे मांगा नहीं जा सकता है।

और उदाहरण के लिए, विनम्रता और अहंकार का त्याग एक सुखद पुरस्कार है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं को पसंद करने के भारी बोझ से बच जाता है।

और उदाहरण के लिए, निराशावाद में और हमेशा चीजों की प्रतिकूल व्याख्या करना इस दुनिया में एक तत्काल सजा है। "जो कोई भी मारता है, वह मारा जाता है" नियम के अनुसार, जो लोग दूसरों के बारे में प्रतिकूल सोचते हैं, उनके बारे में भी प्रतिकूल सोचा जाता है। जो लोग अपने विश्वासी भाइयों के कार्यों की गलत व्याख्या करते हैं, उनके कार्यों की भी गलत व्याख्या की जाती है, और वे इसके लिए दंड भुगतते हैं।

और इसी तरह, सभी अच्छे और बुरे कर्मों को इसी पैमाने पर मापा जाना चाहिए। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि जो लोग इस समय रिसाले-ए-नूर में प्रकट हुई कुरान की चमत्कारिकता को देखते हैं, वे इन आध्यात्मिक सुखों का अनुभव करें; ईश्वर की इच्छा से वे बुरे आचरण से पीड़ित नहीं होंगे।

* * *

दूसरा बिंदु

[बाईस बिंदुओं में से दूसरा]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
मैंने जिन्न और मनुष्य को केवल इसलिए पैदा किया कि वे मेरी उपासना करें। * मैं *
उनसे कोई भोजन नहीं चाहता, न ही मैं चाहता हूँ कि वे मुझे भोजन दें।
निस्संदेह अल्लाह ही है जो सब को रोज़ी देता है, वह सर्वशक्तिमान प्रभु है, वह सदैव स्थिर रहनेवाला है। (51:56-8)

बहुत दिनों तक ये आयतें मेरे मन को परेशान करती रहीं, क्योंकि कुरान की कई टीकाओं के अनुसार इनका स्पष्ट अर्थ कुरान की उच्च चमत्कारिकता को प्रतिबिम्बित नहीं करता था। अब मैं उनके अत्यंत सुन्दर और उच्च अर्थों के तीन पहलुओं को संक्षेप में समझाऊंगा, जो कुरान की दीप्ति से निकलते हैं।

पहला: कभी-कभी सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने लिए कुछ ऐसी स्थितियाँ निर्धारित करता है जो उसके रसूल से संबंधित हो सकती हैं, ताकि उसे सम्मान और महिमा मिले। यहाँ भी, आयतें, "मैंने तुम्हें इबादत के लिए बनाया है, न कि मुझे रोज़ी देने और खिलाने के लिए," का यह अर्थ है: "मेरा रसूल अपने संदेशवाहक होने और इबादत के दायित्वों को तुम तक पहुँचाने के बदले में कोई पारिश्रमिक, प्रतिफल या इनाम या भोजन नहीं चाहता है;" वे महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) को भोजन दिए जाने का उल्लेख करते हैं और

अन्यथा यह कुछ स्व-स्पष्ट और स्पष्ट जानकारी देना होगा, और कुरान की चमत्कारी वाक्पटुता के साथ असंगत होगा।

दूसरा पहलू: मनुष्य अपने भोजन के बारे में अत्यधिक चिंतित रहता है। इसलिए कहीं ऐसा न हो कि वह भोजन प्राप्त करने को उपासना की उपेक्षा करने का बहाना बना ले या इसे बहाना बना ले, इसलिए आयत कहती है: “तुम भोजन प्राप्त करने के लिए बनाए गए हो। तुम्हारी रचना का परिणाम ही उपासना है। भोजन प्राप्त करना एक प्रकार की उपासना है, क्योंकि यह ईश्वरीय आदेश है। मैंने तुम्हारा और तुम्हारे परिवारों और मेरे प्राणियों के भोजन का प्रबंध करने का बीड़ा उठाया है; यह मेरा काम है; तुम भोजन और भोजन प्राप्त करने के लिए नहीं बनाए गए हो, क्योंकि मैं ही अन्नदाता हूँ। मैं अपने सेवकों, जो तुम्हारे आश्रित हैं, का भोजन प्रदान करता हूँ। इसलिए इसे बहाना मत बनाओ और उपासना मत छोड़ो!”

अगर इसका मतलब यह नहीं है, तो यह स्पष्ट कथन बन जाता है, क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर को भोजन और जीविका प्रदान करना स्वयं-स्पष्ट रूप से असंभव है। यह बयानबाजी का एक स्थापित नियम है कि अगर किसी वाक्य का अर्थ स्पष्ट और स्पष्ट है, तो यह वह अर्थ नहीं है जो अभिप्रेत है, बल्कि वह अर्थ है जो इसके द्वारा आवश्यक है और उस पर निर्भर है। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी से कहते हैं: "आप हाफ़िज़ हैं," तो यह स्पष्ट कथन है।

इसका अभिप्रेत अर्थ है "मैं जानता हूँ कि आप हाफ़िज़ हैं।" आप उसे सूचित कर रहे हैं क्योंकि वह नहीं जानता था कि आप जानते हैं।

इस प्रकार, इस नियम के परिणामस्वरूप, उस श्लोक का अर्थ, जिसमें सर्वशक्तिमान ईश्वर को भोजन देने का निषेध एक रूपक है, यह है: "तुम मेरे प्राणियों के लिए भोजन उत्पन्न करने के लिए नहीं बनाए गए थे, जो मेरे हैं और जिनके भरण-पोषण का प्रबंध मैंने किया है। तुम्हारा मूल कर्तव्य उपासना है। लेकिन मेरे आदेशों के अनुसार जीविका प्राप्त करने का प्रयास करना भी एक प्रकार की उपासना है।"

तीसरा पहलू: सूरा अल-इखलास में इसका स्पष्ट अर्थ है,

वह न तो जन्माता है, न ही वह जन्मा है(112:3)

यह स्वयं-स्पष्ट और स्पष्ट है, इसलिए इसका एक और अर्थ अभिप्रेत है जो इसके द्वारा आवश्यक है। कहने का तात्पर्य यह है कि, सर्वशक्तिमान ईश्वर बहुत स्पष्ट रूप से और स्वयं-स्पष्ट रूप से कहते हैं "वह न तो जन्म देता है, न ही वह जन्मा है," जिसका अर्थ है: "जिस किसी के पास पिता और माता है वह ईश्वर नहीं हो सकता," और, "पूर्व-अनंत और उत्तर-अनंत", यीशु (UWP), और उज़ैर, और स्वर्गदूतों, और सितारों, और अन्य झूठे देवताओं की दिव्यता को नकारना। यह हमारे उदाहरण के साथ भी वैसा ही है, श्लोक, "सर्व-महिमावान प्रदाता, आपकी पूजा की वस्तु, को अपने लिए जीविका की आवश्यकता नहीं है, आपको उसे भोजन प्रदान करने के लिए नहीं बनाया गया था" का अर्थ है: "जीविका और भोजन प्राप्त करने की क्षमता वाली चीजें देवता और पूजा की वस्तु नहीं हो सकती हैं," जिसका अर्थ है: "जीविका की आवश्यकता वाले और प्रदान किए जा रहे प्राणी पूजा के योग्य नहीं हैं।"

एस सहायता एन भालू

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
या जब वे दोपहर को आराम करने के लिए सो रहे थे। (7:4)

यह रेफ़त की जिज्ञासा के कारण लिखा गया था और उसने 'क़ाइलुन' शब्द के बारे में पूछा था - जो कि दोपहर के विश्राम के लिए सोया था - इस आयत में, "या जब वे दोपहर के विश्राम के लिए सोए थे" और यह उसकी हीरे जैसी कलम को जेल में निष्क्रिय होने से बचाने के लिए लिखा गया था, तथा यह अन्य लोगों की तरह सुबह की प्रार्थना के बाद सो जाने के कारण सुस्त होने से बचाने के लिए लिखा गया था।

नींद तीन प्रकार की होती है:

पहला ग़ालुला है । यह सुबह से लेकर सूरज उगने के चालीस मिनट बाद तक का समय है, यह वह समय है जब नमाज़ जायज़ है लेकिन निंदनीय है। इस समय सोना पैगंबर (UWBP) के आचरण के विपरीत है, क्योंकि हदीसों के अनुसार, इससे आजीविका में कमी आती है और यह निष्फल हो जाती है। जीविकोपार्जन की तैयारी के लिए सबसे उपयुक्त समय वह है जब मौसम ठंडा हो। जब यह बीत जाता है तो व्यक्ति सुस्ती से घिर जाता है। कई अनुभवों से यह स्थापित हुआ है कि यह दिन भर के काम और अप्रत्यक्ष रूप से आजीविका के लिए हानिकारक है, और निष्फलता का कारण है।

दूसरा है फ़ायलूला। यह दोपहर की नमाज़ से लेकर सूर्यास्त तक होता है। इस समय सोने से जीवन में कमी आती है, यानी उस दिन जीवन छोटा हो जाता है और आधी नींद और तंद्रा की स्थिति में बीतता है, जिससे जीवन में शारीरिक कमी आती है।

इसके अलावा, अमूर्त रूप से, चूंकि दिन के अधिकांश परिणाम, भौतिक और अभौतिक, दोपहर की प्रार्थना के बाद स्पष्ट हो जाते हैं, इसलिए उस समय को नींद में गुजारने से मानो परिणाम प्राप्त होने में बाधा उत्पन्न होती है और दिन ऐसा हो जाता है मानो जीया ही न गया हो।

तीसरा है कय्युला, जो पैगम्बर (यू.डब्लू.बी.पी.) के आचरण के अनुरूप है।[1]

यह सुबह के मध्य से दोपहर के बाद तक होता है। ऐसी नींद सुन्नत है क्योंकि यह व्यक्ति को रात में प्रार्थना करने के लिए उठने की अनुमति देती है। इसी तरह अरब प्रायद्वीप में दोपहर के समय काम से आराम करने का रिवाज है जब बहुत गर्मी होती है, जो पैगंबर (UWBP) की इस प्रथा की पुष्टि करता है। यह नींद जीवन और जीविका दोनों को बढ़ाती है। आधे घंटे की कय्युला नींद रात में दो घंटे की नींद के बराबर है। इसका मतलब है कि यह हर दिन एक व्यक्ति के जीवन में डेढ़ घंटे जोड़ती है। यह मौत के भाई नींद के हाथ से डेढ़ घंटे बचाता है और उसे जीवन देता है, जिससे व्यक्ति की आजीविका के लिए काम करने का समय बढ़ जाता है।

[1] इब्न माजाह, सियाम, 22; अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, iv, 531; अल-'अजलूनी, कशफ़ अल-ख़फ़ा', 330; अल-अल्बानी, साहिह जामी अल-सगीर, नंबर: 4307।

“यह भी अच्छा है”

नमाज़ के बाद तस्बीहात में जब मैंने "हे ईश्वर के रसूल, आप पर अनंत आशीर्वाद और अनंत शांति हो" पढ़ा, तो मैंने दूर से एक सूक्ष्म बिंदु देखा जो धीरे-धीरे सामने आया। मैं इसे पूरी तरह से समझ नहीं पाया, और इसके बारे में एक या दो वाक्यों का उल्लेख करूँगा।

मैंने देखा कि रात की दुनिया दुनिया के एक नए खुले घर की तरह है। मैं रात के समय इशा की नमाज़ के दौरान उसमें दाखिल हुआ। चूँकि इंसान पूरी दुनिया से जुड़ा हुआ है, इसलिए कल्पना के एक असाधारण विस्तार के ज़रिए मैंने उस रात शक्तिशाली दुनिया को एक घर के रूप में देखा। जीवित प्राणी और इंसान इतने छोटे हो गए कि वे अदृश्य हो गए। मैंने कल्पना से देखा कि एकमात्र चीज़ जो उस घर में निवास करती थी और उसे परिचित बनाती थी, और उसे रोशनी से भर देती थी, वह थी मुहम्मद (UWBP) का सामूहिक व्यक्तित्व। जैसे कोई व्यक्ति घर में प्रवेश करते समय उपस्थित लोगों का अभिवादन करता है, वैसे ही मैं यह कहने की इच्छा से अभिभूत हो गया: "हे ईश्वर के रसूल, आप पर अनंत शांति हो!"[1] ऐसा लग रहा था जैसे मैं उन्हें सभी मनुष्यों और जिन्न की संख्या में बधाई दे रहा हूँ। अर्थात्, मैंने सलाम पेश किया, जिसका अर्थ है: मैं आपके प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत करता हूं, आपके मिशन को स्वीकार करता हूं, आपके द्वारा लाए गए कानूनों और आदेशों का पालन करता हूं, और सलाम के माध्यम से बताता हूं कि वे हमारे हमलों से सुरक्षित रहेंगे, और मेरी दुनिया के सभी हिस्सों और सभी जिन्न और मनुष्यों, सभी सचेत प्राणियों को बोलते हुए, मैं उनके नाम पर सलाम पेश करता हूं।

जैसे उसने अपने साथ लाई रोशनी और उपहार के ज़रिए मेरी दुनिया को रोशन किया, वैसे ही वह इस दुनिया में हर किसी की दुनिया को रोशन करता है और उपहारों से भर देता है। उपहार के लिए कृतज्ञतापूर्वक प्रतिक्रिया में, मैंने कहा: "आप पर अनंत आशीर्वाद हो!" यानी, "हम आपकी इस अच्छाई का जवाब नहीं दे सकते, इसलिए हम आपके प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाते हुए विनती करते हैं कि हमारे निर्माता की दया के खजाने से, स्वर्ग के निवासियों की संख्या के बराबर आप पर दया की जाए।" मैंने अपनी कल्पना में इस अर्थ को समझा।

अपनी उपासना के संबंध में और सृजन से सृजनकर्ता की ओर मुड़ जाने के कारण, मुहम्मद (UWBP) के व्यक्तित्व को आशीर्वाद की आवश्यकता है जिसका अर्थ दया है। जबकि उनके संदेशवाहक होने और

[1] मुहम्मद (यू.डब्लू.बी.पी.) को प्राप्त ईश्वरीय दया अनंत काल तक उनके समुदाय की सभी आवश्यकताओं को देखती है। जिस कारण से, अनंत अभिवादन उचित है। यदि कोई व्यक्ति असावधानी के कारण उजाड़, खाली और अंधकारमय दुनिया जैसे विशाल घर में प्रवेश करता है, तो वह कितना भयभीत और निराश होगा
फिर अचानक घर में रोशनी होती है और एक परिचित, मिलनसार, प्यारा और प्रिय लेफ्टिनेंट सबसे आगे दिखाई देता है। अगर वह घर के दयालु और उदार मालिक का वर्णन करता है और इसकी सभी फिटिंग और साज-सज्जा के माध्यम से उसे बताता है, तो आप समझ सकते हैं कि यह कितना आनंद, परिचय, खुशी, रोशनी और सहजता देगा। इससे आप मैसेंजर (UWBP) के लिए बधाई के मूल्य और खुशी की सराहना कर सकते हैं।

सृष्टिकर्ता की ओर से सृष्टि की ओर भेजा गया दूत होने के नाते, उसे शांति की आवश्यकता है। वह जिन्न और मनुष्यों की संख्या के लिए शांति का हकदार है, और हम उनकी संख्या के प्रति अपनी निष्ठा का सामान्य नवीनीकरण पेश करते हैं। इसी तरह वह स्वर्ग के निवासियों की संख्या और उन सभी के नाम पर दया के खजाने से आशीर्वाद का हकदार है। क्योंकि यह उसके द्वारा लाई गई ज्योति के माध्यम से था कि सभी चीजों की पूर्णता स्पष्ट हो गई, और प्राणियों का मूल्य प्रकट हो गया, और प्राणियों के प्रमुख कर्तव्यों को देखा जा सका, और प्राणियों में दिव्य उद्देश्यों को जाना जा सका। इसलिए, यदि सभी चीजें मौखिक रूप से वही बोलें जो वे अपने स्वभाव की जीभ के माध्यम से व्यक्त करते हैं, तो यह निश्चित है कि वे घोषणा करेंगे: "आशीर्वाद और शांति आप पर हो, हे ईश्वर के रसूल!", और हम उन सभी के नाम पर कहते हैं: "अनंत आशीर्वाद और अनंत शांति आप पर हो, हे ईश्वर के पैगंबर, जिन्न और मनुष्यों और फ़रिश्तों और सितारों की संख्या के लिए!"

यह काफी है कि अल्लाह उसे आशीर्वाद प्रदान करे,
और उसको शांति और आशीर्वाद प्रदान करता है।

एस सहायता एन भालू

* * *

मेरे प्रिय भाई!

आप अस्तित्व की एकता की व्याख्या चाहते हैं। इकतीसवें पत्र के एक अंश में इस मामले से संबंधित मुहीउद्दीन के विचारों का एक बहुत ही शक्तिशाली और स्पष्ट उत्तर है। अभी के लिए हम बस इतना ही कहते हैं:

वर्तमान समय में लोगों को अस्तित्व की एकता का यह प्रश्न पढ़ाना गंभीर नुकसान पहुंचाता है। जैसे जब रूपक और उपमाएँ विद्वानों के हाथों से आम लोगों के हाथों में जाती हैं और ज्ञान विद्वानों से अज्ञानियों के पास जाता है, तो उन्हें अक्षरशः सत्य माना जाता है,1 उसी तरह जब अस्तित्व की एकता जैसे उच्च सत्य असावधान और कारणों में डूबे आम लोगों के पास जाते हैं, तो उन्हें प्रकृति माना जाता है, और वे नुकसान के तीन महत्वपूर्ण उदाहरण देते हैं।

पहला: अस्तित्व की एकता का मार्ग सर्वशक्तिमान ईश्वर के कारण ब्रह्मांड को नकारना ही है। इसके बावजूद, जब इसे असावधान आम लोगों द्वारा अपनाया जाता है और उनके विचारों में प्रवेश करता है जो विशेष रूप से भौतिकवादी विचारों से दूषित होते हैं, तो यह ब्रह्मांड और भौतिकता के कारण ईश्वरत्व को नकारने की ओर ले जाता है।

[1] ठीक उसी तरह जैसे दो स्वर्गदूतों को, जिन्हें कुछ रूपकों के संबंध में बैल और मछली कहा जाता है, आम लोगों द्वारा इसे एक विशाल बैल और बहुत बड़ी मछली माना जाता था।

दूसरा: अस्तित्व की एकता का मार्ग ईश्वर के अलावा किसी अन्य की प्रभुता को इतनी तीव्रता से अस्वीकार करता है कि यह ईश्वर के अलावा अन्य सभी चीजों को अस्वीकार करता है और द्वैत को हटा देता है। चूंकि यह किसी भी चीज के स्वतंत्र अस्तित्व को मान्यता नहीं देता है, बुराई करने वाली आत्माओं की तो बात ही छोड़िए, इस समय प्रकृति के विचार की प्रधानता और गर्व और अहंकार बुराई करने वाली आत्मा को फुलाते हैं और परलोक तथा सृष्टिकर्ता को भूला देते हैं, ऐसे लोगों में अस्तित्व की एकता को स्थापित करना जिनकी बुराई करने वाली आत्माएं छोटे फिरौन हैं और जो केवल अपने आप को ही अपनी पूजा की वस्तु बनाने के लिए तैयार हैं, बुराई करने वाली आत्मा को इतना फुला देता है कि - मैं ईश्वर की शरण लेता हूं - यह अब और नहीं रह सकता।

तीसरा : जबकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर सभी परिवर्तनों, फेरबदल, विभाजनों से मुक्त और मुक्त है, तथा समय या स्थान में समझे जाने योग्य होने से शुद्ध और उच्च है, अस्तित्व की एकता उन अवधारणाओं को जन्म देती है जो उसके आवश्यक अस्तित्व, पवित्रता और सभी दोषों से मुक्त होने के लिए उपयुक्त नहीं हैं, तथा झूठी शिक्षाओं को जन्म देती हैं।

हाँ, जो अस्तित्व की एकता की बात करता है, वह मन में ज़मीन से उठकर प्लीएडीज़ तक पहुँच जाए, ब्रह्माण्ड को पीछे छोड़ दे और अपनी दृष्टि को उस महान सिंहासन पर स्थिर कर दे, और इस ब्रह्माण्ड को अस्तित्वहीन मानकर आनंदित हो जाए, तो अपने विश्वास के बल से वह सब कुछ एकत्व के एकत्व से सीधे-सीधे देख सकता है। लेकिन जो व्यक्ति ब्रह्माण्ड के पीछे खड़ा होकर उसे देखता है, और अपने सामने कारणों को देखता है और ज़मीन से देखता है, वह संभवतः कारणों में डूबा रह सकता है और प्रकृति के दलदल में डूब सकता है। जो व्यक्ति मन में उठकर ईश्वरीय सिंहासन तक पहुँचता है, वह जलालुद्दीन रूमी की तरह कह सकता है: "सुनो! जो शब्द तुम सबके मुँह से सुनते हो, उन्हें तुम सर्वशक्तिमान ईश्वर के मुँह से सुनते हो, जैसे प्राकृतिक ग्रामोफोन।" लेकिन जो जलालुद्दीन जितना ऊँचा नहीं उठ सकता, और ज़मीन से लेकर दर्पण रूपी ईश्वरीय सिंहासन तक सभी प्राणियों को नहीं देख सकता, उससे अगर तुम कहो: "सुनो! तू हर चीज़ से ईश्वरीय वाणी सुनेगा," वह वास्तव में सिंहासन से ज़मीन पर गिर जाएगा, और सत्य के विपरीत झूठी कल्पनाओं से भी ग्रस्त हो जाएगा!

> कह दो, "अल्लाह ने इसे उतारा है।" फिर तुम उन्हें व्यर्थ की बातों और तुच्छ बातों में डूबे रहने दो। (6:91) पवित्र है वह अल्लाह, जिसका सार उसके समान किसी भी चीज़ से अधिक पवित्र है और जिसके गुण किसी भी चीज़ से रहित हैं और जिसकी निशानियाँ उसके प्रभुत्व की गवाही देती हैं। निश्चय ही उसका यश उच्च है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

एस सहायता एन भालू

* * *

एक प्रश्न का उत्तर

मेरे पास मुस्तफा साबरी1 और मूसा बेकूफ2 के विचारों को तौलने का समय नहीं है। मैं सिर्फ इतना कहूंगा कि एक एक अति पर चला गया और दूसरा दूसरी अति पर। मुस्तफा साबरी मूसा बेकूफ के सापेक्ष सही थे, लेकिन मुहीउद्दीन जैसे व्यक्ति को नीचा दिखाना उचित नहीं है जो इस्लामी विज्ञान का चमत्कार था।

हां, मुहीउद्दीन खुद सही मार्गदर्शित और स्वीकार्य थे, लेकिन उन्हें अपने सभी कामों के साथ मार्गदर्शक और प्रशिक्षक नहीं होना चाहिए। चूंकि वह अक्सर वास्तविकताओं में संतुलन के बिना आगे बढ़ते थे, इसलिए उन्होंने सुन्नियों के नियमों का विरोध किया और उन्होंने जो कुछ कहा, वह स्पष्ट रूप से गुमराही को दर्शाता है। हालांकि, वह खुद गुमराही से मुक्त थे। एक शब्द कभी-कभी अविश्वास प्रतीत हो सकता है, लेकिन जो इसे बोलता है वह अविश्वासी नहीं है। मुस्तफा साबरी ने इन बिंदुओं पर विचार नहीं किया; वह कट्टरता के कारण सुन्नी कानून के कुछ बिंदुओं के बारे में अतिवादी थे।

जहाँ तक मूसा बेकूफ का सवाल है, वह नवीनीकरण के अत्यधिक पक्षधर थे; इस वजह से और अपने विचारों के संबंध में आधुनिकता के प्रति अपनी रियायतों के कारण, वह बहुत बड़ी गलती में थे। उन्होंने अपनी गलत व्याख्याओं से इस्लाम की कुछ सच्चाइयों को भ्रष्ट कर दिया। उन्होंने हद पार कर दी जब उन्होंने कहा कि अबुल-अला अल-मा'आरे जैसे अस्वीकृत व्यक्ति आधिकारिक विद्वानों से श्रेष्ठ हैं, और मुहीउद्दीन द्वारा बताए गए उन मामलों का असंगत रूप से समर्थन किया जो सुन्नियों के विरोध में थे क्योंकि वे उनके अपने विचारों के अनुकूल थे।

मुहीउद्दीन ने कहा: "अन्य लोग जो हम में से नहीं हैं और हमारे स्थान को नहीं जानते हैं, उन्हें हमारी किताबें नहीं पढ़नी चाहिए, क्योंकि यह उनके लिए हानिकारक हो सकता है।" हां, वर्तमान समय में मुहीउद्दीन की पुस्तकों को पढ़ना हानिकारक है, विशेष रूप से अस्तित्व की एकता से संबंधित मामले।

एस सहायता एन भालू

* * *

[1] मुस्तफा साबरी (1869-1954): ओटोमन साम्राज्य के अंतिम दशकों में एक प्रमुख धार्मिक विद्वान और सार्वजनिक व्यक्ति, वे बेयानुल-हक पत्रिका के प्रकाशक और 1919-1920 में शेख अल-इस्लाम के प्रकाशक थे।
उन्होंने 1922 में तुर्की छोड़ दिया और अपनी मृत्यु तक मिस्र में निर्वासन में रहे।

[2] मूसा जरुल्लाह बिगी (येफ़) तुर्किस्तान के मूल निवासी थे और एक सुधारवादी इस्लामी विद्वान और प्रमुख व्यक्ति थे। उन्हें 1904 में अब्दुर्रशीद इब्राहिम के साथ रूसियों द्वारा निर्वासन में भेज दिया गया था, और वे कई पुस्तकों के लेखक थे।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

मैं एक ऐसी घटना के बारे में बताऊँगा जो उत्सव की एक जगमगाती रात को मेरी कल्पना की आँखों के सामने घटित हुई, जब मैं अपनी जेल की खिड़की से विवेक और दूरदर्शिता के चश्मे से मानव जाति की हँसी देख रहा था जो आँसू में बदल जाएगी। जैसे कि कब्रिस्तान में पड़े हुए पिछले युगों के लोगों के जीवन को सिनेमा में देखा जा सकता है, वैसे ही मैंने उन लोगों की चलती हुई लाशों को देखा जो निकट भविष्य में वहाँ बस जाएँगे। मैं उन मौज-मस्ती करने वालों के लिए रोया। अचानक मेरे ऊपर वीरानी और दया की भावना छा गई। मैंने अपनी बुद्धि की ओर रुख किया और वास्तविकता से पूछा: "यह कल्पना क्या है?" वास्तविकता ने उत्तर दिया:

पचास साल बाद, जो पचास लोग अभी हंस रहे हैं और आनंद से मौज-मस्ती कर रहे हैं, उनमें से पांच सत्तर साल के झुके हुए और झुके हुए होंगे, जबकि पैंतालीस कब्रिस्तान में सड़ चुके होंगे। वे सुंदर चेहरे और खुशमिजाज मुस्कानें उनके विपरीत में बदल चुकी होंगी। "जो कुछ भी आने वाला है, वह निकट है" के नियम के अनुसार, चूंकि यह कुछ हद तक सच है कि निकट भविष्य में होने वाली चीजें पहले से ही आ चुकी हैं, तो निश्चित रूप से आप जो देखते हैं वह कल्पना नहीं है।

इसके अतिरिक्त, क्योंकि इस संसार की असावधान हंसी कटु तथ्यों को छिपाती है, जो उसे आंसुओं में बदल देती है, तथा अस्थायी है और नष्ट होने के अधीन है, तो निश्चय ही यह वैधानिक सीमाओं के भीतर केवल धन्यवादपूर्ण, निर्दोष आनंद है, जो ईश्वर की उपस्थिति के बारे में जागरूकता की ओर ले जाता है और असावधानी को दूर करता है, तथा ऐसे सुख जो अपने प्रतिफल के कारण स्थायी होंगे, जो दुखी मनुष्य के अनंत काल के लिए पूजा करने वाले हृदय और उसकी आत्मा को, जिसमें अमरता की अदम्य इच्छा है, आनंद प्रदान करेंगे और उन्हें मुस्कुराने पर मजबूर करेंगे।

इसी कारण से बहुत सी रिवायतों में ऐसी बातें हैं जो त्योहारों के समय ईश्वर का धन्यवाद करने और उसे याद करने पर ज़ोर देती हैं, ताकि ग़फलत को बढ़ने से रोका जा सके और नाजायज़ कामों की ओर न जाया जा सके। ऐसे समय में ऐसा करना खुशी और प्रसन्नता की नेमतों को शुक्रिया में बदल सकता है और नेमतों को जारी रख सकता है और बढ़ा सकता है। क्योंकि शुक्रिया नेमतों को बढ़ाता है और ग़फलत को दूर करता है।

एस सहायता एन भालू

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

यह श्लोक में निहित एक बिंदु से संबंधित है,

[मानव] आत्मा निश्चित रूप से बुराई की ओर प्रवृत्त है,(12:53)

और हदीस में इसका अर्थ है, “आपका सबसे बड़ा दुश्मन आपकी आत्मा है।”2

जो व्यक्ति खुद से प्यार करता है - अगर उसकी बुराई करने वाली आत्मा शुद्ध नहीं हुई है - तो वह किसी और से प्यार नहीं करेगा। अगर वह जाहिरा तौर पर करता भी है, तो वह ईमानदारी से नहीं करता, बल्कि केवल इसके आनंद के लिए या किसी अच्छे काम के लिए करता है। वह हमेशा खुद को पसंद करने की कोशिश करता है। साथ ही, वह कभी भी खुद पर दोष नहीं लगाता; वह एक वकील की तरह खुद का बचाव और दोषमुक्ति करता है। वह खुद की प्रशंसा करता है, बढ़ा-चढ़ाकर और झूठ भी बोलता है, खुद को दोषमुक्त दिखाता है, मानो खुद को पवित्र कर रहा हो, और अपनी डिग्री के अनुसार श्लोक से एक थप्पड़ खाता है,

जो अपनी इच्छाओं को ही अपना पूज्य बना लेता है। (25:43; 45:23)

उसकी आत्म-प्रशंसा और अपने आपको प्रिय बनाने के प्रयासों का विपरीत प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वह तिरस्कार को आकर्षित करता है और उसके साथ ठंडा व्यवहार किया जाता है। वह अपने उन कार्यों में ईमानदारी भी खो देता है जो परलोक की ओर देखते हैं और वे पाखंड से मिश्रित हो जाते हैं। वह आत्मा की भावनाओं और इच्छाओं से पराजित होता है, जो परिणामों के प्रति अंधे होते हैं, परिणाम के बारे में नहीं सोचते हैं, और वर्तमान सुखों से ग्रस्त होते हैं; वह अपनी भावनाओं द्वारा मांगे गए एक घंटे के सुख के कारण एक वर्ष की जेल की सजा काटता है, जो भटक गई है। वह एक मिनट के अभिमान या प्रतिशोध के कारण दस वर्ष की सजा भुगतता है। बिलकुल उसी तरह जैसे एक मूर्ख बच्चा अपनी भावनाओं को खुश करने, अपनी इंद्रियों को संतुष्ट करने और अपनी भूख को संतुष्ट करने के लिए कुरान का वह हिस्सा बेच देता है जिसे वह एक मिठाई खरीदने के लिए सीख रहा होता है, वह अपने हीरे जैसे अच्छे कर्मों को कांच के टुकड़ों की तरह तुच्छ अहंकारी सुखों का साधन बना देता है, और वह लाभदायक कार्यों से वंचित हो जाता है।

हे ईश्वर! हमें आत्मा और शैतान की बुराइयों से और जिन्न और मनुष्यों की बुराइयों से बचा।

* * *

---

[1] यह टुकड़ा हर किसी के लिए फायदेमंद है. अल-'अजलूनी,

[2] कशफ अल-खफ़ा', i, 143; अल-ग़ज़ाली, इहया 'उलूम अल-दीन, iii, 4.

एक प्रश्न

अल्प अवधि के अविश्वास के बदले में अनंत अवधि तक नरक में कारावास कैसे न्याय हो सकता है?

उत्तर: एक वर्ष को तीन सौ पैंसठ दिन मानते हुए न्याय के नियम के अनुसार एक मिनट की हत्या के लिए सात लाख आठ सौ चौरासी हजार मिनट की कैद होती है। इसलिए, चूँकि एक मिनट का अविश्वास एक हजार हत्याओं के समान है, इसलिए मानवीय न्याय के नियम के अनुसार, जो व्यक्ति बीस वर्ष तक अविश्वास में रहता है और उसी अवस्था में मर जाता है, वह सत्तावन अरब दो सौ एक हजार दो सौ मिलियन वर्ष की कैद का हकदार है। इससे यह समझा जा सकता है कि यह श्लोक ईश्वरीय न्याय के कितने अनुरूप है,

वे उसमें सदैव रहेंगे। (33:65, इत्यादि)

इन दो संख्याओं के बीच संबंध का कारण, जो एक दूसरे से बहुत दूर है, यह है: चूँकि हत्या और अविश्वास विनाश और आक्रामकता हैं, इसलिए इनका दूसरों पर प्रभाव पड़ता है। एक मिनट में की गई हत्या औसतन पीड़ित के जीवन के कम से कम पंद्रह साल नकार देती है, इसलिए हत्यारे को उनकी जगह कैद कर लिया जाता है। जबकि चूँकि अविश्वास का एक मिनट एक हज़ार एक दिव्य नामों को नकारता है और उनके शिलालेखों को बदनाम करता है, ब्रह्मांड के अधिकारों का उल्लंघन करता है और इसकी पूर्णता को नकारता है, और दिव्य एकता के असंख्य प्रमाणों को झूठा साबित करता है और उनकी गवाही को अस्वीकार करता है, इसलिए अविश्वासी को एक हज़ार से ज़्यादा सालों के लिए सबसे निचले स्तर पर गिरा दिया जाता है, और वह कारावास में "रहता" है।

एस सहायता एन भालू

* * *

एक सार्थक और सूक्ष्म 'संयोग'

अनुच्छेद 1632 का 'संयोग'1 जिसके अंतर्गत रिसाले-ए-नूर के छात्रों पर आरोप लगाए गए और उन्हें सजा सुनाई गई, तथा प्रतिनिधियों की संख्या, जो दो सौ में से एक सौ तिरसठ थे, जिन्होंने रिसाले-ए-नूर के लेखक के मदरसे के लिए एक लाख पचास हजार लीरा आवंटित किए, वास्तव में यह कहता है: गणतंत्र की सरकार के एक सौ तिरसठ प्रतिनिधियों के सराहनीय हस्ताक्षर, उनके संबंध में दंड संहिता के अनुच्छेद 163 के निर्णय को रद्द कर देते हैं।

एक और सूक्ष्म और सार्थक 'संयोग' यह है: रिसाले-ए-नूर के एक सौ अट्ठाईस भागों को एक सौ पंद्रह पुस्तिकाओं में एकत्रित किया गया है।
27 अप्रैल, 1935 को जब रिसाले-ए-नूर के छात्रों और उसके लेखक को पहली बार गिरफ़्तार किया गया था, से लेकर 19 अगस्त, 1935 को अदालत द्वारा फ़ैसला सुनाए जाने तक के दिनों की संख्या एक सौ पंद्रह थी, जो रिसाले-ए-नूर की किताबों की संख्या से मेल खाती है। इसके अलावा, एक सौ पंद्रह लोगों को दोषी पाया जाना भी ठीक उसी संख्या से मेल खाता है, जो यह दर्शाता है कि रिसाले-ए-नूर के छात्रों और उसके लेखक पर आई विपत्ति को कृपा के हाथ से नियंत्रित किया जा रहा है।4

* * *

[1] 'संयोग' (tevâfuk) के लिए, देखें, नोट 22, पृष्ठ 199. (ट्र.)

[2] तुर्की दंड संहिता की धारा 163. (ट्र.)

[3] यह मेद्रेसेतुज़-ज़हरा को संदर्भित करता है। देखें, नोट 21, पृष्ठ 325. (ट्र.)

[4] यह ध्यान देने योग्य है कि रिसाले-ए-नूर के कुछ छात्रों की गिरफ्तारियां 25 अप्रैल 1935 को शुरू हुईं।
इस प्रकार, क्योंकि अभियोग में एक सौ सत्रह लोगों को दोषी बताया गया था - उनमें से दो के नाम दोहराए गए थे - छात्रों के लिए दिखाई गई संख्या एक सौ सत्रह थी, यह उस समूह की गिरफ्तारी की तारीख से एक सौ सत्रह दिनों के साथ मेल खाता है

अदालत के फैसले की तारीख को, पूर्व के 'संयोग' में एक और सूक्ष्मता जोड़ दी गई।

अट्ठाईसवाँ बिंदु
अट्ठाईसवें फ़्लैश का

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
अतः वे अपने कान महान् सभा की ओर न लगाएँ, बल्कि हर ओर से हटा दिए जाएँ। (नफरत की दशा में) क्योंकि वे सदैव दण्ड के भागी हैं। (37:8-10) और हमने निचले आकाश को दीपों से सुसज्जित किया है और उन्हें दुष्टों को भगाने के लिए तीर बना दिया है। (67:5)

इन आयतों से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण बात गुमराह लोगों द्वारा की गई आलोचनाओं के सम्बन्ध में स्पष्ट की जाएगी, जो इस प्रकार है:

जिन्न और शैतानों में से जासूस आसमान में होने वाली घटनाओं पर नज़र रखते हैं और भविष्यवक्ताओं, माध्यमों और कुछ अध्यात्मवादियों की तरह ग़ैब की दुनिया से ख़बरें पहुँचाते हैं। ताकि ग़ैब के बारे में उनकी जानकारी देने से किसी तरह का संदेह पैदा न हो, जब क़ुरआन पहली बार अवतरित हुआ, तो उनकी लगातार जासूसी को काफ़ी हद तक रोका गया और उन्हें टूटते तारों ने खदेड़ दिया। उपरोक्त आयतों के बारे में एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर तीन भागों में दिया गया है, जो इसी विषय से संबंधित है।

प्रश्न: ऐसी आयतों से यह समझा जा सकता है कि जासूसी करने वाले शैतान अदृश्य में किसी छोटी-सी और व्यक्तिगत घटना के बारे में जानने के लिए आकाश के सुदूर देशों में घुसपैठ करते हैं। ऐसी छोटी-छोटी घटनाओं की अफ़वाहें मानो उन विशाल देशों में हर जगह फैल जाती हैं, और कोई भी शैतान कहीं भी उनका भ्रमित संस्करण सुन सकता है और उसे आगे बढ़ा सकता है। हालाँकि, तर्क और विज्ञान ऐसी बात को स्वीकार नहीं कर सकते।

और यह भी कहा गया है कि कुछ नबी और कुछ अज़मत वाले लोग मानो पास से जन्नत के फल तोड़ते हैं, जो क़ुरआन की निश्चित आयतों के अनुसार आसमान से ऊपर है, और कभी-कभी वे जन्नत को पास से देखते हैं। यह मामला, जो अनंत दूरी के भीतर अनंत निकटता से संबंधित है, वर्तमान युग की समझ के अनुकूल नहीं है।

इसके अलावा, स्वर्ग की सार्वभौमिक, विशाल भूमि में स्थित उत्कृष्ट सभा में एक महत्वहीन व्यक्ति की चर्चा का विषय होना, ब्रह्मांड के अत्यंत बुद्धिमान प्रशासन की बुद्धिमत्ता के अनुरूप नहीं है।

फिर भी, ये तीनों बातें इस्लाम की सच्चाइयों में गिनी जाती हैं।

उत्तर :

प्रथम: पंद्रहवें वचन नामक ग्रंथ के सात 'चरणों' में, स्वर्ग से शैतानी जासूसों का तारों द्वारा प्रतिकर्षण और निष्कासन, पद्य द्वारा व्यक्त किया गया है,

और हमने नीचे के आकाश को दीपों से सुसज्जित किया और उन्हें दुष्टों को भगाने के लिए क्षेपणास्त्र बनाया।

सात आधारों के साथ यह इतनी निश्चितता से सिद्ध किया गया है कि यह हठी भौतिकवादी को भी आश्वस्त कर देता है, उसे चुप करा देता है और उसे इसे स्वीकार करने के लिए मजबूर कर देता है।

दूसरा: हम उन तीन सत्यों का उल्लेख करेंगे जो सत्य से बहुत दूर माने जाते हैं।
तुलना के साथ कारण बताएं जो उन्हें संकीर्ण मानसिकता के करीब ले जाएगा।

उदाहरण के लिए, यदि किसी राज्य का सेना कार्यालय देश के पूर्व में है, न्याय मंत्रालय पश्चिम में है, शिक्षा मंत्रालय उत्तर में है, धार्मिक मामलों का विभाग दक्षिण में है, तथा सिविल सेवा केंद्र में है, तथा प्रत्येक विभाग और मंत्रालय रेडियो, टेलीफोन और टेलीग्राफ के माध्यम से एक दूसरे से नियमित और व्यवस्थित ढंग से संवाद करता है और जुड़ा हुआ है, तो पूरा देश उसका सेना कार्यालय होगा, ठीक वैसे ही जैसे वह उसका न्याय मंत्रालय है, तथा वह उसका विद्वान प्रतिष्ठान होगा, जैसे वह उसकी सिविल सेवा है।

और उदाहरण के लिए, कभी-कभी ऐसा होता है कि अनेक देश और राज्य, जिनकी राजधानियाँ अलग-अलग हैं, एक ही देश पर अलग-अलग तरीकों से, उपनिवेशों, या रियायतों, या व्यापार के माध्यम से प्रभुता रखते हैं। यद्यपि देश की प्रजा और राष्ट्र एक हैं, फिर भी अपनी रियायतों के माध्यम से प्रत्येक राज्य का उनसे संबंध होता है। उन राज्यों के मामले, जो एक-दूसरे से दूर हैं, एक-दूसरे को छूते हैं; वे देश के सभी सदनों में एक-दूसरे के निकट आते हैं, और वे उसके प्रत्येक व्यक्ति में हिस्सा लेते हैं। इसके छोटे-छोटे मामले इसके संपर्क बिंदुओं में एक छोटे क्षेत्र में देखे जाते हैं। क्योंकि प्रत्येक छोटा मामला सार्वभौमिक क्षेत्र से नहीं लिया गया है। लेकिन जब उन छोटे-छोटे मामलों पर चर्चा की जाती है, तो उनका उल्लेख इस तरह किया जाता है मानो वे सार्वभौमिक क्षेत्र से लिए गए हों, क्योंकि वे सीधे सार्वभौमिक क्षेत्र के नियमों के अनुसार होते हैं; उन्हें उस क्षेत्र में चर्चा किए गए मामले का रूप दिया जाता है।

इन दो तुलनाओं की तरह, हालाँकि स्वर्ग की भूमि अपने केंद्र और राजधानी के संबंध में बहुत दूर है, लेकिन इसमें पृथ्वी की भूमि में लोगों के दिलों तक पहुँचने वाले अमूर्त टेलीफोन हैं। इसके अलावा, यह केवल भौतिक दुनिया को ही नहीं देखता है, बल्कि एक तरह से प्रकट दुनिया को भी शामिल करता है क्योंकि इसमें आत्मा की दुनिया और चीजों के आंतरिक आयाम की दुनिया शामिल है।

स्वर्ग का प्रभाव क्षेत्र भी, जो अनंत काल की दुनिया से है और
अनन्त क्षेत्र, प्रकाशमय ढंग से फैलता और फैलता है

प्रकट के पर्दे के नीचे, इसकी अनंत दूरी के बावजूद। वैसे ही जैसे कि, सर्वज्ञ और गौरवशाली निर्माता की बुद्धि और शक्ति के माध्यम से, मनुष्य के सिर में इंद्रियों के केंद्र सभी अलग-अलग हैं, प्रत्येक शरीर को अपने नियंत्रण में लेकर नियंत्रित करता है; उसी तरह ब्रह्मांड, मैक्रोएंथ्रोपोस, संकेंद्रित वृत्तों की तरह एक दूसरे के भीतर हजारों दुनियाओं से मिलकर बना है। कभी-कभी उनमें होने वाली परिस्थितियाँ और घटनाएँ सबसे अलग होती हैं

उनकी सार्वभौमिकता और विशिष्टता तथा तुच्छता और विशालता के संबंध में ध्यान देने योग्य विषय हैं; अर्थात्, उन विवरणों को विशेष रूप से, निकट स्थानों में देखा जाना चाहिए, जबकि सार्वभौमिक और विशाल पदार्थों को सार्वभौमिक, विशाल स्थानों में देखा जाना चाहिए।

लेकिन कभी-कभी एक छोटी सी, खास घटना पूरी दुनिया को अपने आगोश में ले लेती है। दुनिया के जिस भी कोने में आप सुनेंगे, आपको उसके बारे में पता चल ही जाएगा। और कभी-कभी कोई बड़ी लामबंदी दुश्मन की सेना के खिलाफ नहीं, बल्कि दिखावे और शान के लिए होती है। उदाहरण के लिए, मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) की घटना और कुरान के अवतरण की पवित्र घटना स्वर्ग की भूमि में सबसे महत्वपूर्ण घटनाएं थीं और इसके हर कोने में इसकी घोषणा की गई थी। फिर और भी तारे गिर रहे थे, जो कुरान के अवतरण की भव्यता और इसकी चमकीली संप्रभुता और इसकी सत्यता की डिग्री का एक प्रमुख संकेत था, जिसे कोई संदेह नहीं कर सकता था, और इसे विशाल आकाश के दूर, ऊंचे बुर्जों पर तैनात प्रहरी द्वारा व्यक्त और चित्रित किया गया था, जो शैतानों को भगाने और पीछे हटाने के लिए मिसाइलों की बारिश कर रहे थे। चमत्कारिक व्याख्या का कुरान उस ब्रह्मांडीय घोषणा की व्याख्या और घोषणा करता है, और उन स्वर्गीय संकेतों का संकेत देता है।

हाँ, ऐसा जबरदस्त स्वर्गीय चिन्ह, और जासूसी करने वाले शैतान, जिन्हें फ़रिश्तों के साथ युद्ध करने के लिए बनाया गया था, हालाँकि वे एक फ़रिश्त के फूँकने से उड़ सकते थे, निश्चित रूप से कुरान के रहस्योद्घाटन की संप्रभुता की महिमा को दिखाने के लिए था।

इसके अलावा, कुरान की यह शानदार व्याख्या और विशाल स्वर्गीय लामबंदी यह संकेत देती है कि मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) के दिल से स्वर्ग की दुनिया और सर्वोच्च सिंहासन तक के लंबे रास्ते पर कहीं भी जिन्न और शैतान हस्तक्षेप नहीं कर सकते थे, ऐसा नहीं है कि जिन्न और शैतान के पास कोई शक्ति है जिसने स्वर्ग के निवासियों को उनसे लड़ने और उनके खिलाफ बचाव करने के लिए प्रेरित किया। कुरान का रहस्योद्घाटन एक सच्चाई थी जिस पर स्वर्ग में सभी स्वर्गदूतों ने चर्चा की थी; क्रम में, शैतानों को थोड़ा सा करीब आने के लिए स्वर्ग में उठने के लिए मजबूर किया गया था, लेकिन वे सफल नहीं हुए और उन्हें खदेड़ दिया गया।

इससे पता चलता है कि मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) के दिल में जो रहस्योद्घाटन हुआ, और जिब्रील जो उनकी उपस्थिति में आए, और अदृश्य की सच्चाई जो उनकी नज़र में आई, वे ठोस और सीधी थीं और उनमें कोई संदेह नहीं था। चमत्कारिक व्याख्या का कुरान इसे चमत्कारी तरीके से बताता है।

जहाँ तक स्वर्ग को बहुत दूर से देखने और अनंत काल की दुनिया का हिस्सा होने के बावजूद बहुत करीब से देखने और कभी-कभी उससे फल तोड़ने की बात है, यह क्षणभंगुर दुनिया और प्रकट क्षेत्र अदृश्य और शाश्वत क्षेत्र की दुनिया के लिए एक पर्दा है जैसा कि ऊपर की दो तुलनाओं से समझा जा सकता है। समानता की दुनिया के दर्पण के माध्यम से स्वर्ग को हर जगह देखा जा सकता है, इसके सर्वोच्च केंद्र की दूरी के बावजूद। इसी तरह, जहाँ 'पूर्ण निश्चितता' की डिग्री पर विश्वास है, वहाँ स्वर्ग के पास इस क्षणभंगुर दुनिया में कई तरह की कॉलोनियाँ और मंत्रालय हो सकते हैं - अगर तुलना में कोई गलती नहीं है - और दिल के टेलीफोन के माध्यम से, उच्च आत्माओं से संवाद कर सकते हैं, और इसके उपहार उन तक पहुँच सकते हैं।

जहाँ तक किसी वैश्विक क्षेत्र का विशेष, व्यक्तिगत मामलों में व्यस्त होना; अर्थात् शैतानों का आकाश की ओर उठना और अदृश्य की खबरें ज्योतिषियों तक पहुँचाने के लिए चुपके से सुनना, और उनके द्वारा झूठी, भ्रमित खबरें लाना, जैसा कि कुरान की टीकाओं में वर्णित है, यह इस प्रकार होना चाहिए: यह उनके आकाश की भूमि की राजधानी तक जाने और विशेष समाचार एकत्र करने का प्रश्न नहीं है; बल्कि आकाश के देश में, जो वायुमंडल को घेरे हुए है, कुछ निश्चित स्थानों का होना - यदि रूपक गलत नहीं है - पुलिस चौकियों जैसा है। इन स्थानों में उनका पृथ्वी के देश के साथ संबंध है। शैतान उन विशेष स्थानों पर विशेष घटनाओं पर चुपके से सुनते हैं। मानव हृदय भी एक ऐसा स्थान है, जहाँ प्रेरणा का फ़रिश्ता और व्यक्तिगत शैतान युद्ध करते हैं।

इसके अलावा, चाहे आस्था और कुरान की सच्चाईयाँ और मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) से जुड़ी घटनाएँ कितनी भी खास क्यों न हों, वे सबसे महान और सबसे सार्वभौमिक और महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं और उन्हें सर्वोच्च सिंहासन पर और स्वर्ग के क्षेत्र में, सबसे सार्वभौमिक क्षेत्र में, - अगर तुलना गलत नहीं है - ब्रह्मांड की नियत घटनाओं के समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जाता है। हर कोने पर उनकी चर्चा होती है। चूँकि मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) के दिल से लेकर सिंहासन के क्षेत्र तक शैतानों के हस्तक्षेप का कोई रास्ता नहीं है, इसलिए वे स्वर्ग की बात सुनने के अलावा कुछ नहीं करते। इस प्रकार, यह आयत बहुत ही शानदार ढंग से, वास्तव में, चमत्कारिक ढंग से घोषणा करती है और दिखाती है कि कुरान का रहस्योद्घाटन और मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) की नबूवत कितनी महान और सच्ची है, और यह कि उनका विरोध करना या छल या झूठ के साथ उनके करीब आना किसी भी तरह से संभव नहीं है।

एस सहायता एन भालू

उनतीसवाँ फ्लैश

प्रस्तावना

तेरह साल पहले, मेरे दिल ने मेरे दिमाग के साथ मिलकर मुझे चिंतनशील विचार के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया, जिसका चमत्कारिक व्याख्या का कुरान आदेश देता है।
छंद के रूप में,

> ताकि तुम सोच-विचार करो। (2:219; 2:266) * शायद वे सोच-विचार करें। (7:176, इत्यादि) * क्या वे अपने मन में विचार नहीं करते कि क्या अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया है? (30:8) * बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करें। (13:3, इत्यादि)

हदीस जिसका अर्थ है "एक घंटे का चिंतन एक साल की इबादत से बेहतर है"[1] में कहा गया है कि कभी-कभी एक घंटे का चिंतन एक साल की इबादत के बराबर हो सकता है। यह चिंतन के लिए शक्तिशाली प्रोत्साहन भी प्रदान करता है। अपने लिए, उन व्यापक प्रकाशों और लंबी सच्चाइयों को संरक्षित करने के लिए जो मेरे मन और दिल में तेरह वर्षों के दौरान दिखाई दिए, मैंने संकेतों के रूप में कई वाक्यांशों को रिकॉर्ड किया, उन प्रकाशों को इंगित करने के लिए नहीं बल्कि उनके अस्तित्व को इंगित करने, चिंतन को सुविधाजनक बनाने और क्रम को संरक्षित करने के लिए। जब मैं चिंतन करना शुरू करता था तो मैं अलग-अलग अरबी शब्दों में खुद को वाक्यांशों को मौखिक रूप से सुनाता था। हालाँकि इस लंबी अवधि में हज़ारों बार दोहराया गया, लेकिन मैं कभी थका नहीं, न ही उनसे मिलने वाला आनंद कम हुआ, न ही आत्मा की उनकी ज़रूरत कम हुई। चूँकि चिंतन में सभी कुरान की आयतों की झलकियाँ शामिल थीं, इसलिए थकावट न पैदा करने और उनकी मिठास को बनाए रखने के गुण, जो कि आयतों के गुण हैं, उस चिंतन के दर्पण में दर्शाए गए थे।

मुझे हाल ही में एहसास हुआ कि रिसाले-ए-नूर के विभिन्न हिस्सों में जीवन और चमकदार रोशनी का शक्तिशाली स्रोत उन दृश्यों की झलकियाँ हैं

[1] अल-'अजलूनी, कशफ अल-खफ़ा', i, 143; अल-ग़ज़ाली, इह्या' 'उलूम अल-दीन, iv, 409 (किताब अल-तफ़क्कुर); अल-हयथामी, मजमा अल-ज़वायद, आई, 78।

विचार। यह सोचकर कि वे दूसरों को भी प्रभावित करेंगे जैसे उन्होंने मुझे प्रभावित किया है, मैंने अपने जीवन के अंत में उन्हें लिखित रूप में लिखने का इरादा बनाया। निश्चित रूप से, उनके महत्वपूर्ण हिस्सों को रिसाले-ए-नूर में शामिल किया गया है, लेकिन उनकी समग्रता में उनमें और अधिक शक्ति और मूल्य पाया जाएगा।

चूँकि जीवन का अंत स्पष्ट नहीं है, तथा यहाँ मेरे कारावास की परिस्थितियाँ मृत्यु से भी बदतर रूप धारण कर चुकी हैं, अतः मैंने अपने जीवन के अंत की प्रतीक्षा न करते हुए, अपने भाइयों के आग्रह तथा आग्रह पर उन विचारों के अनुक्रमों को बिना किसी परिवर्तन के, सात अध्यायों के रूप में लिख दिया है।

[इस फ़्लैश के शेष छह अध्याय द फ़्लैशेस के हस्त-प्रतिलिपि संस्करणों में प्रकाशित किए गए हैं, और उन्हें यहाँ शामिल नहीं किया गया है।]

तीसरा अध्याय

'ईश्वर सबसे महान है!' की डिग्री पर

हम इसके तैंतीस अंशों में से सात का उल्लेख करेंगे। उन अंशों का एक महत्वपूर्ण भाग बीसवें अक्षर के दूसरे पड़ाव में, बत्तीसवें अक्षर के दूसरे पड़ाव के अंत में और तीसरे पड़ाव के आरंभ में स्पष्ट किया गया है। जो लोग उन अंशों की वास्तविकता को समझना चाहते हैं, उन्हें रिसाले-ए-नूर के उन दो भागों का संदर्भ लेना चाहिए।

पहली डिग्री

> कह दो, "प्रशंसा उसी अल्लाह के लिए है, जिसका कोई पुत्र नहीं और न उसका कोई साझीदार है, और न उसे किसी की आवश्यकता है जो उसे अपमान से बचाए। हाँ, उसकी महानता और महिमा के कारण उसकी बड़ाई का वर्णन करो।" (17:111)

ईश्वर सबसे महान है, उसकी महिमा हो! शक्ति और ज्ञान में, वह हर चीज़ से महान है। क्योंकि वह सृष्टिकर्ता, निर्माता, रूप देने वाला है, जो अपनी शक्ति से मनुष्य को ब्रह्मांड की तरह बनाता है; वह अपने निर्धारण की कलम से ब्रह्मांड को लिखता है, जैसे वह उसी कलम से मनुष्य को लिखता है। क्योंकि स्थूल जगत सूक्ष्म जगत जैसा है: दोनों उसकी शक्ति से बने हैं, उसकी कलम से अंकित हैं; वह स्थूल जगत को दंडवत करने के स्थान के रूप में बनाता है, जबकि वह सूक्ष्म जगत को दंडवत करने के रूप में अस्तित्व देता है; वह पूर्व को एक संपत्ति के रूप में अस्तित्व में लाता है, जबकि वह बाद वाले को संपत्ति के स्वामित्व और ज़रूरतमंद के रूप में अस्तित्व देता है; पूर्व में उसकी कला इसे एक पुस्तक के रूप में प्रदर्शित करती है, जबकि बाद वाले में उसका रंग वाणी के माध्यम से चमकता है; पूर्व में उसकी शक्ति उसकी महिमा को प्रकट करती है, जबकि बाद वाले में उसकी दया उसकी उदारता को समेटती है; पूर्व में उसकी महिमा यह प्रमाणित करती है कि वह एक है, जबकि बाद वाले में उसकी उदारता यह घोषणा करती है कि वह एकल, अविभाजित है; उसकी मुहर

पूर्व पर उसकी मुहर सभी चीजों पर है, सार्वभौमिक और विशेष, चाहे वे स्थिर हों या गति में, जबकि उत्तरार्द्ध पर उसकी मुहर शरीर और अंगों पर, और उनकी कोशिकाओं और कणों पर है।

अब उनके कामों को समग्र रूप से देखें: आप दिन के उजाले की तरह स्पष्ट रूप से देखेंगे कि पूर्ण व्यवस्था और नियमितता के भीतर पूर्ण प्रचुरता है; पूर्ण गति के साथ फिर भी पूर्ण संतुलन; पूर्ण सहजता के साथ फिर भी पूर्ण कौशल के साथ; विशाल पैमाने पर फिर भी कला की पूर्ण सुंदरता के साथ; अनंत दूरियों पर फिर भी प्रकार की पूर्ण एकता के साथ; पूर्ण अंतर्मिश्रण के साथ फिर भी पूर्ण भिन्नता; पूर्ण मूल्य के साथ-साथ व्यय की पूर्ण कमी। यह स्थिति मन की गवाही देती है, क्योंकि यह मूर्ख कपटी को यह स्वीकार करने के लिए मजबूर करती है, कि यह कला और एकता पूर्ण शक्ति के स्वामी, पूर्ण ज्ञान के स्वामी का काम है।

एकता में पूर्ण सहजता निहित है, जबकि बहुलता में तथा साझेदारों को साथ जोड़ने में
भगवान् की कठिनाइयाँ समझ से परे हैं।

यदि सभी चीजों को एक ही माना जाए, तो ब्रह्मांड की रचना ताड़ के पेड़ की रचना जितनी आसान है, और ताड़ का पेड़ फल की तरह। लेकिन जब इसे बहुलता माना जाता है, तो ताड़ के पेड़ की रचना करना ब्रह्मांड की रचना करने जितना ही कठिन है और प्रत्येक फल पेड़ की तरह ही कठिन है - इतना कठिन कि असंभव है। क्योंकि एक ही कार्य से, एक ही व्यक्ति कई चीजों के लिए एक ही परिणाम और स्थिति को बिना किसी कठिनाई के और अन्य साधनों का सहारा लिए प्राप्त कर सकता है। जबकि यदि स्थिति और परिणाम को कई लोगों के लिए संदर्भित किया जाता है, तो उन्हें केवल बहुत परेशानी और विवाद और अन्य साधनों का अनुसरण करके प्राप्त किया जा सकता है। यह एक अधिकारी द्वारा सैनिकों को, मास्टर बिल्डर को इमारत के पत्थरों को, पृथ्वी को ग्रहों को, झरने को पानी की बूंदों को और एक वृत्त के केंद्रीय बिंदु को परिधि के सभी बिंदुओं को अपना कर्तव्य बताने जैसा होगा।

संबंधों के रहस्य के माध्यम से एकता में असीमित शक्ति मौजूद है। किसी वस्तु या कारण को अपनी शक्ति के स्रोतों को ले जाने के लिए बाध्य नहीं किया जाता है, और कारण से उत्पन्न कार्य उस वस्तु के संबंध में महानता प्राप्त करता है जिस पर वह निर्भर करता है। लेकिन जब भागीदार ईश्वर के साथ जुड़ जाते हैं, तो सभी कारणों को अपनी शक्ति के स्रोतों को ले जाने के लिए बाध्य किया जाता है, और परिणामी कार्य उनकी सीमा तक कम हो जाते हैं। इसी वजह से एक चींटी और एक मक्खी ने अत्याचारियों को हराया, और एक छोटे से बीज ने एक विशाल पेड़ को जन्म दिया।

यदि सभी वस्तुओं को एक ही व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए, तो पूर्ण अनस्तित्व से सृजन की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इसमें ज्ञान में विद्यमान अस्तित्व को बाह्य अस्तित्व में स्थानांतरित करना शामिल है, जैसे कैमरे के पीछे दर्पण पर छवि को फोटोग्राफिक पेपर पर स्थानांतरित करना, इस प्रकार पूरी आसानी से इसके बाह्य अस्तित्व को स्थापित करना, या लेखन पर एक विशेष पदार्थ को फैलाकर अदृश्य स्याही में लिखे शब्दों को प्रकट करना।

जब चीजों को कारणों और बहुलता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो यह आवश्यक हो जाता है कि उनका

पूर्ण अस्तित्वहीनता से सृजन असंभव है, यह सबसे कठिन काम है। एकता में सहजता है; यह इतना आसान है कि यह आवश्यक है। जबकि बहुलता में बहुत कठिनाई है; इतनी कठिनाई कि यह असंभव है।

एकता के साथ, पूर्ण अस्तित्वहीनता से एक अस्तित्व का निर्माण संभव है। यानी, शुद्ध अस्तित्वहीनता से तत्काल, बिना किसी पदार्थ के एक अस्तित्व का निर्माण करना और कणों को एक ऐसे सांचे में डालना जो बिना किसी कठिनाई या भ्रम के ज्ञान के रूप में विद्यमान हो। जबकि सभी बुद्धिमान सहमत हैं, बहुलता और ईश्वर के साथ सहयोगी होने के साथ, अस्तित्वहीनता से मूल सृजन संभव नहीं है। क्योंकि एक जीवित प्राणी के अस्तित्व के लिए, पृथ्वी भर में फैले कणों और तत्वों को एक साथ इकट्ठा होना पड़ता है। और जब ज्ञान में कोई साँचा विद्यमान नहीं होता है, तो सभी कणों में सर्वव्यापी ज्ञान और पूर्ण इच्छाशक्ति होनी चाहिए ताकि सजीव प्राणी के शरीर में कणों को सुरक्षित रखा जा सके।

इसके अलावा, उन चीज़ों की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं है जिन्हें ईश्वर का भागीदार माना जाता है, ठीक वैसे ही जैसे कि उनका ईश्वर का भागीदार होना असंभव है। इसलिए, ऐसा दावा करना पूरी तरह से मनमाना है; प्राणियों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह सुझाव दे कि उनकी रचना में उनकी कोई भूमिका है, कोई संकेत नहीं। क्योंकि स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माण के लिए पूर्ण, अनंत शक्ति की आवश्यकता होती है, जिसके लिए भागीदारों की कोई आवश्यकता नहीं होती। यदि भागीदार होते, तो उन्हें उस अनंत और पूरी तरह से परिपूर्ण शक्ति को सीमित करना और अनंत समय में उसे समाप्त करना आवश्यक होता, हालाँकि इसके लिए कोई आवश्यकता नहीं है, वास्तव में, हालाँकि इसके विपरीत की आवश्यकता है; और यह पाँच मामलों में असंभव है। इसलिए ऐसे भागीदार असंभव और निषिद्ध हैं। इसके अलावा, प्राणी किसी भी तरह से अपने अस्तित्व का सुझाव या संकेत नहीं देते हैं।

हमने इस विषय को बत्तीसवें वचन के प्रथम विराम-स्थान में स्पष्ट किया है, जिसमें दिखाया गया है कि कैसे सूक्ष्म कणों से लेकर ग्रहों तक, तथा ग्रहों से लेकर दूसरे विराम-स्थान में व्यक्तिगत चेहरे की विशेषताओं तक सभी चीजें ईश्वर के साथ साझेदारी करने को अस्वीकार करती हैं, तथा उनमें से प्रत्येक पर ईश्वरीय एकता की छाप को इंगित करती हैं।

जैसे उसका कोई साझीदार नहीं है, वैसे ही उसका कोई सहायक या मंत्री भी नहीं है। कारण केवल पूर्व-शाश्वत शक्ति के निपटान के लिए महीन आवरण हैं; वास्तव में उनका कोई सृजनात्मक प्रभाव नहीं है। क्योंकि मनुष्य कारणों में सर्वोच्च है और सबसे व्यापक इच्छा वाला है, और खाने, बोलने और सोचने जैसे सबसे स्पष्ट स्वैच्छिक कार्यों के सौ भागों में से उसका केवल एक संदिग्ध भाग है। यदि सर्वोच्च कारणों और सबसे व्यापक इच्छा वाले के निपटान की वास्तविक शक्ति इस प्रकार सीमित है, तो जानवरों और निर्जीव प्राणियों के लिए आकाश और पृथ्वी के निर्माता की रचना और प्रभुत्व में भाग लेना कैसे संभव है? जिस प्रकार वह लिफाफा जिसमें राजा उपहार भेजता है, या वह रूमाल जिसमें वह उपहार लपेटता है, या वह अनुचर जो आपके लिए उपहार लाता है, राजा के कार्य में भागीदार नहीं हो सकता है।

संप्रभुता, इसलिए जिन कारणों से दान भेजे जाते हैं, या जिन तिजोरियों में हमारे लिए दान जमा किया जाता है, या जिन कारणों को दैवीय उपहार के रूप में लपेटा जाता है और हमें उपहार के रूप में भेजा जाता है, वे ईश्वर के भागीदार या सहायक नहीं हो सकते हैं, या मध्यस्थ नहीं हो सकते हैं जिनका कोई प्रभाव हो।

दूसरी डिग्री

ईश्वर महान है, उसकी महिमा हो; वह शक्ति और ज्ञान में हर चीज़ से बड़ा है। वह सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ, रचयिता, सर्वज्ञ, परम दयालु, सर्व-करुणामय है। क्योंकि पृथ्वी के प्राणी और ब्रह्मांड के बगीचे में ऊँचे आकाशीय पिंड एक सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता की शक्ति के स्वयंसिद्ध चमत्कार हैं; और पृथ्वी के मुख के बगीचे में सजाए गए सजे-धजे, बहुरंगी पौधे और बगीचे में प्रदर्शित और फैले हुए अनेक प्रकार के जानवर निश्चित रूप से एक सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता की कला के चमत्कार हैं; और इस बगीचे के बगीचों में मुस्कुराते हुए फूल और सजे-धजे फल स्पष्ट रूप से एक परम दयालु और करुणामय की देन हैं। शक्ति के ये चमत्कार और कला के चमत्कार और दया के उपहार इस बात की गवाही देते हैं, पुकारते हैं और घोषणा करते हैं कि उनका सृष्टिकर्ता, रचयिता और दाता सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है, और सभी चीज़ों को जानता है, कि उसकी दया और ज्ञान सभी चीज़ों को समाहित करता है। उसकी शक्ति के संबंध में कण और तारे समान हैं; थोड़े और बहुत बराबर हैं; छोटे और बड़े, सीमित और अनंत बराबर हैं। अतीत की सभी घटनाएँ और उसकी विचित्र घटनाएँ, जो एक सर्वज्ञ निर्माता की कला के चमत्कार हैं, यह प्रमाणित करती हैं कि निर्माता भविष्य की सभी संभावनाओं और उसकी विचित्र घटनाओं पर शक्तिशाली है, क्योंकि वह एक सर्वज्ञ निर्माता, सर्वोच्च, सर्वज्ञ है।

उसकी जय हो जिसने पृथ्वी को अपनी कला का प्रदर्शन, अपने प्राणियों का एकत्रीकरण स्थल, अपनी शक्ति का प्रकटीकरण, अपनी बुद्धि का साधन, अपनी दया का उद्यान, अपने स्वर्ग का कृषि योग्य क्षेत्र, प्राणियों के आवागमन का स्थान, नदी-तल जिससे प्राणी प्रवाहित होते हैं, अपनी कलाकृतियों का माप बनाया।

अलंकृत पशु, सुसज्जित पक्षी, फलदार वृक्ष, पुष्प-सज्जित पौधे, ये सब उसके ज्ञान के चमत्कार हैं, उसकी शिल्पकला के चमत्कार हैं, उसकी उदारता के उपहार हैं, उसकी कृपा के प्रमाण हैं।

फलों से सजे हुए मुस्कुराते हुए फूल, सुबह की हवा में चहचहाते पक्षी, फूलों की पंखुड़ियों पर बारिश की बूंदें, अपने बच्चों को प्यार से गले लगाती माताएं, ये सभी उस एक सर्व-प्रेमी, प्रियतम को जिन्न और मनुष्य, आत्मिक प्राणियों, फ़रिश्तों और जानवरों के प्रति अत्यन्त दयालु, अत्यन्त दयालु और उदार बताते हैं।

अनाज और फल, बीज और फूल बुद्धि के चमत्कार हैं, कला के चमत्कार हैं, दया के उपहार हैं, एकता के प्रमाण हैं; वे परलोक में उसकी कृपा की गवाही देते हैं। वे सच्चे गवाह हैं जो गवाही देते हैं कि उनका निर्माता है

सभी चीज़ों पर शक्तिशाली, और सभी चीज़ों का जानकार; कि अपनी दया और ज्ञान और रचनात्मकता, योजना, कला और निर्माण के साथ वह सभी चीज़ों को शामिल करता है। उसकी रचना, योजना, कला और निर्माण के संबंध में, सूर्य एक छोटा बीज है; एक तारा, एक फूल; पृथ्वी, एक अनाज।

क्योंकि बीज और फल बहुलता के हर हिस्से में एकता के दर्पण हैं; वे ईश्वरीय निर्धारण की ओर इशारा करते हैं; वे शक्ति के संकेत हैं जो बहुलता के स्रोत की एकता को दर्शाते हैं। इससे आगे बढ़ते हुए वे अपने निर्माता की कला और निर्माण की एकता की गवाही देते हैं। फिर एकता में अपने अंत तक पहुँचने पर वे अपने निर्माता की रचनात्मकता और योजना की बुद्धिमत्ता को याद करते हैं।

बीज और फल भी ज्ञान के संकेत हैं जो यह दर्शाते हैं कि ब्रह्मांड का निर्माता अपनी सर्वव्यापी दृष्टि से पहले विशेष को देखता है, फिर भागों को। क्योंकि फल स्पष्ट रूप से वृक्ष के निर्माण का उद्देश्य हैं। इस प्रकार, मनुष्य ब्रह्मांड का उद्देश्य है, और प्राणियों के निर्माता का मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य का हृदय एक बीज की तरह है, और प्राणियों के निर्माता के लिए सबसे चमकदार दर्पण है। यह इस ज्ञान के कारण है कि ब्रह्मांड में, तुच्छ मनुष्य प्राणियों के पुनरुत्थान और ब्रह्मांड के विनाश, परिवर्तन, परिवर्तन और नवीनीकरण का मुख्य साधन और कारण है।

हे सर्वशक्तिमान ईश्वर! आपकी महानता का सार मन नहीं समझ सकता!

सभी प्राणी एक साथ गाते हैं “उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है!”
वे निरंतर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उद्घोष करते हैं, “हे सत्य!”
कुल मिलाकर वे “हे जीवित एक!” का जाप करते हैं।

तीसरी डिग्री[2]

इसे बत्तीसवें वचन के तीसरे विराम-स्थान के आरंभ में समझाया गया है।

ईश्वर सबसे महान है, उसकी महिमा हो! - सभी चीजों से बढ़कर शक्ति और ज्ञान के संबंध में। क्योंकि वह सर्वशक्तिमान, निर्धारक, सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, रूप देने वाला, उदार, कृपालु, श्रृंगार करने वाला, वरदान देने वाला, प्रेम करने वाला, स्वयं को प्रकट करने वाला, सबसे दयालु, सर्व-करुणामय, दयालु, परम सौंदर्य और पूर्णता वाला, सनातन लेखक है। संपूर्ण ब्रह्मांड की वास्तविकता और उसके भागों के साथ, और उसके स्तरों और पृष्ठों के साथ, और संपूर्ण रूप से और व्यक्तियों के रूप में प्राणियों की वास्तविकता, अस्तित्व और स्थायित्व के संबंध में निम्न से मिलकर बनती है:—

---

[2] यह तीसरी डिग्री एक फूल और एक खूबसूरत महिला पर विचार करती है। विशाल वसंत एक फूल है, और इसलिए स्वर्ग है। वे इस डिग्री की अभिव्यक्ति के स्थान हैं। दुनिया एक विशाल, सुंदर मानव प्राणी है। हूरी, और आत्मा प्राणी, जानवर, और मनुष्य, सभी अस्तित्व के क्षेत्र के रूप में, एक मानव प्राणी का अर्थ धारण करते हैं; अपने पन्नों के माध्यम से, वे इस डिग्री को दर्शाने वाले दिव्य नामों को प्रदर्शित करते हैं।

उनकी निर्धारण और आदेश की कलम की व्यवस्थित, मापी हुई लेखनी,
ज्ञान और बुद्धि के अनुसार;

कला द्वारा अनुरेखित उनके ज्ञान और बुद्धि के दिशासूचक चिह्नों का चित्रण;

उनकी कला और रूप प्रदान करने वाले चमकते हाथों के अलंकरण, उनकी कृपा और उदारता के साथ अलंकृत और प्रकाशित करना;

उनकी कृपा और उदारता की सूक्ष्मताओं के फूल, उनका स्वयं को बनाना
जाना और प्यार किया गया, भरपूर, दया के साथ;

उसकी दया और उदारता के फव्वारे की प्रचुरता का फल, उसकी करुणा
और कोमलता, सुंदरता और पूर्णता के साथ;

शाश्वत सौंदर्य, शाश्वत पूर्णता की झलक, जो दर्पणों की क्षणभंगुरता और प्रतिबिंब के स्थानों के प्रवाह के साथ-साथ ऋतुओं, शताब्दियों और युगों के बीतने के साथ सौंदर्य की अभिव्यक्ति की निरंतरता, तथा प्राणियों, समय और प्राणियों के बीतने के साथ उदारता के सतत प्रदान द्वारा प्रमाणित होती है।

हां, दर्पणों की क्षणभंगुर प्रकृति तथा प्राणियों का गुजरना, साथ ही निरंतर अभिव्यक्तियां और दीप्ति, अत्यंत स्पष्टता से यह दर्शाती हैं कि प्रत्यक्ष सौंदर्य और चमकती हुई पूर्णता अभिव्यक्ति के स्थानों से संबंधित नहीं हैं; वे अत्यंत स्पष्टता और वाक्पटुता से यह सिद्ध करते हैं कि वे एक पारलौकिक सौंदर्य, एक पारलौकिक दाता, उस अनिवार्य सत्ता, उस स्थायी, उस प्रेममय से संबंधित हैं।

क्योंकि एक परिपूर्ण कार्य स्वतः ही एक परिपूर्ण कार्य की ओर संकेत करता है। एक परिपूर्ण कार्य अनिवार्य रूप से एक परिपूर्ण नाम और कार्य के परिपूर्ण कलाकार की ओर संकेत करता है। और एक परिपूर्ण नाम निस्संदेह एक परिपूर्ण गुण की ओर संकेत करता है। एक परिपूर्ण गुण निस्संदेह एक परिपूर्ण गुण की ओर संकेत करता है। और एक परिपूर्ण गुण निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति के योग्य तरीके से, उसके सार की पूर्णता की ओर संकेत करता है। यह बिल्कुल निश्चित है।

चौथी डिग्री

ईश्वर महान है, उसकी महिमा हो! क्योंकि वह सर्व-न्यायी, सनातन सर्व-बुद्धिमान मध्यस्थ और संप्रभु है, जिसने अपनी बुद्धि और इच्छा के सिद्धांतों के अनुसार छह दिनों में ब्रह्मांड के वृक्ष के शरीर की स्थापना की। उसने इसे अपने निर्धारण और आदेश के नियमों के अनुसार खंडों में विभाजित किया। उसने इसे अपने अभ्यासों के नियमों के माध्यम से क्रम में स्थापित किया। उसने अपनी दया और कृपा के नियमों के अनुसार इसे सजाया और संवारा। उसने अपने नामों और गुणों की अभिव्यक्तियों के माध्यम से इसे प्रकाशित किया। यह सब उसकी कलाकृतियों के क्रम और नियमितता, उसके प्राणियों के श्रृंगार, और उनकी पारस्परिक समानता और सामंजस्य, उनकी पारस्परिक सहायता और सहयोग, उनके एक-दूसरे को गले लगाने और

सभी चीजों में उनकी क्षमताओं के माप के अनुसार सचेत, कुशल कला, जो ईश्वरीय निर्धारण द्वारा निर्दिष्ट है।

ब्रह्माण्ड के क्रम में सार्वभौमिक ज्ञान,

इसकी सजावट में उत्तम अनुग्रह,

इसमें दी गई कृपा में सर्वव्यापी दया,

उसके प्राणियों का पोषण करने वाले जीविका और प्रावधान,

अपने रचयिता के आवश्यक गुणों को प्रकट करने के माध्यम से, वह जो अद्भुत जीवन और कला प्रदर्शित करता है, उसके अलंकरण की इच्छित सुन्दरता,

अपनी क्षणभंगुरता के बावजूद, इसके भीतर प्रतिबिंबित सौंदर्य की निरंतर अभिव्यक्ति,

उसके हृदय में जिसकी वह पूजा करता है उसके प्रति सच्चा प्रेम,

उसके परमानंद में आकर्षण स्पष्ट है,

इसके निर्माता की एकता के विषय में इसमें सभी सिद्ध लोगों की सहमति,

इसके सभी भागों में मिलने वाले लाभ,

इसके परिणाम बुद्धिमानीपूर्ण योजना के माध्यम से प्राप्त होते हैं,

अपने जीवों का उदार पालन-पोषण,

इसके मुख्य तत्वों में होने वाले परिवर्तनों में उत्तम व्यवस्था,

समग्रता के क्रम में अपनाए गए विशाल उद्देश्य,

इसकी तात्कालिक रचना, पूर्णतया उत्तम कला के साथ, समय या पदार्थ की आवश्यकता के बिना,

इसके प्राणियों को दी गई बुद्धिमान व्यक्तित्व, असीम संभावनाओं के बीच हिचकिचाते हुए,

इसके प्राणियों की असंख्य, विविध आवश्यकताएं अप्रत्याशित तरीकों से सबसे उपयुक्त समय पर पूरी होती हैं, साथ ही उनकी छोटी-छोटी इच्छाएं भी, जिनका वे स्वयं उत्तर नहीं दे सकते,

उसकी कमजोरी में प्रकट हुई परम शक्ति,

पूर्ण शक्ति अपनी नपुंसकता में प्रकट होती है,

जीवन अपनी निर्जीवता में स्पष्ट है,

अपनी अज्ञानता में स्पष्ट व्याप्त चेतना,

अपने परिवर्तनों के बीच पूर्ण व्यवस्था, एक अन्य ऐसे व्यक्ति के अस्तित्व को अनिवार्य बनाती है जो अपरिवर्तित है,

एक बिंदु पर केन्द्रित संकेन्द्रित वृत्तों की तरह इसकी महिमा,

इसकी तीन प्रकार की प्रार्थनाओं की स्वीकृति, अव्यक्त क्षमता की जीभ, जन्मजात आवश्यकता की जीभ, और तात्कालिकता की जीभ के माध्यम से की जाती है,

इसकी पूजा में आह्वान, साक्ष्य और दीप्ति,

इसके निर्धारण में आदेश,

अपने सृष्टिकर्ता के स्मरण में मिलने वाली शांति,

इसमें की गई पूजा इसके आरंभ और अंत को एक साथ लाने का साधन है, तथा इसकी पूर्णता का कारण स्पष्ट हो जाता है और इसके निर्माता के उद्देश्य साकार हो जाते हैं,

इनके साथ-साथ, ब्रह्माण्ड के शेष सभी गुण, अवस्थाएं और परिस्थितियां इस बात की गवाही देती हैं कि इसके सभी प्राणी एक ही बुद्धिमान योजनाकार के निर्देशन में हैं, और एक ही उदार प्रदाता द्वारा पोषित हैं; कि वे सभी एक ही स्वामी के सेवक हैं; एक ही प्रबंधक के अधीन हैं, और उनका स्रोत एक ही की शक्ति है, जिसकी एकता की अनेक मुहरें उसके प्राणियों के सभी पृष्ठों के सभी संदेशों पर स्पष्ट दिखाई देती हैं।

हाँ, सभी फूल और फल, और पौधे और पेड़, और जानवर और पत्थर, और यहाँ तक कि कण और ढेले, सभी घाटियों और सभी पहाड़ों, और रेगिस्तानों और जंगलों में, शिलालेखों और कृतियों पर मुहर हैं। जो लोग ध्यान से देखते हैं, उन्हें वे दिखाते हैं कि जिसने भी कृति को गढ़ा, उसने उस शिलालेख को लिखा जिसमें वह स्थान शामिल है जहाँ वह पाया जाता है। वह पृथ्वी के चेहरे और समुद्र के नीचे का भी लेखक है। उसने सूर्य और चंद्रमा को आकाश के चेहरे पर भी अंकित किया, जिसमें ऐसे कई संदेश हैं। उनके लेखक की महिमा का गुणगान हो, ईश्वर सबसे महान है!

संसार और उसमें रहने वाले सभी लोग एक साथ गाते हैं, "उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं है!"

पांचवी डिग्री[3]

ईश्वर महान है! क्योंकि वह सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता, स्वरूपदाता, सर्वदर्शी है, जिसकी दिव्यता और महानता के प्रमाण आकाशीय पिंड और चमकते हुए तारे हैं; वे किरणें उसकी प्रभुता और महिमा की गवाही देती हैं।

वे उसकी शानदार संप्रभुता और प्रभुत्व की गवाही देते हैं और उसका प्रचार करते हैं; वे उसके शासन और उसकी बुद्धि की विशाल सीमा, और उसकी शक्ति की राजसी विशालता की घोषणा करते हैं।

यह श्लोक सुनिए:

> क्या वे अपने ऊपर आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे कैसा बनाया और उसे किस प्रकार सुसज्जित किया और उसमें कोई दोष नहीं ? (50:6)

फिर स्वर्ग के मुख पर नजर डालिए, आप देखेंगे कि वह किस प्रकार अपनी शांति में मौन है, ज्ञान के साथ गतिशील है, ऐश्वर्य से दीप्तिमान है, किस प्रकार वह अपनी सजावट के साथ मुस्कुराता है, अपनी रचना के क्रम में, अपनी कला की समरूपता के साथ।

ऋतुओं के परिवर्तन के लिए इसके दीपक, सूर्य की चमक, पथों को प्रकाशित करने के लिए इसके मोमबत्ती, चंद्रमा की अवस्थाएं, संसारों को सुशोभित करने के लिए इसके तारों की चमक, उन लोगों के लिए एक अनंत, अखंड संप्रभुता की घोषणा करती है जो इस संसार को नियंत्रित करती है।

इस प्रकार, सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता सभी चीजों को जानने वाला है, उसकी इच्छा सर्वज्ञ है।

---

[3] यह तीस-वर्षीय योजना के प्रथम पड़ाव स्थल के परिशिष्ट में समझाया और चित्रित किया गया है।
दूसरे वचन और बीसवें वचन के दूसरे पड़ाव में।

वह जो चाहता है वह होता है और जो नहीं चाहता वह नहीं होता। वह अपनी आवश्यक, सर्वव्यापी, पूर्ण शक्ति के माध्यम से सभी चीजों पर शक्तिशाली है। आज सूर्य का प्रकाश या गर्मी के बिना अस्तित्व में रहना संभव या कल्पना योग्य नहीं है, न ही स्वर्ग के देवता और निर्माता का सर्वव्यापी ज्ञान और पूर्ण शक्ति के बिना अस्तित्व में रहना संभव या कल्पना योग्य है। अनिवार्य रूप से वह अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक सर्वव्यापी ज्ञान के साथ सभी चीजों को जानता है। अनिवार्य रूप से ऐसा ज्ञान सभी चीजों से जुड़ा हुआ है; उपस्थिति, साक्षी, पैठ और चमकदार सर्व-बोध के रहस्य के कारण, कुछ भी ऐसे ज्ञान से अलग या बाहर नहीं हो सकता है।

प्राणियों में देखा जाने वाला संतुलन और व्यवस्था, और व्यवस्थित आनुपातिकता, और सार्वभौमिक ज्ञान, और पूर्ण दान, और मापा हुआ नियमितता, और निर्धारित फलदायीता, और मृत्यु का नियत समय, और नियमित पोषण, विज्ञान द्वारा स्थापित पूर्ण उत्कृष्टता और सटीकता, और चिंतापूर्ण अलंकरण, और पूर्ण रूप से पूर्ण विभेदन, संतुलन, व्यवस्था, और कौशल, और पूर्ण सहजता, ये सभी अदृश्य और सभी चीजों के सर्वज्ञ एक के सर्वव्यापी ज्ञान की गवाही देते हैं।

जैसा कि श्लोक से संकेत मिलता है,

> क्या वह न जाने कि जिसने पैदा किया, और वही तो सूक्ष्मतम रहस्यों को जानता है और उनसे भली-भाँति परिचित है। (67:14)

किसी वस्तु के अस्तित्व के लिए ज्ञान आवश्यक है, और वस्तुओं के अस्तित्व के प्रकाश के लिए ज्ञान का प्रकाश आवश्यक है।

मनुष्य की रचना और उसके रचयिता के ज्ञान के प्रमाण की तुलना में, मनुष्य की उत्कृष्ट कला, जो उसकी बुद्धिमत्ता की ओर संकेत करती है, वह पृथ्वी पर दोपहर के सूर्य की तेज चमक की तुलना में अंधेरी रात में जुगनू के अत्यल्प प्रकाश के समान है।

और यदि वह सब कुछ जानता है, तो वह सब कुछ चाहता भी है। क्योंकि इच्छा किए बिना कुछ भी साकार नहीं हो सकता। और जिस तरह शक्ति प्रभावशाली होती है और ज्ञान भेद करता है, उसी तरह इच्छा निर्दिष्ट करती है; तब वस्तुओं का अस्तित्व साकार होता है।

संख्या के प्रति ईश्वरीय इच्छा और चुनाव के अस्तित्व के प्रमाण मौजूद हैं

वस्तुओं की अवस्थाओं, अवस्थाओं और विशेषताओं का अध्ययन।

हाँ, सभी प्राणियों को असीम संभावनाओं के बीच से व्यवस्था और विशेष गुण दिए गए हैं, असंगत तत्वों की उलझी हुई बाढ़ के बीच से निरर्थक तरीकों के बीच से, ऐसे सूक्ष्म और संवेदनशील क्रम के साथ, और उन्हें ऐसे सूक्ष्म और संवेदनशील संतुलन के साथ संतुलन दिया गया है, जैसा कि देखा जा सकता है; और सरल जीवन से विभिन्न सुव्यवस्थित जीवित प्राणियों की रचना

कम पदार्थ - जैसे शुक्राणु से मनुष्य और उसकी शारीरिक प्रणाली, और अंडे से पक्षी और उनके अंग, और बीजों से पेड़ और उनके विभिन्न सदस्य - दिखाते हैं कि सभी चीजें उसकी इच्छा, पसंद और इच्छा के माध्यम से निर्दिष्ट और निर्धारित होती हैं। जिस तरह एक ही तरह की चीजें एक दूसरे से मेल खाती हैं और एक ही प्रजाति के सदस्य बुनियादी सदस्यों के संबंध में एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, यह दर्शाता है कि अनिवार्य रूप से उनका निर्माता एक, एकल है; उसी तरह प्रत्येक सदस्य में व्यवस्थित रूप से अलग-अलग विशेषताओं द्वारा चिह्नित एक बुद्धिमान व्यक्तित्व है जो दर्शाता है कि वह एक, एकल निर्माता इच्छा और पसंद वाला एक एजेंट है जो अपनी इच्छानुसार कार्य करता है और अपनी इच्छानुसार आदेश देता है।

जिस तरह उस सर्वज्ञ और इच्छुक सृष्टिकर्ता को सभी चीज़ों का ज्ञान है और वह सभी चीज़ों के लिए इच्छुक है, और उसके पास सर्वव्यापी ज्ञान और सर्वव्यापी इच्छा और संपूर्ण विकल्प है; उसी तरह उसके पास आवश्यक, सारभूत पूर्ण शक्ति भी है, जो उसके सार से निकलती है और उसके लिए आवश्यक है। इसके विपरीत का हस्तक्षेप असंभव है, क्योंकि सभी सहमत हैं। इसलिए उसकी शक्ति में कोई डिग्री नहीं है। कण और तारे उसके संबंध में समान हैं, जैसे कि बहुत से और कुछ, छोटे और बड़े, विशेष और सार्वभौमिक, भाग और संपूर्ण, मनुष्य और ब्रह्मांड, और बीज और पेड़।

चमक, पारदर्शिता, पारस्परिकता, संतुलन, व्यवस्था और अनुरूपता के रहस्य के माध्यम से;

पूर्ण व्यवस्था, पूर्ण संतुलन और पूर्ण विभेदीकरण के साथ-साथ पूर्ण गति, सहजता और बहुलता की गवाही के अनुसार;

एकता की सहायता, एकता की सुविधा और एकता की अभिव्यक्ति के रहस्य के माध्यम से;

आवश्यकता, पूर्ण अनासक्ति और विरक्ति के ज्ञान के माध्यम से, और
सार की पूर्ण अन्यता;
अप्रतिबंधितता, स्थान से बंधे न होने और अविभाज्यता के रहस्य के माध्यम से;

बाधाओं और कठिनाइयों को सुविधा के साधनों में बदलने की बुद्धि के माध्यम से - यदि आवश्यकता थी, हालांकि अभी कोई आवश्यकता नहीं है - जैसे मनुष्यों में शिराएँ और बिजली और सूक्ष्म शक्तियों के संचालन के लिए धातु के तार;

कणों की बुद्धि के माध्यम से जो सितारों से कम वाक्पटु नहीं हैं, न ही
न तो विवरण सार्वभौमिकों से कम वाक्पटु हैं, न ही भाग पूरे से कम हैं, न ही कुछ बहुत से कम हैं, न ही छोटा महान से कम है, न ही मनुष्य दुनिया से कम है, न ही बीज पेड़ से कम वाक्पटु हैं;

इन सबके अनुसार, कण उस शक्ति के समक्ष तारों के बराबर हैं, कुछ अनेक के बराबर हैं, छोटे महान के बराबर हैं, भाग और पूर्ण के बराबर हैं, विशेष सार्वभौमिकों के बराबर हैं, मनुष्य विश्व के बराबर है,

और बीज वृक्ष के बराबर है; यह असंभव नहीं माना जा सकता कि जो पहले वाले को बनाता है, वह दूसरे को भी बनाता है। क्योंकि जो प्राणी घेरे हुए हैं, वे सार्वभौमिक, घेरे हुए प्राणियों के लघु नमूने हैं, और उनसे निकाले गए छोटे-छोटे संदेश या बिंदु हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जो चीज़ घेरे हुए है, उसे घेरे हुए प्राणी के निर्माता की शक्ति की मुट्ठी में होना चाहिए ताकि घेरे हुए प्राणी का लघु नमूना उसके ज्ञान के सिद्धांतों के माध्यम से घेरे हुए प्राणी के भीतर समाहित हो सके, और घेरे हुए प्राणी का सारांश उसकी बुद्धि के संतुलन के अनुसार उसमें से निकाला जा सके।

ईथर के कणों में परमाणु पर लिखी गई ज्ञान की कुरान, सूर्य और सितारों की स्याही से आकाश के पन्नों पर लिखी गई महानता की कुरान से कम वाक्पटु नहीं है। इसी तरह, मधुमक्खी या चींटी की रचना खजूर या हाथी की रचना से कम वाक्पटु नहीं है, और गुलाब की कला चमकते सितारे से कम वाक्पटु नहीं है। और इसी तरह, इसी तरह के और भी उदाहरण दिए जा सकते हैं।

रास्ता।

इसके अलावा, वस्तुओं के निर्माण में पूर्ण सहजता ने गुमराह लोगों को वस्तुओं के निर्माण को आत्म-निर्माण के साथ भ्रमित करने के लिए प्रेरित किया है, जो अंधविश्वासी असंभवताओं को आवश्यक बनाता है, जिसे न केवल तर्क अस्वीकार करता है, बल्कि जिससे कल्पना भी घृणा से दूर भागती है, जबकि सत्य और वास्तविकता के लोगों के लिए यह निश्चित रूप से और आवश्यक रूप से साबित होता है कि ब्रह्मांड के निर्माता की शक्ति के सामने, तारे और कण समान हैं।

उसकी महिमा बढ़े और उसका नाम महान हो; उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है!

छठी डिग्री[4]

उसकी महिमा का गुणगान हो और उसकी महानता का गुणगान हो, ईश्वर सबसे महान है! शक्ति और ज्ञान के मामले में वह सभी चीजों से बड़ा है। क्योंकि वह सर्व-न्यायी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, एक, एकल, पूर्व-शाश्वत संप्रभु है। सभी संसार उसके आदेश और संतुलन, और व्यवस्था और संतुलन; उसके न्याय, और बुद्धि, और ज्ञान, और शक्ति की पकड़ में हैं, और उनके नियंत्रण में हैं। वे उसकी एकता और एकरूपता को प्रकट करते हैं, जैसा कि निश्चित रूप से अनुमान लगाया जा सकता है, वास्तव में, देखा जा सकता है। क्योंकि अस्तित्व में ऐसा कुछ भी नहीं है जो आदेश और संतुलन और व्यवस्था और संतुलन की सीमाओं के बाहर हो। वे स्पष्ट रिकॉर्ड और स्पष्ट पुस्तक के दो क्षेत्र हैं। ये दो उपाधियाँ हैं, पहला सर्वज्ञ और बुद्धिमान के ज्ञान और आदेश का, दूसरा शक्ति और इच्छा का

[4] अगर यह छठी डिग्री दूसरी डिग्री की तरह ही लिखी गई होती, तो यह बहुत लंबी होती, क्योंकि स्पष्ट पुस्तक और स्पष्ट अभिलेख को संक्षिप्त शब्दों में नहीं समझाया जा सकता। हालाँकि, तीसवें वचन में इसकी संक्षिप्त चर्चा है, इसलिए हमने यहाँ चर्चा को छोटा कर दिया है, और इसकी विस्तृत व्याख्या अध्ययन सत्र [डर्स] पर छोड़ दी है।

वह सर्वशक्तिमान और अत्यंत दयावान है। इस पुस्तक और अभिलेख में जो व्यवस्था और संतुलन है, वह विवेकशील लोगों के लिए, जिनके सिर में दो आँखें हैं, दो चमकदार प्रमाण हैं कि अस्तित्व और काल में कोई भी वस्तु एक अत्यंत दयावान की शक्ति, एक अत्यंत दयालु की व्यवस्था, एक अत्यंत दयावान की शोभा, एक अत्यंत क्षमाशील की संतुलन से परे नहीं है।

संक्षेप में: सृष्टि में प्रथम और अंतिम नामों की अभिव्यक्तियाँ प्राणियों के आदि और अंत, उनकी उत्पत्ति और संतान, भूत और भविष्य, तथा ईश्वरीय आदेश और ज्ञान की ओर देखती हैं; वे स्पष्ट अभिलेख की ओर संकेत करती हैं।

जबकि वस्तुओं के निर्माण में बाह्य और आंतरिक नामों की अभिव्यक्ति स्पष्ट पुस्तक की ओर संकेत करती है।

क्योंकि ब्रह्माण्ड एक विशाल वृक्ष के समान है और इसके अन्दर के सभी लोक भी वृक्षों के समान हैं।
इसलिए आप एक वृक्ष के निर्माण और ब्रह्मांड के निर्माण के बीच तुलना कर सकते हैं, जिसमें सभी दुनिया और क्षेत्र शामिल हैं। वृक्ष का एक मूल और स्रोत है, जो बीज है जिससे वह उत्पन्न हुआ, और इसका एक वंश है जो इसके मरने के बाद भी इसके कार्यों को जारी रखता है, जो इसके फल में बीज है।

इस प्रकार इसका आरंभ और अंत प्रथम और अंतिम नामों की अभिव्यक्तियाँ हैं।
व्यवस्था और बुद्धि के माध्यम से, इसका आरंभ और मूल बीज वृक्ष के निर्माण के सभी नियमों को समाहित करने वाला एक सूचकांक और समय सारिणी है। इसके फलों में बीज, जो इसका अंत है, अंतिम नाम की अभिव्यक्ति का स्थान है।

पूर्ण बुद्धि से सृजित इसके फल में जो बीज हैं, वे छोटे-छोटे सन्दूकों के समान हैं, जिनमें एक समान वृक्ष के निर्माण की अनुक्रमणिका और समय-सारिणी रखी गई है। उनमें ईश्वरीय निर्धारण की कलम से भावी वृक्षों के निर्माण के नियम अंकित हैं।

वृक्ष का बाहरी स्वरूप बाह्य नाम की अभिव्यक्ति है। क्योंकि इसका बाहरी स्वरूप पूर्ण व्यवस्था, संतुलन और बुद्धिमत्ता को प्रदर्शित करता है, एक अलंकृत और सुसज्जित वस्त्र की तरह, जिसके साथ वृक्ष को उसके कद के माप के अनुसार पूर्ण बुद्धिमत्ता और अनुग्रह से सुसज्जित किया गया है।

पेड़ का आंतरिक पहलू इनवर्ड के नाम की अभिव्यक्ति है। यह पूर्ण व्यवस्था और योजना प्रदर्शित करता है और मन को चकित कर देता है। यह पेड़ के जीवन के लिए आवश्यक पदार्थों को पूरी नियमितता के साथ उसके विभिन्न सदस्यों में वितरित करता है, मानो यह आंतरिक पहलू एक अद्भुत मशीन हो जो अत्यंत व्यवस्थित संतुलन के साथ काम कर रही हो।

इस प्रकार, इसका मूल एक अद्भुत समय सारिणी है और इसका अंत एक आश्चर्यजनक सूचकांक है, दोनों ही स्पष्ट अभिलेख की ओर संकेत करते हैं।
जबकि इसका बाहरी पहलू कला से भरा एक भव्य वस्त्र है, और इसका आंतरिक पहलू, अत्यंत नियमितता की एक मशीन है; दोनों ही स्पष्ट पुस्तक की ओर संकेत करते हैं।
जिस प्रकार मनुष्य की स्मरण शक्ति संरक्षित पट्टिका की ओर संकेत करती है और उसका प्रमाण है, उसी प्रकार वृक्षों के मूल बीज और उनके फल स्पष्ट पट्टिका की ओर संकेत करते हैं।

रिकॉर्ड करें। जबकि उनके बाहरी और आंतरिक पहलू स्पष्ट पुस्तक की ओर संकेत करते हैं। इसलिए इस विशेष वृक्ष और पृथ्वी के वृक्ष और उसके अतीत और उसके भविष्य, और ब्रह्मांड के वृक्ष और उसकी शुरुआत और उसके भविष्य, और मनुष्य के वृक्ष और उसके पूर्वजों और संतानों के बीच तुलना की जा सकती है। और इसी तरह।

उनके रचयिता की महिमा उच्च हो, उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं!

हे परब्रह्म! आप मन को अपनी महानता के वास्तविक सार तक नहीं पहुंचाते, न ही उसे अपनी महानता के सार तक ले जाते हैं, क्योंकि वह उन्हें समझने में असमर्थ है!

सातवीं डिग्री

ईश्वर सबसे महान है, उसकी महिमा का गुणगान हो! शक्ति और ज्ञान के मामले में वह सभी चीज़ों से महान है। क्योंकि वह रचयिता, खोलने वाला, करने वाला, सबसे अधिक जानने वाला, देने वाला, सबसे अधिक तेजस्वी, सनातन सूर्य है। ब्रह्मांड अपने क्षेत्रों और प्राणियों के साथ उसकी रोशनी द्वारा डाली गई छाया है; वे उसके कार्यों के कार्य हैं, और उसके नामों की विभिन्न अभिव्यक्तियों के छापों के रंग हैं, और उसके निर्धारण और आदेश की कलम द्वारा अंकित रेखाएँ हैं, और उसके गुणों, सौंदर्य, महिमा और पूर्णता की अभिव्यक्तियों के दर्पण हैं।

पूर्व-शाश्वत साक्षी की सर्वसम्मति के अनुसार, जो उसके सभी माध्यमों से जाना जाता है
किताबें और धर्मग्रंथ, और उसकी कुरान की आयतें, और सृष्टि के संकेत;
और पृथ्वी की अपने सभी संसारों के साथ, उनके कुल सहित सर्वसम्मति
आवश्यक इच्छा और आवश्यकता, तथा उन पर प्रदर्शित पूर्ण धन और संपदा;
और सभी पैगम्बरों, संतों और शुद्ध विद्वानों की सर्वसम्मति, प्रकाशमान आत्माओं, प्रकाश से भरे दिलों और प्रकाशित दिमागों के साथ गवाही देने वाले लोग, उनके सभी शोधों, खुलासों, दीप्ति और आह्वानों के माध्यम से;

धरती से लेकर ऊंचे और नीचे के सभी प्राणी अपनी अनंत निश्चित गवाही और निश्चित पुष्टि के साथ सृष्टि के संकेतों और कुरान की आयतों और अवतरित पुस्तकों और धर्मग्रंथों की गवाही को स्वीकार करने में सहमत हैं, जो कि अनिवार्यतः अस्तित्ववान की गवाही है, कि सभी प्राणी उसकी शक्ति के कार्य हैं, उसके निर्णय के संदेश हैं, उसके नामों के दर्पण हैं, और उसकी ज्योतियों के प्रतिनिधित्व हैं।

उसकी महिमा बढ़े, उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है!

---

[5] यदि कोई इन दिव्य नामों की दूरबीन के माध्यम से प्राणियों में उनकी अभिव्यक्तियों के अंतर्गत दिव्य कृत्यों और कार्यों को देखता है, तो मन उस महिमावान की ओर चला जाता है, जिसका ये नाम संकेत करते हैं।

तीसवां फ्लैश

यह, इकतीसवें अक्षर का तीसवाँ फ्लैश
और एस्कीशेर जेल का एक फल, छह अंक के होते हैं

[जिस प्रकार मेवे रिसालेसी (विश्वास के फल) जोसेफ के डेनिज़ली स्कूल का सर्वोच्च पाठ था, और एल-हुकेतुज़-ज़हरा (चमकता प्रमाण) जोसेफ के अफ़्योन स्कूल का सबसे मूल्यवान पाठ था, उसी प्रकार यह तीसवाँ फ़्लैश, जो सबसे महान नाम वाले छह दिव्य नामों के बारे में छह बिंदुओं को स्पष्ट करता है, जोसेफ के एस्कीशेहर स्कूल का सबसे अधिक महत्व का एक शक्तिशाली पाठ था।

हर कोई सबसे महान नाम से लेकर सदा-जीवित और आत्मनिर्भर के नामों के बारे में लेखों में गहन, व्यापक बातों को तुरंत नहीं समझ पाएगा और उनकी सराहना नहीं कर पाएगा, लेकिन वे उनमें से एक हिस्सा लिए बिना भी नहीं रहेंगे।]

पहला बिंदु

दिव्य नाम परम पवित्र

[यह बिंदु परम पवित्र के दिव्य नाम के एक पहलू से संबंधित है। यह उचित है कि इसे तीसवें वचन के परिशिष्ट के रूप में जोड़ा जाए।]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
और धरती को हमने फैला दिया, और हमने उसे कितना अच्छा व्यवस्थित किया है। (51:48)

ईश्वरीय नाम परम पवित्र का एक प्रकटीकरण, जो उपरोक्त श्लोक का एक अर्थ है और एक महान नाम है या महान नाम में निहित छह प्रकाशों में से एक है, मुझे शाबान के महीने में एस्कीशेहर जेल में स्पष्ट हुआ। इसने ईश्वरीय अस्तित्व और ईश्वरीय एकता दोनों को पूरी स्पष्टता के साथ प्रदर्शित किया। मैंने इसे इस प्रकार देखा:

ब्रह्माण्ड एक विशाल, निरन्तर काम करने वाला कारखाना है और पृथ्वी का गोला एक छात्रावास और अतिथिगृह है जो निरन्तर भरता और खाली होता रहता है। सामान्यतः, कारखाने, छात्रावास और अतिथिगृह जो इस प्रकार उपयोग में लाए जाते हैं, वे गंदगी, मलबे और कचरे से बहुत अधिक गंदे और मैले हो जाते हैं, और उनके सभी भागों में सड़ा हुआ पदार्थ जमा हो जाता है। जब तक उन्हें सावधानी से न रखा जाए, साफ न किया जाए और झाड़ू न लगाई जाए, तब तक उनमें कोई नहीं रह सकता; मनुष्य गंदगी से अभिभूत हैं। परन्तु ब्रह्माण्ड का कारखाना और पृथ्वी का अतिथिगृह पूर्णतः शुद्ध, स्वच्छ और बेदाग है, और पूर्णतः मैला, बेदाग और ताजा है; वहां कोई भी अनावश्यक चीज नहीं है, कोई भी चीज बिना लाभ की नहीं है, गंदगी का एक भी कण नहीं है। यदि ऐसा प्रतीत होता भी है, तो उसे तुरंत परिवर्तन मशीन में डालकर साफ कर दिया जाता है।

इसका मतलब यह है कि जो इस फैक्ट्री की देखभाल करता है, वह बहुत बढ़िया तरीके से करता है। इसका मालिक ऐसा है कि वह इस विशाल फैक्ट्री और विशाल महल को इस तरह से साफ-सुथरा रखता है, मानो वे छोटे-छोटे कमरे हों। विशाल फैक्ट्री के आकार को देखते हुए, इसमें गंदगी और मलबे से कोई गंदगी या कचरा नहीं बचा है। वास्तव में, इसकी सफाई और साफ-सफाई उल्लेखनीय है।

अगर कोई व्यक्ति एक महीने तक नहा-धोकर अपना छोटा-सा कमरा साफ न करे, तो वह बहुत गंदा और मैला हो जाएगा। यानी, इस दुनिया के महल में स्वच्छता, पवित्रता और चमक निरंतर, बुद्धिमानी और मेहनत से की गई सफाई से आती है। अगर यह सफाई, झाड़ू लगाना और सावधानी से देखभाल न की गई होती, तो एक साल में धरती पर मौजूद सभी लाखों जानवरों की प्रजातियाँ दम तोड़ देतीं।

इसके अलावा, अंतरिक्ष और आकाश में मौजूद ग्रहों का मलबा, जो जीवन और मृत्यु को दर्शाता है, और उपग्रहों और तारों का मलबा, न केवल हमारे और अन्य जानवरों के सिर को तोड़ देता, बल्कि पृथ्वी और हमारी दुनिया के सिर को भी तोड़ देता। वे हमारे सिर पर पहाड़ों के आकार के पत्थर बरसाते और हमें इस दुनिया में हमारी मातृभूमि से दूर भगा देते। हालाँकि, लंबे समय से, अगर चेतावनी के तौर पर उन ऊँचे संसारों में विनाश और पुनर्निर्माण के परिणामस्वरूप कुछ उल्कापिंड गिरे हैं, तो उन्होंने किसी का सिर नहीं तोड़ा है।

इसके अलावा, पृथ्वी पर प्रतिवर्ष जीवन और मृत्यु के संघर्ष के परिणामस्वरूप एक लाख पशु प्रजातियों की लाशें और दो लाख पौधों की प्रजातियों का मलबा गिरता है, जिससे भूमि और समुद्र इतना गंदा हो जाता है कि सचेतन प्राणी पृथ्वी के चेहरे से प्रेम करने और प्रसन्न होने के बजाय, ऐसी कुरूपता से घृणा और विरक्ति महसूस करते हैं और मृत्यु और अस्तित्वहीनता की ओर भाग जाते हैं।

जिस प्रकार पक्षी अपने पंखों को तथा लेखक अपने पृष्ठों को सहजता से साफ कर लेता है, उसी प्रकार पृथ्वी के विमान, आकाश के पक्षी तथा ब्रह्माण्ड की पुस्तक के पृष्ठों को भी सहजता से साफ करके सुन्दर बना लिया जाता है। यहां तक कि जो लोग परलोक की असीम सुन्दरता पर विचार नहीं करते,

और विश्वास के साथ सोचते हैं, संसार की इस स्वच्छता और सुन्दरता के प्रेमी बन जाते हैं, इसकी पूजा करते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि, दुनिया का यह महल और ब्रह्मांड का कारखाना ईश्वरीय नाम परम पवित्र की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति प्रदर्शित करता है, जिसके द्वारा न केवल समुद्र के मांसाहारी सफाईकर्मी और भूमि के चील उस पवित्र सफाई से आने वाले आदेशों का पालन करते हैं, बल्कि इसके सफाई अधिकारी भी कीड़े और चींटियों की तरह लाशों को इकट्ठा करते हैं। जिस तरह शरीर में बहने वाली लाल और सफेद रक्त कणिकाएँ उन पवित्र आदेशों का पालन करती हैं और शरीर की कोशिकाओं में सफाई करती हैं, उसी तरह साँस लेना रक्त को शुद्ध और स्वच्छ करता है।

और जैसे पलकें आँख को साफ करने के आदेश का पालन करती हैं और मक्खियाँ अपने पंखों को साफ करने के लिए, वैसे ही विस्तृत वायुमंडल और बादल भी उसका पालन करते हैं। हवा धरती की सतह पर जमी धूल और मिट्टी के कणों पर उड़ती है और उसे साफ करती है। बादलों के स्पंज धरती के बगीचे पर पानी छिड़कते हैं और धूल और मिट्टी को गीला करते हैं। फिर, आकाश को गंदा न करने के लिए, हवा जल्दी से धरती का कूड़ा-कचरा समेट लेती है और खुद को एकदम व्यवस्थित तरीके से छिपा लेती है। यह आसमान के खूबसूरत चेहरे और आँख को साफ और चमका हुआ, चमकीला और जगमगाता हुआ दिखाता है।

और जैसे तारे, तत्व, खनिज और पौधे सफाई करने के आदेश का पालन करते हैं, वैसे ही सभी कण और परमाणु भी इसका पालन करते हैं: वे परिवर्तन और रूपांतरण की आश्चर्यजनक उथल-पुथल के भीतर सफाई पर ध्यान देते हैं। वे कभी भी अनावश्यक रूप से कहीं भी एकत्रित नहीं होते और रास्ते में बाधा नहीं बनते। अगर वे गंदे हो भी जाते हैं, तो उन्हें तुरंत साफ कर दिया जाता है।

वे बुद्धि के हाथों से प्रेरित होकर स्वच्छतम, साफ-सुथरे, चमकदार अवस्थाएं तथा सुंदरतम, शुद्ध और सूक्ष्म रूप प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार, यह एक ही कार्य, अर्थात् शुद्ध करना, जो एक ही सत्य है, एक महानतम नाम, परम पवित्र के नाम का सबसे बड़ा प्रकटीकरण है, जो अपने आप को अधिकतम क्षेत्र में, अर्थात् पूरे ब्रह्मांड में प्रकट करता है। सूर्य की तरह, यह उन आँखों को सीधे दिखाता है जो दूरदर्शी और व्यापक दृष्टि वाले हैं, दिव्य अस्तित्व और एकता के साथ-साथ सबसे सुंदर दिव्य नाम।

रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में निर्णायक सबूतों के साथ यह स्थापित किया गया है कि व्यवस्था और व्यवस्था का कार्य, जो कि ज्ञानी और विवेकशील के नामों की अभिव्यक्ति है; और तौलने और संतुलन का कार्य, जो कि न्याय और न्याय के नामों की अभिव्यक्ति है; और श्रृंगार और उदारता का कार्य, जो कि सुन्दर और उदार के नामों की अभिव्यक्ति है; और पालने और दान का कार्य, जो कि पालनहार और परम दयालु के नामों की अभिव्यक्ति है, प्रत्येक एक सत्य और एक कार्य है, इसलिए वे एक ही सत्ता के आवश्यक अस्तित्व और एकता को प्रदर्शित करते हैं। ठीक उसी तरह, शुद्ध करने और स्वच्छ करने का कार्य, जो कि ईश्वर की अभिव्यक्ति और प्रदर्शन है।

परम पवित्र नाम, सूर्य के समान अनिवार्यत: विद्यमान उस एक के अस्तित्व को, तथा दिन के उजाले के समान उसकी एकता को प्रदर्शित करता है।

और जैसा कि ऊपर वर्णित व्यवस्था, संतुलन, श्रृंगार और सफाई के बुद्धिमान कार्य अधिकतम क्षेत्र में अपनी एकता के कारण एक ही निर्माता की ओर संकेत करते हैं, वैसे ही अधिकांश सुंदर नाम, वास्तव में, हज़ार और एक नाम, प्रत्येक का अधिकतम क्षेत्र में एक महानतम प्रकटीकरण होता है। और उस प्रकटीकरण से आगे बढ़ने वाला कार्य अपनी व्यापकता के संबंध में स्पष्टता और निर्णायकता के साथ एकल अद्वितीय की ओर संकेत करता है।

स्वयंसिद्ध सत्य और एकल कार्य जो ब्रह्माण्ड के चेहरे को रोशन करते हैं और उसे मुस्कुराहट देते हैं, जैसे सार्वभौमिक ज्ञान जो सभी चीजों को उसके नियम और व्यवस्था के अनुरूप बनाता है, व्यापक उदारता जो सभी चीजों को सुशोभित करती है और उन्हें मुस्कुराने का कारण बनती है, सर्वव्यापी दया जो सभी चीजों को प्रसन्न और खुश करती है, जीविका की सार्वभौमिक व्यवस्था जो सभी चीजों का पोषण करती है और उन्हें खुशी देती है, और जीवन और जीवन देना जो प्रत्येक चीज को सभी चीजों से जोड़ता है और प्रत्येक चीज को सभी चीजों से लाभान्वित करता है, और कुछ हद तक सभी चीजों का मालिक बनाता है - ये स्वयंसिद्ध सत्य और एकल कार्य स्पष्ट रूप से एक सर्वज्ञ, सर्व-उदार और सर्व-करुणामय, एक एकमात्र पालनकर्ता, एक एकमात्र सदा-जीवित जीवनदाता की ओर इशारा करते हैं।

यदि उन सैकड़ों व्यापक कार्यों को, जिनमें से प्रत्येक ईश्वर की एकता का स्पष्ट प्रमाण है, उस एक अद्वितीय व्यक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो प्रत्येक सैकड़ों मामलों में असंभव हो जाता है। उदाहरण के लिए, ज्ञान, ईश्वरीय कृपा, दया, पालन-पोषण और जीवन देने जैसे स्वयंसिद्ध सत्य और एकल प्रमाणों की बात तो छोड़ ही दें, यदि केवल शुद्ध करने के कार्य को ब्रह्मांड के निर्माता के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो गुमराह लोगों के अविश्वासी तरीके में निम्नलिखित आवश्यक हो जाता है:

या तो कणों और मक्खियों से लेकर तत्वों और सितारों तक की सफाई से जुड़े सभी प्राणियों में विशाल ब्रह्मांड के श्रृंगार, संतुलन और सफाई को जानने और विचार करने की क्षमता होनी चाहिए और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए, या प्रत्येक को दुनिया के निर्माता के पवित्र गुणों से युक्त होना चाहिए, या प्रत्येक को ब्रह्मांड के आकार की एक सलाहकार बैठक में उपस्थित होना चाहिए ताकि ब्रह्मांड और उसके आने-जाने के संतुलन को विनियमित किया जा सके, और असंख्य कणों, मक्खियों और सितारों को बैठक में भाग लेना होगा; इत्यादि। इस तरह की सैकड़ों अंधविश्वासी, निरर्थक और कुतर्कपूर्ण असंभवताएँ घटित होनी चाहिए ताकि सार्वभौमिक, व्यापक और उत्कृष्ट श्रृंगार, शुद्धि और सफाई जो हर जगह देखी और देखी जा सकती है, हो सके। जहाँ तक इसका सवाल है, यह एक बार असंभव नहीं है, बल्कि लाखों बार असंभव है।

यदि दिन का प्रकाश और चमकते हुए काल्पनिक लघु सूर्यों का प्रतिनिधित्व किया जाए

पृथ्वी पर स्थित सभी वस्तुओं को सूर्य से संबंधित नहीं माना जाता है और उन्हें सूर्य के प्रतिबिम्ब की अभिव्यक्ति नहीं कहा जाता है, इसलिए यह आवश्यक है कि वास्तविक सूर्य का अस्तित्व कांच के सभी टुकड़ों, पानी की बूंदों और पृथ्वी पर चमकने वाले बर्फ के कणों, यहां तक कि हवा के सभी कणों में भी हो, ताकि सार्वभौमिक प्रकाश का अस्तित्व हो सके।

इस प्रकार, बुद्धि एक प्रकाश है; सर्वव्यापी दया एक प्रकाश है; श्रृंगार, संतुलन, व्यवस्था और सफाई प्रत्येक एक व्यापक प्रकाश हैं: वे सभी पूर्व-अनन्त सूर्य की किरणें हैं। तो देखो कि कैसे गुमराही और अविश्वास एक दलदल में घुस गए हैं जहाँ से कोई बच नहीं सकता! देखो कि गुमराही की अज्ञानता कितनी मूर्खतापूर्ण है! कहो: "इस्लाम के धर्म और पूर्ण और पूर्ण विश्वास के लिए ईश्वर की प्रशंसा है!"

निश्चित रूप से, यह उच्च, सार्वभौमिक सफाई जो ब्रह्मांड के महल को साफ रखती है, वह दिव्य नाम परम पवित्र की अभिव्यक्ति और आवश्यकता है। हाँ, जिस तरह सभी प्राणियों की महिमा परम पवित्र नाम की ओर देखती है, उसी तरह परम पवित्र का नाम उनकी सफाई की माँग करता है।1

स्वच्छता के इस पवित्र संबंध के कारण ही हदीस में कहा गया है,
"स्वच्छता विश्वास का एक हिस्सा है"2 इसे विश्वास का प्रकाश मानता है। और यह श्लोक,

> निस्संदेह, अल्लाह उन लोगों को प्यार करता है जो निरंतर उसकी ओर रुख करते हैं और वह उन लोगों को प्यार करता है जो खुद को पवित्र और स्वच्छ रखते हैं (2:222)

दिखाता है कि स्वच्छता परमेश्वर का प्रेम आकर्षित करने का एक ज़रिया है।

---

[1] हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बुरे गुण, गलत विश्वास, पाप और नवाचार सभी नैतिकता के उदाहरण हैं।
और आध्यात्मिक गंदगी.

[2] मुस्लिम, ताहारा, 1; दारिमी, वूडू', 2; मुसनद, वी, 342, 344; अल-'अजलुनी, कशफ अल-खफा', 291।

दूसरा बिंदु

दिव्य नाम सर्व-न्यायपूर्ण

और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसका भंडार हमारे पास न हो, परन्तु हम उसे उचित मात्रा में ही उतारते हैं। (15:21)

इस आयत से संबंधित एक बिंदु और सर्व-न्याय नाम का एक प्रकटीकरण, जो कि एक महान नाम है या महानतम नाम को बनाने वाले छह प्रकाशों में से एक है, जैसे कि पहला बिंदु, मुझे एस्कीशेहर जेल में दूर से दिखाई दिया। इसे समझने के लिए, हम निम्नलिखित कहते हैं; फिर से एक तुलना के माध्यम से:

ब्रह्मांड एक महल है, लेकिन यह ऐसा महल है जिसके भीतर एक शहर है जो निरंतर विनाश और पुनर्निर्माण की उथल-पुथल से ग्रस्त है। शहर के भीतर एक देश है जो लगातार युद्ध और पलायन से त्रस्त है। देश के भीतर एक दुनिया है जो निरंतर मृत्यु और जीवन के बीच घूम रही है। लेकिन महल, शहर, देश और दुनिया में ऐसा आश्चर्यजनक संतुलन, साम्य और संतुलन कायम है कि यह स्वयंसिद्ध रूप से साबित करता है कि उनके असंख्य अस्तित्वों में दिखाई देने वाले परिवर्तन और आने-जाने को हर पल एक ही सत्ता के तराजू पर मापा और तौला जा रहा है जो पूरे ब्रह्मांड को देखता और देखता है।

क्योंकि अगर यह अन्यथा होता, अगर कारण स्वतंत्र और अनियंत्रित होते, जो संतुलन को नष्ट करने और सब कुछ खत्म करने की कोशिश करते हैं, जिसमें एक मछली एक हजार अंडे देती है और एक फूल जैसे खसखस बीस हजार बीज पैदा करता है, और परिवर्तन के हमले और हिंसा के साथ और तत्वों की बाढ़ आती है, या अगर इसे लक्ष्यहीन, उद्देश्यहीन संयोग, अराजक अंधी शक्तियों और अचेतन अंधेरे प्रकृति के रूप में संदर्भित किया जाता है, तो प्राणियों का संतुलन और ब्रह्मांड का संतुलन इतना पूरी तरह से नष्ट हो गया होता कि एक वर्ष के भीतर, वास्तव में एक दिन के भीतर, अराजकता हो गई होती। यानी, समुद्र पूरी तरह से अव्यवस्थित और भ्रमित होकर मलबे से भर गए होते और बदबूदार हो गए होते; वायुमंडल हानिकारक गैसों से जहरीला हो गया होता; और पृथ्वी के लिए, यह एक कूड़े के ढेर, वधशाला और दलदल में बदल गया होता। दुनिया का दम घुट गया होता।

इस प्रकार, एक सजीव शरीर की कोशिकाओं से लेकर, रक्त में लाल और सफेद कणिकाओं, सूक्ष्म कणों के परिवर्तन और

शरीर के अंगों का आपसी अनुपात और संबंध, समुद्रों का आना-जाना, धरती के नीचे झरनों की आय और व्यय, पशुओं और पौधों का जन्म और मृत्यु, शरद ऋतु का विनाश और वसंत का पुनर्निर्माण, तत्वों और तारों के कर्तव्य और गति, और मृत्यु और जीवन, प्रकाश और अंधकार, और गर्मी और ठंड के परिवर्तन, संघर्ष और टकराव, इतने संवेदनशील तराजू, इतने महीन माप के साथ व्यवस्थित और तौले जाते हैं, कि मानव मन कहीं भी कोई बर्बादी या निरर्थकता नहीं देख सकता है, ठीक वैसे ही जैसे मानव विज्ञान और दर्शन हर जगह सबसे उत्तम व्यवस्था और सुंदर समरूपता का निरीक्षण और प्रदर्शन करते हैं। वास्तव में, मानव विज्ञान और दर्शन उस व्यवस्था और समरूपता की अभिव्यक्ति और व्याख्याकार हैं।

तो, आओ और सूर्य और उसके बारह ग्रहों के संतुलन और साम्यावस्था पर विचार करें। क्या यह सूर्य की तरह ही स्पष्ट रूप से उस सर्वशक्तिमान की ओर संकेत नहीं करता जो सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-शक्तिमान है? खास तौर पर हमारा जहाज, यानी पृथ्वी का गोला, जो ग्रहों में से एक है; यह एक वर्ष में चौबीस हज़ार साल की परिक्रमा करता है, अपनी असाधारण गति के बावजूद, अपने चेहरे पर संग्रहीत और ढेर की गई चीज़ों को न तो बिखेरता है और न ही हिलाता है, न ही उन्हें अंतरिक्ष में फेंकता है। अगर इसकी गति थोड़ी भी बढ़ाई या घटाई जाती, तो यह अपने निवासियों को वायुमंडल में फेंक देता और उन्हें अंतरिक्ष में बिखेर देता। और अगर इसका संतुलन एक मिनट या एक सेकंड के लिए भी बिगड़ जाए, तो यह दुनिया को नष्ट कर देगा। वास्तव में, यह किसी अन्य पिंड से टकराएगा और प्रलय का दिन आ जाएगा।

विशेषकर पृथ्वी पर चार लाख पौधों और पशु प्रजातियों के जन्म, मृत्यु, आजीविका और जीवन का करुणामय संतुलन; यह एक न्यायप्रिय और करुणामय ईश्वर को उसी तरह स्पष्ट रूप से दर्शाता है, जिस तरह प्रकाश सूर्य को दर्शाता है।

विशेष रूप से उन प्रजातियों के असंख्य सदस्यों में से किसी एक के अंग, क्षमताएं और इंद्रियां; वे एक दूसरे से इतने अच्छे संतुलन और साम्य के साथ जुड़े हुए हैं कि उनका संतुलन और पारस्परिक अनुपात एक सर्वज्ञ और न्यायप्रिय निर्माता को इतनी स्पष्टता से दर्शाता है कि वह स्वयंसिद्ध हो जाता है।

विशेषकर पशुओं के शरीर में कोशिकाएं और रक्त वाहिकाएं, तथा रक्त में कणिकाएं और कणिकाओं में कणिकाएं; इनमें इतना अच्छा, संवेदनशील और अद्भुत संतुलन होता है कि यह स्वतः सिद्ध करता है कि इनका पालन-पोषण और प्रबंधन एक ही न्यायप्रिय और बुद्धिमान सृष्टिकर्ता के संतुलन, नियम और व्यवस्था के द्वारा होता है, जो सभी चीजों की लगाम थामे हुए है, जिसके पास सभी चीजों की कुंजी है, जिसके लिए कोई भी चीज किसी अन्य चीज के लिए बाधा नहीं है, और जो सभी चीजों को उतनी ही आसानी से निर्देशित करता है, जितनी आसानी से एक चीज करती है।

यदि कोई व्यक्ति जो विश्वास नहीं करता या यह असंभव समझता है कि जिन्न और मनुष्यों के कर्मों को अंतिम निर्णय के समय न्याय के सर्वोच्च तराजू पर तौला जाएगा, तो वह इस विशाल संतुलन को ध्यान से देख सकता है, जिसे वह देख सकता है।

इस संसार को अपनी आँखों से देखने के बाद, वह निश्चय ही इसे असंभव नहीं समझेगा।

हे अपव्ययी, अपव्ययी... अन्यायी, अन्यायी... गंदे, अशुद्ध... दुखी मनुष्य! तुमने अर्थव्यवस्था, स्वच्छता और न्याय के अनुसार काम नहीं किया है जो कि पूरे ब्रह्मांड और सभी प्राणियों के कार्य करने के सिद्धांत हैं, और इसलिए वास्तव में तुम उनके क्रोध और घृणा के पात्र हो। तुम किस पर भरोसा करते हो कि अपने गलत कामों और असंतुलन, अपनी अपव्ययता और अशुद्धता के माध्यम से तुम सभी प्राणियों को क्रोधित करते हो? हाँ, ब्रह्मांड का सार्वभौमिक ज्ञान, जो कि सर्वज्ञ के दिव्य नाम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है, अर्थव्यवस्था और अपव्यय की कमी पर निर्भर करता है। यह मितव्ययिता का आदेश देता है। और ब्रह्मांड में संपूर्ण न्याय, सर्व-न्यायपूर्ण नाम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति से आगे बढ़ता है, सभी चीजों के संतुलन का प्रबंधन करता है और मनुष्य को न्याय का आदेश देता है। संतुलन शब्द का चार बार उल्लेख करते हुए, सूरा अल-रहमान की आयतें,

> और उसने आकाश को ऊँचा किया और तराजू को स्थिर किया, ताकि तुम तराजू का उल्लंघन न करो। अतः न्याय से तौल करो और तराजू में कम न पड़ो। (35:7-9)

चार डिग्री और चार तरह के संतुलन को दर्शाते हैं, जो ब्रह्मांड में इसकी विशालता और सर्वोच्च महत्व को दर्शाते हैं। हाँ, जिस तरह किसी भी चीज़ में कोई बर्बादी नहीं होती, उसी तरह किसी भी चीज़ में सच्चा अन्याय या असंतुलन नहीं होता।

परम पवित्र नाम से होने वाली स्वच्छता और शुद्धि ब्रह्मांड के सभी प्राणियों को स्वच्छ और सुंदर बनाती है। जब तक मनुष्य का गंदा हाथ हस्तक्षेप नहीं करता, तब तक किसी भी चीज़ में कोई सच्ची अशुद्धता या कुरूपता नहीं होती।

तो आप समझ सकते हैं कि न्याय, मितव्ययिता और स्वच्छता के सिद्धांत मानव जीवन के लिए कितने बुनियादी हैं, जो कुरान और इस्लामी सिद्धांतों की सच्चाईयाँ हैं। और जान सकते हैं कि कुरान के आदेश ब्रह्मांड के साथ कितने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं, जिन्होंने हर जगह अपनी जड़ें जमा ली हैं, और उन सच्चाइयों को नष्ट करना उतना ही असंभव है जितना कि ब्रह्मांड को नष्ट करना और उसका रूप बदलना।

क्या यह संभव है कि यद्यपि दया, अनुग्रह और संरक्षण जैसे इन तीन विशाल प्रकाशों के समान सैकड़ों व्यापक सत्य मृतकों और परलोक के पुनरुत्थान की मांग करते हैं और उन्हें अनिवार्य बनाते हैं, फिर भी दया, अनुग्रह, न्याय, बुद्धि, मितव्ययिता और स्वच्छता जैसे शक्तिशाली और सर्वव्यापी सत्य, जो ब्रह्मांड और सभी प्राणियों पर शासन करते हैं, वे परलोक न होने और पुनरुत्थान न होने के कारण निर्दयता, अत्याचार, बुद्धि की कमी, अपव्यय, अस्वच्छता और निरर्थकता में परिवर्तित हो जाएं?

भगवान न करे, एक लाख बार, भगवान न करे! क्या दया और

जो बुद्धि दयापूर्वक एक मक्खी के जीवन के अधिकारों की रक्षा करती है, क्या वह पुनरुत्थान न लाकर सभी सचेत प्राणियों के जीवन के असंख्य अधिकारों और असंख्य प्राणियों के असंख्य अधिकारों का उल्लंघन करती है? और यदि कोई ऐसा कह सकता है, तो क्या एक शानदार प्रभुत्व जो अपनी दया और करुणा और न्याय और बुद्धि में असीम संवेदनशीलता और देखभाल प्रदर्शित करता है, और एक दिव्य संप्रभुता जो अपनी पूर्णता को प्रदर्शित करने और खुद को ज्ञात और प्यार करने के लिए ब्रह्मांड को अपनी अंतहीन अद्भुत कलाओं और उपहारों से सुशोभित करती है, पुनरुत्थान की अनुमति नहीं देगी, जो प्राणियों और उनकी सभी पूर्णताओं के मूल्य को कम कर देगी और उन्हें नकार देगी? भगवान न करे! ऐसा पूर्ण सौंदर्य स्पष्ट रूप से ऐसी पूर्ण कुरूपता की अनुमति नहीं देगा।

हां, जो व्यक्ति परलोक को नकारना चाहता है, उसे पहले पूरी दुनिया और उसकी सारी सच्चाइयों को नकारना होगा। अन्यथा दुनिया अपनी सारी सच्चाइयों के साथ मिलकर उसे एक लाख जुबानों से झूठ सुनाएगी, जिससे उसके झूठ की जटिल प्रकृति साबित होगी। दसवां वचन कुछ प्रमाणों के साथ साबित करता है कि परलोक का अस्तित्व इस दुनिया के अस्तित्व जितना ही निश्चित और असंदिग्ध है।

तीसरा बिंदु

जो छह ज्योतियों में से तीसरी ज्योति की ओर संकेत करता है

सबसे महान नाम का,

दिव्य नाम बुद्धिमान

अपने पालनहार के मार्ग की ओर बुद्धि के साथ बुलाओ। (16:125)

[ईश्वरीय नाम सैपिएंट का एक रूप, जो एक महानतम नाम है या महानतम नाम के छह प्रकाशों में से एक है, और उपरोक्त आयत का एक बढ़िया बिंदु, मुझे रमज़ान के महीने में एस्कीशेहर जेल में दिखाई दिया। यह तीसरा बिंदु पाँच मामलों से बना है, और इसका केवल एक संकेत है। यह जल्दबाजी में लिखा गया था और अपने मूल रूप में बना हुआ है।]

पहला मामला

जैसा कि दसवें वचन में संकेत किया गया है, दिव्य नाम के महानतम प्रकटीकरण ने ब्रह्माण्ड को एक पुस्तक की तरह बनाया है जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर सैकड़ों पुस्तकें लिखी गई हैं, और जिसकी प्रत्येक पंक्ति में सैकड़ों पृष्ठ समाहित हैं, और जिसके प्रत्येक शब्द में सैकड़ों पंक्तियाँ हैं, और जिसके प्रत्येक अक्षर में सौ शब्द हैं, और जिसके प्रत्येक बिंदु में पुस्तक की एक छोटी अनुक्रमणिका पाई जाती है। पुस्तक के पृष्ठ और पंक्तियाँ, यहाँ तक कि बिंदु भी, इसके लेखक और लेखक को इतनी स्पष्टता से दर्शाते हैं कि ब्रह्माण्ड की वह पुस्तक अपने लेखक के अस्तित्व और एकता को उस हद तक प्रमाणित करती है, जितना कि वह अपने स्वयं के अस्तित्व को नहीं दर्शाती। क्योंकि यदि एक अक्षर अपने अस्तित्व को एक अक्षर की सीमा तक दर्शाता है, तो वह अपने लेखक को एक पंक्ति की सीमा तक दर्शाता है।

हाँ, इस महान पुस्तक का एक पृष्ठ पृथ्वी का चेहरा है। इस पृष्ठ पर पौधों और जानवरों की प्रजातियों की संख्या के अनुसार पुस्तकें वसंत ऋतु में देखी जा सकती हैं, एक दूसरे के भीतर, एक साथ, एक ही समय में, बिना किसी त्रुटि के, सबसे उत्तम रूप में।

पृष्ठ की एक पंक्ति एक बगीचा है। हम देखते हैं कि इस पंक्ति पर फूलों, पेड़ों और जानवरों की संख्या के लिए अच्छी तरह से रचित स्तुति लिखी गई है, एक दूसरे के भीतर, बिना किसी त्रुटि के।

इस पंक्ति का एक शब्द है एक पेड़ जिसने अपने फूल खोले हैं और अपने पत्ते फैलाए हैं ताकि वह अपना फल पैदा कर सके। इस शब्द में व्यवस्थित, सुडौल, सुशोभित पत्तियों, फूलों और फलों की संख्या के अनुसार सर्व-महिमावान बुद्धिमान की प्रशंसा और स्तुति करने वाले सार्थक अंश शामिल हैं। यह

मानो सभी वृक्षों की तरह यह वृक्ष भी अपने रचयिता की प्रशंसा में रचित एक स्तुति-गीत है।

ऐसा भी लगता है मानो वह सर्वशक्तिमान बुद्धिमान् हजारों आँखों से देखना चाहता है
पृथ्वी की प्रदर्शनी में प्रदर्शित उनकी अद्भुत प्राचीन कृतियों पर।

और ऐसा लगता है जैसे उस पूर्व-शाश्वत सम्राट द्वारा वृक्ष को दिए गए रत्नजटित उपहार, अलंकरण और वेश-भूषा को ऐसे अलंकृत, सुसंगठित, व्यवस्थित, अर्थपूर्ण और बुद्धिमत्तापूर्ण रूप दिए गए हैं ताकि उन्हें वसंत ऋतु में, उसके विशेष उत्सव और परेड में उसके सामने प्रस्तुत किया जा सके, कि उसके प्रत्येक फूल और फल अनेक तरीकों से और एक के भीतर एक अनेक प्रमाणों के साथ अपने लेखक के अस्तित्व और नामों की गवाही देते हैं।

उदाहरण के लिए, इसके सभी फूलों और फलों में एक संतुलन है। संतुलन एक व्यवस्था के भीतर है, और व्यवस्था एक व्यवस्था और संतुलन के भीतर है जिसे लगातार नवीनीकृत किया जा रहा है। व्यवस्था और संतुलन एक कला और अलंकरण के भीतर है, और अलंकरण और कला सार्थक सुगंध और बुद्धिमान स्वाद के भीतर हैं। इस प्रकार, प्रत्येक फूल पेड़ के फूलों की संख्या के अनुसार सर्व-महिमावान बुद्धिमान की ओर इशारा करता है।

और वृक्ष में, जो एक शब्द है, फल में बीज का बिंदु, जो एक अक्षर की तरह है, एक छोटा सा बक्सा है जिसमें पूरे वृक्ष की अनुक्रमणिका और कार्यक्रम समाहित है। और इसी तरह। इसी सादृश्य को जारी रखते हुए, बुद्धिमान और बुद्धिमान के नाम के प्रकटीकरण के माध्यम से, ब्रह्मांड की पुस्तक की सभी पंक्तियाँ और पृष्ठ - और न केवल इसकी पंक्तियाँ, बल्कि इसके सभी शब्द, अक्षर और बिंदु - चमत्कार के रूप में बनाए गए हैं ताकि यदि सभी कारण एक साथ इकट्ठे हो जाएँ, तो वे एक बिंदु के समान नहीं बना सकते, न ही वे इसे विवादित कर सकते हैं।

हां, चूंकि इस ब्रह्मांड के शक्तिशाली कुरान के प्रत्येक सृजनात्मक चिह्न उन चिह्नों के अंकों और अक्षरों की संख्या के अनुसार चमत्कार प्रदर्शित करते हैं, इसलिए किसी भी तरह से भ्रमित संयोग, अंधी शक्ति, लक्ष्यहीन, अराजक, अचेतन प्रकृति उस बुद्धिमान, समझदार विशेष संतुलन और सबसे संवेदनशील व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। अगर वे हस्तक्षेप करते, तो भ्रम के कुछ निशान अवश्य ही दिखाई देते। जबकि किसी भी तरह की अव्यवस्था कहीं भी नहीं दिखती।

दूसरा मामला

पहला विषय : जैसा कि दसवें वचन में बताया गया है, यह एक बुनियादी नियम है कि असीम रूप से परिपूर्ण सुंदरता और असीम रूप से सुंदर पूर्णता स्वयं को देखना और दिखाना और प्रदर्शित करना चाहती है। इसके परिणामस्वरूप, स्वयं को और अपनी पूर्णता को ज्ञात करने के लिए, और अपनी सुंदरता को प्रदर्शित करने और स्वयं को प्रेम करने के लिए ब्रह्मांड की शक्तिशाली पुस्तक का पूर्व-शाश्वत लेखक ब्रह्मांड और उसके सभी पृष्ठों के साथ अपनी पूर्णता और अपनी सुंदरता की पूर्णता को ज्ञात और प्रेम करता है,

रेखाएँ और यहाँ तक कि अक्षर और बिंदु, सभी प्राणियों की असंख्य भाषाओं के साथ, सबसे विशिष्ट से लेकर सबसे सार्वभौमिक तक।

हे असावधान मनुष्य! होश में आओ! जान लो कि यह कितना जटिल अज्ञान है और कितना बड़ा नुकसान है, यदि महिमा और सौंदर्य के बुद्धिमान और सर्वज्ञ शासक ने अपने आपको इस शानदार, अनंत तरीके से अपने सभी प्राणियों के माध्यम से तुम्हारे लिए जाना और तुमसे प्रेम किया, उसके सामने तुम उसे विश्वास के साथ नहीं पहचानते और तुम अपनी पूजा के साथ अपने आप को उसका प्रिय नहीं बनाते।

दूसरे मामले का दूसरा विषय: ब्रह्मांड के सर्वशक्तिमान और बुद्धिमान निर्माता के प्रभुत्व में साझेदारी के लिए कोई स्थान नहीं है। क्योंकि हर चीज में मौजूद असीम रूप से परिपूर्ण व्यवस्था साझेदारों को स्वीकार नहीं करती। एक ही मामले में कई हाथों का हस्तक्षेप उसे भ्रमित करता है। यदि किसी देश में दो राजा हों, किसी शहर के दो राज्यपाल हों या किसी गांव में दो मुखिया हों, तो उनके सभी मामलों में अव्यवस्था होगी। इसी तरह, सबसे छोटा अधिकारी अपने कर्तव्यों में हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करता है, जो दर्शाता है कि शासन की मौलिक विशेषता स्वतंत्रता और एकनिष्ठता है।

दूसरे शब्दों में, व्यवस्था के लिए एकता आवश्यक है, और शासन के लिए स्वतंत्रता।

यदि सहायता की आवश्यकता वाले शक्तिहीन मनुष्य में शासन की अस्थायी छाया इस तरह से हस्तक्षेप को अस्वीकार करती है, तो पूर्ण शक्ति रखने वाले व्यक्ति की प्रभुत्व की डिग्री पर सच्चा, पूर्ण शासन निश्चित रूप से अपनी पूरी ताकत के साथ हस्तक्षेप को अस्वीकार कर देगा। यहां तक कि सबसे छोटा हस्तक्षेप भी व्यवस्था को बिगाड़ देगा।

लेकिन ब्रह्माण्ड की रचना इस तरह से की गई है कि बीज बनाने के लिए वृक्ष बनाने की शक्ति की आवश्यकता होती है। और वृक्ष बनाने के लिए ब्रह्माण्ड बनाने की शक्ति की आवश्यकता होती है। यदि कोई भागीदार ब्रह्माण्ड में हस्तक्षेप करता है, तो उसे सबसे छोटे बीज में हिस्सा लेना होगा। क्योंकि बीज ब्रह्माण्ड का एक नमूना है। तो फिर दो प्रभुत्व जो विशाल ब्रह्माण्ड में एक साथ नहीं रह सकते, उन्हें एक बीज में, यहाँ तक कि एक छोटे कण में भी रहना होगा। यह असंभवताओं और मिथ्या भ्रमों में सबसे अधिक निषिद्ध और अर्थहीन है। जान लें कि अविश्वास और ईश्वर के साथ भागीदार होना एक अनंत रूप से जटिल विरोधाभास, त्रुटि और मिथ्या है, क्योंकि वे उस परम शक्तिशाली की - भले ही केवल एक बीज में - नपुंसकता की आवश्यकता रखते हैं, जो अपने न्याय और अपनी बुद्धि के आदेश के तराजू में विशाल ब्रह्माण्ड की सभी अवस्थाओं और विशेषताओं को धारण करता है; और जान लें कि ईश्वरीय एकता एक अनंत रूप से जटिल सत्य, वास्तविकता और सत्य है, और कहें: "विश्वास के लिए ईश्वर की सभी प्रशंसा और धन्यवाद!"

तीसरा मामला

अपने नामों से, सर्वशक्तिशाली निर्माता ने इस दुनिया में हज़ारों सुव्यवस्थित दुनियाओं को शामिल किया है। उन दुनियाओं के भीतर, उन्होंने मनुष्य को एक केंद्र और धुरी के रूप में बनाया जो सभी प्राणियों में से ब्रह्मांड में ज्ञान और उद्देश्यों को प्रकट करता है। ब्रह्मांड के क्षेत्र में ज्ञान और लाभकारी चीज़ों के सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण मनुष्य की ओर देखते हैं। और मानवीय क्षेत्र में, उन्होंने पोषण को एक केंद्र बनाया; मानवीय दुनिया में ज्ञान और लाभ के अधिकांश उदाहरण पोषण की ओर देखते हैं और उसके माध्यम से प्रकट होते हैं। सर्वज्ञ के नाम की अभिव्यक्ति मनुष्य में उसकी बुद्धि और पोषण से प्राप्त होने वाले आनंद के माध्यम से शानदार रूप में स्पष्ट है। मानव बुद्धि द्वारा खोजे गए सैकड़ों विज्ञानों में से प्रत्येक सृष्टि के क्षेत्र में ज्ञान के नाम की अभिव्यक्ति का वर्णन करता है।

उदाहरण के लिए, अगर चिकित्सा विज्ञान से पूछा जाए: "ब्रह्मांड क्या है?", तो उसे उत्तर देना होगा: "यह एक बहुत ही विशाल, व्यवस्थित और परिपूर्ण फार्मेसी है। सभी उपचार इसमें बेहतरीन तरीके से तैयार और संग्रहीत किए जाते हैं।"

यदि रसायन विज्ञान से पूछा जाए: "पृथ्वी क्या है?", तो वह उत्तर देगा: "यह पृथ्वी है।"
एक पूरी तरह से व्यवस्थित दवा की दुकान।”

इंजीनियरिंग का विज्ञान जवाब देगा: "यह पूरी तरह से दोषरहित, उत्तम कारखाना है।"

कृषि विज्ञान उत्तर देगा: "यह एक असीम उत्पादक, नियमित और सुव्यवस्थित खेत और उद्यान है जो आवश्यक समय पर सभी प्रकार के बीज पैदा करता है।"

वाणिज्य विज्ञान उत्तर देगा: "यह एक अत्यंत सुव्यवस्थित व्यवस्था है
प्रदर्शनी, व्यवस्थित बाज़ार, और सबसे कलात्मक सामानों से भरी दुकान।”

अर्थशास्त्र का विज्ञान उत्तर देगा: “यह एक बहुत ही सुव्यवस्थित गोदाम है जिसमें हर प्रकार का भोजन मौजूद है।”

आहार विज्ञान का उत्तर होगा: "यह परम दयालु की प्रभुतापूर्ण रसोई और कढ़ाई है जिसमें नियमित रूप से लाखों स्वादिष्ट भोजन पकाए जाते हैं।"

सैनिक विज्ञान उत्तर देगा: "पृथ्वी एक सैन्य शिविर है। यद्यपि उस सेना में चार लाख विभिन्न राष्ट्र हैं, जिन्हें हाल ही में हथियारों के साथ धरती पर अपने तंबू गाड़कर लाया गया है, उन्हें उनके राशन, वर्दी, हथियार, प्रशिक्षण और छुट्टी दी जाती है, जो प्रत्येक राष्ट्र के लिए अलग-अलग है, पूर्ण क्रम में, बिना किसी भ्रम के और किसी को भी भुलाए बिना, एक ही कमांडर-इन-चीफ की आज्ञा, शक्ति, करुणा के माध्यम से, उसके खजाने से; वे सभी सबसे नियमित तरीके से प्रशासित होते हैं।"

और यदि बिजली के विज्ञान से पूछा जाए कि यह संसार क्या है? तो वह अवश्य उत्तर देगा कि इस ब्रह्माण्ड के भव्य भवन की छत असंख्य सुव्यवस्थित और संतुलित विद्युत दीपों से सुसज्जित है, और यह व्यवस्था और संतुलन इतना अद्भुत है कि सबसे पहले सूर्य और वे आकाशीय दीप जो पृथ्वी से हजार गुना बड़े हैं, वे निरंतर जलने पर भी अपना संतुलन नहीं बिगाड़ते; वे फटते नहीं, आग नहीं पकड़ते। उनका व्यय अनंत है, तो उनकी आय और ईंधन तथा दहनीय पदार्थ कहां से आते हैं? वे समाप्त क्यों नहीं होते? उनके जलने से संतुलन क्यों नहीं बिगड़ता? एक छोटा-सा दीप यदि नियमित रूप से न जलाया जाए, तो बुझ जाता है। उस महिमावान सर्वज्ञ की बुद्धि और शक्ति को देखो, जो सूर्य को, जो खगोलशास्त्र के अनुसार पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा और लाखों वर्ष पुराना है, बिना कोयले या तेल के, बिना बुझे जलाता है; कहो: 'सब महिमा परमेश्वर की हो!' कहो: 'परमेश्वर ने क्या अद्भुत काम किया है!

'भगवान की जय हो! उसके अलावा कोई भगवान नहीं है!' सूर्य के अस्तित्व के सेकंडों की संख्या के बराबर है।

"इसका मतलब है कि इन स्वर्गीय दीपों में एक अद्भुत व्यवस्था है, और उन्हें बहुत सावधानी से रखा जाता है। ऐसा लगता है कि उन विशाल, असंख्य अग्नि पिंडों, उन प्रकाश-बिखरने वाले दीपों का बॉयलर एक नरक है जिसकी गर्मी कभी समाप्त नहीं होती; यह उन्हें प्रकाशहीन गर्मी प्रदान करता है। जबकि उन बिजली के दीपों की मशीनरी और केंद्रीय कारखाना एक शाश्वत स्वर्ग है; यह उन्हें प्रकाश और चमक प्रदान करता है; बुद्धिमान और सर्वज्ञ के नामों की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति के माध्यम से, वे व्यवस्थित तरीके से जलते रहते हैं।"

और इसी तरह; इन जैसे सैकड़ों विज्ञानों की निश्चित गवाही के माध्यम से, ब्रह्मांड को एक दोषरहित, परिपूर्ण क्रम के भीतर ज्ञान, उद्देश्य और लाभकारी चीजों के असंख्य उदाहरणों से सजाया गया है। और उस अद्भुत, सर्वव्यापी ज्ञान के माध्यम से ब्रह्मांड की समग्रता को दी गई व्यवस्था और ज्ञान को बीजों और सबसे छोटे जीवित प्राणियों में थोड़ी मात्रा में शामिल किया गया है। यह स्पष्ट और स्व-सिद्ध है कि लक्ष्य, उद्देश्य, ज्ञान के उदाहरण और लाभ केवल पसंद, इच्छा, इरादे और इच्छाशक्ति के माध्यम से ही प्राप्त किए जा सकते हैं, किसी अन्य तरीके से नहीं। न तो वे अचेतन कारणों और प्रकृति का काम हो सकते हैं, जिनमें इच्छा, विकल्प और उद्देश्य का अभाव है, न ही वे उनमें हस्तक्षेप कर सकते हैं।

[1] आप अंदाजा लगा सकते हैं कि दुनिया के महल को गर्म करने वाले सूर्य के चूल्हे या दीपक के लिए कितनी लकड़ी, कोयला और तेल की जरूरत होगी। खगोल विज्ञान के अनुसार, लकड़ी के ढेर
इसे प्रतिदिन जलाने के लिए दस लाख पृथ्वीयों और हजारों महासागरों के बराबर तेल की आवश्यकता होगी।
अब सोचो! और कहो: "परमेश्वर की जय हो! परमेश्वर ने क्या-क्या चमत्कार किए हैं! परमेश्वर धन्य हो!" सर्वशक्तिमान परमेश्वर की महिमा, बुद्धि और शक्ति के सामने सूर्य के कणों की संख्या के अनुसार, जो इसे बिना लकड़ी या तेल के निरंतर प्रकाश देता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, सर्वज्ञ निर्माता, विकल्प के साथ अभिकर्ता को न पहचानना या नकारना असाधारण अज्ञानता और मूर्खता है, जिसकी आवश्यकता ब्रह्मांड और उसके सभी प्राणियों को है और जो अपने अनंत क्रम और उसमें निहित ज्ञान के उदाहरणों के माध्यम से प्रदर्शित करते हैं। हाँ, यदि दुनिया में कोई आश्चर्यजनक चीज़ है, तो वह है ऐसा इनकार। क्योंकि ब्रह्मांड में प्राणियों में व्यवस्था के अनंत पहलू और ज्ञान के उदाहरण उसके अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं, ताकि सबसे अधिक अज्ञानी भी समझ सके कि उसे न देखना या न पहचानना कितना अंधापन और अज्ञान है। मैं यह भी कह सकता हूँ कि अविश्वासियों में, सोफिस्ट, जिन्हें ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारने के कारण मूर्ख माना जाता है, सबसे बुद्धिमान हैं। क्योंकि इसके अस्तित्व को स्वीकार करने के बाद, ईश्वर और इसके निर्माता पर विश्वास न करना संभव नहीं था, इसलिए उन्होंने ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारना शुरू कर दिया। उन्होंने खुद को भी नकार दिया। यह कहते हुए कि, "कुछ भी नहीं है," उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता को त्याग दिया, और बच गए

अन्य इनकार करने वालों की - तर्क की आड़ में - असीम अनुचितता से, वे एक अर्थ में तर्क के करीब आ गए।

चौथा मामला

जैसा कि दसवें वचन में संकेत किया गया है, एक बुद्धिमान निर्माता, एक अत्यंत बुद्धिमान कुशल निर्माता के लिए, एक महल के प्रत्येक पत्थर में ज्ञान के सैकड़ों उदाहरणों का सावधानीपूर्वक पालन करना, फिर महल की छत का निर्माण न करना जिससे वह नष्ट हो जाए और ज्ञान के सभी असंख्य उद्देश्य और उदाहरण नष्ट हो जाएं, ऐसी बात है जिसे कोई भी सचेत प्राणी स्वीकार नहीं कर सकता।
इसी प्रकार, यह किसी भी तरह से संभव नहीं है कि अपनी पूर्ण बुद्धि से एक छोटे से बीज में ढेर सारे लाभ, लक्ष्य और प्रयोजनों को खोजकर, पूर्ण बुद्धि का स्वामी एक विशाल वृक्ष को, जो पहाड़ जितना ऊंचा है, इसलिए भारी कीमत पर खर्च करे ताकि वह एक ही लाभ, एक छोटा सा लक्ष्य, एक ऐसा फल उत्पन्न करे जिसका मूल्य वस्तुतः कुछ भी न हो, और इस प्रकार वह पूरी तरह से अपनी बुद्धि के विपरीत और प्रतिकूल तरीके से अपव्ययी हो।

ठीक उसी तरह, सर्वज्ञ निर्माता ब्रह्मांड के महल में प्रत्येक प्राणी को बुद्धि के सैकड़ों उदाहरण देता है और उन्हें सैकड़ों कर्तव्यों को पूरा करने के लिए सुसज्जित करता है, और सभी वृक्षों को उनके फलों की संख्या के अनुसार बुद्धि के उदाहरण देता है और उनके फूलों की संख्या के अनुसार कर्तव्य देता है। उसके द्वारा मृतकों के पुनरुत्थान और महान सभा को न लाना और उन सभी असंख्य उद्देश्यों और ज्ञान के उदाहरणों और अनंत कर्तव्यों को निरर्थक, व्यर्थ, व्यर्थ और उद्देश्य या लाभ के बिना रखना, उस परम शक्तिशाली की पूर्ण शक्ति को पूर्ण नपुंसकता मान लेगा, ठीक उसी तरह जैसे वह उस परम बुद्धिमान की पूर्ण बुद्धि को निरर्थकता और उद्देश्यहीनता मान लेगा, और उस परम दयालु की दया की सुंदरता को पूर्ण कुरूपता मान लेगा,

और उस परम न्यायी के पूर्ण न्याय पर असीमित अत्याचार। यह ब्रह्मांड में मौजूद ज्ञान, दया और न्याय को नकारना बिलकुल आसान होगा, जिसे हर कोई देख सकता है। यह एक असाधारण असंभवता होगी जिसमें असंख्य बेतुकेपन शामिल होंगे। गुमराह लोगों को आना चाहिए और देखना चाहिए कि उनके गुमराह होने में कितना भयानक अंधकार और अंधकार है, जैसा कि उनकी कब्रों में है; और वे कैसे बिच्छुओं के घोंसले हैं। उन्हें पता होना चाहिए कि परलोक में विश्वास करना स्वर्ग की तरह ही सुंदर और प्रकाशमान मार्ग है, और उन्हें विश्वास को अपनाना चाहिए।

चौथा मामला

इसमें दो विषय शामिल हैं।

पहला विषय: अपने नाम सर्वज्ञ से प्रेरित होकर, सर्व-महिमावान निर्माता सबसे हल्का रास्ता, सबसे छोटा रास्ता, सबसे आसान तरीका, सबसे लाभदायक रूप अपनाता है, जो दर्शाता है कि चीजों की प्रकृति में कोई अपव्यय, निरर्थकता या लाभों की अनुपस्थिति नहीं है। अपव्यय बुद्धिमान नाम का विपरीत है, जैसे कि मितव्ययिता इसके द्वारा आवश्यक है और इसका मूल सिद्धांत है।

हे अपव्ययी, फिजूलखर्च आदमी! जान लो कि मितव्ययिता का पालन न करके, जो कि ब्रह्मांड का सबसे बुनियादी सिद्धांत है, तुमने वास्तविकता के बिल्कुल विपरीत काम किया है! तुम्हें समझना चाहिए कि इस श्लोक द्वारा क्या आवश्यक, व्यापक सिद्धांत सिखाया गया है,

> खाओ और पियो, परन्तु अधिक न लुटाओ। (7:31)

दूसरा विषय : यह कहा जा सकता है कि बुद्धिमान और सर्वज्ञ नाम ईश्वर के महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) के संदेशवाहक होने की ओर इशारा करते हैं और स्वयंसिद्ध होने की हद तक इसकी आवश्यकता बताते हैं।

हाँ, चूँकि एक सार्थक पुस्तक को उसे समझाने के लिए एक शिक्षक की आवश्यकता होती है; और एक उत्कृष्ट सौंदर्य को खुद को दिखाने और देखने के लिए एक दर्पण की आवश्यकता होती है; और कला के एक परिपूर्ण कार्य को इसकी घोषणा करने के लिए एक संदेशवाहक की आवश्यकता होती है; इसलिए निश्चित रूप से मानव जाति के बीच, जिसे ब्रह्मांड की शक्तिशाली पुस्तक द्वारा संबोधित किया जाता है, जिसके प्रत्येक अक्षर में सैकड़ों अर्थ और ज्ञान के उदाहरण हैं, वह एक परिपूर्ण मार्गदर्शक, एक सर्वोच्च शिक्षक होगा। क्योंकि वह पुस्तक में पवित्र, सच्चा ज्ञान सिखाएगा; अर्थात्, ब्रह्मांड में ज्ञान और उद्देश्यों के अस्तित्व को ज्ञात करेगा; वास्तव में, ब्रह्मांड की रचना में प्रमुख उद्देश्यों के प्रकट होने और यहाँ तक कि अस्तित्व का साधन होगा; और सृष्टिकर्ता की परिपूर्ण कला और उसके नामों की सुंदरता को ज्ञात कराएगा और एक दर्पण के रूप में कार्य करेगा, जिसे उसने पूरे ब्रह्मांड में प्रदर्शित करना चाहा, उनका महत्व दिखाते हुए।

और चूँकि सृष्टिकर्ता चाहता है कि वह अपने सभी कार्यों के माध्यम से स्वयं को प्रेम करे

वह धरती और समुद्र को आनंद में ले आएगा और एक ऐसे उद्घोष और उल्लास के साथ जो आकाश और धरती को गुंजायमान कर देगा, उन चेतन प्राणियों की निगाहों को उस एक की ओर मोड़ देगा जिसने यह कला बनाई है; और पवित्र निर्देश और शिक्षा और एक महान कुरान के साथ जो सभी विवेकशील लोगों का ध्यान आकर्षित करेगा, उस बुद्धिमान और सर्व-बुद्धिमान निर्माता के दिव्य उद्देश्यों को सर्वोत्तम तरीके से प्रदर्शित करेगा; और जो उसकी बुद्धिमत्ता और उसकी सुंदरता और महिमा के सभी उदाहरणों की अभिव्यक्तियों के प्रति सबसे अधिक पूरी तरह से और पूरी तरह से प्रतिक्रिया करेगा; ऐसे प्राणी का अस्तित्व ब्रह्मांड के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना कि सूर्य का अस्तित्व। और जिसने यह किया और उन कार्यों को सबसे अधिक पूर्णता से किया, वह स्वयं-साक्ष्य सबसे महान रसूल (जिस पर आशीर्वाद और शांति हो) था। इस मामले में, ब्रह्मांड की सारी बुद्धिमत्ता के लिए मुहम्मद (UWBP) का संदेशवाहक होना आवश्यक है, जैसे सूर्य के लिए प्रकाश आवश्यक है, और प्रकाश के लिए दिन।

हां, जिस प्रकार से बुद्धिमान और सर्वज्ञ के नाम अपनी महानतम अभिव्यक्ति के माध्यम से अधिकतम सीमा तक मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) के संदेशवाहक होने को आवश्यक बनाते हैं, उसी प्रकार अल्लाह, अत्यंत दयालु, अत्यंत दयालु, प्रेममय, दाता, उदार, मनोहर और पालनहार जैसे असंख्य सुंदर नाम भी ब्रह्मांड में अपनी महानतम अभिव्यक्ति के माध्यम से अधिकतम सीमा तक और पूर्ण निश्चितता के साथ मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) के संदेशवाहक होने को आवश्यक बनाते हैं।

उदाहरण के लिए, सर्वव्यापी दया जो कि परम दयालु के नाम की अभिव्यक्ति है, सभी संसारों के लिए दया के रूप में भेजे जाने के माध्यम से स्पष्ट होती है।
सर्वशक्तिमान ईश्वर का स्वयं को ज्ञात करना और प्रेम करना, जो प्रेम के नाम की अभिव्यक्ति है, सारे संसार के पालनहार के उस प्रियतम का फल उत्पन्न करता है और उसमें प्रतिसाद पाता है। सुंदरता के सभी उदाहरण, जो सुंदर नाम की अभिव्यक्ति हैं, अर्थात् दिव्य सार की सुंदरता, दिव्य नामों की सुंदरता, कला की सुंदरता और प्राणियों की सुंदरता, मुहम्मद (UWBP) के दर्पण में देखी और प्रदर्शित की जाती हैं। प्रभुत्व की महिमा और दिव्यता की संप्रभुता की अभिव्यक्तियाँ जानी जाती हैं, स्पष्ट और समझी जाती हैं, और प्रभुत्व के प्रभुत्व के अग्रदूत मुहम्मद (UWBP) के दूतत्व के माध्यम से पुष्टि की जाती हैं। और इसी तरह, इन उदाहरणों की तरह, अधिकांश सबसे सुंदर नाम मुहम्मद (UWBP) के दूतत्व के चमकदार सबूत हैं।

संक्षेप में: चूंकि ब्रह्मांड मौजूद है और उसे नकारा नहीं जा सकता, इसलिए ज्ञान, अनुग्रह, दया, सौंदर्य, व्यवस्था, संतुलन और अलंकरण जैसे अवलोकनीय सत्यों को भी नकारा नहीं जा सकता, जो रंगों, अलंकरणों, रोशनी और अन्य चीजों की तरह हैं।

ब्रह्मांड की किरणों, कलाओं, जीवन और बंधनों को नकारा नहीं जा सकता। चूँकि इन गुणों और कार्यों को नकारना असंभव है, इसलिए निश्चित रूप से अनिवार्य रूप से विद्यमान, सर्वज्ञ, उदार, दयालु, सुंदर, बुद्धिमान और न्यायी एक को भी, जो उन गुणों से संकेतित है, और उन कार्यों का कर्ता है, और उन ज्योतियों का सूर्य और स्रोत है, उसे किसी भी तरह से नकारा नहीं जा सकता। और निश्चित रूप से मुहम्मद (जिन पर आशीर्वाद और शांति हो) की दूतता, जो सर्वोच्च मार्गदर्शक, सबसे पूर्ण शिक्षक, प्रमुख संदेशवाहक, ब्रह्मांड के ताबीज को हल करने वाले, शाश्वत रूप से चाहने वाले का दर्पण, परम दयालु के प्रिय हैं, और उन गुणों और कार्यों को जानने के साधन, वास्तव में उनकी पूर्णता और यहाँ तक कि उनके साकार होने को भी किसी भी तरह से नकारा नहीं जा सकता। उनका दूत होना ब्रह्मांड का सबसे तेज प्रकाश है, वास्तविकता की दुनिया और ब्रह्मांड की वास्तविकता की रोशनी की तरह।

उस पर दिनों के सेकण्डों की संख्या और प्राणियों के कणों पर आशीर्वाद और शांति हो।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

चौथा बिंदु

दिव्य नाम एकल

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

कह दो, "वह अकेला अल्लाह है ।" (112:1)

[इस आयत का एक बढ़िया बिंदु और सिंगल के दिव्य नाम का प्रकटीकरण, जो एक और अद्वितीय के नामों से मिलकर बना सबसे बड़ा नाम है, या सबसे महान नाम को बनाने वाली छह ज्योतियों में से एक है, शव्वाल के महीने में इस्कीशेहर जेल में मेरे सामने प्रकट हुआ। रिसाले-ए-नूर को उस महानतम प्रकटीकरण के विवरण का हवाला देते हुए, हम यहाँ सात छोटे संकेतों में अत्यंत संक्षिप्त रूप से दिव्य एकता की सच्ची पुष्टि की व्याख्या करेंगे जिसे सिंगल का नाम अपने अधिकतम प्रकटीकरण के माध्यम से प्रदर्शित करता है।]

पहला संकेत

बाईसवें वचन और तैंतीसवें अक्षर ने विस्तार से दिखाया है कि एक महानतम अभिव्यक्ति के माध्यम से, महानतम नाम सिंगल ने पूरे ब्रह्मांड पर और उसमें रहने वाले प्रत्येक प्राणी के क्षेत्र पर और प्रत्येक व्यक्ति पर दिव्य एकता की मुहर, एक मोहर लगा दी है। यहाँ हम केवल तीन मोहरों की ओर इशारा करेंगे।

प्रथम मुहर: ईश्वरीय एकता की अभिव्यक्ति ने ब्रह्मांड के चेहरे पर एकता की मुहर लगा दी है जिससे यह एक अविभाज्य संपूर्ण बन गया है। जिसके पास पूरे ब्रह्मांड पर नियंत्रण करने की शक्ति नहीं है, वह इसके किसी भी हिस्से का सच्चा स्वामी नहीं हो सकता। मुहर यह है:

किसी कारखाने में सबसे बढ़िया मशीनों की तरह, ब्रह्मांड में सभी प्राणी और प्राणियों के क्षेत्र एक दूसरे की सहायता करते हैं और एक दूसरे के कार्यों को पूरा करने के लिए काम करते हैं। अपनी एकजुटता और सहयोग के साथ, एक दूसरे के अनुरोधों का उत्तर देने और एक दूसरे की सहायता करने के लिए तत्पर होने के साथ, एक दूसरे को गले लगाने और एक दूसरे के भीतर एक होने के साथ, वे अस्तित्व की एकता बनाते हैं जिसके अनुसार, मानव शरीर के अंगों की तरह, उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। एक व्यक्ति जो इसके एक अंग को नियंत्रित करता है, लेकिन उन सभी पर नियंत्रण नहीं रखता है, वह किसी एक अंग पर वास्तविक प्रभुत्व नहीं रख पाएगा।

इस प्रकार, यह सहयोग, एकजुटता, पारस्परिक प्रतिक्रिया और एक-दूसरे को गले लगाना दिव्य एकता की सबसे शानदार सर्वोच्च मुहर बनाता है।

दूसरा एस टैम्प: सिंगल नाम की अभिव्यक्ति के माध्यम से, दिव्य एकता की इतनी शानदार मुहर और एकता की मुहर लगाई गई है

पृथ्वी के मुख और झरने के मुख पर यह सिद्ध होता है कि जो व्यक्ति पृथ्वी के मुख पर रहने वाले सभी जीवित प्राणियों को उनके सभी अंगों, गुणों और अवस्थाओं सहित नियंत्रित नहीं करता है, और जो उन सभी को एक साथ नहीं जानता और नहीं देखता है, और उन्हें बना नहीं सकता है, वह सृजन के संबंध में किसी भी चीज में हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। मुहर यह है:

पृथ्वी के खनिज पदार्थों, तत्वों और निर्जीव प्राणियों की वास्तव में व्यवस्थित, फिर भी छिपी हुई मुहरों को नज़रअंदाज़ करते हुए, दो लाख पशु प्रजातियों और दो लाख वनस्पति प्रजातियों के बुने हुए धागों से बनी निम्नलिखित मुहर पर विचार करें: हम पृथ्वी पर वसंत ऋतु में अपनी आँखों से देखते हैं कि सभी चीज़ों को उनके अलग-अलग कर्तव्यों, अलग-अलग रूपों, अलग-अलग पोषण, अलग-अलग अंगों के साथ उनकी ज़रूरत की हर चीज़ दी जाती है, बिना किसी भ्रम और बिना किसी त्रुटि के, पूर्ण भेद और भिन्नता के साथ, अत्यंत संवेदनशील संतुलन के साथ, बिना किसी कठिनाई के, बिल्कुल सही समय पर, अप्रत्याशित स्थानों से, भले ही वे एक दूसरे के भीतर हों और सभी एक साथ मिश्रित हों। यह स्थिति, यह योजना, यह प्रशासन ईश्वरीय एकता और एकता की ऐसी मुहर बनाता है कि जो व्यक्ति उन सभी प्राणियों को एक साथ कुछ भी नहीं से नहीं बना सकता, वह प्रभुत्व और सृजन के संबंध में किसी भी चीज़ में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। क्योंकि अगर कुछ हस्तक्षेप करता, तो उस अत्यंत विशाल प्रशासन का संतुलन बिगड़ जाता। हालाँकि, मनुष्य स्पष्ट रूप से ईश्वरीय आदेश पर प्रभुत्व के उन नियमों के सुचारू अनुप्रयोग की सेवा करता है।

तीसरा स्टैम्प: ईश्वरीय एकता की यह मुहर मनुष्य के चेहरे पर है, वास्तव में, मनुष्य का चेहरा है: जो व्यक्ति अपनी निगाह में आदम के समय से लेकर दुनिया के अंत तक आए और आने वाले सभी मनुष्यों को नहीं रखता है, और उनमें से प्रत्येक के चेहरे पर एक विभेदक चिह्न नहीं लगा सकता है, वास्तव में, सैकड़ों विभेदक चिह्न, उनमें से किसी एक के चेहरे पर एकता की मुहर में सृष्टि के संबंध में कोई भूमिका नहीं रख सकता है। हां, जो व्यक्ति मनुष्य के चेहरे पर वह मुहर लगाता है, उसे निश्चित रूप से अपनी दृष्टि में मानव जाति के सभी सदस्यों को रखना चाहिए और अपने ज्ञान से उन्हें शामिल करना चाहिए, क्योंकि यद्यपि मानव चेहरे के मूल सदस्य एक दूसरे के समान होते हैं, प्रत्येक चेहरे में भिन्नता के बिंदु होते हैं। चेहरे के सभी सदस्य, जैसे आंख और कान, एक दूसरे के समान होते हैं जो एकता की मुहर बनाते हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि मानव जाति का निर्माता एक है; इसी तरह, कई बुद्धिमान अंतर - अन्य प्रजातियों के विपरीत - एक दूसरे से अलग करते हैं ताकि वे भ्रमित न हों और उन सभी के अधिकारों को संरक्षित करें, दोनों दिव्य एकता के सूक्ष्म टिकट हैं, और एकता की इच्छा, पसंद और इच्छा के निर्माता को दर्शाते हैं। वे दिखाते हैं कि जो सभी मनुष्यों और जानवरों, वास्तव में, ब्रह्मांड को नहीं बना सकता, वह उस टिकट को लागू नहीं कर सकता।

दूसरा संकेत

ब्रह्मांड की दुनियाएँ, प्रजातियाँ और तत्व आपस में इस तरह से जुड़े हुए हैं कि कोई भी कारण जो पूरे ब्रह्मांड पर अधिकार नहीं रखता है, उसके किसी भी तत्व पर सही अधिकार नहीं हो सकता है। एकल के नाम से उत्पन्न एकता की अभिव्यक्ति ने पूरे ब्रह्मांड को एकता में शामिल कर लिया है ताकि सब कुछ इसकी घोषणा करे। उदाहरण के लिए, ब्रह्मांड का दीपक, सूर्य, एक होना यह दर्शाता है कि पूरा ब्रह्मांड एक ही है, इसी तरह, बादलों के स्पंज जो पृथ्वी के बगीचे को सींचते हैं, वे भी एक ही हैं, और बारिश जो सभी जीवित प्राणियों की सहायता के लिए आती है और हर जगह एक ही है, और अधिकांश पशु और वनस्पति प्रजातियाँ पृथ्वी पर स्वतंत्र रूप से फैली हुई हैं और उनकी प्रजातियाँ और निवास स्थान एक ही हैं, सबसे निश्चित संकेत और साक्ष्य हैं जो दर्शाते हैं कि वे सभी प्राणी, साथ ही वे स्थान जहाँ वे पाए जाते हैं, एक ही प्राणी की संपत्ति हैं।

इस सादृश्य का अनुसरण करते हुए, ब्रह्मांड में प्राणियों के क्षेत्र इस प्रकार परस्पर जुड़े हुए हैं कि उन्होंने ब्रह्मांड को एक समग्रता में बदल दिया है जो सृजन के संबंध में अविभाज्य है।
एक कारण जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर शासन नहीं करता, वह प्रभुत्व और सृजनात्मकता के सम्बन्ध में कुछ भी नियंत्रित नहीं कर सकता; वह एक कण को भी अपनी बात मानने के लिए बाध्य नहीं कर सकता।

तीसरा संकेत

अपनी महानतम अभिव्यक्ति के माध्यम से, सिंगल नाम ने ब्रह्माण्ड को अनन्त रूप से मांगे जाने वाले उस एक के असंख्य संदेशों में बदल दिया है, जिसके द्वारा प्रत्येक संदेश में दिव्य एकता की मुहरें और उसके शब्दों की संख्या के अनुसार एकता की मोहरें प्रदर्शित होती हैं - मानो मुद्रित हों -
और अपने लेखक को उन मुहरों की संख्या बताता है।

हाँ, सभी फूल, सभी फल, सभी घास, और सभी जानवर, और सभी पेड़ दिव्य एकता की मुहरें और दिव्य एकता की मोहरें हैं, जो उन स्थानों के साथ मिलकर, जो संदेश का रूप लेते हैं, हस्ताक्षर की तरह हैं जो उस स्थान को लिखने वाले को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, बगीचे में एक बटरकप बगीचे के लेखक की मुहर की तरह है। फूल चाहे जिस किसी की मुहर हो, धरती पर उसी तरह के सभी फूल स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि वे उसके शब्द हैं और बगीचा भी उसका लेखन है।

इसका अर्थ यह है कि सभी चीजें उसी को अपना श्रेय देती हैं जिसने उन्हें बनाया है, जो ईश्वरीय एकता की अधिकतम पुष्टि की ओर संकेत करता है।

चौथा संकेत

सूर्य की तरह स्पष्ट होने के अलावा, सिंगल नाम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति इतनी उचित है कि इसे आवश्यक माना जा सकता है और इसे असीम आसानी से स्वीकार किया जा सकता है। कई प्रमाण दर्शाते हैं कि ईश्वर के साथ भागीदारों का जुड़ाव, उस अभिव्यक्ति के विपरीत और विरोधी है।

रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में असीम रूप से कठिन और तर्क से असीम रूप से दूर, बल्कि असंभव और निषिद्ध बातों की व्याख्या की गई है। फिलहाल उन प्रमाणों के बिंदुओं का विवरण उन ग्रंथों से लेते हुए, हम यहां केवल तीन बिंदुओं की व्याख्या करेंगे।

पहला: हमने दसवें और उनतीसवें शब्दों के अंत में संक्षेप में और बीसवें अक्षर के अंत में विस्तार से कुछ प्रमाणों के साथ यह प्रदर्शित किया है कि एक और अद्वितीय एक की शक्ति के संबंध में, सबसे बड़ी चीज़ का निर्माण सबसे छोटी चीज़ जितना ही आसान है। यह एक बड़े पेड़ को एक छोटे फल की तरह ही आराम से संचालित करता है। जबकि यदि कई कारणों का उल्लेख किया जाए, तो प्रत्येक फल एक पेड़ की तरह ही कठिन और महंगा हो जाता है, और एक फूल वसंत की तरह ही कठिन और परेशानी भरा हो जाता है।

हाँ, अगर सेना के उपकरण एक ही कारखाने में एक ही कमांडर के आदेश पर बनाए जाएँ तो यह एक सैनिक के उपकरण बनाने जितना ही आसान है, जबकि अगर सभी सैनिकों के उपकरण अलग-अलग कारखानों में बनाए जाएँ और सेना का प्रशासन एक ही अधिकारी से कई अधिकारियों के हाथ में चला जाए तो हर सैनिक को सेना के सैनिकों की संख्या के बराबर कारखाने चाहिए होंगे। ठीक उसी तरह, अगर सब कुछ एक ही और अद्वितीय को दिया जाए तो पूरी प्रजाति के असंख्य सदस्यों को एक ही सदस्य जितना आसान हो जाता है। जबकि अगर कारणों को जिम्मेदार ठहराया जाए तो हर एक पूरी प्रजाति जितना मुश्किल हो जाता है।

हाँ, एकता और एकता दोनों ही एकता के एक के साथ जुड़ी हुई हर चीज़ के ज़रिए और उस पर भरोसा करने के ज़रिए आती हैं। और यह भरोसा और जुड़ाव उस चीज़ के लिए एक असीम शक्ति और ताकत बन सकता है। भरोसे और जुड़ाव की ताकत के ज़रिए, वह छोटी सी चीज़ अपने से कहीं बढ़कर काम कर सकती है

व्यक्तिगत शक्ति के अनुसार छोटे-छोटे कार्य कर सकते हैं, तथा परिणाम भी उसी के अनुसार कम होते जाते हैं। जबकि कोई बहुत शक्तिशाली चीज जो उस एक अद्वितीय पर निर्भर नहीं है तथा उससे जुड़ी हुई नहीं है, वह अपनी व्यक्तिगत शक्ति के अनुसार छोटे-छोटे कार्य कर सकती है, तथा परिणाम भी उसी के अनुसार कम होते जाते हैं।

उदाहरण के लिए, एक मजबूत, साहसी व्यक्ति जो एक नियमित सैनिक नहीं है, उसे अपना गोला-बारूद और रसद खुद ही ले जाने के लिए मजबूर होना पड़ता है, और इसलिए वह केवल दस दुश्मनों के खिलाफ अस्थायी रूप से ही टिक सकता है। क्योंकि उसकी व्यक्तिगत ताकत सीमित है। लेकिन एक सैनिक जो सेना से जुड़ा हुआ है और कमांडर-इन-चीफ से जुड़ा हुआ है और उस पर निर्भर है, उसे अपनी ताकत और रसद के स्रोत खुद ले जाने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ता; उसका संबंध और भरोसा उसके लिए एक खजाने की तरह एक अटूट ताकत बन जाता है। अपने संबंध की ताकत के माध्यम से, वह पराजित दुश्मन सेना के एक फील्ड मार्शल को, हजारों अन्य लोगों के साथ पकड़ सकता है।

अर्थात्, ईश्वरीय एकता और ईश्वरीय एकनिष्ठता में, संबंध की शक्ति के माध्यम से, एक चींटी फिरौन को और एक मक्खी निम्रोद को हरा सकती है।

और एक सूक्ष्म जीव एक अत्याचारी है, और एक चने के समान छोटा बीज अपने कंधों पर एक पहाड़ के समान भव्य देवदार का पेड़ उठा सकता है। हाँ, एक सेनापति एक सैनिक की सहायता के लिए एक सेना भेज सकता है और सैनिक के पीछे एक सेना इकट्ठा कर सकता है ताकि उसे अपने पीछे की सेना का नैतिक समर्थन मिले और उस शक्ति के माध्यम से वह सेनापति के नाम पर महान कार्य कर सके। इसी तरह, चूँकि पूर्व-शाश्वत सम्राट एकल और एक है, इसलिए उसे किसी भी प्रकार की आवश्यकता नहीं है। यदि मान लें कि उसे आवश्यकता है, तो वह सभी चीजों को हर चीज की सहायता के लिए भेज देगा और ब्रह्मांड की सेना को एक चीज के पीछे इकट्ठा करेगा और हर चीज ब्रह्मांड जितनी महान शक्ति पर भरोसा कर सकती है और हर चीज के सामने, सभी चीजें - मान लें कि उसे आवश्यकता है - एकल कमांडर की शक्ति के समान बन सकती हैं। यदि कोई दिव्य एकता नहीं होती, तो हर चीज अपनी सारी शक्ति खो देती और कुछ नहीं बन जाती; उनके परिणाम भी कम हो जाते।

इस प्रकार, इन अत्यंत महत्वहीन महत्वहीन चीजों से इन सचमुच चमत्कारिक कार्यों का प्रकट होना, जिन्हें हम हमेशा अपनी आँखों से देखते हैं, स्वयं-स्पष्ट रूप से दिव्य एकता और दिव्य एकता को प्रदर्शित करता है। यदि वे न होते, तो हर चीज के परिणाम, फल और कार्य प्रत्येक चीज के सार और शक्ति में कम हो जाते; वे शून्य हो जाते। हमारे आस-पास दिखाई देने वाली अत्यंत मूल्यवान चीजों की अनंत प्रचुरता और अनंत सस्तीता में से कुछ भी नहीं बचेगा। एक तरबूज या अनार जिसे हम अब थोड़ी सी रकम में खरीदते हैं, हम उसे बहुत अधिक कीमत में भी नहीं खरीद पाएंगे। हाँ, दुनिया में सारी सहजता, सारी प्रचुरता, सारी सस्तीता दिव्य एकता से उत्पन्न होती है और दिव्य एकता की गवाही देती है।

दूसरा बिन्दु: प्राणियों का सृजन दो प्रकार से होता है; एक है शून्य से सृजन, जिसे उत्पत्ति और आविष्कार कहा जाता है, और दूसरा है विद्यमान तत्वों और चीजों को एक साथ लाकर अस्तित्व प्रदान करना, जिसे संयोजन और संयोजन कहा जाता है।

जब दिव्य एकता और दिव्य एकता के रहस्य की अभिव्यक्ति के अनुसार, यह अनंत आसानी से होता है, वास्तव में, इतनी आसानी से कि यह आवश्यक है। यदि इसे दिव्य एकता के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता, तो यह असीम रूप से कठिन और तर्कहीन होगा, असंभवता की हद तक कठिन। हालाँकि, यह तथ्य कि ब्रह्मांड में प्राणी अनंत आसानी और सुविधा के साथ और बिना किसी कठिनाई के, और पूर्ण रूप में अस्तित्व में आते हैं, स्वयं-स्पष्ट रूप से दिव्य एकता की अभिव्यक्ति को दर्शाता है और साबित करता है कि सब कुछ सीधे महिमा के एकल की कला है।

हां, अगर सभी चीजों को एकता के एक ही व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो वे उसकी असीम शक्ति के माध्यम से शून्य से बनाई गई हैं, जिसकी विशालता उसके कार्यों के माध्यम से महसूस की जाती है, जैसे कि माचिस जलाना। और उसके सर्वव्यापी, अनंत ज्ञान के माध्यम से सब कुछ एक अमूर्त साँचे की तरह एक माप नियुक्त किया जाता है। सभी चीजों के कण आसानी से एक ही साँचे में स्थित हैं।

ज्ञान के दर्पण में प्रत्येक वस्तु के स्वरूप और योजना के अनुसार वे ज्ञान में विद्यमान होते हैं और वे अपनी स्थिति को अच्छे क्रम में बनाए रखते हैं।

यदि चारों ओर से कणों को एकत्र करना आवश्यक हो, तो कण शक्ति के व्यापक सिद्धांतों और ज्ञान के नियमों के अनुसार आज्ञाकारी सेना के सैनिकों की तरह नियमित ढंग से एक साथ बंधे होते हैं। ज्ञान के अनुसार शक्ति द्वारा संचालित होकर, वे आते हैं, दिव्य निर्धारण के माप के अनुसार ज्ञान में विद्यमान साँचे में प्रवेश करते हैं, जो वस्तु के अस्तित्व को घेरता है, और आसानी से उसका अस्तित्व बनाते हैं। जैसे दर्पण में प्रतिबिंब को कैमरे के माध्यम से कागज पर बाह्य अस्तित्व में आच्छादित किया जाता है, या किसी विशेष पदार्थ के साथ फैलाए जाने पर दिखाई देने वाले अक्षर की अदृश्य लिखावट, उसी तरह शक्ति सबसे बड़ी आसानी से एकता के पूर्व-शाश्वत ज्ञान के दर्पण में मौजूद वस्तुओं और प्राणियों के रूपों के सार को बाह्य अस्तित्व के साथ आच्छादित करती है; यह उन्हें अर्थ की दुनिया से स्पष्ट दुनिया में लाती है, और हमें दिखाती है।

यदि प्राणियों को एकता के एकमेव तत्व के रूप में नहीं माना जाता है, तो पृथ्वी के चारों ओर से तथा तत्वों से मक्खी के अस्तित्व को एकत्रित करना आवश्यक होगा, बस पृथ्वी तथा तत्वों की सतह को छानना होगा तथा हर जगह से उसके अस्तित्व के लिए विशेष कणों को लाना होगा। तथा कला से परिपूर्ण उसके अस्तित्व में उन्हें उचित क्रम में रखने के लिए, एक भौतिक साँचा, वास्तव में उसके सदस्यों की संख्या के अनुसार साँचे की आवश्यकता होगी। फिर भी उसके अस्तित्व में इन्द्रियाँ, तथा आत्मा जैसी उसकी सूक्ष्म, सूक्ष्म अभौतिक क्षमताएँ, एक विशेष रूप से अभौतिक दुनियाओं से खींची जानी होंगी।

उपाय।

इस प्रकार, इस तरह से एक मक्खी का निर्माण भी ब्रह्मांड के निर्माण जितना ही कठिन होगा।
मुश्किलें सौ गुना बढ़ जाएँगी, वास्तव में, यह एक जटिल असंभवता होगी। क्योंकि सभी धर्मावलंबी और वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि एक के अलावा कुछ भी शून्य और अस्तित्वहीनता से नहीं बना सकता। ऐसे में, यदि कारणों और प्रकृति का संदर्भ दिया जाए, तो सभी चीजों को केवल अधिकांश चीजों से एकत्रित करके ही अस्तित्व दिया जा सकता है।

तीसरा बिन्दु: हम दो या तीन तुलनाओं की संक्षेप में व्याख्या करेंगे, जिनका स्पष्टीकरण रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में किया गया है, तथा यह दिखाएंगे कि यदि किसी एक एकता को माना जाए, तो सभी चीजें एक ही चीज के समान सरल हो जाती हैं, जबकि यदि कारणों और प्रकृति को माना जाए, तो एक ही चीज का अस्तित्व सभी चीजों के समान कठिन हो जाता है।

उदाहरण के लिए: यदि एक हजार सैनिकों के पद और प्रशासन का काम एक अधिकारी को सौंप दिया जाए, और एक सैनिक का दस अधिकारियों को, तो एक सैनिक की कमान संभालना एक बटालियन की कमान संभालने से दस गुना ज़्यादा मुश्किल होगा। क्योंकि जो लोग उसकी कमान संभालेंगे, वे एक-दूसरे के लिए बाधा बनेंगे,

और इसके परिणामस्वरूप होने वाली अव्यवस्था में, सैनिक को कोई शांति नहीं मिलेगी। जबकि यदि वांछित परिणाम और स्थिति प्राप्त करने के लिए एक बटालियन को एक ही अधिकारी को सौंपा जाता है, तो वह आसानी से, बिना किसी कठिनाई के परिणाम प्राप्त कर सकता है, और उसे वह स्थिति दे सकता है। यदि परिणाम और स्थिति प्राप्त करने के लिए इसे बिना किसी प्रमुख, नेता या सार्जेंट के सैनिकों को सौंपा जाता है, तो वे केवल बहुत विवाद और कठिनाई के साथ, बहुत अव्यवस्था और अपूर्णता के साथ प्राप्त किए जाएंगे।

दूसरी तुलना: उदाहरण के लिए, अगर किसी मास्टर बिल्डर को अया सोफिया जैसी मस्जिद के गुंबद में पत्थरों को उनकी निलंबित स्थिति देने के लिए नियुक्त किया जाता है, तो वह ऐसा आसानी से कर सकता है। लेकिन अगर यह पत्थरों के बारे में है, तो उन्हें उस निलंबित स्थिति में एक दूसरे का समर्थन करने के लिए पूरी तरह से हावी और पूरी तरह से एक दूसरे के अधीन होना होगा। मास्टर बिल्डर द्वारा किए गए काम को आसानी से करने के लिए, सौ बिल्डरों द्वारा सौ गुना बड़ा काम किया जाना चाहिए, तभी ऐसी स्थिति हासिल की जा सकती है।

तीसरी तुलना: उदाहरण के लिए, चूँकि पृथ्वी का गोला एकता के एक ही व्यक्ति का एक अधिकारी, एक सैनिक है जो उस एक ही व्यक्ति के एक ही आदेश का पालन करता है, इसलिए ऋतुओं का परिवर्तन, दिन और रात का परिवर्तन, आकाश की ऊँची, राजसी गतियाँ और सिनेमा जैसे दिव्य दृश्यों में परिवर्तन जैसे परिणाम प्राप्त होते हैं। उस एक ही व्यक्ति का एक ही आदेश पाकर, अपने कर्तव्य पर हर्षित होकर, पृथ्वी जैसा एक ही सैनिक एक आनंदित मेवलेवी दरवेश की तरह दो गतियों में घूमने के लिए उठता है, और उन शानदार परिणामों को प्राप्त करने का साधन बनता है। ऐसा लगता है जैसे कि एक ही सैनिक ब्रह्मांड के चेहरे पर शानदार युद्धाभ्यास का आदेश दे रहा है।

यदि किसी एक को नहीं, जिसका देवत्व का शासन और प्रभुत्व की संप्रभुता पूरे ब्रह्मांड को घेरे हुए है, और जिसका आदेश और शासन सभी प्राणियों को कवर करता है, तो वे परिणाम, स्वर्गीय युद्धाभ्यास और सांसारिक मौसम केवल लाखों सितारों और पृथ्वी से हजार गुना बड़े ग्लोब द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं, जो हर चौबीस घंटे और हर दिन लाखों वर्षों की लंबी दूरी तय करते हैं।

वर्ष।

इस प्रकार, पृथ्वी के गोले जैसे एक अधिकारी की दो गतियों - अपनी कक्षा में और अपनी धुरी पर एक आनंदित मेवलेवी दरवेश की तरह - के माध्यम से प्राप्त होने वाले वे परिणाम, ईश्वरीय एकता में असीम सहजता का एक उदाहरण है। जबकि ऊपर वर्णित गति से लाखों गुना अधिक कठिन अंतहीन लंबे तरीकों से उनका प्राप्त होना इस बात का उदाहरण है कि ईश्वर और अविश्वास के साथ साझेदारों को जोड़ने का तरीका कितना कठिन, वास्तव में, असंभव है, और इस पर कितनी असंभव, बेतुकी चीजें पाई जाती हैं।

निम्नलिखित उदाहरण के माध्यम से कारणों और प्रकृति की पूजा करने वालों की अज्ञानता पर विचार करें: आप समझ सकते हैं कि यह तर्क से कितनी दूर है और यह मान लेना कितना अज्ञानतापूर्ण है कि अपने माध्यम से व्यवस्थित ढंग से तैयारी करने के बाद भी, यह तर्क तर्क से कितना दूर है।

अद्भुत कला किसी अद्भुत कारखाने, या अद्भुत घड़ी, या शानदार महल, या बढ़िया किताब के पुर्जे या मशीनरी, कोई व्यक्ति खुद आसानी से पुर्जे नहीं जोड़ता और उन्हें काम में नहीं लाता, बल्कि लंबे समय तक और उच्च खर्च के साथ प्रत्येक पुर्जे, प्रत्येक तंत्र और यहां तक कि कागज़ और कलम की प्रत्येक शीट को असाधारण मशीनों में बदल देता है ताकि पुर्जे खुद ही कारखाने, महल और घड़ी का निर्माण और संचालन कर सकें और शिल्पकार के बजाय किताब लिख सकें। और वह उन्हें कला और शिल्प कहता है, जो उसकी सभी कलाओं और कौशलों को प्रदर्शित करने का साधन है, जिसे प्रदर्शित करने की उसकी बहुत इच्छा है।

ठीक उसी तरह, जो लोग सृष्टि का श्रेय कारणों और प्रकृति को देते हैं, वे जटिल अज्ञान में पड़ जाते हैं। क्योंकि प्रकृति और कारणों से ऊपर की कलाकृतियाँ अत्यंत सुव्यवस्थित कलाकृतियाँ हैं, और वे भी अन्य प्राणियों की तरह कलाकृतियाँ हैं। जो उन्हें इस तरह बनाता है, वह उनके परिणाम भी बनाता है और उन्हें एक साथ प्रदर्शित करता है। जो बीज बनाता है, वह उसके ऊपर वृक्ष भी बनाता है। और जो वृक्ष बनाता है, वही बनाता है

इसके ऊपर के फल। अन्यथा अन्य, भिन्न प्रकृतियों और कारणों के अस्तित्व में आने के लिए और भी सुव्यवस्थित प्रकृतियों और कारणों की आवश्यकता होगी। और इसी तरह, अनंत तक। किसी को भ्रामक कल्पनाओं की एक अनंत, अर्थहीन, असंभव श्रृंखला के अस्तित्व को स्वीकार करना होगा। यह सबसे असाधारण अज्ञानता होगी।

पांचवां संकेत

हमने कई जगहों पर निर्णायक प्रमाणों के साथ यह साबित किया है कि शासन की सबसे बुनियादी विशेषता स्वतंत्रता और अलगाव है। नपुंसक लोगों में शासन की कमज़ोर छाया भी दूसरों के हस्तक्षेप को दृढ़ता से अस्वीकार करती है और दूसरों को अपने कर्तव्य में हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं देती है, और इस तरह अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखती है। हस्तक्षेप की इस अस्वीकृति के कारण कई राजाओं ने अपने मासूम बच्चों और प्यारे भाइयों को बेरहमी से मार डाला है। यानी स्वतंत्रता, अलगाव और दूसरों के हस्तक्षेप की अस्वीकृति सच्चे शासन की सबसे बुनियादी विशेषताएँ हैं, और इसकी अविभाज्य ज़रूरतें और शाश्वत अनिवार्यताएँ हैं।

इसी विशेषता के कारण ईश्वरीय शासन, जो पूर्ण प्रभुत्व की डिग्री पर है, किसी भी भागीदार की संगति और दूसरों की भागीदारी और हस्तक्षेप को सबसे अधिक जोरदार तरीके से अस्वीकार करता है। चमत्कारिक व्याख्या का कुरान भी, आग्रहपूर्वक, बार-बार और सख्ती से, ईश्वरीय एकता को इंगित करता है और ईश्वर के साथ भागीदारों की संगति को गंभीर धमकियों के साथ अस्वीकार करता है।

इस प्रकार, प्रभुत्व में दिव्य शासन के लिए दिव्य एकता की आवश्यकता होती है और यह इसके लिए सबसे शक्तिशाली प्रेरणा और अनिवार्य कारण को इंगित करता है।

ब्रह्मांड के चेहरे पर असीम रूप से परिपूर्ण व्यवस्था और सामंजस्य, ब्रह्मांड और सितारों की समग्रता से स्पष्ट, और पौधों, जानवरों और खनिजों से लेकर विशेष, व्यक्तियों और सूक्ष्म कणों तक, उस एकता और एकता का एक निर्विवाद रूप से सत्य गवाह और स्पष्ट प्रमाण है। क्योंकि अगर दूसरों ने हस्तक्षेप किया होता, तो ब्रह्मांड का यह सबसे संवेदनशील संतुलन, व्यवस्था और नियमितता खराब हो जाती और अव्यवस्था के संकेत स्पष्ट हो जाते। के अर्थ के अनुसार

कविता,

यदि आकाशों और धरती में अल्लाह के अलावा और भी पूज्य होते तो दोनों में गड़बड़ी हो जाती! (21:22)

ब्रह्मांड की यह अद्भुत, उत्तम व्यवस्था अस्तव्यस्त हो जाती और बिगड़ जाती। जबकि, श्लोक के अनुसार,

तो फिर अपनी दृष्टि फेर लो, क्या तुम्हें कोई दोष दिखाई देता है? (67:3)

सूक्ष्म कणों से लेकर ग्रहों तक, धरती से लेकर ईश्वरीय सिंहासन तक, कहीं भी दोष, कमी या भ्रम का कोई चिह्न नहीं है। इस प्रकार ब्रह्मांड और प्राणियों का क्रम और प्राणियों का संतुलन, एकल नाम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति को सबसे शानदार ढंग से प्रदर्शित करता है और ईश्वरीय एकता की गवाही देता है।

इसके अलावा, चूँकि, ईश्वरीय एकता के प्रकटीकरण के रहस्य के माध्यम से, सबसे छोटा जीवित प्राणी ब्रह्मांड का एक छोटा सा नमूना और उसका एक छोटा सा सूचकांक है, केवल वही व्यक्ति जो पूरे ब्रह्मांड को अपनी शक्ति की मुट्ठी में रखता है, उस पर दावा कर सकता है। और चूँकि, सृष्टि के संबंध में, एक बीज एक पेड़ से कम नहीं है, और एक पेड़ एक छोटा ब्रह्मांड है, और सभी जीवित प्राणी छोटे ब्रह्मांड और छोटे संसार की तरह हैं, इसलिए ईश्वरीय एकता के इस रहस्य ने ईश्वर के साथ साझेदारों की संगति को असंभव बना दिया है।

इस रहस्य के कारण, ब्रह्मांड न केवल एक अविभाज्य संपूर्ण है, बल्कि अपनी प्रकृति से, एक सार्वभौमिक भी है जिसका विभाजन और भागों में टूटना असंभव है और जो अपने निर्माण में भागीदारी और कई हाथों को स्वीकार नहीं करता है। इस प्रकार, चूंकि इसका प्रत्येक भाग एक विशेष और व्यक्तिगत भाग है, और संपूर्ण भी एक सार्वभौमिक है, इसलिए यह इसमें दूसरों की भागीदारी को रोकता है। यह स्वयंसिद्ध होने की हद तक एकल के नाम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति, दिव्य एकता की वास्तविकता और दिव्य एकता के इस रहस्य को साबित करता है।

हां, चूंकि ब्रह्मांड में प्राणियों के क्षेत्र आपस में जुड़े हुए हैं और एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और प्रत्येक के कार्य सभी को देखते हैं, इसने ब्रह्मांड को प्रभुत्व और सृजन के संबंध में एक अविभाज्य संपूर्ण की तरह बनाया है। इसी तरह, ब्रह्मांड में सभी को शामिल करने वाले सामान्य कार्य आपस में जुड़े हुए हैं और एक दूसरे में समाहित हैं। उदाहरण के लिए, पोषण और पोषण देने के कार्य जीवन देने के कार्य के भीतर एक ही समय में स्पष्ट होते हैं। और जीवित प्राणी के शरीर को व्यवस्थित करने और सजाने के कार्य पोषण और जीवन देने के उन कार्यों के भीतर एक ही समय में देखे जाते हैं। और

वही

समय-समय पर रूप देने, पालन-पोषण करने, जीवन देने, व्यवस्था करने और सजाने के कार्यों के भीतर रूप देने, पालन-पोषण करने और विनियमित करने के कार्य दृष्टिगोचर होते हैं। और इसी प्रकार, चूँकि ऐसे सर्वव्यापी और सामान्य कार्य एक दूसरे में समाहित हैं और एक दूसरे में मिश्रित हैं और प्रकाश में सात रंगों की तरह एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, वास्तव में, एक हैं; और चूँकि उनमें से प्रत्येक कार्य अधिकांश प्राणियों को शामिल करता है और उन्हें गले लगाता है और एक ही कार्य है और स्वभाव से एक ही है; और चूँकि जो कार्य करता है वह एक ही होना चाहिए; और चूँकि उनमें से प्रत्येक पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है और सहयोग और सहायता में अन्य कार्यों के साथ जुड़ता है, इसने ब्रह्मांड को एक अविभाज्य संपूर्ण बना दिया है। इसी प्रकार, चूँकि सभी जीवित प्राणी ब्रह्मांड के बीज, सूचकांक और नमूने की तरह हैं, इसने ब्रह्मांड को प्रभुत्व की दृष्टि से एक सार्वभौमिक की तरह बना दिया है जिसका विभाजन और भागों में टूटना असंभव है। कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रह्मांड एक समग्रता है, इसलिए इसके एक हिस्से का स्वामी और पालनकर्ता होना केवल पूरे का स्वामी और पालनकर्ता होने से ही संभव है। और यह इतना सार्वभौमिक है कि इसका प्रत्येक भाग एक सदस्य के समान हो गया है; किसी एक सदस्य को उसकी प्रभुता के अधीन करना केवल सार्वभौमिक को वश में करके ही संभव है।

छठा संकेत

प्रभु-भक्तिपूर्ण एकता और ईश्वरीय एकता सभी पूर्णता का साधन और आधार हैं,[1]
और ब्रह्मांड के निर्माण में उद्देश्यों और बुद्धि का स्रोत और मूल। वे सचेत प्राणियों और तर्कसंगत प्राणियों और विशेष रूप से मनुष्य की इच्छाओं और अभिलाषाओं को प्राप्त करने का स्रोत और एकमात्र साधन भी हैं। यदि ईश्वरीय एकता न होती, तो मनुष्य की सभी इच्छाएँ और माँगें समाप्त हो जातीं। ब्रह्मांड के निर्माण के परिणाम भी शून्य हो जाते, और अधिकांश विद्यमान, निश्चित पूर्णताएँ नष्ट हो जातीं।

उदाहरण के लिए, मनुष्य में अमरता की तीव्र, अडिग, उत्कट इच्छा होती है।
केवल वही व्यक्ति जो एकत्व के रहस्य के माध्यम से पूरे ब्रह्मांड को अपनी मुट्ठी में रखता है और इस दुनिया को बंद कर सकता है और परलोक को उसी तरह खोल सकता है जैसे एक घर को बंद करके दूसरा खोल दिया जाता है, वही इस इच्छा को पूरा कर सकता है। और इसी तरह, मनुष्य की हज़ारों इच्छाएँ जो अनंत काल तक फैली हुई हैं और पूरे ब्रह्मांड में फैली हुई हैं, वे भी इस रहस्य से बंधी हुई हैं।

---

[1] वास्तव में, दिव्य एकता अनंत दिव्य पूर्णता और सौंदर्य के अस्तित्व का सबसे स्पष्ट प्रमाण और सबसे शक्तिशाली सबूत है। क्योंकि यदि ब्रह्मांड के निर्माता को एकता का अद्वितीय माना जाता है, तो ब्रह्मांड की सभी पूर्णताएं और सुंदरता उस एकता के निर्माता में मौजूद पवित्र पूर्णता और सौंदर्य की छाया, अभिव्यक्तियां, संकेत और आसवन के रूप में जानी जाती हैं। अन्यथा ब्रह्मांड की पूर्णताएं और सुंदरताएं प्राणियों और कारणों से संबंधित होतीं, और दिव्य पूर्णता का शाश्वत खजाना मानव मन के लिए अज्ञात और बिना चाबी के रह जाता।

एकता और दिव्य एकता की वास्तविकता। यदि दिव्य एकता न होती, तो वे निष्फल होतीं, वे फलहीन होतीं। और यदि वह एक न होता जो दिव्य एकता के माध्यम से पूरे ब्रह्मांड पर नियंत्रण रखता है, तो वे इच्छाएँ संतुष्ट नहीं हो सकतीं। और मान भी लें कि वे संतुष्ट होतीं, तो भी वे बहुत ही अपर्याप्त होतीं।

इसी महान रहस्य के कारण ही चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान बार-बार और उत्साहपूर्वक तथा उच्च वाक्पटुता के साथ ईश्वरीय एकता और एकनिष्ठता की शिक्षा देता है। इसी प्रकार, सभी पैगम्बरों, शुद्ध विद्वानों और संतों ने ईश्वरीय एकता के इस कथन में अपना सबसे बड़ा सुख और खुशी पाई कि "ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।"

सातवां संकेत

जिस तरह मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने ईश्वरीय एकता की सभी डिग्री में सच्ची पुष्टि को सबसे अच्छी तरह से सिखाया, साबित किया और घोषित किया, उसी तरह उनका संदेशवाहक होना भी ईश्वरीय एकता के रूप में निश्चित रूप से और निश्चित रूप से स्थापित हुआ। क्योंकि उन्होंने ईश्वरीय एकता, अस्तित्व के क्षेत्र में सबसे बड़ी वास्तविकता, इसके सभी सत्यों के साथ सिखाया, इसलिए यह कहा जा सकता है कि ईश्वरीय एकता को साबित करने वाले सभी तर्क अप्रत्यक्ष रूप से हालांकि निर्णायक रूप से उनके संदेशवाहक होने, उनके कर्तव्य की प्रामाणिकता और उनके उद्देश्य की सहीता को साबित करते हैं। हाँ, एक संदेशवाहक जिसने ईश्वरीय एकता और एकता की खोज की और वास्तव में सिखाया, जो उन हजारों महान सत्यों को एक साथ लाता है, वह निश्चित रूप से उस एकता और एकता द्वारा आवश्यक और अपेक्षित है; उन्हें निश्चित रूप से इसकी आवश्यकता है।

इस प्रकार, मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने उस कर्तव्य को अक्षरशः पूरा किया। अब, हम उदाहरण के तौर पर उन असंख्य प्रमाणों और कारणों में से तीन की व्याख्या करेंगे जो उनके सामूहिक व्यक्तित्व के महत्व और उच्चता की गवाही देते हैं, और यह प्रमाणित करते हैं कि वह ब्रह्मांड में एक सूर्य है।

पहला: "कारण कर्ता के समान है" नियम के अनुसार, सदियों से उनके समुदाय द्वारा किए गए सभी अच्छे कर्मों के बराबर मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) के अच्छे कर्मों की पुस्तक में शामिल हो गए हैं। इसी तरह, पैगंबर (यूडब्ल्यूबीपी) के लिए सलवा की प्रार्थनाओं की निश्चित स्वीकृति के बारे में सोचकर, जिसे हर दिन उनके समुदाय के सभी लोग उनके लिए पढ़ते हैं, और उन अंतहीन प्रार्थनाओं की स्थिति और डिग्री के बारे में सोचकर, यह समझा जा सकता है कि मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) का सामूहिक व्यक्तित्व ब्रह्मांड में एक सूर्य है।

दूसरा: मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) की आध्यात्मिक प्रगति के बारे में सोचें: उनका आवश्यक अस्तित्व इस्लाम की दुनिया के शक्तिशाली वृक्ष का स्रोत, बीज, जीवन और साधन था: यह उनकी असाधारण क्षमता और क्षमताओं के साथ पवित्र पूजा और महिमा का प्रदर्शन करने से उत्पन्न हुआ, जो इस्लाम की दुनिया के आध्यात्मिक पहलुओं का निर्माण करता है,

उनके सभी अर्थों को समझना; इसलिए समझिए कि अन्य संतों की तुलना में मुसलमानी पूजा का संतत्व कितना अधिक ऊंचा था, जिसके द्वारा वह ईश्वर के प्रिय के पद तक पहुंचे।

एक बार, एक नमाज़ में एक ही महिमा का वर्णन मेरे सामने इस तरह से किया गया था जैसे पैग़म्बर के साथियों ने उसे समझा था, और यह मुझे एक महीने की इबादत जितना ही महत्वपूर्ण लगा। मैंने साथियों के उच्च महत्व को समझा।

इसका मतलब यह था कि इस्लाम के शुरुआती दिनों में पवित्र शब्दों से निकलने वाली चमक और रोशनी की एक अलग गुणवत्ता थी। उनकी नवीनता ने एक अलग स्वाद, सूक्ष्मता और ताज़गी प्रदान की जो समय बीतने के साथ अस्पष्ट हो गई और उपेक्षा के कारण कम हो गई। अपनी अद्भुत क्षमता के साथ मुहम्मद (UWBP) ने उन्हें उनके मूल स्रोत, सबसे शुद्ध और पवित्र सार से नया और ताज़ा प्राप्त किया, और उन्हें अवशोषित और आत्मसात किया। इसलिए वह एक ही महिमा से वह चमक प्राप्त कर सकता था जो अन्य लोग केवल एक साल की पूजा से प्राप्त कर सकते थे।

इससे तुम समझ सकते हो कि मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने किस हद तक पूर्णता की डिग्री हासिल की, जो कि असीम या सीमाहीन है।

तीसरा : चूँकि मानवजाति सृष्टिकर्ता के समस्त उद्देश्यों की धुरी है, और चूँकि अपनी श्रेष्ठ बुद्धि से मनुष्य ने उस महिमावान के संबोधन प्राप्त किए हैं, और चूँकि मुहम्मद (UWBP) मानवजाति में सबसे अधिक प्रसिद्ध और विख्यात थे, और जैसा कि उनके कार्य और उपलब्धियाँ प्रमाणित करती हैं, वे सबसे उत्तम और महिमावान व्यक्ति हैं, इसलिए उस महिमावान ने मुहम्मद (UWBP) को मानवजाति के नाम पर, बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए अपना संबोधनकर्ता बनाया, और उनमें असीम तेज और अनंत पूर्णताएँ प्रकट कीं।

इन तीनों की तरह कई बिंदु हैं जो निर्णायक रूप से साबित करते हैं कि जिस तरह मुहम्मद (यूडब्ल्यूबीपी) का सामूहिक व्यक्तित्व ब्रह्मांड का आध्यात्मिक सूर्य है, उसी तरह यह ब्रह्मांड के रूप में ज्ञात शक्तिशाली कुरान का सर्वोच्च संकेत है, और सत्य और असत्य के बीच उस सर्वोच्च भेदक का सबसे बड़ा नाम है, और एकल नाम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति का दर्पण है। हम एकल, अद्वितीय, शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले से प्रार्थना करते हैं कि ब्रह्मांड के कणों की संख्या के लिए आशीर्वाद और शांति हर समय के मिनटों के सेकंड से गुणा करके मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) पर उनकी दया के अनंत खजाने से उतर आए।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

पांचवां बिंदु

ईश्वरीय नाम सदा जीवित

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
अब अल्लाह की दयालुता की निशानियों को देखो कि वह किस प्रकार धरती को उसके मरने के पश्चात जीवित कर देता है। वास्तव में वही है जो मुर्दों को जिलाता है, और वह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है। (30:50)

मेरे मन में दूर से एक दृश्य आया, शव्वाल के महीने में इस्कीशेहर में
इस महान श्लोक के सम्बन्ध में एक अच्छी बात, तथा इसके बाद आने वाले महान श्लोक के सम्बन्ध में एक और अच्छी बात,

हे ईश्वर! उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित, स्वयंभू, अविनाशी है। उसे न नींद आ सकती है, न ऊंघ। (2:255)

साथ ही नाम की अभिव्यक्ति भी, जो कि सबसे महान नाम है या सबसे महान नाम की दो ज्योतियों में से एक है या इसकी छह ज्योतियों में से एक ज्योति है। मैंने उन्हें रिकॉर्ड नहीं किया, क्योंकि उस समय मैं उस पवित्र पक्षी को तेजी से पकड़ने में असमर्थ था। अब जब वह चला गया है, तो मैं कम से कम उस परम सत्य और उदात्त प्रकाश की कुछ किरणों को कई संकेतों के माध्यम से संक्षेप में इंगित करूँगा।

पहला संकेत

"जीवन क्या है?" और "इसका वास्तविक स्वरूप और उद्देश्य क्या है?" इन प्रश्नों का सूचकांक-जैसा उत्तर, जो कि सदा जीवित और जीवनदाता के नामों की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है, यह है:

जीवन है:

ब्रह्माण्ड का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य;
इसका सबसे बड़ा परिणाम;
इसका सबसे चमकीला प्रकाश;
इसका सूक्ष्मतम ख़मीर;
इसका आसुत सार;
इसका सबसे उत्तम फल;
इसकी सबसे ऊँची पूर्णता;
इसकी बेहतरीन सुंदरता;
इसका सबसे सुन्दर श्रृंगार;
इसकी अविभाज्यता का रहस्य;
इसकी एकता का बंधन;
इसकी पूर्णता का स्रोत;

कला और प्रकृति के संबंध में, एक अत्यंत अद्भुत आत्मा से संपन्न प्राणी;

एक चमत्कारी वास्तविकता जो सबसे छोटे प्राणी को एक ब्रह्मांड में बदल देती है;

ईश्वरीय शक्ति का एक अत्यंत असाधारण चमत्कार जो सजीव प्राणी को अधिकांश प्राणियों से जोड़ता है तथा उसे एक लघु ब्रह्माण्ड बनाता है साथ ही वह साधन है जिसके द्वारा ब्रह्माण्ड एक लघु सजीव प्राणी में स्थित होता है तथा प्राणी में विशाल ब्रह्माण्ड का एक प्रकार का सूचकांक प्रदर्शित करता है;

एक अद्भुत दिव्य कला जो एक छोटे से भाग को सबसे बड़ा पूर्ण बना देती है, और एक विशेष को सार्वभौमिक या विश्व बना देती है, और दिखाती है कि प्रभुत्व के संबंध में ब्रह्मांड एक अविभाज्य संपूर्ण या सार्वभौमिक है जिसे भागों में नहीं तोड़ा जा सकता है और जो किसी भागीदारी को स्वीकार नहीं करता है;

यह सबसे शानदार, सबसे निर्णायक और सबसे उत्तम प्रमाण है जो सदा जीवित और स्वयं-निर्भर एक के आवश्यक अस्तित्व को प्रमाणित करता है; और दिव्य कलाकृतियों के बीच सबसे हल्का और सबसे स्पष्ट, और सबसे मूल्यवान और प्रचुर, और सबसे शुद्ध, सबसे चमकदार और सबसे सार्थक कढ़ाई है;

ईश्वरीय दया की एक सुंदर, परिष्कृत, नाजुक अभिव्यक्ति जो अन्य प्राणियों को अपनी सेवा करने के लिए प्रेरित करती है;

दिव्य गुणों का एक व्यापक दर्पण;

प्रभु की सृष्टि का एक आश्चर्य जिसमें दयालु, प्रदाता, करुणामय, उदार और सर्वज्ञ जैसे अनेक सुन्दर नामों की अभिव्यक्तियाँ सम्मिलित हैं।

बुद्धिमान, जो पोषण, ज्ञान, अनुग्रह और दया जैसे कई सत्यों को अपने अधीन करता है, और दृष्टि, श्रवण और स्पर्श जैसी सभी इंद्रियों का स्रोत और मूल है;

ब्रह्मांड की विशाल कार्यशाला में एक परिवर्तन-मशीन जो निरंतर हर जगह सफाई करती है, शुद्ध करती है, प्रगति की अनुमति देती है, और प्रकाशित करती है, जबकि जीवित शरीर, जीवन के निवास, कणों के कारवां को निर्देश देने और प्रकाशित करने के लिए गेस्टहाउस, स्कूल और बैरक हैं, जिससे वे अपने कर्तव्यों का पालन करने में सक्षम होते हैं। बिलकुल सरल शब्दों में, सदा-जीवित स्वयं-निर्भर व्यक्ति इस अंधेरे, क्षणभंगुर, नीच दुनिया को सूक्ष्म बनाता है, इसे प्रकाशित करता है और इसे एक तरह की स्थायित्व देता है, इसे दूसरे, शाश्वत दुनिया में जाने के लिए तैयार करता है;

जीवन के दो चेहरे, यानी उसके भीतरी और बाहरी चेहरे, दोनों ही चमकदार, उन्नत और बिना किसी गंदगी या दोष के हैं। यह एक असाधारण प्राणी है जिस पर स्पष्ट कारण नहीं रखे गए हैं, शक्ति के निपटान को ढंकते हुए, ताकि यह स्पष्ट रूप से दिखाया जा सके कि यह बिना किसी आवरण या साधनों के सीधे प्रभुत्वशाली शक्ति के हाथ से उभरा है;

जीवन की वास्तविकता विश्वास के छह स्तंभों को देखती है, उन्हें अर्थ और सत्य में सिद्ध करती है।

अप्रत्यक्ष रूप से। अर्थात्, यह एक प्रकाशमान सत्य है जो अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अनिवार्य अस्तित्व को देखता है और उसे सिद्ध करता है।

और उसका अनन्त जीवन, और परलोक और अनन्त जीवन का क्षेत्र, और फ़रिश्तों का अस्तित्व, और विश्वास के अन्य स्तंभ।

साथ ही, जिस प्रकार जीवन ब्रह्माण्ड का शुद्धतम सार है, जो उसी से निकला है, उसी प्रकार यह एक शक्तिशाली रहस्य है जो धन्यवाद, आराधना, स्तुति और प्रेम उत्पन्न करता है, जो ब्रह्माण्ड में सबसे महत्वपूर्ण ईश्वरीय उद्देश्य और विश्व की रचना के सबसे महत्वपूर्ण परिणाम हैं।

इसलिए जीवन की इन 29 महत्वपूर्ण, मूल्यवान विशेषताओं और श्रेष्ठ, सामान्य कर्तव्यों पर विचार करें। फिर जीवनदाता के नाम के पीछे सदा-जीवित के नाम की महानता को देखें। यह भी समझें कि कैसे इन विशाल विशेषताओं और जीवन के फलों के साथ, सदा-जीवित का नाम सबसे महान नाम है।

यह भी समझिए कि चूँकि जीवन ब्रह्माण्ड का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम है, और इसका सबसे बड़ा लक्ष्य और सबसे मूल्यवान फल है, इसलिए इसका लक्ष्य और परिणाम ब्रह्माण्ड जितना ही विशाल होना चाहिए। क्योंकि वृक्ष का परिणाम उसका फल है, इसलिए फल का परिणाम बीज के माध्यम से भविष्य का वृक्ष है। हाँ, जिस तरह इस जीवन का लक्ष्य और परिणाम अनन्त जीवन है, उसी तरह इसका एक फल जीवन के सदा-जीवित दाता का धन्यवाद, उसकी आराधना और स्तुति और उसके लिए प्रेम है। और जिस तरह यह धन्यवाद, प्रेम, स्तुति और आराधना जीवन का फल है, उसी तरह वे ब्रह्माण्ड का लक्ष्य भी हैं।

इससे यह भी समझिए कि जो लोग कहते हैं कि जीवन का उद्देश्य आराम से रहना, बेपरवाही से आनंद मनाना और भोग विलास में लिप्त रहना है, उनका कितना कुरूप अज्ञान और अस्वीकार है, बल्कि उनका कितना अविश्वास है, और वे किस प्रकार जीवन के अनमोल उपहार, चेतना के उपहार और तर्क के उपहार का अपमान करते हैं और कितनी भयंकर कृतघ्नता प्रदर्शित करते हैं।

दूसरा संकेत

जीवन के सभी गुणों, विशेषताओं और कर्तव्यों को समझाने के लिए जीवन के गुणों की संख्या पर ग्रंथ लिखने होंगे, जो कि प्रथम संकेत में अनुक्रमणिका में उल्लिखित सदा-जीवित और जीवनदाता नामों की अधिकतम अभिव्यक्ति है। इसलिए चूँकि उनमें से कुछ को रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में स्पष्ट किया गया है, इसलिए हम आपको कुछ विवरणों के लिए उनका संदर्भ देते हैं, और यहाँ केवल कुछ अन्य को इंगित करते हैं।

जीवन के उनतीस गुणों में से तेईसवें गुण में कहा गया है कि चूंकि जीवन के दो पहलू पारदर्शी और निष्कलंक हैं, इसलिए प्रत्यक्ष कारणों को प्रभुत्वशाली शक्ति के निर्णयों के लिए आवरण नहीं बनाया गया है।

हां, इसका अर्थ इस प्रकार है: निश्चित रूप से ब्रह्मांड में हर चीज में अच्छाई और सुंदरता है, जबकि बुराई और कुरूपता गौण हैं, और अच्छाई और सुंदरता की डिग्री दिखाने और उनकी वास्तविकताओं को बढ़ाने और गुणा करने के लिए माप की इकाइयाँ होने का कार्य करती हैं। इस तरह बुराई अच्छाई बन जाती है और कुरूपता, सुंदरता। और स्पष्ट कारणों ने

सत्ता के निपटान के लिए एक पर्दा बनाया गया है ताकि चेतन प्राणियों की सतही दृष्टि से जो कुरूपता, बुराई, आपदाएँ और विपत्तियाँ हैं, उनसे उत्पन्न होने वाली शिकायतें और क्रोध, सदा-जीवित और आत्मनिर्भर व्यक्ति की ओर निर्देशित न हों, और ताकि पवित्र, शुद्ध दिव्य शक्ति का स्पष्ट रूप से नीच और गंदी चीज़ों के साथ संपर्क सत्ता की गरिमा को ठेस न पहुँचाए। कारण सृजन नहीं कर सकते, लेकिन उन्हें अनुचित शिकायतों और आपत्तियों का लक्ष्य बनाया गया है और दिव्य शक्ति की गरिमा, पवित्रता और बेदाग प्रकृति को संरक्षित किया गया है।

जैसा कि बाईसवें वचन के दूसरे स्टेशन के परिचय में बताया गया है, अज़राएल (जिस पर शांति हो) ने मरने वालों की आत्माओं को जब्त करने के अपने कर्तव्य के बारे में सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना की, और कहा: "आपके सेवक मुझसे नाराज़ होंगे।" वह

उत्तर में कहा गया: "मैं आपके कर्तव्य और मरने के बीच बीमारी और विपत्ति का पर्दा डाल दूंगा, फिर वे अपनी शिकायत और आपत्ति के तीर आप पर नहीं, बल्कि उन पर्दों पर फेंकेंगे।"

इस प्रार्थना के अनुसार, अज़राएल (जिस पर शांति हो) का कर्तव्य एक पर्दा है क्योंकि अन्य कारण स्पष्ट परदे हैं, ताकि जो लोग मृत्यु के सच्चे, सुंदर चेहरे को नहीं देखते हैं - विश्वास के लोगों के लिए सुंदर - और उस पर दया की अभिव्यक्ति को नहीं जानते हैं, उनका गुस्सा और शिकायतें हमेशा जीवित और आत्मनिर्भर व्यक्ति की ओर निर्देशित नहीं होती हैं। हाँ, गरिमा और भव्यता की आवश्यकता है कि कारण मन की दृष्टि में शक्ति के हाथ के लिए पर्दा-धारक हों, जबकि दिव्य एकता और महिमा की मांग है कि कारण अपने हाथ वापस ले लें और कोई सच्चा प्रभाव न डालें।

हालाँकि, चूँकि जीवन के बाहरी और भीतरी दोनों ही पहलू गंदगी, दोष या दोष से रहित हैं, इसलिए शिकायतों और आपत्तियों को आमंत्रित करने के लिए कुछ भी नहीं है; उनमें सत्ता की गरिमा और पवित्रता के विपरीत कोई गंदगी या कुरूपता नहीं है। इसलिए, जीवन के चेहरे, बिना किसी आवरण के, सदा-जीवित स्वयं-निर्भर एक के जीवन-दाता, पुनर्स्थापना, पुनरुत्थान नाम के हाथों में सीधे समर्पित कर दिए गए हैं। प्रकाश एक ही है, और अस्तित्व और अस्तित्व का देना भी एक ही है। इस कारण से, सृजन और अस्तित्व का देना सीधे-सीधे सर्व-महिमावान की शक्ति की ओर देखते हैं। इसके अलावा, चूँकि बारिश एक तरह का जीवन और दया है, इसलिए इसके वर्षा के समय को नियमित नियम के अधीन नहीं बनाया गया है, ताकि ज़रूरत के हर समय इसे माँगने के लिए ईश्वरीय दरबार की ओर हाथ उठें। यदि सूर्योदय की तरह, बारिश भी एक नियम के अधीन होती, तो ज़रूरत के समय उस महत्वपूर्ण उपहार की तलाश और माँग न की जाती।

तीसरा संकेत

जीवन के उनतीसवें गुण में कहा गया कि जैसे ब्रह्माण्ड का परिणाम जीवन है, वैसे ही धन्यवाद और उपासना भी जीवन का परिणाम है, तथा ब्रह्माण्ड की रचना का कारण और परम कारण है, तथा उसका इच्छित परिणाम है।

हां, ब्रह्माण्ड का सदा-जीवित, स्वयं-निर्भर निर्माता निश्चित रूप से जीवित प्राणियों से धन्यवाद चाहता है, क्योंकि उसने स्वयं को अनेक प्रकार के उपहारों के माध्यम से जाना और प्रेम किया है, और वह चाहता है कि उसकी बहुमूल्य कलाओं के बदले में वे उसकी प्रशंसा और स्तुति करें, और वह चाहता है कि उसके प्राणी उसकी आराधना और आज्ञाकारिता के साथ उसकी प्रभुत्वपूर्ण आज्ञाओं का जवाब दें।

प्रभुत्व के इस रहस्य के अनुसार, यह इसलिए है क्योंकि धन्यवाद और पूजा हर तरह के जीवन और इसलिए पूरे ब्रह्मांड का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है, इसलिए चमत्कारिक व्याख्या का कुरान उत्साह, तीव्रता और मिठास के साथ धन्यवाद और पूजा करने का आग्रह करता है। यह बार-बार कहता है कि पूजा केवल ईश्वर के लिए है, धन्यवाद केवल उसी के लिए है, और प्रशंसा विशेष रूप से उसी के लिए है। यह बताने के लिए कि धन्यवाद और प्रशंसा सीधे अपने सच्चे मालिक तक जानी चाहिए, इस तरह की आयतें,

> वही है जो जीवन और मृत्यु देता है और उसी के लिए रात और दिन का आना-जाना है। (23:80) * वही है जो जीवन और मृत्यु देता है और जब कोई काम तय कर लेता है तो उससे कहता है, "हो जा!" तो वह हो जाती है। (40:68) * और धरती को उसके मरने के पश्चात जीवन देता है, (30:24)

वे बताते हैं कि वह जीवन को उसकी सभी विशेषताओं के साथ, बिना किसी आवरण के, अपनी शक्ति की मुट्ठी में रखता है, और वे मध्यस्थों को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करते हैं, और जीवन को सीधे-सीधे उस सनातन और स्वयं-निर्भर व्यक्ति की शक्ति के हाथ में सौंपते हैं, और उसे उसी तक सीमित कर देते हैं। आयतें,

> निस्संदेह अल्लाह ही है जो रोज़ी देता है, प्रभुत्वशाली प्रभु है, सदा स्थिर रहनेवाला है । (51:58) * और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही मुझे शिफ़ा देता है। (26:80) * वही है जो आशा छोड़ देने के पश्चात भी वर्षा बरसाता है , (42:28)

यह दर्शाता है कि जो चीजें धन्यवाद को उकसाती हैं जैसे कि पोषण, उपचार और बारिश, जो कृतज्ञता और धन्यवाद को भी आमंत्रित करती हैं और प्रेम और प्रशंसा की भावना को उत्तेजित करती हैं, वे भी सीधे उपचार प्रदाता से संबंधित हैं, और कारण और मध्यस्थ एक पर्दा हैं; यानी, पोषण, उपचार और बारिश हमेशा जीवित और आत्मनिर्भर एक की शक्ति के लिए विशेष और सीमित हैं। व्याकरण के नियमों के अनुसार इसे व्यक्त करने के लिए, प्रतिबंधात्मक सर्वनाम, "क्योंकि ईश्वर वह है जो" [हू अर-रज़्ज़ाक] और "वह वह है जो" [हू अलादी] का उपयोग किया गया है। सच्चा उपचारक वह है जो दवाओं को उनके गुण देता है और उनके प्रभाव पैदा करता है।

चौथा संकेत

जीवन के अट्ठाईसवें गुण के विषय में बताया गया कि जीवन विश्वास के छह स्तम्भों को देखता है और उन्हें सिद्ध करता है; वह उनकी सच्चाई की ओर संकेत करता है।

हाँ, चूँकि जीवन ही ब्रह्माण्ड का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम और फल है, तथा इसकी रचना का उद्देश्य है, इसलिए निश्चित रूप से वह उच्च वास्तविकता इस क्षणभंगुर, संक्षिप्त, अपूर्ण, दुःखदायी सांसारिक जीवन तक सीमित नहीं है।

जीवन का वृक्ष, जिसकी विशालता उसके उनतीस गुणों के माध्यम से समझी जाती है, शाश्वत जीवन और परलोक का जीवन है; यह आनंद के क्षेत्र में जीवन है, जिसके पत्थर, पेड़ और धरती जीवित हैं। जीवन का वृक्ष, इतने सारे महत्वपूर्ण सदस्यों से सुसज्जित, अन्यथा बुद्धिमान प्राणियों और विशेष रूप से मनुष्य के लिए फल, लाभ, उद्देश्य और वास्तविकता के बिना रह जाएगा। तब मनुष्य, जिसकी पूंजी और क्षमताएँ गौरैया से बीस गुना अधिक और अधिक हैं और जो ब्रह्मांड में सबसे ऊंचा और महत्वपूर्ण प्राणी है, और सबसे ऊंचा जीवित प्राणी है, जीवन की खुशी के संबंध में गौरैया से भी नीचे गिर जाएगा, और सबसे दुखी, सबसे नीच बन जाएगा।

इसके अलावा, अतीत के दुखों और भविष्य के भय पर विचार करने से, बुद्धि, जो सबसे अनमोल वरदान है, लगातार मानव हृदय को घायल करती रहेगी; क्योंकि यह एक ही सुख के साथ नौ दुखों को मिला देती है, यह एक विपत्तिपूर्ण पीड़ा बन जाएगी। यह सौवें अंश तक झूठ होगा। यानी, इस दुनिया का जीवन परलोक में विश्वास के स्तंभ को निर्णायक रूप से साबित करता है और वसंत में, मृतकों के पुनरुत्थान के तीन लाख से अधिक उदाहरण हमारी आँखों के सामने रखता है।

क्या यह संभव है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो आपके बगीचे और देश में आपके जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजों और अंगों को बुद्धि, अनुग्रह और दया के साथ तैयार करता है; जो उन्हें उचित समय पर आप तक पहुंचाता है; जो आपके पेट द्वारा निरंतर अस्तित्व की इच्छा के माध्यम से किए गए भोजन के लिए छोटी, विशेष प्रार्थना को भी जानता और सुनता है; और उसे संतुष्ट करता है, असंख्य स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों के साथ यह दर्शाता है कि वह उसकी प्रार्थना स्वीकार करता है - क्या यह संभव है कि वह आपको नहीं देखता और आपको नहीं जानता; वह मानव जाति के सबसे बड़े लक्ष्य, शाश्वत जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजों को तैयार नहीं करेगा; और वह मानव जाति की अमरता के लिए सबसे जरूरी, महत्वपूर्ण, सार्वभौमिक प्रार्थना को स्वीकार नहीं करेगा, जिसके वह योग्य है, परलोक का निर्माण करके और स्वर्ग का निर्माण करके; कि वह मनुष्य की सबसे शक्तिशाली, सामान्य प्रार्थना नहीं सुनेगा, जो जमीन से दिव्य सिंहासन तक गूंजती है, यद्यपि वह पृथ्वी का शासक और परिणाम है, और न ही उसे पेट जितना महत्वपूर्ण मानता है, उसे संतुष्ट नहीं करेगा, इसलिए उसे अपनी संपूर्ण बुद्धि और अंतहीन दया से वंचित करेगा? भगवान न करे, एक लाख बार!

क्या यह संभव है कि वह जीवन के सबसे छोटे से छोटे पहलू की सबसे गुप्त आवाज़ को सुन ले, उसकी शिकायत पर ध्यान दे, उसका इलाज करे, उसकी ज़रूरतों को पूरा करे, उसे ध्यान से पोषित करे, दूसरों को उसकी सेवा करने के लिए कहे, और अपने विशाल प्राणियों से उसकी सहायता करवाए; फिर भी वह सबसे बड़े और सबसे मूल्यवान, अमर, सबसे नाजुक जीवन की गड़गड़ाहट भरी आवाज़ को न सुने; और अमरता के लिए उसकी शक्तिशाली दलील और प्रार्थना पर विचार न करे? कि वह एक सामान्य सैनिक को सबसे अधिक सावधानी से सुसज्जित करे और उसका पर्यवेक्षण करे और एक शानदार, आज्ञाकारी सेना की उपेक्षा करे? कि वह एक अणु को देखे और सूर्य को न देखे?

क्या वह मच्छर की भिनभिनाहट सुन सकता है और गड़गड़ाहट की गर्जना नहीं सुन सकता? भगवान न करे! एक लाख बार, भगवान न करे!

क्या तर्क किसी भी तरह से यह स्वीकार कर सकता है कि एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी जो असीम दयालु, प्रेमपूर्ण और करुणामय है, जो अपनी कला से बहुत प्रेम करता है, स्वयं को बहुत प्रिय बनाता है, और जो उससे प्रेम करते हैं उनसे बहुत प्रेम करता है, वह उस जीवन को अनन्त मृत्यु की सजा देगा जो स्वयं को किसी भी चीज़ से अधिक प्रेम करता है, प्रेम करने योग्य और प्रेम करने योग्य है?

और स्वभाव से ही अपने निर्माता से प्रेम करता है, आत्मा को, जीवन के सार और तत्व को मृत्युदंड देता है; क्या वह अपने उस प्रिय मित्र को हमेशा के लिए अपमानित और क्रोधित करेगा, और उसे भयंकर रूप से घायल करके उसकी दया के रहस्य और उसके प्रेम के प्रकाश को अस्वीकार करेगा, और उसे अस्वीकार करने के लिए मजबूर करेगा? एक लाख बार, भगवान न करे!

वह परम सौंदर्य जो अपनी अभिव्यक्ति से ब्रह्माण्ड को सुशोभित करता है, वह परम दया जो सभी प्राणियों को सुखी बनाती है, वह निश्चित रूप से ऐसी असीम कुरूपता से मुक्त है, तथा ऐसे परम अत्याचार, ऐसी निर्दयता से कहीं ऊपर है।

निष्कर्ष: चूँकि इस दुनिया में जीवन है, इसलिए जो लोग जीवन के रहस्य को समझते हैं और अपने जीवन का दुरुपयोग नहीं करते हैं, वे अनंत काल और अनंत स्वर्ग के दायरे में अनंत जीवन प्रकट करेंगे। इस पर हमारा विश्वास है!

पृथ्वी के चेहरे पर चमकती हुई वस्तुएं सूर्य के प्रतिबिंब से चमकती हैं, और समुद्र की सतह पर बुलबुले प्रकाश की चमक के साथ चमकते और बुझते हैं और उनके बाद आने वाले बुलबुले फिर से काल्पनिक लघु सूर्यों के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं, जो स्वयं-स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि वे चमक एक एकल, ऊंचे सूर्य के प्रतिबिंब और अभिव्यक्तियाँ हैं। वे विभिन्न भाषाओं से सूर्य के अस्तित्व को याद करते हैं, और अपनी प्रकाश की उंगलियों से उसकी ओर इशारा करते हैं।

ठीक उसी तरह, सदा जीवित और स्वयंभू के जीवनदाता नाम की महानतम अभिव्यक्ति के माध्यम से, पृथ्वी और समुद्र में रहने वाले प्राणी दिव्य शक्ति के माध्यम से चमकते हैं, और अपने बाद आने वालों के लिए रास्ता बनाने के लिए, "हे जीवित!" कहते हैं और अदृश्य के पर्दे के पीछे गायब हो जाते हैं, इस प्रकार सदा जीवित और स्वयंभू के जीवन और आवश्यक अस्तित्व का संकेत और साक्ष्य देते हैं, जिसके पास शाश्वत जीवन है।

इसके अतिरिक्त, ईश्वरीय ज्ञान को प्रमाणित करने वाले सभी प्रमाण, जिसका प्रभाव सभी प्राणियों की व्यवस्था में स्पष्ट है; और ब्रह्माण्ड पर नियंत्रण रखने वाली शक्ति को प्रदर्शित करने वाले सभी प्रमाण; और ब्रह्माण्ड को नियंत्रित और निर्देशित करने वाली इच्छा और संकल्प को प्रमाणित करने वाले सभी प्रमाण; और ईश्वरीय रहस्योद्घाटन और प्रभुत्वशाली भाषण के माध्यमों, नबियों के मिशनों को प्रमाणित करने वाले सभी संकेत और चमत्कार; और सात ईश्वरीय गुणों को प्रमाणित करने वाले सभी प्रमाण - ये सभी एकमत से उस सनातन और स्वयं-निर्भर के जीवन को इंगित करते हैं, सूचित करते हैं और प्रमाणित करते हैं।

क्योंकि अगर किसी चीज़ में दृष्टि है, तो उसमें जीवन भी है; और अगर उसमें श्रवण है, तो यह जीवन का संकेत है; और अगर उसमें वाणी है, तो यह जीवन के अस्तित्व की ओर इशारा करता है; और अगर उसमें इच्छा और विकल्प है, तो यह जीवन को दर्शाता है। इस प्रकार, पूर्ण शक्ति, व्यापक इच्छा और सर्वव्यापी ज्ञान जैसे गुण, जिनका अस्तित्व ब्रह्मांड में उनके कार्यों और प्रभावों के कारण स्पष्ट और निश्चित है, अपने सभी प्रमाणों के माध्यम से, सदा-जीवित और स्वयं-निर्भर एक के जीवन और आवश्यक अस्तित्व की गवाही देते हैं, वह शाश्वत जीवन जो अपनी एक छाया से पूरे ब्रह्मांड को रोशन करता है, और अपनी एक अभिव्यक्ति के माध्यम से परलोक के क्षेत्र को, यहाँ तक कि उसके कणों को भी जीवन देता है।

जीवन स्वर्गदूतों में विश्वास के स्तंभ की ओर भी देखता है और इसे अप्रत्यक्ष रूप से सिद्ध करता है। क्योंकि ब्रह्माण्ड का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम जीवन है; और यह जीवित प्राणी हैं जो सबसे अधिक फैले हुए हैं, और उनके मूल्य के कारण, उनकी प्रतियाँ सबसे अधिक दोहराई जाती हैं, और जो अपने यात्रा करने वाले कारवां के साथ पृथ्वी के अतिथिगृह को आबाद करते हैं; और चूँकि पृथ्वी का गोला इतने सारे जीवित प्राणियों से भरा हुआ है, और सजीव प्रजातियों को नवीनीकृत करने और गुणा करने के उद्देश्य से लगातार खाली और फिर से भरा जाता है; और चूँकि जीवन इस पर सड़ते और भ्रष्ट पदार्थ में भी निर्मित होता है और यह सूक्ष्म जीवों का एक समूह बन गया है; और चूँकि चेतना और बुद्धि, जीवन का सबसे शुद्ध आसुत सार, और आत्मा, इसका सबसे सूक्ष्म और स्थिर पदार्थ, पृथ्वी पर बड़ी मात्रा में निर्मित होते हैं, और काफी सरलता से पृथ्वी को जीवन, बुद्धि, चेतना और आत्माओं के माध्यम से जीवन से भर दिया गया है, और इस तरह से बसाया गया है; चूँकि ऐसा है, तो निश्चित रूप से आकाशीय पिंड, जो पृथ्वी से अधिक सूक्ष्म, अधिक प्रकाशमान, बड़े और अधिक महत्वपूर्ण हैं, मृत, निर्जीव, जीवन और चेतना से रहित नहीं हो सकते; यह संभावना की सीमाओं से परे होगा। अर्थात्, जीवन के रहस्य के अनुसार, आकाश, सूर्य और सितारों के जीवित, सचेत निवासी अवश्य होंगे जो स्वर्ग के लिए उपयुक्त होंगे, जो उन्हें अपनी जीवित अवस्था प्रदान करेंगे, स्वर्ग के निर्माण का परिणाम प्रदर्शित करेंगे, और दिव्य संबोधन प्राप्त करेंगे; और वे देवदूत हैं।

जीवन की मूल प्रकृति भी संदेशवाहकों में विश्वास के स्तंभ की ओर देखती है, और इसे अप्रत्यक्ष रूप से सिद्ध करती है। हाँ, चूँकि ब्रह्मांड जीवन के लिए बनाया गया था, और जीवन पूर्व-शाश्वत स्वयं-निर्भर एक की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है, उसका एक परिपूर्ण शिलालेख, उसकी कला का सबसे सुंदर कार्य; और चूँकि शाश्वत जीवन संदेशवाहकों को भेजने और शास्त्रों को प्रकट करने के माध्यम से खुद को प्रकट करता है, क्योंकि यदि कोई पुस्तकें या संदेशवाहक न होते, तो वह पूर्व-शाश्वत जीवन ज्ञात नहीं होता - जैसे कि उसके भाषण के माध्यम से यह समझा जाता है कि कोई व्यक्ति जीवित है, वैसे ही यह संदेशवाहक और उनके द्वारा लाए गए शास्त्र हैं जो उस एक के शब्दों और वाणी को ज्ञात करते हैं जो अदृश्य दुनिया से परे, ब्रह्मांड के पर्दे के नीचे से बोलता है,

जो आज्ञा देता है, मना करता है और अपना संबोधन कहता है - तो निश्चित रूप से जिस तरह ब्रह्मांड में जीवन पूर्व-अनन्त सदा-जीवित एक के आवश्यक अस्तित्व को निर्णायक रूप से प्रमाणित करता है, वह विश्वास के स्तंभों को भी देखता है - संदेशवाहकों को भेजना और शास्त्रों का रहस्योद्घाटन, जो उस पूर्व-अनन्त जीवन की किरणें, अभिव्यक्तियाँ और संचार हैं। और चूँकि मुहम्मद (UWBP) का संदेशवाहक होना और कुरान का रहस्योद्घाटन जीवन की आत्मा और बुद्धि की तरह है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि उनका सत्य जीवन के अस्तित्व जितना ही निश्चित है।

हाँ, जिस तरह जीवन ब्रह्मांड का आसुत सार है; और चेतना और इंद्रिय बोध जीवन से आसुत हैं और जीवन का सार हैं; और बुद्धि भी चेतना और इंद्रिय बोध से आसुत है और चेतना का सार है; और आत्मा जीवन का शुद्ध, निष्कलंक पदार्थ है, इसका स्थिर और स्वायत्त सार है; उसी तरह, मुहम्मद (UWBP) का भौतिक और आध्यात्मिक जीवन ब्रह्मांड के जीवन और आत्मा का आसुत सार है; और मुहम्मद (UWBP) का संदेशवाहक ब्रह्मांड की इंद्रियों, चेतना और बुद्धि से आसुत सबसे शुद्ध सार है। वास्तव में, मुहम्मद (UWBP) का भौतिक और आध्यात्मिक जीवन, अपने कार्यों की गवाही के माध्यम से, ब्रह्मांड के जीवन का जीवन है। और मुहम्मद (UWBP) का संदेशवाहक ब्रह्मांड की चेतना की चेतना और प्रकाश है। जबकि कुरान का रहस्योद्घाटन, अपने जीवित सत्यों की गवाही के अनुसार, ब्रह्मांड के जीवन की आत्मा और उसकी चेतना की बुद्धि है।

हाँ, हाँ, हाँ! अगर मुहम्मद (UWBP) के संदेशवाहक की रोशनी ब्रह्मांड से चली जाए, तो ब्रह्मांड नष्ट हो जाएगा। अगर कुरान चली जाए, तो ब्रह्मांड पागल हो जाएगा, पृथ्वी अपना सिर और अपनी समझ खो देगी; यह अब बेहोश हो चुके अपने सिर को किसी ग्रह पर मार देगी और प्रलय आ जाएगा।

जीवन भी ईश्वरीय निर्धारण में विश्वास के स्तंभ की ओर देखता है और इसे अप्रत्यक्ष रूप से सिद्ध करता है। क्योंकि, चूँकि जीवन प्रकट जगत का प्रकाश है, और यह उस पर प्रभुत्व रखता है, और अस्तित्व का परिणाम और लक्ष्य है, और चूँकि यह ब्रह्मांड के रचयिता का सबसे व्यापक दर्पण है और प्रभु की गतिविधि का सबसे उत्तम नमूना और सूचकांक है, और - तुलना में कोई गलती न हो - यह एक तरह के कार्यक्रम की तरह है; निश्चित रूप से, जीवन का रहस्य यह आवश्यक बनाता है कि अदृश्य जगत के प्राणी, अर्थात् भूत और भविष्य, अर्थात् जो हुए हैं और आएंगे, वे व्यवस्था, नियमितता, ज्ञात और देखे जाने, विशिष्ट व्यक्तिगत अस्तित्व और सृजनात्मक आदेशों के अनुरूप होने के लिए पूर्वनिर्धारित हैं, जो एक तरह से उनके जीवन हैं।

किसी वृक्ष का मूल बीज और उसकी जड़, साथ ही उसके फल में निहित बीज
और अंतिम परिणाम, सभी एक प्रकार का जीवन प्रकट करते हैं जो पेड़ से कम नहीं है

वास्तव में, वे अपने भीतर जीवन के नियमों को धारण करते हैं जो वृक्ष के नियमों से भी अधिक सूक्ष्म हैं। इसी तरह, पिछले पतझड़ द्वारा छोड़े गए बीज और जड़ें, वर्तमान वसंत से पहले, साथ ही वे बीज और जड़ें जो इस वसंत के चले जाने के बाद आने वाले वसंत में छोड़ी जाएंगी - वे सभी इस वसंत की तरह ही जीवन की अभिव्यक्तियाँ धारण करते हैं, और जीवन के नियमों के अधीन हैं। ठीक उसी तरह, ब्रह्मांडीय वृक्ष की सभी शाखाओं और टहनियों में से प्रत्येक का एक अतीत और एक भविष्य होता है। उनके पास अतीत और भविष्य के चरणों और परिस्थितियों से मिलकर एक श्रृंखला होती है। प्रत्येक प्रजाति और प्रत्येक प्रजाति के प्रत्येक सदस्य के कई अस्तित्व और चरण, दिव्य ज्ञान में विद्यमान, ईश्वर के ज्ञान में अस्तित्व की एक श्रृंखला बनाते हैं, और इसके बाहरी अस्तित्व की तरह, ईश्वर के ज्ञान में इसका अस्तित्व सार्वभौमिक जीवन की अभिव्यक्ति है जो अपने जीवन के सभी पहलुओं को दिव्य निर्धारण की इन सार्थक और महत्वपूर्ण पट्टियों से प्राप्त करता है।

यह तथ्य कि आत्माओं की दुनिया - जो अदृश्य दुनिया का एक रूप है - जीवन के सार, जीवन के पदार्थ से भरी हुई है, और आत्माएं, जो जीवन के पदार्थ और सार हैं, निश्चित रूप से मांग करती हैं और आवश्यकता है कि अतीत और भविष्य - जो अदृश्य दुनिया और उसके दूसरे खंड का दूसरा रूप हैं -

जीवन की अभिव्यक्ति भी प्राप्त होनी चाहिए।

इसके अलावा, ईश्वर के ज्ञान के भीतर किसी वस्तु के अस्तित्व में निहित पूर्ण व्यवस्था, सार्थक परिस्थितियाँ और महत्वपूर्ण फल और अवस्थाएँ भी एक प्रकार के जीवन की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करती हैं। जीवन की ऐसी अभिव्यक्ति, जो शाश्वत जीवन के सूर्य द्वारा उत्सर्जित प्रकाश है, इस प्रकट दुनिया, इस वर्तमान समय, इस बाहरी अस्तित्व तक सीमित नहीं हो सकती। इसके विपरीत, प्रत्येक दुनिया अपनी क्षमता के अनुसार उस प्रकाश की अभिव्यक्ति प्राप्त करती है, और ब्रह्मांड अपने सभी संसारों के साथ उसके माध्यम से जीवित और प्रकाशित होता है। अन्यथा, जैसा कि गुमराह लोग कल्पना करते हैं, एक अस्थायी और स्पष्ट जीवन के नीचे, प्रत्येक दुनिया एक विशाल और भयानक लाश, एक अंधेरा खंडहर होगी।

ईश्वरीय निर्धारण और आदेश में विश्वास के स्तंभ का एक व्यापक पहलू, फिर, जीवन के रहस्य के माध्यम से समझा जाता है और इसके द्वारा स्थापित होता है। जिस तरह प्रकट दुनिया और मौजूदा, दृश्यमान वस्तुओं का जीवन और जीवन शक्ति उनकी व्यवस्थितता और उनके अस्तित्व के परिणामों से स्पष्ट हो जाती है, उसी तरह अतीत और भविष्य के जीव - जिन्हें अदृश्य दुनिया से संबंधित माना जाता है - का एक अमूर्त अस्तित्व और जीवन का प्रकार होता है, और ईश्वर के ज्ञान में एक आध्यात्मिक उपस्थिति होती है। इस जीवन और उपस्थिति का निशान ईश्वरीय निर्धारण और आदेश की पट्टिका के माध्यम से और उनके बाहरी जीवन और अस्तित्व के सभी चरणों और परिस्थितियों के माध्यम से प्रकट और जाना जाता है।

पांचवां संकेत

इसके अलावा, जीवन के सोलहवें गुण के बारे में कहा गया है कि जब जीवन किसी वस्तु में प्रवेश करता है, तो वह उसे एक संसार बना देता है; यदि वह एक भाग है, तो उसे एक सम्पूर्ण की व्यापकता प्रदान करता है; यदि वह एक विशिष्ट है, तो उसे एक सार्वभौमिक की व्यापकता प्रदान करता है।

हां, जीवन में इतनी व्यापकता है कि यह ईश्वरीय एकता का एक व्यापक दर्पण है, जो पूरे ब्रह्मांड में प्रकट होने वाले अधिकांश ईश्वरीय नामों को अपने आप में दर्शाता है। जब जीवन किसी शरीर में प्रवेश करता है, तो वह उसे एक छोटा संसार बना देता है; ब्रह्मांड के वृक्ष के एक प्रकार के बीज की तरह, जिसमें उसका एक सूचकांक होता है। जिस तरह एक बीज केवल उस शक्ति का काम हो सकता है जो उसे पैदा करने वाले वृक्ष को बनाने में सक्षम हो, उसी तरह सबसे छोटे जीवों को बनाने वाला व्यक्ति पूरे ब्रह्मांड का निर्माता होना चाहिए।

इस प्रकार, इस व्यापकता के माध्यम से, जीवन अपने आप में दिव्य एकता के सबसे अस्पष्ट रहस्य को प्रदर्शित करता है। अर्थात्, जैसे शक्तिशाली सूर्य अपने प्रकाश, प्रतिबिंब और सात रंगों के साथ पानी की हर बूंद और उसके सामने कांच के टुकड़े में मौजूद है, वैसे ही ब्रह्मांड को घेरने वाले दिव्य नाम और गुण सभी जीवित प्राणियों में एक साथ प्रकट होते हैं। इस दृष्टिकोण से, सृजन और प्रभुत्व के संबंध में, जीवन ब्रह्मांड को एक अविभाज्य संपूर्ण बनाता है, एक सार्वभौमिक जिसका भागों में टूटना और जिसमें अन्य लोग हिस्सा ले सकें, संभावना की सीमा से बाहर है।

हां, आपके चेहरे पर लगी मुहर यह स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि जिसने आपको बनाया है, वही पूरी मानवजाति को बनाता है। क्योंकि मनुष्य की रचना की प्रकृति एक ही है; इसे विभाजित नहीं किया जा सकता। साथ ही, जीवन के माध्यम से ब्रह्मांड के हिस्से मानव जाति के अलग-अलग सदस्यों की तरह हैं, और ब्रह्मांड, प्रजातियों की तरह है। यह हर व्यक्ति पर ईश्वरीय एकता की मुहर और शाश्वत प्रार्थना की मुहर दिखाता है, जैसा कि यह उन्हें समग्र रूप से दिखाता है, इस प्रकार हर तरह से ईश्वर के साथ साझेदारी करने से इनकार करता है।

और जीवन में प्रभुता के ऐसे असाधारण चमत्कार हैं कि जो शक्ति सारे ब्रह्माण्ड को नहीं बना सकती, वह छोटे से छोटे जीव को भी नहीं बना सकती। हाँ, जो कलम एक छोटे से बीज में विशाल देवदार के वृक्ष की सूची और उसके जीवन का कार्यक्रम लिख देती है, जैसे चने में पूरा कुरान लिख देती है, वह निश्चय ही आकाश को तारों सहित लिखने वाली कलम के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकती। और जो मधुमक्खी के छोटे से सिर में ब्रह्माण्ड के बगीचे के फूलों को जानने, उसके अधिकांश क्षेत्रों से जुड़ने, शहद के समान ईश्वरीय दया का उपहार देने और जिस दिन वह संसार में आएगी, उस दिन जीवन की परिस्थितियों को जानने की क्षमता और क्षमताएँ डाल देती है, वह निश्चय ही सारे ब्रह्माण्ड का रचयिता के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता।

संक्षेप में: जीवन ईश्वरीय एकता की एक चमकदार मुहर है जो मनुष्य के चेहरे पर अंकित है।

ब्रह्मांड; और जीवन के संबंध में सभी जीवात्माएँ ईश्वरीय एकता की मुहर हैं; और प्रत्येक जीव में कढ़ाई और कला शाश्वत प्रार्थना की मुहर बनाती है; और जीवधारी अपने जीवन के साथ ब्रह्मांड के संदेश पर अपने हस्ताक्षर करते हैं, जो कि शाश्वत और स्वयं-निर्भर एक के नाम पर है, और वे ईश्वरीय एकता की मुहरें, ईश्वरीय एकता की मुहरें और ईश्वरीय शाश्वत प्रार्थना की मुहर हैं। इसी तरह, जिस तरह सभी जीवधारी इस ब्रह्मांड की पुस्तक में ईश्वरीय एकता की मुहरें हैं, जीवन की तरह; उसी तरह प्रत्येक के चेहरे और चेहरे पर भी ईश्वरीय एकता की मुहर लगाई गई है।

इसके अलावा, जिस तरह जीवन अपने विशेष और सजीव प्राणियों की संख्या में सदा-जीवित और आत्मनिर्भर एकता की गवाही देने वाले हस्ताक्षर और मुहर बनाता है, उसी तरह जीवन को वापस लाने और वापस लाने का कार्य भी प्राणियों की संख्या में दिव्य एकता के हस्ताक्षर डालता है। उदाहरण के लिए, पृथ्वी को जीवन में वापस लाना, जो एक एकल व्यक्ति है, सूर्य की तरह ही दिव्य एकता की गवाही देता है। क्योंकि वसंत में पृथ्वी को जीवन में वापस लाने में, तीन लाख प्रजातियाँ और प्रजातियों के असंख्य व्यक्तिगत सदस्य एक दूसरे के भीतर, बिना किसी दोष या दोष के, पूर्ण, नियमित क्रम में जीवन में वापस आ जाते हैं। जो व्यक्ति असंख्य अन्य व्यवस्थित कार्यों के साथ ऐसा एक भी कार्य करता है, वह निश्चित रूप से सभी प्राणियों का निर्माता और सदा-जीवित और आत्मनिर्भर एक होना चाहिए, और एकता का एकमात्र ऐसा व्यक्ति होना चाहिए, जिसकी प्रभुता में कोई भी भागीदारी असंभव हो।

अभी के लिए, जीवन के इन छोटे-छोटे गुणों का संक्षेप में वर्णन किया गया है, तथा इसके अन्य गुणों की व्याख्या और विस्तृत चर्चा के लिए हम रिसाले-ए-नूर और किसी अन्य समय का संदर्भ लेते हैं।

निष्कर्ष

सबसे बड़ा नाम हर किसी के लिए एक जैसा नहीं होता; यह अलग-अलग होता है। उदाहरण के लिए, इमाम अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के लिए यह छह नाम थे: एकल, सदा-जीवित, आत्मनिर्भर, बुद्धिमान, सर्व-न्यायपूर्ण और सबसे पवित्र। इमाम अल-आज़म के लिए, यह दो नाम थे: बुद्धिमान और सर्व-न्यायपूर्ण। जबकि ग़ौथ अल-आज़म के लिए यह सदा-जीवित था। इमाम रब्बानी के लिए, सबसे बड़ा नाम आत्मनिर्भर था, और इसी तरह; कई अन्य लोगों ने अलग-अलग नामों को सबसे बड़ा नाम माना।

इस पाँचवें बिन्दु के सम्बन्ध में जो कि सदा-जीवित नाम के बारे में है, एक आशीर्वाद, एक गवाह, एक प्रमाण, एक पवित्र प्रमाण, और अपने लिए एक प्रार्थना के रूप में, और इस ग्रंथ के एक सुखद निष्कर्ष के रूप में, हम निम्नलिखित को शामिल करते हैं, जो कि ईश्वर के महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने अल-जौशन अल-कबीर नामक सर्वोच्च प्रार्थना में कहा है, जो ईश्वर के बारे में उनके ज्ञान की अत्यंत उच्च और व्यापक डिग्री को दर्शाता है। हम कल्पना में उस समय तक यात्रा करेंगे और महान रसूल (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने जो कहा, उस पर "आमीन" कहते हुए, उनकी आवाज़ में वही प्रार्थना करेंगे जैसे कि हम खुद कह रहे हों:

हे वह जो सभी जीवित प्राणियों से पहले जीवित थे;
हे वह जो समस्त जीवित प्राणियों के पश्चात जीवित रहेगा;
हे जीवात्मा, जिसके समान कोई जीव नहीं है;
हे जीवित परमेश्वर जिसके समान कुछ भी नहीं;
हे जीवित परमेश्वर, जिसे किसी अन्य जीवित प्राणी की आवश्यकता नहीं है;
हे जीव! तू किसी भी जीवित प्राणी को अपना साथी नहीं बनाता।
हे जीवित परमेश्वर, आप सभी जीवित प्राणियों को मरने का कारण बनते हैं;
हे समस्त जीवों का भरण-पोषण करने वाले जीव!
हे जीवित परमेश्वर, तू मरे हुओं को जिलाता है;
हे जीवित परमेश्वर, जिसे मृत्यु स्पर्श नहीं करती -
आपकी जय हो! आपके अलावा कोई ईश्वर नहीं है! दया करो! दया करो! हमें जहन्नम की आग से बचाओ! आमीन!

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

पांचवां बिंदु

दिव्य नाम स्वयंसिद्ध

[यह बिंदु ईश्वरीय नाम स्व-निर्भर पर चर्चा करता है। यह सदाबहार नाम के बारे में पाँचवें बिंदु का सारांश है, नूर चेस्मेसी (प्रकाश का फव्वारा) का एक परिशिष्ट है, और इसे तीसवें शब्द का परिशिष्ट भी माना जाता है।]

एक माफ़ी

आत्म-निर्भर नाम की गहन, व्यापक महानतम अभिव्यक्ति से संबंधित ये महत्वपूर्ण बातें मेरे मन में अलग-अलग झलकियों के रूप में आईं और इसलिए वे ठीक से व्यवस्थित नहीं हैं। इसके अलावा वे एक अव्यवस्थित, जल्दी-जल्दी लिखी गई बिना सुधारी गई कच्ची प्रति के रूप में रह गए हैं। इन कारणों से वाक्यांशों और अभिव्यक्ति के तरीके में कई कमियाँ और बहुत अधिक अव्यवस्था स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। चर्चा की गई बातों की सुंदरता के लिए आपको मेरी कमियों को माफ़ करना चाहिए।

एक अनुस्मारक

महानतम नाम से संबंधित बातें अत्यंत व्यापक हैं और अत्यंत गहन भी हैं, विशेष रूप से आत्म-निर्भर के नाम से संबंधित बातें, जैसे कि विशेष रूप से प्रथम किरण के नाम से संबंधित बातें।1

इसके अलावा, चूँकि ये लोग भौतिकवादियों की ओर देखते हैं और इस विषय में और भी अधिक गहराई से प्रवेश कर चुके हैं, इसलिए हर कोई हर मामले को उसके सभी पहलुओं में नहीं समझ पाएगा। हालाँकि, वे हर मामले के एक हिस्से को समझने में सक्षम होंगे। "किसी चीज़ को पूरी तरह से त्यागना नहीं चाहिए, भले ही वह पूरी तरह से प्राप्त न हो," के नियम के अनुसार, इस तरह के मामले को पूरी तरह से छोड़ देना उचित नहीं है, यह कहते हुए: "मैं इस अमूर्त बगीचे में सभी फल नहीं तोड़ सकता।" कोई व्यक्ति चाहे जितना भी फल तोड़ ले, वह लाभकारी होगा। क्योंकि जिस तरह सबसे बड़े नाम से जुड़े मामले समझ से परे एक हद तक व्यापक हैं, उसी तरह वे इस हद तक सूक्ष्म भी हैं कि मन उन्हें पहचान नहीं सकता। हर किसी का दिमाग हमेशा जीवित और आत्मनिर्भर के नामों से संबंधित पांचवें और छठे बिंदुओं तक नहीं पहुँच पाएगा, विशेष रूप से विश्वास के स्तंभों और विशेष रूप से पांचवें बिंदु में ईश्वरीय निर्धारण और आदेश के स्तंभ के लिए जीवन के संकेत, लेकिन

[1] यदि इस ग्रंथ को पढ़ने वाले व्यक्ति को विज्ञान का ज्ञान नहीं है, तो उसे प्रथम किरण से शुरू न करके द्वितीय किरण से पढ़ना चाहिए तथा प्रथम किरण को अंत में पढ़ना चाहिए।

वे उनमें से कुछ के बिना नहीं रहेंगे और किसी भी स्थिति में ये मामले उनके विश्वास को मजबूत करेंगे। विश्वास को मजबूत करने का महत्व, शाश्वत खुशी की कुंजी, वास्तव में जबरदस्त है। यहां तक कि एक रत्ती भर की वृद्धि भी एक खजाना है। इमाम रब्बानी, अहमद अल-फारुकी ने कहा: "मेरे विचार में, विश्वास के केवल एक छोटे से पहलू में वृद्धि सैकड़ों रोशनी और आध्यात्मिक प्रसन्नता से बेहतर है।"

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।
जिसके हाथ में हर चीज़ की सल्तनत है । (36:83) * आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी की हैं। (39:63; 42:12) * कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसके ख़ज़ाने हमारे ही पास हों। (15:21) * कोई चलती हुई चीज़ नहीं जो उसके माथे की लट को न पकड़ सके । (11:56)

जिल-क़दा के महीने में मेरे दिमाग़ में ऐसी आयतों के बारे में बात आई जो ईश्वरीय आत्म-निर्वाह की ओर इशारा करती हैं, जो आत्म-निर्वाह नाम का सबसे बड़ा प्रकटीकरण है, जो या तो सबसे बड़ा नाम है, या सबसे बड़े नाम की दो रोशनियों में से दूसरी है, या इसकी छह रोशनियों में से छठी है। एस्कीशेहर में मेरी स्थिति

जेल में रहने के कारण मैं उस महानतम प्रकाश को पूरी तरह से नहीं समझा सकता। हालाँकि, इमाम अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने अपनी कविता अर्जुज़ा में सकीना के नाम से महानतम नाम की व्याख्या की है, और अपनी कविता जलजलुतिया में उन्होंने इन छह नामों को महानतम नाम के साथ-साथ कुछ अन्य महान नामों पर विचार किया है, और कहा है कि ये सबसे महान और सबसे महत्वपूर्ण हैं। उनके द्वारा की गई चर्चा से मुझे असाधारण सांत्वना मिली है। और इसलिए, पिछले पाँच नामों की तरह, हम स्वयं-निर्भर नाम का उल्लेख करेंगे, उस महानतम प्रकाश का, जिसमें पाँच किरणें हैं, जो कम से कम संक्षिप्त रूप में है।

पहली किरण

ब्रह्माण्ड का महिमावान रचयिता स्वयंभू है, अर्थात वह स्वयं ही जीवित है, जारी है, अपने आप ही टिकता है। सभी चीजें उसी के द्वारा जीवित हैं और जारी हैं, वे अस्तित्व में हैं और उनमें स्थायित्व है। यदि एक क्षण के लिए भी ब्रह्माण्ड से स्वयंभू का सम्बन्ध टूट जाए, तो ब्रह्माण्ड नष्ट हो जाएगा।

इसके अलावा, जैसा कि महान क़ुरआन ने आदेश दिया है, सर्वशक्तिमान की आत्म-निर्वाह के साथ,

उसके तुल्य कोई चीज़ नहीं । (42:11)

अर्थात्, उसके सार, या उसके गुणों, या उसके कार्यों में उसका कोई समान, बराबर, सहकर्मी या भागीदार नहीं है। वास्तव में, यह परम पवित्र के लिए संभव नहीं है जो ब्रह्मांड को उसकी परिस्थितियों और कार्यों के साथ धारण करता है।

उसकी प्रभुता को समझना तथा उसे पूर्ण व्यवस्था के साथ नियंत्रित, प्रशासित, पोषित तथा पोषित करना, मानो वह एक घर या महल हो, उसके समान, बराबर का कोई, साझेदार या सहकर्मी होना असंभव है; यह असंभव है।

हाँ, यह असम्भव ही है कि जिस सर्व-महिमावान, नित्य-जीवित और स्वयं-निर्भर परमेश्वर के लिए तारों की रचना कणों की तरह सरल है; जिसकी शक्ति से बड़ी से बड़ी वस्तु भी वश में हो जाती है, जैसे कि सूक्ष्मतम वस्तु; जिसके लिए कोई भी वस्तु किसी अन्य वस्तु के लिए बाधा नहीं है, तथा कोई भी कार्य किसी अन्य कार्य में बाधा नहीं डालता; जिसकी दृष्टि में असंख्य व्यक्ति उसी प्रकार विद्यमान हैं, जिस प्रकार एक व्यक्ति विद्यमान है; जो सबकी आवाजों को एक साथ सुनता है और सबकी असीम आवश्यकताओं को एक साथ पूरा करने में समर्थ है; जिसकी इच्छा और संकल्प के क्षेत्र के बाहर कुछ भी, कोई भी अवस्था नहीं है, जैसा कि ब्रह्माण्ड में प्राणियों की व्यवस्था और संतुलन से प्रमाणित होता है; जो यद्यपि कहीं नहीं है, परन्तु अपनी शक्ति और ज्ञान से सर्वत्र विद्यमान है; तथा यद्यपि सब कुछ उससे सर्वथा दूर है, परन्तु सर्वथा निकट है - उसके समान, बराबर, भागीदार, प्रतिनिधि, विरोधी या समतुल्य कोई हो, यह असम्भव ही है; असंभव है। उसके पवित्र गुणों और विशेषताओं का विचार केवल रूपक और तुलना द्वारा ही किया जा सकता है। रिसाले-ए-नूर में सभी तुलनाएं और रूपक इसी प्रकार के हैं।

हाँ, परम पवित्र और पवित्र परमेश्वर का कोई सानी नहीं है, वह अनिवार्य रूप से विद्यमान है, पदार्थ से सर्वथा दूर है, और अंतरिक्ष से परे है; उसका विखंडन और विभाजन हर दृष्टि से असंभव है, जैसे कि किसी भी प्रकार का परिवर्तन या बदलाव; उसका अभावग्रस्त या शक्तिहीन होना संभावना की सीमाओं से परे है। और फिर भी, गुमराह लोगों का एक समूह परम पवित्र और पवित्र सार की कुछ अभिव्यक्तियों को मानता है जो ब्रह्मांड के पन्नों और प्राणियों के स्तरों में प्रकट होती हैं और कुछ प्राणियों को दिव्यता के आदेशों का श्रेय देते हैं; वे परम महिमावान के कुछ कार्यों को प्रकृति का श्रेय देते हैं।

हालांकि, रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर निर्णायक प्रमाणों के साथ यह प्रदर्शित किया गया है कि प्रकृति एक दिव्य कला है, और वह कलाकार नहीं हो सकती। यह एक प्रभुतापूर्ण पुस्तक है, और वह लेखक नहीं हो सकती। यह एक कढ़ाई है, और वह कढ़ाई करने वाली नहीं हो सकती। यह एक रजिस्टर है, और वह लेखाकार नहीं हो सकती। यह एक कानून है, और वह शक्ति नहीं हो सकती। यह एक प्रतिरूप है, और वह स्रोत नहीं हो सकती। यह एक प्राप्तकर्ता है और निष्क्रिय है, और वह लेखक नहीं हो सकती। यह एक आदेश है, और वह आदेश देने वाला नहीं हो सकता। यह सृजन की एक संहिता है, और वह संहिता का संस्थापक नहीं हो सकता।

यदि, असंभव बात मान ली जाए, तो सबसे छोटे सजीव प्राणी को प्रकृति के हवाले कर दिया जाए और उससे कहा जाए: "आपने इसे बनाया है"; जैसा कि रिसाले-ए-नूर में कई स्थानों पर निर्णायक प्रमाणों के साथ प्रदर्शित किया गया है, तो उस छोटे प्राणी के अंगों और शारीरिक प्रणालियों की संख्या के अनुसार साँचे, या कहें कि मशीनें प्रदान करना आवश्यक होगा, ताकि प्रकृति कार्य को अंजाम दे सके।

इसके अलावा, यद्यपि भौतिकवादी कहे जाने वाले गुमराह लोगों के एक समूह ने सूक्ष्म कणों के व्यवस्थित परिवर्तनों के भीतर दिव्य रचनात्मकता और प्रभुत्वशाली शक्ति की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति देखी, क्योंकि वे नहीं जानते थे कि अभिव्यक्ति कहाँ से आई और यह नहीं समझ सकते थे कि वह सार्वभौमिक शक्ति कहाँ से निर्देशित हो रही थी, जो शाश्वत रूप से चाहने वाले की शक्ति के प्रकटीकरण से उत्पन्न हुई थी, उन्होंने माना कि पदार्थ और शक्ति पूर्व-शाश्वत थे और दिव्य कार्यों को कणों और उनकी गति के लिए जिम्मेदार ठहराना शुरू कर दिया। भगवान की जय हो! क्या मनुष्य इतने अज्ञानी हो सकते हैं कि उन कार्यों और कामों को कणों और उनकी गति के लिए जिम्मेदार ठहराएँ, जो केवल उस व्यक्ति द्वारा किए जा सकते हैं जो अंतरिक्ष से परे है और इस तरह से मौजूद है कि सभी चीजों के निर्माण में सभी चीजों को देख, जान और निर्देशित कर सकता है, जो बेजान, अंधे, अचेतन संयोग के तूफानों में इधर-उधर फेंके जाते हैं जिसमें इच्छा और संतुलन का अभाव है? जिस किसी के पास थोड़ी सी भी बुद्धि है, उसे यह देखना चाहिए कि यह कितना अज्ञानी और अंधविश्वासी विचार है।

दरअसल, क्योंकि उन दुष्टों ने पूर्ण एकता को त्याग दिया है, वे एक असीम, अंतहीन पूर्ण बहुलता में गिर गए हैं। यानी, चूँकि वे एक ही ईश्वर को स्वीकार नहीं करते, इसलिए वे अनंत ईश्वरों को स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं। इसका मतलब यह है कि चूँकि वे अपने भ्रष्ट दिमाग में एक ही सबसे शुद्ध और पवित्र सार और पूर्व-अनंतता और रचनात्मकता के विचार को नहीं समाहित कर पाते जो उसके लिए आवश्यक और अनिवार्य है, इसलिए वे अपने विचारों से उन असीम, अंतहीन, बेजान कणों की पूर्व-अनंतता, वास्तव में दिव्यता को स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं।

तो, आओ और इस पूर्ण और नितांत अज्ञानता पर विचार करें! क्योंकि निश्चित रूप से, कणों पर अभिव्यक्ति ने कणों के उस समूह को अनिवार्य रूप से विद्यमान एक की शक्ति, शक्ति और आदेश के माध्यम से एक व्यवस्थित और शानदार सेना में बदल दिया है। यदि कमांडर-इन-चीफ की कमान और शक्ति एक सेकंड के लिए भी वापस ले ली जाए, तो वह असंख्य, बेजान, अचेतन द्रव्यमान अनियमित सैनिकों में बदल जाएगा, इसका अस्तित्व पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा।

इसके अलावा, ऐसा लगता है कि लोगों का एक और समूह इससे भी आगे देखता है, यानी वे और भी अधिक अज्ञानतापूर्वक गुमराह हैं। वे ईथर के रूप में जाने जाने वाले पदार्थ की कल्पना करते हैं, जो कि महिमावान निर्माता की गतिविधियों का एक अत्यंत सूक्ष्म, बढ़िया, आज्ञाकारी और अधीन पृष्ठ है, जो उनके आदेशों को प्रसारित करने का एक साधन है, उनकी शक्ति के प्रयोग के लिए एक पतला पर्दा है, उनके लेखन के लिए एक परिष्कृत स्याही है, उनके निर्माण के लिए एक बढ़िया वस्त्र है, उनकी कलाकृतियों का एक खमीर है और उनके बीजों के लिए एक खेती है, जो मूल और लेखक है क्योंकि यह उनकी प्रभुत्व की अभिव्यक्ति के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है।

इस असाधारण अज्ञानता के लिए अंतहीन असंभवताओं की आवश्यकता है क्योंकि ईथर
वह पदार्थ जो अचेतन, निर्जीव और इच्छा रहित है और सूक्ष्म है

पदार्थ की तुलना में जिसमें कण होते हैं, जो भौतिकवादियों को डुबो देता है, और आदिम पदार्थ के सूचकांक से अधिक सघन है जिसमें प्राचीन दार्शनिकों ने खुद को झोंक दिया। इस पदार्थ को, जो बिना सीमा के खंडित और विभाजित हो सकता है और निष्क्रिय होने और संचार करने की क्षमता के गुणों और कर्तव्यों से सुसज्जित है - इसके सूक्ष्म कणों को, जो अन्य पदार्थों के कणों की तुलना में बहुत अधिक सूक्ष्म हैं, उन क्रियाओं और कार्यों को जिम्मेदार ठहराना जो एक इच्छा और शक्ति के माध्यम से मौजूद हैं जो सभी चीजों को देखती है, जानती है और सभी चीजों में निर्देशित करती है, ईथर के कणों की संख्या के लिए गलत है।

प्राणियों में प्रत्यक्ष सृजन का कार्य ऐसा है कि यह दर्शाता है कि यह एक शक्ति और इच्छा से आगे बढ़ता है जो अधिकांश चीजों को देखता और जानता है, यहां तक कि पूरे ब्रह्मांड को भी, प्रत्येक चीज में विशेष रूप से अगर वह सजीव है, और जो ब्रह्मांड के साथ सजीव प्राणी के संबंध को पहचानता और सुरक्षित करता है; यह इस प्रकार दर्शाता है कि यह कारणों का कार्य नहीं हो सकता है, जो भौतिक हैं और सर्वव्यापी नहीं हैं। स्व-निर्वाह के अर्थ के माध्यम से, एक विशेष रचनात्मक कार्य एक शक्तिशाली अर्थ रखता है जो सीधे ब्रह्मांड के निर्माता के कार्य होने की ओर इशारा करता है। उदाहरण के लिए, मधुमक्खी के निर्माण से संबंधित एक कार्य यह दर्शाता है कि यह दो मामलों में ब्रह्मांड के निर्माता के लिए विशिष्ट है।

पहला सम्मान: यह तथ्य कि दुनिया भर में उस विशेष मधुमक्खी के समान सभी अन्य मधुमक्खियाँ एक ही समय में वही कार्य करती हैं, यह दर्शाता है कि वह विशेष और व्यक्तिगत कार्य एक व्यापक कार्य का सिरा है जो पृथ्वी के चेहरे को समेटे हुए है। इस मामले में, जो भी उस विशाल कार्य का लेखक और स्वामी है, वह उस विशेष कार्य का लेखक होना चाहिए।

दूसरा सम्मान: मधुमक्खी के निर्माण की दिशा में निर्देशित कार्रवाई के लेखक होने के लिए, एक शक्ति और इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है जो मधुमक्खी और उसके सदस्यों के जीवन और ब्रह्मांड के साथ उसके संबंधों के लिए स्थितियों को जानने और सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त रूप से विशाल हो। इसलिए, जो व्यक्ति विशेष कार्य करता है, वह ब्रह्मांड के अधिकांश भाग पर अधिकार रखते हुए ही इसे पूरी तरह से कर सकता है।

अतः सबसे विशिष्ट और महत्वहीन कार्य दो पहलुओं से प्रदर्शित करता है कि यह सभी चीजों के सृजनकर्ता के लिए विशिष्ट है।

सबसे उल्लेखनीय और आश्चर्यजनक बात यह है: अनिवार्यतः विद्यमान एक के पास अनिवार्यता है, जो कि अस्तित्व का सबसे दृढ़ स्तर है; पदार्थ से पूर्ण अलगाव है, जो कि अस्तित्व की सबसे अपरिवर्तनीय डिग्री है; अंतरिक्ष से पूर्ण स्वतंत्रता है, जो कि समाप्ति से सबसे दूर अस्तित्व की स्थिति है; और एकता है, जो कि अस्तित्व का सबसे ठोस गुण है और परिवर्तन और अनस्तित्व से सबसे दूर है।

और फिर भी वे पूर्व-अनंतता और शाश्वतता का श्रेय देते हैं, जो कि अनिवार्यतः विद्यमान परमेश्वर के सबसे विशेष गुण हैं और उसके लिए आवश्यक और अनिवार्य हैं, ईथर और कणों जैसी चीजों को, जो कि पदार्थ हैं, भौतिक, असीम और अनंत हैं।

वे असंख्य हैं, अस्तित्व का सबसे कम स्थिर स्तर है और सबसे कम मूर्त है, सबसे अधिक परिवर्तनशील और सबसे अधिक परिवर्तनशील है और अंतरिक्ष में सबसे अधिक फैला हुआ है; वे उन्हें पूर्व-अनंत काल मानते हैं और उन्हें पूर्व-अनंत मानते हैं; और उनमें से कुछ तो यह भी मानते हैं कि दिव्य कार्य उन्हीं से उत्पन्न होते हैं। रिसाले-ए-नूर में कई स्थानों पर तर्कपूर्ण तर्कों के माध्यम से यह प्रदर्शित किया गया है कि यह विचार सत्य और वास्तविकता के कितने विपरीत है, कितना अनुचित और बेतुका है।

दूसरी किरण

इसमें दो बातें शामिल हैं।

पहला मामला :

> न नींद उसे जीत पाती है, न ऊंघ। (2:255) * कोई चलता-फिरता प्राणी नहीं, जिसकी लट वह पकड़ न ले। (11:56) * आकाश और धरती की कुंजियाँ उसी की हैं। (39:63; 42:12)

ये श्लोक स्वयंभू नाम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति की ओर इशारा करते हैं। ये और इनके जैसे श्लोक जिस महान सत्य की ओर संकेत करते हैं उसका एक पहलू इस प्रकार है:

ब्रह्मांड में आकाशीय पिंडों का अस्तित्व, निरंतरता और चिरस्थायीता आत्म-निर्वाह के रहस्य से जुड़ी हुई है। यदि आत्म-निर्वाह की अभिव्यक्ति एक पल के लिए भी अपना चेहरा बदल ले, तो लाखों ग्लोब, जिनमें से कुछ पृथ्वी से हज़ार गुना बड़े हैं, अंतरिक्ष के अनंत शून्य में बिखर जाएँगे, और एक-दूसरे से टकराकर शून्य में जा गिरेंगे।

उदाहरण के लिए, जो हजारों भव्य महलों को पूर्ण व्यवस्था में रखता है और उन्हें अंतरिक्ष में विमान की तरह यात्रा कराता है, उसकी स्वयं-निर्भरता की शक्ति अंतरिक्ष में उन महलों की स्थिरता, व्यवस्था और निरंतरता के माध्यम से मापी जाती है। इसी प्रकार स्वयं-निर्भर नाम की महानतम अभिव्यक्ति का एक माप यह तथ्य है कि सर्व-महिमावान और स्वयं-निर्भर एक, आत्म-निर्भरता के रहस्य के माध्यम से आकाशीय पदार्थ के भीतर असंख्य खगोलीय पिंडों को अत्यंत व्यवस्था और संतुलन के भीतर स्थिरता, स्थायित्व और निरंतरता प्रदान करता है; और साथ ही शून्य में लाखों शक्तिशाली ग्लोबों को, जिनमें से कुछ पृथ्वी से एक हजार और कुछ तो एक लाख गुना बड़े हैं, बिना किसी सहारे या सहारे के धारण करता है, उन सभी को कर्तव्य सौंपता है और उन्हें एक राजसी सेना की तरह "'हो!' की आज्ञा से आने वाले आदेशों के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता में प्रस्तुत करता है और ऐसा ही होता है।" सभी प्राणियों के कण भी, तारों की तरह, आत्म-निर्भरता के रहस्य के माध्यम से अस्तित्व में हैं, और स्थायी हैं तथा इसके माध्यम से जारी रहते हैं।

किसी सजीव प्राणी के शरीर में कण बिखरते नहीं बल्कि एकत्रित होते हैं
प्रत्येक अंग के लिए विशिष्ट समूह और प्रणालियाँ, और बिना

बिखराव, तत्वों के तूफानों के भीतर अपनी स्थिति को बनाए रखते हैं, जो बाढ़ की तरह बहते हैं, और नियमित और व्यवस्थित रहते हैं। चूँकि यह स्वयं-स्पष्ट रूप से उनके द्वारा नहीं बल्कि आत्म-निर्वाह के रहस्य के माध्यम से होता है, और चूँकि प्रत्येक शरीर एक सुव्यवस्थित रेजिमेंट की तरह है और प्रत्येक प्रजाति एक नियमित सेना की तरह है, ये कण असंख्य भाषाओं के साथ आत्म-निर्वाह के रहस्य की घोषणा करते हैं, उसी तरह जैसे कि पृथ्वी पर जीवित प्राणियों और उनके समूहों की निरंतरता और गति और अंतरिक्ष की दुनिया में सितारों की गति इसकी घोषणा करती है।

दूसरा विषय : इस पद के लिए यह आवश्यक है कि आत्म-निर्वाह के रहस्य से संबंधित बातों में ज्ञान के कुछ लाभ और उदाहरण बताए जाएं।

वस्तुओं के अस्तित्व में जो बुद्धि है, तथा उनकी प्रकृति के उद्देश्य हैं, उनकी रचना में जो लाभ हैं, तथा उनके जीवन के परिणाम हैं, वे तीन प्रकार के हैं।

प्रथम प्रकार प्रत्येक वस्तु को, मनुष्य को तथा मनुष्य के मामलों को देखता है।

दूसरा प्रकार अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें असंख्य पाठकों के लिए सभी चीजों के अर्थ बताए गए हैं, क्योंकि प्रत्येक एक संकेत है, एक संदेश है, एक पुस्तक है, सचेत प्राणियों के अध्ययन के लिए एक स्तुति है, एक संकेत है जो महिमावान सृष्टिकर्ता के नामों की अभिव्यक्ति को ज्ञात कराता है।

तीसरा प्रकार: यह महिमावान निर्माता से संबंधित है और उसी की ओर देखता है। जबकि चीजों के लाभ और परिणाम में से एक चीज खुद चीजों को देखती है, अनगिनत महिमावान निर्माता की ओर देखते हैं। क्योंकि महिमावान निर्माता अपनी कला के चमत्कारों को खुद देखता है, वह उन प्राणियों में अपने नामों की अभिव्यक्ति को देखता है जिन्हें उसने खुद बनाया है। इस शक्तिशाली तीसरे प्रकार के संबंध में, यह पर्याप्त है कि प्राणी केवल एक सेकंड के लिए जीवित रहें।

आत्म-निर्वाह का एक और रहस्य जिसके लिए सभी चीजों के अस्तित्व की आवश्यकता है
तीसरी किरण में समझाया जाएगा।

एक समय मैं ब्रह्मांड के ताबीज और सृजन की पहेली की जांच कर रहा था, जो कि इसकी अभिव्यक्ति में निहित है, साथ ही प्राणियों में ज्ञान और लाभ के उदाहरणों के बारे में भी, और मैंने पूछा: "मुझे आश्चर्य है कि ये चीजें खुद को इस तरह से क्यों प्रदर्शित करती हैं, फिर तेजी से गायब हो जाती हैं और खो जाती हैं? मैं उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं को देखता हूं; उन्हें एक व्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण तरीके से तैयार किया गया है, सजाया गया है और इस प्रदर्शन और प्रदर्शनी में भेजा गया है। लेकिन फिर वे एक या दो दिन में गायब हो जाते हैं, और उनमें से कुछ कुछ मिनटों के भीतर; बेकार और व्यर्थ में वे गायब हो जाते हैं। इस संक्षिप्त समय के लिए हमारे द्वारा उन्हें देखे जाने का उद्देश्य क्या है?" मैं बहुत उत्सुक था।

फिर, ईश्वरीय कृपा से, मुझे इस तथ्य में ज्ञान का एक महत्वपूर्ण उदाहरण मिला कि प्राणी, विशेष रूप से सजीव प्राणी, इस दुनिया में शिक्षा के स्थान पर आते हैं। यह इस प्रकार था: प्रत्येक प्राणी, और विशेष रूप से यदि वह सजीव है, तो एक अत्यंत सार्थक शब्द, संदेश, प्रभुत्वपूर्ण स्तुति है

और दिव्य उद्घोषणा। बुद्धिमान प्राणियों द्वारा इसका अध्ययन किए जाने और असंख्य पाठकों को इसका अर्थ बताए जाने के बाद, इसका भौतिक रूप, जो एक अक्षर या शब्द जैसा होता है, गायब हो जाता है।

लगभग एक वर्ष तक यह ज्ञान का उदाहरण मेरे लिए पर्याप्त था। फिर प्राणियों में, विशेष रूप से सजीव प्राणियों में पाए जाने वाले कला के वास्तव में अद्भुत और सूक्ष्म चमत्कार प्रकट हुए। मैंने समझा कि कला की ये सूक्ष्मताएँ जो इतनी अच्छी और अद्भुत हैं, केवल बुद्धिमान प्राणियों की दृष्टि के लिए अर्थ निर्धारित करने के लिए नहीं हैं। यद्यपि ऐसे असंख्य प्राणी प्रत्येक प्राणी का अध्ययन कर सकते हैं, उनका अध्ययन सीमित है, और उनमें से सभी उन सजीव प्राणियों में कला की सभी सूक्ष्मताओं को भेदने में सक्षम नहीं होंगे। अर्थात्, सजीव प्राणियों के निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम और उनकी प्रकृति का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य पूर्व-शाश्वत स्वयं-निर्भर व्यक्ति की अपनी दृष्टि के सामने उनकी कला के चमत्कार और उनके द्वारा प्रदान किए गए दयालु उपहार और उदारता को प्रस्तुत करना है।

जहाँ तक इस उद्देश्य का प्रश्न है, इसने मुझे लम्बे समय तक संतुष्ट रखा और इससे मुझे निम्नलिखित बातें समझ में आईं: सृष्टि का ज्ञान और उद्देश्य, जो कि प्राणियों, विशेषकर सजीव प्राणियों में कला की अनंत सूक्ष्मताओं को, पूर्व-शाश्वत स्वयं-निर्भर परमेश्वर की दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत करना है, अर्थात्, उसके लिए स्वयं अपनी कला को देखना, उस विशाल व्यय के लिए पर्याप्त था।

कुछ समय बाद मुझे एहसास हुआ कि प्राणियों की व्यक्तिगत विशेषताओं और रूपों में कला की सूक्ष्मताएँ जारी नहीं रहतीं; वे नवीनीकृत हो रही थीं और बहुत तेज़ी से बदल रही थीं; वे एक अंतहीन गतिविधि और रचनात्मकता के भीतर रूपांतरित हो रही थीं। मैंने इस पर विचार करना शुरू किया, और कहा: "इस रचनात्मकता और गतिविधि में ज्ञान आवश्यक रूप से उतना ही व्यापक होना चाहिए जितना कि गतिविधि स्वयं।" फिर, ऊपर बताए गए ज्ञान के दो उदाहरण अपर्याप्त लगने लगे; उनमें कुछ कमी थी। अत्यधिक जिज्ञासा के साथ मैंने ज्ञान के एक और उद्देश्य और उदाहरण की खोज और तलाश शुरू कर दी।

ईश्वर की स्तुति हो, चमत्कारपूर्ण व्याख्या के कुरान के प्रकाश के माध्यम से, कुछ समय बाद आत्म-निर्वाह के रहस्य के स्तर पर एक विशाल, असीम ज्ञान और उद्देश्य स्पष्ट हो गया। और इसके माध्यम से, ब्रह्मांड का ताबीज और सृष्टि की पहेली कहे जाने वाले दिव्य रहस्य को समझा गया। चौबीसवें अक्षर में इसका विस्तार से वर्णन किया गया है, इसलिए यहाँ तीसरी किरण में हम केवल दो या तीन बिंदुओं का संक्षेप में उल्लेख करेंगे।

इस बिन्दु से आत्म-निर्वाह के रहस्य के प्रकटीकरण की ओर देखो: इसने सभी प्राणियों को अस्तित्वहीनता से बाहर निकाला है, और श्लोक के अर्थ के अनुसार,

> वह अल्लाह ही है जिसने आकाश को बिना किसी सहारे के ऊपर उठाया जिसे तुम देख सकते हो, (13:2)

उनमें से प्रत्येक को अनंत अंतरिक्ष में रहने का कारण बना है। इसने उन्हें स्थिरता और स्थायित्व प्रदान किया है, और उन सभी को आत्म-निर्वाह के रहस्य की अभिव्यक्ति प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित किया है। यदि यह समर्थन न हो, तो कुछ भी अपने आप अस्तित्व में नहीं रह सकता। सब कुछ अनंत शून्य में गिर जाएगा और अस्तित्वहीन हो जाएगा।

इसके अलावा, जिस प्रकार सभी प्राणी अपने अस्तित्व, स्थिरता और स्थायित्व के लिए सर्वशक्तिमान स्वयंभू पर निर्भर रहते हैं, वे उसी के माध्यम से अस्तित्व में बने रहते हैं, उसी प्रकार श्लोक के अर्थ के अनुसार,

और उसी की ओर हर मामला पलटकर जाता है। (11:123)

प्राणियों की अवस्थाओं और स्थितियों में हज़ारों जंजीरों या रेखाओं के सिरे आत्म-निर्वाह के रहस्य से जुड़े हुए हैं, जो, अगर तुलना में ग़लती न हो, तो टेलीफ़ोन और टेलीग्राफ़ लाइनों के केंद्र या केंद्रीय ध्रुव की तरह है। अगर वे उस चमकदार आधार बिंदु पर भरोसा न करते, तो कारणों के हज़ारों अंतहीन क्रम ज़रूरी होते, जो विद्वानों के अनुसार एक असंभव और झूठी धारणा है; वास्तव में, जितने प्राणी हैं, उतने ही कारणों के ये बेतुके अंतहीन क्रम होने चाहिए। उदाहरण के लिए, एक चीज़ - उदाहरण के लिए सुरक्षा या प्रकाश या अस्तित्व या पोषण - एक मामले में अगली चीज़ पर निर्भर करती है, और वह अगली पर, और वह अगली पर, जब तक कि अंततः चूँकि यह अनंत नहीं हो सकता, इसे समाप्त होना ही पड़ता है।

इस प्रकार, ऐसी सभी पंक्तियों और अनुक्रमों का अंत आत्म-निर्वाह के रहस्य में निहित है। लेकिन जब यह रहस्य समझ में आ जाता है, तो उन काल्पनिक अनुक्रमों में अगली चीज़ पर निर्भर प्रत्येक चीज़ के संबंध और अर्थ नहीं रहते, वे गायब हो जाते हैं और सब कुछ आत्म-निर्वाह के रहस्य की ओर सीधे देखता हुआ दिखाई देता है।

तीसरी किरण

एक या दो परिचयात्मक बिंदुओं के माध्यम से, हम थोड़ी सी सीमा तक ईश्वरीय सृजनात्मकता और प्रभुत्वशाली क्रियाकलाप के भीतर आत्म-निर्वाह के रहस्य के प्रकटीकरण की ओर संकेत करेंगे, जिसका संकेत निम्नलिखित श्लोकों में मिलता है:

> वह प्रतिदिन किसी न किसी रूप में प्रकट होता है। (55:29) * जो चाहता है, करता है। (11:107) * जो चाहता है, पैदा करता है । (30:34, इत्यादि) * हर चीज़ की हुकूमत उसी के हाथ में है । (36:83) * अतः अल्लाह की दयालुता की निशानियों को देखो कि वह किस प्रकार धरती को उसके मरने के पश्चात जीवित करता है। (30:50)

प्रथम: जब हम ब्रह्माण्ड को देखते हैं, तो हम देखते हैं कि प्राणियों का एक समूह, जो समय की बाढ़ में इधर-उधर फेंका जाता है और एक के बाद एक काफिले के बाद काफिले का अनुसरण करता है, एक पल के लिए आता है और फिर तुरंत ही चला जाता है।

गायब हो जाते हैं। एक और समूह एक मिनट के लिए आता है और फिर आगे बढ़ जाता है। एक प्रजाति एक घंटे के लिए प्रकट शब्द में रुकती है, फिर अदृश्य की दुनिया में प्रवेश करती है। उनमें से कुछ एक दिन के लिए प्रकट दुनिया में आते हैं और उतरते हैं, उनमें से कुछ एक साल के लिए, कुछ एक सदी के लिए, और कुछ एक युग के लिए; वे अपना कर्तव्य निभाते हैं और फिर चले जाते हैं।

प्राणियों की यह आश्चर्यजनक यात्रा और मार्ग तथा प्राणियों का प्रवाह और प्रवाह ऐसे क्रम, संतुलन और बुद्धिमत्ता के साथ संचालित और निर्देशित होता है, और जो उन्हें और उन काफिलों को आदेश देता है वह ऐसा इतनी अंतर्दृष्टि, उद्देश्य और योजना के साथ करता है कि यदि सभी मन एकजुट हो जाएं और एक मन बन जाएं, तो भी वे इस बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देश के सार को समझने में असमर्थ होंगे; वे इसमें कोई दोष नहीं खोज पाएंगे और इसलिए इसकी आलोचना नहीं कर पाएंगे।

इस प्रकार, इस प्रभुतापूर्ण क्रियाकलाप के अंतर्गत, अपने प्रिय प्राणियों, विशेषकर सजीव प्राणियों को अपनी आँखें खोलने की अनुमति न देकर, ईश्वरीय निर्णय और आदेश की कलम उन्हें अदृश्य जगत में भेज देती है; उन्हें साँस लेने की भी अनुमति न देकर, उन्हें इस संसार के जीवन से मुक्त कर देती है। यह लगातार संसार के अतिथिगृह को भरता और मेहमानों की सहमति के बिना खाली करता रहता है। पृथ्वी के गोले को लिखने और मिटाने के लिए स्लेट की तरह बनाते हुए, ईश्वरीय शक्ति के प्रकटीकरण के माध्यम से।

वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु प्रदान करता है (2:258)

ईश्वरीय निर्णय और आदेश की कलम निरंतर उस पर लेखन अंकित करती है, उन्हें नवीनीकृत और प्रतिस्थापित करती है।

इस प्रभुत्वपूर्ण क्रियाकलाप और ईश्वरीय सृजनात्मकता में निहित बुद्धि का एक अर्थ तथा उनकी एक मौलिक आवश्यकता और प्रेरक कारण बुद्धि का एक असीम, अंतहीन उदाहरण है जिसे तीन महत्वपूर्ण शाखाओं में विभाजित किया जा सकता है।

उस ज्ञान की पहली शाखा यह है: हर तरह की गतिविधि, चाहे वह विशेष हो या सार्वभौमिक, आनंद देती है। सभी गतिविधियों में आनंद है। वास्तव में, गतिविधि शुद्ध आनंद है। हाँ, गतिविधि अस्तित्व की अभिव्यक्ति है, जो शुद्ध आनंद है और गैर-अस्तित्व से दूर हो जाना है, जो शुद्ध दुख है।

हर वह व्यक्ति जिसके पास योग्यता है, वह गतिविधि के माध्यम से अपनी योग्यता के प्रकटीकरण का आनंदपूर्वक अनुसरण करता है। गतिविधि के माध्यम से जन्मजात प्रतिभाओं का प्रकटीकरण आनंद से उत्पन्न होता है और आनंद में परिणत होता है। हर वह व्यक्ति जिसके पास कुछ पूर्णताएँ हैं, वह गतिविधि के माध्यम से अपनी योग्यता के प्रकटीकरण का आनंदपूर्वक अनुसरण करता है।

चूँकि प्रत्येक क्रिया में पूर्णता और आनन्द विद्यमान है, जिसे इस प्रकार प्रेम किया जाता है और जिसकी खोज की जाती है, और क्रिया भी पूर्णता है; और चूँकि सजीव प्राणियों के जगत में असीम प्रेम और अनन्त करुणा की अभिव्यक्तियाँ स्पष्ट हैं, जो शाश्वत और पूर्व-शाश्वत जीवन से उत्पन्न होती हैं; वे अभिव्यक्तियाँ दर्शाती हैं कि उस क्रिया की आवश्यकता के रूप में,

अनन्त जीवन जो उस एक के आवश्यक अस्तित्व के लिए उपयुक्त है जो इस प्रकार प्रेम करता है और दयालु है और स्वयं को प्रेम करने योग्य बनाता है, और उसकी पवित्रता के योग्य है, वहाँ हैं -
यदि शब्दों में कोई गलती नहीं है - तो उस परम पवित्र और पवित्र जीवन में सर्वोच्च स्तर पर ऐसे पवित्र गुण हैं जैसे दिव्य जुनून, पवित्र प्रेम और विशुद्ध आनंद। और ये गुण ही हैं जो अंतहीन गतिविधि और अनंत रचनात्मकता के माध्यम से ब्रह्मांड को निरंतर नवीनीकृत, उत्तेजित और बदलते हैं।

असीम दिव्य क्रियाकलाप में ज्ञान की दूसरी शाखा जो आत्म-निर्वाह के रहस्य को देखती है: यह दिव्य नामों को देखती है। यह सर्वविदित है कि हर वह व्यक्ति जिसके पास सुंदरता है, वह अपनी सुंदरता को देखना और प्रदर्शित करना चाहता है; हर वह व्यक्ति जिसके पास कुछ कौशल हैं, वह अपने कौशल को प्रदर्शित करके और घोषित करके लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहता है और प्यार करता है; वह अपने कौशल की इच्छा रखता है और प्यार करता है, जो एक सुंदर सत्य और अर्थ है जो छिपा हुआ है, उसे प्रकट किया जाना चाहिए और उत्साही प्रशंसक मिलने चाहिए।

ये मूलभूत नियम प्रत्येक चीज़ में उसकी डिग्री के अनुसार लागू होते हैं।
ब्रह्माण्ड की गवाही और परम सुन्दरता से युक्त सर्वशक्तिमान परमेश्वर के एक हजार एक सुन्दरतम नामों की अभिव्यक्ति और कढ़ाई के प्रमाण के अनुसार, उन नामों में से प्रत्येक की प्रत्येक मात्रा में एक सच्ची सुन्दरता, एक सच्ची पूर्णता, एक सच्ची सुन्दरता और एक अति उत्तम सत्य विद्यमान है। वास्तव में, प्रत्येक मात्रा में सुन्दरता के अनंत विभिन्न प्रकार और असंख्य सुन्दर सत्य विद्यमान हैं।

चूँकि ब्रह्माण्ड के प्राणी उन नामों की पवित्र सुन्दरता को प्रतिबिम्बित करने वाले दर्पण हैं और उनकी सुन्दर कढ़ाईयाँ प्रदर्शित करने वाली झाँकियाँ और उनके सुन्दर सत्यों को प्रस्तुत करने वाले पृष्ठ हैं, इसलिए वे स्थिर और शाश्वत नाम उस पवित्र दिव्य प्रेम के परिणामस्वरूप और आत्म-निर्वाह के रहस्य के कारण अपनी अभिव्यक्तियों के माध्यम से ब्रह्माण्ड को पूरी तरह से और निरंतर नवीनीकृत और परिवर्तित करेंगे। इस तरह वे अपनी अंतहीन अभिव्यक्तियों और अनंत, सार्थक कढ़ाईयों और पुस्तकों को उस सर्व-महिमावान आत्म-निर्भर की साक्षी दृष्टि के सामने, जिसका वे प्रतीक हैं, और असंख्य बुद्धिमान प्राणियों और आत्माओं से संपन्न प्राणियों की अध्ययनशील दृष्टि के सामने प्रदर्शित करेंगे, और एक सीमित और सीमित वस्तु से असंख्य झाँकियाँ और एक व्यक्ति से अनेक व्यक्ति और एक सत्य से अनेक सत्य प्रदर्शित करेंगे।

चौथी किरण

ब्रह्माण्ड में निरंतर और आश्चर्यजनक गतिविधि में ज्ञान की तीसरी शाखा: हर कोई जो दयालु है वह दूसरों को खुशी देने में प्रसन्न होता है; और हर कोई जो दयालु है वह दूसरों को खुश करने में प्रसन्न होता है; हर कोई जो प्रेमपूर्ण है वह दूसरों को खुश करने में प्रसन्न होता है।

प्रसन्न होने के योग्य; और प्रत्येक व्यक्ति जो नेकदिल है, दूसरों को खुश करने में आनंद लेता है; प्रत्येक व्यक्ति जो न्यायप्रिय है, न्याय को कायम रखने में तथा उन लोगों का आभार जीतने में आनंदित होता है, जिनके अधिकारों की पुष्टि योग्य लोगों को दण्ड देकर की जाती है; और प्रत्येक कुशल कारीगर अपने काम को प्रदर्शित करने में, उसके उस प्रकार कार्य करने में गर्व महसूस करता है, जैसी वह आशा करता है।

यह कार्य करेगा और वांछित परिणाम देगा।

इस प्रकार, उपर्युक्त प्रत्येक सिद्धांत एक मौलिक नियम है जो पूरे ब्रह्मांड और मानव जाति की दुनिया में लागू है। बत्तीसवें शब्द के तीसरे पड़ाव में तीन उदाहरण बताए गए हैं जो दर्शाते हैं कि ये नियम ईश्वरीय नामों में कार्य करते हैं। इस बिंदु पर उनका सारांश लिखना उचित है, इसलिए हम निम्नलिखित कहते हैं:

उदाहरण के लिए, एक अत्यंत दयालु, उदार, दानशील, नेकदिल व्यक्ति जो गरीबों और जरूरतमंदों को एक बड़े जहाज पर चढ़ाता है, उन्हें दावतों और उपहारों से संतुष्ट करता है और उसे दुनिया भर के समुद्रों में चलाता है, वह उन्हें खुशी से देखेगा क्योंकि वह उनसे श्रेष्ठ है, उन जरूरतमंद लोगों की कृतज्ञता से प्रसन्न होगा, उनके प्रसन्न होने पर प्रसन्न और प्रसन्न होगा, और गर्व महसूस करेगा।

यदि कोई व्यक्ति जो केवल वितरण अधिकारी है, एक तुच्छ भोज के आयोजन में इतना आनंद और प्रसन्नता महसूस करता है, तो निम्नलिखित पर विचार करें: सदा जीवित और आत्मनिर्भर ईश्वर सभी जानवरों और मनुष्यों और असंख्य फ़रिश्तों, जिन्नों और रूहों को पृथ्वी के जहाज़ पर चढ़ाता है, जो उस दयालु ईश्वर का जहाज़ है; वह उनके सामने धरती को एक शासकीय मेज़ के रूप में फैलाता है, जो विभिन्न प्रकार के भोजनों से लदा हुआ है, और सभी इंद्रियों के लिए आनंद और पोषण से भरा हुआ है; वह उन ज़रूरतमंद, आभारी, कृतज्ञ और प्रसन्न प्राणियों को ब्रह्मांड के क्षेत्रों में यात्रा कराता है, और न केवल उन्हें इन सभी नेमतों से इस दुनिया में खुश करता है, बल्कि अनंत राज्य के स्वर्गों में अनंत दावतों में नेमतों की मेज़ भी सजाता है। इसलिए प्रभुत्व का अर्थ उन दिव्य गुणों से लिया गया है जो उन प्राणियों के धन्यवाद, कृतज्ञता, आनन्द और प्रसन्नता से उत्पन्न होते हैं जो सदा-जीवित और स्वयं-निर्भर एक की ओर देखते हैं, जिसे व्यक्त करने की हम शक्तिहीन हैं और हमें अनुमति नहीं है, जैसे पवित्र आनन्द, पवित्र गर्व और पवित्र प्रसन्नता जो इस निरंतर क्रियाशीलता और अविराम सृजनशीलता को आवश्यक बनाते हैं।

और उदाहरण के लिए, यदि एक कुशल कारीगर एक ऐसा ग्रामोफोन बनाता है जिसके लिए किसी रिकॉर्ड की आवश्यकता नहीं होती और वह ठीक वैसे ही बजता है जैसा वह चाहता है, तो उसे कितना गर्व और प्रसन्नता होगी; वह अपने आप से कहेगा: "भगवान ने क्या चमत्कार किया!" यह देखकर कि कला का एक महत्वहीन टुकड़ा जिसमें कोई वास्तविक रचना नहीं है, कारीगर की आत्मा में इस तरह के गर्व और खुशी की भावना पैदा करता है, तो निम्नलिखित पर विचार करें:

सर्वज्ञ निर्माता ने ब्रह्माण्ड की समग्रता को एक दिव्य ऑर्केस्ट्रा और अद्भुत कार्यशाला के रूप में बनाया है जो अनगिनत प्रकार के गीतों और भजनों, स्तुति और महिमा का निर्माण और प्रस्तुत करता है; वह एक अलग शिल्प और कला के विभिन्न चमत्कारों के माध्यम से ब्रह्मांड में सभी प्रजातियों, सभी दुनियाओं को प्रदर्शित करता है; और न केवल वह जीवित प्राणियों के सिर में कई मशीनें बनाता है, जिनमें से प्रत्येक ग्रामोफोन, कैमरा या टेलीग्राफ की तरह है, बल्कि वह मनुष्यों के सिर में भी एक ग्रामोफोन बनाता है जिसमें रिकॉर्ड नहीं है, एक कैमरा जिसमें फिल्म नहीं है, एक टेलीग्राफ जिसमें तार नहीं है, और एक मशीन जो बीस गुना अधिक अद्भुत है। इसलिए यह पवित्र गर्व और पवित्र आनंद जैसे अर्थ और इस प्रकार के उत्कृष्ट गुण हैं जो प्रभुत्व से उत्पन्न होते हैं और ऐसी मशीनों के निर्माण से उत्पन्न होते हैं, और उनके अपेक्षित तरीके से काम करने और वांछित परिणाम उत्पन्न करने से उत्पन्न होते हैं जो इस निरंतर गतिविधि को आवश्यक बनाते हैं।

और उदाहरण के लिए, एक न्यायप्रिय शासक न्याय को कायम रखने के लिए अत्याचारियों के विरुद्ध उत्पीड़ितों का पक्ष लेने में, शक्तिशाली लोगों के गलत कार्यों से गरीबों की रक्षा करने में, तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसका हक दिलाने में प्रसन्नता, संतुष्टि और गर्व महसूस करता है।

चूँकि यह शासन और न्याय का एक बुनियादी नियम है, इसलिए निम्नलिखित पर विचार करें:

वह जो सदा जीवित और स्वयंभू है, जो सर्वज्ञ शासक है और पूर्ण न्यायी है, वह प्राणियों और विशेषकर सजीवों को जीवन के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ प्रदान करता है, जिन्हें जीवन के अधिकार के रूप में जाना जाता है; और उनके जीवन की रक्षा के लिए, वह उन्हें आवश्यक क्षमताएँ और अंग प्रदान करता है; और वह दयालुतापूर्वक कमज़ोरों को शक्तिशाली लोगों की बुराई से बचाता है। इसलिए, प्रभुत्वशाली गुण और पवित्र अर्थ, जिन्हें व्यक्त करने में हम असमर्थ हैं, जो इससे और न्याय के रहस्य के निष्पादन से उत्पन्न होते हैं, जो इस दुनिया में सभी सजीव प्राणियों के लिए न्याय स्थापित करने के संबंध में पूर्ण है और गलत काम करने वालों को दंडित करने के संबंध में पक्षपाती है, और विशेष रूप से जो पुनरुत्थान के सर्वोच्च न्यायाधिकरण में सर्वोच्च न्याय के प्रकटीकरण से उत्पन्न होते हैं, ब्रह्मांड में निरंतर गतिविधि की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार, जैसा कि इन तीन उदाहरणों से पता चलता है, चूँकि प्रत्येक सबसे सुंदर नाम इस निरंतर क्रिया में कुछ पवित्र दिव्य गुणों को जन्म देता है, इसलिए उन्हें निरंतर रचनात्मकता की आवश्यकता होती है। और चूँकि क्षमताओं और क्षमताओं का विकास, प्रकटीकरण और पुष्पन एक आनंद, विस्तार और प्रसन्नता प्रदान करता है; और चूँकि किसी कर्तव्य के निष्पादन और समापन पर और उससे मुक्त होने पर, ऐसे कर्तव्य को सौंपे गए प्रत्येक व्यक्ति को राहत और कृतज्ञता की भावना का अनुभव होता है; और चूँकि एक ही बीज से अनेक फल प्राप्त करना और एक ही वस्तु से सौ गुना लाभ प्राप्त करना एक अत्यंत आनंददायक व्यापार है, तो निश्चय ही वह जो प्राणियों को बहुमूल्य कर्तव्यों में नियोजित करके उनकी असंख्य क्षमताओं को प्रकट करता है,

उन्हें मुक्त तो कर देगा, लेकिन एक उच्चतर अवस्था में। कहने का तात्पर्य यह है कि वह तत्वों को खनिजों के स्तर तक ऊपर उठाता है; खनिजों को वनस्पति जीवन के स्तर तक; पौधों को पोषण के माध्यम से पशु जीवन के स्तर तक; और पशुओं को मानव जीवन के उच्च स्तर तक, जो कि सचेतन है।

तब यह समझा जा सकता है कि निरंतर क्रियाकलाप और प्रभुत्वपूर्ण सृजनात्मकता से उत्पन्न पवित्र अर्थ और दिव्य प्रभुत्व कितना महत्वपूर्ण है, जो अपने बाह्य अस्तित्व के समाप्त होने पर सभी सजीव प्राणियों को उनसे छीने गए अनेक अस्तित्वों के पीछे छोड़ जाता है, जैसे उनकी आत्माएं, सार, पहचान, रूप, समानता, ज्ञान और अदृश्य की दुनिया में अस्तित्व, उनकी आत्माओं के आवरण और सूक्ष्म शरीर, जिनमें से सभी को अपने स्थानों पर कर्तव्यों का भार सौंपा गया है।

चौबीसवें पत्र में इसकी व्याख्या की गई है।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न का निर्णायक उत्तर

गुमराह लोगों का एक समूह कहता है कि जो प्राणी इस निरंतर क्रियाशीलता से ब्रह्माण्ड को बदलता और रूपान्तरित करता है, उसे स्वयं भी परिवर्तन और संशोधन के अधीन होना चाहिए।

उत्तर: भगवान न करे! एक लाख बार, भगवान न करे! यह तथ्य कि ज़मीन पर दर्पण बदलते हैं, यह नहीं दर्शाता कि आकाश में सूर्य बदलता है, बल्कि इसके विपरीत यह दर्शाता है कि इसकी अभिव्यक्तियाँ नवीनीकृत हो रही हैं। इसके अलावा, सबसे शुद्ध और पवित्र सार में परिवर्तन और बदलाव असंभव है, जो पूर्व-शाश्वत, उत्तर-शाश्वत, शाश्वत, हर मामले में बिल्कुल परिपूर्ण और पूरी तरह से आत्मनिर्भर है, पूरी तरह से मुक्त, अलग और पदार्थ, स्थान, प्रतिबंध और आकस्मिकता से परे है।

ब्रह्मांड में परिवर्तन उसके परिवर्तन की कमी और परिवर्तन की ओर इशारा करता है, न कि उसके बदलने की ओर। क्योंकि जो निरंतर परिवर्तन करता है और अनेक चीजों को चलाता है, उसे स्वयं भी अपरिवर्तित रहना चाहिए और गतिशील नहीं होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, यदि आप बहुत सारे ग्लोब और बॉल को घुमाते हैं, जिनमें से प्रत्येक को एक धागे से बांधा गया है और उन सभी को एक क्रम में लगातार घुमाते हैं, तो आपको एक ही स्थान पर रहना होगा और न तो बदलना होगा और न ही हिलना होगा, क्योंकि अगर आप ऐसा करते हैं, तो यह क्रम को बिगाड़ देगा। यह स्पष्ट है कि जो व्यक्ति किसी क्रम में वस्तुओं को घुमाता है, उसे खुद नहीं हिलना चाहिए, और जो व्यक्ति वस्तुओं को निरंतर बदलता रहता है, उसे खुद भी अपरिवर्तित रहना चाहिए ताकि ये क्रियाएँ व्यवस्थित तरीके से जारी रहें।

दूसरा: परिवर्तन और बदलाव सृजन से, पूर्णता के लिए नवीनीकरण से, आवश्यकता, भौतिकता और आकस्मिकता से उत्पन्न होते हैं। चूँकि परम शुद्ध और पवित्र सार शाश्वत है, और हर मामले में पूर्णतः परिपूर्ण और पूर्णतः आत्मनिर्भर है, और पदार्थ से पूरी तरह से अलग है, और अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है,

निश्चय ही उसका बदलना या परिवर्तित होना सम्भव नहीं है; यह असम्भव है।

पांचवी किरण

पहला मामला

यदि हम स्वयंभू नाम की महानतम अभिव्यक्ति देखना चाहते हैं, तो हमें अपनी कल्पना से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का अवलोकन करने के लिए दो दूरबीनें स्थापित करनी होंगी।
उनमें से एक सबसे दूर की वस्तुओं को दिखाएगा, दूसरा सूक्ष्म कणों को। इसलिए यदि हम पहली दूरबीन से देखें, तो हम देखेंगे कि स्वयं-निर्भर और बिना किसी सहारे के प्रकट होने के कारण, पृथ्वी से हजारों गुना बड़े लाखों ग्लोब और तारे, कुछ को ईथर नामक पदार्थ में स्पष्ट रूप से स्थिर बना दिया गया है, जो हवा से भी सूक्ष्म है, जबकि अन्य को स्पष्ट रूप से उनके कर्तव्य के रूप में यात्रा करने के लिए बनाया गया है।

फिर हम दूसरी दूरबीन से, जो कल्पना का सूक्ष्मदर्शी है, सूक्ष्म कणों को देखते हैं। आत्म-निर्वाह के रहस्य के माध्यम से, सितारों की तरह व्यवस्थित स्थिति लेते हुए, पृथ्वी पर सजीव प्राणियों के शरीर के कण सभी गतिशील हैं और अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। हम देखते हैं कि विशेष रूप से ग्रहों जैसे सजीव प्राणियों के रक्त में लाल कणिकाओं और सफेद कणिकाओं के रूप में जाने जाने वाले कणों का निर्माण करने वाले छोटे-छोटे समूह, मेवलेवी दरवेशों की तरह दो व्यवस्थित गतियों के साथ चलते हैं।

सारांश[2]

पवित्र प्रकाश की जांच करने के लिए यहां एक सारांश उपयुक्त है, जो कि महानतम नाम रूप के छह नामों का प्रकाश में सात रंगों की तरह एक साथ मिश्रण है। यह इस प्रकार है:

स्वयंभू नाम की महानतम अभिव्यक्ति से परे देखें जो इस प्रकार ब्रह्मांड में सभी प्राणियों को स्थायित्व और निरंतरता प्रदान करती है: सदा-जीवित नाम की महानतम अभिव्यक्ति ने अपनी अभिव्यक्ति से सभी सजीव प्राणियों को प्रज्वलित कर दिया है। इसने ब्रह्मांड को प्रकाशित कर दिया है। यह अपनी अभिव्यक्ति से सभी सजीव प्राणियों को सुशोभित कर देता है।

अब फिर से देखें: सदाबहार नाम से परे, एकल नाम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति ब्रह्मांड को उसके सभी तत्वों और भागों के साथ एकता प्रदान करती है। यह प्रत्येक प्राणी के माथे पर एकता की मुहर लगाता है। यह प्रत्येक प्राणी के चेहरे पर एकता की मुहर लगाता है। यह उन्हें अनंत, अनगिनत भाषाओं के साथ अपनी अभिव्यक्ति की घोषणा करने के लिए प्रेरित करता है।

अब सैपिएंट नाम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति पर विचार करें

---

[2] यह छः पवित्र नामों का संक्षिप्त सारांश है, जो सबसे महान नाम हैं तथा तीसवें फ्लैश के छः मुख्य खंडों का आधार और विषय हैं।

नाम सिंगल: यह एक फलदायी क्रम, बुद्धिमान नियमितता और उद्देश्यपूर्ण सामंजस्य को समाहित करता है जो उन सभी प्राणियों के लिए उपयुक्त है जिन्हें हम कल्पना की दो दूरबीनों के माध्यम से देखते हैं, सितारों से लेकर कणों तक, चाहे सार्वभौमिक हो या विशेष, सबसे बड़े क्षेत्र से लेकर सबसे सूक्ष्म तक। यह सभी प्राणियों को सुशोभित और सुशोभित करता है।

फिर सॅपिएंट नाम की महानतम अभिव्यक्ति से परे देखें: दूसरे बिंदु में जांचे गए इसके पहलू के संबंध में, ऑल-जस्ट नाम की महानतम अभिव्यक्ति के माध्यम से, ब्रह्मांड अपने सभी प्राणियों के साथ निरंतर गतिविधि के भीतर ऐसे संतुलन, साम्य और माप के साथ संचालित होता है, कि यदि आकाशीय पिंडों में से कोई एक भी एक सेकंड के लिए अपना संतुलन खो दे, यानी, यदि वह ऑल-जस्ट नाम की अभिव्यक्ति से मुक्त हो जाए, तो यह सितारों के बीच अराजकता का कारण बनेगा; यह प्रलय के दिन की तरह होगा।

इस प्रकार, सभी प्राणी और प्राणियों के सभी विभिन्न क्षेत्र, तारों की सेना से लेकर सूक्ष्म कणों की सेना तक, अर्थात्, सबसे बड़े क्षेत्र से लेकर जो विशाल पट्टी आकाशगंगा के रूप में जानी जाती है, लाल और सफेद कणिकाओं की गति के क्षेत्र तक, बेहतरीन संतुलन और माप के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं, जिससे यह प्रदर्शित होता है कि वे सभी प्राणी आज्ञाकारी हैं और "'हो!' और यह हो जाता है" के आदेश से आने वाले आदेशों के प्रति पूरी तरह से अधीन हैं।

अब सर्व-न्यायपूर्ण नाम की महानतम अभिव्यक्ति से आगे बढ़कर परम पवित्र नाम की महानतम अभिव्यक्ति पर ध्यान दीजिए, जिसे प्रथम बिंदु में समझाया गया था: यह तथ्य कि यह ब्रह्माण्ड के सभी प्राणियों को इतना शुद्ध, स्वच्छ, स्पष्ट, सुन्दर, अलंकृत और दीप्तिमान बना देता है, यह प्रदर्शित करता है कि इसने ब्रह्माण्ड और सभी प्राणियों को सुन्दर दर्पणों का रूप प्रदान किया है, जो परम सुन्दरी के परम आवश्यक सौन्दर्य और उसके सुन्दरतम नामों की विशुद्ध मनोहरता को प्रतिबिम्बित करने के योग्य हैं।

संक्षेप में: इन छह नामों और महानतम नाम के छह प्रकाशों ने ब्रह्मांड और सभी प्राणियों को सदैव भिन्न-भिन्न, विविध रंगों, कढ़ाई और अलंकरण में लपेटा है।

दूसरा एम ऐटरऑफ़ द एफ इफ़्थ आर एय

जिस प्रकार ब्रह्माण्ड में आत्म-निर्वाह की अभिव्यक्ति एकता और महिमा के स्तर पर है, उसी प्रकार मनुष्य में, जो ब्रह्माण्ड का केन्द्र, धुरी और चेतन फल है, वह एकता और सौंदर्य के स्तर पर है। अर्थात्, जिस प्रकार ब्रह्माण्ड आत्म-निर्वाह के रहस्य के माध्यम से अस्तित्व में है, उसी प्रकार यह एक अर्थ में मनुष्य के माध्यम से अस्तित्व में है, जो आत्म-निर्वाह के नाम की अभिव्यक्ति का सबसे पूर्ण स्थान है।

चूँकि ब्रह्माण्ड में अधिकांश ज्ञान, लक्ष्य, प्रयोजन और लाभ मनुष्य की ओर ही देखते हैं, इसलिए उसमें आत्म-निर्वाह की अभिव्यक्ति मानो ब्रह्माण्ड के लिए एक आधार है।

यह कहा जा सकता है कि सदा-जीवित और स्वयं-निर्भर परमेश्वर ने मनुष्य को ब्रह्मांड में रहने की इच्छा की और उसके लिए इसे बनाया। क्योंकि अपनी प्रकृति की व्यापकता के कारण मनुष्य सभी दिव्य नामों को समझ सकता है और उनमें आनंद ले सकता है। वह विशेष रूप से पोषण में मिलने वाले आनंद के माध्यम से कई नामों को समझ सकता है। जबकि देवदूत उस आनंद के माध्यम से उन्हें नहीं जान सकते।

इस महत्वपूर्ण व्यापकता के कारण, सदा-जीवित और स्वयं-निर्भर परमेश्वर ने मनुष्य को एक पेट और भूख दी है जिसके द्वारा वह उसे अपने सभी नामों को समझने और अपनी सभी प्रकार की उदारता का स्वाद चखने की अनुमति देता है, और उसने मनुष्य के पेट के लिए भोजन की अनंत किस्मों से भरपूर भोजन की मेज पर उदारतापूर्वक भोजन परोसा है। उसने जीवन को भी एक पेट बनाया है, भौतिक पेट की तरह, और इंद्रियों के सामने उपहारों की एक विस्तृत मेज बिछा दी है, जो जीवन के पेट के हाथों की तरह हैं। अपनी इंद्रियों के साथ, जीवन उन सभी तरीकों के लिए एक तरह का धन्यवाद देता है, जिनसे वह उपहारों की मेज से लाभ उठाता है।

जीवन के पेट के बाद उसने मनुष्य को मानवता का पेट दिया है, जिसे जीवन से कहीं अधिक व्यापक क्षेत्र में पोषण और उपहारों की आवश्यकता है। बुद्धि, मन और कल्पना, इस पेट के हाथ, दया की मेज से लाभ उठाते हैं, जो आकाश और पृथ्वी के समान विस्तृत है, और धन्यवाद देते हैं।

इंसानियत के पेट के बाद उसने इंसान के सामने एक और मेज़ फैलाई है जो बेशुमार है। उसने इस्लाम के अक़ीदत को एक ऐसे पेट की तरह बनाया है जो बहुत ज़्यादा खाने की ज़रूरत रखता है और इसकी मेज़ को आकस्मिकता के दायरे से बाहर फैला दिया है और उसमें ईश्वरीय नामों को शामिल किया है। इस पेट और खाने की बड़ी खुशी के साथ इंसान रहमदिल और हिकमत वाले के नामों को पहचानता है और कहता है: "खुदा की रहमत और हिकमत के लिए सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं!" और इसी तरह।

इस विशाल अमूर्त सत्ता से मनुष्य असीम ईश्वरीय वरदानों से लाभ उठा सकता है।

पेट। और इस पेट में एक और क्षेत्र है, जो दिव्य प्रेम का आनंद है।

इस प्रकार, सनातन और स्वयंभू परमेश्वर ने मनुष्य को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का केन्द्र और धुरी बनाया है; उसके सामने ब्रह्माण्ड के समान ही वरदानों की एक तालिका बिछाई है, तथा ब्रह्माण्ड को अपने अधीन कर लिया है। इसके लिए तथा मनुष्य के माध्यम से प्रकट आत्म-निर्वाह के रहस्य के माध्यम से ब्रह्माण्ड के अस्तित्व में बने रहने के लिए मनुष्य के तीन महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं:

उनका पहला कर्तव्य

ब्रह्माण्ड में फैली हुई सभी तरह की नेमतें मनुष्य के द्वारा ही व्यवस्थित की जाती हैं। मनुष्य के लिए लाभकारी सभी चीजें एक धागे में प्रार्थना की माला की तरह पिरोई जाती हैं और उन नेमतों की डोरियों के सिरे मनुष्य के सिर पर बाँध दिए जाते हैं। इस प्रकार मनुष्य दया के भण्डार की सभी विविध सामग्रियों की सूची बना देता है।

उनका दूसरा कर्तव्य

अपनी व्यापकता के कारण, मनुष्य को उस सनातन और स्वयं-निर्भर परमेश्वर का सबसे उत्तम संबोधन करना चाहिए; उसकी अद्भुत कलाओं की सराहना और प्रशंसा करके उसका सबसे जोरदार उद्घोषक बनना चाहिए; तथा हर प्रकार से सचेतन धन्यवाद देकर उसकी सभी प्रकार की कृपाओं और उसके असीम विभिन्न उपहारों के लिए स्तुति, महिमा और धन्यवाद देना चाहिए।

उनका तीसरा कर्तव्य

अपने जीवन के माध्यम से, उसे तीन प्रकार से उस सनातन और स्वयं-निर्भर परमेश्वर और उसके गुणों तथा सर्वव्यापी विशेषताओं के प्रति दर्पण के रूप में कार्य करना है।

पहला पहलू: यह अपनी स्वयं की पूर्ण नपुंसकता के माध्यम से अपने निर्माता की पूर्ण शक्ति और उसके स्तरों को समझना है, और अपनी नपुंसकता की डिग्री के माध्यम से, उसकी शक्ति की डिग्री को समझना है। यह अपनी स्वयं की पूर्ण गरीबी, उसकी दया और उसकी दया की डिग्री, और उसकी कमजोरी, उसकी ताकत के माध्यम से समझना है; और इसी तरह। यह अपने स्वयं के दोषपूर्ण गुणों के माध्यम से अपने निर्माता की पूर्णता के गुणों के लिए एक दर्पण और मापने का उपकरण होना है। जिस प्रकार अंधकार विद्युत प्रकाश को प्रदर्शित करने के लिए एक आदर्श दर्पण है, प्रकाश की चमक रात के अंधेरे के अनुपात में होती है, उसी प्रकार मनुष्य अपने स्वयं के दोषपूर्ण गुणों के माध्यम से दिव्य पूर्णता के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है।

दूसरा पहलू: ब्रह्माण्ड को एक मानदंड के रूप में उपयोग करते हुए तथा अपनी आंशिक इच्छा, अल्प ज्ञान, सूक्ष्म शक्ति और प्रत्यक्ष स्वामित्व के साथ, तथा अपना स्वयं का घर बनाकर, मनुष्य ब्रह्माण्ड के निर्माता के स्वामित्व, कला, इच्छा, शक्ति और ज्ञान को समझता है और उसके दर्पण के रूप में कार्य करता है।

तीसरा पहलू: इस संबंध में दर्पण के रूप में मनुष्य के कार्य के दो पहलू हैं:

पहला: यह अपने अंदर दिव्य नामों की हमेशा अलग-अलग कढ़ाई को प्रदर्शित करना है। सरल शब्दों में कहें तो, अपनी व्यापकता के कारण, मनुष्य ब्रह्मांड का एक छोटा सूचकांक और लघु नमूना है और इस तरह वह सभी की कढ़ाई को प्रदर्शित करता है।

names.

दूसरा चेहरा: यह चेहरा ईश्वरीय गुणों के लिए दर्पण का काम करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह मनुष्य अपने जीवन के माध्यम से सदा-जीवित और स्वयं-निर्भर ईश्वर के जीवन की ओर इशारा करता है, उसी तरह वह अपने जीवन-काल के दौरान विकसित होने वाली श्रवण और दृष्टि की इंद्रियों के माध्यम से सदा-जीवित और स्वयं-निर्भर ईश्वर के ऐसे गुणों को दर्शाता है जैसे श्रवण और दृष्टि।

इसके अलावा, मनुष्य अपने जीवन में मौजूद असंख्य और प्रतिक्रियाशील इंद्रियों, अर्थों और भावनाओं के माध्यम से सदा-जीवित और आत्मनिर्भर ईश्वर के पवित्र गुणों के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है, जो विकसित नहीं होते हैं, लेकिन जो भावनाओं और संवेदनाओं के रूप में उबल जाते हैं। उदाहरण के लिए,

ऐसी भावनाओं के परिणामस्वरूप, प्रेम करने और गर्व, प्रसन्नता, खुशी और प्रसन्नता महसूस करने जैसे अर्थों के माध्यम से वह उस प्रकार के गुणों के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है, बशर्ते कि वे सबसे शुद्ध और पवित्र सार की पवित्रता और पूर्ण आत्मनिर्भरता के लिए उपयुक्त और योग्य हों।

इसके अलावा, अपने व्यापक जीवन के माध्यम से, मनुष्य एक ऐसा साधन है जो सर्वशक्तिमान के गुणों और गुणों को पहचानता है और मापता है, और उनके नामों की अभिव्यक्ति का एक सूचकांक है, और एक सचेत दर्पण है, और इसी तरह, वह कई मामलों में सदा-जीवित और आत्मनिर्भर व्यक्ति के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है। मनुष्य ब्रह्मांड की सच्चाइयों के लिए माप की एक इकाई, एक सूचकांक, एक पैमाना और एक संतुलन भी है।

उदाहरण के लिए, ब्रह्मांड में संरक्षित पट्टिका के अस्तित्व का अत्यंत निर्णायक प्रमाण और इसका एक उदाहरण मनुष्य की स्मृति क्षमता है। और समानताओं की दुनिया के अस्तित्व का एक निर्णायक प्रमाण और इसका एक उदाहरण मनुष्य की कल्पना क्षमता है। और ब्रह्मांड में आत्मिक प्राणियों के अस्तित्व का प्रमाण और उनका एक उदाहरण मनुष्य में मौजूद शक्तियाँ और सूक्ष्म क्षमताएँ हैं।3 और इसी तरह। मनुष्य ब्रह्मांड में मौजूद विश्वास की सच्चाइयों को लगभग प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित कर सकता है।

मनुष्य ऊपर बताए गए कई महत्वपूर्ण कार्य करता है। वह स्थायी सौंदर्य का दर्पण है। वह शाश्वत पूर्णता की घोषणा करने वाला प्रकटीकरण का स्थान है। वह शाश्वत दया का जरूरतमंद और आभारी है। चूँकि सौंदर्य, पूर्णता और दया शाश्वत और शाश्वत हैं, इसलिए यह निश्चित रूप से आवश्यक और अपरिहार्य है कि मनुष्य, जो स्थायी सौंदर्य का इच्छुक दर्पण है, शाश्वत पूर्णता का आनंदित संदेशवाहक है, और शाश्वत दया का आभारी और जरूरतमंद है, वह स्थायी रूप से वहाँ रहने के लिए एक शाश्वत क्षेत्र में जाएगा, वह उन शाश्वत गुणों के साथ अनंत काल तक जाएगा, और उस शाश्वत सौंदर्य, शाश्वत पूर्णता और हमेशा-हमेशा के लिए स्थायी दया के साथ रहेगा।

क्योंकि शाश्वत सौंदर्य किसी अस्थायी प्रशंसक, नश्वर प्रेमी से संतुष्ट नहीं हो सकता। चूँकि सौंदर्य स्वयं से प्रेम करता है, इसलिए वह अपने प्रेम के बदले में प्रेम चाहता है। क्षणभंगुरता और नश्वरता ऐसे प्रेम को शत्रुता में बदल देती है। यदि मनुष्य अनंत काल में नहीं जाना चाहता और वहाँ स्थायी रूप से नहीं रहना चाहता, तो उसे शाश्वत सौंदर्य के प्रति सहज प्रेम के बजाय शत्रुता महसूस होगी।

जैसा कि दसवें वचन के एक फुटनोट में बताया गया है, एक समय एक प्रसिद्ध

[3] मनुष्य के अंदर के तत्व ब्रह्माण्ड के तत्वों की ओर संकेत करते हैं, और उसकी हड्डियाँ उसके पत्थरों और चट्टानों की ओर, उसके बाल उसके पौधों और पेड़ों की ओर, और उसके शरीर में बहने वाला रक्त और उसकी आँखों, कानों, नाक और मुँह से निकलने वाले तरल पदार्थ धरती के झरने और खनिज जल की ओर इशारा करते हैं। इसी तरह, मनुष्य की आत्मा आध्यात्मिक दुनिया की ओर इशारा करती है, उसकी याददाश्त की क्षमता संरक्षित टैब्लेट की ओर, और उसकी कल्पना की शक्ति समानता की दुनिया की ओर इशारा करती है, और इसी तरह। उसके प्रत्येक अंग और क्षमता एक अलग दुनिया की ओर इशारा करती है और उनके अस्तित्व की निर्णायक गवाही देती है।

सुन्दरी ने एक प्रेमी को अपने सामने से निकाल दिया, जिसके बाद उसका प्रेम शत्रुता में बदल गया और खुद को सांत्वना देने के लिए उसने कहा: "उफ़! वह कितनी बदसूरत है!", इस प्रकार उसने उसका अपमान किया और उसकी सुन्दरता को नकार दिया।

वास्तव में, मनुष्य उस चीज़ के प्रति शत्रुतापूर्ण होता है जो उसके लिए अपरिचित है, ठीक वैसे ही जैसे वह उन चीज़ों के प्रति शत्रुतापूर्ण होना चाहता है और उनमें दोष ढूँढ़ना चाहता है जिन्हें वह प्राप्त नहीं कर सकता या जिनके पास वह नहीं है। चूँकि, जैसा कि पूरा ब्रह्मांड गवाही देता है, सच्चा प्रिय और परम सुंदर परमेश्वर अपने सबसे सुंदर नामों के माध्यम से मनुष्य को खुद से प्रेम करने के लिए प्रेरित करता है, जो पूरी तरह से उत्कृष्ट हैं, और चाहता है कि मनुष्य उससे प्रेम करे, तो निश्चित रूप से वह मनुष्य को, जो उसका प्रिय और प्रेमी दोनों है, जन्मजात शत्रुता नहीं देगा और उसे दूर से खुद से नाराज़ नहीं करेगा; वह मनुष्य की आत्मा को छिपी हुई शत्रुता नहीं देगा, जो मनुष्य की प्रकृति के बिल्कुल विपरीत होगी, जो अपने स्वभाव से सबसे प्यारा और प्रेममय प्राणी है और सबसे असाधारण है जिसे उसने पूजा के लिए बनाया है। क्योंकि मनुष्य केवल उस परम सौंदर्य से शाश्वत अलगाव के कारण होने वाले गहरे घावों को ठीक करने में सक्षम होगा जिसे वह प्यार करता है और जिसका मूल्य वह उसके प्रति शत्रुता, उससे नाराज़ होना और उसे अस्वीकार करके आँकता है।

यहीं से अविश्वासियों की सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति शत्रुता उत्पन्न होती है। इस मामले में, पूर्व-अनन्त सौंदर्य निश्चित रूप से मनुष्य में एक स्थायी क्षेत्र में एक शाश्वत जीवन को प्रकट करेगा ताकि वह उसके साथ मौजूद हो सके जो अनंत काल की यात्रा पर स्वयं के लिए एक मंत्रमुग्ध दर्पण है।

चूँकि मनुष्य को इस प्रकार से बनाया गया है कि वह स्वभाव से ही एक शाश्वत सौन्दर्य की चाहत रखता है और उससे प्रेम करता है; और चूँकि एक शाश्वत सौन्दर्य एक अनित्य प्रेमी से संतुष्ट नहीं हो सकता; और चूँकि, किसी ऐसे लक्ष्य से उत्पन्न होने वाले दुःख और पीड़ा से सांत्वना पाने के लिए, जिसे वह नहीं जानता या प्राप्त नहीं कर सकता या प्राप्त नहीं कर सकता, मनुष्य ऐसे लक्ष्य के दोषों को खोजकर, बल्कि उसके प्रति गुप्त शत्रुता का पोषण करके अपने आपको शांत करता है; और चूँकि ब्रह्माण्ड की रचना मनुष्य के लिए की गई थी, और मनुष्य की रचना परमेश्वर को जानने और प्रेम करने के लिए की गई थी; और चूँकि ब्रह्माण्ड का रचयिता, अपने नामों सहित, शाश्वत है; और चूँकि उसके नामों का प्रकटीकरण शाश्वत, शाश्वत और अनन्तोत्तर होगा; तो मनुष्य निश्चित रूप से एक शाश्वत क्षेत्र में जाएगा और एक शाश्वत जीवन को अभिव्यक्त करेगा।

इसके अलावा मुहम्मद अरब (उन पर आशीर्वाद और शांति हो), जो सर्वोच्च मार्गदर्शक और पूर्ण मनुष्य हैं, ने अपने और अपने धर्म में मनुष्य के संबंध में ऊपर बताए गए सभी मूल्यों और पूर्णताओं और कर्तव्यों को सबसे पूर्ण रूप से जाना और प्रदर्शित किया। यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड मानव जाति के लिए बनाया गया था और इसका उद्देश्य और लक्ष्य मानव जाति है। इसी तरह मानव जाति का उद्देश्य और लक्ष्य, और उसका सबसे अच्छा और सबसे अच्छा उद्देश्य भी मानव जाति है।

सबसे मूल्यवान सदस्य है, और इसका सबसे शानदार दर्पण एकमात्र और शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले व्यक्ति अहमद मुहम्मद (जिन पर आशीर्वाद और शांति हो) हैं।

जिस पर और जिसके परिवार पर आशीर्वाद हो और उसके समुदाय के अच्छे कर्मों की संख्या में शांति हो। हे ईश्वर! हे परम दयालु! हे परम करुणामय! हे एकमात्र! हे सदा-जीवित! हे आत्मनिर्भर! हे बुद्धिमान!

हे न्यायी! हे परम पवित्र! हम तुझसे सत्य और असत्य के अपने सर्व-ज्ञानपूर्ण मानदंड, कुरान की सच्चाई के द्वारा, और अपने सबसे महान प्रिय के प्रति श्रद्धा के द्वारा, और अपने सबसे सुंदर नामों की सच्चाई के द्वारा, और अपने महान नाम के प्रति श्रद्धा के द्वारा प्रार्थना करते हैं कि हमें सहज आत्मा और शैतान की बुराई से और जिन्न और मनुष्यों की बुराई से बचा। आमीन।

पवित्र है तू! हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:32)

इकतीसवाँ फ्लैश

इसे द रेज कलेक्शन को सौंपा गया है। चौदहवीं किरण में अफ्योन कोर्ट और जेल के बचाव भाषण और पत्र शामिल हैं, जबकि पंद्रहवीं किरण को एल्हुसेतुज़-ज़हरा (चमकता सबूत) नाम दिया गया है, और प्रकाशित किया गया है।[1]

* * *

तीस सेकंड का फ्लैश

इसमें लेमेट शामिल है , जो ओल्ड सईद की आखिरी रचना है, जिसने खुद को काव्यात्मक रूप दिया और रमज़ान के महीने में बीस दिनों में रचा गया था। इसे सोज़लर (शब्द) में शामिल किया गया है।

* * *

तैंतीसवाँ फ्लैश

इसमें अरबी में कात्रे, हब्बे, शेमे, ज़ेरे, हुबाब, ज़ुहरे और शूले नामक रचनाएँ और उनके परिशिष्ट शामिल हैं, जो नए सैद की पहली रचनाएँ हैं, जो उनके हृदय में वास्तविकता से प्रेरित हैं। इनका तुर्की अनुवाद मेसनेवी-ए नूरिये में शामिल किया गया है , जो रिसाले-ए नूर संग्रह का हिस्सा है, और प्रकाशित किया गया है।

[1] जैसा कि हमारे मास्टर, उस्ताद द्वारा निर्दिष्ट किया गया था, चौदहवीं किरण को अंततः रक्षा भाषण कहा गया था और लेटर्स ऑफ अफ्योन कोर्ट, जबकि पंद्रहवीं रे को एल-हुसेतुज़-ज़हरा नाम दिया गया और प्रकाशित किया गया।

हस्ताक्षरकर्ता: बेदिउज्जमां के सहायक